बँगला

कृत्तिवास रामायण

उत्तरकाण्ड

(तुलसी-रामचरितमानस से एक शती प्राचीन)

रचयिता

सन्त कृत्तिवास

[हिन्दी-अनुवाद सहित नागरी-लिप्यन्तरण]

अनुवादक एवं लिप्यन्तरणकार

नवारुण वर्मा

प्रकाशक

भुवन वाणी ट्रस्ट

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियां रोड, लखनऊ–२२६००३



'प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक संत की बानी।
सम्पूर्ण विश्व में घर-घर है पहुँचानी॥'

प्रथम संस्करण—१९८३-८४ ई०

आकार—१८×२२÷८

पृष्ठसंख्या—३२४

मूल्य— २५·०० रुपया

मुद्रक

वाणी प्रेस

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ–२२६००३

विश्वनागरी लिपि

।। ग्रामे-ग्रामे सभा कार्या, ग्रामे ग्रामे कथा शुभा ।।

सब भारतीय लिपियाँ सम-वैज्ञानिक हैं !

All the Indian Scripts are equally scientific

भारतीय लिपियों की विशेषता ।

'संसार की लिपियों में नागरी लिपि सर्वाधिक वैज्ञानिक है', यह कथन बिलकुल ठीक है। परन्तु यह कहते समय हमें याद रखना चाहिए कि वह सर्वाधिक वैज्ञानिकता, केवल हिन्दी, मराठी, नेपाली, लिखी जानेवाली लिपि में नहीं, वरन् समस्त भारतीय लिपियों में मौजूद है। क, च, त, प आदि के रूपों में कोई वैज्ञानिकता नहीं है। वैज्ञानिकता है लिपि का ध्वन्यात्मक होना। नियमित स्वरों का पृथक् होना। अधिक से अधिक व्यंजनों का होना। सबको एक 'अ' के आधार पर उच्चरित करना। ['अ' अक्षर-स्वर, सकल अक्षरोंका उस भाँति मूल आधार। सकलविश्व का जिस प्रकार 'भगवान्' आदि है जगदाधार।] एक अक्षर से केवल एक ध्वनि। एक ध्वनि के लिए केवल एक अक्षर। स्माल्, कैपिटल्, इटैलिक्स् के समान अनेकरूपा नहीं; बस एक ही रूप में लिखना, बोलना, छापना और प्रत्येक अक्षर का समान वज़न पर

बंगला-देवनागरी वर्णमाला				
অअ	আआ	ইइ	ঈई	উउ
ঊऊ	ঋऋ	ঌऌ	এए	ঐऐ
ওओ	ঔऔ		ঁअं	ঃअः
কक	খख	গग	ঘघ	ঙङ
চच	ছछ	জज	ঝझ	ঞञ
টट	ঠठ	ডड	ঢढ	ণण
তत	থथ	দद	ধध	নन
পप	ফफ	বब	ভभ	মम
যय	রर	লल	বव	শश
ষष	সस	হह	ক্ষक्ष	জ্ঞज्ञ
শ্রश्र	ড়ड़	ঢ়ढ़	ৎत्	য়य

एकाक्षरी नाम। उच्चारण-संस्थान के अनुसार अक्षरों का कवर्ग, चवर्ग आदि में वर्गीकरण। फिर प्रत्येक वर्ग के अक्षरों का क्रम से एक ही संस्थान में थोड़ा-थोड़ा ऊपर उठते हुए अनुनासिक तक पहुँचना, आदि-आदि ऐसे अनेक गुण हैं जो अभारतीय लिपियों में एकत्र, एकसाथ नहीं मिलते। किन्तु ये गुण समान रूप से सभी भारतीय लिपियों में मौजूद हैं, अतः वे सब नागरी के समान ही विश्व की अन्य लिपियों की अपेक्षा 'सर्वाधिक वैज्ञानिक' हैं। सब ब्राह्मी लिपि से उद्‌भूत हैं। ताड़पत्र और भोजपत्र की लिखाई तथा देश-काल-पात्र के अन्य प्रभावों के कारण विभिन्न भारतीय लिपियों के अक्षरों में यत्र-तत्र परिवर्तन, हिन्दी वाली 'नागरी लिपि' को कोई श्रेष्ठता प्रदान नहीं करता। भारत की मौलिक सब लिपियाँ 'नागरी लिपि' के समान ही श्रेष्ठ हैं।

नागरी लिपि को 'भी' अपनाना श्रेयस्कर क्यों ?

"नागरी लिपि" की केवल एक विशेषता है कि वह कमोबेश सारे देश में प्रविष्ट है, जबकि अन्य भारतीय लिपियाँ निजी क्षेत्रों तक सीमित हैं। वहीं यह भी सत्य है कि नागरी लिपि में प्रस्तुत और विशेष रूप से हिन्दी का साहित्य, अन्य लिपियों में प्रस्तुत ज्ञानराशि की अपेक्षा कम और नवीनतर है। अतः समस्त भाषाओं की ज्ञानराशि को, सर्वाधिक फैली लिपि "नागरी" में अधिक से अधिक लिप्यन्तरित करके, क्षेत्रीय स्तर से उठाकर सबको सारे राष्ट्र में, यहाँ तक कि विश्व में ले आना परम धर्म है। विश्व की सब भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान (सत्साहित्य) है आत्मा, और 'नागरी लिपि' होना चाहिए उसका पर्यटक शरीर।

अन्य लिपियों को बनाये रखना भी कर्तव्य है।

वस्तुतः यह परम धर्म है कि समस्त सदाचार साहित्य को नागरी में तत्परता से प्राचुर्य में लिप्यन्तरित करना। किन्तु साथ ही यह भी परम धर्म है कि अन्य लिपियों को उत्तरोत्तर उन्नति के साथ बरक़रार रखना। यह इसलिए कि सबका सब कभी लिप्यन्तरित नहीं हो सकता। अतः अन्य लिपियों के नष्ट होने और नागरी लिपि मात्र के ही रह जाने से अ-लिप्यन्तरित हमारी समस्त ज्ञानराशि उसी प्रकार लुप्त-सुप्त होकर रह जायगी जैसे पाली, प्राकृत और अपभ्रंश का वाङ्मय रह गया। हमारे ही राष्ट्र का प्राचीन आप्तज्ञान विलुप्त हो जायगा।

नागरी लिपि वालों पर उत्तरदायित्व विशेष !

इन दोनों परम धर्मों की पूर्ति का सर्वाधिक भार नागरी लिपि वालों पर है, इसलिए कि उनको 'सम्पर्क लिपि' का श्रेष्ठ आसन प्रदत्त है। मैं कह सकता हूँ कि उन्होंने अपने कर्तव्य का, जैसा चाहिए था, वैसा निर्वाह नहीं किया। परन्तु उसकी प्रतिक्रिया में अन्य लिपि वालों को भी "अपराध के जवाब में अपराध" नहीं करना चाहिए। 'कोयला' बिहार का है

अथवा सिंहभूमि का है, इसलिए हम उसको नहीं लेंगे, तो वह हमारे ही लिए घातक होगा। कोयले की क्षति नहीं होगी। अपनी लिपियों को समुन्नत रखिए, किन्तु नागरी लिपि को भी अवश्य अपनाइए।

उपर्युक्त परिवेश में नागरी लिपि का पठन और समग्र श्रेष्ठ साहित्य का नागरी में लिप्यन्तरण तो आवश्यक है ही, किन्तु अन्य लिपियाँ भी अपनी लिपि में दूसरी भाषाओं के सत्साहित्य को लिप्यन्तरित तथा अनूदित कर सकती हैं। 'अधिकस्य अधिकं फलम्।' ज्ञान की सीमा नहीं निर्धारित है। 'भुवन वाणी ट्रस्ट' ने भी अवधी के रामचरितमानस को ओड़िआ भाषा में गद्य एवं पद्य अनुवाद-सहित, ओड़िआ लिपि में लिप्यन्तरित किया है। परन्तु सम्पर्क और एकीकरण की दृष्टि से 'नागरी लिपि' अनिवार्य है।

नागरी लिपि की वैज्ञानिकता मानव मात्र की सम्पत्ति है।

अब एक क़दम आगे बढ़िए। भारतीय लिपियों की सर्वाधिक वैज्ञानिकता युगों की मानव-शृंखला के मस्तिष्क की उपज है। क्या मालूम इस अनादि से चल रहे जगत् में कब, क्या, किसने उत्पन्न किया? भारत संयोग से इस समय इस विज्ञान का कस्टोडियन् है, स्रष्टा नहीं। भारत भी न जाने कब, कहाँ तक और कितना था? अतः हम भारतीयों को नागरी लिपि के स्वामित्व का गर्व नहीं होना चाहिए। वह आज के मानव के पूर्वजों की देन है, सबकी सम्पत्ति है, सकल विश्व उसका समान गौरव से उपयोग कर सकता है। हमारा 'अहम्' उस लिपि की उपयोगिता को रुद्ध कर देगा, जिसके हम सँजोये रखनेवाले मात्र हैं। किन्तु विदेशों में बसनेवाले बन्धुओं को भी नागरी लिपि के गुणों को अपने ही पूर्वजों की उपज मानकर परखना चाहिए। ये गुण इस निबन्ध के प्रथम अनुबन्ध में अधिकांशतः वर्णित हैं। न परखने पर उनकी क्षति है, विश्व की क्षति है। अरब का पेट्रोल हम नहीं लेंगे, तो क्षति किसकी होगी? पेट्रोल की नहीं, अपनी ही।

फिर याद दिला देना जरूरी है कि क, प आदि रूपों में वैज्ञानिकता नहीं है। वे काफ़, पे और के, पी, जैसे ही रूप रख सकते हैं, किन्तु लिपि में 'अनुबन्ध प्रथम' में ऊपर दिये हुए गुणों और क्रम को अवश्य ग्रहण करें। और यदि एक बनी-बनाई चीज़ को ग्रहण करके सार्वभौम सम्पर्क में समानता और सरलता के समर्थक हों, तो 'नागरी लिपि' के क्रम को अपनी पैतृक सम्पत्ति मानकर, ग़ैर न समझकर, मौजूदा रूप में भी ग्रहण कर सकते हैं। वह भारत की बपौती नहीं है। आज के मानव के पूर्वजों की वह सृष्टि है। इससे विश्व के मानव को परस्पर समझने का मार्ग प्रशस्त होगा।

नागरी लिपि में अनुपलब्ध विशिष्ट स्वर-व्यञ्जनों का समावेश।

हर शुभ काम में कजी निकालनेवाले एक दूर की कौड़ी यह भी लाते है कि "नागरी लिपि सर्वाधिक वैज्ञानिक होते हुए भी अपूर्ण है और अनेक स्वर-व्यंजनों को अपने में नहीं रखती। उनको कहाँ तक और कैसे समाविष्ट

किया जाय ?" यह मात्र तिल का ताड़ है। मौजूदा कर्तव्य को टालना है।

अल्बत्ता अन्य भाषाओं में कुछ व्यंजन ऐसे है जो नागरी में नही हैं— किन्तु अधिक नहीं। भारतीय भाषा उर्दू की क़ ख़ ग़ ज़ फ़, ये पाँच ध्वनियाँ तो बहुत समय से नागरी लिपि में प्रयुक्त हो रही है। दु:ख है कि आज़ादी के बाद से राष्ट्रभाषा के पक्षधर ही उनको ग़ायब करने पर लगे हैं। इसी प्रकार मराठी ळ है। इनके अतिरिक्त अ़रबी, इब्रानी आदि के कुछ व्यञ्जन है, किन्तु उनको नागरी की दैनिक लिपि में अनिवार्यत: रखना आवश्यक नहीं। विशिष्ट भाषाई कार्यों में उन विशिष्ट भाषाई व्यंजनों को चिह्न देकर दरसाया जा सकता है।

तदर्थ अरबी लिपि का आदर्श सम्मुख।

और यह कोई नयी बात नहीं। नितान्त अपरिवर्तनशील कहे जाने वालों की लिपि 'अ़रबी' में केवल २७-२८ अक्षर होते हैं। भाषा के मामले में वे भी अति उदार रहे। "ख़िलम चीन (अर्थात् दूर से दूर) से भी लाओ"— यह पैग़म्बर का कथन है। जब ईरान में, फ़ारसी की नई ध्वनियों च, प, ग, आदि से सामना पड़ा तो उन्होंने उनको अ़रबी-पोशाक चे, पे, गाफ़ पहना दी। जब हिन्दोस्तान आये तो ट, ड, ड़ आदि से सामना पड़ने पर अ़रबी ही जामे में टे, डाल, ड़े आदि तैयार कर लिये। यहाँ तक कि सिन्धी में नागरी के सब महाप्राण और अनुनासिक, तथा सिन्धी के विशिष्ट अन्त:स्फुट अक्षरों को भी अ़रबी का लिबास पहना दिया गया। फिर 'नागरी' वाले तो औदार्य का दावा करते हैं, उनको परेशानी क्या है? और नागरी में भी तो परिवर्तन होते रहे हैं। ऋग्वेद के प्रथम मंत्र में प्रयुक्त ळ को छोड़ चुके हैं, और ड़, ढ़ आदि को अवर्गीय दशा मे जोड़ चुके है। नागरी लिपि में कुछ ही व्यंजनों का अभाव है। उनमें से कुछ को स्थायी तौर पर और कुछ को अस्थायी प्रयोग के लिए गढ़ सकते हैं। 'भुवन वाणी ट्रस्ट' ने यह सेवा बड़ी सरलता, सफलता और सुन्दरता से की है।

स्वर और प्रयत्न (लहजा) का अन्तर।

अब रहे स्वर। जान लीजिए कि प्रमुख स्वर तीन ही है— अ, इ, उ; उनसे दीर्घ, संयुक्त (डिफ्थांग) आदि बनते है। अतिदीर्घ, प्लुत, लघु, अतिलघु आदि फिर अनेक हैं जो विश्व में अनेक रूपों में बोले जाते है। भारतीय वैदिक एवं संस्कृत व्याकरण में अनेक है। वे स्वतंत्र स्वर नहीं हैं, प्रयत्न हैं, लहजा हैं। वे सब न लिखे जा सकते हैं, न सब सर्वत्र बोले जा सकते हैं। डायाक्रिटिकल मार्क्स कोशों में छाप-छापकर चमत्कार भले ही दिखा दिया जाय, प्रयोग में तो, "एक ही रूप में", अपने निजी शब्द निजी देशों में भी नहीं बोले जाते। स्वर क्या, व्यंजन तक। एक शब्द "पहले" को लीजिए। सब जगह घूम आइए, देखिए उसका उच्चारण किन-किन प्रकार से होता है। एक बिहार प्रदेश को छोड़कर कहीं भी "पहले" का शुद्ध

उच्चारण सुनने को नहीं मिलेगा। पंजाब, बंगाल, मद्रास के अंग्रेजी के उ भट विद्वान् अंग्रेजी में भाषण देते हैं—उनके लहजे (प्रयत्न) बिलकुल भिन्न होते हैं। फिर भी न उनका उपहास होता है, न अंग्रेजी भाषा का ह्रास।

शास्त्र पर व्यवहार की वरीयता।

शास्त्र और विज्ञान से हमको विरोध नहीं। लिपि की रचना, शोध, परिमार्जन, देश-काल-पात्र के अनुसार करते रहिए, परन्तु व्यवहारिकता को अवरुद्ध मत कीजिए। खाद्यपदार्थ के तत्त्वों का गुण-दोष, परिमाण, संतुलन, न्यूनाधिक्य, और खानेवाले की शक्ति के साथ उनका समन्वय, यह सब स्तुत्य है, कीजिए। किन्तु ऐसा नहीं कि उस समीक्षा के पूर्ण होने तक कोई भूखा रहकर मर ही जाय। थाली रखी है, उसे भोजन करने दीजिए। आज सबसे ज़रूरी है राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का एक-दूसरे की ज्ञानराशि को समझने के लिए एक सम्पर्क लिपि की व्यापकता।

'भुवन वाणी ट्रस्ट' ने स्थायी और मुक़ामी तौर पर अनेक स्वर-व्यंजनों की सृष्टि की है। दक्षिणी भाषाओं में प्रयुक्त एकार तथा ओकार की ह्रस्व, दीर्घ—दोनों मात्राएँ हम प्रयोग में ला रहे हैं। पढ़ने दीजिए, बढ़ने दीजिए। समस्त भाषाओं के ज्ञान-भण्डार को निजी क्षेत्रों से उठाकर धरातल पर नागरी लिपि के माध्यम से पहुँचाइए। नागरी लिपि मानव के पूर्वज की सृष्टि है, मानव मात्र की है। यहाँ से योरोप तक उसकी पहुँच है। यूरोपियों की लिपि-शैली नागरी थी। अक्षरों के रूप कुछ भी रहे हों। क़िन्हीं कारणों से सामीकुलों में भटककर अलफ़ा-बीटा के क्रम को थोड़े अन्तर के साथ अपना लिया। फिर पुराने संस्कारों से याद आया, तो स्वर-व्यंजन पृथक् कर दिये। किन्तु उनके क्रम-स्थान जैसे के तसे मिले-जुले रहे। सामीकुल की भाषाओं ने भी प्रमुख स्वर तीन ही माने हैं, ज़बर-ज़ेर-पेश (अ इ उ)। ै और ौ का उच्चारण अरबी, संस्कृत, अवधी और अपभ्रंश का एक जैसा है— (अई, अऊ)। किन्तु खड़ी बोली व उर्दू के ऐ, और औ, ऐनक, औरत जैसे। यह स्वरों की भिन्नता नहीं है, वरन् लहजा (प्रयत्न) की भिन्नता है।

पूर्ण वैज्ञानिक कोई वस्तु मनुष्य के पल्ले नहीं पड़ सकती। "पूर्ण विज्ञान" भगवान् का नाम है। सा-रे-ग-म-प-ध-नी, ये सात स्वर; उनमें मध्य, मन्द, तार; कुछ में तीव्र, कोमल—बस इतने में भारतीय संगीत बँधा है। उनमें भी कुछ अदा नहीं हो सकते, अनुभूति मात्र हैं। किन्तु क्या इतने ही स्वर हैं? संगीत के स्वरों का इनके ही बीच में अनंत विभाजन हो सकता है। जैसे अणु से परमाणु का, और उसमें भी आगे। किन्तु शास्त्र एक वस्तु है, व्यवहार दूसरी। व्यवहार में उपर्युक्त षडज से निषाद तक को पकड़ में लाकर संगीत क़ायम है, क्या उसको रोककर इनके मध्य के स्वरों को पहले तलाश कर लिया जाय? तब तक संगीत को रोका जाय, क्योंकि वह पूर्ण नहीं है? क्या कभी वह पूर्ण होगा? पूर्ण

सम्मुख प्रस्तुत है। इस वृत्त के अनुसार कृत्तिवास रामायण का समग्र प्रकाशन लगभग एक चौथाई शताब्दी में क्रमशः प्रकाशित होकर अब पूर्ण हुआ।

सन्त कृत्तिवास का जीवनवृत्त, ग्रन्थ का परिचय, उत्तर प्रदेश में पहले से ही इस सरस ग्रन्थ की चर्चा, बँगला वर्णमाला, बँगला उच्चारण, वर्ग्य और अवर्ग्य य, ज, व, ब तथा स्वर-व्यञ्जनों के उच्चारण की संवृत और विवृत प्रणाली आदि पर विवरण, पूर्व प्रकाशित काण्डों की प्रस्तावना में विस्तार से दिया जा चुका है। सार यह कि लगभग २५ वर्ष से चलते रहनेवाले बहुभाषाई सानुवाद लिप्यन्तरण में लगभग ६० ग्रन्थों के प्रकाशित होते रहने के कार्यकाल में बँगला कृत्तिवास रामायण सबके साथ शनैः शनैः छपते-छपते अब पूर्ण हुआ। यही वैचित्र्य है।

विश्वबन्धुत्व और राष्ट्रीय एकीकरण के संदर्भ में लिपि और भाषा

भूमण्डल पर देश-काल-पात्र के प्रभाव से मानव जाति, विभिन्न लिपियाँ और भाषाएँ अपनाती रही है। उन सभी भाषाओं में अनेक दिव्य वाणियाँ अवतरित हैं, जो विश्वबन्धुत्व और परमात्मपरायणता का पथ-प्रदर्शन करती हैं; किन्तु उन लिपियो और भाषाओं से अपरिचित होने के कारण हम इस तथ्य को नही देख पाते। अपनी निजी लिपि और भाषा में ही सारा ज्ञान और सारी यथार्थता समाविष्ट मानकर, दूसरे भाषा-भाषियों को उस ज्ञान से रहित समझते हुए हम भ्रमित होते है।

भूमण्डल की बात तो दूर, हमारे अपने देश 'भारत' में ही अनेक भाषाएँ और लिपियाँ प्रचलित हैं। एक ब्राह्मी लिपि के मूल से उत्पन्न होने के बावजूद उन सबसे परिचित न होने के कारण हम अपने को परस्पर विघटित समझने लगते हैं। किन्तु सारी लिपियाँ और भाषाएँ सीखना-समझना भी सम्भव नहीं है। सुतरां, यथासाध्य विश्व, और अनिवार्यतः स्वराष्ट्र की सभी भाषाओं के दिव्य वाङ्मय को राष्ट्रभाषा हिन्दी और सम्पर्कलिपि नागरी में सानुवाद लिप्यन्तरित करके, क्षेत्रीय स्तर से बढ़ाकर उसको सारे राष्ट्र को सुलभ कराना, समस्त सदाचार-साहित्य-निधि को सारे देश की सम्पत्ति बनाना, यह संकल्प भगवान की प्रेरणा से सन् १९४७ में मैंने अपनाया, और इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु १९६९ ई० में 'भुवन वाणी ट्रस्ट' की स्थापना हुई।

विश्वबन्धुत्व के सम्बन्ध में ट्रस्ट की अपेक्षाएँ

ट्रस्ट की यह मान्यता है कि धरातल का समस्त वाङ्मय मानवमात्र की सम्पत्ति है। विज्ञान का कोई अन्वेषण, किसी भी भूभाग में हुआ हो, वह मानवमात्र की मिल्कियत हो जाता है। टेलीफ़ोन, वायरलेस, वायुयान का उपयोग करते समय कोई यह विचार नहीं करता कि यह उपलब्धि

किस देश की बदौलत है। लिपि, भाषा, ज्ञान सकल धरातल की सम्पत्ति है। लिपि और भाषा के पट को अनावृत कर सकल ज्ञान-भण्डार को सर्वसुलभ बनाना चाहिए। इससे, भले ही मानव की पार्थक्य-भावना का मूलनाश न हो, परन्तु एकीकरण की ओर कर्तव्य करते रहना हमारे लिए श्रेयस्कर है। सत्कार्य कभी नष्ट नहीं होता—

"पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते।
नहि कल्याणकृत्कश्चित् दुर्गतिं तात गच्छति॥

—गीता ६ : ४०

नागरी लिपि पर उत्तरदायित्व

अत: नागरी लिपि पर यह उत्तरदायित्व ठीक ही रहा कि राष्ट्र की सभी लिपियों के साहित्य को नागरी जामा पहनाकर उसको राष्ट्र भर में फैलाए। देश का सकल साहित्य देश के कोने-कोने में सुपरिचित हो। नागरी लिपि का ही फैलाव इतना विशाल है कि इस उत्तरदायित्व को वहन कर सके।

नालन्दकालीन हमारा भाषा-उत्कर्ष

पुरातन काल में भी भारतीय लिपि और तत्कालीन सर्वोत्कृष्ट संस्कृत भाषा ने, न केवल भारत, वरन् "ग्रेट एशिया" के विशाल अन्य देशों को ज्ञान और संस्कृति प्रदान की।

नालन्द विश्वविद्यालय में दूर-दूर से विद्वान और अनेक राज्यों के प्रतिनिधि आकर शिक्षा ग्रहण करते थे। वे वहाँ से भारतीय लिपि (आज की भारतीय लिपियों का पूर्व रूप) सीखते थे और अपने देशों में उसी लिपि के आधार पर लिपि की सर्जना करते तथा संस्कृत भाषा के अपरिमित ज्ञान-भण्डार को उसी लिपि में लिप्यन्तरित अथवा अनूदित करते थे। अन्य देश हमारी लिपि को ग्रहण कर गौरव अनुभव करते थे, जब कि विदेश तो दूर, अपने देश में ही आज अपूर्ण और अवैज्ञानिक विदेशी लिपि का गुणगान किया जा रहा है। यह क्यों ?

भाषाई सेतुकरण का मार्ग

शासन और जनता, दोनों की भाषाई नीति है कि सभी भारतीय लिपियाँ और भाषाएँ सदैव बरक़रार रहें, क्योंकि उनमें भारतीय ज्ञान का अपार कोष वर्तमान है। साथ ही वह अपार ज्ञान का भण्डार क्षेत्रीय भाषाञ्चल से उठकर समग्र राष्ट्र को लाभान्वित करे, इसलिए एक जोड़ लिपि आवश्यक है। और सभी भारतीय अञ्चलों में कमोवेश अपनी पैठ रखनेवाली नागरी लिपि ही इसके लिए उपयुक्त है। नागरी लिपि को यह कोई श्रेष्ठता प्रदान नहीं की जा रही है, वरन् एक सेवा उसके सिपुर्द है। यह न भूलना चाहिए कि नागरी भी, एक ही ब्राह्मी लिपि से उद्भूत

अन्य सभी भारतीय भाषाओं की सम-समान एक परिवार की इकाई है। नागरी लिपि के माध्यम से अन्य सभी भाषाओं का वाङ्मय भी पढ़ा जाय।

हमारी लिपि का देश से बाहर विश्व में प्रसार

भारतीय लिपि ताड़पत्र और भोजपत्र में पृथक् लिखी जाने तथा देश-काल-पात्र के अनेक प्रभावो के फलस्वरूप मिलते-जुलते अनेक रूपों में प्रचलित है। यदि हम आज संगठित और केन्द्रित होते हैं तो विश्व भी हमारी लिपि को आदर के साथ ग्रहण करेगा। भारत की लिपि आज के मानव के पूर्वजों की सृष्टि है। मानवमात्र का उस पर समान अधिकार है। जब हम समृद्धि के उत्कर्ष पर थे, तब हमारी लिपि और भाषा का विश्व मे स्वागत हुआ, प्रसार हुआ। उसका नमूना पृष्ठ १३-१४ पर देखिए।

भारतीय लिपि के विदेशों में प्रसार में बँगला लिपि की भूमिका

नालन्दकाल में भारतीय लिपि के विदेशों में प्रसार का विवरण दिया जा रहा है। ग्रेट एशिया में आदर के साथ स्वागत पानेवाली भारतीय लिपि की भोजपत्र पर लिखी जानेवाली रेखाप्रधान लिपि थी। इसी परिवार में मैथिली, बर्मी (ब्राह्मी), असमिया, भोटिया या तिब्वती तथा बंगाली भी है।

आज हममे से अनेक, उलटी गंगा बहाने पर उद्यत हैं। भारतीय लिपि की वैज्ञानिकता पर लुब्ध विदेशी जन, कहाँ तो उसको अपने देशों में सम्मान से ले जाते थे, कहाँ आज हम विदेशों की नितांत अवैज्ञानिक रोमन लिपि को अपने यहाँ लाने की वकालत करते हैं। उनसे विनम्र प्रश्न है कि केवल नागरी के प्रति रोष के कारण यदि वे नागरी की अपेक्षा रोमन को वरीयता देते हैं तो क्या वे अपनी क्षेत्रीय लिपियों को भी त्याग कर रोमन लिपि को अपनाएँगे? सदैव याद रखिए कि नागरी तथा अन्य सभी भारतीय लिपियाँ सम-समान रूप से वैज्ञानिक हैं। नालन्दकाल के अनुकरण पर अपनी यह वैज्ञानिकता विश्व के लाभ के लिए विश्व में प्रसारित कीजिए।

तिब्बती लिपि

तिब्बती लिपि के कुछ नमूने हम दे रहे हैं। सहस्रों वर्ष पूर्व हमारी लिपि की नुकीली रेखा वाली पद्धति भारत में मागधी, मैथिली, असमिया, बँगला, बर्मी (ब्राह्मी) में प्रचलित होने के साथ नेपाल, भूटान, तिब्बत और तत्काल के समृद्ध देश तिब्बत से बढ़कर मंचूरिया, मंगोलिया, चीन, जापान तक पहुँची। यही नहीं, सामान्य अन्तर के साथ उन देशों में ग्रहीत भारतीय लिपि में संस्कृत के अगणित ग्रन्थ अनुवादित किये गये। पाठकों की जानकारी के लिए कुछ उदाहरण आगे प्रस्तुत हैं:—

नास्ति प्रज्ञासमं चक्षुर्नास्ति मोहसमं तमः ।
नास्ति रोगसमः शत्रुर्नास्ति मृत्युसमं भयम् ॥

भारत की लिपि के आधार पर बनी तिब्बती लिपि में संस्कृत अनुवादः—

॥ ཤེས་རབ་སྡོང་བུ ॥

॥ ŚES. RAB. SDOṄ. BU ॥

॥ प्रज्ञादण्डः ॥

।

ཤེས་རབ་དང་མཉམ་ མིག་ མེད་དེ །
śes.rab.daṅ.mñam. mig. med.de ।
प्रज्ञा- समं चक्षुः नास्ति ।

རྨོངས་པ་དང་མཉམ་ མུན་པ་ མེད །
rmoṅs.pa.daṅ.mñam. mun.pa. med ।
मोह- समं तमः नास्ति ।

ནད་འདྲ་བ་ཡི་ དགྲ་བོ་ མེད །
nad.ḥdra.ba.yi. dgra.bo. med ।
रोग-समः शत्रुः नास्ति ।

འཆི་བ་དང་མཉམ་ འཇིགས་པ་ མེད ॥
ḥchi.ba.daṅ.mñam. ḥjigs.pa. med ॥
मृत्यु- समं भयं नास्ति ॥ 105

नागरी लिपि के स्वरों का तिब्बती लिप्यन्तरण में प्रयोग

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ
ཨ	ཨཱ	ཨི	ཨཱི	ཨུ	ཨཱུ	རྀ	རཱྀ
ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः ।
ལྀ	ལཱྀ	ཨེ	ཨཻ	ཨོ	ཨཽ	ཨཾ	ཨཿ ।

नागरी लिपि के व्यञ्जनों से लिये हुए तिब्बती व्यञ्जन

क	ख	ग	घ	ङ।	च	छ	ज	झ	ञ।
ཀ	ཁ	ག	གྷ	ང།	ཅ	ཆ	ཇ	ཇྷ	ཉ།
ट	ठ	ड	ढ	ण।	त	थ	द	ध	न।
ཊ	ཋ	ཌ	ཌྷ	ཎ།	ཏ	ཐ	ད	དྷ	ན།
प	फ	ब	भ	म।	य	र	ल	व।	
པ	ཕ	བ	བྷ	མ།	ཡ	ར	ལ	ཝ།	
श	ष	स	ह	क्ष।					
ཤ	ཥ	ས	ཧ	ཀྵ།					

तिब्बती लिपि में 'अ', स्वर नहीं, व्यञ्जन के रूप में प्रयुक्त होता है। "अ" में भी स्वर की मात्राएँ लगती हैं। घ, झ, ढ, ध और भ का उच्चारण प्रयोग में नहीं आता। किन्तु संस्कृत ग्रन्थों का लिप्यन्तरण करते समय ग, ज, ड, द और ब के नीचे ह् लगा कर इन व्यञ्जनों को गढ़ लिया है। (कलकत्ता यूनिवर्सिटी से प्रकाशित " भोटप्रकाशः " से साभार।)

आभार-प्रदर्शन

सदाशय श्रीमानों और उत्तरप्रदेश शासन (राष्ट्रीय एकीकरण विभाग) के प्रति हम आभारी हैं, जिनकी अनवरत सहायता से 'भाषाई सेतुकरण' के अन्तर्गत अनेक ग्रन्थों का प्रकाशन चलता रहता है। वे विविध भाषाई ग्रन्थ नागरी कलेवर में सारे भषाई अञ्चलों में जगमगा कर राष्ट्रीय एकीकरण की ज्योति को प्रदीप्त कर रहे हैं।

सौभाग्य की बात है कि भारत सरकार के राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) तथा शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय ने राष्ट्रभाषा हिन्दी-सहित सभी भाषाओं की समृद्धि और व्यापकता के लिए एक जोड़लिपि "नागरी" के प्रसार पर उपयुक्त बल दिया। उनकी सहायता से सन्त कृत्तिवास-प्रणीत बँगला कृत्तिवास रामायण (उत्तरकाण्ड) का यह प्रकाशन प्रस्तुत वर्ष में सम्पूर्ण हुआ है।

विश्ववाङ्मय से निःसृत अगणित भाषाई धारा।
पहन नागरी-पट, सबने अब भूतल-भ्रमण विचारा॥
अमर भारती सलिला की "बंगाली" पावन धारा।
पहन नागरी पट, उसने अब भूतल-भ्रमण विचारा॥

नन्दकुमार अवस्थी
प्रतिष्ठाता, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ—३

विषय-सूची

।। श्री गणेशाय नमः ।।

॥ कृत्तिवास रामायण ॥

उत्तरकाण्ड

(हिन्दी गद्यानुवाद, बँगला मूल नागरी में)

मङ्गलाचरण

केकिकण्ठाभनीलं सुहृदयविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं।
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम् ।।
हस्ताब्जात्तचापं कपिनिकरयुतं बन्धुनासेव्यमानं ।
नौमीढ्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढदेवम् ।। १ ।।

कोशलेन्द्रतनयासुपालितं, पद्मयोनिगिरिजेशवन्दितम् ।
जानकीकरसरोहलालितं, चिन्तय तमनिशं मनोहितम् ।। २ ।।

इन्दुकुन्दवरगौरसुन्दरं, अम्बिकापतिमभीष्टमन्दिरम् ।
खञ्जनाक्षिभृशगञ्जिलोचनं, नौमि शङ्करमनङ्गशासनम् ।। ३ ।।

मङ्गलाचरण

मयूर के कंठ की आभा जैसे नीलवर्ण, सुन्दर हृदय में विप्र (भृगु) के चरण-कमल सुशोभित, शोभा देनेवाला पीतवस्त्रधारी, कमल-नयन, सदा-सुप्रसन्न रहनेवाले, कमल-करों में धनुष धारण किये हुए, कपिसमूह के संग रहनेवाले, भाइयों द्वारा सेवित होनेवाले पुष्पक पर आसीन देव, जानकी के ईश रघुवर को सदा प्रणाम है ।। १ ।। कोशलेन्द्रतनया द्वारा सुपालित, ब्रह्मा-शिव द्वारा वन्दित, जानकी के कमल-करों से लालित, मन के हितकारी उन प्रभु रामचन्द्र का निरन्तर चिन्तन करो ।। २ ।। खिले हुए कुन्द और चन्द्रमा जैसे गौरवर्ण, सुन्दर, अभीष्ट मन्दिर, खंजन को लजानेवाले सुन्दर नेत्रों वाले, अम्बिकापति, अनंगशासन शंकर को नमस्कार है ।। ३ ।।

श्रीरामेर सभाय मुनिगणेर आगमन ओ श्रीराम-सम्भाषण

आजि कालिकार येन वैकुण्ठनगरी । शङ्ख - चक्र - गदा - पद्म - दिव्य - शार्ङ्गधारी
नीलपद्म समान श्यामल कलेवर । पीताम्बर सतड़ित येन जलधर १
वनमाला गले दोले आर हेमहार । कपाले लम्बित मणि, शोभा कत तार
मकर कुण्डल भाल श्रवणेते दोले । ताहार उज्ज्वल आभा लेगेछे कपाले २
आजानुलम्बित बाहु, नाभि सुगभीर । चन्दने चर्च्चित अति सुठाम शरीर
श्रीवत्सलाञ्छित बक्षः अति मनोहर । गगन-उपरे येन शोभे शशधर ३
चरणे नूपुर वाजे, रुणु रुणु शुनि । नीलपद्म-कोले येन हंस करे ध्वनि
अङ्गद सहित राम मन्त्री बन्धुजन । भरत शत्रुघ्न आर यत मुनिगण ४
नारदादि गान करे सनक प्रभृति । विभीषण हनूमान सुग्रीव संहति
कि कब रामेर गुण कहिते अपार । राक्षस वनेर पशु गुणे बद्ध यार ५
त्रिभुवने नाहि देखि रामेर उपमा । चतुर्म्मुख चतुर्म्मुखे दिते नारे सीमा
हेन रामे देखि सबे आनन्दित चित । स्वयं नारायण राम संसारे पूजित ६
लक्ष्मी सरस्वती सदा करे आराधन । अयोध्याय अवतीर्ण वैकुण्ठेर धन
चारि भिते स्तुति करे बहु पारिषद । सनक ओ सनातन वाल्मीकि नारद ७

श्रीराम की सभा में मुनियों का आगमन तथा श्रीराम से वार्त्ता

(अयोध्यापुरी) मानो आजकल की वैकुण्ठपुरी बन गयी है। शंख, चक्र, गदा, पद्म, दिव्य शार्ङ्ग धनुषधारी, नील कमल जैसे श्यामल शरीर वाले, (शरीर पर) पीताम्बर ऐसा शोभित हो रहा है मानो बिजली-समेत मेघ हो ॥ १ ॥ गले में वनमाला और स्वर्ण-हार हिल रहे हैं; कपाल पर मणि लटक रही है; उसकी कितनी शोभा हो रही है। कानों में उत्तम मकराकृति कुण्डल हिल रहे हैं, उनकी आभा कपाल पर पड़ी हुई है ॥ २ ॥ (रामचन्द्र की) भुजाएँ आजानुलम्बित हैं, नाभि गहरी है, चन्दन-चर्चित शरीर बहुत ही सुन्दर है। श्रीवत्स-चिह्न से सुशोभित वक्ष अत्यन्त मनोहर है; मानो आकाश में चन्द्रमा शोभित हो रहा हो ॥ ३ ॥ चरणों में नूपुर रुन्-रुन् बजता सुनाई दे रहा है, मानो नील-कमल की गोद में हंस बोल रहे हों। अंगद-सहित मंत्री-बन्धुजन भरत-शत्रुघ्न और सारे मुनि ॥ ४ ॥ नारद-सनक आदि तथा विभीषण, हनुमान, सुग्रीव मिलकर उनका गान कर रहे हैं, राक्षस तथा वन के पशु भी जिनके गुणों से बँधे हैं, उन रामचन्द्र के गुण क्या कहूँ, कहने में उनका पार नहीं है ॥ ५ ॥ रामचन्द्र की उपमा हो सके त्रिभुवन में ऐसा कोई दिखाई नहीं देता। ब्रह्मा अपने चारों मुखों से वर्णन कर भी उसकी सीमा नहीं पा सकते। ऐसे रामचन्द्र को देखकर सभी मन में आनन्दित होते हैं। स्वयं नारायण रामचन्द्र संसार में पूजित हैं ॥ ६ ॥ लक्ष्मी-सरस्वती सदा उनकी आराधना करती हैं। वैकुण्ठ के धन भगवान अयोध्या में अवतरित हुए हैं। सनक, सनातन, वाल्मीकि, नारद और ब्रह्मा से लेकर जितने देवगण हैं;

ब्रह्मा आदि करिया यतेक देवगण । कुबेर वरुण ऊनपञ्चाश पवन
गरुड़ उपरे येन वसि नारायण । बिष्णु रूपी श्रीरामे देखिल मुनिगण ८
मुनि सकलेर छिल यतेक बासना । सेइरूप श्रीरामे देखिल सर्ब्ब जना
बैकुण्ठ सम्पद राम दशरथ-घरे । जन्मिलेन रावण बधार्थ ए संसारे ९
सेइरूप सकले देखिल चक्रपाणि । विश्वरूप देखि त्रास पाय सब मुनि
आपनार मूर्ति राम जानेन आपनि । बिष्णु-अवतार राम, जाने सब मुनि १०
मुनिगणे आगत देखिया निजधाम । गात्रोत्थान करिलेन तखनि श्रीराम
कृताञ्जलि हइया दिलेन अर्घ्य-जल । जिज्ञासेन मुनिगणे सबार कुशल ११
मुनिगण बले, राम सकल कुशल । आपनार अनामय अग्रे तुमि बल
तुमि आर लक्ष्मण जानकी ठाकुराणी । कुशले आइले देशे बड़ भाग्य मानि १२
राक्षस दुर्ज्जय बड़ बिधातार बरे । राक्षस मायाय राम कोन जन तरे
इन्द्रजित् दुर्ज्जय से त्रिभुवने जानि । लक्ष्मण मारेन तारे अपूर्ब्ब काहिनी १३
मारिले त्रिशिरा खर दूषण कबन्ध । मारीचेरे विनाशिले मायार प्रबन्ध
देवान्तक नरान्तक अतिकाय बीर । मारिले निकुम्भ कुम्भ दुर्ज्जय शरीर १४
कुम्भकर्ण बिनाशिले बड़इ भीषण । पलाय याहार नामे आपनि शमन
रावणेर सह रण के करिते पारे । देवगणे फेले त्राण मारिया ताहारे १५

कुबेर, वरुण, उनचास पवन आदि समेत अनेक पारिषद्गण उन्हें चारों ओर से घेरकर स्तुति कर रहे हैं। नारायण मानो गरुड़ पर आसीन हैं, मुनियों ने इसी भाँति विष्णु रूपी श्रीराम को देखा ॥ ७-८ ॥ मुनियों की जैसी मनोभावना की, उसी के अनुरूप सब लोगों ने राम को देखा। वैकुंठ की सम्पदा (विष्णु भगवान) राम ने इस संसार में रावण के वध-हेतु दशरथ के घर में जन्म लिया है ॥ ९ ॥ सब लोगों ने वही चक्रधारी-स्वरूप देखा तथा रामचन्द्र का विश्वरूप देखकर सारे मुनि त्रस्त हो उठे। रामचन्द्र अपनी मूर्ति (अपना रूप) स्वयं ही जानते है, मुनिगण (केवल) यही जानते हैं कि राम विष्णु के अवतार हैं ॥ १० ॥ मुनियों को अपने यहाँ आये देख रामचन्द्र तुरन्त खड़े हो गये। हाथ जोड़कर उन्हें अर्घ्य और जल प्रदान किया और सभी मुनियों से कुशल पूछा ॥ ११ ॥ मुनियों ने कहा— रामचन्द्र, सभी कुशल है। पहले अपना कुशल आप बताइए। आप और माता जानकी कुशलतापूर्वक देश लौट आये, इसे हम बड़ा भाग्य मानते हैं ॥ १२ ॥ विधाता के वर से राक्षस बड़े दुर्जय हो उठे हैं। हे राम, राक्षसों की माया का भला कौन पार पा सकता है? तीनों लोक जानता है कि इन्द्रजित् दुर्जेय था। लक्ष्मण ने उसे मारा, यह अपूर्व कहानी है ॥ १३ ॥ आपने त्रिशिरा, खर, दूषण, कबन्ध को मारा, माया का कार्य करनेवाले मारीच का विनाश किया। देवान्तक, नरान्तक, वीर अतिकाय, दुर्जेय शरीरवाले निकुम्भ, कुम्भ को मारा ॥ १४ ॥ बड़े भयंकर कुम्भकर्ण का विनाश किया, जिसके नाम से ही स्वयं यम भी भाग जाता है। रावण के साथ भला युद्ध कौन कर सकता था? उसे मारकर

मारिले ए सब वीर ताहा नाहि गणि। इन्द्रजिते ये मारिल, ताहारे बाखानि
मायाधारी इन्द्रजित् युझे अन्तरीक्षे। ना देखेन देवराज सहस्रेक चक्षे १६
इन्द्रे बान्धि लये छिल लङ्कार भितरे। आनिलेन मागिया विरिञ्चे पुरन्दरे
सेइ इन्द्रजिते ध्वंस करि एले घर। शुनिया ए सब कथा विस्मित अन्तर १७
मारिले से सब वीर युद्धे यमदूत। मारिल लक्ष्मण इन्द्रजिते से अद्भुत
श्रीराम बलेन, राक्षसेर कि विक्रम। एक एक राक्षस साक्षात् येन यम १८
रावणेर सेनापति केबा कारे चिने। रणे प्रवेशिले तारा यम-इन्द्रे जिने
रावण-भ्रातार डरे केहो नहे स्थिर। त्रिभुवन जिनि कुम्भकर्णेर शरीर १९
काटिले ना मरे से, ना धरे केहो टान। कुम्भकर्णे एड़ि इन्द्रजितेर बाखान
दश मुण्ड काटिया पाइयाछिल वर। तारे छाड़ि बाखान कि ताहार कोङर २०
अगस्त्य नामेते मुनि दक्षिणेते वास। राक्षसेर सकल जानेन इतिहास
राक्षसेर वृत्तान्त कहेन महामुनि। श्रीराम कहेन, मुनि, कह ताहा शुनि २१
कृत्तिवास पण्डितेर मधुर पाँचालि। गाहिल उत्तरकाण्डे प्रथम शिकलि

आपने देवताओं का उद्धार किया ॥ १५ ॥ इन सब वीरों को मारा —ये गणनीय नहीं हैं, परन्तु इन्द्रजित् को जो मारा है, हम उसी का बखान कर रहे हैं। मायाधारी इन्द्रजित् अन्तरिक्ष में युद्ध करता था, उसे सहस्रों आँखों से देवराज भी देख नही पाते थे ॥ १६ ॥ इन्द्र को बाँधकर वह लंका में ले गया था, तब ब्रह्मा उससे माँगकर इन्द्र को ले आये थे। उसी इन्द्रजित् को ध्वंस कर आप घर लौट आये, यह सब कथा सुन अन्तर् विस्मित हो रहा है ॥ १७ ॥ वह वीर युद्ध में यमदूत-सा था। उसने सारे वीरों को मार डाला। ऐसे इन्द्रजित को लक्ष्मण ने मार डाला। यह वास्तव में अद्भुत है। श्रीराम ने कहा, राक्षसों का विक्रम कितना प्रचण्ड था! एक-एक राक्षस मानो साक्षात् यम था ॥ १८ ॥ रावण का सेनापति कौन है, यह कौन पहचानता था (अर्थात् प्रत्येक वीर एक-एक सेनापति-सा था।) रण में प्रवेश करने पर वे यम-इन्द्र को भी जीत लेते थे। रावण के भाई के डर से कोई स्थिर नहीं रहता था; कुम्भकर्ण का शरीर त्रिभुवन के सदृश विशाल था ॥१९॥ वह काटने पर भी मरता नहीं था, कोई उसे पकड़ नही सकता था, ऐसे कुम्भकर्ण को छोड़कर आप इन्द्रजित् का बखान करते हैं? रावण ने अपने दसों सिर काटकर वर प्राप्त किया था, उसे छोड़कर उसके कुँवर का क्या बखान करते हैं?॥ २० ॥ दक्षिण में निवास करनेवाले अगस्त्य नाम के मुनि राक्षसों का सभी इतिहास जानते हैं। वे महामुनि राक्षसों का वृत्तांत कहेंगे। श्रीराम ने कहा, मुनि, कहिए, हम उसे सुनें ॥ २१ ॥ कृत्तिवास पंडित का पांचाली (कथा-गान) मधुर है। उन्होंने उत्तरकाण्ड की प्रथम कड़ी गा सुनाई है। (उनके द्वारा चरित उत्तर-काण्ड की पहली कड़ी पूरी हुई)।

लक्ष्मणेर चतुर्द्दश बत्सर ब्रह्मचर्य्य, निद्राजय ओ उपवास-बृत्तान्त

महामुनि अगस्त्य से बैसेन दक्षिणे। राक्षसेर बृत्तान्त सकल मुनि जाने २२
राक्षसेर कथा कहे से अगस्त्य मुनि। सभाखण्ड सह शुनिछेन रघुमणि
अगस्त्य बलेन राम जिज्ञासि तोमारे। किरूपे करिले युद्ध लङ्कार भितरे २३
धनुर्द्धारी तुमि आर ठाकुर लक्ष्मण। कोन कोन बीरे बध कैले कोन जन
श्रीराम बलेन, मुनि निबेदि चरणे। करिलाम बहुयुद्ध भाइ दुइजने २४
बधेछि राक्षस कत नाहाय गणन। शमन-समान-पराक्रम सर्व्वजन
रावण कुम्भकर्ण आमि करेछि निधन। अतिकाय इन्द्रजिते बधेछे लक्ष्मण २५
मुनि बले, शुन राम, निबेदि तोमारे। इन्द्रजित् बड़ बीर लङ्कार भितरे
इन्द्रे बान्धि एनेछिल लङ्कार भितरे। ब्रह्मा आसि मागिया लइल पुरन्दरे २६
थाकिया मेघेर आड़े युझे अन्तरीक्षे। मेघनाद समान बाणेर नाहि शिक्षे
ताहारे करेन बध ठाकुर लक्ष्मणे। लक्ष्मण समान बीर नाहि त्रिभुवने २७
राम कन, कि कहिले मुनि महाशय। महाबीर कुम्भकर्ण रावण दुर्ज्जय
देवता गन्धर्व्व रणे नाहि धरे टान। हेन रावण छाड़ि इन्द्रजिते बाखान २८
मुनि बले, रघुनाथ, कहि तब ठाँइ। इन्द्रजित् समे बीर त्रिभुवने नाइ
चौद्द बर्ष निद्रा नाहि याय येइ जन। चौद्द बर्ष स्त्रीमुख ना करे दरशन २९

लक्ष्मण के चौदह वर्ष ब्रह्मचर्य, निद्रा-जय और उपवास का वृत्तांत

महामुनि अगस्त्य दाहिनी ओर बैठे थे। वे मुनि राक्षसों का सारा वृत्तांत जानते थे ॥ २२ ॥ वही अगस्त्य मुनि राक्षसों की कथा कहने लगे। सभासदों समेत रघुमणि रामचन्द्र सुनने लगे। अगस्त्य ने कहा, रामचन्द्र, तुमसे पूछता हूँ, बताओ, लंका के भीतर तुमने कैसे युद्ध किया ? ॥ २३ ॥ देव लक्ष्मण और तुम धनुर्धर हो, किस-किस वीर का किस-किसने वध किया ? श्रीराम ने कहा, मुनि, आपके चरणों मे निवेदन करता हूँ, हम दोनों भाइयों ने बहुत युद्ध किया ॥ २४ ॥ कितने राक्षसों का वध किया, उनकी गिनती नहीं है। वे सभी यम के समान पराक्रमी थे। मैंने रावण-कुम्भकर्ण का वध किया। लक्ष्मण ने अतिकाय और इन्द्रजित् का वध किया ॥ २५ ॥ मुनि ने कहा, राम, सुनो, मैं तुमसे निवेदन करता हूँ। इन्द्रजित् लंका में सबसे बड़ा वीर था। वह इन्द्र को बाँधकर लंका में ले आया था, तब ब्रह्मा आकर इन्द्र को माँग ले गये थे ॥ २६ ॥ इन्द्रजित् बादलों की ओट में रहकर अन्तरिक्ष में युद्ध करता था। मेघनाद जैसा बाण चलाने में निपुण और कोई न था। देव लक्ष्मण ने उसका वध किया, तो लक्ष्मण के समान वीर त्रिभुवन में कोई नहीं है ॥ २७ ॥ राम ने कहा— मुनिवर, आप क्या कहते हैं ? महावीर कुम्भकर्ण और रावण दुर्जेय थे। देवता, गन्धर्व भी उसके साथ युद्ध में बराबरी नहीं कर सकते थे। ऐसे रावण को छोड़कर आप इन्द्रजित् का बखान करते हैं ॥ २८ ॥ मुनि ने कहा— रामचन्द्र, तुमसे कहता हूँ, इन्द्रजित् जैसा वीर त्रिभुवन में नहीं है। जो व्यक्ति चौदह वर्ष निद्रित नहीं हुआ, चौदह वर्ष जिसने स्त्री-

चौद्द वर्ष येइ वीरे थाके अनाहारे। इन्द्रजिते बधिबारे सेइ जन पारे
श्रीराम बलेन मुनि, कि कहिले तुमि। चौद्द वर्ष लक्ष्मणेरे फल दिछि आमि ३०
सीता सङ्गे चौद्द वर्ष करेछे भ्रमण। केमने सीतार मुख ना देखे लक्ष्मण
कुटीरेते बञ्चिलाम सीतार सहिते। थकित लक्ष्मण भाइ भिन्न कुटिरेते ३१
चौद्द वर्ष किरूपेते निद्रा नाहि याय। केमने एमन कथा करिब प्रत्यय
मुनि बले, सभामध्ये आनह लक्ष्मण। हय नय जिज्ञासा करह नारायण ३२
राम बले, शीघ्र याह सुमन्त्र सारथि। सभामध्ये लक्ष्मणेरे आन शीघ्र गहि
चलिला सुमन्त्र तबे श्रीरामेर बोले। लक्ष्मण बसिया आछे सुमित्रार कोले ३३
सुमन्त्र सारथि गिया नोयाइल माथा। जोड़हात करि बले श्रीरामेर कथा
सुमन्त्रेर कथा शुनि कहेन लक्ष्मण। वन-दुःख बुझि सुधावेन नारायण ३४
आगेते लक्ष्मण पीछे सुमन्त्र सारथि। प्रणाम करिल गिया यथा रघुपति
लक्ष्मणे बलेन, राम, मोर दिव्य लागे। ये कथा जिज्ञासि आमि कह सभा-आगे ३५
चौद्द वर्ष एकत्र छिलाम तिनजन। केमने सीतार मुख ना देख लक्ष्मण
तुमि फल आनिते राखिया मोरे घरे। फल दिया आपनि कि छिले अनाहारे ३६
बन मध्ये तुमि भिन्न कुटीरेते छिले। चौद्द वर्ष किरूपेते निद्रा नाहि गेले
लक्ष्मण बलेन, शुन राजीवलोचन। पापिष्ठ राबण सीता हरिल यखन ३७

मुख नहीं देखा, ॥ २९ ॥ जो वीर चौदह वर्ष अनाहारी रहा, वही व्यक्ति इन्द्रजित् का वध कर सकता था। श्रीराम ने कहा— मुनि, आप यह क्या कह रहे हैं ? हम चौदह वर्ष लक्ष्मण को फल देते रहे है ॥ ३० ॥ सीता-सहित वह चौदह वर्ष भ्रमण करता रहा है, तो कैसे लक्ष्मण ने सीता का मुख नहीं देखा ? हम सीता के साथ कुटिया में रहा करते थे, लक्ष्मण भाई दूसरी कुटिया में रहता था ॥ ३१ ॥ तो फिर वह चौदह वर्ष कैसे निद्रित नहीं रहा ? ऐसी बात कैसे विश्वास करें ? मुनि ने कहा— हे नारायण, लक्ष्मण को तुम सभा में ले आओ। बात सत्य है या नहीं, पूछो ॥ ३२ ॥ राम ने कहा— सारथी सुमन्त्र, शीघ्र जाओ, लक्ष्मण को शीघ्र ही सभा में ले आओ। श्रीराम की बात पर सुमन्त्र चला। लक्ष्मण सुमित्रा की गोद में बैठे थे ॥ ३३ ॥ सारथी सुमन्त्र ने जाकर सिर झुकाया और श्रीराम की बात बताई। लक्ष्मण ने सुमन्त्र की बात सुनकर कहा— नारायण संभवतः मुझसे वन के दुःखों के बारे में पूछेंगे ? ॥ ३४ ॥ आगे-आगे लक्ष्मण और उनके पीछे सारथी सुमन्त्र ने रामचन्द्र के पास जाकर उन्हें प्रणाम किया। रामचन्द्र ने लक्ष्मण से कहा— मेरी शपथ है, मैं जो बात पूछूं उसे सभा के समक्ष बताओ ॥ ३५ ॥ हम तीनों जन चौदह वर्ष तक एक साथ रहे। हे लक्ष्मण, तुमने सीता का मुख भला कैसे नहीं देखा ? मुझे घर पर रखकर तुम फल लाया करते थे। हमें फल देकर क्या तुम स्वयं अनाहारी रहते थे ? ॥ ३६ ॥ वन में तुम दूसरी कुटिया में रहते, चौदह वर्ष तुम कैसे निद्रित नहीं हुए ? लक्ष्मण ने कहा, राजीव-लोचन, सुनिए, जब पापी रावण ने सीता का हरण किया ॥ ३७ ॥ हम

दुइ जन भ्रमि बने करिया रोदन। ऋष्यमूके मा सीतार पाइ आभरण
सुग्रीबेर अग्रे तुमि सुधाले यखन। सीता-आभरण किना चिनह लक्ष्मण ३८
आमि ना चिनिनु प्रभु हार कि केयूर। सबे मात्र चिनिलाम चरण-नूपुर
सत्य प्रभु, एकत्र छिलाम तिन जन। श्रीचरण बिना तार ना देखि बदन ३९
चतुर्दश बर्ष निद्रा ना याइ केमने। शुन शुन रघुनाथ कहि तव स्थाने
तुमि आर मा जानकी कुटीरे थाकिते। आमि द्वार राखिताम धनुःशर हाते ४०
आच्छन्न करिल निद्रा आमार नयने। क्रोध करि निद्रारे बिन्धिनु एक बाणे
कहि शुन निद्रादेवी आमार उत्तर। ना एसो आमार काछे ए चौद्द बत्सर ४१
राम यबे राजा हबे अयोध्या पुरेते। बसिबेन मा जानकी रामेर बामेते
छत्रदण्ड धरि आमि दाँड़ाव दक्षिणे। सेइ काले एसो निद्रा आमार नयने ४२
ताहार प्रमाण प्रभु कहि तव स्थाने। तव बामे मा जानकी बसे सिंहासने
आमि दाण्डाइनु छत्र करिया धारण। हात हैते टलि छत्र पड़िल तखन ४३
सेइ काले निद्रा आसि करिल ब्यापित। ईषत् हासिया आमि हइनु लज्जित
अनाहारे चतुर्दश वर्ष छिनु बने। ताहार प्रमाण प्रभु कहि तब स्थाने ४४
आमि गिया काननेते आनिताम फल। तुमि प्रभु तिन अंश करिते सकल
पड़े कि ना पड़े मने राजीवलोचन। आमारे कहिते फल धररे लक्ष्मण ४५

दोनों रोते-रोते वन में भ्रमण करते थे, उस समय रिष्यमूक पर्वत पर माता सीता के आभूषण पाकर जब आपने सुग्रीव के समक्ष पूछा था, लक्ष्मण, ये सीता के आभूषण हैं या नहीं, पहचानो ॥ ३८ ॥ तब हे प्रभु, मैं हार या केयूर को पहचान नहीं पाया। केवल चरणों के नूपुरों को पहचान सका था। प्रभु, यह सत्य है कि हम तीनों एक साथ रहते थे, परन्तु मैं माता सीता के श्रीचरणों को छोड़ उनके बदन को न देखा ॥ ३९ ॥ मैं चौदह वर्ष कैसे निद्रित नहीं हुआ, रघुनाथ, सुनिए, आपसे बताता हूँ। आप और माता जानकी कुटिया में रहते, मैं हाथ में धनुष-बाण लेकर द्वार की रखवाली करता था ॥ ४० ॥ मेरे नयनों को जब निद्रा ने आच्छन्न कर लिया तो मैंने क्रोधित होकर निद्रा को एक बाण से बेध दिया। हमने कहा, निद्रा देवी, मेरा उत्तर सुनो, यह चौदह वर्ष तुम मेरे समीप न आना ॥ ४१ ॥ जब रामचन्द्र अयोध्यापुरी में राजा होंगे, माता जानकी रामचन्द्र के बायें आसीन होंगी, मैं छत्रदण्ड हाथ में ले दाहिनी ओर खड़ा होऊँ, हे निद्रा, उसी समय तुम मेरे नयनों में आना ॥ ४२ ॥ प्रभु, उसका प्रमाण आपसे कहता हूँ, जब आपके बायें माता जानकी सिंहासन पर बैठीं, मैं छत्र धारण कर खड़ा हुआ; तो मेरे हाथ से छत्र झुककर गिर पड़ा था ॥ ४३ ॥ उसी समय निद्रा ने आकर मुझे व्याप्त कर लिया था। मैं ज़रा-सा हँसकर लज्जित हो गया। मैं वन में चौदह वर्ष अनाहारी था, प्रभु, उसका प्रमाण आपसे कहता हूँ ॥ ४४ ॥ मैं जंगल में जाकर फल लाया करता, प्रभु, आप उसे तीन भाग करते। हे राजीवलोचन, आपको स्मरण होता है या नहीं, आप मुझसे कहते, लक्ष्मण, फल रख लो ॥ ४५ ॥ मैं उसे कुटिया में लाकर

आमि धरे राखिताम कुटीरेते आनि। खाइते कखन नाहि वल रघुमणि
आज्ञा विना केमनेते करिब आहार। चौद्द वत्सरेर फल आछये तोमार ४६
श्रीराम वलेन फल रेखेछ केमन। सभामध्ये आनि देह प्राणेर लक्ष्मण
हनूमाने आदेशिला ठाकुर लक्ष्मण। वन हैते फल आन पवननन्दन ४७
हनूमान गिया तवे देखिल कानने। चौद्द वत्सरेर फल आछे पूर्ण तूणे
देखिया फलेर तूण हनूमान वले। एइ कोन् कार्य्य हेतु आमारे पाठाले ४८
क्षुद्र एक वानरेते लये येते पारे। आमारे पाठाले प्रभु अविचार करे
एत यदि हनूर हइल अहङ्कार। हइल फलेर तूण लक्षगुण भार ४९
नाड़िते ना पारे तूण पवननन्दन। सभामध्ये उत्तरिल विरस वदन
हनू वले, प्रभु, आमि ना पारि बुझिते। ना पारि नाड़िते तूण आमार शक्तिते ५०
लक्ष्मणेर पाने चाहि राजीवलोचन। हासिया वलेन, तूण आनह लक्ष्मण
निमिषे लक्ष्मण गिया धरि वामहाते। आनिया राखिल तूण सवार साक्षाते ५१
श्रीराम वलेन, शुनि प्राणेर लक्ष्मण। चौद्द वत्सरेर फल करह गणन
एके एके लक्ष्मण से गणिल सकल। केवल न मिलिल सप्त दिनेर फल ५२
श्रीराम वलेन, शुन प्राणेर लक्ष्मण। सप्तदिन फल तुमि करेछ भक्षण
लक्ष्मण वलेन, शुन देव, नारायण। सप्तदिन फल के करेछे आहरण ५३

रख देता। हे रघुमणि, आपने कभी खाने के लिए नहीं कहा, विना आज्ञा के मैं कैसे आहार करता? चौदह वर्ष के वे तुम्हारे फल पड़े हुए हैं ॥ ४६ ॥ श्रीराम ने कहा— फल कैसे रखे हैं, प्राणप्रिय लक्ष्मण, तुम इस सभा में ला दो। देव लक्ष्मण ने हनुमान को आदेश दिया, पवन-नन्दन, वन में जाकर फल ले आओ ॥ ४७ ॥ हनुमान ने वन में जाकर देखा कि चौदह वर्ष वे फल तूण में भरे हुए हैं। फलों से भरे तूण को देखकर हनुमान कहने लगे, यह कैसे कार्य हेतु हमें भेजा है? ॥ ४८ ॥ इसे तो एक छोटा-सा वानर ले जा सकता है। प्रभु ने अन्याय कर हमें भेजा है। हनुमान को जब ऐसा अहंकार हुआ तो फल का वह तूण लाख गुना भारी हो गया ॥ ४९ ॥ पवननन्दन वह तूण हिला भी नही सके। मुरझाये वदन से वे सभा में आकर उपस्थित हुए। हनुमान ने कहा— प्रभु, मैं समझ नही पा रहा हूँ, मैं अपनी शक्ति से उस तूण को हिला भो नहीं सकता ॥ ५० ॥ तब राजीवलोचन ने लक्ष्मण की ओर देखकर हँसते हुए कहा— लक्ष्मण, तूण ले आओ। पल में ही लक्ष्मण ने जाकर बायें हाथ से उठा लाकर उस तूण को सबके सामने रख दिया ॥ ५१ ॥ श्रीराम ने कहा— हे प्राणप्रिय लक्ष्मण, सुनो, चौदह वर्ष के फलों की गणना करो। एक-एक कर लक्ष्मण ने सारे फलों की गिनती की। केवल सात दिनों के फल नहीं मिले ॥ ५२ ॥ श्रीराम ने कहा— प्राणप्रिय लक्ष्मण, तुमने सात दिन तो फल खाये है। लक्ष्मण ने कहा— देव, नारायण, सुनिए, उन सात दिन फलों का संग्रह किसने किया था? ॥ ५३ ॥ जिस दिन पिता के वियोग के समाचार से हम विश्वामित्र

येइ दिन पितार बियोग समाचारे । बिश्वामित्र आश्रमे छिलाम अनाहारे
सेइ दिन फल नाहि करि आहरण । छय दिन कथा आर शुन नारायण ५४
ये दिन हरिल सीता पापिष्ठ रावण । शोकेते आकुल फल आने कोन् जन
इन्द्रजित् ये दिन बान्धिल नागपाशे । अचैतन्ये गेल दिन फल ना आइसे ५५
चतुर्थ दिनेर कथा निवेदि चरणे । इन्द्रजित् मायासीता काटिल ये दिने
सेइ दिन शोकानले दग्ध दुइ भाइ । मने करे देख प्रभु फल आनि नाइ ५६
आर एक दिन प्रभु पड़े किना मने । पाताले महीर घरे बन्दी दुइ जने
जिज्ञासह साक्षी तार पवननन्दन । सेइ दिन फल नाहि करि आहरण ५७
शक्ति शेल ये दिन मारिल दशानन । अधीर हइला मम शोके नारायण
नित्य आनिताम फल आमि ये गोसाइ । नफर पड़िल, फल आना हलो नाइ ५८
सप्तम दिनेर कथा कि कहिब आर । ये दिन रावण वध आनन्द अपार
आनन्द-उत्सवे सब हइल चञ्चल । पुलकेते पासरिनु आनिबारे फल ५९
बिचार करिया देखि जगत गोसाइ । चतुर्द्दश वर्ष आमि किछु नाहि खाइ
तब मने नित्य फल खाइत लक्ष्मण । पूर्व्व कथा केन प्रभु हले बिस्मरण ६०
बिश्वामित्र स्थाने मन्त्र पाइ दुइ जने । तुमि भुलियाछ प्रभु आछे मोर मने
उपदेश दियाछेन विश्वामित्र ऋषि । एकारणे चतुर्द्दश वर्ष उपवासी ६१

के आश्रम में निराहार रहे, उस दिन फलों का संग्रह नहीं किया था। और छः दिन के बारे में सुनिए ॥ ५४ ॥ जिस दिन पापी रावण ने सीता का हरण किया, तो शोक से आकुल होने के कारण फल कौन लाता ? जिस दिन इन्द्रजित् ने नागपाश में बाँधा था, दिन भर अचेत रहे, इससे फल नहीं लाया जा सका ॥ ५५ ॥ चौथे दिन की बात चरणों में निवेदन करता हूँ। जिस दिन इन्द्रजित् ने माया-सीता को काटा था, उस दिन शोक रूपी अग्नि में दोनों भाई दग्ध होने के कारण हम फल नहीं लाये, प्रभु, स्मरण कर देखें ॥ ५६ ॥ प्रभु, और एक दिन की बात स्मरण है या नहीं, हम दोनों पाताल में महीरावण के यहाँ बन्दी थे। आप पूछ देखिए, उसके साक्षी पवननन्दन हैं। उस दिन फलों का संग्रह नहीं किया था ॥५७॥ जिस दिन रावण ने मुझे शक्ति मारी थी, नारायण, आप मेरे शोक से अधीर हो उठे थे। प्रभु, नित्य मैं ही फल लाता था, चूँकि यह दास पड़ा हुआ था, फल नहीं लाया गया ॥ ५८ ॥ सातवें दिन की बात क्या कहूँ— जिस दिन रावण-वध के कारण अपार आनन्द था, सब लोग आनन्द-उत्सव में चंचल हो उठे थे, उसी हर्ष में फल लाना भूल गया ॥ ५९ ॥ हे जगत् के नाथ ! आप विचार कर देखें, ये चौदह वर्ष हमने कुछ नहीं खाया। आपके मन में (यही धारणा) थी कि लक्ष्मण नित्य फल खाता है। आप पूर्व-कथा कैसे विस्मृत हो गये ? ॥ ६० ॥ हम दोनों को विश्वामित्र से मन्त्र मिला था। प्रभु, आप उसे भूल गये, मुझे स्मरण है। ऋषि विश्वामित्र ने जो उपदेश दिया था उसी कारण चौदह वर्ष उपवासी रह सका ॥ ६१ ॥ हम मुनि

पालिया मुनिर आज्ञा भ्रमिताम वने। एइ हेतु इन्द्रजित् पड़े मम बाणे
एत यदि बलिलेन ठाकुर लक्ष्मण। लक्ष्मणेरे कोले करि रामेर क्रन्दन ६२

लक्ष्मण-भोजन

एइरूपे सबाकारे बिदाय करिया। अन्तःपुरे गेला राम तिन भाये लैया
रामेर अन्दरे गिया चारि भाइ बसि। वनवास दुःख राम कन् हासि-हासि ६३
जनक नन्दिनी बैसे प्रभु-मुख हेरि। आसिला कौशल्यादेवी राम अन्तःपुरी
कोथाय आमार बाछा कमल-लोचन। चाँद-मुख हेरि तार जुड़ाक्-जीवन ६४
एइ कथा बलि माता बसिला आसने। प्रणमिला चारि भाइ मायेर चरणे
तखन जानकीदेवी बाहिर हइया। प्रणाम करिला आसि क्षिति लोटाइया ६५
बिचित्र आसन आनि आङ्गिनाते दिला। चारि भाइ सीता सङ्गे कौशल्या बसिला
चाहिया रामेर पाने कौशल्या जननी। कि कथा कहिले बापु राम रघुमणि ६६
राम कन, चौद्द-वर्ष वनवास-कथा। भरत-शत्रुघ्ने कहिते छिलाम माता
कौशल्या कहेन, बाछा, ए कथा ना शुनि। शुनिले बनेर नाम फाटये पराणी ६७
श्रीराम बलेन, माता, कर अवधान। भक्षण-सामग्री यत करह बिधान
गा तोल जननि मोर, त्यज अन्य कथा। चौद्द बत्सरेर अन्न आजि देह माता ६८

की आज्ञा का पालन करते हुए वन में भ्रमण करते, इसी कारण इन्द्रजित् मेरे बाणों से मारा गया। देव लक्ष्मण ने जब इतना कहा तो लक्ष्मण को गोद में लेकर रामचन्द्र रुदन करने लगे ॥ ६२ ॥

लक्ष्मण का भोजन करना

इस प्रकार सबको बिदा कर तीनों भाइयों को लेकर रामचन्द्र अन्तःपुर में गये। रामचन्द्र के अन्तःपुर में जाकर चारों भाई बैठे और रामचन्द्र हँस-हँसकर वनवास का दुःख कहने लगे ॥ ६३ ॥ प्रभु का मुख देखती हुई जनकनन्दिनी भी बैठी। कौशल्या देवी रामचन्द्र के अन्तःपुर में आयी। हमारा वत्स, कमललोचन राम कहाँ है ? उसका चन्द्रमुख देखकर मेरा जीवन शीतल हो ॥ ६४ ॥ यह बात कहकर माता आसन पर बैठी। चारों भाइयों ने माँ के चरणों में प्रणाम किया। तब जानकी देवी ने बाहर आकर धरती पर पड़कर उन्हें प्रणाम किया ॥ ६५ ॥ विचित्र आसन लाकर आँगन में लगा दिया। चारों भाइयों और सीता-समेत कौशल्या उस पर आ बैठी। माता कौशल्या ने राम की ओर देखकर पूछा, वत्स रघुपति राम, तुम कौन सी कथा कह रहे थे ? ॥ ६६ ॥ राम ने कहा—माता, मैं चौदह वर्ष वनवास की कथा भरत-शत्रुघ्न से कह रहा था। कौशल्या बोली, वत्स, यह कथा मैं सुनना नहीं चाहती, वन का नाम सुनते ही प्राण फटने लगते हैं ॥ ६७ ॥ श्रीराम ने कहा— माता, सुनो, जितनी भोजन सामग्रियाँ हैं उनकी व्यवस्था करो। मेरी जननी, दूसरी बातें छोड़ दो, उठो, चौदह वर्ष के अन्न, माता, आज दो ॥ ६८ ॥

शुनेछ कि लक्ष्मणेर प्रतिज्ञा-काहिनी। अनाहारे चौद्द-बर्ष आछे गुणमणि
इन्द्रजित् अतिकाय रावण-कोङर। करिब कठोर तप, ब्रह्मा दिल बर ६९
येइ बीर चौद्द बर्ष निद्रा नाहि याबे। अन्न-जल, फल-मूल किछुइ ना खाबे
निद्रात्यागी, नारीमुख येबा ना देखिबे। तोमा दोंहाकारे रणे सेइ निपातिबे ७०
से सब बिधान भाई लक्ष्मण पूरिल। तेंइ से दुरन्त दोंहे समरे मारिल
फल-मूल खेये आमि पोहाइनु निशि। चौद्द-बर्ष लक्ष्मण से आछे उपबासी ७१
चमत्कृता कौशल्या से शुनि राम-कथा। लक्ष्मणे करिला कोले चुम्बितार माथा
तोमार एहेन गुण बाछारे लक्ष्मण। सागरे कामना करि पेयेछि रतन ७२
चौद्द बर्ष आछि आमि लोचन-बिहीन। पोहाइल काल-रात्रि हैल शुभ दिन ?
आजि मोर सुप्रभात, सफल जीवन। लक्ष्मी करिबेन पाक अन्न ओ व्यञ्जन ७३
ए कथा कहिया माता चलिला अन्दरे। रामेर बचन गिया जानान सबारे
शुनि यत राणीगण सानन्द-अन्तर। सबे मिलि आसिलेन रामेर अन्दर ७४
सात शत-ऊनपञ्चाश दशरथेर राणी। नाना बिध भक्ष्य द्रब्य नाना मते आनि
प्रजालोक आने यत, संख्या किबा तार। अयोध्या नगरे द्रब्य आने भारे भार ७५
पात्रमित्र रड़ारड़ि कत द्रब्य आने। पुञ्ज-पुञ्ज राशि-राशि भूरि-भूरि माने
राणीगण दिल नाना आयोजन आनि। लक्ष्मी-बधू रान्धिबेन जनक-नन्दिनी ७६

लक्ष्मण की प्रतिज्ञा की कथा क्या तुमने सुनी है ? यह गुणमणि चौदह वर्ष अनाहारी रहा है। रावण के पुत्र इन्द्रजित् और अतिकाय ने कठोर तप किया था, ब्रह्मा ने उन्हें वर दिया था ।। ६९ ।। कि जो वीर चौदह वर्ष निद्रित नहीं होगा, अन्न-जल, फल-फूल कुछ नहीं खायेगा, निद्रात्यागी होगा, नारी का मुख नहीं देखेगा, तुम दोनों को वही युद्ध में मार सकेगा ।। ७० ।। उन सारे विधानों को भाई लक्ष्मण ने पूरा किया, इसी कारण उन दोनों दुष्टों को युद्ध में मारा है। फल-मूल खाकर हमने रातें बितायीं, परन्तु चौदह वर्ष से भाई लक्ष्मण उपवासी रहा है ।। ७१ ।। राम का वह कथन सुनकर कौशल्या चमत्कृता हो उठी और लक्ष्मण का सिर चूमकर उन्हें गोद में ले लिया। वत्स लक्ष्मण, तुम्हारा ऐसा गुण है ! वत्स लक्ष्मण, हमने सागर की कामना कर रत्न पाया है ।। ७२ ।। चौदह वर्ष हम नेत्रहीन जैसे थे। क्या अब काल-रात्रि बीती, शुभ दिन हुआ ? आज मेरा सुप्रभात है, जीवन सफल है। आज हमारी लक्ष्मी अन्न, व्यञ्जन आदि बनायेंगी ।। ७३ ।। यह कहकर माता अन्तःपुर में चली गयी और सबको राम का वचन सूचित किया। सुनकर सभी रानियों का अन्तर आनन्द से पूर्ण हो गया। सब मिलकर रामचन्द्र के अन्तःपुर में आयीं ।। ७४ ।। दशरथ की सात सौ उनचास रानियाँ नाना प्रकार के खाद्य-पदार्थ नाना प्रकार से लाने लगीं। प्रजा जितनी लाने लगी उनकी क्या गिनती है ? वह अयोध्या नगर में भार-के-भार द्रव्य लाने लगी ।।७५।। सामन्त-बन्धु-बान्धव दौड़-दौड़कर ढेर-के-ढेर, समूह-के-समूह, पुंज-के-पुंज कितने द्रव्य ला रहे थे। रानियों ने नाना प्रकार के आयोजन (द्रव्यादि) जुटा दिये, लक्ष्मी-वन्धु जनकनन्दिनी रसोई

विशाखा रेवती आर सीतार यत दासी । गन्ध आमलकी आनि सीतार गाये घसि
सुवर्ण पाटाली आनि दूर कैल मलि । रूपवती सीतादेवी हासिला बिजली ७७
दामिनी जिनिया हैल सीतार सुवेष । सोनार चिरुणी दिया आँचड़िल केश
सीताकुण्डे स्नान कैला सीता ठाकुराणी । परिला अमूल्य वस्त्र मूल्य नाहि-जानि ७८
करि वर-गति जिनि सीतार गमन । हिङ्गुल जड़ित येन दुखानि चरण
कौशल्या बलेन, शुन यत राणीगण । लक्ष्मी-वधू सीता मोर करिबे रन्धन ७९
शाशुड़ीर पदे सीता प्रणाम करिया । रन्धनेर हेतु शीघ्र बसिलेन गिया
बसिलेन बिधुमुखी रसुइ-शालेते । शाक-सूप आदि यत लागिला राँधिते ८०
तखन श्रीरामचन्द्र भरतेरे कन । पात्र-मित्र पुरजने कर निमन्त्रण
चौद्द-वर्ष आछे मोर भाइ अनाहारे । प्रथम भोजन भाइ, कराओ बिप्रेरे ८१
अयोध्याय वास करे यतेक ब्राह्मण । सबाकार वासे बासे देह आयोजन
देब-द्विजे सन्तुष्ट करह आगे भाइ । पश्चाते भोजन मोरा करिब सबाइ ८२
आज्ञामात्र भरत चलिला द्रुत गति । बिलाइल बहु धन ब्राह्मणेर प्रति
घरे घरे विस्तर सामग्री आनि दिल । राम नारायण जानि सबाइ लइल ८३
जाने जाने मुनिगण राम नारायण । ए हेतु सामग्री सब करिला ग्रहण
अपर यतेक छिल क्षत्री आदि करि । सबाकारे निमन्त्रण दिला त्वरा त्वरि ८४

बनायेंगी ॥ ७६ ॥ विशाखा, रेवती और सीता की जितनी दासियाँ थीं, सुगन्धित आँवले लाकर सीता के शरीर में मलने लगीं। सोने का पीढ़ा लाकर उस पर बिठाकर उनकी मैल दूर की। रूपवती सीता हँसती हुई बिजली-सी हो उठी ॥ ७७ ॥ सीता का सुन्दर वेश बिजली को भी लजानेवाला था। सोने की कंघी से उनके बाल काढ़े गये। सीता-देवी ने सीताकुंड में स्नान किया और जिसको मूल्य का पता नहीं ऐसा अमूल्य वस्त्र धारण किया ॥ ७८ ॥ सीता की चाल गजराज की चाल से बढ़कर थी। उनके दोनों चरण हिंगुल से मंडित थे। कौशल्या ने कहा—रानियो, सुनो, मेरी लक्ष्मी-वधू सीता रसोई बनायेगी ॥ ७९ ॥ सास के चरणों में प्रणाम कर सीता शीघ्र ही रसोई बनाने बैठी। चन्द्रमुखी सीता रसोईघर में बैठी और साग-सूप आदि बनाने लगी ॥ ८० ॥ तब रामचन्द्र ने भरत से कहा— सामन्तों, मित्रों, पुरजनों को निमंत्रित कर आओ। मेरा भाई चौदह वर्ष अनाहारी रहा है। भाई, प्रथम विप्रों को भोजन करवाओ ॥ ८१ ॥ अयोध्या में जितने ब्राह्मण बसते हैं, सबके घर-घर में सामग्री दे आओ। भाई, पहले देव-द्विजों को सन्तुष्ट करो। इसके पश्चात् हम सभी भोजन करेंगे ॥ ८२ ॥ उनकी आज्ञा पाते ही भरत द्रुतगति से चल पड़े और ब्राह्मणों को अनेक धन दान किया। घर-घर में प्रचुर सामग्रियाँ ला दीं। राम नारायण हैं —ऐसा समझकर सभी ने ग्रहण किया ॥८३॥ मुनियों ने ध्यान लगाकर जान लिया था कि राम नारायण हैं। इस कारण सारी सामग्रियाँ उन्होंने ग्रहण की। दूसरे जितने क्षत्रिय आदि लोग थे, सबको शीघ्रता से निमंत्रण दिया ॥८४॥ सुग्रीव, अंगद, विभीषण

सुग्रीव अङ्गद बिभीषण आदि क'रे। सबाइ गमन कैला रामेर मन्दिरे
महाक्षे राँधेन लक्ष्मी पञ्चाश व्यञ्जन। भाजा-तोला आदि यत ना याय गणन ८५
पिष्टक-पायस रान्धि समापन कैला। रन्धन प्रस्तुत बलि रामे जानाइला
राम कन, भरत, डाकइ सर्व्वजने। स्नान करि पङ्क्ति-क्रमे बसाओ अङ्गने ८६
भरत भाषेण रामे युडि़ दुइ हात। आसिते अपेक्षा मात्र प्रभु रघुनाथ
करिलेन आज्ञा राम तबे बसि बारे। भवने थाकिया ब्रह्मा जानिला अन्तरे ८७
मने चिन्ति शिव-प्रति कन प्रजापति। रसुइ करेन सीता, शुन पशुपति
तोमाय आमाय चल प्रसाद पाइब। लक्ष्मीर रसुइ अन्नपूर्ण करि खाब ८८
इहा शुनि महेश्वर सानन्द हइला। प्रेम भाव देखि ब्रह्मा शिवे कोल दिला
एक युक्ति करि दोंहे करिला गमन। मुहूर्त्तेके अयोध्याय आइला दुइजन ८९
छल करि दुइ देव हइला ब्राह्मण। महल-निकटे गिया दिला दरशन
महल निकटे एक रम्य स्थान छिल। ताहार निकटे गिया दु'-जने बसिल ९०
एखाने सकल लोक बैसे सारि सारि। राक्षस बानर कैसे चण्डालादि करि
देख भाइ, श्रीरामेर लीला असम्भव। राक्षसे ना करे शंका देखिया मानव ९१
हासि हासि हनूमाने बलेन श्रीराम। द्वारी हये द्वार राख, बापु हनूमान
पश्चाते प्रसाद पावे भोजनान्ते मोर। सरम भरम हनू सब बाछा तोर ९२

आदि समेत सभी राम के मंदिर में गये। निमेष मात्र में लक्ष्मी सीता ने पचासों व्यंजन राँधे। भाजी-तली कितनी चीज़ें बनीं थीं उनकी गणना नहीं हो सकती ॥ ८५ ॥ पिष्टक, (पीठा) पायस (खीर) आदि राँधकर पूरा किया। और रसोई हो चुकी है —ऐसा रामचन्द्र को सूचित किया। राम ने कहा— भरत, सभी को बुलाओ। स्नान करवाकर सबको आँगन में पंक्तिबद्ध कर बिठाओ ॥ ८६ ॥ भरत ने दोनों हाथ जोड़कर कहा— प्रभु, रघुनाथ, आने की ही प्रतीक्षा है। तब राम ने सबको बैठने की आज्ञा दी। उधर अपने भवन में स्थित ब्रह्मा ने अपने अन्तर् में जान लिया ॥८७॥ मन में चिन्तन कर प्रजापति ने शिव से कहा— पशुपति, सुनो, सीता रसोई बना रही हैं। चलो तुम-हम चलकर प्रसाद पावें। लक्ष्मी के राँधे अन्न जी भरकर खायें ॥ ८८ ॥ यह सुनकर महेश्वर आनन्दित हुए। उनका प्रेम-भाव देखकर ब्रह्मा ने शिव को आलिंगन किया। एक युक्ति सोचकर दोनों ने यात्रा की और दोनों क्षण भर में अयोध्या आ पहुँचे ॥ ८९ ॥ छल करके दोनों देवता ब्राह्मण बन गये और राजभवन के समीप जा दर्शन दिया। राजभवन के समीप एक रमणीय स्थान था। वहाँ जाकर दोनों बैठ गये ॥ ९० ॥ इधर सभी लोग पंक्तियों में बैठ गये थे, चाण्डाल आदि समेत राक्षस-वानर आदि भी बैठे। भाई, रामचन्द्र की अद्भुत लीला देखो। राक्षसों को देखकर भी वहाँ के मानव शंका नहीं करते थे ॥ ९१ ॥ हँस-हँसकर हनुमान से श्रीराम ने कहा— वत्स हनुमान, तुम द्वारपाल बनकर द्वार की रखवाली करो। इसके पश्चात् मेरा भोजन हो चुकने पर प्रसाद पाना। वत्स हनुमान, मेरा लाज-सम्मान सब तुम्हारे ऊपर है ॥ ९२ ॥ 'जो आज्ञा' कहकर हनुमान द्वार

ये आज्ञा बलिया द्वारे रहे हनूमान। अहोभाग्य, प्रसाद दिलेन प्रभु राम
अन्तर्यामी रामचन्द्र जानेन सकल। शिव ब्रह्मा दुइजने आइला महीतल ९३
आपनि अनन्त देब सुमित्रानन्दन। ब्रह्मा-शिव बसि द्वारे, जानिला तखन
कृताञ्जलि हये तबे राम प्रति कन। अतिथि थाकिते मोर नाहबे भोजन ९४
अपूर्व्व अतिथि यदि पार आनिबारे। तबे त खाइब अन्न कहिनु तोमारे
तखन डाकिला राम पवनेर सुते। अपूर्व्व अतिथि एक आनह त्वरिते ९५
बिनातिथि लक्ष्मणेर भोजन ना हय। त्वराय आनह वायु पवन-तनय
एत शुनि हनूमान करिल गमन। चौताराय आसि देखे दुइटि ब्राह्मण ९६
हनूमान बले, केबा तोमा दुइजन। ब्रह्मा बलिलेन, मोरा अतिथि ब्राह्मण
हनू बले, एकजन चल मोर साथे। भोजन करिबा गिया रामेर अतिथे ९७
बिप्र बले, हनूमान, एका नाहि याब। दु'-जने जाइया मोरा प्रसाद पाइब
हनू बले, आज्ञा नाहि येते दुइजने। एक जन चल गिया जानाव श्रीरामे ९८
श्रीराम कहिले पुनः अन्य जन यावे। आज्ञा ल'ये आसि आमि ल'ये याब हवे
एत बलि हनूमान धरे द्विज-हाते। उठ उठ द्विजवर डाके बिधि मते ९९
शिव-हस्त धरि टाने पवन कोङर। उठाते ना पारे हनू कांपे थर थर
क्रोध करि हनूमान धरिला ब्राह्मणे। टानाटानि हुड़ाहुड़ि करे दुइ जने १००

पर रहे। उन्होंने सोचा— अहोभाग्य, प्रभु राम ने प्रसाद दिया। अन्तर्यामी रामचन्द्र सब कुछ जानते थे कि शिव-ब्रह्मा दोनों धरती पर आये है ॥ ९३ ॥ देव सुमित्रानन्दन लक्ष्मण स्वय शेषनाग हैं, उन्होंने जान लिया कि ब्रह्मा-शिव द्वार पर बैठे है। उन्होंने हाथ जोड़कर राम से कहा, अतिथि के बिना भोजन किये मेरा भोजन नहीं होगा ॥ ९४ ॥ यदि किसी अपूर्व अतिथि को ला दे सकें, आप से कहता हूँ, तभी अन्न खाऊँगा। तब रामचन्द्र ने हनुमान को बुलाकर कहा, शीघ्र एक अपूर्व अतिथि को बुला लाओ ॥ ९५ ॥ अतिथि को भोजन कराये बिना लक्ष्मण का भोजन नहीं होगा। इसलिए वत्स हनुमान, तुम शीघ्र ही जाकर ले आओ। यह सुनकर हनुमान चल पड़े। चबूतरे के पास आकर देखा कि दो ब्राह्मण बैठे हैं ॥ ९६ ॥ हनुमान ने पूछा, तुम दोनों कौन हो ? ब्रह्मा ने कहा, हम अतिथि ब्राह्मण हैं। हनुमान ने कहा, एक व्यक्ति मेरे साथ चलो। रामचन्द्र की अतिथिशाला में चलकर भोजन करो ॥ ९७ ॥ विप्र ने कहा— हनुमान, मैं अकेले नहीं जाऊँगा। हम दोनों चलकर प्रसाद पा सकते है। हनुमान ने कहा— दो व्यक्तियों के जाने की आज्ञा नहीं है। एक व्यक्ति चलो और रामचन्द्र को सूचित करें ॥ ९८ ॥ यदि श्रीराम कहें तो दूसरा व्यक्ति चलना, उनकी आज्ञा लेने के पश्चात् मैं ले जाऊँगा। ऐसा कहकर हनुमान ने ब्राह्मण का हाथ पकड़ा और विधि के अनुसार 'उठो-उठो द्विजवर' कहा ॥ ९९ ॥ पवन-पुत्र ने शिव का हाथ पकड़कर खींचा। पर उन्हें उठा न पाने के कारण हनुमान थर-थर काँपने लगे। तब हनुमान ने क्रोधित होकर ब्राह्मण को पकड़ा और दोनो खींचातानी, ठेलम-ठेल करने लगे ॥ १०० ॥ दोनों वीर ठेलम-ठेल, धक्कम-धक्का

ठेलाठेलि पेलापेलि करे दुइ वीर। शेषे दु'जनेर धूलि-भूषित शरीर
ब्रह्मा कन, हनूमान, द्वन्द्व कर केने। दुइजने याव मोरा जानाओ श्रीरामे १०१
एक जने ल'ये येते नारिबे निश्चय। श्रीरामे जानाओ गिया एइ समुदय
बलिले याइब, नहे फिरे याव घरे। एत शुनि चले हनूमान चले धीरे धीरे २
ब्राह्मणेर बिबरण राघवे कहिला। शुनिया हनुर सङ्गे हरि गा तुलिला
ब्राह्मणेरा यथा रन तथा गेल राम। बिप्रप्रिय बिप्रे देखि करिला प्रणाम ३
मने मने शिव ब्रह्मा प्रणमिला रामे। दूर्ब्बादल-श्याम देखि तुष्ट हैला मने
राम कन, दुइजन गा तोल सत्वरे। आमार अतिथि हैला, चल मोर घरे ४
शुनिया रामेर कथा उठे दुइजन। दुइ बिप्र लये राम करिला गमन
हनूमान अनुमान करे मने मने। बिषम दरिद्र एइ द्विज दुइ जने ५
खाइबे सकल अन्न अनुमाने पाइ। शेषकाले मोर भाग्ये देखि अन्न नाइ
ब्राह्मणे लइया राम स्नान कराइला। सुवर्णेर पिंढ़ि आनि दोंहे बसाइला ६
बसिल यतेक लोक यथा योग्य स्थाने। बसिबार रोल उठे भेदिया गगने
रसुइ-शालाय राम गिया दाण्डाइला। भरत-शत्रुघ्न भाये कहिते लागिला ७
दुइ-भाये अन्न देह, कहिलेन हरि। जानकी कहेन रामे जोड़ हात करि
अनुमति देह यदि अनाथ-बान्धव। सवाकारे दिइ आमि अन्न आदि सब ८

करने लगे। अन्त में दोनों के शरीर धूलि-धूसरित हो गये। ब्रह्मा ने कहा— हनुमान, तुम झगड़ा किसलिए करते हो? श्रीराम को सूचित करो कि हम दोनों ही जायेंगे ॥ १०१ ॥ तुम निश्चय ही एक व्यक्ति को ले नहीं जा सकते। यह सारी बात तुम श्रीराम को जाकर सूचित करो। यदि वे कहें, तो जायेंगे, नहीं तो दोनों घर लौट जायेंगे। यह सुनकर हनुमान धीरे-धीरे चले ॥ २ ॥ उन्होंने रामचन्द्र से जाकर ब्राह्मण की बातें सुनायीं। सुनकर हनुमान के साथ हरि चल पड़े। राम वहाँ गये जहाँ दोनों ब्राह्मण थे, विप्रप्रिय राम ने विप्रों को देखकर प्रणाम किया ॥ ३ ॥ शिव और ब्रह्मा ने मन-ही-मन राम को प्रणाम किया। उनका दूर्वादल-श्याम रूप देख वे मन में बड़े तुष्ट हुए। राम ने कहा— दोनों व्यक्ति शीघ्र उठिए। हमारे अतिथि बने हैं, मेरे घर चलिए ॥ ४ ॥ राम की बात सुनकर दोनों उठे। दोनों विप्रों को साथ ले राम चल पड़े। हनुमान ने मन-ही-मन अनुमान किया, ये दोनों ब्राह्मण बड़े ही दरिद्र हैं ॥ ५ ॥ जितना चाहे उतना पाकर सारा अन्न खा डालेंगे। देखता हूँ, अन्त में मेरे भाग्य में अन्न नहीं रहेगा। ब्राह्मणों को ले जाकर राम ने स्नान करवाया, सोने के पीढ़े लाकर दोनों को बिठाया ॥ ६ ॥ सभी लोग यथायोग्य स्थान पर आ बैठे, उनके बैठने की ध्वनि आकाश पार कर गूँज उठी। राम रसोईघर में जाकर खड़े हुए और भरत-शत्रुघ्न इन दोनों भाइयों से कहने लगे ॥ ७ ॥ हरि ने कहा— दोनों भाई सबको अन्न परोसो। तब जानकी ने हाथ जोड़कर राम से कहा— हे अनाथ-बान्धव! यदि आप अनुमति दें तो मैं ही सबको अन्न आदि परोसूँ ॥ ८ ॥ 'अच्छा-अच्छा' कहकर राम ने इस पर

भाल भाल बलि रामे दिला ताहे साय। सबे ल'ये भोजने बसिला रघुराय
दुइ द्विजे बसाइला महा-समादरे। तिन भाये बसिलेन रामेर गोचरे ९

अन्न थाला लये हाते बसिलेन सीता। आगे दुइ द्विजे देन जनक-दुहिता
परे दिला राम-आदि भाइ चारि जने। तखन अपरे अन्न देन क्रमे क्रमे ११०

क्षणमाझे सबाकारे अन्न दिला माता। सबे कन मानुष नय स्वयं लक्ष्मी सीता
ब'सेछे अनेक लोक पात्र मित्र-यति। वानर राक्षस विभीषण महामति १११

सबाकारे देन अन्न-शाक-सूप आदि। शिव-ब्रह्मा बसिलेन लक्ष्मण अवधि
लक्ष्मणे कहेन राम, अन्न खाओ भाइ। मोर दिव्य आछे, अन्न ध'रे रेख नाइ १२

लक्ष्मण ये आज्ञा बलि पतिलेन हात। प्रसादान्न ताहारे दिलेन रघुनाथ
ए चौद्द-बतसर परे ठाकुर लक्ष्मण। राम-प्रसादान्न पेये करिला भक्षण १३

जय जय प्रसाद बलि सकले बसिल। आन आन, दाओ दाओ, एइ शब्द हैल
प्रथमते शाक दिया आरम्भे भोजन। तार परे सूप आदि दिलेन तखन १४

भाजा-झोल आदि करि पञ्चाश व्यंजन। क्रमे-क्रमे सब कारे कैला बितरण
शेषे अम्बलान्त ह'ले व्यंजन समाप्त। परे दधि परमान्न पिष्टकादि यत १५

लक्ष्मीर हातेर अन्न सुधार समान। ए हेन अमृत तारा कभु नाहि खान
सबे कय, ए आश्चर्य कभु देखि नाइ। एका सीता सबाकारे अन्न दिला भाइ १६

सम्मति दी और सबको ले रघुनाथ भोजन करने बैठे। दोनों ब्राह्मणों को बड़े आदर से बिठाया, तीनों भाई राम के सामने बैठे ॥ ९ ॥ अन्न की थाली लेकर सीता बैठी। जनकनन्दिनी ने पहले उन दोनों द्विजों को देकर उसके पश्चात् राम आदि चारों भाइयों को दिया। इसके पश्चात् क्रमशः दूसरों को अन्न देने लगी ॥ ११० ॥ पल में सभी को माता ने अन्न दिया। सभी कहते थे, सीता मानवी नहीं, स्वयं लक्ष्मी है। वहाँ सामन्त-वन्धु-बांधव, संन्यासी, वानर, राक्षस, महामति विभीषण आदि अनेक लोग बैठे हुए थे ॥ १११ ॥ सीता सबको साग-सूप-अन्न आदि दे रही थी। शिव-ब्रह्मा लक्ष्मण के पास बैठे थे। राम ने लक्ष्मण से कहा— भाई, अन्न खाओ, मेरी शपथ है, अन्न को रख मत देना ॥१२॥ लक्ष्मण ने 'जो आज्ञा' कहकर हाथ फैला दिया। रघुनाथ ने उन्हें प्रसाद-अन्न दिया। उस चौदह वर्ष बाद देव लक्ष्मण ने राम का प्रसादान्न पाकर खाया ॥ १३ ॥ 'जय जय प्रसाद' कहकर सभी बैठ गये। 'लाओ, लाओ, दो-दो' यह शब्द गूंज उठा। पहले साग से भोजन आरम्भ किया, इसके पश्चात् 'सूप' आदि दिये ॥१४॥ भाजी-तली चीजें रसदार वस्तुएँ आदि समेत पचासों व्यंजन क्रमशः सबको वितरित किया। अन्त में अम्ल (खट्टी सब्जी) के बाद व्यंजन समाप्त हुए, इसके पश्चात् दही, पकवान, पायस, पीठे आदि जितने हैं सब परोसे ॥ १५ ॥ लक्ष्मी के हाथों का अन्न अमृत-सा था। ऐसा अमृत उन सबने कभी नहीं खाया था। सबने कहा— ऐसी अचरज की बात तो कभी नहीं देखी थी। भाई, अकेले सीता ने सबको अन्न परोस दिया ॥ १६ ॥ इतने लोगों को

एत जने परषिते एका केबा पारे। कमला कृतार्थ कैला आमा-सबाकार
राम नारायण, सीता लक्ष्मी चन्द्रमुखी। मोरा अति भाग्यबान राम सीता देखि ११७
शिव ब्रह्मा आपनाके मेनेछेन धन्य। पवित्र हइनु मोरा, बाञ्छा हैल पूर्ण
एरूपे भोजन येइ समाप्त हइल। हेन काले हनूमान तथाय आइल १८
हनूमाने कन राम, बंस मोर थाले। रेखेछि प्रसाद बापु, खाओ यथा काले
'ये आज्ञा' बलिया हनू पेते दिल हात। 'हाते केन' बलि जिज्ञासिला रघुनाथ १९
हनू कय, अन्न प्रसाद आछे प्रभु-पाते। हाते दाओ, खेये हात मुछिब माथाते
काज नाइ, सीतानाथ, काञ्चन थालाते। तोमार प्रसाद-सुधा देह मोर हाते १२०
हनूर कथाय राम कहिलेन हासि। यत खाबे, तत दिब, खाओ तुमि बसि
जानकी दिबेन अन्न, अभाव किसेर। बसिया प्रसाद खाओ, पाबे बापु, ढेर १२१
हनू कय, खानकत पत्र आनि तबे। सुवर्णे भोजन मोर कदापि ना हबे
एत बलि चले हनू हाते ल'ये छुरि। कदली-बागाने बीर गेल शीघ्र करि २२
भाल भाल पत्र लय दीघल-दीघल। श-दुइ आकुटेर बोझा बान्धे महाबल
पत्र-बोझा हाते करि हासि हासि एल। पाकशाला निकटे उठाने ब'से गेल २३
सारि सारि सकल बिछाल आड़े-आड़े। एकेक आकुट मेले काठा युड़ि पड़े
एकुनेते बिघा-पांच युड़ि गेल पाते। बले, माता अन्न देह ढालिया इहाते २४

अकेले कौन परोस सकता है? लक्ष्मी ने हम सबको कृतार्थ कर दिया, राम नारायण हैं, सीता लक्ष्मी चन्द्रमुखी है। राम-सीता को देखकर हम सभी बड़े भाग्यवान बने ॥ ११७ ॥ शिव-ब्रह्मा ने अपने को धन्य माना है। हम पवित्र हुए, हमारी कामना पूरी हुई। इस तरह से जब भोजन समाप्त हुआ तो उसी समय हनुमान वहाँ पहुँचे ॥ १८ ॥ राम हनुमान से कहा, तुम मेरी थाली में बैठ जाओ। वत्स, मैंने प्रसाद रख छोड़ा है, समयानुसार उसे खाओ। 'जो आज्ञा' कहकर हनुमान ने हाथ फैला दिया। 'हाथ में क्यों?' रघुनाथ ने पूछा ॥ १९ ॥ हनुमान ने कहा— अन्नप्रसाद तो प्रभु की थाली में है। मुझे हाथ में दीजिए, खाकर मैं हाथ सिर पर पोछूँगा। सीतानाथ, मुझे सोने की थाली की आवश्यकता नहीं, अपने प्रसाद रूपी अमृत मेरे हाथ में दीजिए ॥ १२० ॥ हनुमान की बात पर रामचन्द्र ने हँसकर कहा— तुम जितना खाओगे उतना दूँगा। तुम बैठकर खाओ। जानकी अन्न देगी, अभाव क्या है? वत्स, बैठकर प्रसाद खाओ, ढेर मिलेगा ॥ १२१ ॥ हनुमान ने कहा— तब कुछ पत्ते ले आता हूँ। सोने में तो मेरा भोजन कभी नहीं हो पाएगा। इतना कहकर हनुमान हाथ में छूरी लेकर चले। वीर शीघ्रता से केले के बाग़ में गये ॥ २२ ॥ लम्बे-लम्बे अच्छे-अच्छे पत्ते लिये। लगभग दो सौ आकुट-पत्तों का बोझा महाबली ने बाँधा। पत्तों का बोझा हाथ में ले हँसते-हँसते आये और रसोईघर के समीप आँगन में बैठ गये ॥ २३ ॥ सभी पत्तों को क़तारों में सीधे-सीधे बिछाया। एक-एक आकुट-पत्ता बिछाने पर एक-एक कट्ठे में फैल जाता। एक ओर से उन पत्तों से पाँच बीघा जमीन ढँक गयी। हनुमान ने कहा— माता, अन्न इसी में ढाल

पूर्ण करे पत्र पूरे अन्न देह माता । शुनि अल्प अल्प हासि गा तुलिला सीता
थाले थाले अन्न सीता वहिला विस्तर । प्रफुल्ल हइया गेल हनूर अन्तर २५
दृष्टि मात्र पूरे पत्र, अन्न हैल राशि । ताहा देखि हनूमान मने बड़ खुसि
भाजा-झोल आदि यत व्यंजन आछिल । चौदिके बेष्टन करि सीता-माता दिल २६
श्रीरामे चाहिया तबे कहे हनूमान । आज्ञा पेले भोजने वसिब भगवान
'बस, बस' बलि राम दिलेन सम्मति । लक्ष्मण भरत ताहे दिला अनुमति २७
प्रसादेर थाला हनू माथे करि निल । अन्न राशि-उपरेते प्रसाद ढालिल
'जय जय प्रसाद' बलि तुलि निल हाते । ग्रास-दुइ खेये भात हात तुले माथे २८
ग्रास-कत खाइतेइ अन्न फुराइल । देखि एक दृष्टे सब चाहिया रहिल
एक राशि अन्न देख पर्व्वतेर प्राय । दण्डेकेर मध्ये हनू सारा कैल ताय २९
आनिया प्रचुर अन्न पुनः देन माता । खाओ बाछा हनूमान, कहिलेन सीता
डाकिया कहेन राम, हनूमाने चेये । लज्जा त्यजि खाओ बापु, उदर भरिये १३०
हनू कहे, हेन आज्ञा ना कर गोसाँइ । पूरिते उदर मोर बहु अन्न चाइ
हेंट माथा हैला सीता हेन वाक्य शुनि । आन तबे जननि गो, अन्न कत गुणि १३१
आल्हादिता ह'ये सीता अन्न देन आनि । हेंट माथे खाय हनू राम-वाक्य शुनि
पुनः पुनः देन सीता अन्न ओ व्यञ्जन । यत देन तत खाय पवन-नन्दन ३२

दीजिए ॥ २४ ॥ माता, समूची पत्तल को पूरा कर अन्न दीजिए । सुनकर सीता ज़रा-ज़रा हिलकर उठ खड़ी हुई । सीता थालियों में प्रचुर अन्न ढो-ढोकर ले आयीं । इससे हनुमान का अन्तर् प्रसन्न हो गया ॥ २५ ॥ उनकी दृष्टि पड़ते ही पत्तल भर जाती, अन्न की ढेरी लग गयी । वह देख हनुमान मन में बहुत खुश हुए । तली हुई, रसदार जितनी वस्तुएँ थीं, उन्हें सब ओर से घेरकर सीता माता ने दिया ॥ २६ ॥ तब श्रीराम को देखकर हनुमान ने कहा— भगवान, यदि आज्ञा हो तो भोजन में बैठूं । 'बैठो, बैठो' कहकर राम ने सम्मति दी । लक्ष्मण और भरत ने भी खाने की अनुमति दी ॥ २७ ॥ हनुमान ने प्रसाद की थाल अपने सिर पर उठा लिया और अन्न की ढेरी पर वह प्रसाद ढाल दिया । 'जय-जय प्रसाद' कहकर उसे हाथ में उठाया । दो ग्रास खाकर हाथ को माथे पर लगा लिया ॥ २८ ॥ कुछ ग्रास खाते ही अन्न समाप्त हो गया, देख सब एकटक देखते रह गये । देखो, पर्वत-जैसे ऊँचे अन्न की ढेरी को एक दंड में ही हनुमान ने समाप्त कर दिया ॥ २९ ॥ माता सीता ने प्रचुर अन्न लाकर पुनः दिया । सीता ने कहा— वत्स हनुमान, खाओ । राम ने हनुमान की ओर देख पुकारकर कहा— वत्स, लज्जा छोड़ पेट भरकर खाओ ॥१३०॥ हनुमान ने कहा— प्रभु, ऐसी आज्ञा न करें । मेरा पेट भरने के लिए बहुत-सा अन्न चाहिए । ऐसा वचन सुनकर सीता ने सिर झुका लिया । हे जननी, तब कई गुना अन्न ले आओ ॥ १३१ ॥ सीता आह्लादित होकर अन्न ला देने लगी । राम के वचन सुनकर हनुमान सिर झुका खाने लगे । सीता बार-बार अन्न-व्यंजन ला देती । जितना देती, पवननन्दन उतना ही खा

पुनः परषेन सीता, कटि करे व्यथा। भोजन संबर हनू, सीतार मनःकथा
चिनि नबात दधि दुग्ध भुञ्जे सुधाखण्डे। छले भात दिला सीता हनूमान-मुण्डे ३३
सीता बले, दधि दुग्ध खाओ चिनि नबात। अन्न ना खाइओ, माथा फुटि एल भात
सीता बले, हनूमान-माथाय बुलाओ हात। लज्जित हइल हनू माथाय देखि भात ३४
देखिया माथाय भात पवन-नन्दन। भोजन-संबरि बीर कैल आचमन
आचमन करि सबे बसिया आसने। कर्पूर ताम्बुल निल मुखेर शोधने ३५
प्रसाद पाइया महानन्द हैला हर। प्रेम भरे सदाशिव हैला दिगम्बर
प्रसाद पाइया ब्रह्मा मने आनन्दित। शिबेर डम्बुरे गाय राम-नाम गीत ३६
सम्मुखे देखेन राम ब्रह्मा-त्रिलोचन। दुइ हाते आलिङ्गिला कमल-लोचन
ब्रह्मा बले, विष्णु प्रसाद परम पवित्र। दर्शन करिया रामे पूत हैल नेत्र ३७
प्रेम भरे तिन भाइ कैला आलिङ्गन। बिदाय हैया गेला ब्रह्मा-त्रिलोचन
बानर-राक्षस बासे गेल सर्व्वजन। पात्र-मित्र-प्रजागण आपन-भबन ३८
लक्ष्मण भोजने चौद्द भुवने उल्लास। लक्ष्मण-भोजन बिरचिल कृत्तिबास

शिब बिबाहेर सम्बन्ध ओ लङ्कार उत्पत्ति

अगस्त्ये जिज्ञासे राम कमललोचन। कार तरे कैल ब्रह्मा लङ्कार सृजन ३९

जाते ॥ ३२ ॥ सीता पुनः परोसती, उनकी कमर दुखने लगी। सीता के मन में यह बात आने लगी, हनुमान खाना समाप्त करो। चीनी, खीर, दही, दूध, मिसरी खा रहे थे, छल से सीता ने हनुमान के सिर पर भात डाल दिया ॥ ३३ ॥ सीता ने कहा— दही, दूध, चीनी, खीर, खाओ पर अन्न मत खाना, सिर फोड़कर भात निकल आया है ॥ ३४ ॥ पवननन्दन ने अपने सिर पर भात देखकर, भोजन समाप्त कर आचमन किया। सब आचमन कर आसनों पर बैठ, मुख-शुद्धि हेतु कर्पूर, ताम्बूल लिये ॥ ३५ ॥ शिव प्रसाद पाकर बड़े आनन्दित हुए। प्रेम से भर उठने के कारण सदाशिव दिगम्बर हो गये। प्रसाद पाकर ब्रह्मा मन में आनन्दित हुए। शिव का डमरू राम-नाम गीत गाने लगा ॥ ३६ ॥ रामचन्द्र ने अपने सामने त्रिलोचन शिव और ब्रह्मा को देखा। कमल-लोचन राम को दोनों हाथों से आलिंगन कर ब्रह्मा ने कहा, विष्णु का प्रसाद परम पवित्र है। राम के दर्शन से नेत्र पवित्र हो गये ॥ ३७ ॥ प्रेम से भरकर तीन भाइयों ने आलिंगन किया। ब्रह्मा और शिव विदा ले चले गये। वानर-राक्षस सभी अपने-अपने निवास को गये। सामन्त, मित्र, प्रजा अपने-अपने भवनों को चले गये ॥ १३८ ॥ लक्ष्मण के भोजन से चौदह भुवनों में उल्लास हुआ। कृत्तिवास ने इस लक्ष्मण-भोजन की रचना की है।

शिव-विवाह का सम्बन्ध और लंका की उत्पत्ति

अगस्त्य से कमल-लोचन राम ने पूछा— ब्रह्मा ने किसके लिए लंका का सृजन किया था? ॥ १३९ ॥ मुनि ने कहा— पुराणों में उल्लिखित

मुनि वलिलेन शुन पुराण-उत्तर । लङ्कार सृजन हेतु शुन रघुवर
सुमेरु पवने वाद अयुत वत्सर । पवन लङ्घिते नारे सुमेरु शिखर १४०
तिन शृङ्गे पर्व्वत से जुड़िल गगन । सुमेरुते चन्द्र सूर्य्येर नाहिक गमन
सकल पर्व्वत जिनि उमेते प्रवीण । नित्य नित्य सूर्य्य यान करि प्रदक्षिण १४१
हिमालय नन्दिनी से जन्मिला पार्व्वती । ताहाँ के करिते विभा गेला पशुपति
शिव आराधिया तप कैला तपोवने । शिव पार्व्वतीर हैल शुभ दरशने ४२
काहार दुहिता तुमि काहार वा नारी । ए विषम स्थाने तुमि केन एकेश्वरी
हस्ती सिंह व्याघ्र आर महिष शूकर । हेन स्थाने केन तुमि एले एकेश्वर ४३
शङ्करेर कथा शुनि कन ततक्षण । निवेदन करि कथा, शुनि दिया मन
हिमालय-कन्या आमि, शुनि महाशय । हर लागि तप करि कारे मोर भय ४४
हासेन वचन शुनि देव शूल पाणि । मिलिल शङ्कर-वर, शुनह भामिनि
अधिष्ठित ह'ये वर निजे दिला वर । शिव गेला निज पुरे, देवी एल घर ४५
ब्रह्मारे कहिला शिव एसव उत्तर । मोर काजे याह तुमि हिमालय घर
ब्रह्मा विष्णु कुवेर ओ वरुण पवन । अष्ट ऋषि चले आर यत देवगण ४६
एकत्र हइया गेला हिमालय-घर । वाहिरिला हिमालय हरिष-अन्तर
वसिते आसन दिल पाद्य-अर्घ्य जल । जोड़ हाते देवगणे पुछेन कुशल ४७

उत्तर सुनो, हे रघुवर, लंका के सृजन का कारण सुनो। सुमेरु और पवन में दस हज़ार वर्ष तक विवाद चला। पवन सुमेरु शिखर को पार नहीं कर पाता था ॥ १४० ॥ उस पर्वत ने तीन शिखरों से समूचे आकाश को घेर लिया। सुमेरु में सूर्य-चन्द्र का जाना वन्द हो गया। सभी पर्वतों को जीतकर उदय में प्रवीण सूर्य नित्य उसकी प्रदक्षिणा कर जाते थे ॥ १४१ ॥ हिमालयनन्दिनी पार्वती के जन्म लेने के पश्चात् उनसे विवाह करने हेतु पशुपति शिव गये। पार्वती ने शिवजी की आराधना कर तपोवन में तपस्या की। वहीं शिव ने पार्वती को शुभ दर्शन दिया ॥ ४२ ॥ पूछा, तुम किसकी दुहिता हो? किसकी नारी हो? ऐसे विषम स्थान में तुम अकेली क्यों हो? हाथी, सिंह, बाघ और भैंसे-सूअर आदि जहाँ रहते है —ऐसे स्थान में तुम अकेली क्यों आयी? ॥४३॥ शंकर की बात सुनकर पार्वती ने उसी क्षण कहा— मैं कथा निवेदन करती हूँ, मन देकर सुनें। सुनिए महाशय, मैं हिमालय की कन्या हूँ। जबकि शंकर के लिए तपस्या कर रही हूँ तो मुझे किसका भय है? ॥४४॥ देव शूलपाणि शंकर सुनकर हँसे— भामिनी, सुनो, शंकर तो वर के रूप में तुम्हें मिल चुके हैं। वर के रूप में अधिष्ठित होकर शिव ने स्वयं वरदान दिया। शिव अपने पुर को गये, देवी अपने भवन लौट आयीं ॥ ४५ ॥ आगे चलकर शिव ने ब्रह्मा से यह सब वताकर कहा कि मेरे कार्य हेतु आप हिमालय के यहाँ जाइए। ब्रह्मा, विष्णु, कुवेर और वरुण, पवन समेत आठ ऋषि और सभी देवता मिलकर, ॥ ४६ ॥ हिमालय के यहाँ गये। हिमालय अन्तर् में हर्षित हो (स्वागत हेतु) निकले। उन्होंने सवको बैठने को आसन दिये, पाद्य-अर्घ्य-जल दे हाथ जोड़ देवगण से कुशल

बलेन, कि हेतु तोमा-सबा आगमन। बड़ भाग्य मानि आजि सफल जीवन
ब्रह्माये बलेन गिरि एतेक उत्तर। शुनिया हइला ब्रह्मा सानन्द-अन्तर ४८

ब्रह्मा बले, शुन मोर कथार प्रबन्ध। मोर भाइ शिवे कर कन्यार सम्बन्ध
बिलम्ब ना कर देख बेला शुभक्षण। अङ्गीकारे तुष्ट होक यत देवगण ४९

हिमालय बले, मोर जीवन सफल। महादेवे कन्या दिब बड़इ मङ्गल
बिनय बचने गिरि करे परिहार। शिवे कन्या दिव आमि, कैनु अङ्गीकार १५०

रबि सोम भौम आर बुध बृहस्पति। शुक्र शनि राहु केतु नवग्रह-पति
यबे गौरी तपस्या करिल तपोबने। भबानी शङ्कर बिभा जाने ग्रहगणे १५१

शुभक्षणे ग्रहगण हैया समवाय। केह बिघ्न ना करिब गौरीर बिभाय
एत वाक्य हिमालय कैला देवपाशे। बर एले बिभा दिब लग्न तार किसे ५२

अङ्गीकार कैला गिरि आपनार मुखे। देवगण गेला घर निज मनः सुखे
कन्या देखि देवगण कैला आगुसार। त्रिभुबने हरि ध्वनि जय जय कार ५३

सब कथा कहे गिया शङ्करेर ठाँइ। बिबाहेर आयोजन करह शिवाइ
कालि बिभा हबे तब, आजि अधिबास। शङ्करेर सम्बन्ध ये गाइल कृत्तिबास ५४

पूछा ॥ ४७ ॥ कहा— आप सबका आगमन किस हेतु हुआ है ? मैं अपना बड़ा भाग्य मानता हूँ, आज मेरा जीवन सफल हो गया। जब पर्वतराज हिमालय ने ब्रह्मा से ऐसा कहा तो सुनकर ब्रह्मा का अन्तर् आनन्दित हो उठा ॥४८॥ ब्रह्मा ने कहा— मेरे कथन का तात्पर्य सुनो, मेरे भाई शिव के साथ अपनी कन्या का सम्पर्क कर दो। विलम्ब न करो, समय की शुभ घड़ी, लग्न आदि देखो। तुम्हारी स्वीकृति से देवगण तुष्ट हों ॥ ४९ ॥ हिमालय ने कहा— मेरा जीवन सफल है। महादेव को कन्या दूँ, यह तो बड़ा ही मंगल है। विनय-वचन से गिरि हिमालय ने उनके संशय का निवारण करते हुए कहा— मैं अंगीकार करता हूँ कि शिव को कन्या प्रदान करूँगा ॥ १५० ॥ जब गौरी ने तपोवन में तपस्या की थी तो रवि, सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु तथा नवग्रहों के स्वामी ने यह जान लिया था कि भवानी और शंकर का विवाह होगा ॥१५१॥ शुभ लग्न में ग्रहगणों ने मिलकर विचार किया कि गौरी के विवाह में कोई विघ्न नहीं डालेंगे। यह बात देवगणों से कहकर हिमालय ने कहा— वर के आने पर विवाह कर दूँगा, अब इसमें लग्न की क्या बात है ? ॥५२॥ जब गिरिराज ने अपने मुख से अंगीकार किया तो देवगण मन में संतुष्ट हो अपने-अपने निवास को चले गये। कन्या देखकर देवगण आगे बढ़ आये और त्रिभुवन में उनकी हरि-ध्वनि और जय-जयकार छा गया ॥ ५३ ॥ उन्होंने सारी बात जाकर शंकर से कही— शिवजी, विवाह का आयोजन कीजिए। आज अधिवास (विवाह का पहला दिन) है। कल विवाह अवश्य होगा। कृत्तिवास शंकर के विवाह-संबंध की यह कथा गाते हैं ॥ १५४ ॥

शिवेर अधिवास-द्रव्य प्रेरण

अधिवास द्रव्य सब पाठान शङ्कर। नारदेर सङ्गे दिला भीमा ये नफर
अधिवास द्रव्य दिला कत शत भार। रसाल कांठाल गुड़ नारिकेल आर ५५
खदि दधि कला दिला पाट-पाटाम्बर। लेखा जोखा नाइ द्रव्य चलिल विस्तर
अधिवास द्रव्य पाठाव नारदेरे दिया। सव द्रव्य नियोजे भीमारे आज्ञा दिया ५६
हिमालय घरे नारद याय आगु हये। पाछे पाछे याय भीमा सव द्रव्य लये
आगु हये गेला नारद हिमालय घर। वाहिरिला हिमालय सानन्द अन्तर ५७
भारीर सङ्गेते याय शिवेर नफर। भीमार पाछु पाछु याय यत अनुचर
सन्देश कदली देखि आनन्दित मन। मुद्रा माङ्गि भाल द्रव्य करिल भक्षण ५८
अनेक सन्देश कला करिल आहार। खाइल कांठाल आम्र सहस्रेक भार
खाइते खाइते पथे याय हर्ष हैया। अर्द्धा-अर्द्धि खेये हाण्डि पूरे वालि दिया ५९
नदी वक्षे देखे यत निरमल वालि। शुखना वालिते सव पूरिल पातिली
शुखना बालिते सब पातिल पूरिया। भार पाछु पाछु भीमा आइला धाइया १६०
नारद बलेन, केन देरी एत क्षण। भीमा वले, माठे पाइ झड़-वरिषण
बड़ दुःख पेनु आमि झड़-वरिषणे। पलाल आमारे एड़ि यत भारीगणे १६१

शिव का चढ़ावे की सामग्री भेजना

शिव ने विवाह के अगले दिन चढ़ावे की सारी वस्तुएँ भेजीं। नारद के साथ भीमादास को भी भेज दिया। चढ़ावे की सामग्रियाँ कई सौ भार थी। उनमें आम, कटहल, गुड़, नारियल, ॥१५५॥ खैर, दही, केले, पाट और पाटम्बर (रेशमी कपड़े) दिये। इतनी प्रचुर वस्तुएँ भेजी जिनका लेखा-जोखा नहीं। नारद द्वारा सारी वस्तुएँ भेजीं, भीमा को आदेश दे सारी वस्तुएँ सहेजीं ॥ ५६ ॥ नारद आगे-आगे हिमालय के घर चले। पीछे-पीछे सारी सामग्रियाँ लिये भीमा चला। नारद आगे-आगे चलकर हिमालय के यहाँ पहुँचे। हिमालय अन्त में आनन्दित होकर बाहर आये ॥५७॥ भारवाहकों के साथ शिव का दास भीमा आया, उसके पीछे-पीछे सारे अनुचर आये। संदेश और केले देख उनके मन में बड़ा आनन्द हुआ। संकोच छोड़कर उन सबने अच्छे द्रव्य खाये ॥ ५८ ॥ उन सबने प्रचुर संदेश और केले का आहार किया। आम-कटहल हज़ारों भार खाये। खाते-खाते वे हर्षित हो मार्ग में निकल आये। आधा-आधा खाकर रेत से खाली हाँड़ियों को भर दिया ॥ ५९ ॥ नदी के वक्ष पर जितनी निर्मल रेत देखी, उस सूखी रेत से सभी पतीलियों को भर लिया, सूखी रेत से सारी पतीलियाँ भरकर, भारवाहकों के पीछे-पीछे भीमा दौड़ा आया ॥ १६० ॥ नारद ने कहा— इतनी देर क्यों किया ? भीमा ने कहा— मैदान में तूफ़ान-वर्षा में पड़ गये। बस तूफ़ान-वर्षा में हमें बड़ा ही कष्ट हुआ। हमें छोड़कर सभी भारवाहक भाग गये ॥ १६१ ॥ हम

तपोबन मध्ये आसि प्रवेसि धाइया। सब भारी पलाइल भार फलाइया
नारद बलेन, कार्य्ये नार उपेक्षण। याहाते शिबेर कार्य्य हय सुशोभन ६२
नारद-बचने गिरिराजे नाहि हेला। आङ्गि नाते टानाइल पाटेर छाङला
चाँदोया टाङ्गाल ताहे मुकुता झालर। आङ्गिनार थामे बान्धा सोनार चादर ६३
मध्य खाने घट तार करिल स्थापन। अधिबास-द्रव्य सब आनाल तखन
शुक्ल धुति, शुक्ल पाटा अति परिपाटि। हाते कुश बँसे गिरि लये ताम्र बाटि ६४
हेमन्त सङ्कल्प करे बेला शुभक्षण। बेदध्वनि करे तबे यत मुनिगण
ततक्षणे बाहिरिल गौरी चन्द्रमुखी। देबी के देखिया सब देब हैल सुखी ६५
हाते पुष्प कैला देबी पूजा देवतार। गन्ध दिया कैला मुनि जय जयकार
मङ्गल उच्चारि गन्ध दिला कन्या माथे। मङ्गल-बिहित कर्म्म-सूत्र बान्धे हाते ६६
तबे शङ्ख पराइला चारु रूप देखि। कन्या के उठाते तबे एल सब सखी
मङ्गल द्रब्य लइया आसे सखिगण मिलि। कन्या-अधिबास करे दिया हुलाहुलि ६७
अधिबास साङ्ग हैल, सिद्ध सब काज। हेमन्ते मेलानि मागि चले मुनिराज
एयोगणे मिष्टि दिते भाङ्गिल पातिली। पातिल-भितरे तबे देखे सब बालि ६८
हाँड़ीर भितरे बालि सर्व्वलोक हासे। पार्व्वतीर अधिबास गाय कृत्तिबासे

दौड़कर तपोवन में घुस गये। सभी भारवाहक भार फेंककर भाग गये। नारद ने कहा— अपने कार्य में उपेक्षा करनी नहीं चाहिए। ऐसा करो जिससे शिव का कार्य सुन्दर रूप से सम्पन्न हो ॥ ६२ ॥ नारद के वचनों की अवहेलना गिरिराज ने नहीं की। उन्होंने आँगन में पाट का मण्डप बनवाया। उसमें चँदोवा लगाया, जिसमें मोतियों की झालर लगी थी। आँगन के खम्भों में सोने के चद्दर मढ़े थे ॥ ६३ ॥ उसके बीच में घट-स्थापना की। और तब वहाँ चढ़ावे की चीज़ें मँगवायी। श्वेत धोती, श्वेत पाटम्बर बड़े ही सुन्दर ढंग से पहनकर हाथ में कुश और ताँबे की कटोरी लिये गिरि हिमालय बैठे ॥ ६४ ॥ शुभ क्षण में हेमन्त ने संकल्प किया, सारे मुनियों ने वेदमंत्रों की ध्वनि की। उसी क्षण चन्द्रमुखी गौरी बाहर आयी। देवी को देख सभी देवता सुखी हुए ॥६५॥ हाथों में फूल ले देवी ने देवताओं की पूजा की। गंध-धूप लगाकर मुनियों ने जय-जयकार किया। मंगल-उच्चारण के साथ कन्या के सिर पर सुगन्धित द्रव्य दिया तथा हाथ में मंगल विहित कर्म-सूत्र बाँध दिया ॥ ६६ ॥ इसके पश्चात् सुन्दर रूप देख शंख की चूड़ियाँ पहनायीं। तब कन्या को उठा ले जाने के लिए सारी सखियाँ आयीं! सखियाँ मिलकर मंगल-द्रव्य ले आयीं, उलुध्वनि (मुँह से आवाज़) कर कन्या का चढ़ावा दिया ॥ ६७ ॥ चढ़ावा समाप्त हुआ, सारे कार्य सिद्ध हो गये। हेमन्त से विदा माँग मुनिराज नारद चल पड़े। वहाँ आयी हुई महिलाओं को मिठाइयाँ देने के लिए जैसे ही पतीलियाँ तोड़ी तो पतीलियों के अन्दर सारी-की-सारी रेत ही देखी ॥ १६८ ॥ पतीलियों के अंदर रेत ही देखकर सब लोग हँसने लगे। पार्वती के विवाह के चढ़ावे की कथा कृत्तिवास गा रहे हैं।

कुटुम्ब समागम ओ बरानुगमन

प्रभात हइल रात्रि प्रत्यूष विहाने। देशे देशे पाठाइल कुटुम्ब जानाने ६९
चारिदिके गिरिगणे दिला आमन्त्रण। आनन्दित देवगण ए तिन भुवन
आजि यावे कालि एस, ना कर विलम्व। चारि दिके धेये आन सकल कुटुम्ब १७०
सबाके जानान देह गृह-व्यवहार। आमन्त्रण पेले सबे हवे आगुसार
उदय ओ अस्तगिरि एल दुइजन। नीलगिरि मयभङ्ग एल नारायण १७१
आसिल अजय-मुख कलिङ्ग केशरी। रुद्रदास धर्म्मदास महीदास गिरि
विन्दु मेघ एल आर कैलाश शिखर। शरासन ओ अञ्जन पर्व्वत श्रीधर ७२
बर्द्धमान कुमुद्वान से गन्धमादन। ऋष्यमूक-गिरि आर मलय चन्दन
त्रिकूट पर्व्वत एल आर हेमकूट। चन्द्रकूट बज्रकूट एल सूर्य्यकूट ७३
धवल ओ गोवर्द्धन वराह वासत। वसन्त श्रीमन्त एल मैनाक-पर्व्वत
त्रिभुवनेर गिरिगण हैल आगुसार। पर्व्वत चलिते हैल संसार आंधार ७४
आइल पर्व्वत सव परम हरिषे। वुझिया आपन कार्य्य सुमेरु ना आसे
लड़िला मेनका आर हेमन्त नन्दन। सुमेरु के आने गिया करिया यतन ७५
सुमेरु हेमन्त पदे कैल नमस्कार। वसिते आसन दिल, कैल पुरस्कार
मनोगामी गिरिगण धरि मुनिवेश। विचित्र नगरे घरे करिल प्रवेश ७६

कुटुम्बी जनों का समागम और बारात की यात्रा

रात बीती, प्रत्यूष होते ही हिमालय ने कुटुम्बी जनों को सूचना देने हेतु देश-देश में दूत भेजे ॥ १६९ ॥ चारों ओर के पर्वतों को आमंत्रण भेजा। देवगण तीनों भुवनों में आनन्दित हो उठे। हिमालय ने कहा—आज जाकर कल ही लौट आना, विलम्ब न करो, वेग से जाकर सभी कुटुम्बी जनों को ले आओ ॥ १७० ॥ सबको घर-परिवार का व्यवहार सूचित करना, आमंत्रण पाने पर सभी आगे आयेंगे। उदय और अस्तगिरि दोनों आये। नीलगिरि, मयभंग, नारायण भी आये ॥१७१ ॥ अजय-मुख, कलिग-केसरी आये। रुद्रदास, धर्मदास, महीदास गिरि आये। बिन्दुमेघ और कैलास शिखर, शरासन, अंजन पर्वत, श्रीधर आये ॥ ७२ ॥ वर्धमान, कुमुद्वान, गन्धमादन, ऋष्यमूक पर्वत और मलयचन्दन, त्रिकूट पर्वत और हेमकूट पर्वत आये। चन्द्रकूट, वज्रकूट, सूर्यकूट भी आये ॥७३॥ धवल, गोवर्धन, वराह, वसन्त श्रीमन्त, मैनाक पर्वत भी आये। त्रिभुवन पर्वत आगे बढ़े, पर्वतों के चलते संसार अँधेरा हो गया ॥ ७४ ॥ परम हर्ष से पर्वतगण आये। अपना कर्तव्य स्मरण कर केवल सुमेरु नहीं आया। मेनका और हेमन्तनन्दन आगे बढ़े और सुमेरु को बड़े यत्न से ले आये ॥ ७५ ॥ सुमेरु ने हिमवन्त के चरणों में प्रणाम किया, हिमालय ने उसे बैठने का आसन दे सम्मानित किया। मनोगामी पर्वत-गण मुनि-वेश धारण कर विचित्र नगरों और घरों में प्रवेश किया ॥ ७६ ॥ बैठने को

बसिते आसन दिल पाद्य अर्घ्य जल। स्नान पान करि सबे हइल शीतल
नाट्य गीत देखि शुनि अति कुतूहल। केह बेद पड़े, केह पड़ये मङ्गल ७७
नाना शुभ नाट्य गीत हिमालय घरे। परम आनन्दे लोक आपना पासरे
गिरिराज-घरे बाजे यतेक बाजन। होथा महारङ्गे आछे यत देवगण ७८
गङ्गारे आनिते गेला सुमन्तेर घरे। रन्धन करिले गङ्गा देबे भोजन करे
गङ्गारे लइया याबे यतन करिया। रन्धन करिले गङ्गा राखिह आनिया ७९
देबेर बचन आमि नाहि करि आन। गङ्गाके थाकिते बेला आन मोर स्थान
एतेक शुनिया हर बलेन बचन। रन्धन करिले गङ्गा देबेर भोजन १८०
रन्धन भोजने बेला हैल अबसान। करुणा-आधार हर गङ्गा लये यान
सुमन्त क्रोधित देखि बेला अवसान। गङ्गा लये गेला हर सुमन्तेर स्थान १८१
गङ्गा देखि सुमन्त रहेन कोप मने। एतेक बिलम्ब तोर हैल कि कारणे
तोर रूप देखे यत देबेर समाज। देबेर रान्धुनी हैते ना बासिलि लाज ८२
किमते देवता देर करिलि रन्धन। तोर रूप यौबन देखिल देविगण
केह बा देखिल तोर सुन्दर बदन। केह बा देखिल तोर युगल नयन ८३
अन्न दिते गेलि तुइ यार यार पाश। सेइ सर्व देवे करे तोरे अभिलाष
अपबित्रा तुइ केन एलि मोर स्थान। स्वगौरबे याह, नहे पाबि अपमान ८४

आसन दिया, पाद्य-अर्घ्य-जल दिया, स्नान-पान कर सभी शीतल हुए। नाट्य-गीत देख-सुनकर सबको बड़ा कुतूहल हुआ। कोई वेद पढ़ता था, कोई मंगलाचार करता था ॥ ७७ ॥ हिमालय के यहाँ नाना प्रकार के गीत-मंगल-नाट्य आदि हो रहे थे। परम आनन्द से लोग आत्म-विस्मृत हो गये थे। गिरिराज के यहाँ सभी प्रकार के बाजे बज रहे थे, वहाँ सभी देवगण बड़े आनन्द में थे ॥ ७८ ॥ शिव सुमन्त के यहाँ से गंगा को लाने गये, क्योंकि गंगा के रसोई बनाने पर ही देवगण भोजन करेंगे। "गंगा को यत्न से ले जाओ, रसोई बनाने के बाद गंगा को यहाँ रख जाना ॥ ७९ ॥ देवता के वचन मैं अमान्य नहीं करता, पर सूरज डूबने के पहले ही गंगा को यहाँ पहुँचा जाना।" यह सुनकर शिव ने कहा— गंगा के रसोई बनाने पर ही देवगण भोजन करेंगे ॥ १८० ॥ रसोई बनाते, भोजन करते सूरज डूब गया। करुणाधार शिव गंगा को पहुँचाने गये। सूरज डूब गया देख सुमन्त क्रोधित हो गया। तभी गंगा को ले शिव सुमन्त के यहाँ पहुँचे ॥ १८१ ॥ गंगा को देख सुमन्त मन में क्रोधित हो रहा। तुझे इतना विलम्ब किसलिए हुआ ? समूचे देव-समाज ने तेरा रूप देखा। देवों की रसोई बनानेवाली बनते तुझे लज्जा नहीं आयी ? ॥ ८२ ॥ किस तरह से तूने देवताओं की रसोई बनाई, तेरा रूप-यौवन देवों ने देखा। किसी ने तेरा सुन्दर बदन देखा, किसी ने तेरे युगल-नयन देखे ॥ ८३ ॥ तू अन्न देने जिसके पास गयी है, उसी ने तुझे पाने की कामना कर ली है। री अपवित्रा, तू मेरे यहाँ क्यों आयी ? अपने गौरव को बचाकर चली जा, नहीं तो अपमान होगा ॥ ८४ ॥

क्रोधे मुनि करिल से गङ्गारे वर्ज्जन। हासिया गङ्गारे शिरे धरे त्रिलोचन
महादेव-शिरे रहे गङ्गा गोसांइनी। गङ्गारे धरिया शिरे हासे शूलपाणि ८५
सर्व्वाङ्गे विभूति शोभे गङ्गा शोभे शिरे। गलाते वासुकी नाग, भाले शशधरे
कखनो थाकेन गङ्गा महादेव-शिरे। कखनो वा ब्रह्मा-कमण्डलुर भितरे ८६
स्वर्ग हैते गङ्गा से आसिला मर्त्यलोके। गङ्गार महिमा लोक जाने दुःख शोके
यत किछु पाप लोक करे महीतले। सर्व्व पाप हरे स्नान कैले गङ्गा जले ८७
महादेव अधिवास कराय देवगण। ब्रह्मार वचने वैसे देव नारायण
प्रातःकाले देवलोके आमन्त्रण करि। स्नान-सन्ध्या-नान्दीमुख कैला त्रिपुरारि ८८
स्नान करि प्रवेशिला रन्धन-शालाते। देवगण एक ठांइ वैसे भोजनेते
मधुर अमृत तुल्य गङ्गार रन्धन। महासुखे देवलोक करिला भोजन ८९
नानाछन्दे वाजे सेथा विविध वाजन। नाना वेशे नाचे तथा यत देवगण
करेन शिवेर वेश निजे नारायण। सुवर्ण किरीट शिरे वाहुते कङ्कण १९०
ललाटे शोभित चन्द्र शिरे सुरेश्वरी। वृषपृष्ठे चापि तवे चले त्रिपुरारि
राजहंस रथे चापि चले प्रजापति। ऐरावते चापिया चलिला सुरपति १९१
मकरे वरुण चड़े, महिषे शमन। छागले चड़ेन अग्नि हिरणे पवन
गरुड़े चड़िया चले निजे नारायण। ये यार वाहने चड़ि चले देवगण ९२

मुनि ने क्रोधित हो गंगा का परित्याग कर दिया। तब शिव ने हँसकर गंगा को सिर पर धारण कर लिया। गगादेवी महादेव के सिर पर रहीं। गंगा को मस्तक पर धारण कर शिव हँसने लगे ॥ ८५ ॥ उनके सर्वांग में विभूति, सिर पर गंगा, गले में वासुकी नाग, कपाल पर चन्द्रमा सुशोभित थे। गंगा कभी शिव के मस्तक पर रहती, कभी ब्रह्मा के कमण्डल में रहतीं ॥ ८६ ॥ स्वर्ग से गंगा मर्त्यलोक में आयी, गंगा की महिमा सारा लोक दुःख-शोक में जानता है। संसार में लोग जितना पाप करते हैं, गंगाजल में स्नान करने पर गंगा सभी पाप हरण कर लेती है ॥ ८७ ॥ महादेव को देवताओं ने विवाह की पहली रात का कार्यक्रम कराया। ब्रह्मा के कहने पर देव-नारायण बैठे। प्रातःकाल में देवताओं को आमंत्रित कर त्रिपुरारि ने स्नान-संध्या नांदीमुख श्राद्ध किया ॥ ८८ ॥ स्नान कर वे रसोईघर में गये। देवगण एक स्थान में भोजन करने बैठे। गंगा की रसोई मधुर अमृत-तुल्य थी। महासुख से देवों ने भोजन किया ॥ ८९ ॥ वहाँ नाना छंदों से विविध वाद्य बजने लगे। सभी देवगण वहाँ अनेक वेश धारण कर नाचने लगे। स्वयं नारायण शिव को सजाने लगे। उनके सिर पर स्वर्णकिरीट, बाहु में कंकण, ललाट पर चन्द्र, सिर पर गंगा शोभित हुए। वृषभ पर आरूढ़ हो त्रिपुरारि चले। प्रजापति ब्रह्मा राजहंसों के रथ पर चढ़ चले, ऐरावत पर चढ़कर सुरपति इन्द्र चले ॥ १९०-१९१ ॥ वरुण मकर पर, यमराज भैंसे पर, अग्नि बकरे पर, पवन हिरन पर चढ़कर चले। स्वयं नारायण गरुड़ पर चढ़कर चले। इस प्रकार अपने-अपने वाहनों पर चढ़ देवगण चले ॥ ९२ ॥ संन्यासी, योगबल से सिद्ध तपस्वी, ब्रह्मचारी, निराहारी

सन्न्यासी तपस्वी तांरा सिद्ध योगबले । ब्रह्मचारी निराहारी चलिला सकले
सर्व्वाग्रे नारद यान कलह लइया । कन्दलि धोकड़ि सात कांखेते करिया ९३
नारदे देखिया हरषित हिमाचल । हरिष बदने पुछे तांहार कुशल
आगुभासे नारदेर कन्दलि धोकड़ि । यथा आछे शङ्करेर श्वशुर शाशुड़ी ९४
देखिया तोमार कन्या लागे बड़ ब्यथा । सावधान हये शुन जामातार कथा
घरे भात नाहि तार, चाले नाहि खड़ । शुइते नाहिक शय्या परिते कापड़ ९५
अमङ्गल चिता भस्म लेपे सर्व्व गाय । गलेते हाड़ेर माला सापिनी फोंपाय
त्रिनयने अग्नि ज्वले शिरे शोभेगाङ्ग । उलङ्ग उन्मत्त, खाय धुतुरा ओ भाङ्ग ९६
घरेर नफर नन्दी, काल भीमा भाया । घरे घरे घूरे तारा भातेर लागिया
घरे घरे मति केबा आनये तण्डुल । रन्धनेर काले सब हयत आकुल ९७
बलदे सखिया घरे यबे भीमा आसे । अर्द्धेक तण्डुल सेइ निजेखेये वसे
एत शुनि मेनका स्वामीके पाड़े गालि । कोपे गिरिराज धरे मेनका चुलि ९८
सात पांच दश बिश करे मारामारि । केबा कारे मारे, नारद देय टिट्कारी
नारद बलेन केन कर मारामारि । ए तिन भुबने राजा देब त्रिपुरारि ९९
कोन्-जना बुझे बल महादेब-काज । महाधनी महादेब देबेर समाज
कन्दलि घुचाये नारद गेला देब-पाश । रचिला उत्तरकाण्ड कबि कृत्तिबास २००

सभी चले। सबसे आगे कलस ले, कन्दलि धोकड़ी के संग नारद चले ॥ ९३ ॥ नारद को देख हिमालय हर्षित हुआ। हर्षित बदन से उनका कुशल पूछा। नारद की कन्दलि धोकड़ी आगे आये, जैसे शिव के वे ससुर-सास हों ॥ ९४ ॥ कहा, तुम्हारी कन्या को देख हमें बड़ी वेदना हो रही है, तुम अपने जमाई की कथा सावधान हो सुनो। उसके घर में न भात है, न उसके छत पर फूस है, न सोने का बिस्तर है, न पहनने को कपड़ा ॥ ९५ ॥ वह अमंगल चिता-भस्म सारे शरीर में लगाता है। गले में हड्डियों की माला और फुफकारती साँपिनें हैं। उसके त्रिनयन में अग्नि जलती है, सिर पर नदी शोभित है, वह नंगा, उन्मत्त है, धतूरा और भाँग खाता है ॥ ९६ ॥ उसके घर के सेवक नन्दी और काल भीमा भाई भात के लिए घर-घर घूमा करते हैं। घर-घर से कहकर कोई चावल ले आते हैं। रसोई बनाते समय सब व्याकुल हो जाते हैं ॥ ९७ ॥ जब बैल को चराकर भीमा घर आता है तो आधा चावल वह स्वयं खा जाता है। यह सुनकर मेनका पति को गालियाँ देने लगीं। क्रोध से गिरिराज ने मेनका के बाल पकड़ लिये ॥ ९८ ॥ सात-पाँच, दस-बीस झगड़ा करते हुए मार-पीट करने लगे। एक-दूसरे को मारने लगे। नारद ठठोली करने लगे। नारद ने कहा— क्यों मार-पीट कर रहे हो? देव त्रिपुरारी इन तीनों भुवनों के राजा हैं ॥ ९९ ॥ महादेव का कार्य भला कौन समझ सकता है? देवों के समाज में महादेव महाधनी हैं। उनका झगड़ा छुड़ाकर नारद देवों के पास गये। कवि कृत्तिवास ने इस उत्तरकाण्ड की रचना की है ॥ २०० ॥

हर-गौरीर बिबाह

समस्त देवता गेला हिमालय-घर। बहिरिला गिरिराज देखिया अमर
बर वेड़ि रहिला यतेक देवगण। बसिते आसन दिल करिया वरण २०१
दधि दुग्ध गङ्गाजल अगुरु चन्दन। गुया नारिकेल दिल उत्तम वसन
वरेर वरण कैल बेला शुभक्षणे। चारि दिके वेदध्वनि शुनि घने-घने २
वरेरे वरिया हिमालय गेला घर। आइला कन्यार माता देखिवारे वर
वरपाशे गेला से मङ्गल सज्जा लैया। मोहित हइला राणी वरेरे देखिया ३
पाये दधि दिल आर शिरे दूर्व्वा-धान। माथाय निछिया फेले शत शत पान
दुइ चक्षु ढाके राणी हेंट माथा करि। तखन नारद मुनि दिला टिटकारी ४
लाजे पलाय गिरिर झियारि बौयारि। हुड़ाहुड़ि करि याय हाते करि झारि
एतेक देखिया तबे कोपे नारायण। झाट कन्या आन वहि याय शुभक्षण ५
करेन वरेर वेश यत देवगण। आपनार मूर्त्ति धरे देव त्रिलोचन
त्रिभुवन मोहिलेन देव-त्रिपुरारि। पार्व्वतीर वेश करे देवतार नारी ६
त्रिभुवन मोहिलेन, रूपे विद्याधरी। रूपे आलोकित कैल सकल नगरी
वदन तांहार जिनि पूर्ण-चन्द्र कला। पार्व्वती बाहिर हैला हाते पुष्पमाला ७

हर-गौरी का विवाह

सारे देवता हिमालय के यहाँ गये। देवताओं को देखकर हिमालय बाहर निकल आये। सभी देवता दुलहे शिव को घेरे रहे। उनकी अगवानी कर बैठने का आसन दिया ॥ २०१॥ दही, दूध, गंगाजल, अगरु, चन्दन, सुपारी, नारियल, उत्तम वस्त्र आदि दिये। शुभ क्षण लग्न देख कर वर का वरण किया। चारों ओर बार-बार वेदध्वनि सुनाई दे रही थी ॥ २ ॥ वर का वरण कर हिमालय घर गये, तब कन्या की माँ वर को देखने आयी। मांगलिक वस्तुएँ लेकर वह वर के पास गयी। वर को देख रानी मोहित हो गयी ॥३॥ उसके वर शिव के चरणों पर दही और सिर पर दूब और धान दिया। सिर पर घुमा-घुमाकर सैकड़ों पान फेंके। रानी सिर झुकाये आँखें बन्द किए थीं। तब नारद मुनि ने ठठोली की ॥ ४ ॥ लज्जा से गिरिराज की बहू-बेटियाँ भाग चलीं। हाथों में सुराही लिये वे हड़बड़ाती भागीं। यह देख नारायण क्रोधित हो उठे। कहा— शुभक्षण निकला जा रहा है, शीघ्र कन्या को ले आओ ॥ ५ ॥ सभी देवताओं ने वर का वेश धारण कर लिया और देव त्रिलोचन शिव ने अपना रूप धारण किया। देव त्रिपुरारि ने तीनों लोकों को मोहित कर लिया। देवताओं की नारियों ने पार्वती का वेश धारण किया ॥ ६ ॥ विद्याधरियों ने अपने रूप से त्रिभुवन मोहित कर लिया। अपने रूपों से सारी नगरी को आलोकित कर दिया। उनके मुखमंडल को पराजित कर पूर्णचन्द्र-कला पार्वती अपने हाथ में पुष्पमाला लेकर बाहर निकली ॥ ७ ॥ गंगादेवी जटा में छिप गयी, शिव के मुकुट पर

जटाते लुकाल देवी गङ्गा गोसांइनी। मुकुट उपर शोभे काल भुजङ्गिनी
ललाटेते शोभे चन्द्र भस्म सर्व्व गाय। हृदयेते हाड़ माला नागिनी फोंपाय ८
त्रासे लुकाइल साप, निभिल आगुनि। हरेर निकट गेला आपनि भवानी
शिरे परिजात माला मधु पिये अलि। विश्वकर्मा योगाइल अशोकेर डालि ६
सप्त सागरेर जल योगाइल आनि। शुभक्षणे हैल हर गौरीर मिलनि
दुन्दुभिर बाद्य बाजे मधुताल शुनि। सुबेशे नाचये तथा इन्द्रेर नाचुनि २१०
कन्या लुकाइल गिया अन्धकार घरे। कन्यारे आनिते हर दाँड़ाल दुयारे
डानिहाते करे देबी कङ्कणेर ध्वनि। हाते धरि कन्या आने देब शूलपाणि २११
कन्या लये बंसे हर मण्डपेते आसि। चारिदिके बड़िल सकल देव ऋषि
चारिदिके बसे देब छाड़िया बिमान। नानादान दिया गिरि कैल कन्यादान १२
मुनि सब वेद पड़े प्रफुल्ल बदन। गन्ध पुष्प अर्घ्य दिल आर ये काञ्चन
मन्त्र पड़ि करे गिरि कन्या समर्पण। सर्व्वकाल क'रो कन्या रक्षण-पोषण १३
जोड़ हाते बलि शुन यत देवगण। आमार कन्याय रक्षा क'रो सर्व्व क्षण
ए बोल शुनिया हासे ब्रह्मा-नारायण। तव झिके बल सबे करिते पालन १४
कुशण्डिका लाज होम कैल सावधाने। नानादान करे सब देव बिद्यमाने

काल भुजंगिनी शोभित होने लगी। उनके ललाट पर चन्द्रमा शोभित था, समूचे शरीर पर भस्म लगी थी। उनकी छाती पर हड्डियों की माला थी और नागिन फुफकार रही थी ॥ ८ ॥ आतंक से साँप छिप गये, अग्नि बुझ गयी। तब स्वयं भवानी शिव के समीप गयी। उनके सिर पर पारिजात की माला थी, जिसका मधु भौंरे पी रहे थे। विश्वकर्मा ने अशोक की डाली ला दी ॥ ९ ॥ सात सागरों का जल लाया गया और शुभ लगन में हर-गौरी का मिलन हुआ। दुन्दुभि का वाद्य बजने लगा, मधुर ताल गूँज उठी, सुन्दर वेशधारिणी इन्द्र नर्तकियाँ वहाँ गाने लगीं ॥ २१० ॥ कन्या अँधेरे घर में जा छिपी। कन्या को लाने हेतु शिव द्वार पर जा खड़े हुए। देवी के दाहिनी हाथ में कंकण की ध्वनि हो रही थी। देव शूलपाणि हाथ पकड़ कन्या को ले आये ॥२११॥ कन्या को लेकर शिव मंडप में आ बैठे। सभी देवों, ऋषियों ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया; अपने विमान को छोड़ वहाँ आ बैठ गये। अनेक प्रकार के दान देकर गिरि हिमालय ने कन्यादान किया ॥ १२ ॥ प्रसन्नवदन सारे मुनि वेद पढ़ रहे थे। हिमालय ने सुगंधित द्रव्य, अर्घ्य और चन्दन दिये। मंत्रपाठ करते हुए गिरि ने कन्या-दान किया। कहा, चिरकाल कन्या का रक्षण-पोषण करें ॥ १३ ॥ हाथ जोड़कर कहता हूँ, देवगण सुनें, सर्वक्षण में हमारी कन्या की रक्षा किया करें। यह वचन सुनकर ब्रह्मा-नारायण हँस पड़े। कहा, अपनी बेटी से कहो कि वह सबका पालन करती रहे ॥ १४ ॥ कुशणिका धान का लावा का सावधानी से होम किया। सभी देवों के सम्मुख नाना प्रकार के दान किये। सास-ससुर दोनों ने अनुमान लगाकर सबको विविध पकवान और पान-सुपारी

श्वशुर शाशुड़ी दोंहे करि अनुमान। बिविध पक्वान्न दिल आर गुवायान १५
नाना रङ्गे देखे लोक नृत्य आर गीत। गाइल उत्तरकाण्ड फुलिया पण्डित

भीमार भोजन

महादेवी वले, राजा तुमि आगे याह। झि-जामाता भोखे मरे भोजन कराह १६
जामाता लज्जित हय शाशुड़ी देखिया। एक बारे देह भात-व्यञ्जन आनिया
स्वर्ण थाल घुचाइ परस-पात-पात। पायस-पिष्टक सह ताहे देह भात १७
दधि दुग्ध घृत दिते ना करिह हेला। घना वर्त्त दुग्ध देह मर्त्तमान कला
जल लये दुइजने कैल पञ्च ग्रासी। हरेर निकट तवे बैसे देव-ऋषि १८
भोजन करेन देव-ऋषि त्रिपुरारि। हरेर निकटे वसिलेन देवी गोरी
हेँटे देय गोमय उपरे आल्पना। दुइ पाशे करिल ये सूतार मेलना १९
कतेक भोजन कैला देव त्रिलोचन। नारद वले, छोंया गेछ, ना कर भोजन
आलपना देखाये भीमा दिल नखरेख। सूता गाछ देखाये वले, देख परतेख २२०
देव-देवी छोंया पड़ि कैला आचमन। पाते याहाछिल भीमा करिल भोजन
एक स्थान हैल दोंहे करि आचमन। महासुखे भीमा तवे करिल भोजन २२१
सव भात खेये भीमा पेटे देय हात। हासि भीमा वले आन पिठा आर भात
राणी वले, तोर पेटे लागिल आगुनि। भीमार पाते आनि दिल हाँड़ीर फेलानि २२

दी ॥ १५ ॥ सारे लोकों के निवासी नाना रंग-रंगीले नृत्य-गीत देख रहे थे, फुलिया के पंडित (कृतिवास) ने यह उत्तरकाण्ड गाया है।

(शिव-सेवक) भीम का भोजन

महादेवी ने कहा, राजा आप आगे जाइये। बेटी जमाई भूखे है, उन्हें भोजन कराइये ॥ १६ ॥ सास को देखकर जमाई लजाया करते हैं। उन्हें एक ही बार में भात और व्यंजन ला दो। सोने की थालियाँ हटाकर पत्तों पर परोसो। पायस (खीर), पीठे समेत उसी पर भात भी दो ॥ १७ ॥ दही, दूध, घी देने में कमी न करना। गाढ़ा जमाया दूध और मर्त्तबान केला देना। जल लेकर दोनों ने पंच-ग्रासी की, तब शिव के पास देव-ऋषिगण बैठे ॥ १८ ॥ देवर्षि त्रिपुरारि भोजन करने लगे। शिव के समीप देवी गौरी बैठी नीचे गोवर डालकर उसके ऊपर अलपना बनायी। दोनों ओर सूत का घेरा बना दिया ॥ १९ ॥ देव त्रिलोचन ने कुछ भोजन किया, तभी नारद ने कहा— आप छू गये हैं, भोजन न करें। भीमा ने अलपना दिखाकर नाखून से रेखा बना दी। सूत दिखाकर कहा, प्रत्यक्ष रूप से देख लें ॥ २२० ॥ देव देवी सबने छुए जाकर उठ गये और आचमन किया। इसके पश्चात जो कुछ बचा सब कुछ भीमा ने खाया ॥ २२१ ॥ सारा भात खाकर भीमा ने पेट पर हाथ रखा। हँसकर भीमा ने कहा, पीठा और भात ले आओ। रानी ने कहा तेरे पेट में आग लगी है। भीमा की पत्तल पर सारी हाँडियाँ लाकर रख दीं ॥ २२ ॥ जला भात और चावल की खुद्दी भूसी भी दी। कोई

पोड़ा मात दिल भार दिल खुद कुंड़ा । केह आसि भीमाक मारे झाँटार मुड़ा
शुनिया भीमार कथा सभाखण्ड हासे । गाइल उत्तरकाण्ड कबि कृत्तिबासे २३

हर गौरीर कैलास गमन

पुष्प शय्या करिलेक गन्धे मनोहर । सोनार चौखण्डी ताहे निर्म्मल बासर
पाड़िल सोनार खाटे नेतेर ये तुली । एयो सब मिलि दिल शुभ हुलाहुलि २४
चारिदिके रत्न दीप नारीगण-मेला । बरेर मोहन रूप राणी नेहारिला
शुइल सोनार खाटे देब पशुपति । सोनार प्रदीपे ज्वले घृतपूर्ण-बाति २५
स्नान-सन्ध्या कैला हर प्रत्यूष-बिहाने । देबगणे ल'ये हर बसिल देयाने
ब्रह्मा बले, गिरिराज देहत मेलानि । छाया मण्डपेते गिया बैसे शूलपाणि २६
नानारत्न नानाधन दिला ब्यबहार । देबगण- ग्रेगिरि मागे परिहार
नड़िला सकल देब परम आनन्दे । गौरी के करिया कोले राजराणी कान्दे २७
बृषेते चापिया तबे चले शूलपाणि । सिंह चड़ि चले देबी आपुनि भबानी
परस हरषे चले यत देब गण । आपन बाहन चड़ि चले सर्ब्बजन २८
ब्रह्मा बिष्णु चलिलेन, चले पुरन्दर । महेशे मेलानि मागि सबे गेला घर
निज गण ल'ये हरि गेला निज पुरी । नानारङ्गे गेला हर कैलास नगरी २९
यत लोक छिल सङ्गे दिलेर मेलानि । घरेर सेवक भीमा डाके शूलपाणि

कोई आकर भीमा को झाड़ू के हत्थे से मारने लगे। भीमा की कथा सुनकर सभा के लोग हँसने लगे। कवि कृत्तिवास ने यह उत्तरकांड गाया है ॥ २३ ॥

हर-गौरी का कैलास-गमन

वहाँ मनोहर सुगन्ध वाली पुष्प-सज्जा की गयी। सोने की चारपाई थी, उससे कोहबर बनाया गया ॥ २४ ॥ चारों ओर रत्नों के दीप जल रहे थे, नारियों का मेला लगा हुआ था। रानी ने दूल्हे का मोहक रूप देखा। देव पशुपति सोने की चारपाई पर सोये। सोने के घी भरे दीये में बत्ती जल रही थी ॥ २५ ॥ सबेरा होने पर पौ फटने के पहले ही शिव ने स्नान-संध्या किये। देवों के साथ शिव जनवासे में बैठे। ब्रह्मा ने कहा गिरिराज, हमें विदा दो। छाया-मंडप में जाकर शिव बैठे ॥ २६ ॥ उनके व्यवहार अनुसार नाना रत्न, नाना धन प्रदान किया। देवताओं के सामने गिरिराज ने क्षमा-याचना की। सभी देव परम आनन्द से चल पड़े। गौरी को गोद में लिये राजरानी रोने लगी ॥ २७ ॥ वृषभ पर सवार हो शूलपाणि शिव चले और सिंह पर सवार हो स्वयं भवानी चली। सभी देवगण परम हर्ष से चले। सभी अपने-अपने वाहनों पर चढ़कर चले ॥ २८ ॥ ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र चले। सब देवगण महेश से विदा लेकर अपने-अपने निवास को गये। हरि अपने वाहन समेत अपनी पुरी को चले। अनेक प्रकार के रंग-रास करते हुए शिव कैलास नगर गये ॥ २९ ॥ साथ जितने लोग थे सबको विदा दे दी और अपने घर के

गोसाँइ वचने भीमा आइल धाइया। क्षुधाय शरीर दहे, खाद्य आन गिया २३०
गौरी के लइया हर सुखे करे वास। गाइल उत्तरकाण्ड कवि कृत्तिवास

लङ्कापुरी निर्म्माण

अगस्त्य बलेन, राम वाक्ये देव-मन। सवाके विदाय दिला देव-त्रिलोचन २३१
भवानी-सहित गृहे रहे पञ्चानन। हास्य-परिहासे सदा अनन्दे मगन
हेथा शुन हेमन्तेर गृहेर काहिनी। वसिला हेमन्त गिरि ओ मेनका राणी ३२
हेन काले गिरिगण मागिला मेलानि। रहिते पर्व्वतगणेवले प्रिय वाणी
स्नान-सन्ध्या करि सवे करह भोजन। तवेत तोमरा सवे करिह गमन ३३
स्नान-सन्ध्या कैल सवे भागीरथी जले। एक ठाञि हैल सवे भोजनेर काले
सुवर्णेर थाले अन्न दिला परिपाटि। सारि दिया बसिला पर्व्वत तिन कोटि ३४
वसिला सुमेरु मध्ये करिते भोजन। अदूरे थाकिया ताहा देखिल पवन
सम्वर्त्त आवर्त्त द्रोण आर ये पुष्कर। चारि मेघे हाँकारिया आने पुरन्दर ३५
आगे वायु, माझे इन्द्र, पिछे जलेश्वर। झड़-वरिषण करे सुमेरु उपर
सुमेरु काञ्चन शृंग शतेक योजन। भाङ्गिया दिलेन शृंग देवता पवन ३६

सेवक भीमा को शिव ने पुकारा। अपने प्रभु के बुलाने पर भीमा वेग से दौड़ा आया। उससे कहा, क्षुधा से शरीर जल रहा है, जाकर अनाज आदि ले आ ॥ २३० ॥ गौरी को लेकर शिव सुख से रहने लगे। कवि कृत्तिवास ने उत्तरकांड की रचना की।

लंकापुरी-निर्माण

अगस्त्य ने कहा— राम, बात पर ध्यान दो। देव त्रिलोचन ने सबको विदा दी ॥ २३१ ॥ भवानी समेत पंचानन घर में रहने लगे। वे सदा हास-परिहास में आनन्द-मग्न रहते थे। उधर हिमालय के यहाँ की कहानी सुनो। गिरि हिमालय और मेनका रानी एक साथ बैठे ॥ ३२ ॥ उसी समय पार्वतों ने उनसे विदा माँगी। उन सबने पर्वतों को ठहरने हेतु प्रिय वाणी में कहा। तुम सब स्नान संध्या कर भोजन करो, इसके पश्चात् सभी यहाँ से जाना ॥ ३३ ॥ सबने भागीरथी के जल में स्नान-संध्या की और भोजन के समय सभी एक जगह उपस्थित हुए। सोने की थालियों में सजाकर उन्हें हिमालय ने अन्न दिया, तीन करोड़ पर्वत पक्तियों में बैठ गये ॥ ३४ ॥ सुमेरु सबके बीच में भोजन करने बैठा। पवन ने नज़दीक रहकर वह देखा। सम्वर्त, आवर्त, द्रोण, पुष्कर, इन चारों मेघों को पुकारकर इन्द्र ले आये ॥ ३५ ॥ आगे वायु, बीच में इन्द्र, पीछे जलेश्वर मेघ रहकर सुमेरु पर आँधी और वर्षा करने लगे। सुमेरु का स्वर्णशिखर सौ योजन फैला हुआ था। उस स्वर्ण-शिखर को पवन देवता ने तोड़ डाला ॥ ३६ ॥ कुमार पवन ने पर्वत का वह शिखर उठा

पर्व्वतेर शृंग लये पवनकुमार। माथाय काञ्चन शृंग सिन्धु हैल पार
सुमेरु शृंग पड़े त्रिकूटेर चूड़े। दुइगिरि चूड़ा ल'ये सागरेते एड़े ३७
विश्वकर्म्मा ल'ये गेला देव पुरन्दर। मध्ये पुरी निर्म्माइल चौदिके सागर
सातटि प्राचीर ताहे करिल गठन। लोहाते प्राचीर गड़े उपरे काञ्चन ३८
परिखा योजन शत लङ्घिते ना पारि। प्रसार योजन शत विशाल चउरि
सुबर्णे गड़िल आर अष्टादश पुरी। नाटशाल पाठशाल विचित्र चउरी ३६
खाट पाट निर्म्माइल सोनार आवास। निर्म्माइल स्वर्णपुरी विरिञ्चिर हास
सुबर्णे बान्धिल घाट घीवी ओ पोखरि। राजगृह प्रजागृह गड़े सारि सारि २४०
यतन करिया गड़े राम-अन्तपुरी। बाहिर भितरे सब काञ्चनेर पुरी
निर्म्माइल चित्रघर बिद्युतेर छटा। अन्तःपुर निर्म्माइल अयुतेक कोठा २४१
निर्म्माइल शत स्तम्भे देवान चौतारा। नाना रत्न खचिल माणिक्य मणि-हीरा
घरेर उपरे शोभे सोनार बाहुरा। चारिभिते शोभे गज मुकुतार झारा ४२
सुवर्णेर आयतन, गड़े सिंहासन। चतुर्द्दोल हेरि येन रबिर किरण
रत्ने निर्म्माइल घर करे झलमलि। निर्म्माइल सुवर्णेर पाखा-पाखी-आलि ४३
बड़ बड़ बृक्ष काण्ड सुबर्णे बान्धिल। अयुत प्रशस्त घर स्वर्णे निरमिल
सोनार पताका उड़े देखिते रूपस। घरेर उपरे शोभे सुबर्ण कलस ४४

लिया और सिर पर स्वर्ण-शिखर लिये सागर पार हो गया। सुमेरु का शिखर टूटकर त्रिकूट की चोटी पर पड़ा। इन दोनों पर्वत-चोटियों को लेकर सागर में छोड़ दिया ॥ ३७ ॥ इन्द्र वहाँ विश्वकर्मा को ले गये। विश्वकर्मा ने चारों ओर सागर के बीच पुरी का निर्माण किया। उसमें सात प्राचीर बनाये, वे प्राचीर लोहे के थे जिनके ऊपर सोना मढ़ा हुआ था ॥ ३८ ॥ सौ योजन फैली खाइयाँ थीं जिनको लाँघा नहीं जा सकता था। उसके विशाल नींव का विस्तार सौ योजनों में था। विश्वकर्मा ने सोने के और अठारह नगर बनाये, विचित्र चबूतरों वाले उन नगरों में नाट्यशाला और पाठशाला बनाईं ॥ ३९ ॥ सोने के भवन, चारपाई-पलंग आदि बनाये। ऐसा स्वर्णनगर बनाया जिसे देख ब्रह्मा हँस पड़े। सरोवर और पोखरों के घाट सोने से बँधवाये, कतारों में राजभवन और प्रजा के निवास-गृह बनाये ॥ २४० ॥ राज अंतःपुर को बड़े यत्न से बनाया। बाहर-भीतर समूची-स्वर्ण की पुरी थी। विद्युत की छटा जैसे चित्रघरों का निर्माण किया। अन्तःपुर बनाये जिनमें दसों हज़ार कमरे थे ॥ २४१ ॥ सौ खंभों वाला राजसभा भवन बनाया जिसमें नाना रत्न-मणि-माणिक्य-हीरा आदि जड़े हुए थे। भवनों के ऊपर सोने के आवरण शोभित थे। चारों ओर गज-मोतियों की झालर शोभित थी ॥ ४२ ॥ सोने का आधार बनाकर सिंहासन बनाया। पालकी ऐसी दीख पड़ती थी मानों रवि की किरणें हों। रत्न से बनाये भवन झिलमिला रहे थे। सोने के खग-खगी-भौंरे बनाये ॥ ४३ ॥ बड़े-बड़े वृक्षों के तने सोने से मढ़ दिये। दसों हज़ार बड़े भवन स्वर्ण से बनाये। सोने के झंडे जो देखने में बड़े सुन्दर थे, फहर रहे थे। घरों के ऊपर सुवर्ण के कलस शोभित हो रहे

बान्धित सोनाय तवे पुकुरेर घाट। निर्म्माइल सुवर्णेते घरेर कपाट
सुवर्णेते निर्म्माइल स्वर्ण लङ्कापुरी। सोनाय सृजिल यत दीघी ओ पोखरी ४५
हइल अद्भुत पुरी देखिते सुन्दर। सप्त कोटि आछे ताहे इष्टकेर घर
नव कोटि कैल ताहे आश्रित-आलय। चारि लक्ष कैल ताहे पर्व्वत दुर्जय ४६
हेनमते निर्म्माइल स्वर्ण लङ्कापुरी। दानव गन्धर्व्व देव लङ्घिते ना पारि
समुद्रेर माझे पुरी करिल निर्म्माण। जिनिया अमरावती ताहार वाखान ४७

अगस्त्य कर्तृक राक्षस गणेर जन्म-वृत्तान्त बर्णन

श्रीराम बलेन, मुनि तुमि अन्तर्य्यामी। संसारेर विवरण सब जान तुमि
रावणेर जन्म कथा कह देखि शुनि। परम-आनन्द तवे हय महामुनि ४८
ब्रह्म-अंशे जन्म तार, सर्व्वलोके जाने। राक्षस हइल तबे किसेर कारणे
मुनि वले रघुनाथ कहि तव स्थाने। राक्षसेर जन्म कथा शुनह एक्षणे ४९
येमते रावण जन्मे शुन रघुमणि। सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा आगे सृजिलेन प्राणी
प्राणिगण वले, ब्रह्मा, करि निवेदन। कोन् कार्य्ये आमा सवे करिला सृजन २५०
ब्रह्मा वले, यत प्राणी करिये उत्पत्ति। तोमरा करिवे रक्षा प्राणेर शकति
ये ये प्राणी सृजन करिव ए संसारे। तोमरा प्रधान ह'ये पालिवे सबारे २५१

थे ॥ ४४ ॥ इसके पश्चात् पोखरों के घाट सोने से बाँधे, सोने से घरों के चौखटे भी बनाये। सोने से ही स्वर्ण लंकापुरी का निर्माण किया। सोने से ही सभी सरोवर व पोखरे बनाये ॥ ४५ ॥ देखने में सुन्दर वह अद्भुत पुरी बनी जिसमें ईंटों से बने सात करोड़ भवन थे। उसमें नौ करोड़ अतिथिशालाएँ बनायी। उसमें चार लाख दुर्जेय पर्वत बनाये ॥४६॥ इस प्रकार विश्वकर्मा ने स्वर्ण-लंकापुरी का निर्माण किया। जिसे देव-दानव-गंधर्व कोई लाँघ नहीं सकता था। अमरावती भी जिसके सौन्दर्य के सामने हार जाती है, ऐसी पुरी का निर्माण समुद्र के बीच किया ॥४७॥

अगस्त्य द्वारा राक्षसों का जन्म-वृत्तान्त-वर्णन

श्री राम ने कहा, मुनि, आप अन्तर्यामी हैं। संसार का सारा विवरण आप जानते हैं। कृपया आप रावण की जन्म-कथा कहिये, जिसे सुनकर परम-आनन्द हो ॥ ४८ ॥ सब लोग जानते हैं कि उसका जन्म ब्रह्म-अंश से हुआ तो वह किस कारण राक्षस हो गया ? मुनि ने कहा रघुनाथ, कहता हूँ। अब राक्षसों की जन्म-कथा सुनो ॥ ४९ ॥ जिस प्रकार रावण का जन्म हुआ, रघुमणि, सुनो सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ने पहले प्राणियों का सर्जन किया। प्राणियों ने कहा, ब्रह्मा जी, हम आपसे निवेदन करना चाहते हैं, हमारा सर्जन आपने किस उद्देश्य से किया ॥ २५० ॥ ब्रह्मा ने कहा हमने जितने प्राणियों का सर्जन किया, अपने प्राणों की शक्ति से तुम सब उसकी रक्षा करना। हम इस संसार में जिन-जिन प्राणियों का सर्जन करें, तुम सब प्रमुख बनकर उन सबका पालन करना ॥ २५१ ॥

प्राणिगण बले, ब्रह्मा, से बड़ दुष्कर। ना चाहि प्रभुत्व मोरा सबार उपर
ब्रह्मा शाप दिल, बेटा हओ रे राक्षस। हेति नाम हइल से राक्षस कर्कश ५२
विद्युत्कुमारी नामे ब्रह्मार कुमारी। तारे विभा करिल राक्षस दुराचारी
मन्दर पर्व्वते दुइजने केलि करे। जन्मिल सन्तान एक कतदिन परे ५३
पर्व्वतेर उपरेते फेलिया सन्ताने। मनेर आनन्दे केलि करे दुइजने
पिता-माता-स्नेह नाइ सन्तान-उपर। कातर हइया शिशु कान्दिल बिस्तर ५४
अश्रुजले श्रम जले कलेबर भासे। क्षुधाते आकुल प्राण, घन वहे श्वासे
वृषभ बाहने यान पार्व्वती शङ्कर। शून्य हइते देखिते पाइल गङ्गाधर ५५
शङ्कर कहेन, सति, देख अति दूरे। एकाकी कान्दिछे शिशु पर्व्वत-उपरे
महेशेर दया हैल सन्तान-उपर। प्रसन्न हइया शिव दिला तारे बर ५६
शिव कन, शुन ओहे, अनाथ सन्तान। मम वरे पितृ तुल्य हओ बलवान्
सर्व्व शास्त्रे बिज्ञ हओ, सर्व्वाङ्ग सुन्दर। आज्ञा मात्र हैल शिशु बापेर सोसर ५७
विद्युतकुमारी-पुत्र सुकेश नाम धरे। महा बलवान हैल धूर्ज्जटीर वरे

माली, सुमाली ओ माल्यबानेर जन्म-वृत्तान्त

तबे सुकेशेरे वर दिलेन पार्व्वती। ताहा हैते यत राक्षस उत्पत्ति ५८

प्राणियों ने कहा, ब्रह्मा जी, यह तो बड़ा दुष्कर कार्य है। हम सबके ऊपर अपना प्रभुत्व नहीं चाहते। ब्रह्मा ने शाप दिया, बेटे तुम सभी राक्षस बन जाओ। जिसका नाम हेति था वह निर्मम राक्षस बन गया ॥ ५२ ॥ विद्युतकुमारी नाम की ब्रह्मा की कन्या थी, उस दुराचारी ने उससे विवाह किया। दोनों मंदर पर्वत पर केलि करने लगे। कुछ दिन पश्चात् उनको एक संतान हुई ॥ ५३ ॥ उस संतान को पर्वत पर फेंककर दोनों बड़े आनन्द से केलि करने लगे। सन्तान पर पिता-माता का स्नेह न था। कातर होकर वह शिशु बहुत ही रुदन करने लगा ॥ ५४ ॥ अश्रुजल और पसीने से उसका सारा शरीर भीग गया। क्षुधा से उसके प्राण व्याकुल थे, उसकी साँसें तेजी से चल रही थीं। अपने वाहन वृषभ पर चढ़कर पार्वती और शंकर जा रहे थे। आकाश मार्ग से शंकर ने उस शिशु को देखा ॥ ५५ ॥ शंकर ने कहा सती, बहुत दूर वह देखो, पर्वत के ऊपर एकाकी वह शिशु रुदन कर रहा है। उस संतान पर महेश की दया हो आई। प्रसन्न होकर शिव ने उसे वर दिया ॥ ५६ ॥ शिव ने कहा, रे अनाथ संतान, सुन, मेरे वरदान से तू अपने पिता-जैसा बलवान हो जा। सारे शास्त्रों में निपुण, सर्वांग-सुन्दर बन जा। शिव की आज्ञा मात्र से वह शिशु अपने पिता जैसा हो गया ॥ ५७ ॥ विद्युतकुमारी के उस पुत्र का नाम सुकेश पड़ा। शिव के वरदान से वह महा-बलवान हो उठा।

माली, सुमाली और माल्यवान का जन्म-वृत्तान्त

इसके पश्चात् पार्वती ने सुकेश को वर दिया। उसी से सभी

पार्व्वतीर वरे तार बाड़िल सम्मान। ताहारे गन्धर्व्व एक कन्या दिल दान
स्त्री-पुरुषे रहिलेक पृथिवी-भितरे। तिन पुत्र हैल तार कत दिन परे ५९
पुत्र देखे सुकेश परम कुतूहली। नाम राखे माल्यवान-माली ओ सुमाली
तिन भाइ मिली तप करिल विस्तर। ब्रह्मा वले, किवा वर चाह निशाचर २६०
मन्त्रणा करिया वर मागे तिन जन। स्वर्ग मर्त्य पाताल जिनिव त्रिभुवन
संग्रामेते कोथाओ ना पाइ अपमान। एइ वर दिते ब्रह्मा करह विधान २६१
ब्रह्मा कन, त्रिभुवन जयी हवे सवे। संग्रामे विष्णुर ठाँइ पराभव हवे
ब्रह्मार वरेते तारा त्रिभुवन जिने। देवता गन्धर्व्व धरि वेंधे वेंधे आने ६२
आछिल गन्धर्व्व राजा शैव सदाचारी। तिन कन्या भूपतिर परमा सुन्दरी
विभा कैल माली ओ सुमाली माल्यवान। दुइ नारी गर्भे जन्मे एगार सन्तान ६३
वीरवसु सूचिक से यज्ञ ओ कोपन। तालभङ्ग सिंहनाद माधव नन्दन
प्रहस्त ओ अकम्पन धर्म्मेते विकट। शोणिताक्ष विड़ालाक्ष रणेते उत्कट ६४
सत्राजित नामे पुत्र प्रवल प्रखर। दु-जनार पुत्र हैल विषम दुष्कर
अव शेषे कन्या हैल दुष्कर कर्कशा। रावणेर माता सेइ नामटि निकषा ६५
सुमाली राक्षस-नारी परम युवती। चारि पुत्र हैल तार धर्म्मशील अति
वीर ओ अनल भीम राक्षस सम्पाति। रहियाछे असि विभीषणेर संहति ६६

राक्षसों की उत्पत्ति हुई ।। ५८ ।। पार्वती के वर से उसका सम्मान बढ़ गया। उसे एक गंधर्व ने कन्यादान किया। वे दोनों पति-पत्नी पृथ्वी के भीतर रहने लगे। कुछ दिन पश्चात् उनके तीन पुत्र हुए ।। ५९ ।। पुत्रों को देख सुकेश को परम कौतूहल हुआ। उसने उन तीनों के नाम क्रमशः माल्यवान, माली और सुमाली रखा। उन तीनों भाइयों ने मिलकर बड़ी भारी तपस्या की, ब्रह्मा ने पूछा निशाचरो, तुम्हें कौन सा वर चाहिए ? ।। २६० ।। तब उन तीनों ने मंत्रणा कर यह वर माँगा कि हम तीनों स्वर्ग, मर्त्य, पाताल को जीत लें। संग्राम में जैसे कहीं भी हमें अपमानित होना न पड़े। ब्रह्मा जी, यही वर देने का विधान कीजिए ।। २६१ ।। ब्रह्मा ने कहा, तुम सभी त्रिभुवन-विजयी बनोगे। परन्तु संग्राम में विष्णु के हाथ तुम्हारी पराजय होगी। ब्रह्मा के वर से उन तीनों ने त्रिभुवन को जीत लिया और देवता-गंधर्व आदि को पकड़-पकड़कर बाँध-बाँध ले आये ।। ६२ ।। गंधर्वों का राजा शिव-भक्त और सदाचारी था। उस राजा की तीन परम सुन्दर कन्याएँ थीं। माली, सुमाली और माल्यवान ने उनसे विवाह किया। दो नारियों के गर्भ से ग्यारह संताने हुईं ।। ६३ ।। वीरवसु, भूचिक, यज्ञ, कोपन, माधवनन्दन ताल-भंग और सिंहनाद, धर्म में विकट प्रहस्त और अकम्पन, रण में उद्भट पराक्रमी शोणिताक्ष और बिडालाक्ष तथा सत्राजित नाम के प्रबल एवं प्रखर पुत्र हुए। उन दोनों के ये पुत्र बड़े विषम और दुष्कर कार्य करने वाले थे। अन्त में एक दुष्कर कर्कशा कन्या हुई, वही रावण की माता थी जिसका नाम निकषा था ।। ६४-६५ ।। राक्षस सुमाली की पत्नी परम युवती थी, उसके चार पुत्र हुए जो बड़े ही धर्मशील थे। वीर, अनल,

तिन भाई परिवार बाड़िल बिस्तर। सेई सब निशाचर अवनी-भितर
सकल राक्षस मिलि करिल युकति। एत रक्षः हैल कोथा करिब बसति ६७

विश्वकर्म्मार लंकापुरी निर्म्माण ओ माली प्रभृतिर लंकापुरे राज्य प्रतिष्ठा

ब्रह्मार बरेते तारा त्रिभुवन जिने। हाते गले बान्धिया ये बिश्वकर्म्मे आने
निशाचर बले, बिश्वकर्म्मा, लह पान। राक्षसेर पुरी तुमि करह निर्म्माण ६८
एत शुनि बिश्वकर्म्मा हइल चिन्तित। पूर्ब्बेर बृत्तान्त मने पड़े आचम्बित
गरुड़-पवने युद्ध हैल येइ काले। सुमेरुर श्रृंग पड़े समुद्रेर जले ६९
से त्रिकूट गिरिरि प्रसार दुइ चूड़ा। परिमाण सत्तर योजन तार गोड़ा
सत्तर योजन ऊर्द्ध लेगेछे आकाशे। सोनार प्राचीर बेड़ा भितर आवासे २७०
बहिर चौपारि तार अति मनोहर। पबनेर गति नाहि अति भयङ्कर
देब दैत्य येते नारे लङ्कार भितर। विश्वकर्म्मा निर्म्माइल पुरी मनोहर २७१
कत शत पुष्प बन कत सरोबर। कत शत बृन्द महापद्म कोटि घर
सोनार कपाट खिल शोभे चारि द्वारे। भयङ्कर पुरी हेन नाहिक संसारे ७२

भीम और सम्पाति ये चार राक्षस विभीषण के संग रह रहे हैं ।। ६६ ।। इन तीन भाइयों का परिवार बहुत अधिक बढ़ गया । संसार में वे ही सारे निशाचर हैं । सारे राक्षसों ने मिलकर परामर्श किया कि इतने राक्षस हो गये, अब कहाँ निवास करें ।। ६७ ।।

विश्वकर्मा द्वारा लंकापुरी निर्माण और माली आदि का लंकापुर राज्य स्थापन करना

ब्रह्मा के वर से उन सबने त्रिभुवन जीत लिया । हाथ-गले में बाँधकर वे विश्वकर्मा को ले आये । निशाचरों ने कहा— विश्वकर्मा, यह पीने की सामग्री लो और राक्षसों के लिए पुरी बनाओ ।।६८।। यह सुन विश्वकर्मा चिन्तित हुए । अकस्मात् उन्हें पहले की कथा स्मरण हो आयी । गरुड़ और पवन में जिस काल में युद्ध हुआ था, सुमेरु का शिखर टूटकर समुद्र के जल में गिरा था ।। ६९ ।। वह त्रिकूट पर्वत की दो मुख्य चोटियाँ बन गया । जिसका नीचे की ओर का फैलाव सत्तर योजन है । सत्तर योजन ऊपर वह आकाश से सटा हुआ है । जिसके भवनों का भीतरी भाग सोने की दीवारों से घिरा है ।। २७० ।। उसके बाहर की चहारदीवारी बहुत ही सुन्दर है । वह ऐसा भयंकर है कि उसमे पवन की भी गति नहीं है । उस लंका के भीतर देव-दैत्य कोई नहीं जा सकता । उस पुरी का निर्माण विश्वकर्मा ने किया है ।। २७१ ।। वहाँ कितने सौ फूलों के उपवन हैं, कितने सरोवर, कितने सौ वृन्द महापद्म कोटि घर हैं । पुरी के चारों द्वारों पर सोने के कपाट और कील शोभित हैं । वैसी भयंकर पुरी संसार में कोई नहीं है ।।७२।। उसके चारों ओर अपार समुद्र

चारिदिके अपार समुद्र आछे घिरे। पवनेर शक्तिते ता लङ्घिते न पारे
जाइते देवता यक्ष ना करे साहस। नेतेर पताका उड़े, सोनार कलश ७३
स्वर्ग मर्त्य पाताले एमत नाहि स्थान। एक मासे विश्वकर्म्मा करिल निर्म्माण
पुरी देखि राक्षसेर हर्ष हैल अति। लङ्काते राक्षस गणे करिल बसति ७४
आगेते करिल राज्य माली ओ सुमाली। तार पर भूपति कुवेर महाबली
ताहार पश्चाते राज्य करिल रावण। अवशेषे भूपति हइल विभीषण ७५
अगस्त्येर कथा शुनि श्रीरामेर हास। कह कह बलि राम करिला प्रकाश

गरुड़ पवनेर युद्ध ओ गज-कच्छपेर बिबरण

श्रीराम बलेन, मुनि, कह विवरण। भाङ्गिल सुमेरु श्रृंग किसेर कारण ७६
कि लागिया बिसंवाद गरुड़-पवने। विस्तारिया कह मुनि, शुनि तव स्थाने
मुनि बले, शुन राम, अपूर्व्व कथन। गरुड़-पवने युद्ध हैल ये-कारण ७७
सन्तापन नामे विप्र छिल पूर्व्व काले। तिन कोटि धन राखि स्वर्ग वास चले
सन्तापनेर दुइ पुत्र परम सुन्दर। सुप्रताप बिभास ए दुइ-सहोदर ७८
ज्येष्ठ पुत्र स्थाने धन थुये गेल बापे। कनिष्ठ करये द्वन्द्व धनेर सन्तापे
धन शोके कनिष्ठ ये हइल दुःखित। ज्येष्ठेरे कहिल भाग देह समुचित ७९

घिरा हुआ है। पवन अपनी शक्ति से उसे लाँघ नहीं पाता। वहाँ जाने के लिए देवता-यक्ष भी साहस नहीं करते। रेशमी पताकाएँ फहरती हैं, घरों पर स्वर्ण-कलश स्थापित हैं ॥ ७३ ॥ स्वर्ग मर्त्य पाताल में ऐसा कोई स्थान नहीं; विश्वकर्मा ने उसका निर्माण महीने भर में किया है। वह पुरी देख राक्षसों को बड़ा हर्ष हुआ। राक्षसगण लंका में निवास करने लगे ॥ ७४ ॥ पहले वहाँ माली और सुमाली ने राज्य किया, इसके पश्चात् महाबली कुबेर भूपति बने। इसके पश्चात् वहाँ विभीषण ने राज्य किया ॥ ७५ ॥ अगस्त्य की कथा सुन श्रीराम हँसने लगे और उन्होंने 'कहिये, कहिये' कहकर अपना हर्ष प्रकट किया।

गरुड़ और पवन का युद्ध तथा गज-कच्छप का विवरण

श्रीराम ने कहा— मुनि, विवरण सुनाइये कि किस कारण सुमेरु शिखर टूट गिरा? ॥ ७६ ॥ यह गरुड़ और पवन में बिवाद क्यों हुआ? मुनि, विस्तार से कहिए, मैं आप से सुनना चाहता हूँ। मुनि ने कहा, राम, गरुड़ और पवन में युद्ध जिस कारण हुआ यह अपूर्व कथा सुनो ॥ ७७ ॥ प्राचीनकाल में सन्तापन नाम का विप्र था। तीन करोड़ धन रखकर वह स्वर्गवासी होने लगा। सन्तापन के परम सुन्दर दो पुत्र थे, सुप्रताप और विभास, ये दोनों सहोदर थे ॥ ७८ ॥ बाप ने बड़े पुत्र के पास धन रख दिया, छोटा भाई धन (न पाने) के दुख से झगड़ा करने लगा। धन के शोक से छोटा भाई बहुत ही दुखी हुआ। उसने बड़े भाई से कहा— समुचित भाग (मुझे) दो ॥ ७९ ॥ बड़े

ज्येष्ठ बले, पिता भाग न करिल धन । मम स्थाने भाग तुमि चाहकि कारण
धन ना पाइया कहे बशिष्ठेर ठांइ । पितृधन-अंश नाहि देय ज्येष्ठ भाइ २८०
कत अंश पाइ आमि, बलह एखन । सेइ मत करिया लइब पितृधन
बशिष्ठ बलेन, आछे वेदेर विहित । पञ्च अंशेर दु-अंश तोमार उचित २८१
कनिष्ठ कहिल गिया ज्येष्ठ बिद्यमान । पितृधन दुइ-अंश करह प्रदान
आमि गियाछिनु भाइ बशिष्ठेर स्थाने । बशिष्ठ बलिल, भाग नाहि देय केने ८२
ज्येष्ठ बले, कनिष्ठ करिले हेन केने । जातिनाश करिले कहिया अन्य स्थाने
हीन जन ज्ञान बुझि कैल मुनिबर । धनेर लागिया एत हइले कातर ८३
बारे-बारे निषेधिनु ना शुनिले काने । गज ह'ये पापिष्ठ, प्रवेश कर बने
कनिष्ठ दिलेन शाप ज्येष्ठेर उपरे । कच्छप हइया तुमि थाक सरोबरे ८४
दू'येर शापेते जन्तु हय दुइ जन । कनिष्ठ गजेर देह करिल धारण
दश योजन गज-देह कनिष्ठ धरिल । गजेर गर्ज्जन गिया बने प्रवेशिल ८५
कच्छप सलिले गेल, गज गेल बन । शुण्डेर भितरे गज राखे येत धन
यतन करिया धन येइ जन राखे । खाइते ना पाय धन याय त बिपाके ८६
धन पेये ये जन ना करे बितरण । यथाकार धन तथा याय अकारण
धनेते बिरोध बाधे शुन महाशय । यत व्यय करे तत परलोके हय ८७

भाई ने कहा— पिता ने तो धन बाँटा नहीं, तो तुम मेरे पास धन किस लिए चाहते हो ? धन न पाकर उसने वशिष्ठ के पास जाकर कहा— मेरा बड़ा भाई पिता के धन का अंश नहीं देता ॥ २८० ॥ मुझे कितना अंश मिलना है अब बताइये । उसी के अनुसार कर मैं पिता का धन लूंगा । वशिष्ठ ने कहा— वेद में विधान दिया हुआ है, पाँच भाग का दो भाग तुम्हें मिलना चाहिए ॥ २८१ ॥ छोटे भाई ने जाकर बड़े भाई से यह बात कही कि पिता के धन का दो भाग मुझे दें । भाई, मैं वशिष्ठ जी के यहाँ गया था, वशिष्ठ ने कहा है तुम्हारा भाग क्यों नहीं देता ॥ ८२ ॥ बड़े भाई ने कहा— तूने ऐसा क्यों किया ? दूसरे से यह बात कहकर तूने वंश नाश कर दिया । मुनिवर ने सम्भवतः हमें हीन व्यक्ति समझा होगा । तू धन के लिए इतना कायर हो गया ॥ ८३ ॥ मैंने बार-बार निषेध किया पर तूने कान से नहीं सुना । रे पापी, तू गज बनकर वन में जा । तब छोटे भाई ने बड़े भाई को शाप दिया— तुम कछुआ बनकर सरोवर में रहो ॥८४॥ दोनों एक दूसरे के शाप से जन्तु बन गये । छोटे भाई ने गज का शरीर धारण किया । छोटे भाई ने दस योजन विस्तार का गज-शरीर धारण किया और गज-गर्जना करते हुए वन में प्रवेश किया ॥ ८५ ॥ कछुआ पानी में गया, गज वन में गया । वह गज सारा धन अपने सूंड़ में रखता था । जो व्यक्ति बड़े यत्न से धन को सहेज रखता है, वह स्वयं तो खा पाता ही नहीं, धन दुर्दैव वश अकारण नष्ट हो जाता है ॥ ८६ ॥ धन पाकर भी जो व्यक्ति धन का वितरण नहीं करता, वह धन जहाँ का था वहाँ अकारण चला जाता है । महाशय राम, सुनो, धन से विरोध लगता है । धन जितना (सत्कार्यों में) व्यय करते हैं,

वशिष्ठेर शापे धन नाहि पाप रक्षा। गज-कच्छपेर शुन धनेर परीक्षा
कहिलाम धनेर वृत्तान्त तव स्थाने। गज-कच्छपेर कथा शुन सावधाने ८८
जलेते कच्छप आछे सेइ सरोवरे। दैवयोगे गज गेल जल खाइवारे
प्रखर रौद्रेते गज तृष्णाय विकल। सरोबरे देखि गज खेते गेल जल ८९
गजे देखि कच्छपेर पड़े गेल मने। पूर्व्व लोभे कच्छप से शुण्डे धरे टाने
गज टाने बनेते कच्छप टाने जले। गज आर कच्छप उभये तुल्य बले २९०
केह कारे नाहि पारे उभये सोसर। दुइ जने टानाटानि करये वत्सर
विनता-नन्दन पक्षी उड़े अन्तरीक्षे। अन्तरीक्षे थाकिया गरुड़ ताहा देखे २९१
एक वर्ष युद्ध हैल अति भयङ्कर। केह कारे नाहि जिने एकइ वत्सर
कातर हइया गज स्मरे नारायण। पाप देह नारायण कर विमोचन ९२
गजे देखि कातर गरुड़े दया हैल। वाम पद नख दिया दोंहारे तुलिल
गज कूर्म्म ल'ये पक्षी उड़िल तखन। मने करे कोथा ल'ये करिब भक्षण ९३
श्याम वर्ण वट वृक्ष शत योजन डाल। अशीति योजन मूल नेयेछे पाताल
चारि गोटा डाल तार पर्व्वतेर चूड़ा। सत्तर योजन युड़ि आछे तार गोड़ा ९४

उतना ही परलोक में मिला करता है ॥ ८७ ॥ बशिष्ठ के शाप से धन की रक्षा नहीं हो पायी। अब गज-कच्छप के धन की परीक्षा सुनो। तुमसे धन का वृत्तान्त कह सुनाया। अब गज-कच्छप की कथा सावधानी से सुनो ॥ ८८ ॥ जिस सरोवर के जल में कछुआ रहता था, दैवयोग से उसी में पानी पीने गज वहाँ गया। तेज धूप से वह हाथी प्यास से व्याकुल था। सरोवर देख वह पानी पीने गया ॥ ८९ ॥ हाथी को देख कछुए को (पुरानी बात) स्मरण हो आयी, पूर्व धन के लोभ से वह हाथी का सूँड़ पकड़कर खींचने लगा। हाथी बन की ओर खींचता, कछुआ पानी की ओर वे। दोनों हाथी और कछुआ बल में बराबर थे ॥ २९० ॥ कोई किसी को हटा नहीं पाता था, दोनों वर्ष भर खींचा तानी करते रहे। उसी समय विनतानन्दन पक्षिराज गरुड़ अन्तरिक्ष में उड़ रहे थे। आकाश में रहकर गरुड़ ने वह देखा ॥ २९१ ॥ दोनों में एक वर्ष तक बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। दोनों तुल्य बलशाली थे। कोई किसी को जीत नहीं पाता था। अन्त में हाथी ने कायर होकर नारायण का स्मरण किया। हे नारायण, मेरे इस पापमय शरीर को मुक्त करो ॥ ९२ ॥ हाथी को कायर देखकर गरुड़ को दया आ गयी। उन्होंने अपने बायें पैरों के पंजों के नाखूनों से दोनों को उठा लिया। पक्षिराज गरुड़ उन हाथी और कछुए को लेकर उड़ चले। मन में सोच रहे थे, इन्हें कहाँ ले जाकर भक्षण करें ॥ ९३ ॥ एक श्याम वर्ण का बरगद का पेड़ था, जिसकी सौ योजन लम्बी डालियाँ थीं; उसकी जड़ें पाताल के नीचे अस्सी योजन फैली थीं। उसकी चार डालियाँ पर्वत-शिखरों जैसी थी। उसका तना सत्तर योजन में फैला था ॥ ९४ ॥

गज-कूर्म्म लैया बैसे गाछेर उपर । सहिते ना पारे वृक्ष तिन जन भर
भर नाहि सहे डाल मड़-मड़ करे । डाल भाङ्गि पड़े यदि, मुनिगण मरे ९५
दक्षिण पायेर नखे गरुड़ धरे डाले । मुनिगण एड़ाइल थाकि वृक्ष तले
फेलिल से डाल लये चण्डालेर देशे । डालेर चापने मरे नारी ओ पुरुषे ९६
बहु पापे ह'ये छिल चण्डाल-जनम । गरुड़ेर हाते पाप हइल मोचन
गज-कूर्म्म लेये गेल ब्रह्मार सदन । कह ब्रह्मा, कोथा ल'ये करिब भक्षण ९७
ब्रह्मा बले, कोथा सहिवेक एत भर । गज कूर्म्म ल'ये याह सुमेरु-सिखर
तथा गज-कच्छपेरे करह भक्षण । ब्रह्मार बचने पक्षी चले ततक्षण ९८
पर्व्वत उपरे बैसे करिते भक्षण । हेन काले एल तथा देवता पवन
पवन बलेन, पक्षी, तुमि केन हेथा । मोर ठाँइ पड़िले छिड़िव तव माथा ९९
यावत् तोमार नाहि करि अपमान । आपना जानिया बेटा, याह निज स्थान
गरुड़ कहेन तुमि गालि केन पाड़ । उपयुक्त शास्ति दिव अहङ्कार छाड़ ३००
गरुड़े बचने पवन क्रोधे बले । फेलिब पर्व्वत ठेलि समुद्रेर जले
गरुड़ बलेन वायु बड़ाइ ना कर । सुमेरु पर्व्वत तुमि नाड़िते कि पार ३०१
गरुड़ बचने पवनेर क्रोध बाड़े । पर्व्वत समेत चाहे उड़ाइते झड़े
प्रलय हइल येन पर्व्वत-उपर । दुइ पाखे गिरि ढाके बिनता कुमार २

गरुड़ हाथी और कछुवे को लेकर उसी पेड़ पर बैठे । वह वृक्ष उन तीनों का भार नहीं सह सका । भार न सह सकने के कारण डाली मड़-मड़ाने लगी । यदि डाली टूट गिरे तो मुनि मर जायेंगे ।। ९५ ।। तब गरुड़ ने अपने दाहिने पैर से उस डाली को पकड़ लिया । मुनिगण जो वृक्ष के नीचे रह रहे थे, बच गये । गरुड़ ने वह डाली उठाकर चांडालों के देश में फेंक दी । वहाँ के (चांडाल) नारी-पुरुष डाली से दबकर मर गये ।। ९६ ।। अनेक पापों के कारण उनको चांडाल का जन्म मिला था । गरुड़ के हाथ उनका वह पाप दूर हो गया । गरुड़ उन हाथी और कछुए को लिये ब्रह्मा के यहाँ गये । बताइये, ब्रह्मा जी, इन्हें कहाँ ले जाकर भक्षण करूँ ।। ९७ ।। ब्रह्मा ने कहा— इतना भार कौन सह सकता है ? इन गज और कछुए को लेकर सुमेरु शिखर पर चले जाओ । वहीं इन गज-कच्छपों का भक्षण करना । ब्रह्मा के वचन सुनकर पक्षिराज गरुड़ उसी क्षण उड़ चले ।। ९८ ।। गरुड़ सुमेरु पर्वत के शिखर पर उनका भक्षण करने हेतु बैठे । इतने में वहाँ पवन देवता आ पहुँचे । पवन ने कहा— पक्षिराज, तुम यहाँ कैसे आये ? मेरे स्थान पर कुछ पड़े तो तुम्हारा सिर उतार लूंगा ।। ९९ ।। मैं तुम्हारा अपमान करूँ, उसके पहले ही, बेटा, अपना जानवर तुम अपने स्थान को लेकर चले जाओ । गरुड़ ने कहा— तुम गालियाँ क्यों देते हो ? मैं तुम्हें उचित दंड दूंगा, अहंकार छोड़ दो ।। ३०० ।। गरुड़ के बचन सुनकर पवन ने क्रोध से कहा— मैं पर्वत को धकेल कर समुद्र के जल में फेंक दूंगा । गरुड़ ने कहा— वायु, तू बड़ाई न मार । तू क्या सुमेरु पर्वत को हिला सकता है ।। ३०१ ।। गरुड़ के वचन से पवन का क्रोध बढ़ गया । उसने आँधी से उसे पर्वत

वाड़ाइया केल पाखा सहस्र योपन। पाखा देखि पवन भावेन मने मन
मरुड़ेर पाखा येन वज्रेर सोसर। सात दिन शिला वृष्टि पाखार उपर ३
मेघेर गर्ज्जन आर पड़िछे जञ्झना। पर्व्वतेर तबु नाहि नड़े एक कोणा
प्रलय कालेते येन सृष्टि हय नाश। देखि यत देव गण पाइला तरास ४
ब्रह्मारे जिज्ञासा करे यत देवगण। आचम्बिते महा प्रलय हय कि कारण
सृष्टि करिलाम आदि अतिशय क्लेशे। हेन सृष्टि नष्ट कर, युक्ति ना आइसे ५
ना शुनि ब्रह्मार वाक्य कहिछे यखन। प्रलय याहाते हय करिव से रण
पवनेर ठाँइ ब्रह्मा शुनि से उत्तर। विरस हइया ब्रह्मा चलिल सत्वर ६
पवन एड़िया याय गरुड़ गोचरे। विरिञ्चि बलेन, पक्षी, वलि हे तोमारे
आमि सृष्टि करिलाम तुमि कर रक्षा। एकदिक हैते तुमि तुलि लह पाखा ७
ब्रह्मार वचन शुनि गरुड़ेर हास। तोमार बचने पाखा करिव प्रकाश
ब्रह्मा बले, ये येमन, आमि ताहा जानि। शतयुगे पवन तोमारे नाहि जिनि ८
ब्रह्मार वचने तवे गरुड़ेर हास। तवे त गरुड़ पाखा करिल प्रकाश
गरुड़ तुलिले पाखा गिरिवर नड़े। झड़ेते से पर्व्वतेर छेक श्रृंग पड़े ९
त्रिकूट गिरि आछे सागर-भितरे। सुमेरुर श्रृंग पड़े ताहार उपरे

समेत उड़ा फेंकना चाहा। पर्वत के ऊपर मानों प्रलय हो गया। विनता-नन्दन गरुड़ ने दोनों पंखों से पर्वत को ढँक लिया ॥ २ ॥ उसने अपने पंख बढ़ाकर हजार योजन कर लिये। पंखों को देख पवन ने मन ही मन सोचा— गरुड़ के पंख वज्र के समान हैं, पंखों पर सात दिन ओले बरसाये; ॥ ३ ॥ मेघों की गर्जना और विद्युत् की झन-झनाहट पड़ रही है, तथापि पर्वत का एक कोना भी हिल नहीं रहा है। प्रलयकाल में जैसे सृष्टि का विनाश हो जाता है, वैसा ही देखकर देवगण भयभीत हो गये ॥ ४ ॥ सभी देवगण ब्रह्मा से पूछने लगे— अकस्मात् यह महा प्रलय किस कारण हो रहा हैं ? ब्रह्मा ने पवन से पूछा— हमने जिस संसार की सर्जना बड़े ही कष्ट से की उस सृष्टि को तुम नष्ट कर रहे हो, इसका कोई तर्क समझ में नहीं आता ॥ ५ ॥ ब्रह्मा के वचन न सुनकर पवन कहने लगा— जैसे प्रलय हो जाये, ऐसा रण मैं करूँगा। ब्रह्मा पवन का उत्तर सुनकर, मुरझाये-से होकर वहाँ से चल पड़े ॥ ६ ॥ पवन के पास से वे गरुड़ के यहाँ आये। ब्रह्मा ने कहा— पक्षिराज गरुड़, तुमसे कहता हूँ, मैंने सृष्टि की, तुम अब इसकी रक्षा करो। एक हिस्से से तुम अपने पंख हटा लो ॥ ७ ॥ ब्रह्मा के वचन सुनकर गरुड़ हँस पड़ा। बोला— तुम्हारे कहने से मैं अपने पख समेट लूंगा ? ब्रह्मा ने कहा— जो जैसा है, मैं उसे जानता हूँ। सैकड़ों युग में भी पवन तुम्हें जीत नहीं सकता ॥ ८ ॥ तब गरुड़ ब्रह्मा के वचन सुन हँस हड़ा। उसने अपने पंख समेट लिये। गरुड़ के पंख उठा लेने पर गिरिवर हिल उठा। आँधी में उसका एक शिखर ढह गया ॥ ९ ॥ सागर के भीतर त्रिकूट पर्वत था, सुमेरु का वह शिखर उसी पर जा गिरा। विश्वकम ने उसी

लङ्का नामे पुरी ताहे कैल विश्वकर्म्म । एइ रूपे श्रीराम लङ्कार शुन जन्म ३१०

विष्णुर सहित युद्धे मालीर मृत्यु एवं सुमाली ओ माल्यबानेर पाताले पलायन

माल्यबान राक्षस लङ्काय राज्य करे । त्रिभुबन जिनिल से पितामह बरे
मने करे, आमि ब्रह्मा विष्णु महेश्वर । सकल देबता मारि घुचाइब डर ३११
तबे देवगण गेला शिबेर गोचर । कहिल बृत्तान्त सदाशिब-बराबर
सुकेशेर सन्तान दुरन्त निशाचर । बड़इ दौरात्म्य करे स्वर्गेर उपर १२
बिश्वनाथ बलेन शुनह देब गण । मारिते आमार साध्य नहे कदाचन
हइयाछे दुर्ज्जय ब्रह्मार पेये बर । मरिबे आपनार दोषे दुष्ट निशाचर १३
देब-देबी-बिप्र-हिंसा करे येइजन । आपनार दोषे मरे, बेदेर लिखन
एक उपदेश बलि, शुन देवगण । राक्षस मारिते पारे देब नारायण १४
राक्षसेर कथा गिया कह नारायणे । अवश्य बिहित हबे, शुन देवगणे
महेशेर आज्ञा पेये यतेक अमर । उपनीत हैल गिया बैकुण्ठ नगर १५
सम्भ्रमे देबतागण करि प्रणिपात । राक्षसेर कथा कहे करि योड़हात
सुकेश राक्षस एक छिल अबनीते । तिन पुत्र हैल तार बुद्धि बिपरीते १६

पर लंका नाम की पुरी बनायी । श्रीराम, सुनो, इसी प्रकार से लंका का जन्म हुआ ।। ३१० ।।

विष्णु के साथ युद्ध में माली की मृत्यु एवं सुमाली और माल्यवान का पाताल में पलायन

राक्षस माल्यवान लंका में राज्य करता था । उसने पितामह ब्रह्मा के वर से त्रिभुवन जीत लिया । वह सोचता था, हमीं ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर हैं, सारे देवताओं को मारकर मैं डर मिटाऊँगा ।। ३११ ।। तब देवगण शिव के पास गये और सदाशिव से सारा वृत्तान्त कहा, सुकेश का पुत्र वह दुरन्त निशाचर स्वर्ग के ऊपर बड़ा अत्याचार कर रहा है ।। १२ ।। विश्वनाथ ने कहा— देवगण, सुनें, उस राक्षस को मारने का हमारा सामर्थ्य कदापि नहीं है । वह ब्रह्मा का वरदान पाकर दुर्जेय हो उठा है । वह दुष्ट निशाचर अपने ही दोष से मारा जायेगा ।। १३ ।। जो व्यक्ति देवी-देवताओं और विप्रों की हिंसा करता है, वेदों में लिखा है कि वह अपने ही दोष से मारा जाता है । मैं एक उपदेश देता हूँ, देवगण, सुनो, इस राक्षस को केवल देव नारायण ही मार सकते हैं ।। १४ ।। तुम लोग जाकर नारायण से राक्षस की कथा कहो । देवगण सुनो, अवश्य ही इसका विहित उपाय होगा । महेश की आज्ञा पाकर सभी देवता बैकुण्ठ नगर पहुँचे ।। १५ ।। सम्मान सहित देवताओं ने नारायण को प्रणाम कर हाथ जोड़ राक्षस के बारे में बताया कि संसार में सुकेश नाम का एक राक्षस था, उसके विपरीत बुद्धि वाले तीन पुत्र

देव-द्विज हिंसा करि फिरे अनुक्षण। स्वर्गपुरे थाकिते ना पारे देवगण
मारे शेल शूल जाठा, लोटे सब नारी। छिन्न-भिन्न करियाछे अमर-नगरी १७
ब्रह्मार बरेते तारा काटे नाहि माने। यक्ष-रक्ष किन्नरादि नाहि आँटे रणे
संसारेर कर्त्ता तुमि देव गदाधर। राक्षस मारिया रक्षा करह अमर १८
देवतार त्रास देखि श्रीहरि हास। कहे सुखे स्वर्गपुरे कर गिया वास
तोमा सबे हिंसे यदि दुष्ट निशाचर। सेइ क्षणे राक्षसे पाठाव यमघर १९
आश्वास करिल यदि देव नारायण। निर्भय अमरपुरे गेल देवगण
जानिया नारद मुनि ए सब संवाद। चलिलेन लङ्का पुरे परम-आह्लाद ३२०
बसियाछे तिन भाइ रत्न-सिंहासने। मुनि, देखि समादर कैल तिन जने
प्रणाम करिया दिल रत्न-सिंहासन। जिज्ञासिल, कह मुनि, शुनि बिवरण ३२१
लङ्कापुरे आगमन किसेर कारण। बलह हे थाय तव कोन् प्रयोजन
मुनि बले, तोमादेर हित चिंता करि। अमङ्गल शुनिया, आइनु लङ्का पुरी २२
एस ठाँइ मिलियाछे यत देसगण। युक्ति करि गियाछिल विष्णुर सदन
कहियाछे तोमादेर कथा नारायणे। श्रीहरि करिबे युद्ध तोमादेर सने २३
ह'येछे मन्त्रणा एइ बैकुण्ठ भुवने। शुनिया आमार बड़ दुःख हइल मने
आमार पितार भक्त यत निशाचर। विशेष अधिक स्नेह तादेर ऊपर २४

हुए ॥ १६ ॥ वे सभी निरंतर देव-द्विजों के प्रति हिंसा करते फिरते हैं। उनके अत्याचारों से देवगण स्वर्ग में रह नहीं पाते। वे शूल, शक्ति और भाले का प्रहार करते हैं, उन सबने अमरों की नगरी को छिन्न-भिन्न कर डाला है ॥ १७ ॥ ब्रह्माजी के वर के कारण वे किसी को कुछ भी नहीं मानते। यक्ष, रक्ष, किन्नर आदि युद्ध में उनकी समकक्षता नहीं कर सकते। प्रभु गदाधर, आप संसार के कर्ता हैं, राक्षसों को मारकर देवों की रक्षा करो ॥ १८ ॥ देवताओं का त्रास देखकर श्री हरि हँस पड़े। कहा, तुम सब सुख से स्वर्गपुरी में जाकर रहो। यदि वह दुष्ट निशाचर तुम सबकी हिंसा करे तो मैं उसी क्षण उस राक्षस को यमलोक भेज दूंगा ॥ १९ ॥ जब देव नारायण ने यह आश्वासन दिया, तो देवगण निर्भय रूप से अमरपुरी (स्वर्गलोक को) गये। नारद मुनि यह सब संवाद जानकर परम आह्लाद से लंकापुरी को चले ॥ ३२० ॥ तीन भाई रत्न-सिंहासन पर बैठे हुए थे, मुनि को देखकर उन तीनों ने समादर किया। प्रणाम कर रत्न-सिंहासन दिया, पूछा— मुनि, आप यह वृत्तान्त कहिये, हम सुनें ॥ ३२१ ॥ लंकापुर में आपका आगमन किस कारण हुआ ? कहिये यहाँ आपका कौन-सा प्रयोजन है ? मुनि ने कहा— तुम लोगों का हित-चिन्तन कर, तुम्हारे अमंगल की बात सुनकर, मैं लंकापुरी आया हूँ ॥ २२ ॥ सारे देवगण एक स्थान पर एकत्रित हो, विचार-विमर्श कर विष्णु के निवास स्थान को गये थे। तुम्हारी बातें नारायण से कही हैं, श्रीहरि तुमसे युद्ध करेंगे ॥ २३ ॥ इस वैकुंठलोक में मंत्रणा हुई है, जिसे सुनकर हमारे मन में बड़ा दुख पहुँचा है। सारे निशाचर हमारे पिता के भक्त हैं, इस कारण उन पर मेरा विशेष अधिक

ए-कारणे आइलाम दिते समाचार। मङ्गलेर पथ चिंता कर आपनार
एत बलि मुनिबर हइला विदाय। निशाचर गण भावे कि हबे उपाय २५
एकत्रे बसिया युक्ति करे तिन जन। हेन काले ब्रह्मा एल राक्षस-सदन
ताहार पुरेते एइ शुने समाचार। मनेते अधिक दुःख उपजे ब्रह्मार २६
यत निशाचर सब ब्रह्मार आश्रित। राक्षसेर मङ्गल चिन्तेन अबिरत
शुनि अमंगल वाक्य बुझाइते हित। क्रोध भरे लङ्कापुरे हैल उपनीत २७
ब्रह्मा देखि सम्भ्रमे उठिल तिन जन। भकति करिया करे चरण-बन्दन
भक्ति भावे बसाइल रत्न-सिंहासने। पाद्य अर्घ्य दिया पूजा करिल चरणे २८
योड़हाते जिज्ञासा करिल तिन जन। आज्ञा कर कि हेतु लङ्काते आगमन
एत दिने पवित्र हइल लङ्कापुरी। या मने वासना कर सेइ कर्म्म करि २९
ब्रह्मा बले, सर्व्वदा वासना करि मने। लङ्काते करह राज्य परम कल्याणे
थाकिले आमार वाञ्छा हइबे कि कर्म्म। छाड़िते नारिबि तोरा स्वजातीय धर्म्म ३३०
देव-द्विज हिंसा कर, पाप कर्म्मे मति। दुराचार स्वभावेते घटिबे दुर्गति
तिन लोक उपरेते अमरेर पुरी। देवता गणेर वास ताहार उपरि ३३१
होम-यज्ञ-भाग दिया ये अर्च्चना करे। लइते यज्ञेर भाग यान तार घरे
कारो मन्दकारी हे देवगण यत। भक्ति भावे येइ डाके तार अनुगत ३२

स्नेह रहा है ।। २४ ।। इसी कारण मैं समाचार देने आया हूँ, तुम सभी अपने मंगल का मार्ग चिंतन करो । यह कहकर मुनिवर विदा ले चले । निशाचर सोचने लगे, अब क्या उपाय होगा ।। २५ ।। तीनों एकत्र बैठकर विचार-विमर्श करने लगे । इसी काल में ब्रह्मा राक्षसों के भवन पहुँचे । उनके पुर में यह समाचार सुनकर उनके मन में बड़ा ही दुःख हुआ ।। २६ ।। सारे निशाचर ब्रह्मा के आश्रित थे, वे निरन्तर राक्षसों का मंगल-चिन्तन करते थे । अमंगल की बातें सुनकर उनके हित की बात समझाने हेतु वे क्रोध में भरे हुए लंकापुरी पहुँचे ।। २७ ।। ब्रह्मा को आये देख तीनों सम्मान में खड़े हो गये । उनकी भक्ति करते हुए चरण वन्दना की । भक्ति-भाव से उन्हें रत्न-सिंहासन पर बिठाया और पाद्य-अर्घ्य देकर चरणों की पूजा की ।। २८ ।। हाथ जोड़कर तीनों ने पूछा—आज्ञा करें, किस हेतु लंका में पधारें हैं ? इतने दिनों में लंकापुरी पवित्र हुई, आपके मन में जो इच्छा है हम वही करेगे ।। २९ ।। ब्रह्मा ने कहा—मैं अपने मन में यही कामना किया करता हूँ कि तुम परम कल्याण के साथ लंका में राज्य करते रहो । परन्तु हमारे मन में कामना रहने भर से क्या काम होगा ? तुम लोग तो स्वजातीय धर्म नहीं छोड़ोगे ।। ३३० ।। तुम लोग देव-द्विजों की हिंसा करते हो, पाप कर्मो में मति रखते हो, स्वभाव से दुराचारी हो, इस कारण दुर्गति होगी । अमरों की पुरी (स्वर्गलोक) तीनों लोकों से ऊपर है उस पर वेदों का निवास है ।। ३३१ ।। जो होम-यज्ञ-याग से उनकी अर्चना करता है उसका यज्ञ-भाग लेने हेतु देवगण उसके यहाँ जाया करते हैं । सारे देवगण किसी के अनिष्टकारी नहीं हैं । जो भक्ति-भाव से पुकारता है, वे उसी के अनुगत हैं ।। ३२ ।।

मुनिगण ऋषिगण थाके तपस्याते। देख मन्दकारी केह नहे कोन मते
देव-द्विज दुइ तुल्य, धर्म्म पथे मन। तार हिंसा ये करे से दुर्मति दुर्ज्जन ३३
अति अल्प आयु तोरा धर्म्मेते विहीन। देवहिंसा करिया वांचिवि कतदिन
हइयाछे एक युक्ति यत देवगण। देवतार सहाय ह'येछे नारायण ३४
विष्णु सने युझिवेक काहार शकति। एक जन ना थाकिवे वंशे दिते बाति
एत बलि कोप मने ब्रह्मार गमन। विरले वसिया युक्ति करे तिन जन ३५
माल्यवान वले, भाइ, शङ्का त्यज मने। तिन जने युद्ध करि मारि नारायणे ३६
माल्यबान कथा शुनि कहिछे सुमाली। शुनियाछि नारायण वले महावली ३७
हिरण्यकशिपु आदि करेछे संहार। हेन विष्णु मारे बल शक्ति आछे कार
माली बले, संग्रामेते विनाशिव तारे। आर येन देवगण युद्ध नाहि करे ३८
विष्णु वड़ कुचक्री, कुयुक्ति यत तार। से मरिले देवतार टुटे अहङ्कार
तिन भाइ मिल आगे मारि नारायण। पश्चाते मारिव, आछे यत देव गण ३९
मुनि ऋषि मारिव, मारिव सिद्ध यति। घुचाइव देवतार स्वर्गेर वसति
एत बलि तिन जने युक्ति कैल सार। घोड़ा-हासी रथ-रथी साजिल अपार ३४०
तुलिल कटक-ठाट रथेर उपरे। वैकुण्ठे चलिल तारा विष्णु जिनि बारे
सिंहनाद घोर शब्द करे घेन-घन। वैकुण्ठेर द्वारे गिया दिल दरशन ३४१

मुनि-ऋषिगण तपस्या में निरत रहते है। देखो, वे कभी, किसी के, किसी प्रकार से अनिष्टकारी नहीं हैं। देव-द्विज दोनों समान हैं; इनका चित्त धर्म-मार्ग में रहता है। जो इनकी हिंसा करता है वह दुर्मति दुर्जन है ॥ ३३ ॥ तुम सब अति अल्पायु हो, धर्म से हीन हो। तुम लोग देवों के प्रति हिंसा रखकर कितने दिन जीवित रहोगे ? सारे देव-गण एक-जुट हो गये है। देवताओं के सहायक नारायण बने हैं ॥ ३४ ॥ विष्णु के साथ युद्ध कर सके, ऐसी शक्ति किसकी है। तुम सबके वंश में दीपक दिखानेवाला भी कोई नहीं बचेगा। ऐसा कहकर क्रोधित चित्त से ब्रह्मा चले गये। तव तीनों एकान्त में वैठकर विचार-विमर्श करने लगे ॥३५॥ माल्यवान ने कहा, भाई, मन से शंका छोड़ दो। हम तीनों लड़कर नारायण को मार डालेंगे ॥ ३६ ॥ माल्यवान की वात सुन सुमाली कहने लगा— सुना है, नारायण बल में महावली है ॥३७॥ उसने हिरण्यकशिपु आदि का संहार कर डाला है। ऐसे विष्णु को मार सके, ऐसा वल और शक्ति किसकी है। माली वोला, संग्राम में हम उसे विनष्ट कर डालेंगे। जैसे देवगण पुनः हमसे युद्ध न कर सकें ॥३८॥ विष्णु बड़ा ही कुचक्री है, ये सारी कु-परामर्श उसी का है। उसके मरते ही— देवताओं का अहंकार मिट जायेगा। तीनों भाई मिलकर पहले नारायण को मारें। इसके पश्चात् सारे देवों को मारेंगे ॥ ३९ ॥ हम (उसके पश्चात्) ऋषि-मुनियों को मारेंगे, सिद्ध-यतियों को मारेंगे और देवताओं का स्वर्ग में रहना समाप्त कर देंगे। यह कहकर तीनों ने इसी परामर्श को सार मान लिया और अनगिनत घोड़ा-हाथी-रथ-रथी सजाये ॥ ३४० ॥ उन सबने अपनी सेना लेकर रथ पर चढ़कर विष्णु को जीतने हेतु

गरुड़-वाहने चड़ि एल नारायण । नारायण-सम्मुखेते बाजे महारण
महाकोपे नाना अस्त्र मारे निशाचर । वाण बृष्टि करितेछे बिष्णुर उपर ४२
छाइल गगन-पथ दिग् दिगन्तर । पड़िछे असंख्य बाण पट्टिश तोमर
जाठा जाठि शेल-शूल मूषल-मुद्गर । लेखा जोखा नाहि, बाण पड़िछे विस्तर ४३
नारायण-वीर दापे त्रिभुबन नड़े । राक्षसेर सैन्य सद मूर्च्छा ह'ये पड़े
कुपिल सुमाली माली रणे आगुसरे । दुहातिया वाड़ि मारे गरुड़ेर शिरे ४४
झञ्झना-चिकुर-सम गदा बाड़ि पड़े । बिष्णु ल'ये गरुड़ पलाय उभरड़े
गरुड़ेर भङ्ग देखि माल्यवान हासे । श्रीहरि फिरान तारे करिया आश्वासे ४५
विष्णु बले, गरुड़, तिलेक थाक रणे । पाठाव राक्षसगणे यमेर सदने
तोमार संग्रामे लागे त्रिभुवने भय । राक्षसेर रणे भङ्ग उचित ना हय ४६
उलटिया गरुड़ आइल महारणे । एड़िलेन चक्र बाण बिष्णु तत क्षणे
चक्रबाणे मालीर मस्तक काटि पाड़े । माल्यबान सुमाली पलाय उभ रड़े ४७
पुनः फिरे निशाचर, नाहि देय भंग । लोहार मुद्गर हाने, भये काँपे अंग
माल्यबान बले, तुमि थाकह श्रीहरि । आजि रणे तोमारे पाठाब यमपुरी ४८
श्रीहरि बलेन, शुन बेटा माल्यवान । प्रतिज्ञा क'रेछि आमि देबतार स्थान
अभय लइया गेछे यतेक अमर । तोरे मारि घुचाइब देबतार डर ४९

वैकुण्ठ पर चढ़ाई की । वे बार-बार सिंहनाद और घोर निनाद कर रहे थे । वे वैकुण्ठ के द्वार पर दिखाई पड़े ॥ ३४१ ॥ नारायण गरुड़-वाहन पर चढ़कर आये । नारायण के सम्मुख ही भयंकर युद्ध शुरू हो गया । प्रचंड क्रोध से निशाचर विष्णु पर नाना अस्त्रों का प्रहार करने लगे । वे बाण-वर्षा करने लगे ॥ ४२ ॥ समूचा आकाश-मार्ग दिग्-दिगन्त उनसे परिव्याप्त हो गया । असंख्य वाण, पट्टिश, तोमर आदि गिरने लगे । भाले-बरछे, शेल-शूल, मुसल, मुद्गर आदि की गिनती न थी, प्रचुर वाण गिरने लगे ॥ ४३ ॥ नारायण की वीरता से त्रिभुवन हिल उठा, राक्षसी सेना मूर्छित हो गिर पड़ी । तब सुमाली और माली क्रोध से भरकर आगे बढ़े और दोनों हाथों से गदा का प्रहार गरुड़ के सिर पर किया ॥ ४४ ॥ झन-झनाहट की ध्वनि से गदा की चोट पड़ी । विष्णु को लिये हुए गरुड़ मुड़कर भागने लगा । गरुड़ को भागते देख माल्यवान हँस पड़ा । श्रीहरि उसको आश्वासन दे लौटा लाये ॥ ४५ ॥ विष्णु ने कहा— गरुड़, तुम पल भर युद्ध में रहो । मैं राक्षसों को यम के घर भेजता हूँ । तुम्हारे संग्राम से तो त्रिभुवन आतंकित हो उठता है । इसलिए तुम्हें राक्षसों के साथ इस युद्ध में भागना उचित नहीं ॥ ४६ ॥ तब गरुड़ लौटकर महायुद्ध में आ गया । तब विष्णु ने तुरन्त चक्रबाण छोड़ा उस चक्रबाण ने माली का मस्तक काट गिराया । माल्यवान और सुमाली तेजी से भाग चले ॥ ४७ ॥ निशाचर पुनः लौट आये, वे युद्ध में हार नहीं मानते थे, वे लोहे के मुद्गर का प्रहार करते थे, भय से उनके अंग काँपते थे । माल्यवान बोला— श्रीहरि, तुम ठहरो । आज युद्ध मे तुम्हें यमपुरी भेज दूँगा ॥ ४८ ॥ श्रीहरि ने कहा— रे माल्यवान सुन !

अवनीते थाकिले बधिब सबकारे। प्राणलये याह् बेटा, पाताल-भितरे
माल्यवान बले, विष्णु, कथा बड़ टान। राक्षसेर संगे युद्धे हाराइबि प्राण ३५०
माल साट दिया तवे गेल माल्यवान। यत शक्ति आछे तोर, तत शक्ति हान
बिक्रम करिया रहे हरिर सम्मुखे। अग्नि बाण श्रीहरि मारेर तार बुके ३५१
अग्नि-बाणे राक्षसेर सर्व्व अङ्ग पोड़े। सहिते ना पारे बीर, धाय उग्र रड़े
श्रीहरि कोपेते राक्षसे लागे डर। पलाये राक्षस गेल पाताल भितर ५२
श्रीहरि भये सबे प्रबेशे पाताल। कुबेर लङ्काय बसि करे ठाकुराल
प्रथमे लङ्काते राजा माली ओ सुमाली। परे राज्य करिल कुबेर महाबली ५३
चौद्दयुग राज्य करे लङ्काय रावण। तोमार प्रसादे एवे राजा बिभीषण
रावणे बधिला तुमि, शक्ति अतिशय। रावण हइयाछिल राक्षस दुर्ज्जय ५४
अगस्त्येर कथा शुनि रामेर उल्लास। कह कह बलि राम करिला प्रकाश

कुबेरेर जन्म, तपस्या, बरलाभ ओ लंकाय राजत्व

श्रीराम बलेन, मुनि, करि निवेदन। ब्रह्म अंशी राक्षस जन्मिल कि कारण ५५

हमने देवता के यहाँ प्रतिज्ञा की है। सारे देवता हमसे अभय पाकर गये हैं। तुझे मारकर देवताओं का डर मिटा दूँगा ॥ ४९ ॥ धरती पर रहने पर मैं सबको मार डालूँगा। अरे, तुम सभी प्राण लेकर पाताल में चले जाओ। माल्यवान बोला, विष्णु, यह बात बड़ी विषम है, राक्षसों के साथ युद्ध में तुम्हें प्राण गँवाना पड़ेगा ॥ ३५० ॥ इसके पश्चात् यह चुनौती देकर माल्यवान चला। तेरी जितनी शक्ति है, उतनी शक्ति से प्रहार कर, वह परम विक्रम से हरि के सम्मुख खड़ा हो गया। श्रीहरि ने उसकी छाती पर अग्निवाण मारा ॥ ३५१ ॥ अग्निवाण से राक्षस का सारा अंग जलने लगा। वह वीर सह नहीं सका और तेजी से धावित हुआ। श्रीहरि के कोप से राक्षस भयभीत हो गये। सभी राक्षस भागकर पाताल में चले गये ॥ ५२ ॥ श्रीहरि के भय से सबने पाताल में प्रवेश किया। कुबेर लंका में बैठ शासन करने लगा। पहले लंका में माली और सुमाली राजा थे। इसके पश्चात् वहाँ महाबली कुबेर ने राज किया ॥ ५३ ॥ रावण ने लंका पर चौदह युग (युग = बारह वर्ष) राज किया। तुम्हारे प्रसाद से अब विभीषण राजा हुआ। अत्यन्त शक्तिमान रावण का तुमने वध किया; रावण दुर्जेय राक्षस बन गया था ॥ ५४ ॥ अगस्त्य की बात सुनकर राम उल्लसित हुए ॥ उन्होंने (आगे की कथा) 'सुनाइये, सुनाइये' कहकर अपना वह उल्लास प्रकट किया।

कुवेर का जन्म, तपस्या, वर प्राप्ति और लंका में राज्य करना

श्रीराम ने कहा, मुनि, आपसे निवेदन करता हूँ, बताइये कि ब्रह्मा के अंश से भला राक्षस किस कारण उत्पन्न हुए? ॥ ५५ ॥ जैसा

तेमति सन्तान हय, येरूप औरस । ब्राह्मणेर बीर्य्ये केन जन्मिल राक्षस
बिश्वश्रबार पुत्र कुबेर दशानन । दुइ भाइ दुइ जाति हैल कि कारण ५६
कुबेर हइल यक्ष राक्षस रावण । एक बीर्य्ये दुइ जाति हैल दुइ जन
बिश्वश्रबार दुइ पुत्र सर्व्व लोके जानि । रावण राक्षस केन, कह महामुनि ५७
अगस्त्य बलेन, राम, कर अबधान । रावणेर जन्म कथा कहि तब स्थान
महामुनि ये पुलस्त्य ब्रह्मार नन्दन । ब्रह्मार समान महातपे तपोधन ५८
सुमेरु पर्व्वत थाके योगासन करि । केलि करिबारे एल अनेक सुन्दरी
देवता-गन्धर्व्व कन्या आइल बिस्तर । सखी सखी मिलि केलि करे निरन्तर ५९
तृणबिन्दु-मुनि-कन्या रूपेते अप्सरा । त्रैलोक्यमोहिनी धनि नाम स्वयंबरा
मुनि थाके तपस्याते मुदि दुइ आँखि । सेइखाने नित्य आसे कन्या शशिमुखी ३६०
नाचे गाय मुनिर निकटे करे रङ्ग । प्रतिदिन मुनिर तपस्या करे भंग
कोपेते पुलस्त्य मुनि शाप दिला तारे । बिना-पुरुषेते गर्भ हइबे उदरे ३६१
तबु नाहि शुने कन्या, नाचे गाय सुखे । कोपेते पुलस्त्य मुनि शापिलेन ताके
ना शुन आमार कथा कोन् अहङ्कारे । मुनि शापे कन्यार स्तनेते दुग्ध क्षरे ६२
अपमान पेये गेल पितार आलय । कन्यार दुर्गति देखि पिता स्तब्ध हय
तृणबिन्दु शुनिया सकल बिवरण । पुलस्त्य निकटे गेल मलिन बदन ६३

औरस होता है, संतान भी वैसी ही होती है । ब्राह्मण के वीर्य से भला राक्षस कैसे उत्पन्न हुआ । कुबेर और दशानन दोनों विश्वश्रवा के पुत्र थे । दोनों भाई किस कारण भिन्न-भिन्न जाति के हुए ॥ ५६ ॥ कुबेर यक्ष बना, रावण राक्षस । एक ही वीर्य से उत्पन्न दोनों दो जातियों के बने । सभी जानते हैं कि विश्वश्रवा के दो पुत्र थे, रावण राक्षस किस लिये बना ? महामुनि, बताइये ॥ ५७ ॥ अगस्त्य ने कहा, राम सुनो, मैं रावण का जन्म-वृत्तान्त तुमसे सुनाता हूँ । ब्रह्मा के पुत्र जो पुलस्त्य हैं, ब्रह्मा जैसे महातप से जो तपोधन बने हैं ॥ ५८ ॥ वे सुमेरु पर्वत पर योगासन लगाये हुए थे, वहाँ केलि करने हेतु अनेक सुन्दरियाँ आयीं । वहाँ अनेक देवता-गंधर्व कन्याएँ आयीं, सभी सखियाँ मिलकर निरन्तर केलि करने लगीं ॥ ५९ ॥ तृणविन्दु मुनि की कन्या, रूप में अप्सरा के समान थी; उस त्रैलोक्यमोहिनी-कन्या का नाम स्वयंवरा था । मुनि तपस्या में जब नेत्र बंद किये रहते, वह चन्द्रमुखी कन्या नित्य वहीं आया करती ॥ ३६० ॥ वह नाचती-गाती, मुनि के समीप नाना प्रकार के रंग-तमाशे करती रहती और प्रतिदिन मुनि की तपस्या भंग किया करती । तब क्रोधित हो पुलस्त्य मुनि ने उसे शाप दिया— तुम्हारे उदर में बिना पुरुष का ही गर्भ रह जायेगा ॥ ३६१ ॥ इतने पर भी वह कन्या बात नहीं सुनती थी, वह सुख से वैसा ही नाचा-गाया करती । क्रोध से पुलस्त्य मुनि ने उसे शाप दिया— तू मेरी बात किस अहंकार से नहीं सुनती ? मुनि के शाप से कन्या के स्तन से दूध झरने लगा ॥ ६२ ॥ अपमानित हो वह पिता के यहाँ गयी । कन्या की दुर्गति देख पिता स्तब्ध हो गया । तृणबिन्दु सारा विवरण सुनकर, मलिन-बदन हो पुलस्त्य के यहाँ गया ॥ ६३ ॥ पुलस्त्य

प्रणाम करिल गिया पुलस्त्येर पाय । जिज्ञासा करिल मुनि, बसति कोथाय
तृणविन्दु बले, थाकि एइ गिरी पुरे । दियछ दारुण शाप आमार कन्यारे ६४
अनूढ़ा कन्यार गर्भ शुनि लागे त्रास । स्तन युगे दुग्ध झरे, एकि सर्व्वनाश
मुनि बले, तव कन्या बड़इ चञ्चला । भाङ्गिल तपस्या मोर करि अवहेला ६५
करिल ये कुकर्म्म यौवन अहङ्कारे । दियाछि ताहार मत प्रतिफल तारे
तृणबिन्दु बले, दोष क्षम महाशय । तुमि ना करिले दया जाति नाश हय ६६
मुनि बलिलेन आर किआछे उपाय । बलेछि ये कथा आर खण्डन ना याय
तृणविन्दु बले, मुनि, कर अवधान । परम तपस्वी तुमि ब्रह्मार समान ६७
तोमार असाध्य किछु नाहिक संसारे । इहाते सकलि तुमि पार करिबारे
बालिका आमार कन्या विवाह ना हय । हेन कन्या गर्भवती, शुनि लोग भय ६८
शापेते हइल गर्भ, केहना वुझिबे । बलह केमने मुनि, जाति रक्षा हबे
मुनि बले, तृणविन्दु, कि आछे युकति । किरूपे हइबे तव कन्यार निष्कृति ६९
तृणविन्दु बले, यदि हइले सदय । सेइ कन्या बिभा तुमि कर महाशय
मुनिर हइल मन बिभा करिबारे । तृणबिन्दु कन्यादान करिल मुनिरे ३७०
करिल मुनिर सेवा कन्या गुणवती । मुनि तारे दिल बर ह'ये हृष्टमति
मम शापे गर्भ ह'ये पेले अपमान । मम बरे प्रसविवे उत्तम सन्तान ३७१

के चरणों में प्रणाम किया । मुनि ने पूछा— कहाँ रहते हो । तृणविन्दु बोला— इसी गिरि-पुर में रहता हूँ, आपने हमारी कन्या को दारुण शाप दिया है ।। ६४ ।। अविवाहित कन्या का गर्भ रहेगा, यह सुनकर त्रास हो रहा है । उसके स्तनों से दूध झर रहा है, यह कैसा सर्वनाश है ? मुनि ने कहा तुम्हारी कन्या बड़ी चंचल है । उसने मेरी अवहेलना कर तपस्या भंग की ।। ६५ ।। यौवन के अहंकार में उसने जो कुकर्म किया, उसी के अनुरूप मैंने प्रतिफल दिया है । तृणविन्दु ने कहा— महाशय, मेरा दोष क्षमा करें । आप दया न करेंगे तो जाति नष्ट होगी ।।६६।। मुनि ने कहा, और कौन-सा उपाय है ? हमने जो बात कह दी, उसका खंडन नहीं हो सकता । तृणबिन्दु बोला— मुनि, आप ब्रह्मा के समान हैं ।।६७।। संसार में आपका असाध्य कुछ नहीं है । यहाँ आप सब कुछ कर सकते हैं । हमारी कन्या बालिका है, उसका विवाह नहीं हुआ है । ऐसी कन्या गर्भवती है, सुनकर भय होता है ।। ६८ ।। यह तो कोई नहीं समझेगा कि इसका गर्भ शाप के कारण हुआ है । कहिये मुनि, जाति-रक्षा कैसे होगी ? मुनि ने कहा— तृणविन्दु, और कौन-सी युक्ति है ? तुम्हारी कन्या का उद्धार कैसे होगा ।। ६९ ।। तृणविन्दु ने कहा— यदि आप सदय हुए तो महाशय, आप ही इस कन्या से विवाह कीजिये । मुनि की इच्छा भी विवाह करने की हुई । तृणविन्दु ने मुनि को कन्यादान किया ।। ३७० ।। उस गुणवती कन्या ने मुनि की सेवा की । मुनि ने प्रसन्नचित्त होकर उसे वर दिया । मेरे शाप से गर्भवती बनकर तुम्हें अपमान मिला, अब मेरे वर से तुम उत्तम संतान प्रसव करोगी ।।३७१।। उस गर्भ से महामुनि विश्वश्रवा

सेइ गर्भे विश्वश्रवा जन्मे महामुनि। भरद्वाज-कन्या बिभा करिलेन तिनि
भरद्वाज-मुनि कन्या नाम तार लता। तार गर्भे जन्मिला कुबेर महा रथा ७२
विश्वश्रवा और सेते कुबेरेर जन्म। कुबेर करिल तप अराधिया धर्म्म
कुबेर करिल तप सहस्र बत्सर। तार तप देखिया ब्रह्मार लागे डर ७३
कुबेर ब्रह्मार बरे हइल अमर। अमर हैल आर हैल धनेश्वर
पवन बरुड़ यम अग्नि पुरन्दर। सबे मिलि कुबेरे दिलेन बहुबर ७४
पाइल पुष्पक रथ, कि क'ब बाखान। आपनार हाते ब्रह्मा करिला निर्म्माण
रथ सज्जा करि दिल रथेर सारथि। राजहंस बहे रथ पबनेर गति ७५
दश योजन रथ से अति सुचिक्कण। पृथिबी भ्रमिते पारे, यदि करे मन
बर पेये कुबेरेर हर्ष हैल मने। प्रणाम करिल गिया पितार चरणे ७६
अतुल ऐश्वर्य ब्रह्मा दिला मोरे दान। सबे मात्र नाहि दिला थाकिबार स्थान
पितार निकटे यक्ष करिल मिनति। आज्ञाकर, कोथा पिता, करिब बसति ७७
विश्वश्रवा बले, तुमि धन-अधिकारी। तोमार बसति योग्य स्वर्ण लङ्कापुरी
राक्षसेर राज्य सेइ पुरी मनोहर। राक्षस पलाये गेछे पाताल-भितर ७८
कुबेर बलेन, पिता, करि निवेदन। राक्षस पलाये गेछे किसेर कारण
विश्वश्रवा बले, दुष्ट निशाचरगण। दुष्ट देखि रिपु हइलेन नारायण ७९

का जन्म हुआ। उन्होंने भरद्वाज की कन्या से विवाह किया। भरद्वाज मुनि की उस कन्या का नाम लता था जिसके गर्भ से महारथी का जन्म हुआ॥ ७२ ॥ विश्वश्रवा के औरस से कुबेर का जन्म हुआ। कुबेर ने धर्म की आराधना करते हुए तपस्या की। कुबेर ने एक सहस्र वर्ष तपस्या की। उसकी तपस्या देखकर ब्रह्मा को भय लगा॥ ७३ कुबेर ब्रह्मा के वर से अमर हुआ। अमर होने के साथ-साथ धनाधिपति भी बना। पवन, वरुण, यम, अग्नि, इन्द्र, इन सबने मिलकर कुबेर को अनेक वर दिये॥ ७४ ॥ उसे पुष्पक रथ मिला, उस रथ का क्या वर्णन करें! ब्रह्मा ने अपने हाथ से उसका निर्माण किया था। उन्होंने रथ की सजावट करने के साथ-साथ रथ का सारथी भी दे दिया। उस रथ को राजहंस पवन-वेग से ले चलते थे॥ ७५ ॥ दस योजन में फैला वह रथ बहुत ही चिकना था, इच्छा होने पर वह समूची पृथ्वी भ्रमण कर सकता था। वर पाकर कुबेर के मन में हर्ष हुआ, उसने जाकर पिता के चरणों में प्रणाम किया॥ ७६ ॥ तात, ब्रह्मा ने मुझे अतुल ऐश्वर्य प्रदान किया है, केवल रहने का स्थान नहीं दिया। पिता के पास आकर यक्ष ने विनती की— पिता, आज्ञा करें, कहाँ जाकर निवास बनाऊँ? ॥ ७७ ॥ विश्वश्रवा ने कहा— तुम धनाधिपति हो, स्वर्ण-लंकापुरी तुम्हारे रहने योग्य स्थान है। वह मनोहर पुरी राक्षसों का राज्य है। परन्तु राक्षस पाताल भाग गये हैं॥ ७८ ॥ कुबेर ने कहा, पिता, आपसे निवेदन करता हूँ, बताइए, राक्षस किस कारण वहाँ से भाग गये हैं। विश्वश्रवा ने कहा— राक्षसगण बड़े दुष्ट है। उनकी दुष्टता देखकर नारायण उनके शत्रु बन गये॥ ७९ ॥ उन सबने विष्णु के साथ बहुत अधिक युद्ध

विष्णुर सङ्गेते युद्ध करिल विस्तर। विष्णु चक्रे मरिल अनेक निशाचर
कोपेते करिल आज्ञा देव श्रीनिवास। पृथिवीते थाकिले करिब सर्व्वनाश ३८०
विष्णु भये भङ्गदिल यत निशाचर। लुकाइया रहे गिया पाताल-भितर
से अवधि शून्य पड़ि आछे लङ्कापुरी। तथा गिया थाक पुत्र धन-अधिकारी ३८१
पितृ-आज्ञा पेये से कुबेर हृष्ट मति। लङ्कार भितरे गिया करेन वसति

रावण, कुम्भकर्ण ओ बिभीषणेर जन्म, तपस्या ओ वर लाभ

पुष्पकविमाने कुबेर घोरे अन्तरीक्षे। पाताले थाकिया ताहा राक्षसेरा देखे ८२
देखिया द्विगुण खेद बाड़िल अन्तरे। राक्षसेर स्वर्णलङ्का लइल कुबेरे
बसिया मन्त्रणा करे ल'ये मंत्रीगणे। कुबेरेर स्थाने लङ्का लइब केमने ८३
विश्वश्रवा अधिकारी ह'येछे लङ्कार। पितृधने ताहार ह'येछे अधिकार
पुनः यदि विश्वश्रव पुत्र एक हय। पितृधन बलि से लङ्कार अंशलय ८४
यदि हय दौहित्र विश्वश्रवार-नन्दन। दुइ दिक अधिकारी हबे हेन जन
एतेक मन्त्रणा करि भावित मनेते। विश्वश्रवाय दान दिब आपन दुहिते ८५
खलेर स्वभाव खल छाड़िते ना पारे। कोपे डाके माल्यवान आपन कन्यारे
निकषा ताहार नाम नवीन-यौवनी। अकलङ्का शशिमुखी मराल गामिनी ८६

किया। विष्णु के चक्र से अनेक निशाचर मारे गये। क्रोधित लक्ष्मीपति विष्णु ने आज्ञा दी— यदि तुम सब पृथ्वी पर रहो तो मैं तुम्हारा सर्वनाश कर डालूँगा ॥ ३८० ॥ विष्णु के भय से सभी राक्षस युद्ध से भाग चले और पाताल में जाकर छिपकर रहने लगे। उसी समय से लंकापुरी सूनी पड़ी हुई है। पुत्र-धन के अधिकारी बनकर तुम वहीं जाकर रहो ॥ ३८१ ॥ पिता की वह आज्ञा पाकर प्रसन्नचित कुबेर ने जाकर लंका में निवास किया।

रावण, कुम्भकर्ण और बिभीषण का जन्म, तपस्या और वर-प्राप्ति

पुष्पक विमान पर बैठ कुबेर अन्तरिक्ष में घूमा करता। पाताल में रहनेवाले राक्षसों ने उसे देखा ॥३८२॥ देखकर उनके अन्तर में दुःख दुगुना बढ़ गया। (वे सोचने लगे) राक्षसों की स्वर्णलंका कुबेर ने ले लिया। वे बैठकर मंत्रियों से मंत्रणा करने लगे कि कुबेर के हाथ से हम लंका किस प्रकार ले सकते हैं ॥ ८३ ॥ विश्वश्रवा लंका का अधिकारी बना है, इस कारण पिता के धन पर कुबेर का अधिकार बना है। पुनः विश्वश्रवा का एक पुत्र यदि हो सके तो वह पिता का धन बताकर लंका का भाग ले सकेगा ॥ ८४ ॥ यदि विश्वश्रवा का पुत्र हमारी बेटी का लड़का (पोता) हो तो वह दोनों ओर का अधिकारी हो सकता है। ऐसी मंत्रणा करने के पश्चात् उन सबने मन में सोचा; अपनी कन्या का दान विश्वश्रवा को करेंगे ॥ ८५ ॥ खलों का स्वभाव खल छोड़ नहीं पाते। रोष से माल्यवान ने अपनी कन्या को बुलाया। उस नवीनयौवना, कलंकहीना, चन्द्रमुखी, मरालगामिनी कन्या का नाम निकषा था। उसकी कमर सिंह

मृगेन्द्र जिनिया कटि, राम रम्भा ऊरु। हरिणाक्षी, कामधनु जिनि युग्म भुरु
जिनि रम्भा तिलोत्तमा निरुपमा नारी। तिल फुल जिनि नासा निकषा सुन्दरी ८७
यौवन-तरङ्गे वक्षे भङ्गिमा सुठाम। पितार चरणे आसि करिल प्रणाम
माल्यवान बले एस, प्राणेर कुमारी। साबित्री समान हओ आशीर्व्वाद करि ८८
शुन बलि कन्या, तुमि रूपेते रूपसी। ताहाते मायावी बड़, जातिते राक्षसी
एइ उपरोध करि तोमार गोचर। बिश्वश्रवा पाशे गिया माग पुत्रवर ८९
ताहार रमणी ह'ये थाक तार घरे। येरूपे जनमे पुत्र तोमार उदरे
पितार वचने अति हइया लज्जित। ये आज्ञा बलिया चले हइया त्वरित ३९०
एकेत रूपसी बाला भुवनमोहिनी। करिया बिचित्र साज चले सुवदनी
महामुनि बिश्वश्रवा रत तपस्याय। निकषा बिचित्र बेशे सम्मुखे दाँडाय ३९१
बिश्वश्रवा जिज्ञासिल, के तुमि रूपसी। निकषा कहिल, आमि पुत्र-अभिलाषी
पत्नी भावे आलयेते थाकिब तोमार। मुनि बले, थाक प्रिये, गृहेते आमार ९२
सर्व्वमते आदरिणी हवे मम बरे। एक कन्या तिन पुत्र धरिबे उदरे
ज्येष्ठ पुत्र हवे अति विकृत आकार। बाहुबले शासिबेक एतिन संसार ९३
हइबे मध्यम पुत्र से अति-दुर्ज्जन। धरिबे अद्भुत बल, अद्भुत भक्षण
करिवेक अनाचार देव-द्विजे हिंसे। आपनार दोषे तारा मरिबे सवंशे ९४

(की कमर) से बढ़कर थी, जाँघें राम केले के पौधे की भाँति थीं। उसकी आँखें हिरण की आँखों जैसी, दोनों भौंहें इन्द्रधनुष से बढ़कर थीं। वह नारी रंभा, तिलोत्तमा से बढ़कर अनुपम थी। सुन्दरी निकषा की नाक तिल फूल से बढ़कर सुन्दर थी ॥ ८६-८७ ॥ यौवन-तरंग से उसकी छाती का उभार बड़ा ही मोहक था। उसने आकर पिता के चरणों में प्रणाम किया। माल्यवान ने कहा— प्राणप्रिय कन्या, आओ। आशीर्वाद देता हूँ कि सावित्री के समान बनो ॥ ८८ ॥ कन्या, सुनो, तुम रूप में रूपसी हो। तिसपर जाति में राक्षसी होने के कारण बड़ी मायाविनी हो। तुमसे यह आग्रह करता हूँ कि तुम विश्वश्रवा के पास जाकर श्रेष्ठ पुत्र की माँग करो ॥८९॥ उसकी पत्नी बनकर उसके यहाँ रहो जैसे कि तुम्हारे गर्भ से पुत्र उत्पन्न हो। पिता के वचन से बड़ी लज्जित होकर 'जो आज्ञा' कहकर वह तेज़ी से चली ॥३९०॥ एक तो वह बाला रूपसी, भुवनमोहिनी थी, तिस पर वह सुवदनी विचित्र सजावट कर चली। महामुनि विश्वश्रवा तपस्या में निरत थे, निकषा विचित्र वेश से उनके सम्मुख खड़ी हुई ॥ ३९१ ॥ विश्वश्रवा ने पूछा— रूपसी, तुम कौन हो? निकषा बोली, मैं पुत्र की अभिलाषा वाली हूँ। मैं पत्नी-रूप से आपके गृह में रहूँगी। मुनि ने कहा— प्रिये, मेरे गृह में रहो ॥ ९२ ॥ तुम मेरे वर से सब प्रकार से आदरणीय बनोगी। अपने गर्भ में तुम एक कन्या एवं तीन पुत्रों को धारण करोगी। तुम्हारा बड़ा पुत्र बड़े विकृत आकार का होगा। वह तीनों लोकों पर अपने बाहुबल से शासन करेगा ॥ ९३ ॥ तुम्हारा मँझला बेटा अत्यन्त दुर्जन होगा। वह अद्भुत बल धारण करेगा, अद्भुत भक्षण करेगा। देव-द्विजों की हिंसा कर अनाचार करेगा।

कन्या हवे दुरन्त दुःशीला अति लोभा। सेइ मजाइवे सृष्टि हइया विधवा
कुलेर उचित पुत्र हइवे कनिष्ठा। देव-द्विज-गुरु भक्त धर्म्मशील श्रेष्ठ ९५
एतेक कहिल यदि मुनि महाशय। निकषार दुइ चक्षे वारिधारा बय
योड़हाते कहे तवे मुनिर गोचर। आमारे केमन आज्ञा करले मुनिवर ९६
तोमार औरसे पुत्र जन्मिवे येजन। धर्म्मशील ना हइवे ए कथा केमन
मुनि बले, विषादित ना हओ सुन्दरी। दैवेर घटना आमि खण्डाइते नारि ९७
अग्निर पतन काले चाहियाछ वर। अग्नि हेन दुइ पुत्र हइवे दुष्कर
एत बलि विश्वश्रवा तपस्याते यान। निकषा प्रसब कैल चारिटि सन्तान ९८
प्रथम सन्तान हय अपूर्ब्ब-दर्शन। दश-मुण्ड, कुड़ि बाहु विंशति लोचन
सर्ब्ब ज्येष्ठ रावण भुवन कांपे डरे। कुम्भकर्णे प्रसव करिल तार परे ९९
विकृत-आकार, देह विषम-लक्षण। तारे देखि अन्तरे कांपिल देवगण
सूतिका गृहेते एसेछिल यत नारी। मुखे पूरे एके वारे सापटिया धरि ४००
कन्या रत्न भूमिष्ठ हइल तार परे। मुखेर गठन देखि सबे कांपे डरे
लिहलिह करे जिह्वा, विपरीत माथा। नाकेरे निःश्वास तार कामारेर जांता ४०१
अङ्गुलिते नख येन कुलार आकार। शूर्पणखा नाम तार बिख्यात संसार
कन्या देखि निकषार पुलकित मन। अवशेषे भूम्मिष्ठ धार्म्मिक विभीषण २

अपने दोष के कारण वे सवंश मारे जायेंगे ॥ ९४ ॥ तुम्हारी कन्या बड़ी दुःशील, दुष्ट और बड़ी लोभी होगी। विधवा बनकर वही इस सारी (राक्षसी) सृष्टि को डुबो देगी। तुम्हारा छोटा बेटा कुलोचित (धर्मवाला) होगा। वह देव-द्विज-गुरु का भक्त, और श्रेष्ठ धर्मशील होगा ॥ ९५ ॥ मुनि ने जब ऐसा कहा तो निकषा के नेत्रों से अश्रुधारा बह चली। उसने हाथ जोड़ मुनि से कहा— मुनिवर, भला मुझे यह कैसी आज्ञा दे रहे हैं ॥९६॥ आपके औरस से जो पुत्र जन्मेंगे, वे धर्मशील न हों, भला यह कैसी बात है ? मुनि ने कहा— सुन्दरी, तुम दुःखी मत होओ। दैव की घटना को मैं खंडित नहीं कर सकता ॥ ९७ ॥ तुमने अग्नि के पतनकाल में (सूर्यास्त के समय) वर माँगा है। इस कारण तुम्हारे पुत्र अग्नि जैसे प्रचंड प्रभावशाली होंगे। ऐसा कहकर विश्वश्रवा तपस्या करने चले गये। निकषा ने चार संतानें जनीं ॥ ९८ ॥ पहली सन्तान अपूर्व-दर्शन थी, उसके दस सिर, बीस हाथ और बीस आँखें थीं। सबसे बड़े पुत्र उस रावण के डर से संसार काँपने लगा। इसके पश्चात् निकषा ने कुम्भकर्ण को जन्म दिया ॥९९॥ उसका आकार विकृत, शरीर विषम-लक्षणों वाला था। उसे देखकर देवगण अंतर में काँप उठे। सूतिका-गृह में जितनी नारियाँ आयीं थी, उन सबको दोनों हाथों से पकड़कर उसने एक ही बार में मुँह में भर लिया ॥ ४०० ॥ उसके पश्चात् कन्यारत्न का जन्म हुआ। उसके मुँह की आकृति देख सभी डर गये। उसकी जीभ लपलपा रही थी, सिर उलटे ढंग का था, नाक से सांस चलने पर ऐसा लगता था मानो लुहार की धौंकनी चल रही हो ॥ ४०१ ॥ उँगलियों में नाखून सूप जैसे थे। शूर्पणखा नाम से वह संसार में विख्यात थी। कन्या को

तिन पुत्र, एक कन्या करिल प्रसब। शुभ समाचार पाय राक्षसेरा सब
अनेक राक्षस सङ्गे एल माल्यबान। बहु धन-रत्न दिया करिल कल्याण ३
क्षणमात्र देखिया सुस्थिर कैल मन। बिष्णुर भयेते करे पाताले गमन
बिश्वश्रवा-आश्रमेते निकषा रहिल। मनुष्य-आचारे तथा कत दिन गेल ४
दशानन बसि आछे निकषार काले। पिता सम्भाषिते एल कुबेर से' काले
कुबेर प्रणाम करे पितार चरणे। सङ्केते निकषा तारे देखाय राबणे ५
आसियाछे कुबेर देखह बिद्यमान। बैमात्रेय भ्राता तब यक्षेर प्रधान
बिधातादियेछे करि धन अधिकारी। सेइ अहङ्कारे भोग करें लङ्का पुरी ६
तब मातामह निर्म्माइल एइ लङ्का। राक्षसेर राज्य पेये नाहि करे शङ्का
उहारे जिनिया लङ्का पार यदि निते। तबे त आमार व्यथा घुचिबे मनेते ७
दशानन बले, माता, ना भाब बिषादे। केड़े ल'ब लङ्कापुरी तोमार प्रसादे
कठोर तपस्या यदि करिबारे पारि। कुबेर जिनिया तबे ल'ब लङ्कापुरी ८
शुनिया मायेर खेद हइया कातर। तपस्या करिते याय हिमाद्रि-शिखर
कुम्भकर्ण दशानन आर बिभीषण। गोकर्ण-बनेते तपकरे तिन जन ९
कुम्भकर्ण तप करे बड़इ दुष्कर। ऊर्द्ध्व पदे हेंट माथे थाके निरन्तर
ग्रीष्मकाले अग्निकुंड ज्वाले चारिपाशे। सेइ अग्नि-शिखा गिया लागये आकाशे ४१०

देख निकषा का मन आनन्दित हुआ। इसके पश्चात् धार्मिक विभीषण का जन्म हुआ ।। २ ।। उसने तीन पुत्रों एवं एक कन्या का जन्म दिया। यह शुभ समाचार सभी राक्षसों को मिला। अनेक राक्षसों के संग माल्यवान् आया और अनेक धन-रत्न देकर कल्याण किया ।। ३ ।। संतानों को क्षण भर देखकर उसने मन को सुस्थिर किया और विष्णु के भय से पाताल चला गया। निकषा विश्वश्रवा के आश्रम में रही। मनुष्यों जैसा आचरण करते वहाँ कुछ दिन बीते ।। ४ ।। दशानन निकषा की गोद में बैठा था। उसी समय पिता से बात करने वहाँ कुबेर आया। कुबेर ने पिता के चरणों में प्रणाम किया। साथ ही निकषा ने उसे दिखाती हुई रावण से कहा— ।। ५ ।। वह सामने देखो, कुबेर आया है। वह तुम्हारा सौतेला भाई यक्षों का प्रमुख है। ब्रह्मा ने उसे धन का अधिकारी बना दिया है। उसी अहंकार से वह लंकापुरी का भोग कर रहा है ।। ६ ।। तुम्हारे मातामह (नाना) ने इस लंका का निर्माण किया था। राक्षसों का राज्य पाकर वह शंका नहीं करता, यदि उसे जीतकर लंका ले सको, तब हमारे मन की वेदना मिट सकती है ।। ७ ।। दशानन बोला— माँ, विषाद से चिन्ता न करो। तुम्हारे प्रसाद से मैं लंकापुरी को छीन लूँगा। यदि मैं कठोर तपस्या कर सकूँ तो कुबेर को जीतकर लंकापुरी ले सकूँगा ।। ८ ।। माँ के दुःख की बात सुनकर कातर हो दशानन तपस्या करने हेतु हिमालय के शिखरों की ओर चला। कुंभकर्ण, दशानन और विभीषण, ये तीनों भाई गोकर्ण वन में तपस्या करने लगे ।। ९ ।। कुंभकर्ण सिर नीचे किये, पैरों को ऊपर फैलाये निरन्तर रहकर बड़ा दुष्कर तप कर रहा था। ग्रीष्मकाल में अपने चारों

शीतकाले जले थाके दिवस-रजनी। नाहिक आहार निद्रा, श्वासगत प्राणी
कतदिन फल-मूल करिल आहार। राक्षसेर तप देखि देवे चमत्कार ४११
कठोर तपस्या तारा करे तिन जन। वृक्षेर गलित पत्र करये भक्षण
अनाहारे निरन्तर वायु आहारेते। तिन भाइ तपस्या करिल विधिमते १२
नाहिक शिशिर उष्ण, नाहिक बरिषे। करये कठोर तप राज्य-अभिलाषे
माथाय पिङ्गल जटा, बाकल पिधान। आचरिल तपस्यार येमत विधान १३
काम-क्रोध-लोभ आदि छाड़ि छय रिपु। अस्थिचर्म्मसार हैल, जीर्णतम बपु
तपस्या करिल पञ्च सहस्र बत्सर। राक्षसेर तपस्याते त्रिभुवने डर १४
यतेक देवतागण चिन्तित अन्तरे। काहार सम्पद लवे दुष्ट निशाचरे
इन्द्र बले, आमार इन्द्रत्व पाछेलया। चन्द्र-सूर्य्य भावे सदा कि जानि कि हय १५
यम बले, लइवेक मम अधिकार। पाताले वासुकि भावे, कि हवे आमार
ना जानि, कि वर चाहे दुष्ट निशाचर। सकल देवता गेल ब्रह्मार गोचर १६
ब्रह्मार निकटे गिया कहिला तखन। राक्षस तपस्या करे अतीव भीषण
कि जानि काहार पद लइवे काड़िया। निशाचरे सान्त्वना करह तुमि गिया १७
एतेक शुनिया ब्रह्मा गेलेन सत्वर। ब्रह्मा बलिलेन, वर माग निशाचर
रावण बले, वरयदि दिवे महाशय। आमारे अपर वर दिते आज्ञा हय १८

और अग्निकुंड जलाकर रखता, जिसकी अग्निशिखाएँ बढ़कर आकाश को छू लेती थीं ॥ ४१० ॥ शीतकाल में वह दिन-रात जल में रहता। उसने आहार-निद्रा छोड़ दिये, प्राण साँस में रह गये थे। कुछ दिन फल-मूल का आहार किया। राक्षसों की तपस्या देख देवता विस्मित हो गये ॥ ४११ ॥ वे तीनों कठोर तपस्या कर रहे थे। वे वृक्षों के सड़े पत्ते भक्षण करते। अनाहार में निरन्तर वायु का आहार करते हुए तीनों भाई विधिपूर्वक तपस्या की ॥ १२ ॥ सर्दी-गर्मी पर ध्यान न देते, और न वर्षा पर। वे राज्य की अभिलाषा से कठोर तप कर रहे थे। सिर पर पिंगल-जटा बढ़ाये, वृक्ष की छाल पहने वे तपस्या के सारे विधान का आचरण करते थे ॥ १३ ॥ काम, क्रोध, लोभ आदि छः रिपुओं को छोड़ दिया। वे सूखकर अस्थि-चर्म मात्र रह गये, उनके शरीर अत्यधिक दुर्बल हो गये। उन तीनों ने पाँच हजार वर्ष तपस्या की। राक्षसों की तपस्या से त्रिभुवन में आतंक छा गया ॥ १४ ॥ सभी देवता अन्तर में चिन्तित हो उठे कि ये दुष्ट निशाचर न जाने किसकी सम्पदा ले लेंगे। इन्द्र कहता— संभवतः हमारा इन्द्रत्व ले लेंगे। चन्द्र-सूर्य सदा सोचते, न जाने क्या होगा ॥ १५ ॥ यम कहता— मेरा अधिकार छीन लेंगे। पाताल में वासुकी सोचता— न जाने हमारा क्या हो ! न जाने ये दुष्ट निशाचर कौन सा वर माँगेंगे। यह सोचकर सभी देवता ब्रह्मा के पास गये ॥ १६ ॥ उन सबने ब्रह्मा के पास जाकर कहा— राक्षस बड़ी भीषण तपस्या कर रहा है। न जाने यह किसका पद छीन ले। आप जाकर इन निशाचरों को शान्त करें ॥ १७ ॥ यह सुनकर ब्रह्मा तुरन्त वहाँ गये। कहा, निशाचरो, वर माँगो। रावण बोला, महाशय, यदि आप वर देना चाहते हैं, तो हमें

ब्रह्मा बलिलेन, तुमि चाह अन्य बर । आमि ना पारिब तोमा करिते अमर
दुष्ट निशाचर जाति, नह धर्म्म पर । मजाइबि सृष्टि तोरा हइले अमर १९
रावण बलिल, यदि ना कर अमर । तोमार स्थानेते नाहि चाहि अन्य बर
यथा इच्छा तथा ब्रह्मा करह गमन । एत बलि पुनः तप करये रावण ४२०
राक्षसेर तप देखि काँपे त्रिभुवन । बिषम उत्कट तप करे तिन जन
कुम्भकर्ण करे तप अतीब दुष्कर । हेंट माथा ऊर्द्ध्व मुखे रहे निरन्तर ४२१
ग्रीष्मकाले अग्निकुण्ड ज्वाले चारिपाशे । उपरेते खरतर-भास्कर प्रकाशे
बरिषाते चारिमास थाके पद्मासने । शिला-बरिषण-धारा बहे रात्रिदिने २२
शीतकाले हिम जले थाके निरन्तर । एइ रूपे तप करे अयुत बत्सर
अयुत बत्सर तप तपनेर स्थाने । ऊर्द्ध्व करे दुइ बाहु ठेकिछे गगने २३
अयुत बत्सर तप करे बिभीषण । स्वर्गेते दुन्दुभि बाजे, पुष्प-बरिषण
अयुत बत्सर तप करिल रावण । अनेक कठोर तप करे दशानन २४
एक माथा काटे एक हाजार बत्सरे । ब्रह्मारे आहुति देय अग्निर उपरे
नय माथा काटे नय हाजार बत्सरे । शेष मुण्ड काटिबारे भाबिल अन्तरे २५
खड़्ग धरि शेष मुण्ड करिते छेदन । ब्रह्मा आसि उपनीत रावण-सदन
ब्रह्मा बलिलेन, तप ना करिह आर । यत चाह तत दिब धन-अधिकार २६

अमर होने का वर दीजिये ।। १८ ।। ब्रह्मा ने कहा, तुम दूसरा कोई वर माँगो । मैं तुम्हें अमर बना नहीं सकूँगा । तुम सब दुष्ट निशाचर जाति के हो, धर्म में तत्पर नहीं रहते । अमर होने पर तो तुम सब सृष्टि को डुबो डालोगे ।। १९ ।। रावण बोला— यदि हमें अमर न करेंगे तो आपसे हम दूसरा वर नहीं चाहते । ब्रह्माजी, आप जहाँ चाहें चले जायें । यह कहकर रावण पुनः तप करने लगा ।। ४२० ।। राक्षसों की तपस्या देखकर तीनों लोक काँप उठे, वे तीनों विषम उत्कट तप कर रहे थे । कुंभकर्ण अत्यन्त दुष्कर तप कर रहा था । निरन्तर वह सिर नीचे और पैर ऊपर उठाये तप करता ।। ४२१ ।। ग्रीष्मकाल में अपने चारों ओर अग्निकुंड जलाये रखता, ऊपर प्रचंड सूर्य तपता रहता । वर्षाकाल में वह चार महीने पद्मासन लगाये रहता, रात-दिन शिला-वृष्टि की धारा सहन करता ।। २२ ।। शीतकाल में निरन्तर हिम-जल में रहता । इस प्रकार उसने दस हज़ार वर्ष तपस्या की । और दस हज़ार वर्ष सूर्य के सम्मुख दोनों हाथ आकाश तक ऊपर उठाये तपस्या की ।। २३ ।। विभीषण ने दस हज़ार वर्ष तपस्या की । स्वर्ग में दुन्दुभी बाजने लगी, पुष्पवर्षा होने लगी । रावण ने दस हज़ार वर्ष तपस्या की । दशानन ने अनेक कठोर तप किये ।। २४ ।। एक एक हज़ार वर्ष पर वह एक सिर काट डालता और ब्रह्मा के नाम पर अग्नि में उसकी आहुति देता । नौ हज़ार वर्षों में उसने नौ सिर काट डाले । उसने अन्तिम मस्तक काटने हेतु मन में चिन्तन किया ।। २५ ।। जैसे ही वह अन्तिम सिर काटने को उद्यत हुआ, ब्रह्मा रावण के पास पहुँचे । ब्रह्मा ने कहा, अब तपस्या न करो । तुम जितना चाहो, धन-अधिकार तुम्हें दूँगा ।। २६ ।। दशानन बोला, यदि

दशानन बले, यदि मोर दिबे वर। तव वरे संसारेते हइब अमर
ब्रह्मा बले, एइ वर बड़इ दुष्कर। छाड़िया अमर वर, चाह अन्य वर २७
रावण बलिल, यदि ना कर अमर। सदय हइया देह चाहि येइ वर
यक्ष रक्ष देवता कि गन्धर्व्व अप्सर। चराचर खेचर पिशाच विषधर २८
कारो हाते ना मरिब एइ वर देह। सकले जिनिब आमि, ना पारिवे केह
ब्रह्मा बले, ये वर चाहिले निज मुखे। तुष्ट ह'ये सेइ वर दिलाम तोमाके २९
यत यत जाति वीर आछये संसारे। निज बाहुबले तुमि जिनिवे सबारे
बाकि आछे दुइ जाति नर ओ वानर। दशानन बले, मोर ताहे नाहि डर ४३०
बाकि ये वानर-नर धरि भक्ष्य मध्ये। नर आर वानरे कि जिनिबेक युद्धे
रावण बलिछे पुनः करि योड़ कर। काटा मुण्ड योड़ा यावे, देइ एइ वर ४३१
ब्रह्मा बले, दिइ वर शुन हे रावण। मुण्ड काटा गेले तव ना हवे मरण
काटा मुण्ड योड़ा तव लागिवेक स्कन्धे। रावण प्रणाम कैल मनेर आनन्दे ३२
तवे ब्रह्मा उपनीत बिभीषण स्थाने। वर माग विभीषण, याहालय मने
बिभीषण प्रणमिल युड़ि दुइ कर। धर्म्मेते हउक मति, मागि एइ वर ३३
ब्रह्मा बलिलेन तुष्ट हइलाम मने। अक्षय अमर हओ आमार वचने
बिनाश्रम सर्व्वशास्त्रे हइवे निपुण। त्रिभुवने सकले घूषिवे तव गुण ३४

मुझे वर देना चाहते हैं, तो मैं आपके वर से संसार में अमर होना चाहता हूँ। ब्रह्मा ने कहा— वह वर बड़ा ही दुष्कर है, अमर होने का वर छोड़कर तुम दूसरा कोई वर माँगो ॥ २७ ॥ रावण बोला, यदि मुझे अमर नहीं बनाते हैं, तो सदय होके मेरी कामना के अनुसार यह वर दीजिए। यक्ष-रक्ष-देवता या गंधर्व-अप्सरा, या संसार में जितने आकाश-चारी, पिशाच, विषधर सर्पादि हैं, ॥ २८ ॥ मैं किसी के हाथ से न मरूँ, यही वर दें। मैं सबको जीत लूँ, हमें कोई जीत न सके। ब्रह्मा ने कहा— अपने मुँह से जो वर माँगा, सन्तुष्ट हो तुम्हें वही वर दे रहा हूँ ॥ २९ ॥ संसार में जितने भी जाति-वीर हैं, अपने बाहुबल से तुम सबको जीत लोगे। इनमें दो जातियाँ नर और वानर बच गयी हैं। दशानन बोला— मुझे इनसे कोई डर नहीं है ॥ ४३० ॥ बची हुई इन नर-वानर जातियों को हम अपने भक्ष्य में गिनते हैं। नर और वानर भला युद्ध में क्या जीतेंगे ? रावण ने पुनः हाथ जोड़कर कहा— मेरे कटे मस्तक जुड़ जायें, यह वर दीजिए ॥ ४३१ ॥ ब्रह्मा बोले, रावण सुनो, तुम्हें वर दे रहा हूँ कि सिर कट जाने पर भी तुम्हारी मृत्यु नहीं होगी। तुम्हारे कटे सिर गले से फिर जुड़ जायेंगे। तब रावण ने प्रसन्नता से उन्हें प्रणाम किया ॥ ३२ ॥ तब ब्रह्मा विभीषण के पास पहुँचे। कहा— विभीषण, मन में जो भावे, वर माँगो। विभीषण ने दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम किया, कहा— मैं यही वर माँगता हूँ कि धर्म में मेरी मति रहे ॥३३॥ ब्रह्मा ने कहा— मैं मन में संतुष्ट हूँ। मेरे आशीर्वाद से तुम अक्षय, अमर बनो, विना परिश्रम के तुम सभी शास्त्रों में निपुण बनोगे। त्रिभुवन में सभी तुम्हारे गुण की घोषणा करेंगे ॥ ३४ ॥ इसके बाद वे कुंभकर्ण

तार परे कुम्भकर्णे गेला बर दिते । देखिया त देबगण लागिला काँपिते
देबगण बले, भाग्ये ना जानि कि हय । बिना बरे कुम्भकर्णे देखि लागे डर ३५
बिधिर निकटे बर पेले कुम्भकर्ण । धरिया देबतागणे करिबेक चूर्ण
एत भाबि देबगण करिया युकति । डाक दिया आनाइला देबी सरस्वती ३६
देबीरे कहिल तबे यत देबगणे । एइ निवेदन माता तोमार चरणे
बिधि गिया छेन कुम्भकर्णे दिते बर । बैस गिया राक्षसेर कण्ठेर उपर ३७
बर दिते प्रजापति चाहिबे यखन । तुमि ब'लो, निद्रा आमि याब अनुक्षण
पाठालेन युक्ति करि यतेक अमर । देवी बसिलेन तार कण्ठेर उपर ३८
बिधि बले, किबा बर चाह निशाचर । कुम्भकर्ण बले, निद्रा याब निरन्तर
बिरिञ्चि बलेन, बर चाहिले येमन । दिबानिशि निद्रा याह ह'ये अचेतन ३९
सरस्वती चलिलेन आपन भवन । निद्रा याय कुम्भकर्ण हये अचेतन
बर शुनि दशानन एल शीघ्र गति । ब्रह्मार चरणे धरि करये मिनति ४४०
दशानन बले, सृष्टि आपनि सृजिले । फल सह वृक्ष केन काट डाले-मूले
कुम्भकर्ण तोमार सम्बन्ध हय नाति । एमन दारुण शाप ना हय युकति ४४१
निद्रा याबे तब वाक्ये, ना हइबे आन । निद्रा-जागरण प्रभु, करह बिधान
कातर हइया धरे ब्रह्मार चरणे । कुम्भकर्ण-बर शुनि हासे देबगणे ४२

को वर देने हेतु गये । उसे देखकर देवगण काँपने लगे । देवगण बोले, न जाने भाग्य में क्या होनेवाला है । बिना वर पाये कुंभकर्ण को देखते ही डर लगता है ॥ ३५ ॥ ब्रह्मा से वर पाने पर कुंभकर्ण देवताओं को पकड़कर चूर्ण कर डालेगा । ऐसा सोचकर देवताओं ने परामर्श कर युक्ति सोच, देवी सरस्वती को बुलवाया ॥ ३६ ॥ इसके पश्चात् देवताओं ने देवी से कहा— माता, तुम्हारे चरणों में यही निवेदन है । ब्रह्मा कुंभकर्ण को वर देने हेतु गये है । तुम उस राक्षस के कंठ में बैठ जाओ ॥ ३७ ॥ जब प्रजापति उसे वर देना चाहें, तो तुम कह देना, मैं निरन्तर सोता रहूँगा । यह युक्ति कर सभी देवताओं ने देवी सरस्वती को भेजा । देवी आकर उसके कंठ पर बैठ गयी ॥ ३८ ॥ ब्रह्मा ने पूछा, निशाचर, तुम कौन-सा वर चाहते हो । कुंभकर्ण बोला, मैं निरन्तर सोता रहूँगा । ब्रह्मा बोले, तुम जैसा वर माँगा, उसके अनुसार दिन-रात अचेत रहकर सोते रहो ॥ ३९ ॥ सरस्वती अपने भवन को चली गयी, कुंभकर्ण अचेत-सा होकर सोता रहा । उसके वर की बात सुनकर दशानन शीघ्रता से वहाँ आया और ब्रह्मा के चरणों को पकड़कर विनती करने लगा ॥ ४४० ॥ दशानन ने कहा— आपने सम्पूर्ण सृष्टि की सर्जना की है । अब फल-समेत वृक्ष को किसलिए जड़-मूल से काट रहे हैं । कुंभकर्ण आपके नाते में पोता लगता है । ऐसा दारुण शाप देना उचित नहीं ॥ ४४१ ॥ आपके वचन से वह सोता रहेगा, इसकी अन्यथा नहीं होगी । प्रभु, आप इसे निद्रा से जगने का भी विधान कर दीजिए । उसने कातर होकर ब्रह्मा के चरण पकड़े । कुंभकर्ण के वर की बात सुनकर देवगण हँसने लगे ॥ ४२ ॥ ब्रह्मा ने सदय होकर कहा—

सदय हइया ब्रह्मा बलिला वचन। छय मास निद्रा, एक दिन जागरण
अद्भुत धरिबे बल, अद्भुत भक्षण। एकेश्वरे समरे जिनिबे त्रिभुवन ४३
युद्धे केह ना आटिबे कुम्भकर्ण-वीरे। काँचा निद्रा भाङ्गिले याइबे यमघरे
एतेक बलिया ब्रह्मा गेलेन निजस्थाने। दुइ भाइ कुम्भकर्णे स्कन्धे करि आने ४४
विश्रवा घरेते आइल तिन जन। रावण पाइल वर, काँपे त्रिभुवन

रावण कर्तृक कुबेरेर निकट हइते लङ्काराज्य ग्रहण

शुनिया सुमाली ताहा अति हरषित। पाताल हइते तारा उठिल त्वरित ४५
सुमाली राक्षस उठे ल'ये परिजन। महोदर मारीच प्रहस्त अकम्पन
निज परिवार ल'ये उठे माल्यवान। वज्र मुष्टि विरूपाक्ष धूम्र खरशान ४६
छिल माल्यबानेर तनयचारि जन। धार्म्मिक से चारि जने निल बिभीषण
माल्यबान कोल दिया कहे दशानने। उठिलाम पुनः सबे तोमार कल्याणे ४७
ये काले तोमार बापे कन्या दिनु दान। सेइ दिन भावि दुःखे पाब परित्राण
विष्णुभये ह'येछिनु पाताल निवासी। तोमार भरसा पेये पृथिवीते आसि ४८
राक्षसेर राज्य से कनक लपुङ्कारी। हयेछे से लङ्काय कुबेर अधिकारी
कुबेर निकटे दूत प्रेर एक जन। लङ्कापुरी छेड़े याक, नहे विक रण ४९

यह छः मास सोयेगा, एक दिन जगेगा। यह अद्भुत बल धारण करेगा, अद्भुत भक्षण करेगा। यह अकेले त्रिभुवन को युद्ध में जीत लेगा ।। ४३ ।। कुम्भकर्ण वीर से युद्ध में कोई पार नहीं पायेगा परन्तु कच्ची नींद टूटने पर यमलोक जायेगा। यह कहकर ब्रह्मा अपनी जगह चले गये। दोनों भाई कुम्भकर्ण को कन्धे पर उठाकर ले आये ।। ४४ ।। तीनों विश्वश्रवा के घर आये। रावण को वर मिला, इससे त्रिभुवन काँपने लगा।

रावण द्वारा कुबेर के पास से लंका राज्य-ग्रहण करना

रावण की वर-प्राप्ति के बारे में सुनकर सुमाली बड़ा हर्षित हुआ। वे सभी राक्षस पाताल से शीघ्र ही ऊपर आ गये ।।४५।। राक्षस सुमाली महोदर, मारीच, प्रहस्त, अकम्पन आदि अपने परिजनों को लेकर ऊपर आ गया। माल्यवान भी अपने परिवार के लोगों को लेकर ऊपर आया। वज्रमुष्ठि, विरूपाक्ष, धूम्र, खरशान माल्यवान के ये चार पुत्र थे। उन चारों धार्मिकों को विभीषण ने अपने साथ ले लिया। माल्यवान ने दशानन को आलिंगन कर कहा, तुम्हारे अनुग्रह से ही हम सभी उबरकर ऊपर आये हैं ।। ४६-४७ ।। जिस समय मैंने तुम्हारे पिता को कन्यादान किया था, उस दिन का स्मरण कर हमें दुःख से परित्राण मिलेगा। विष्णु के भय से हम पाताल-निवासी बने थे। अब तुम्हारा भरोसा पाकर पृथ्वी पर आये हैं ।। ४८ ।। राक्षसों का राज्य वह सुवर्णमयी लंकापुरी है। कुबेर उस लंका का अधिकारी बना हुआ है। तुम कुबेर के पास एक दूत भेजो।

अनावासे एरूप रहिब कतकाल । लङ्कापुरी केड़े ल'ये कर ठाकुराल
रक्ष बले, मातामह, कि कह आपनि । ज्येष्ठ भ्राता महागुरु पितृ तुल्य मानि ४५०
ज्येष्ठ-सङ्गे बिसंबाद कोन् जन करे । हेन बाक्य न बलिह सभार भितरे
राबण एतेक यदि कहे माल्यबाने । प्रहस्त डाकिया बले सभा बिद्यमाने ४५१
कुबेरेर मान राख, ज्ञातिगण दुःखी । त्रिभुबने के आछे भ्रातार सुखे सुखी
देख देवदानब गन्धर्व्व दैत्यगण । भ्राता के मारिया राज्य लय कत जन ५२
ताहार प्रमाण देख कहि तब स्थान । मन दिया शुन तबे ताहार बिधान
वैमात्रेय भाइ मारे देब पुरन्दर । भाइ मारि स्वर्गेते हइल दण्डधर ५३
गरुड़ेर भाइ नाग सर्व्वलोके जाने । गरुड़ पाइले खाय हेन सर्पगणे
सर्व्वजन भाइ मेरे करे ठाकुराल । भायेर गौरब के रेखेछे कतकाल ५४
गुरु बलि मान, किन्तु ज्ञाति मनोदुःख । कुबेरे प्रभुत्व करे तोमार कि सुख
पूर्व्वे जननी के तुमि दियाछ आश्वास । जिनिया लइब लङ्का कुबेरेर पाश ५५
भुलिले से सब कथा तुमि कि कारण । इहा शुनि उद्योगी हइल दशानन
तखनि डाकिया दूते कहिछे राबण । दूत, तुमि याह शीघ्र, कह बिबरण ५६
राबणेर दूत गिया नोयाइल माथा । योड़हाते कुबेरेर स्थाने कहे कथा
राक्षसेर राज्य एइ स्वर्ण-लङ्कापुरी । ए-स्थाने केमने रबे धन-अधिकारी ५७

वह या तो लंकापुरी छोड़ जाये, या युद्ध करे ॥ ४९ ॥ बिना निवास के इस तरह से कितने समय रहेंगे । लंकापुरी को छीनकर तुम वहाँ अपना प्रभुत्व स्थापित करो । राक्षस रावण बोला, मातामह, आप क्या कहते हैं ? बड़े भाई को मैं महागुरु, पितृ-तुल्य मानता हूँ ॥ ४५० ॥ बड़े भाई के संग झगड़ा भला कौन करेगा ? सभा में आप ऐसी बात न कहें । रावण ने जब माल्यवान से ऐसा कहा, तो प्रहस्त ने सभाजनों के सम्मुख पुकारकर कहा— ॥ ४५१ ॥ तुम कुबेर का मान रखते हो, उधर तुम्हारे कुटुम्बी जन दुःखी हैं । भला, भाई के सुख से त्रिभुवन में कौन सुखी हो सका है । देव, दानव, गंधर्व, दैत्यों को देखो, कितने लोग भाई को मार-मारकर राज्य ले रहे हैं ॥ ५२ ॥ उसका प्रमाण तुमसे कहता हूँ, उनके संबंध में ध्यान देकर सुनो । देवराज इन्द्र ने अपने सौतेले भाई को मार डाला था और भाई को मारकर स्वर्ग का शासक बना ॥ ५३ ॥ सब जानते हैं कि नाग गरुड़ के भाई हैं । ऐसे सर्पों को पाते ही गरुड़ उन्हें खा डालते हैं । सभी लोग भाइयों को मारकर प्रभुत्व करते हैं, भाई का गौरव भला किसने कितने समय रखा है ? ॥ ५४ ॥ तुम उसे भाई मानते हो पर तुम्हारे कुटुम्बी मनोदुःख में हैं । कुबेर प्रभुत्व करता है तो उससे तुम्हें कौन-सा सुख मिल रहा है ? ॥ ५५ ॥ पहले ही तुमने अपनी माता को आश्वासन दे रखा है कि मैं कुबेर के हाथ से लंका जीत लूंगा । तुम भला वे सारी बातें भूल किसलिए गये ? यह सुनकर दशानन युद्ध करने हेतु उद्योगी हुआ । उसी समय दूत को बुलाकर रावण ने कहा— दूत, तुम शीघ्र जाकर (कुबेर से) यह विवरण कह सुनाओ ॥ ५६ ॥ तब दूत ने जाकर कुबेर को प्रणाम कर, हाथ जोड़ यह बात कहने लगा— यह

आपन गौरव राख रावण-सम्मान। छाड़िया कनक-लङ्का याह अन्य स्थान
दुरन्त राक्षस जाति, बुद्धिविपरीत। लङ्का दिया रावणेरे करह पिरीत ५८
मातामह राज्य ताइ अधिकार करे। कि सम्पर्के आछ तुमि लङ्कार भितरे
रावण-गौरव राख शुन लङ्केश्वर। छाड़िया कनक-लङ्का याह स्थानान्तर ५९
रावणेर दूत यदि एतेक कहिल। कुबेर पितार काछे सब जानाइल
बिश्वश्रवा बले, शुन धन-अधिकारी। दुरन्त राक्षस, आमि कि करिते पारि ४६०
ब्रह्मार बरेते नाहि माने बाप-भाइ। थाक गिया स्थानान्तरे द्वन्द्वे काज नाइ
कैलासपर्व्वते याह, यथा भागीरथी। सेइ खाने गिया तुमि करह बसति ४६१
विश्वश्रवा वचने कुवेर पुलकित। रावणेर दूत गेल कहिते त्वरित
कुबेर पाठाय दूत करिया मिनति। मम आशीर्व्वाद बल रावणेर प्रति ६२
छाड़िया कनक-लङ्का याब स्थानान्तर। किन्तु नाहि अंशा-अंशी धनेर उपर
त्रिशकोटि यक्षे वहे कुवेरेर धन। लङ्का छाडि कैलासेते करिल गमन ६३
लङ्कापेये राक्षसेर परम पिरीति। लङ्काते करये राज्य राक्षस दुर्म्मति
मन्त्रणा करिया तवे यत निशाचरे। रावणे करिल राजा लङ्कार भितरे ६४

स्वर्ण लंकापुरी राक्षसों का राज्य है। धनाधिपति कुवेर, आप यहाँ किस प्रकार रहेंगे ? ॥ ५७ ॥ आप अपना गौरव तथा रावण के सम्मान की रक्षा कीजिये, सोने की लंका छोड़कर अन्य स्थान में चले जाइये। राक्षस-जाति बडी दुष्ट है, बुद्धि उलटी है। आप रावण को लंका सौपकर मैत्री कर लीजिये॥ ५८ ॥ अपने नाना का राज्य वह अधिकार करेगा। आप लंका में किस नाते रह रहे हैं ? लंकेश्वर कुबेर, सुनिये, रावण का मान रखिये, स्वर्ण लंका छोड़कर अन्यत्र चले जाइये ॥ ५९ ॥ जब रावण के दूत ने ऐसा कहा तब कुबेर ने अपने पिता से सब कुछ वताया। विश्वश्रवा ने कहा, धनाधिपति कुवेर, सुनो, ये राक्षस बड़े दुष्ट हैं, मैं भला क्या कर सकता हूँ ? ॥ ४६० ॥ ये ब्रह्मा के वर के कारण बाप-भाई किसी को मानते नहीं। इनसे विवाद करने की आवश्यकता नहीं, तुम अन्यत्र जाकर रहो। जहाँ भागीरथी निकलती है, तुम उस कैलास पर्वत पर चले जाओ। वहीं जाकर तुम निवास करो ॥ ४६१ ॥ विश्वश्रवा के कथन से कुवेर पुलकित हुआ। रावण का दूत वह समाचार कहने हेतु वहाँ से वेग से चला। कुवेर ने दूत से विनय वचन कह भेजा, रावण से तुम मेरा आशीर्वाद कहना ॥६२॥ हम सोने की लंका छोड़कर अन्यत्र चले जायेंगे। परन्तु सम्पत्ति पर भाग-बँटवारा नहीं होगा। तीस करोड़ यक्ष कुवेर के धन को ढोकर ले चले। कुवेर लंका छोड़कर कैलास में चला आया ॥ ६३ ॥ लंका को पाकर राक्षसों को वड़ा हर्ष हुआ। दुर्मति राक्षस लंका में राज्य करने लगे। सारे निशाचरों ने मंत्रणा कर रावण को लंका का राजा बनाया ॥ ६४ ॥

रावण प्रभृतिर बिबाह ओ मेघनादेर जन्म-कथा

मृगया करिते गेल भाइ तिन जन । मयदानवेर सने हैल दरशन
कन्यारत्न आछे तार सर्व्वलोके जानि । त्रिभुवन जिनि कन्या रूपेते मोहिनी ६५
कन्या देखि पिता-माता बड़इ भावित । कारे बिभादिव कन्या, न जानि विहित
रावण बले, कन्या लये केन आछ बने । दानव आपन-कथा कहे, राजा शुने ६६
दानव बलिल, अवधान महाशय । कोन्‌कुले जन्म तव देह परिचय
रावण बले, आमि विश्वश्रवार नन्दन । राक्षसेर राजा आमि नाम दशानन ६७
मय बले, आमि बिश्वश्रवाय भाल जानि । विवाह करह मोर कन्यारे आपनि
कन्यादान करे मय पाइया कौतुक । शक्ति नामे शेल पाट दिलेन यौतुक ६८
यमनेर भगनी शेल जगते विदित । सेइ शेले हइलेन लक्ष्मण मूर्च्छित
रावणेर ब्रह्मशाप दानब ना जाने । कन्यादान करिया बिस्मित हैल मने ६९
बलिराज दौहित्री से नामे वज्रज्वाला । कुम्भकर्ण बिभा कैल रूपे चन्द्र-कला
सात योजन दीर्घ-अङ्ग कुम्भकर्ण वीर । तिन योजन दीर्घाकार कन्यार शरीर ४७०
बर कन्या उभये हइल सुशोभन । कि राजयोटक ब्रह्मा करिल सृजन
सरमा नामेते छिल गन्धर्व्व कुमारी । बिभीषण बिभा कैल परमासुन्दरी ४७१

रावण आदि का विवाह और मेघनाद की जन्म-कथा

तीनों भाई शिकार खेलने गये । वहाँ मय दानव से उनकी भेंट हुई । सारे लोकों में प्रसिद्ध उसकी एक कन्या थी । वह कन्या रूप में तीनों लोकों में सबसे बढ़कर सुन्दरी मोहिनी थी ।। ६५ ।। उस कन्या को देख माता-पिता बड़े चिन्तित थे कि यथोचित न जानकर किससे इस कन्या को विवाह दें । रावण बोला, कन्या को लेकर तुम वन में क्यों रहते हो ? मयदानव ने अपनी बात कही, राजा रावण ने सुनी ।।६६।। दानव बोला, महाशय, ध्यान से सुनिये । आपका जन्म किस कुल में है, परिचय दें । रावण बोला, मैं विश्वश्रवा का पुत्र हूँ । राक्षसों का राजा हूँ । मेरा नाम दशानन है ।। ६७ ।। मय ने कहा, मैं विश्वश्रवा को अच्छी तरह जानता हूँ । आप मेरी कन्या से विवाह कीजिये । मय दानव ने हर्षित होकर कन्यादान किया और उसने दहेज में "शक्ति" नाम का अस्त्र प्रदान किया ।। ६८ ।। वह शक्ति यम की बहिन के रूप में विश्वविख्यात है । उसी शक्ति से लक्ष्मण मूर्च्छित हो गये थे । रावण को मिले ब्रह्मशाप के बारे में मय दानव नही जानता था । कन्यादान कर वह मन में विस्मित हुआ ।। ६९ ।। राजा बलि की पोती जिसका नाम वज्रज्वाला था, रूप में चन्द्रकला-सी उस बाला से कुम्भकर्ण का विवाह करवाया । वीर कुंभकर्ण का शरीर सात योजन लम्बा था, उस कन्या का शरीर तीन योजन दीर्घाकार था ।। ४७० ।। वर-कन्या दोनों ही बड़े सुशोभित हुए । ब्रह्मा ने वह कैसी राज-जोड़ी बनाई थी । सरमा नाम की एक गंधर्व-कुमारी थी, उस परमासुन्दरी से विभीषण ने विवाह किया ।। ४७१ ।।

मृगयाते गिया विश्वाकॅल तपोबने । बिवाह करिया घेर एल तिन जने
मन्दोदरी-गर्भे जन्मे पुत्र मेघनाद । तारे देखि देवगणे गणये प्रमाद ७२

मेघेर गर्ज्जने गर्ज्जे लङ्कार भितरे । देब दैत्य त्रिभुवन काँपे यार डरे
कौतुके रावण-राजा आछे लङ्कापुरे । देब-दानवेर कन्या लये केलि करे ७३

लङ्कापुरे कुम्भकर्ण निद्रा-अचेतन । त्रिशत् योजन घर बान्धिल राबण
परिखा योजन दश आड़े परिसर । कुम्भकर्ण निद्रायाय ताहार भितर ७४

त्रिशकोटि राक्षसे गृहेर द्वार राखे । कुम्भकर्ण निद्रायाय आपनार सुखे
चारि चारि क्रोश युड़े घरेर दुआर । रतन पालङ्के शुये बीर अबतार ७५

शुन्य हैते दृष्ट हय अर्द्ध कलेवर । कुम्भकर्ण देखि काँपे यतेक अमर
कुम्भकर्ण निद्राभाङ्गि उठिबे ये-दिने । स्वर्ग-मर्त्य-पाताले सकले ताहा जने ७६

सेइदिन सकलेते सावधाने फिरे । देबगण कम्पमान अमर-नगरे
कुम्भकर्ण निद्रायाय घरेर भितरे । देखिया त पुरन्दर चिन्तित अन्तरे ७७

रावण बिधिर बरे कारे नाहि माने । देव-दानवेर कन्या ध'रे ध'रे आने
इंद्रेर नन्दनवन आने उपाड़िया । कार साध्य निबारण करिबे आसिया ७८

मुनि ऋषि-देवतार हिंसा करे फिरे । यम नाहि निद्रायाय राबणेर डरे

उन तीनों ने शिकार खेलने जाकर तपोवन में विवाह किया और विवाह के पश्चात् तीनों घर लौटे। मन्दोदरी के गर्भ में पुत्र मेघनाद का जन्म हुआ। उसे देखकर देवगण ने भयंकर संकट देखा ॥ ७२ ॥ वह लंका में मेघ-गर्जन की भाँति गरजने लगा। देव-दैत्य त्रिभुवन उसके डर से काँपने लगे। राजा रावण बड़े आनन्द से लंकापुरी में रहता था और देव-दानवों की कन्याओं को लेकर केलि करता था ॥ ७३ ॥ लंका में कुंभकर्ण निद्रा में अचेत पड़ा रहता था। उसके लिए रावण ने तीस योजन लम्बा घर बनवाया। चौड़ाई में उसकी खाई दस योजन थी। कुंभकर्ण उसके अन्दर सोता था ॥ ७४ ॥ तीस करोड़ राक्षस घर के दरवाजों का पहरा देते थे। कुम्भकर्ण अपने आनन्द से सोता रहता था। उसके घर के द्वार चार-चार कोश बड़े थे। वीर-अवतार कुंभकर्ण रत्नों की पलंग पर सोता था ॥ ७५ ॥ उसका आधा शरीर आकाश से दिखाई देता था। कुम्भकर्ण को देखकर सभी देवता काँपते रहते थे। जिस दिन कुंभकर्ण नींद से जगता था, स्वर्ग-मर्त्य-पाताल में सभी लोग उसे जानते थे ॥ ७६ ॥ उस दिन सभी बड़ी सावधानी से घूमा-फिरा करते। अमरावती में देवगण काँपते रहते। कुंभकर्ण घर के अन्दर सोता रहता था, उसे देख-देखकर इन्द्र मन में बड़ा चिन्तित रहता ॥ ७७ ॥ ब्रह्मा के वर के कारण रावण किसी को नहीं मानता था। वह देव-दानवों की कन्याओं को पकड़-पकड़कर लाता था। वह इन्द्र के नन्दन वन से पौधे उखाड़ लाता था। उसे रोक सके ऐसा सामार्थ्य किसमें था ? ॥ ७८ ॥ वह मुनि-ऋषि-देवताओं की हिंसा करता फिरता। रावण के डर से यम को निद्रा नही आती थी।

राबणेर कुबेर-बिजयार्थ यात्रा

राबणेर यत कर्म्म कुबेर शुनिला। बुझाइते धर्म्म तारे दूत पाठाइला ७९
दूत गिया राबणेरे नोआइला माथा। योड़हात करि कहे कुबेरेर कथा
दूत बले, महाराज, तब हित चाइ। तोमार बुझाते पाठाइल तब भाइ ४८०
बिश्वश्रबा पुत्र तुमि, कुले अबतार। तोमारे करिते हय उत्तम आचार
देबतार हिंसा कर, देबगण दुःखी। ऋषि-तपस्वीर हिंसा कोन् शास्त्रे लिखि ४८१
देबता-ऋषिर कोपे बिपरीत घटे। साधुजने हिंसा करि पड़ेत संकटे
देबतार शापे दुःख पाय निरन्तर। आमार ठाकुर यक्षराज धनेश्बर ८२
करिलेन उग्रतप मलय-शिखरे। सर्व्बदा बिराजे तथा पार्व्बती शंकरे
छद्मरूपे भ्रमेण, चिनिले केह नारे। दुजने करेन केलि मलय-शिखरे ८३
केलि क्रीड़ा-कौतुकेते छिलेन दु'जने। कुबेर चाहियाछिल बाम चक्षु-कोणे
कुपिलेन भबानी कुबेर दरशने। कुबेरेर बाम चक्षु पुड़े सेइ क्षणे ८४
एक चक्षु पुड़े गेल, शुन लङ्केश्वर। एक चक्षे तप करे सहस्र बत्सर
तथापि ना घुचिल देबीर कोपानल। कुबेरेर आँखि आछे हइया पिङ्गल ८५
देबतार शाप कभु ना याय खण्डन। देबता गणेर हिंसा कर कि कारण

कुबेर को जीतने के लिए रावण की यात्रा

कुबेर ने रावण के सारे कर्मों के बारे में सुना। उसे समझाने के लिए अपना दूत भेजा॥ ७९॥ दूत ने जाकर रावण को सिर झुकाया और हाथ जोड़कर कुबेर की कही बातें कहने लगा। दूत ने कहा— महाराज, तुम्हारे हित को देखते हुए तुम्हें समझाने हेतु तुम्हारे भाई ने मुझे भेजा है॥ ४८०॥ तुम विश्वश्रवा के पुत्र हो, उनके कुल में अवतरित हुए हो, तुम्हें उत्तम आचार का पालन करना चाहिए। तुम देवताओं की हिंसा करते हो, इससे देवगण दुखी हैं। भला, ऋषि-तपस्वियों की हिंसा करना किस शास्त्र में लिखा है?॥ ४८१॥ देवता और ऋषियों के शाप से अमंगल होता है। जो साधुओं से हिंसा करता है, वह संकट में पड़ता है। देवताओं के शाप से वह निरन्तर दुःख पाता है। हमारे प्रभु यक्षराज धनेश्वर कुबेर ने उस मलय-पर्वत-शिखर पर घोर तपस्या की थी। जहाँ पार्वती और शंकर सदा विराजमान रहते हैं। वे अवेश धारण कर घूमा करते हैं, उन्हें कोई पहचानता नहीं। दोनों मलय-शिखर पर केलि किया करते हैं॥ ८२-८३॥ दोनों केलि-क्रीड़ा-कौतुक में लगे थे। जिसे कुबेर ने अपनी बायीं आँख के कोने से कटाक्ष कर देखा था। कुबेर के वैसे देखने पर भवानी कुपित हो गयी, इससे कुबेर की बायीं आँख उसी क्षण जल गयी॥८४॥ हे लंकेश्वर रावण, सुनो, उनकी एक आँख जल गयी। उन्होंने एक ही आँख से हज़ार वर्ष तक तपस्या की। फिर भी देवी का क्रोध रूपी अनल शान्त नहीं हुआ। कुबेर की वह आँख पीली हो गयी॥ ८५॥ देवता का शाप कभी खंडन नहीं हो सकता। तुम देवताओं की हिंसा

तव अमङ्गल देव चिन्तिवे सदाइ। तोमा बुझाइते पाठाइल तव भाइ ८६
एत यदि कहे दूत रावण-गोचरे। शुनिया रावण-राजा कुपिल अन्तरे
आमाके पाठाय दूत आपना ना जाने। तोरे काटि आजि तारे बधिव जीवने ८७
ज्येष्ठ भ्राता बलि तारे एतदिन सहि। निकट मरण तार शोन् तोरे कहि
कोन् अहङ्कारे एत कहिल कुकथा। हाते खाण्डा करिया दूतेर काटे माथा ८८
दूते काटिसाजिल कुबेर काटि बारे। दिग्विजय करिते साजिल लङ्केश्वरे
त्रिभुवन जिनिते साजिल दशानन। रावणेर रण साजे काँपे देवगण ८९
शत अक्षौहिणी साजे मुख्य सेनापति। साजिया रावण सङ्गे चले शीघ्रगति
शत अक्षौहिणी निल जाठि ओ झकड़ा। तिन कोटि साजिया चलिल ताजा घोड़ा ४९०
तिन कोटि वृन्द रथ करिल साजन। माणिकेर चाका रथ सोनार गठन
राहुत पाहुत हस्ती साजिल अपार। आछुक अन्येर काज देवे चमत्कार ४९१
सेनापति गण नड़े बड़ बड़ वीर। ये-सबार बाणाघाते गिरि हय चिर
अकम्पन प्रहस्त चले शट् ओ निशट्। शोणिताक्ष विरुपाक्ष रणेते उत्कट ९२
धूम्राक्ष-भास्कर आदि तपन पनस। बड़ बड़ वीर साजे अनेक राक्षस
मारीच राक्षस चले नाना माया धरे। यत यत वीर छिल लङ्कार भिहरे ९३

किसलिए करते हो? इससे तो देवता सदैव तुम्हारा अमंगल चिन्तन ही करेंगे। इस कारण तुम्हारे भाई ने तुम्हें समझाने के लिए भेजा है ॥ ८६ ॥ जब उस दूत ने रावण से ऐसा कहा, तो उसे सुनकर राजा रावण अन्तर में कुपित हो गया। अरे वह कुबेर अपनी गति न समझकर मेरे पास दूत भेजता है; मैं तुझे काटकर उसके भी प्राण ले लूँगा ॥ ८७ ॥ उसे तो बड़ा भाई मानकर इतने दिन सहता आया हूँ। सुन, तुझसे कहता हूँ, उसका मरण निकट है। किस अहकार से उसने ऐसी बुरी बात कही है। यों कहकर हाथ में खड्ग लेकर उसने दूत का सिर काट लिया ॥ ८८ ॥ दूत को काटकर वह कुबेर को काटने हेतु युद्ध सज्जा की। लंकेश्वर रावण दिग्विजय करने हेतु लकेश्वर ने तैयारी की। दशानन त्रिभुवन विजय करने हेतु रण-सज्जा की। रावण की उस रण-सज्जा से देवगण काँपने लगे ॥ ८९ ॥ मुख्य सेनापति ने सौ अक्षौहिणी सेना सजाकर शीघ्रता से रावण के संग चला। सौ अक्षौहिणी भाले और गाड़ियाँ लेकर वह (महाबली) चला और तीन करोड़ ताजा घोड़े सजाकर चला ॥ ४९० ॥ तीन करोड़ वृन्द रथ सजाये जिनके पहिये रत्ननिर्मित और रथ सोने से बने थे। चालक, महावत-समेत अपार हाथियों की सेना सजायी। और तो और ये दूसरों के लिए भी विस्मयकारी कर्म करते थे ॥ ४९१ ॥ बड़े-बड़े वीर सेनापति चलने लगे जिनके वाणों के आघात से पर्वत फटकर छिन्न-भिन्न हो जाते थे। अकम्पन, प्रहस्त, शट्, निशाट्, शोणिताक्ष, रण में उत्कट वीरता दिखानेवाला विरूपाक्ष ॥ ९२ ॥ धूम्राक्ष, भास्कर, तपन, पनस आदि बड़े-बड़े वीर समेत अनेक राक्षस सजकर चले। अनेक माया धारण करनेवाला राक्षस मारीच चला। लंका में जितने वीर थे ॥ ९३ ॥ राक्षसों के महापात्र खर और दूषण

रक्षो-महापात्र चले खर ओ दूषण। बाँका मुख ओष्ठबक्र घोर दरशन
शुक सारण शार्दूल चले जम्बुमाली। वज्रदन्त विद्युज्जिह्व चले महाबली ९४
महापाश महोदर दुइ सहोदर। चलिल से मकराक्ष महाधनुर्द्धर
त्रिभुबन जिनिते राबण राजा साजे। ढाक ढोल आदि करि नाना वाद्य बाजे ९५
लङ्काय रहिल मेघनाद बिभीषण। कुम्भकर्ण रहिल निद्राय अचेतन
खाण्डा खरशाण टाङ्गि अति भयङ्कर। नाना अस्त्रे साजिया चलिल लङ्केश्वर ९६
नाना आभरण प'रे दशानन साजे। नाहिक एमन रूप त्रिभुबन-माझे

राबणेर सहित युद्धे कुबेर सेनापति योगवृद्ध ओ मणिभद्रेर पराजय

ससैन्येते राबण सागर हैल पार। कैलास पर्व्वते उठि करे मार मार ९७
दूत गिया कहिल कुबेर बराबर। युझिबारे आइल राबण निशाचर
त्रिश कोटि यक्षे रोषे कुबेर प्रेरिल। यक्ष ओ राक्षसे युद्ध भीषण हइल ९८
राक्षस बरिषे बाण यक्षेर उपर। जाठा-जाठि शेल-शूल मुषल-मुद्गर
पलाय सकल यक्ष राक्षसेर डरे। राबणेर युद्ध केह सहित ना पारे ९९
यक्षेर उपरे करे बाण बरिषण। पलाय सकल यक्ष, नाहि सहे रण
योगवृद्ध नामे कुबेरेर सेनापति। युझिते कुबेर तारे दिला अनुमति ५००
बिष्णु चक्र समान ताहार चक्रे धार। राक्षस उपरे करे बाण अबतार

जिनके मुँह टेढ़े थे, ओंठ टेढ़े हैं, उनका रूप देखने में घोर था। शुक-सारण-शार्दूल-जम्बुमाली। महाबली वज्रदन्त, विद्युज्जिह्व ॥ ९४ ॥ महोदर और महापाश दोनों भाई-भाई थे वे और राक्षस महाधनुर्धर मकराक्ष भी चला। राजा रावण ने तीनों लोक जीतने की अभिलाषा से ऐसा साज बना लिया। नगाड़े, ढोल समेत अनेक बाजे बजने लगे ॥ ९५ ॥ मेघनाद और विभीषण लंका में रह गये। कुम्भकर्ण तो निद्रा में अचेतन पड़ा रहा। वे खड्ग, बाण, फरसे आदि भयंकर अस्त्रों से सजकर लंकेश्वर रावण चला ॥ ९६ ॥ अनेक अलंकार पहनकर राजा रावण सुशोभित था। ऐसा सुन्दर रूप त्रिभुवन में और नहीं हैं।

रावण के साथ युद्ध में कुबेर के सेनापति योगवृद्ध और मणिभद्र की पराजय

रावण ने सेना-सहित सागर पार किया और कैलास पर्वत पर चढ़कर मार-मार करने लगे ॥ ९७ ॥ दूत ने कुबेर से जाकर कहा कि निशाचर रावण युद्ध करने आया है। कुबेर ने रोष में भरकर तीन कोटि यक्षों को भेजा। तब यक्षों और राक्षसों में भयंकर युद्ध हुआ ॥ ९८ ॥ राक्षस यक्षों पर बाण-वर्षा करने लगे। भाले, बरछे, शक्ति, शूल, मूसल, मुद्गर आदि चलाने लगे। राक्षसों से डरकर सारे यक्ष भागने लगे। रावण के साथ लड़ाई में कोई टिक नहीं सकता था ॥ ९९ ॥ राक्षस यक्षों पर बाण-वर्षा कर रहे थे, युद्ध में सहन न कर पाने हेतु सभी यक्ष भागने लगे। योगवृद्ध नाम का कुबेर का सेनापति था उसे कुबेर ने लड़ने की अनुमति दी ॥ ५०० ॥ उसके चक्र की धार विष्णु के चक्र की भाँति थी।

चक्रघाते महोदर हइल कातर। रुषिल रावण राजा लङ्कार ईश्वर
कोपेते रावण करे वाण-वरिषण। भङ्ग दिल योगवृद्ध नाहि सहे रण १
पलाइया याय सवे आलोयासेर गड़े। द्वारेर निकटे रहे कपाटेर आड़े
रथ हैते रावण पड़िल दिया लम्फ। सर्पेरे धरिते येन गरुड़ेर झम्प २
द्वारपाल रूपे सूर्य्य आछेन दुयारे। राखिला कवाट दिया रावणेर डरे
कुपिल रावण राजा बले महावली। पुरीर भितरे याय क'रे ठेला ठेलि ३
पाथरेर कपाट तुलिया एक टाने। कोपे द्वारपाल रावणेर सिरे हाने
रक्ते राङ्गा हये पड़े राजा दशानन। भाग्येते रहिल प्राण ना हैल मरण ४
रावण से शिला तुलि द्वारपाले हाने। पड़िल से द्वारपाल पाथर चापने
द्वारपाल अचेतन कुवेर चिन्तित। सेनापति मणि भद्रे डाकिल त्वरित ५
मणिभद्र शुनह प्रधान सेनापति। अधिकार युद्धे तुमि हओ गिया कृति
वाछिया कटक कर सत्वरे साजन। हाते गले वान्धिआन लङ्कार रावण ६
विलेक दानव यक्ष वहु सेनापति। चव्विश कोटि सेना दिल ताहार संहति
लइया विकट सैन्य मणि भद्र नड़े। गर्ज्जिया कटक चले, महाशब्द पड़े ७
मणिभद्र आसिकरे वाण वरिषण। चारिदिके भङ्ग दिल निशाचर गण
रावणेर सेनापति पतेक प्रधान। यक्षेर कटक विधि करे खानखान ८

वह राक्षसों पर वाण-वर्षा करने लगा। चक्रघात से महोदर व्याकुल हो उठा। लंकाधिपति रावण तब रुष्ट हो उठा। क्रोध से रावण वाणों की वर्षा करने लगा। उस युद्ध में प्रहार सह न पाकर योगवृद्ध भाग चला ॥ १ ॥ तव वह आवास के किले में भाग चला और द्वार के समीप जाकर दरवाज़े की ओट में खड़ा हो गया। रावण रथ से कूद पड़ा, मानो सर्प को पकड़ने के लिए गरुड़ ने छलाँग लगाई हो ॥ २ ॥ द्वार पर द्वार-पाल के रूप में सूर्य थे। रावण के डर से उन्होंने दरवाज़ा बन्द कर दिया। कुटिल राजा रावण महावली था। पुरी के अन्दर जाने हेतु धक्कम-धक्का करने लगा ॥ ३ ॥ तव क्रुद्ध द्वारपाल ने पत्थर का दरवाज़ा एक झटके से खोलकर उठा लिया और उसे रावण के सिर पर दे मारा। तव राजा दशानन खून से लाल हो उठा, सौभाग्य वड़ा कि उसके प्राण वच गये, मृत्यु नहीं हुई ॥ ४ ॥ रावण ने वही शिला उठाकर द्वारपाल पर दे मारा। वह द्वारपाल चट्टान से दव गया। द्वारपाल अचेत हो गया, तव कुवेर चिन्तित हुआ और तुरन्त मणिभद्र को वुलाया ॥ ५ ॥ प्रधान सेनापति मणिभद्र, सुनो, इस अधिकार के संग्राम में तुम यशस्वी वनो। तुम चुन-चुनकर शीघ्र सेना सजाओ, और लंका के रावण को हाथ और गले में वाँधकर ले आओ ॥ ६ ॥ कुवेर ने उसे अनेक दानव-यक्ष और सेनापति सौंपे, उसके साथ चौवीस करोड़ सेना दी, उस विकराल वाहिनी को लेकर मणिभद्र चल पड़ा। सेना गरजती चली, उससे प्रचंड नाद उत्पन्न हुआ ॥ ७ ॥ मणिभद्र आते ही वाणों की वर्षा करने लगा। निशाचरों का समूह चारों ओर भाग चला। रावण के प्रमुख सेनापतियों ने यक्षों की सेना को वेधकर छिन्न-भिन्न कर डाला ॥ ८ ॥ राक्षस-सेना

नाना अस्त्र राक्षस फेलाय चारिभिते। सङ्गदिल यक्षगण ना पारि सहिते
उभरड़े पलाइल आउदर चुलि। देखिया रुषिल मणिभद्र महाबली ९
मणिभद्रे देखिया राक्षस भागे डरे। देखिया रुषिल तबे लङ्कार ईश्वरे
मणिभद्र दशानन दुइ जने रण। गदा हाते मणिभद्र धाय ततक्षण १०
पर्ब्बत योजन दश आनि बायु भरे। गर्ज्जिया पर्ब्बत हाने रावणेर सिरे
रावण मारिल बाण उठिया आकाशे। सेइ बाण मणिभद्र गिलिलेक ग्रासे ११
मणिभद्र-मुख देखि रुषिल रावण। कुड़ि हाते चापि तार वधिल जीवन
मणिभद्र पड़िल राक्षसगण हासे। कुबेरेर भग्नदूत कहे ऊर्द्ध्व श्वासे १२

रावणेर सहित कुबेरेर युद्ध

मणिभद्र पड़े रणे कुबेर चिन्तित। आपनि आइल रणे पात्रेते वेष्टित
डाक दिया बले, शुन भाइरे रावण। आमार सहित तव युद्ध कि कारण १३
मणिभद्र पाठाइनु युझिबार तरे। कुड़ि हाते चापि तुमि बधिले ताहारे
अपार्य्य-पक्षेते आमि एसेछि युद्धेते। बधिते नारिबे आर चापि कुड़ि हाते १४
क'रेछ अनेक तप अस्थि चर्म्म सार। नारिले अमर ह'ते केन अहङ्कार

चारों ओर नाना अस्त्रों को फेंककर प्रहार करने लगी, उनका आघात न सह पाने के कारण यक्षगण भाग चले। वे ऐसे भागे कि उनके बाल बिखरकर उदर तक फैल गये। यह देख महाबली मणिभद्र कुपित हो उठा ॥ ९ ॥ मणिभद्र को देखकर राक्षस डर के मारे भागने लगे। यह देखकर लंकेश्वर रावण कुपित हुआ। मणिभद्र और रावण दोनों में युद्ध होने लगा। तत्क्षण गदा हाथ में ले मणिभद्र दौड़ पड़ा ॥ १० ॥ दस योजन विस्तृत पर्वत को अनायास वायु जैसे उठा लिया और गरजते हुए उससे रावण के सिर पर प्रहार किया। रावण आकाश में चला गया और बाण मारा। उस बाण को मणिभद्र ग्रास बनाकर निगल गया ॥११॥ मणिभद्र का मुख देख रावण रुष्ट हो उठा और बीस हाथों से दबाकर उसके प्राणों का वध कर डाला। मणिभद्र के मारे जाने पर राक्षस हँसने लगे। कुबेर के दूतों ने तेज़ी से भागकर उससे यह घटना सुनायी ॥ १२ ॥

रावण के साथ कुबेर का युद्ध

युद्ध में मणिभद्र के पतन से कुबेर चिन्तित हो उठा। मंत्रियों से घिरा हुआ वह स्वयं युद्धक्षेत्र में आया। उसने पुकारकर कहा— भाई रावण, सुन, तू मेरे साथ युद्ध किसलिए करता है ? ॥ १३ ॥ मैंने लड़ने के लिए मणिभद्र को भेजा था जिसे तूने बीस हाथों से दबाकर मार डाला। जिससे तू पार नहीं पा सकता ऐसे पक्ष से मैं अब युद्ध में आया हूँ, अब मुझे तू बीस हाथों से दबाकर मार नहीं सकेगा ॥ १४ ॥ तूने अनेक तप किया, अपने शरीर को सुखाकर अस्थिचर्म-सार बना डाला, फिर भी अमर हो नहीं पाया, तो क्या अहंकार करता है ? मैं तपस्या के प्रभाव

अमर हइनु आमि तबेर प्रसादे। कुकर्म्म करिया भाइ, पड़िबे प्रमादे १५
यथा तथा युद्ध कर, अवश्य मरण। मृत्युकाले मने क'रो आमार वचन
अमर हयेछि, किसे लइबे पराण। हारि यदि रणेते करिबे अपमान १६
एत यदि कहिल कुवेर यक्षराजे। रावणेर पात्र मित्र सब पड़े लाजे
कुबुद्धि घटिल राजा दुष्ट निशाचरे। दोहातिया बाड़ि मारे कुबेरेर शिरे १७
छि छि बलि कुवेर दिलेक टिटकारी। एइ मुखे खावे भाइ, स्वर्ण लङ्कापुरी
दुइ कटकेते युद्ध हइल विस्तर। कुबेरेर बाणे राजा हइल जर्ज्जर १८
जर्ज्जर रावण रणे कुवेरेर वाणे। केमने जिनिब रण भावे मने मने
संसारेर माया जाने पापिष्ठ रावण। मायारूपे कुबेरेर सने करे रण १९
शार्द्दूल हइया कामड़ाये मारे। वराह हइया केह दन्त दिया चिरे
मेघ हैया पड़े केह अङ्गेर उपरे। झञ्झना पड़ये येन गदार प्रहारे २०
शेल शूल मारे केह करिया गर्ज्जन। कुवेर प्रहार करे राजा दशानन
रक्ते आर्द्र कुवेर पड़िल भूमितले। उपाड़िले वृक्षयेन पड़ये समूले २१
कुबेरे धरिया लय यत अनुचर। धरिया राखिल लये पुरीर भितर
कुबेरेर भाण्डार लुटिल दशानन। विशेष पुष्पक-रथ आर अन्य धन २२

से अमर बना हूँ। भाई, कुकर्म करने पर तू प्रमाद में पड़ेगा ॥ १५ ॥ जैसे-तैसे भी युद्ध कर, तेरा मरण तो अवश्य होगा। मृत्यु-काल में मेरे वचनों का स्मरण करना। मैं तो अमर हो चुका हूँ, मेरे प्राण कैसे ले सकेगा। यदि रण में हार गया तो केवल अपमान-मात्र होगा ॥ १६ ॥ यक्षराज कुवेर ने जब इतना कहा, तो रावण के मंत्री-सामन्त-मित्र सभी लज्जित हो गये। तब निशाचरों के दुष्ट राजा के मन में कुबुद्धि उत्पन्न हुई, उसने आगे बढ़कर कुवेर के सिर पर दोहत्थड़ मारा ॥ १७ ॥ 'छिः-छिः' कहकर कुवेर ने उस पर व्यंग्य किया। अरे भाई, तू इसी मुंह से स्वर्णमयी लंकापुरी को खा डालेगा। दोनों सेनाओ में व्यापक युद्ध हुआ। कुवेर के वाणों से राजा रावण जर्जर हो गया ॥ १८ ॥ राजा रावण कुवेर के बाणों से जर्जर हो गया। वह मन ही मन सोचने लगा, 'मैं युद्ध में कैसे जीतूं ?' पापी रावण संसार भर की मायाएँ जानता था। वह कुबेर के साथ भी माया-रूप धारण कर संग्राम करने लगा ॥ १९ ॥ कभी कोई शार्दूल बनकर काटने लगा, कभी कोई वराह बनकर दांतों से फाड़ने लगा, कभी कोई बादल बनकर अंगों पर गिरने लगा मानो गदा के प्रहार से बिजली गिरने लगी ॥ २० ॥ कोई गरजकर बरछे, शूल मारने लगा। इस तरह (अनेक रूप धरकर) राजा दशानन कुवेर पर प्रहार करने लगा। रक्त से भीगकर कुवेर धरती पर गिर पड़ा। मानो जड़ समेत कोई वृक्ष उखड़ गिरा हो ॥२१॥ कुबेर ने सभी अनुचरों को पकड़ लिया और उसे ले जाकर पुरी के भीतर रखा। दशानन ने कुबेर का भंडार लूट लिया। विशेष रूप से पुष्पक रथ और दूसरी सम्पदाओं को लूटा ॥२२॥ रावण कुबेर के अन्तःपुर में घुसा, उसे देख सभी नारियां भाग चलीं।

प्रवेशिल रावण ताहार अन्तःपुरी। देखिया पलाय सबे यत छिल नारी
कुबेरेर अन्तःपुरे हैल हाहाकार। रावण लुटिया सब करे छारखार २३

रावणेर प्रति नन्दीर अभिशाप ओ रावण कर्तृक कैलास-उत्तोलन

कुबेरे जिनिया याय शङ्करेर पुरी। महादेव-सह सम्भाषिते त्वरा करि
कार्तिकेर जन्मस्थान स्वर्ण शरबन। ठेकिया ताहाते रथ रहिल रावण २४
बनेते ठेकिया रथ, नहे आगुसार। रावण पात्रेर सह युक्ति करे सार
मारीच राक्षस कहे रावणेर काणे। कुबेरेर एइ रथ राक्षसे ना माने २५
सारथि चालाय रथ, रथ नाहि नड़े। देखिते देखिते शिव-दूत असि पड़े
ना चलाओ रथ एइ कैलासशिखर। गौरी सह केलि करिछेन महेश्वर २६
हेथा देव-दानव गन्धर्व्व नाहि आसे। ए पर्ब्बते आसितेछ काहार साहसे
कुपिल रावण राजा दूतेर बचने। रथ हइते नामिया आइल शिवस्थाने २७
नन्दी नामे द्वारी छिल, रावण ता देखे। हाते जाठा करि नन्दी सेइ द्वार राखे
बानरेर मत मुख देखिया नन्दीर। उपहास करिल रावण महाबीर २८
नन्दी बले, आमि शङ्करेर द्वारपाल। आमार सम्मुखे केन कर ठाकुराल
देखिया आमार मुख कर उपहास। एइ मुख ह'ते तोर हबे सर्ब्बनाश २९

कुबेर के अन्तःपुर में हाहाकार मच गया। रावण ने सब कुछ लूटकर छिन्न-भिन्न विनष्ट कर डाला ।। २३ ।।

रावण को नन्दी का अभिशाप तथा रावण द्वारा कैलास उठाया जाना

रावण कुबेर को जीतकर शंकर की पुरी कैलास की ओर, शंकर से वार्त्ता करने हेतु शीघ्रता से चला। कार्तिक के जन्म-स्थान स्वर्ण-शर वन पहुँचकर उसका रथ रुक गया ।। २४ ।। जंगल में रथ रुक गया, वह आगे नहीं बढ़ता था। रावण तब सामन्तों के साथ परामर्श करने लगा। राक्षस मारीच ने रावण के कानों में कहा, कुबेर का यह रथ, राक्षसों के लिए उपयोगी नहीं ।। २५ ।। सारथी रथ चलाता था मगर रथ हिलता ही नहीं था। देखते-देखते वहाँ शिव के दूत आ गये। उन सबने कहा—इस कैलास शिखर पर रथ न चलाओ। यहाँ गौरी के संग महेश्वर केलि कर रहे हैं ।। २६ ।। यहाँ देव-दानव-गंधर्व नहीं आते। तुम इस पर्वत पर किस साहस से आ रहे हो ? दूत के वचन सुनकर राजा रावण कुपित हो उठा। वह रथ पर से उतरकर शिव के स्थान पर आया ।। २७ ।। वहाँ नन्दी नाम का द्वारपाल था, रावण ने उसे देखा, नन्दी हाथ में भाला लिये द्वार की रक्षा कर रहा था। नन्दी का बन्दर-जैसा मुँह देखकर महावीर रावण ने उसका उपहास किया ।। २८ ।। नन्दी बोला, मैं शंकर का द्वारपाल हूँ, हमारे सामने अपनी ठकुराई-बड़प्पन क्या दिखाता है ? मेरा मुँह देखकर उपहास कर रहा है, इसी मुख से तेरा सर्वनाश हो जायेगा ।। २९ ।। रे दुराचारी रावण, तुझे मारकर मेरा क्या होगा ?

दुराचार तोरे मारि कोन् प्रयोजन। निज दोषे सवंशे मरिबि दशानन
रावण नन्दीर शाप नाहि सुने काने। कुड़िहाते सापटिया से कैलासे टाने ३०
कैलास धरिया दशानन दिल नाड़ा। सत्तर योजन नड़े कैलासेर गोड़ा
टल मल करे गिरि, देव काँपे डरे। पर्व्वत निवासी गेल धूर्ज्जटीर आड़े ३१
सवे वले, महादेव, कर परित्राण। कोन वीर आसिया पर्व्वते दिल टान
रावणेर क्रिया देखि हासे कृत्तिवास। वाम चरणेर नखे चापेन कैलास ३२
व्यथाय रावण छाड़े भीषण चीत्कार। शिवेर निकटे कि ताहार अहङ्कार
हइल पुष्पक मुक्त धूर्ज्जटिर वरे। सेइ रथे चड़िया रावण जय करे ३३
कृत्तिबास पण्डितेर जन्म शुभक्षणे। गाइल उत्तरकाण्ड गीत रामायणे

रावण कर्तृक वेदवतीर लाञ्छना ओ रावणेर प्रति वेदवतीर अभिशाप

अगस्त्येर कथा शुनि श्रीरामेर हास। कह कह मुनिबर कहिया प्रकाश ३४
कैलास एड़िया कोथा गेल दशानन। कह देखि, शुनि मुनि, पुराण-कथन
अगस्त्य बलेन, राम, कर अवधान। आरो किछु रावणेर कहि उपाख्यान ३५
वेदवती नामे कन्या परम शोभना। तपस्या करेन वने हिमांशुवदना
पवित्र आकृति ताँर, पवित्र प्रकृति। शुद्ध सत्वा, शुद्धमति, सूर्य्य-सम द्युति ३६

अपने दोष से तू सवंश मारा जायेगा। रावण ने नन्दी के अभिशाप पर कान नहीं दिया। वह बीसों हाथों से पकड़कर कैलास को खींचने लगा ॥३०॥ दशानन ने कैलास को पकड़कर हिलाया, कैलास की जड़ सत्तर योजन हिल गयी। पर्वत डगमगाने लगा। देवगण डर के मारे काँपने लगे। पर्वतनिवासी धूर्जटी के शरण में उनकी ओट में चले गये ॥ ३१ ॥ सबने कहा— हे महादेव जी, हमारा परित्राण कीजिये। किस वीर ने आकर पर्वत को खींचा है ? रावण की करतूत देख कृत्तिवास-कृतियों के आधार शंकर, हँस पड़े और बायें पैर के नाखून से कैलास को दबा दिया ॥ ३२ ॥ दब जाने के कारण वेदना से रावण भयंकर चीत्कार करने लगा। शिव के सम्मुख भला क्या उसका अहंकार रह सकता है ? अन्त में धूर्जटी के वर से पुष्पक मुक्त हुआ, उस रथ पर चढ़कर रावण विजय करने लगा ॥ ३३ ॥ कृत्तिवास पंडित का जन्म शुभक्षण में हुआ है, जिन्होंने रामायण के उत्तरकांड का गीत गाया है।

रावण द्वारा वेदवती को लांछना और रावण को वेदवती का अभिशाप

अगस्त्य की बात सुनकर श्रीराम हँसने लगे। कहा— हे मुनिवर ! आप प्रकट कर कहिये ॥ ३४ ॥ कैलास को छोड़कर दशानन कहाँ गया ? मुनि, आप पुराण-कथा सुनाइये, मैं सुनना चाहता हूँ ! अगस्त्य ने कहा, राम, सुनो ! रावण की कथा मैं और कुछ सुनाता हूँ ॥ ३५ ॥ परम सुन्दरी वेदवती नाम की चन्द्रवदनी कन्या वन में तपस्या कर रही थी। उसकी आकृति पवित्र थी, प्रकृति भी पवित्र थी। वह शुद्ध-सत्व, शुद्ध-

दैवयोगे रावण तथाय उपनीत। कन्याके देखिया दुष्ट हइल मोहित
अतिथि आचारे कन्या दिलेक आसन। कामे मुग्ध दशानन जिज्ञासे तखन ३७
केतुमि, काहार कन्या, काहार कामिनी। कि जन्ये ए महारण्ये थाक एकामिनी
ए-रूप-यौवन-धन ना कर विलास। कि हेतु कठोर तप कर उपवास ३८
कन्या बले, मोर कथा कहिते विस्तर। ये हेतु तपस्या करि, शुनि लङ्केश्वर
कुशध्वज पिता, पितामह बृहस्पति। से कुशध्वजेर कन्या आमि वेदवती ३९
वेदपाठे रत पिता छिला येइ क्षणे। जन्मिलाम सेइ क्षणे ताँहार वदने
अयोनि सम्भवा नाम थुइल वेदवती। पितार अधिक स्नेह हैल आमा-प्रति ४०
दिबेन उत्तम पात्रे, एइ तार पण। के आछे उत्तम पात्र बिना-नारायण
अत एव विष्णुसह विवाह आमार। दिबेन, ए वाञ्छा छिल नितान्त पितार ४१
इति मध्ये शुम्भनामे दैत्य हस्ते पिता। मरिलेन, माता हइलेन अनुमृता
आजन्म तपस्या करि एइ अभिलाषे। कतदिन पाइब से श्याम पीतवासे ४२
शुनिया कन्यार कथा दशानन हासे। रथ हैते नामिया कहिछे मृदुभाषे
त्रैलोक्य जिनिया रूप गुण तुमिधर। सुन्दरि, केन से वृद्ध वर इच्छा कर ४३
कुटिल से काल रूप कोथा नारायण। नागाल पाइले तार वधिब जीवन
कन्या बले हेन वाक्य ना आन वदने। कृष्ण-बिना केबा आछे ए तिन भुवने ४४

मति और सूर्य की भाँति दीप्तिमयी थी ॥ ३६ ॥ संयोगवश रावण वहाँ पहुँच गया। उस कन्या को देख वह दुष्ट मोहित हो गया। अतिथि-सत्कार का कर्तव्य पालन कर कन्या वेदवती ने उसे बैठने हेतु आसन दिया। तब काम-मुग्ध रावण ने उससे पूछा— ॥ ३७ ॥ तुम कौन हो, किसकी कन्या हो, किसकी कामिनी हो ? किस कारण इस भयंकर वन में अकेली रहती हो ? अपने इस रूप-यौवन रूपी धन रहते हुए भी तुम विलास क्यों नहीं करती ? किस प्रयोजन से तुम यह कठोर व्रत, और उपवास कर रही हो ? ॥ ३८ ॥ कन्या बोली— मेरी कथा बड़ी लम्बी है, लंकेश्वर, मैं जिस कारण तपस्या करती हूँ, सुनो; मेरे पितामह बृहस्पति और पिता कुशध्वज हैं, मैं उन्हीं कुशध्वज की कन्या वेदवती हूँ ॥ ३९ ॥ जिस समय पिता वेद-पाठ में निरत थे, उसी समय मैं उनके मुख से उत्पन्न हुई। मैं अयोनिसंभवा थी, उन्होंने मेरा नाम वेदवती रखा। मुझ पर पिता का अधिक स्नेह रहा ॥ ४० ॥ उनका प्रण था कि मुझे वे उत्तम पात्र को सौंपेंगे। परन्तु नारायण के सिवा दूसरा उत्तम पात्र कौन है ? इसी कारण पिता की नितांत इच्छा थी कि विष्णु से मेरा विवाह करवायेंगे ॥ ४१ ॥ इसी बीच शुंभ नाम के दैत्य के हाथ पिता मारे गये, माता ने उनके साथ सहमरण अपनाया। मैं आजीवन इसी कामना से तपस्या कर रही हूँ कि उन पीताम्बरधारी श्याम को कब पा सकूँगी ॥ ४२ ॥ कन्या की बात सुन दशानन हँसा। वह रथ से उतरकर मृदु वचन कहने लगा। तुम तीनों लोक जीतनेवाले रूप-गुण धारण करती हो। तो हे सुन्दरी, फिर उस वृद्ध वर की कामना क्यों करती हो ? ॥ ४३ ॥ वह कुटिल कालरूप नारायण कहाँ है ? अगर उसे पा

शुनिया कन्यार कथा दुष्ट यातुधान । धरिया कन्यार केशे करे अपमान
अपमान करि शेषे छाड़िल रावण । कन्या बले, अपमान कर कि कारण ४५
प्रवेश करिब आमि ज्वलन्त आगुने । अपवित्र शरीर राखिब कि कारणे
पाइया ब्रह्मार बर ह'लि पापकारी । अल्पप्राणी नारी हइ, कि करिते पारि ४६
तपस्यार फले यदि तोरे नष्ट करि । विफल हइबे एत तपस्या आमरि
अग्नि-कुण्ड ज्वलिल, आनिया काष्ठ राशि । प्रवेश करिते याय से कन्या रूपसी ४७
अग्निके प्रार्थना करे करि बहु सेवा । श्रेष्ठ कुल जन्मि येन अयोनि सम्भवा
नारायण स्वामी हबे जन्म-जन्मान्तरे । मोर लागि रावण सवंशे येन मरे ४८
रावण लागिया मरि, सर्व्वलोके दुःखी । रावण मरिबे, मोर लागि लोक साक्षी
प्रवेश करिल कन्या पूतवैश्वानरे । आकाशते देवगण पुष्पवृष्टि करे ४९
जनक राजार कन्या नाम धरे सीता । पतिव्रता अवतीर्णा सेइ शुभान्विता
पतिव्रता शाप कभु नहे अन्यमत । मरिल रावण सीता लागि आदिपत ५०
त्रेता युगे रघुनाथ तुमि तार पति । अयोनि सम्भवा सीता सेइ वेदबती
अहङ्कारे दशानन सवंशेते मजे । अधर्म्मी हइले सुख नाहि कोन काजे ५१

जाऊँ तो मैं उसका जीवन-वध कर डालूंगा । कन्या बोली— ऐसी बात मुँह में न लाओ । उस (विष्णु रूपी) कृष्ण के सिवा तीनों लोकों में और कौन है ? ॥ ४४ ॥ उस दुष्ट निशाचर ने कन्या की बात सुनकर केश पकड़कर उसका अपमान किया । अपमान करने के पश्चात् रावण ने उसे छोड़ दिया । कन्या बोली— तूने मेरा अपमान किसलिए किया ॥ ४५ ॥ मैं अब जलती अग्नि में प्रवेश करूँगी, अपवित्र इस शरीर को अब क्यों रखूं ? तू ब्रह्मा का वर पाकर पापाचारी हो गया है । मैं अबला नारी होने के कारण तेरा क्या कर सकती हूँ ? ॥ ४६ ॥ यदि अपनी तपस्या के बल से तुझे नष्ट कर दूँ, तो मेरी सारी तपस्या विफल हो जायेगी । यह कहकर कन्या ने लकड़ियाँ लाकर अग्नि-कुंड जलाया और उसमें वह रूपवती-कन्या प्रवेश करने लगी ॥ ४७ ॥ अनेक विनती करती हुई उसने अग्नि से प्रार्थना की, मैं जैसे अयोनिसंभवा बनकर श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न होऊँ । नारायण मेरे जन्म-जन्मान्तर के स्वामी बनें, और मेरे कारण रावण का सवंश वध हो जाये ॥ ४८ ॥ मैं रावण के कारण मर रही हूँ, इसी के कारण सारे लोक दुःखी हैं । लोक-साक्षी रहें, रावण मेरे ही कारण मरेगा । कहकर वह कन्या पवित्र अग्नि में प्रवेश कर गयी । देवगण आकाश से पुष्प-वर्षा करने लगे ॥ ४९ ॥ वही कल्याणी वेदवती जनक राजा की सीता नाम की पतिव्रता पुत्री बनकर अवतरित हुई । पतिव्रता का अभिशाप कभी अन्यथा नहीं होता । रावण आदि उसके कुल के सभी राक्षस सीता के कारण ही मारे गये ॥ ५० ॥ हे रघुनाथ, त्रेतायुग में तुम उसके पति बने, अयोनिसंभवा सीता वही वेदवती है । अपने अहंकार के कारण रावण का सवंस विनाश हुआ । अधर्मी होने पर कभी किसी कर्म में सुख नहीं मिलता ॥ ५१ ॥ अगस्त्य

अगस्त्येर कथा शुनि श्रीरामेर हास। कह कह बलि राम करेन प्रकाश

मरुत्त राजार यज्ञानुष्ठान ओ रावणेर निकटे पराजय-स्वीकार

श्रीराम बलेन, मुनि, कह विवरण। वेदवती लाञ्छि कोथा गेल से रावण ५२
अगस्त्य बलेन, कारे रावण ना माने। शाप गालि देय यत किछु नाहि शुने
यत यत राजा आछे पृथिवी मण्डले। सबारे जिनिल दशानन बाहुबले ५३
यज्ञ करे मरुत्त भूपति महाधनी। समस्त ब्राह्मण यज्ञे करे वेद ध्वनि
यज्ञभाग लइते आइल देवगण। रथे चड़ि सेइ खाने चलिल रावण ५४
त्रासपाय देवगण रावणेरे देखि। सर्प येन नत हय देखि तार्क्ष्य पाखी
ना देखिया उपाय सकल देवगण। पक्षिरूप धरि सबे हैल अदर्शन ५५
इन्द्र हन मयूर कुबेर कृकलास। काकरूप हन यम, बरुण से हाँस
मरुत्त भूपति यज्ञ करे महा सुखे। रण देह बलिया रावण तोर डाके ५६
मरुत्त बलेन, आमि तोमारे ना चिनि। परिचय देह मोरे तबे आमि जानि
दशानन बले, आमि भुवने विदित। रावण आमार नाम संसारे पूजित ५७
कुबेर आमार ज्येष्ठ धन-अधिकारी। लइ लाम ताहार कनक लङ्कापुरी
आपन बड़ाइ करे रावण से स्थले। शुनिया मरुत्त राजा अग्नि हेन ज्वले ५८

मुनि की बात सुन श्रीरामचन्द्र हँस पड़े। उन्होंने कहा, हे मुनि, आगे की कथा कहिये।

राजा मरुत्त का यज्ञानुष्ठान और रावण से पराजय स्वीकार

श्रीराम ने कहा— मुनि, वह विवरण बताइये कि वेदवती की लांछना करने के बाद वह रावण कहाँ गया? ॥ ५२ ॥ अगस्त्य बोले, रावण किसी को भी नहीं मानता था, वह सभी को शाप और गालियाँ देता था, किसी की बात नहीं सुनता था। पृथ्वी पर जितने राजा थे, दशानन ने अपने बाहु-बल से उन सभी को जीत लिया ॥ ५३ ॥ महाधनी राजा मरुत्त यज्ञ कर रहे थे, सारे ब्राह्मण उनके यज्ञ में वेद-पाठ कर रहे थे। देवगण उस यज्ञ में यज्ञभाग लेने आये। रावण रथ पर सवार हो वहाँ चला ॥ ५४ ॥ रावण को देखकर देवगण वैसे ही संत्रस्त हो उठे जैसे तार्क्ष्य (गरुड़-) पक्षी को देखकर सर्प विनत हो जाता है। (रावण से बचने का) कोई उपाय न देखकर सभी देवता पक्षीरूप धारण कर अन्तर्हित हो गये ॥ ५५ ॥ इन्द्र मयूर, कुबेर कृकलास (गिरगिट), यम कौआ, वरुण हंस, बनकर अदृश्य हो गये। राजा मरुत्त बड़ी प्रसन्नता से यज्ञ कर रहे थे, रावण ने उन्हें, युद्ध दे, कहकर पुकारा ॥ ५६ ॥ मरुत्त बोले, मैं तुम्हें नहीं पहचानता, मुझे परिचय दो, तब मैं जानूँगा। दशानन बोला, मैं विश्व में प्रसिद्ध हूँ, मैं संसार में पूजित हूँ, मेरा नाम रावण है ॥ ५७ ॥ धनाधिपति कुबेर मेरा बड़ा भाई है। मैंने उससे स्वर्ण-लंकापुरी ले ली है। रावण वहाँ अपनी बड़ाई करने लगा। सुनकर राजा मरुत्त अग्नि-जैसे जल

ज्येष्ठेर हरिले मान कहिछ आपनि । हेन कथा लोक मुखे कखन ना शुनि
धार्म्मिकेर अपमान अधार्म्मिक करे । धार्म्मिक ताहार निन्दा सहिते ना पारे ५९
पाइया ब्रह्मार वर कारे नाहि डर । मानुषेर हाते आजि यावि यमघर
अस्त्र लये याय राजा युझिबार मने । हात पसारिया राखे समस्त ब्राह्मणे ६०
महेशेर यज्ञे राजा अनुचित कोप । आपनि पाइवे दुष्ट सवंशेते लोप
यज्ञ पूर्ण ना हइले अति बड़ दोष । पराजय मान राजा, लभुक सन्तोष ६१
ब्राह्मणेर वाक्ये राजा कोप करे दूर । कहिल, पापिष्ठ वेटा बड़इ निष्ठुर
पराजय मानिल मरुत्त यज्ञस्थाने । यज्ञेर ब्राह्मण सबे डाक दिया आने ६२
दश विश ब्राह्मणेरे सापटिया धरे । दुष्ट दशानने सवाकारे फेले दूरे
करिया संग्राम जय रावण चलिल । देवगण पक्षी हैते वाहिर हइल ६३
पक्षी हये देवता पाइल परित्राण । पक्षिगणे देवगण करेन कल्याण
इंद्र बले, मयूर तोमारे दिनु बर । हउक सहस्र चक्षु पुच्छेर उपर ६४
पूर्व्वेते मयूर छिल सामन्य आकार । इन्द्र-वरे सहस्र लोचन हैल तार
यखन आकाशे मेघ करिबे गर्ज्जन । पेखम धरिया तुमि करिबे नर्त्तन ६५
कृकलासे बर तबे दिला धनेश्वर । स्वर्ण वर्ण हउक तोमार कलेबर
कुबेरेर बरे तार निज वर्ण खण्डे । स्वर्ण वर्ण हइल मुकुट धरे मुण्डे ६६

उठे ॥ ५८ ॥ वे बोले, तुमने अपने बड़े भाई का मान हरण कर लिया और उसे स्वयं बता रहे हो, ऐसी बात तो लोगों के मुँह से कभी सुनायी नहीं देती। धार्मिक का अपमान अधार्मिक ही किया करता है। परन्तु धार्मिक पुरुष तो अधर्मी की निंदा भी सह नहीं सकता ॥ ५९ ॥ ब्रह्मा का वरदान पाकर तुम किसी से नहीं डरते। परन्तु आज मनुष्य के हाथ तुम्हें यमलोक जाना पड़ेगा। राजा मरुत्त अस्त्र ले लड़ने की इच्छा से चले। तब सारे ब्राह्मणों ने हाथ पसार कर उन्हें रोका ॥ ६० ॥ हे राजा, महेश के यज्ञ में क्रोध करना अनुचित है। यह दुष्ट अपने आप सवंश विनष्ट हो जायेगा। यज्ञ का पूर्ण न होना बहुत बड़ा दोष है। हे राजा, तुम रावण से पराजय मान लो, वह सन्तुष्ट हो जाये ॥ ६१ ॥ ब्राह्मणों के वचन से राजा ने क्रोध छोड़ दिया। कहा, यह दुष्ट पापी बड़ा निर्मम है। मरुत्त ने यज्ञस्थान में पराजय मान ली। तब रावण ने यज्ञ के ब्राह्मणों को बुलाया ॥ ६२ ॥ दस-बीस ब्राह्मणों को बाँहों में पकड़ दुष्ट दशानन ने उछालकर दूर फेंक दिया। रावण संग्राम में विजय प्राप्त कर चला। तब देवगण पक्षी-रूप से बाहर निकले ॥ ६३ ॥ पक्षी-रूप धारण कर देवगण बच गये, इस कारण देवगण पक्षियों का कल्याण किया करते हैं। इन्द्र बोले, मोर, तुम्हें वर देता हूँ, तुम्हारी पूंछ पर हजारों आँखें बनें ॥ ६४ ॥ पहले मोर सामान्य आकार वाला पक्षी था, इन्द्र के वरदान से उसकी सहस्र आँखें बन गयीं। (इन्द्र ने वर दिया) जब आकाश में मेघ गरजें, तुम पूंछ फैलाकर नृत्य करना ॥६५॥ तब धनेश्वर कुबेर ने कृकलास (गिरगिट) को वर दिया, तुम्हारा शरीर स्वर्णवर्ण का बन जाए। कुबेर के वरदान से उसका निजी वर्ण बदल गया, वह सुनहला

बरुण बलेन, हंस दिलाय ए बर । चन्द्र हेन हउक तोमार कलेबर
आमि एक लोकपाल सलिलेर पति । जलेते चरिते तब हइबे पिरीति ६७
यम बले, काक आमि दिलाय ए बर । तोमार नाहिक रबे मरणेर डर
रोग पीड़ा तोमार ना हइबे संसारे । तब मृत्यु हबे यदि मानुषेते मारे ६८
येइ जन योगाइबे तोमार आहार । यमलोके तृप्ति तार हइबे अपार
पक्षीरा आपन स्थाने चलिल ये यार । बर दिया देवगण गेल स्वर्ग द्वार ६९
मरुत्तेर यज्ञ कथा अति चमत्कार । ताहाते सोनार पात्र पर्व्वत-आकार
स्वर्णपात्रे भुञ्जि नित्य करेन बर्ज्जन । सेइ सोना भरियाछे त्रिलक्ष योजन ७०
कुबेरेर धन जिनि मरुत्तेर धन । मरुत्त-समान आर नाहि कोन जन
मरुत्त राजार धन संसारेते घोषे । एमन भूपाल छिल चन्द्रमार बंशे ७१

रावण कर्तृक अनरण्य-बध ओ रावणेर प्रति अनरण्येर अभिशाप

अगस्त्येर कथा शुनि श्री रामेर हास । कह कह बलि राम करेन प्रकाश
मरुत्ते जिनिया कोथा गेल से रावण । कह देखि मुनि शुनि पुराण-कथन ७२
मुनि बले, यदि शुने वीर तथा आछे । तखनि रावण याय द्रुत तार काछे
कहे गिया आमारे सत्वरे देह रण । पराजय मानिले, ना मारे दशानन ७३

बन गया, वह सिर पर मुकुट धारण करने लगा ॥ ६६ ॥ वरुण बोले, हंस, तुम्हें यह वर देता हूँ कि तुम्हारा शरीर चन्द्रमा जैसे वर्ण का बन जाए। मैं जलाधिपति वरुण एक लोकपाल हूँ। जल में विचरण करना तुम्हें प्यारा लगेगा ॥ ६७ ॥ यम बोले, कौआ, मैं तुम्हें यह वर देता हूँ, तुम्हें मरण का भय नही होगा। संसार में तुम्हें रोग-पीड़ा नहीं होगी, यदि मनुष्य मारें तभी तुम्हारी मृत्यु होगी ॥ ६८ ॥ जो तुम्हें भोजन देगा, उसे यमलोक में अपार तृप्ति मिलेगी। पक्षी अपने-अपने स्थान पर चले गये। उन्हें वर देकर देवगण स्वर्गलोक चल पड़े ॥ ६९ ॥ राजा मरुत्त के यज्ञ की कथा बड़ी अद्भुत है। वहाँ सोने के बर्तन पर्वत के आकार जैसी ढेरियों में पड़े थे। लोग स्वर्ण-पात्र में भोजन कर उस (जूठे) पात्र को छोड़ देते थे। वे ही बर्तन तीन लाख योजनों में भरे पड़े हैं ॥ ७० ॥ मरुत्त के धन के सामने कुबेर का धन भी हार मानता है। मरुत्त के जैसा कोई जन नहीं है। राजा मरुत्त के धन का घोष सारे संसार में होता है, कि चन्द्रवंश में ऐसे भी एक भूपाल थे ! ॥ ७१ ॥

रावण द्वारा अनरण्य का वध और रावण को अनरण्य का अभिशाप

अगस्त्य मुनि की बात सुनकर श्रीराम हँसे। उन्होंने कहा— मुनि, सुनाइये। मरुत्त को जीतकर वह रावण कहाँ गया। मुनि, मैं वह पुरानी कथा सुनना चाहता हूँ। आप कहिये ॥ ७२ ॥ मुनि बोले, रावण यदि सुनता कि कहीं कोई वीर है, तो वह द्रुतगति से वहाँ जा पहुँचता। कहता, हमसे शीघ्र युद्ध करो ! यदि वह पराजय मान लेता, तो रावण

पराजय ये ना माने, करे अहङ्कार। रावणेर ठाँइ तार नाहिक निस्तार
पुरन्दर निज मुखे माने पराजय। पराजय मानिले संग्राम नाहि हय ७४
ए रूपे रावण भ्रमे पृथिवी-मण्डले। अयोध्या जिनिते याम जय जय ब'ले
अनरण्य नामे राजा छिल अयोध्याय। वार्त्ता पेये दशानन तांर काछे याय ७५
तव पूर्व्व पुरुष से अनरण्य नाम। रावण तांहार काछे चाहिल संग्राम
लङ्कार रावण आमि शुर अनरण्य। रण देह मोरे, नाहि चाहि किछु अन्य ७६
शुनि अनरण्य कोपे करे अहङ्कार। कटकेते मिशामिशि हैल महामार
प्राचीन वयस राजा, मांसे चक्षु ढाके। भ्रूद्वय तुलिया वान्धि राजा सव देखे ७७
बहुकाल जीवी राजा पृथिवी-भितर। राजार वयस बाइश हाजार वत्सर
साजिल राजार सैन्य हस्ती अश्व यत। अस्त्र शस्त्र लइल याहार छिल यत ७८
दुइ कोटि सैन्येते साजिल महावल। राक्षसे मानुषे युद्ध हइल प्रबल
अनरण्य राजा करे वाण-वरिषण। रावणेर सेनापति करे पलायन ८०
सेनापति-भङ्ग देखि रावण फाफर। अनरण्य-सह युझे क्रोधे लङ्केश्वर
रावण असंख्य वाण करे वरिषण। बुड़ा राजा समरे हइला अचेतन ८१
आपना सारिया करे वाण-वरिषण। वाणेते जर्ज्जर देह हइल रावण
रावणेर गा बहिया रक्त पड़े धारे। येमन गङ्गार धारा पर्व्वत-शिखरे ८२

उसे न मारता ॥ ७३ ॥ जो पराजय न मानता, अहंकार करता था, वह रावण से बच नहीं पाता था। इन्द्र ने स्वयं अपने मुँह से पराजय स्वीकार किया था। कोई पराजय मान लेता तो उससे संग्राम नहीं होता था ॥ ७४ ॥ इसी तरह रावण पृथ्वी-मंडल पर भ्रमण करने लगा। अपनी जय-जयकार करता हुआ वह अयोध्या को जीतने चला। (उन दिनों) अयोध्या में अनरण्य नामक राजा था। समाचार पाकर रावण वहाँ पहुँचा ॥ ७५ ॥ अनरण्य नाम के वे राजा तुम्हारे पूर्वज थे। रावण ने युद्ध के लिए उन्हें ललकारा। उसने कहा— अनरण्य, सुनो। मैं लंका का राजा रावण हूँ। मुझसे युद्ध करो, मैं तुमसे और कुछ नहीं चाहता ॥ ७६ ॥ यह सुनकर अनरण्य ने कुपित होकर अपना अहंकार प्रकट किया अथवा प्रचंड नाद किया। दोनों की सेनाएँ आपस में गुँथ गयी, प्रचंड मारकाट होने लगी। राजा की पुरानी आयु के हो गये थे, उन (की पलकों) का मांस बढ़ जाने के कारण आँखें ढँक गयी थीं। अपनी भौहों को ऊपर उठा बाँधकर राजा सब देखते थे ॥७७-७८॥ राजा संसार में बहुकाल-जीवी थे। राजा की आयु बाईस हज़ार वर्ष हो चुकी थी। राजा की सेना, हाथी, घोड़े जितने थे, सभी सज गये। जिसके पास जितने अस्त्र-शस्त्र थे, ले लिये ॥ ७९ ॥ दो करोड़ सेना की महावाहिनी सजी, राक्षसों-मनुष्यों में प्रबल युद्ध होने लगा। राजा अनरण्य वाण-वर्षा करने लगे। रावण के सेनापति भागने लगे ॥ ८० ॥ सेनापतियों को भागते देख रावण परेशान हो गया। अनरण्य के संग युद्ध में लंकेश्वर कुपित हो उठा। रावण असंख्य बाणों की वर्षा करने लगा। वे बूढ़े राजा युद्ध में अचेत ही गये ॥ ८१ ॥ अपने को प्रकृतिस्थ कर

केहू ना जिनिते पारे, नाहि पाय आश। उभये वरषे बाण नाहि फेले श्वास
दशानन बाण एड़े, शून्य हैल तूण। तखन बुड़ार बाण आछये द्विगुण ८३
आर बाण यावत् ना योगाय सारथि। तावत् रावण मने करिल युकति
रावण राजार बुके मारिल चापड़। भूमिते पड़िया राजा करे धड़फड़ ८४
मृत्युकाले बुड़ा राजा करे छटपट। धाइया रावण गेल राजार निकट
राजभोगे वृद्ध, कभु नाहि जाने रण। आमार सहित युद्धे अवश्य मरण ८५
जगत् जिनिया भ्रमि आपनार तेजे। तार मृत्यु अवश्य ये मोर सने युझे
गर्व्व करे बले राजा मरणेर काले। शाप बर देइ यावे ततक्षणे फले ८६
अनरण्य बले किवा कर अहङ्कार। कभु हारि, कभुजिनि, रण व्यवहार
बहु यज्ञ करि तुषिलाम देवगणे। नाना रत्न दाने तुषिलाम विप्रगणे ८७
राजा हये करिलाम प्रजार पालन। तिन लक्ष द्विजे नित्य कराइ भोजन
ए सब आमार पुण्य जाने सब भाले। तोरे ये बधिबे, से जन्मिबे मोर कुले ८८
संग्रामे पड़िया राजा गेल स्वर्गपुर। दिग्विजय करि भ्रमे लङ्कार ठाकुर
तब पूर्व्व पुरुषे ये जिनिलेक रणे। से रावण पड़िल श्रीराम, तव बाणे ८९

वे बाण-वर्षा करने लगे। बाणों से रावण का शरीर जर्जर हो गया। रावण के शरीर से धारा में रक्त बहने लगा। जैसा कि पर्वत-शिखर पर गंगा की धारा बहती हो ॥ ८२ ॥ कोई किसी को जीत नहीं पाता था, किसी को कोई अवसर नहीं मिलता था, दोनों बिना साँस लिये बाण-वर्षा करते जा रहे थे। दशानन ने इतने बाण छोड़े कि उसके तरकश खाली हो गये। परन्तु तब भी बूढ़े राजा के वहाँ दूने बाण थे ॥ ८३ ॥ सारथी और भी बाण जब तक लाकर नहीं जुटाता, तब तक रावण ने मन में यह युक्ति सोची। रावण ने आकर राजा की छाती पर थप्पड़ मारा। राजा भूमि पर गिरकर तड़पने लगे ॥८४॥ मृत्यु-काल में बूढ़े राजा छटपटाने लगे। रावण दौड़कर राजा के पास पहुँचा। वह बोला— राज-भोग करते हुए तुम वृद्ध हो गये, कभी युद्ध करना नहीं जानते। मेरे साथ युद्ध में तुम्हारी मृत्यु अवश्य होगी ॥ ८५ ॥ अपने तेज से विश्व को जीतकर मैं घूम रहा हूँ। जो मेरे साथ युद्ध करेगा उसकी मृत्यु अवश्य होगी। तब राजा अनरण्य ने मरते समय गर्व से कहा, तुझे ऐसा शाप देता हूँ जो शीघ्र ही फलीभूत होगा ॥ ८६ ॥ अनरण्य बोले, तू अहंकार क्यों कर रहा है! कभी हार, कभी जीत यह तो रण का नियम है। मैंने अनेक यज्ञ कर देवगणों को तुष्ट किया है, अनेक रत्नों के दान से विप्रों को संतुष्ट किया है ॥ ८७ ॥ राजा के रूप में मैं प्रजा का पालन करता आया हूँ। नित्य दस लाख द्विजों को भोजन करवाता रहा हूँ। मेरे इन पुण्यकर्मों के बारे में सब लोग भलीभाँति जानते हैं। तुझे वध करनेवाला मेरे ही कुल में उत्पन्न होगा ॥ ८८ ॥ संग्राम में मारे जाकर राजा अनरण्य स्वर्गलोक सिधारे। लंका का राजा रावण दिग्विजय कर घूमता रहा। हे श्रीराम, तुम्हारे पूर्वज राजा अनरण्य को जिसने युद्ध मे जीता था, वह

पूर्व्व कथा शुनिया श्रीरामेर उल्लास। गाइल उत्तरकाण्ड गीत कृत्तिवास

कार्त्तवीर्य्यार्ज्जुनेर सहित रावणेर युद्ध

श्रीराम वलेन, वृद्धछिलेन दुर्व्वल। सेकारणे हयेछिल रावण प्रबल ६०
वीर शून्या पृथिवी आछिल से समय। ताइ रावणेर वृद्धि छिल अतिशय
सेकालेर राजा ब्रह्म-अस्त्र नाहि जाने। रावणेर पराजय नहे सेकारणे ६१
मुनि वले, दशानन नाना माया धरे। राक्षसे करिले माया कोन् जन तरे
माया रणे देखा रणे अनेक अन्तर। तेकारणे पराजित नहे लङ्केश्वर ६२
मानुष हइया यिनि विष्णु-अधिष्ठान। ताँर ठाँइ रावण ये पाय अपमान
कार्त्तवीर्य्यार्ज्जुन राजा छिल चन्द्रवंशे। ताँहार सहस्रवाहु जन्म बिष्णु-अंशे ६३
नाना बुद्धि धरिया से राजा राज्य राखे। याँर नामे हाराधन आसये सम्मुखे
शत शत कामिनी लइया कुतूहले। अर्ज्जुन करित केलि नर्म्मदार जले ६४
माहिष्मती-नगरे ताँहार छिल घर। तथा गिया वार्त्ता पुछे राजा लङ्केश्वर
लङ्कार रावण आमि, चाहि आजि रण। कार्त्तवीर्य्यार्ज्जुन कि करिल पलायन ६५
राक्षस कटक-बाप अति भयङ्कर। अर्ज्जुन राजार ताहे नाहि कोनो डर

रावण तुम्हारे बाणों से मारा गया ॥ ८९ ॥ पूर्व-कथा सुनकर श्रीराम को बड़ा हर्ष हुआ। कवि कृत्तिवास ने उत्तरकांड गीत गाया।

कार्तवीर्यार्जुन के साथ रावण का युद्ध

श्रीराम ने कहा— वे वृद्ध (राजा) कमजोर थे। इसी कारण रावण प्रबल था ॥ ९० ॥ उस समय पृथ्वी वीर-शून्य थी, इसी कारण रावण की अत्यन्त वृद्धि हुई थी। उस काल के राजाओं को अस्त्र-शस्त्रों का ज्ञान न था। इसी से रावण की हार नहीं होती थी ॥ ९१ ॥ मुनि बोले— रावण अनेक प्रकार की माया धारण करता था। राक्षस जब माया करते हैं तो भला कौन पार पा सकता है? माया से किये जानेवाले युद्ध और आँखों के सम्मुख होनेवाले युद्ध में अनेक अन्तर है। इसी से लकेश्वर रावण पराजित नहीं होता था ॥ ९२ ॥ मनुष्य होने पर भी जो विष्णु-अधिष्ठान (विष्णु के अवतार) हैं, रावण उनसे अपमानित हुआ है। राजा कार्तवीर्यार्जुन चंद्रवंशी राजा था। उसका जन्म बिष्णु के अंश से हुआ था ॥९३॥ उसकी सहस्रों भुजाएँ थीं। अनेक युक्तियों से वह राजा अपने राज्य की रक्षा किया करता था। उसका नाम लेते ही खोया हुआ धन सामने आ जाता था। सैकड़ों कामिनियों को साथ लेकर बड़े आनन्द से कार्तवीर्यार्जुन नर्मदा के जल में जल-केलि किया करता ॥ ९४ ॥ उसका निवास माहिष्मती पुरी में था। राजा लंकेश्वर ने वहाँ जाकर उसकी वार्त्ता पूछी। मैं लंका का राजा रावण हूँ, आज युद्ध करना चाहता हूँ। क्या कार्तवीर्यार्जुन भाग गया? ॥ ९५ ॥ राक्षसों की सेना बड़ी भयंकर थी पर उससे राजा सहस्रार्जुन को कोई डर न था।

लोके बले, किवा चाह तुमि एइ स्थले। भूपति करेन क्रीड़ा नर्म्मदार जले ९६
नर्म्मदाय याय वीर अर्ज्जुन-उद्देशे। पथे येते विन्ध्यगिरि देखिल हरिषे
नाना फल-फुल देखे अति मनोहर। नाना पक्षी करे केलि, शोभे सरोवर ९७
नृत्य करे मयूर, झङ्कारे मधुकर। राजहंस करे केलि देखिते सुन्दर
दानव गन्धर्व्व देव यक्ष विद्याधर। कामिनी लइया क्रीड़ा करे निरन्तर ९८
रावणे देखिया देवगण कांपे डरे। पलाय छाड़िया केलि पर्व्वत-उपरे
उभरड़े देवगण पलाइल त्रासे। देवता पलाय देखि दशानन हासे ९९
निर्म्मल नदीर जल गिरि हैते वय। नानाविधि लोक तथा करये आलय
विन्ध्यगिरि एड़ि गेल नर्म्मदार कूले। जल केमि करे तथा केशरी-शार्द्दूले १००
शुक-सारणादि सह यत परिजन। रथ हैते सेइखाने नामिल रावण
मध्यान्ह कालेर रौद्रे तापिता पृथिवी। रावणे देखिया मन्द तेज हैल रबि १०१
दुइ कूले बालि ये स्फटिक हेन देखि। बहु जन्तु केलि करे नानाविधि पाखी
नर्म्मदार जल सेइ अतीव निर्म्मल। धीरे धीरे वहे वायु अति सुशीतल २
सैन्य सङ्गे नामिया रावण याय जले। धुइल गायेर रक्त लग्न रणस्थले
सांतारे रावण राजा नर्म्मदार जले। आनन्दे करिया स्नान उठिलेक कूले ३

लोगों ने कहा— तुम इस स्थान पर क्या चाहते हो ? राजा तो नर्मदा के जल में क्रीड़ा कर रहे हैं ॥ ९६ ॥ तब वीर सहस्रार्जुन को खोजता हुआ रावण नर्मदा-तट पर पहुँचा। मार्ग में जाते हुए उसने हर्ष से विंध्याचल पर्वत को देखा। वहाँ उसने अत्यन्त मनोहर नाना प्रकार के फल-फूल देखे। वहाँ नाना प्रकार के पक्षी केलि कर रहे थे जिनसे सरोवर सुशोभित हो रहा था ॥ ९७ ॥ मोर नृत्य कर रहे थे, मधुकर गुंजार रहे थे, राजहंस केलि कर रहे जो देखने में बड़े सुन्दर लगते थे। दानव-गन्धर्व-देव-यक्ष-विद्याधर आदि कामिनियों को लेकर निरन्तर क्रीड़ा कर रहे थे ॥ ९८ ॥ रावण को देखकर देवगण डर के मारे काँपने लगे। वे केलि करना छोड़ पर्वत के ऊपर भाग गये। देवगण बड़े त्रास से तेजी से भाग चले। देवताओं को भागता देख दशानन हँसने लगा था ॥ ९९ ॥ नदी का निर्मल जल पर्वत पर से बह रहा था। वहाँ अनेक प्रकार के लोगों के निवास थे। वह विंध्याचल को पार कर नर्मदा-तट पर पहुँचा। वहाँ सिंह-शार्दूल आदि भी जल-केलि किया करते थे ॥ १०० ॥ शुक-सारण समेत जितने परिजन थे उन सबके साथ रावण वहाँ उतरा। दोपहर की धूप से पृथ्वी तप्त हो रही थी, परन्तु रावण को देखते ही सूर्य का तेज मंद पड़ गया ॥ १०१ ॥ नदी के दोनों ओर रेत स्फटिक-सी दिखायी देती थी। वहाँ अनेक जन्तु और अनेक प्रकार के पक्षी केलि कर रहे थे। नर्मदा का वह जल बड़ा निर्मल था। वहाँ बड़ी शीतल वायु मंद-मंद बह रही थी ॥ २ ॥ सेना समेत रावण जल में उतरा और रणभूमि में शरीर पर जो रक्त लगा था उसे धोया। राजा रावण नर्मदा के जल में तैरने लगा और आनन्द से स्नान कर तट पर आया ॥ ३ ॥

देवदेव महादेव जगतेर राजा। नाना उपचारे रक्षः करे तार पूजा
स्वर्ण शिवलिङ्ग ताहे काञ्चन मेखला। भक्तिते रावण पूजे देवाच्चर्चन-वेला ४
शत सुवर्णेर पात्र लागे पूजा-साजे। शङ्ख घण्टा दुन्दुभि ये चारिदिके बाजे
कराइल शिवलिङ्ग स्नान सेइ जले। कलसे करिया गन्ध तदुपरि ढाले ५
मन्त्र जप करिल लइया जपमाला। मौन नाहि भाङ्गे तार देवाच्चर्चन-वेला
कुड़िहात प्रसारिया नाचे रङ्ग-भङ्ग। रावण प्रणाम करे सेइ शिवलिङ्गे ६
एदिके अर्ज्जुन राजा हये हृष्टमति। जलक्रीड़ा करे, सङ्गे शतेक युबती
प्रसारे नदीर माझे हस्त से दीघल। हातेते जाङ्गाल वान्धि राखे तार जल ७
छिल ये कांकालि जल हइल पाथार। शत शत कन्या दिते लागिल सांतार
हात सम्वरिया राजा बान्धि दिल जल। आकुल हइया डाके रमणी सकल ८
हातेते जाङ्गाल वान्धे, राणी सब भासे। देखिया अर्ज्जुन राजा कौतुकेते हासे
हातेर उपरे हात देय काते-काते। से जल उजान वहे कूल बहे स्रोते ९
शिव पूजा करिछे रावण सेइ कूले। स्रोते तार फल-फुल भासाइल जले
आपनि रावण गाय आपनि से नाचे। बार्त्ता जानि वारे शुक-सारणेरे पुछे ११०
नाभाङ्गे रावण मौन हाते तुड़ि दिल। वृत्तान्त जानिते शुक सारण चलिल

देव-देव महादेव जगत के राजा हैं, राक्षस रावण अनेक उपचारों से उनकी पूजा करने लगा। वह शिवलिंग सोने का था, उस पर सोने की मेखला थी; देवार्चन के समय रावण बड़ी भक्ति से उनकी पूजा करने लगा ॥ ४ ॥ पूजा की सामग्रियों के लिए सोने के सौ पात्र लगते थे। शंख-घंटा-दुन्दुभि चारों ओर वजने लगे। नर्मदा के उस जल से उसने शिवलिंग को स्नान कराया। उस पर घड़ों में भरे सुगन्धित द्रव्यों का अर्घ्य चढ़ाया ॥ ५ ॥ हाथ में जपमाला ले उसने मंत्र जप किया। देवार्चना के समय भी उसका मौन नहीं टूटा। अपने वीस हाथ प्रसारित कर वह नाना अंग-भंगी कर नाचने लगा। और रावण ने उस शिवलिंग को प्रणाम किया ॥ ६ ॥ इधर राजा सहस्रार्जुन मन में अत्यन्त आनन्दित हो जल-क्रीड़ा कर रहा था, उसके संग सैकड़ों युवतियाँ थीं। उसने नदी में अपनी भुजाएँ फैला दीं और हाथों से ही बाँध वनाकर पानी को रोक दिया ॥ ७ ॥ जहाँ कमर तक पानी था वहाँ सागर जैसा हो गया, सैकड़ों कन्याएँ तैरने लगी। अपनी भुजाओं को समेट कर राजा ने पानी को बाँध दिया, नारियाँ व्याकुल होकर पुकार मचाने लगीं ॥ ८ ॥ सहस्रार्जुन ने भुजाओं से बाँध बना दिया, रानियाँ वहने लगीं। यह देख राजा सहस्रार्जुन कौतुक से हँसने लगा। उसने भुजा पर भुजा आड़ी-तिरछी रखी; जिससे (नदी का प्रवाह रुककर) नदी की उलटी दिशा में वहने लगा, जिसकी धारा में तट डूबने लगा ॥ ९ ॥ रावण उसी तट पर शिव-पूजा कर रहा था। प्रवाह से उसके फल-फूल पानी में वह गये। रावण स्वयं (स्तोत्र) गाता था, अपने-आप नाचता था। समाचार जानने के लिए उसने शुक-सारण से कारण पूछा ॥११०॥ रावण का मौन टूटता न था, उसने अपने हाथ से संकेत

निष्ठा बार्त्ता जानिया ये ताहारा जमाय। तोमारे भेटिते कार्त्तवीर्य्यार्ज्जुन चाय १११
सुन्दर अर्ज्जुन राजा येन देवपति। जल क्रीड़ा करे सब लइया युवती
नदीते सहस्र हस्त प्रसारे दीघल। सहस्र हस्तेते तार बद्ध राखे जल १२
सहस्र हस्तेते सेतु बान्धि राखे जल। भाटा जल उजान बय से अपूर्ब्ब काल
जाङ्गाल सहस्रहाते बान्धि राखे नदी। से कारणे भासितेछे फल-फुल आदि १३
से कार्त्तवीर्य्येर हेतु हेथा आगमन। नर्म्मदार जले तारे कर दरशन
अर्ज्जुनेर बार्त्ता पेये चले दशानन। दुइ क्रोश पथ गिया करे निरीक्षण १४
अर्ज्जुन सहस्र करे करे जल खेला। सहस्र सहस्रतांर बेष्टित महिला
तांहार पात्रेर स्थाने कहिछे रावण। अर्ज्जुनेर कह गिया मम आगमन १५
स्त्री लइया तोर राजा सुखे करे स्नान। बलगिया राजारे रावण रण चान
यत यदि रावण पात्रेर प्रति बले। कुपित से राजपात्र रावणेर बोले १६
स्त्री लइया महाराज सुखे केलि करे। ए समये कोन् जन बले युझिबारे
रणेर समय ना जानिस निशाचर। अर्ज्जुनेर हाते आजि याबि यमघर १७
स्त्री लइया राजा करे हास्य-परिहास। तोर बाक्ये केन आमि याब तांर पाश
बिंशति हस्तेते तोर एत अहङ्कार। सहस्र हस्तेते कार्त्तबीर्य्य अबतार १८

दिया, घटना का विवरण जानने के लिए शुक-सारण चल पड़े। सही समाचार जानकर वे लौट आये और रावण को सूचित किया कि कार्तवीर्यार्जुन आपसे मिलना चाहते हैं ॥१११॥ राजा अर्जुन देवराज इन्द्र जैसे सुन्दर हैं। युवतियों को साथ लेकर वे जल-क्रीड़ा कर रहे हैं। नदी में उन्होंने सहस्रों लम्बे हाथ पसारे रखा है और उन सहस्र हाथों ने जल को बाँध रखा है ॥ १२ ॥ सहस्र हाथों से पुल या बाँध जैसे बनाकर उन्होंने पानी को रोक दिया है। उनके कुछ अपूर्व कौशल के कारण नीचे की ओर बहने वाला जल इसी कारण उलटी दिशा में बह रहा है। उन्होंने सहस्रों हाथों से दीवार जैसे बाँध बनाकर नदी को रोक दिया है, इसी कारण उसमें फल-फूल आदि बह गये हैं ॥ १३ ॥ उसी कार्तवीर्य के लिए यहाँ आये हैं, आप उन्हें नर्मदा के जल में दर्शन कीजिये। सहस्रार्जुन का समाचार पाकर दशानन चला। दो कोस आगे बढ़कर निरीक्षण किया ॥ १४ ॥ सहस्रार्जुन सहस्र हाथों से जल-क्रीड़ा कर रहे थे। सौ-सौ महिलाएँ उन्हें घेरे हुए थीं। उनके मंत्री से जाकर रावण ने कहा—जाकर अर्जुन से मेरा आगमन बताओ ॥ १५ ॥ तुम्हारा राजा नारियों को लेकर सुख से स्नान कर रहा है; जाकर उससे कहो कि रावण लड़ाई करना चाहता है। रावण ने जब मंत्री से यह बात कही, तो वह राजमंत्री रावण की बात पर कुपित हो उठा ॥ १६ ॥ महाराज इस समय नारियों के संग सुख से केलि कर रहे हैं, इस अवसर पर उन्हें लड़ाई के लिए कौन कह सकता है ? अरे निशाचर, तुम लड़ाई का समय नहीं जानते। आज तुम्हें अर्जुन के हाथ यमलोक जाना पड़ेगा ॥ १७ ॥ राजा नारियों को लेकर हास-परिहास कर रहे हैं, तेरी बात से आज मैं उनके पास क्यों जाऊँ ? केवल बीस हाथ होने के कारण ही तेरा इतना अहंकार है।

वीर हेन देखिस कि तुइ आपनारे। करिते आइलि युद्ध बिधातार वरे
अर्ज्जुने पाइले तोरे मारिबे आछाड़। दशमुण्ड भाङ्गिया करिबे चूर्ण हाड़ ११९
देव दैत्य जिनिया बेड़ास येन सर्प। तेँइ से कारणे तोर बाड़ियाछे दर्प
अर्ज्जुन राजार काछे कर अहङ्कार। मानुष हइया तिनि देव-अवतार १२०
जन्मिलि राक्षस-कुले नाना मायाधर। हरे देख, राजा, मम मायार सागर
आकाशे थाकिया युझे कमुनाहि देखि। मेघ रूपे वर्षे जल उड़े येन पाखी १२१
सरले सरल तिनि बाँका प्रति बाँका। पड़िले ताँहार ठाँइ तवे याय देखा
अर्ज्जुने मेरे ना पारिबि, एलि मरिबारे। प्राण रक्षा कर गिया झाँट याह घरे २२
आमार समरे यदि पास अव्याहृति। तवे गिया घाटाइस् अर्ज्जुन नृपति

कार्त्तवीर्य्यार्ज्जुन कर्तृक रावणेर बंधन

कुपित रावण राजा महा भयङ्कर। राक्षस मानुषे युद्ध बाधिल बिस्तर १
शुक सारण मारीच राक्षसादि वीर। राक्षसेर माया-रणे नर नहे स्थिर
राक्षसेर संग्रामे मानुष सैन्य नड़े। अर्ज्जुनेर काछे गिया दूत बले रड़े २

पर कार्तवीर्य का अवतार सहस्र हाथों वाला है ॥ १८ ॥ तू क्या अपने को वीर जैसा देख रहा है ? विधाता-ब्रह्मा से वर लेकर तू युद्ध करने आ गया है ? कार्तवीर्य अर्जुन अगर तुझे पकड़ लें तो पटक देंगे, दसों शिरों को तोड़कर सारी अस्थियाँ चूर-चूर कर डालेंगे ॥ १९ ॥ देव-दैत्य को जीतकर तू सर्प-जैसा घूम रहा है, इसी कारण तेरा दर्प बढ़ गया है। तू राजा अर्जुन के सामने अहंकार कर रहा है। मनुष्य होने पर भी वे देव-अवतार हैं ॥ १२० ॥ तू अनेक माया धारण करनेवाला राक्षसकुल में उत्पन्न हुआ है। अरे, देख, हमारे राजा मायाओं के सागर ही हैं। वह आकाश में रहकर लड़ते हैं, जिससे दिखाई नहीं देते। मेघ के रूप में पानी बरसाते हैं, पक्षी जैसे उड़ जाते हैं ॥ १२१ ॥ वे सीधे आदमी के लिए सीधे हैं, टेढ़े के लिए टेढ़े। उनके सामने पड़ जाने पर ही (उनका विक्रम) देखा जा सकता है। तू अर्जुन से पार नहीं पा सकेगा, मरने के लिए ही आ पहुँचा है। शीघ्र यहाँ से चले जाकर अपनी प्राण-रक्षा कर ॥ २२ ॥ यदि हमारे साथ युद्ध कर बच जाये, तभी जाकर राजा अर्जुन को हराना।

कार्तवीर्यार्जुन द्वारा रावण को बाँधना

यह सुनकर राजा रावण अत्यंत कुपित हो महा भयंकर हो उठा। तब राक्षसों और मानवों के बीच प्रचंड युद्ध छिड़ गया ॥ १ ॥ शुक, सारण, मारीच आदि राक्षस-वीरों के मायामय युद्ध में वे मानव डटे नहीं रह सके। राक्षस के साथ संग्राम में मानवी सेना भागने लगी। तेज़ी से दूत अर्जुन के पास जाकर कहने लगा— ॥ २ ॥ आपकी सेना को रावण ने

मारिया तोमार सैन्य फलिल रावण। अग्नि हेन ज्वले कोपे शुनिया राजन्
युझिबारे चलिल अर्ज्जुन महावीर। भये राज नितम्बिनी केह नहे स्थिर ३
स्त्रीलोकेर कलरव उठिल गभीर। सबारे अभय दाने राजा करे स्थिर
पात्र सह स्त्रीगणे पाठाय अन्तःपुरी। धाइल अर्ज्जुन स्वर्ण गदा हाते करि ४
गभीर गर्ज्जने आसे पर्व्वत आकार। गदा हाते राक्षसेरे करे मार मार
दुर्ज्जय शरीर राजा अति-भयङ्कर। तिन शत योजन युड़िया परिसर ५
छय शत योजन शरीर दीर्घतर। सहस्र हस्तेते धरे सहस्र भूधर
देखिया कुपिल से प्रहस्त महाबल। अर्ज्जुनेर शिरे मारे लोहार मूषल ६
पड़िल मूषल येन झञ्झना-चिकुर। अर्ज्जुनेर गदाय ठेकिया हैल चूर
अर्ज्जुन सहस्र हाते गदा एक चापे। प्रहस्तेर माथाय मारिल महाकोपे ७
मोह गेल प्रहस्त से अत्यन्त कातर। देखिया कातर तारे रोषे लङ्केश्वर
कुड़ि हाते अस्त्र फेले राक्षस रावण। सहस्र हस्तेते लोके अर्ज्जुन राजन् ८
दुइ गिरि ठेका ठेकि शुनि ठनठनि। त्रिभुवन जल स्थल कम्पिता मेदिनी
उभय हस्तीर युद्ध, दन्ते हानाहानि। दुइ सूर्य्य युद्ध करे मने हेन मानि ९
दुइ सिंह रणे येन छाड़े सिंहनाद। दुइ वीर रण करे नाहि अवसाद

मार डाला। राजा अर्जुन यह सुनकर अग्नि-जैसा कुपित हो उठा। महावीर अर्जुन लड़ने को चला। डर के मारे राजा की विलास-संगिनी नारियाँ कोई स्थिर न रह सकीं ॥ ३ ॥ नारियों का प्रचंड कलरव गूँज उठा। राजा अर्जुन ने सबको अभय दे शान्त किया। उसने मंत्रियों-सामन्तों के साथ नारियों को अन्तःपुर भेज दिया। राजा अर्जुन हाथ में स्वर्ण-निर्मित गदा लिये दौड़ पड़ा ॥ ४ ॥ वह पर्वताकार राजा अर्जुन प्रचंड गरजता हुआ आया और हाथ में गदा लिये 'मार, मार' करता राक्षसों पर टूट पड़ा। दुर्जय शरीर वाला राजा बड़ा भयंकर था। उसके शरीर का आकार तीन सौ योजन फैला था ॥ ५ ॥ उसका शरीर छः योजन लम्बा था। हज़ारों हाथों में वह हज़ारों पर्वतों को उठाये हुए था। उसे आता देख महाबली प्रहस्त कुपित हो उठा और अर्जुन के सिर पर लोहे के मूसल से चोट की ॥ ६ ॥ मूसल झनझनाता हुआ वज्रपात की भाँति उस पर गिरा पर अर्जुन की गदा से लगकर चूर-चूर हो गया। अर्जुन ने हज़ारों हाथों से बल लगाकर, प्रचंड क्रोधित होकर प्रहस्त के सिर पर मारा ॥ ७ ॥ अत्यन्त कातर होकर प्रहस्त अचेत हो गया। उसे कातर देख लंकेश्वर रावण कुपित हो उठा। रावण बीस हाथों से अस्त्रों का प्रहार करने लगा। जिन्हें हज़ार हाथों से अर्जुन लपक लेता था ॥ ८ ॥ लगता था दो पर्वतों में टकराहट से ठन-ठन की आवाज़ हो रही हो। जिससे त्रिभुवन, जल-स्थल और मेदिनी काँप उठी। दोनों के हाथियों की लड़ाई होने लगी और वे एक-दूसरों को दाँतों से बेधने लगे। देखकर मन में लगता था कि दो सूरज आपस में जूझ रहे हैं ॥ ९ ॥ लगता था, मानो दो सिंह युद्ध में सिंहनाद कर रहे हैं। दोनों वीर युद्ध कर रहे थे, कोई थकता न था। दोनों ही धनुर्धर थे,

उभये वरिखे वाण, दोँहे धनुर्द्धर। दोँहे दोँहा विन्धिया करिल जर-जर १०
केह कारे नाहि पारे तुल्य दुइ जन। देवता, असुरे येन पूर्व्वे हैल रण
रावण मूसलाघात करिल निष्ठुर। अर्ज्जुनेर वुकेते ठेकिया हैल चूर ११
धरिया दुर्ज्जय गदा अर्ज्जुन-नृपति। रावणेर वुकेते मारिल शीघ्रगति
रावणेर मोह हैल गदार आघाते। एड़िया धनुक वाण लागिल काँपिते १२
लाफ दिया अर्ज्जुन धरिल लङ्केश्वरे। गरुड़ छुंइया येन निल अजगरे
धरिया सहस्र हाते राखे कक्षतलि। पाताले ये मन हरि वान्धिलेन वलि १३
वान्धिल सहस्र हस्ते तार कुड़ि हात। रावण भाविछे, एकि हइल उत्पात
साधु साधु वलिछे आकाशे देवगण। अर्ज्जुन-उपरे करे पुष्प-वरिषण १४
हस्ती मारि येन सिंह छाड़े सिंहनाद। मृग मारि व्याध येन पासरे विषाद
नाना अस्त्र राक्षस फेलिल चारि भिते। राक्षसेर अस्त्र सव राजा लोके हाते १५
कत हाते घेरिया रहिछे दशानने। कत हाते खेदाड़े से निशाचर गणे
मारीच दूषण खर प्रहस्त महावल। अर्ज्जुनेर स्तुति करे राक्षस सकल १६
राक्षसेर स्तवेले अर्ज्जुन राजा हासे। कक्षे रावणेरे चापि चलिल आवासे
रावणे लइया राजा पद व्रजे याय। रावणेर दुर्द्दशा देखिते सवे पाय १७

दोनों ही (एक-दूसरे पर) बाण-वर्षा कर रहे थे। दोनों ने दोनों को वेधकर जर्जर कर डाला ॥ १० ॥ कोई किसी से पार नहीं पाता था, दोनों ही वरावर थे। पहले देवों और असुरों में जैसा संग्राम हुआ था, वैसा ही युद्ध होने लगा। रावण ने निर्ममता से मूसल से चोट की। वह मूसल अर्जुन की छाती से लगकर चूर-चूर हो गया ॥ ११ ॥ राजा अर्जुन ने दुर्जय गदा लेकर तेज़ी से वड़े वेग से रावण की छाती पर मारा। गदा की चोट से रावण अचेत हो गया। धनुष-वाण (उसके हाथ से) छूट गये, वह काँपने लगा ॥ १२ ॥ अर्जुन ने कूदकर रावण को पकड़ लिया। मानो गरुड़ ने झपट्टा मारकर अजगर को पकड़ लिया हो। हज़ार हाथों से पकड़कर उसे काँख के नीचे दवा लिया। वैसे ही जैसा कि पाताल में हरि ने वलि को वाँध लिया था ॥ १३ ॥ अर्जुन ने उसे सहस्र हाथों से वाँध लिया, रावण के केवल वीस ही हाथ थे। रावण सोचने लगा, भला यह कैसी वला आ पड़ी। आकाश में देवगण 'साधु, साधु' कहने लगे और अर्जुन पर पुष्प-वर्षा करने लगे ॥ १४ ॥ रावण को वन्दी कर राजा अर्जुन वैसा ही हुआ जैसे सिंह हाथी को मार कर सिंहनाद करता है। जैसे मृग मारकर व्याध अपना विषाद भूल जाता है। राक्षस जव चारों ओर से राजा अर्जुन पर अस्त्रों का प्रहार करने लगे तव राजा सहस्रार्जुन उन सारे अस्त्रों को हाथों से लोक लेने लगा ॥ १५ ॥ वह कुछ हाथों से दशानन रावण को घेरे हुए था, और कुछ हाथों से निशाचरों को खदेड़ रहा था। मारीच-दूषण-खर-प्रहस्त आदि महावली राक्षस भी राजा अर्जुन की स्तुति करने लगे ॥ १६ ॥ राक्षसों का स्तव सुनकर राजा अर्जुन हँसने लगा। वह रावण को काँख के तले दवाये अपने निवास की ओर चल पड़ा। रावण को लिये हुए राजा अर्जुन पैदल चला।

अर्ज्जुनेरे डाकदिया बले देवगणे। चिरकाल बन्दी करि राखह रावणे
देवगण अर्ज्जुनेर करेन बाखान। तोमार प्रसादे आजि पाइ सबे त्राण १८
कुतूहले देवगण करे हुलाहुलि। रावणेरे ल'ये पुरे सान्धाइल बली
बन्दीशाले ल'ये फेले मड़ार आकार। टुटिल से रावणेर सब अहङ्कार १९
कुड़िहाते बेड़िलेक तार दश गला। दृढ़ बान्धिलेन दिया लोहार शिकला
बन्धनेर टाने दुष्ट हइल कातर। बुकेते तुलिया दिल दारुण पाथर २०
पाथर तुलिया दिल सत्तर योजन। पाश उलटिते नारे दुरन्त रावण
रावणेरे बद्ध करि राखे कारागारे। अर्ज्जुन करिते केलि गेल अन्तःपुरे २१
धरिल सहस्र हाते सहस्र युबती। मनोसुखे केलि करे अर्ज्जुन नृपति
अर्ज्जुनेर नामे हय पाप बिमोचन। अर्ज्जुनेर नामे पाइ हाराइले धन २२
बिष्णु-अबतार राजा बले महाबली। कृत्तिवास रचे अर्ज्जुनेर जलकेलि

पुलस्त्येर प्रार्थनाय कार्त्तवीर्य्यार्ज्जुन कर्त्तृक रावणेर बन्धन-मोचन

अर्ज्जुन करिया बन्दी राखे दशानने। घरे घरे वार्त्ता कहे यत देवगणे १

सब लोग रावण की दुर्दशा देखने लगे ॥१७॥ अर्जुन को बुलाकर देवताओं ने कहा— इस रावण को चिरकाल बन्दी बनाकर रखो। देवराज इंद्र अर्जुन की प्रशंसा करने लगे। तुम्हारे प्रसाद से आज हम सबको परित्राण मिला ॥ १८ ॥ कौतूहल के मारे देवगण आनन्द-ध्वनि करने लगे। बली सहस्रार्जुन ने रावण को लेकर पुरी में प्रवेश किया। उसे ले जाकर मृतक की भाँति कारागार में डाल दिया। उस रावण का सारा अहंकार टूट गया ॥ १९ ॥ राजा अर्जुन ने रावण के बीस हाथों से उसके दस गरदनों को घेरकर उसे लोहे की ज़ंजीर से दृढ़ता से बाँध दिया। बंधन के खिंचाव से दुष्ट रावण कातर हो गया। फिर उसकी छाती पर भयंकर चट्टान चढ़ा दी ॥ २० ॥ सत्तर योजन का पत्थर चढ़ा दिया, जिससे दुरन्त रावण करवट भी बदल नहीं सकता था। रावण को बाँधकर उसने कारागार में रख दिया। इसके पश्चात् अर्जुन केलि करने को अन्तःपुर में चला गया ॥ २१ ॥ हज़ार हाथों से हज़ार युवतियों को पकड़ा और राजा अर्जुन मनोसुख से केलि करने लगा। सहस्रार्जुन के नाम से पाप मिट जाता है और उसका नाम लेने पर खोयी सम्पदा मिल जाती है ॥ २२ ॥ विष्णु का अवतार राजा सहस्रार्जुन महाबलशाली था। कृत्तिवास अर्जुन की जलकेलि (की कथा) की रचना कर रहे हैं।

पुलस्त्य मुनि की प्रार्थना से कार्त्तवीर्यार्जुन द्वारा रावण की बन्धन-मुक्ति

राजा सहस्रार्जुन ने रावण को बन्दी बनाकर रखा। सारे देवता घर-घर में वह वार्त्ता पहुँचाने-कहने लगे ॥ १ ॥ महामुनि पुलस्त्य

महामुनि पुलस्त्य से स्वर्गलोके वैसे। शुनिया नातिर वार्त्ता मर्त्यलोके आसे
दशदिक आलो करे मुनिर किरण। अर्ज्जुनेर घरे आसि दिला दरशन २
पात्र मित्र सह राजा आइल सत्वरे। पाद्य-अर्घ्य दिया से मुनिर पूजा करे
सहस्र हस्तेते पञ्चशत पुटाञ्जलि। भूमे पड़ि नति करे राजा कुतूहली ३
छाड़िया अमरावती केन आगमन। मोर काछे प्रभु तब किबा प्रयोजन
आजि हैते वंश मोर हइल निर्म्मल। आजि हैते राज्य मोर हइल उज्ज्वल ४
देवगण बन्दे गिया याँहार चरण। आमार आलये आजि ताँर आगमन
पुत्र पौत्र आछे प्रभु तोमा विद्यमान। कि कार्य्य करिव मुनि कर संविधान ५
मुनि वले राजा तव सफल जीवन। तोमार सदृश प्रिय आछे कोन् जन
घुषिवे तोमार यश ए तिन भुवने। आमार गौरव राख छाड़िया रावणे ६
रावण हय आमार सम्बन्धेते नाति। नाति-दान दिले तवे पाइ अव्याहति
राखियाछ वन्दी करि शुनि वन्दी शाले। हस्त पद बान्धि तार लोहार शिकले ७
आमार गौरव राख करह सम्मान। आमारे करिया क्षमा देह नाति-दान
एतेक शुनिया राजा मुनिर वचन। पात्रेरे वलिल शीघ्र आनह रावण ८
दुइ पात्र कारागारे गेल दिया रड़। खसाइल रावणेर गलार निगड़
कुड़िहात रावणेर वद्ध योड़े-योड़े। राजार आज्ञाय से समस्त बन्ध छाड़े ९

स्वर्गलोक में निवास करते थे। पोते का समाचार सुनकर वे मर्त्यलोक में आ पहुँचे। मुनि की छटा दसों दिशाओं को आलोकित करती थी। वे आकर अर्जुन के निवास पर प्रगट हुए ॥ २ ॥ (मुनि के आने का समाचार पाकर) राजा मंत्रियों-सामन्तों सहित तुरन्त वहाँ आ पहुँचा और पाद्य-अर्घ्य देकर मुनि की पूजा की। कुतूहली राजा सहस्रार्जुन ने अपने हज़ार हाथों से पाँच सौ अंजलियाँ बनाकर धरती पर पड़कर प्रणाम किया ॥ ३ ॥ उसने पूछा— अमरावती छोड़कर आप यहाँ किसलिए पधारे हैं? प्रभु, मुझसे आपका प्रयोजन क्या है? आज से मेरा वंश निर्मल हो गया। आज से मेरा राज्य उज्ज्वल हो गया ॥४॥ देवगण भी जाकर जिनके चरणों की वन्दना किया करते हैं, हमारे निवास में आज उन्हीं का आगमन हुआ है। प्रभु, आपके सम्मुख मेरे पुत्र-पौत्र आदि उपस्थित हैं, हम आपका कौन-सा कार्य करें; प्रभु, निर्देशित कीजिये ॥५॥ मुनि बोले, राजा, तुम्हारा जीवन सफल है। तुम्हारे सदृश मेरा प्रिय जन और कौन है? तीनों लोकों में तुम्हारा यश प्रचारित होगा। रावण को छोड़कर मेरा मान रखो ॥ ६ ॥ रावण नाते में मेरा नाती लगता है। मुझे नाती का दान कर दो, तभी मुझे मुक्ति मिले। मैंने सुना है, तुमने रावण को हाथ-पैर लोहे की ज़ंजीर से बाँध बंदी बनाकर कारागार में डाल रखा है ॥ ७ ॥ मेरा मान-सम्मान रखो, (नाती को) क्षमा कर मुझे नाती-दान कर दो। राजा ने मुनि का यह वचन सुनकर मंत्रियों से कहा, शीघ्र रावण को ले आओ ॥ ८ ॥ दो मंत्री बड़े वेग से कारागार में गये। उसके गले की ज़ंजीर खोल दी। रावण के बीस हाथ जोड़ी-जोड़ी बनाकर बँधे हुए थे। राजा के आदेश से वे सारे

खसाइल पायेर दाँड़ाकु दृढ़तर। घुचाइल रावणेर बुकेर पाथर
कुड़िहात युड़िया बान्धियाछिल चामे। करिल बन्धन मुक्त से-सकल क्रमे १०
रावणे आनियादिल मुनि विद्यमाने। माथा तुलि रावण ना चाहे अपमाने
स्नान कराइया पराइल दिव्य वास। दिव्य अलङ्कार दिल माणिक-प्रकाश ११
सुगन्धि चन्दन-पुष्प दिल विभूषण। पुलस्त्य मुनिर करे करे समर्पण
मुनिर बचने तथा धर्म्म अग्नि ज्वालि। अर्ज्जुन रावण सने करेन मितालि १२
पुलस्त्य गेलेन स्वर्ग, दशानन लङ्का। मुनिर प्रसादे दूरे गेल तार शङ्का
अगस्त्य बलेन पुनः शुन रघुवर। अर्ज्जुनेर पिता तप करिल विस्तर १३
आपनि दिलेन वर तारे नारायण। अर्ज्जुन-स्वरूप आमि तोमार नन्दन
तोमार अर्ज्जुन ये सहस्र हस्त धरे। ए हेन अर्ज्जुने केह जिनिते नापारे १४
बलाबल नाहि तथा, नाहि डाका-चुरि। राज्येते कोंदाल नाहि, आपनि प्रहरी
हराइले धन पाय अर्ज्जुन-स्मरणे। चन्द्रवंशे राजा नाहि तार सम गुणे १५
चराचरे महावीर विष्णु अंशधर। से-अर्ज्जुन राजारे मारेन भृगुवर
अनित्य शरीर नित्य ज्ञान करा बृथा। अर्ज्जुनेर एइ दशा अन्ये किबा कथा १६
अर्ज्जुनेर कीर्ति गाने पूरित संसार। कृत्तिवास रचिल अर्ज्जुन-अवतार

बन्धन खोल दिये गये ॥ ९ ॥ पैरों की मज़बूत ज़ंजीरें खोल दीं, और रावण की छाती पर की चट्टान हटा दी। बीस हाथों को एक साथ मज़बूती से चमड़े की डोरी से बाँध रखा था। वे सभी बंधन एक-एक कर खोल दिये गये ॥ १० ॥ इसके बाद रावण को मुनि के पास ला दिया। अपमान के मारे रावण सिर उठाकर देख नहीं पाता था। उसे नहलाकर दिव्य वस्त्र पहनाया गया। मणियों की चमक वाले दिव्य गहने पहनाये ॥ ११ ॥ सुगन्धित चन्दन-पुष्पों से उसे सजा दिया और उसे पुलस्त्य मुनि के हाथ समर्पित किया। मुनि के कहने पर वहाँ धर्म-अग्नि जलाकर अर्जुन ने रावण के साथ मित्रता कर ली ॥ १२ ॥ फिर पुलस्त्य स्वर्ग को चले गये, रावण लंका चला गया। मुनि के आग्रह से उसकी शंका मिट गयी। इसके पश्चात् अगस्त्य ने कहा— रघुवर, सुनो, अर्जुन के पिता ने काफ़ी तपस्या की थी ॥ १३ ॥ तब उन्हें स्वयं नारायण ने वर दिया था, अर्जुन-सदृश रूपधारी हम तुम्हारे पुत्र बनेंगे। तुम्हारा अर्जुन तो सहस्रों हाथ वाला होगा, ऐसे अर्जुन को कोई जीत नहीं सकता ॥ १४ ॥ वहाँ उसके राज्य में कोई शक्तिमान या दुर्बल नहीं रहेगा, चोरी-डकैती नही होगी। राज्य में कोई कोलाहल, चीख़-पुकार नहीं होगी, स्वयं राजा ही प्रहरी रहेगा। खोया धन अर्जुन के स्मरण से मिल जायेगा। चंद्रवंश में गुण में उसके जैसा कोई और राजा नहीं होगा ॥ १५ ॥ चराचर विश्व में जो विष्णु का अंश था, ऐसे राजा अर्जुन को भृगुवर परशुराम ने मार डाला। इस अनित्य शरीर को नित्य समझना व्यर्थ है। जबकि अर्जुन की ऐसी अवस्था हुई तो दूसरे की बात ही क्या है ? ॥ १६ ॥ अर्जुन के कीर्ति-गान से संसार परिपूर्ण है। कृत्तिवास ने यह अर्जुन-अवतार की (कथा की) रचना की।

बालि-विजयार्थे रावणेर युद्धयात्रा

शुनिया मुनिर वाक्य रामेर उल्लास। कह कह वलि राम करेन प्रकाश १
सेथा हैते आर कोथा गेल दशानन। कह कह मुनि शुनि, अपूर्व कथन
मुनि बले, सदा दुष्ट युद्ध-चिन्ता करे। बालिर निकटे गेल किष्किन्ध्या नगरे २
भुवन जिनिया भ्रमे नाहि अवसाद। वालिर दुयारे गिया छाड़े सिंहनाद
वालिर दुयारे देखे अनेक वानर। आपनार परिचय कहे लङ्केश्वर ३
लङ्कार रावण आमि दशमुण्ड धरि। वाञ्छा करि, वालिर सहित युद्धकरि
वलिल वानरगण, ओरे दुराचार। एमन वचन मुखे ना आनिस आर ४
हइले वालिर सने तोर दरशन। दशमुण्ड खण्ड करि वधिवे जीवन
ये वीर करिया दर्प युद्ध चाहे आसि। हेथा देख से-सवार हाड़ राशि राशि ५
सन्ध्या करितेछे वालि दक्षिण-सागरे। क्षणेक थाकिस यदि यावि यमघरे
महा पराक्रम वालि ख्यात त्रिभुवने। तृण ज्ञान नाहि करे सहस्र रावणे ६
वालिर विक्रम कथा शोन् निशाचर। दुर्ज्जय शरीर बालि, बलेर सागर
प्रभाते उठिया वालि, अरुण उदय। चारि सागरेते सन्ध्या करे महाशय ७

वाली को जीतने हेतु रावण की युद्ध-यात्रा

मुनि के वचन सुनकर रामचन्द्र को बड़ा उल्लास हुआ। 'कहिये, कहिये, मुनि', कहकर अपने उल्लास को प्रकट करते हुए उन्होंने पूछा— ॥१॥ वहाँ से रावण फिर कहाँ गया ? कहिये मुनिवर, मैं वह अपूर्व कथा सुनना चाहता हूँ। मुनि बोले, दुष्टजन सदा युद्ध की चिन्ता किया करते हैं। (दुष्ट रावण भी सदा युद्ध की ही चिन्ता किया करता था।) वह किष्किन्धा नगर में बाली के पास गया ॥ २ ॥ वह संसार को जीतता हुआ चक्कर लगा रहा था, उसे कोई अवसाद या थकावट नहीं थी। बाली के पास जाकर उसने सिंहनाद किया। बाली के द्वार पर उसने अनेक बानरों को देखा। उनसे रावण ने अपना परिचय बताया ॥ ३ ॥ दस सिर धारण करनेवाला मैं लंका का रावण हूँ। बाली के साथ युद्ध करने की मेरी इच्छा है। बानरों ने कहा, अरे दुराचारी, ऐसी बात तू और मुँह में न लाना ॥ ४ ॥ यदि बाली से तेरी भेंट हो जाये तो वह तेरे दस सिरों को काटकर मार डालेगा। जो वीर अहंकार से यहाँ आकर युद्ध करना चाहता है, उन सबकी हड्डियों के ढेर उधर देख ॥ ५ ॥ बाली दक्षिणी सागर के किनारे जाकर संध्या-वन्दन कर रहा है, कुछ क्षण यदि तू यहाँ रुका रहे तो यमलोक सिधारेगा। महापराक्रमी बाली त्रिभुवन में विख्यात है। वह सहस्रों रावणों को तृण जैसा भी नहीं समझता ॥ ६ ॥ अरे निशाचर, तू बाली के विक्रम की कथा सुन ! बाली दुर्जेय शरीर बाला, बल का सागर है। महान आशय वाला बाली, प्रभात काल में उठकर अरुणोदय होते ही चार सागरों के किनारे जाकर संध्या किया करता है ॥७॥ वह पर्वत-शिखरों को उखाड़कर आकाश में फेंक देता है और फिर हाथ

आकाशे उपाड़ि फेले पर्व्वत शिखर। पुनः हस्त प्रसारिया लोके से सत्वर
सप्त द्वीप भ्रमे बालि एक निमिषेते। कि कव अन्येरे वायु ना पारे छुंइते ८
अमर भाविया हेन करिस अहङ्कार। पड़िले बालिर हाते याबि यमद्वार
कुपिल रावण राजा दुयारी उपरे। उत्तरिल गिया शीघ्र दक्षिण-सागरे ९
सुमेरु-पर्व्वत येन सागरेर कूले। सूर्य्येर किरण येन, राङ्गामुख ज्वले
सत्तर योजन येह उभेते दीघल। उच्च लेज स्पर्श करे गगन मण्डल १०
दूरे थाकि रावण नेहाले तथा बालि। शशकेर दृष्टे येन सिंह महाबली
निःशब्दे बालिर काछे चलिल रावण। सिंहेर निकटे चले शृगाल येमन ११

बालि कर्तृक रावण-बन्धन

अकस्मात् बालि राज मेलिल नयन। देखिल निकटे आसे दुष्ट दशानन
मने मने हासिल बुझिया अभिप्राय। आसितेछे आशा करि जिनिबे आमाय १
बालि बले, दशानन, मरिबि निश्चय। मरिबार आशे एलि, प्राणे नाहि भय
ब्रह्मार बरेते हइयाछे अहङ्कार। आजिरे रावण तोरे करिब संहार २

बढ़ाकर उन्हें लोक लेता है। एक ही क्षण में बाली सातों द्वीपों का चक्कर लगा लेता है। दूसरों की बात ही क्या, वायु भी उसे छू नहीं पाती ॥ ८ ॥ अपने को अमर मानकर तू ऐसा अहंकार कर रहा है, परन्तु बाली के हाथ पड़ते ही तुझे यम के द्वार जाना पड़ेगा। राजा रावण द्वारपाल पर क्रुद्ध हो उठा। वह शीघ्रता से दक्षिण-सागर के तट पर जा पहुँचा ॥ ९ ॥ सागर-तट पर सुमेरु पर्वत-जैसा (बाली बैठा था), उसका लाल मुख सूर्य-किरण-सा जल रहा था। उसकी देह दोनों ओर से लम्बाई में सत्तर योजन फैली हुई थी। उसकी ऊँचाई का तेज गगन-मडल को स्पर्श कर रहा था ॥ १० ॥ खरगोश अपनी दृष्टि से महाबली सिंह को जैसा देखता है उसी प्रकार दूर रहकर राजा रावण बाली को निहारने लगा। शृगाल सिंह के पास जैसे जाता है उसी प्रकार रावण चुपचाप बाली के पास चला ॥ ११ ॥

बाली द्वारा रावण को बाँधना

अचानक राजा बाली ने अपनी आँखें खोलीं। देखा कि दुष्ट दशानन पास आ रहा है। उसका अभिप्राय समझकर वह मन-ही-मन हँसा कि यह मुझे जीतने के लिए आशा कर आ रहा है ॥ १ ॥ बाली ने कहा, दशानन, तू अवश्य मरेगा। तू मरने के लिए आया है, तेरे प्राणों में क्या डर नहीं है ? ब्रह्मा के वर से तुझे अहंकार हुआ है, अरे रावण, मैं आज तेरा संहार करूँगा ॥ २ ॥ तू अपने घर कैसे लौट जायेगा ?

केमने फिरिया याबि घरे आपनार। पड़िलि आमार हाते रक्षा नाहि आर
मारिते आइसे येइ तारे आमि मारि। ये जन समर चाहे, सेइ जन अरि ३
आमारे जिनिते एलि मरिबार आशे। साध ना करिस बेटा पुनः याबि देशे
निर्जीव करिव आजि राजा लङ्केश्वरे। लेजे वान्धि डुवाइव चारिटा सागरे ४
लेजेते वान्धिव आजि दुष्ट दशानने। कौतुक देखुक आजि ए तिन भुवने
रावणेरे देखि वालि करिल गर्ज्जन। सर्प दरशने येन विनतानन्दन ५
पाछु गिया दशानन धरिल कांकालि। लेजे वान्धि रावणे गगने उठे वालि
दशमुण्ड कुड़ि हात करे नड़ वड़। भुजङ्ग धरिया येन गरुड़ेर रड़ ६
फाँफर राक्षसगण चाहे चारि भिते। मेघ येन धेये याय सूर्य्य आच्छादिते
अति शीघ्र धाय वालि पवनेर वेगे। राक्षस ना पाय लाग, अवसादे भागे ७
पूर्व्व दिके सागर योजन चारि शत। तथा गिया सन्ध्या करे वालि शास्त्रमत
सेइ स्थाने सन्ध्या करि उठिल आकाशे। लेजेते रावण नड़े, सर्व्वलोके हासे ८
लेजेर वन्धन हेतु रावण मूर्च्छित। झलके झलके मुखे उठिल शोणित
लेजेर सहित तारे थुये कक्ष तलि। उत्तर सागरे सन्ध्या करे राजा वालि ९
तथाय करिया सन्ध्या उठिल गगने। लेजे वद्ध रावणेरे देखे सर्व्वजने

तू मेरे हाथों में आ पड़ा है, अव तेरी रक्षा नहीं हो सकती। जो मुझे मारना चाहता है, उसे मैं मारता हूँ, जो मुझसे युद्ध चाहता है, वही मेरा शत्रु है ॥ ३ ॥ तू मुझे मारने की आशा से जीतने आया है। पर अरे दुष्ट, फिर से लौटकर अपने देश जा सकेगा इसकी साध न करना। आज मैं राजा लंकेश्वर रावण को निर्जीव कर डालूँगा। तुझे पूँछ से बाँधकर चारों सागरों में डुवो दूँगा ॥ ४ ॥ मैं दुष्ट दशानन को पूँछ से वाँध लूँगा; आज यह कौतुक तीनों लोक देखें। रावण को देखकर वाली ने गर्जना की। जैसा कि सर्प को देखकर गरुड़ (गर्ज उठता है) ॥ ५ ॥ तव दशानन ने पीछे से जाकर वाली की कमर पकड़ ली। तव रावण को पूँछ में वाँधकर वाली आकाश में उड़ गया। सर्प को पकड़कर गरुड़ जैसे वेग से उड़ते है, वैसे ही रावण अपने दसों सिरों, वीसों हाथों को इधर-उधर मारने लगा ॥ ६ ॥ राक्षसगण दंग होकर चारों ओर देखने लगे। ऐसा लगता था, मानो सूरज को ढँकने के लिए मेघ दौड़े जा रहे हैं। वाली वैसे ही पवन-वेग से शीघ्रता से भाग रहा था। राक्षस उसके पास पहुँच नहीं पाते थे, वे (भयभीत होकर) अवसाद से भाग रहे थे ॥ ७ ॥ पूरव दिशा में चार सौ योजन तक फैला हुआ सागर था, वाली वहाँ जाकर शास्त्र के अनुसार संध्या करने लगा। वहाँ संध्या करने के पश्चात् वह पुनः आकाश में उड़ गया। उसकी पूँछ में वँधा रावण तड़प रहा था, (जिसे देखकर) सव लोग हँस रहे थे ॥ ८ ॥ पूँछ में वँधने के कारण रावण मूर्च्छित हो गया। उसके मुँह मे भक्-भक् रक्त वहने लगा। पूँछ में वँधे उसे अपनी काँख के तले दावकर राजा वाली ने उत्तर सागर में जाकर संध्या की ॥ ९ ॥ वहाँ संध्या कर वाली आकाश में उड़ा,

रावणेर दुर्गतिते सबे हास्य करे। पश्चिम सागरे वालि गेल तार परे १०
डुबाय सागर-जले वालि लङ्केश्वरे। एत जल खाइल ये, पेटे नाहि धरे
आकट-बिकट करे पड़िया तरासे। रावण जलेर मध्ये वालि तो आकाशे ११
चारि सागरेते सन्ध्या करे मन्त्र पड़े। रावणे लइया वालि किष्किन्ध्याय नड़े

वालि कर्तृक रावणेर बन्धन-मोचन ओ वालिर सहित रावणेर मित्रता

देशे गिया वालिराज छाड़े रावणेरे। हासि बले, कोथा हते आइले एखाने १
रावण बलिछे, आमि वीरके परखि। तोमा-हेन वीर आमि कोथाओ ना देखि
अर्जुन बरुण वायु तुमि ये बानर। चारि जने देखिलाम एकइ सोसर २
देखाइला सप्त द्वीप पृथिवीर अन्त। तोमाय आमाय सिंह-शृगाल वृत्तान्त
आमा हेन वीर तुमि बान्धिले लाङ्गुले। चारि सागरेर सन्ध्या ध्यान नाहि टरे ३
बले टुटा पाइ यदि, आछाड़िया मारि। आमा हैते अधिक पाइले मिता करि
आजि हैते तुमि मोर भाइ सहोदर। मोर लङ्का तोमार से भागेर भितर ४
उभये मितालि करे अग्नि साक्षी करि। उभये हइल सुखी उभय-उपरि

पूँछ में बँधे रावण को सभी लोगों ने देखा। रावण की दुर्गति देख सभी हँसने लगे। इसके पश्चात् बाली पश्चिम सागर तट पर गया ॥ १० ॥ बाली ने वहाँ रावण को सागर-जल में डुबोया। रावण ने इतना पानी पी लिया जो कि उसके पेट में नहीं अँटता था। वह त्रास से तड़पने-छटपटाने लगा। रावण जल में, और बाली आकाश में था ॥ ११ ॥ इस प्रकार वाली ने चार सागरों के तटों पर संध्या की, मंत्र पढ़े और इसके पश्चात् रावण को लिये वेग से किष्किन्धा चला गया।

वाली द्वारा रावण का बन्धन खोलना और बाली के साथ रावण का मिलन

देश में पहुँचकर राजा बाली ने रावण को छोड़ दिया। हँसकर बोला— तू कहाँ से यहाँ आया है ? ॥ १ ॥ रावण बोला, मैं वीर की जाँच करता हूँ, तुम्हारे जैसा वीर मैंने कहीं नहीं देखा। मैंने पाया कि राजा अर्जुन, वरुड़, वायु और वानरों में तुम, ये चारों बराबर ही हैं ॥ २ ॥ तुमने सप्तद्वीपा पृथ्वी का अन्तिम हिस्सा भी मुझे दिखला दिया। तुममें और मुझमें कथा में वर्णित सिंह और शृगाल (जैसी स्थिति) है। मुझ जैसे वीर को तुमने पूँछ में बाँध लिया। (तिस पर भी) चार सागरों की संध्या और ध्यान करना तुमने नहीं छोड़ा ॥ ३ ॥ यदि मैं किसी को अपने से कमज़ोर पाता हूँ, तो उसे पटककर मार डालता हूँ। मुझसे जिसका बल अधिक है, मैं उससे मित्रता कर लेता हूँ। आज से तुम मेरे सहोदर भाई हो। मेरी लंका तुम्हारे (राज्य) भाग के भीतर है ॥ ४ ॥ दोनों ने अग्नि को साक्षी बनाकर मित्रता की। दोनों दोनों से सुखी हो गये। श्रीराम, वे दोनों ही तुम्हारे बाणों से मारे गये। जो

श्रीराम, से दुष्ट जन पड़े तव वाणे। ये जाने तोमार तत्त्व सेइ सब जाने ५
शुनिया मुनिर कथा श्रीरामेर हास। गाइल उत्तरकाण्ड कबि कृत्तिवास

रावणेर यम विजयार्थ युद्धयात्रा

कह कह मुनि राम करेन प्रकाश। आर किछु कहत पुराण इतिहास १
से स्थान छाड़िया कोथा गेल से रावण। कह कह मुनि, शुनि अपूर्व्व-कथन
मुनि वले, युद्ध चाहि वेड़ाय रावण। नारदेर सने पथे हैल दरशन २
नारदे प्रणाम तवे करे दशानन। आशीर्व्वाद करिया कहेन तपोधन
रावण ब्रह्मार वर पेले वहु तपे। देब दैत्य स्थिर नहे तोमार प्रतापे ३
रोगे शोके लोक सब जराय पीड़ित। केह हासे केह कान्दे केह आनन्दित
अवश्य मरण-पथ केह नाहि देखि। बन्धु-बान्धवेर दुःखे सर्व्वलोक दुःखी ४
यम मुखे पड़ियाछे सकल संसार। यमेर एड़िया अन्ये मार, कि आचार
तोमार संग्रामे यम पाबे पराजय। यमेरे मारिया लोके कराओ निर्भय ५
दैत्य मारि लोके बिष्णु करिलेन सुखी। लोक हिते सर्प खाय से गरुड़ पाखी
पाइया ब्रह्मार वर जिनिते भुवन। तोमार बाणेते स्थिर नहे देवगण ६

तुम्हारा तत्त्व जान लेता है वही (संसार में) सब कुछ जानता है ॥ ५ ॥ मुनि के वचन सुनकर श्रीराम हँसने लगे। कवि कृत्तिवास ने उत्तरकांड गाया।

यम पर विजय हेतु रावण की युद्ध-यात्रा

श्रीराम ने अपनी भावना प्रकट करते हुए कहा— कहिये, मुनिवर, (मुझे) कुछ और पुराण-इतिहास सुनाइये ॥ १ ॥ वह जगह छोड़कर रावण कहाँ गया ? कहिये मुनि, मैं वह अपूर्व कथा सुनूँ। मुनि बोले, रावण युद्ध की कामना करता हुआ घूम रहा था। उसी समय मार्ग में नारद से उसकी भेंट हो गयी ॥ २ ॥ तव रावण ने नारद को प्रणाम किया। उन तपस्वी ने उसे आशीर्वाद देकर कहा— रावण, तुमने अनेक तपस्या के बाद ब्रह्मा का वर प्राप्त किया है। तुम्हारे प्रताप से देव-दैत्य कोई स्थिर नहीं रह सका है ॥ ३ ॥ यह सारा लोक रोग, शोक और जरा से पीड़ित है। कोई हँसता है, कोई रोता है, कोई आनन्दित है। मरण का निश्चित पथ किसी को दिखाई नहीं देता। सारा लोक बन्धु-बान्धवों के दुःखों से दुःखी है ॥ ४ ॥ सारा संसार यम के मुँह में पड़ा हुआ है। फिर तुम यम को छोड़कर दूसरों को मारते हो, भला यह कैसी रीति है ? तुम्हारे साथ संग्राम करने पर यम पराजित होगा। यम को मारकर तुम सम्पूर्ण लोक को निर्भय बनाओ ॥ ५ ॥ विष्णु ने दैत्यों को मारकर लोकों को सुखी बनाया है, पक्षीराज गरुड़ लोक-हितार्थ सर्पों को खाया करता है। ब्रह्मा का वर पाकर तुमने संसार को जीत लिया है। तुम्हारे बाणों से देवगण अविचल नहीं रहे ॥ ६ ॥ तुम यम

यमेर मारिया नाश लोकेर तरास। यम-हेतु लोक मरे, लोके उपहास
यमेरे मारिया वीर, कर उपकार। रावण ताँहार कथा करिल स्वीकार ७
शुनिया मुनिर कथा बलिछे रावण। स्वर्ग मर्त्य पाताल जिनिब त्रिभुबन
प्रथमे जिनिब मर्त्य, तत्परे पाताल। तबे से जिनिब गिया अष्ट लोकपाल ८
छोट जिने बड़ जिनि एइ परिपाटी। बड़ जिने छोट जिनि पौरुषेते घाटि
मुनि बले, यदि यमे ना कर दमन। तवे त रहिबे सर्व्वलोकेर मरण ९
कुड़ि पाटी दसने से दश मुखे हाले। चतुर्द्दिशे केया येन फुटे भाद्रमासे
भुबन जिनिब आमि कौतुकेर तरे। तोमार आज्ञाय याब यम जिनिबारे १०
मुनिर वचने याय रावण दक्षिणे। से गेले नारद मुनि भावे मने मने
हेन जन नहे ये यमेर नहे बश। यमे जिनिबारे याय बड़इ साहस ११
यत प्राणी आछे यम सबार ईश्वर। भुबन-वृत्तान्त यत ताहार गोचर
पाइया ब्रह्मार बर दुर्ज्जय रावण। रामनेर सह युद्धे जिने कोन् जन १२
उभयेर के जिनिबे, जानिते ना पारि। नारद देखिते युद्ध चले यमपुरी
अबिबादे बिसंवाद घटाय नारद। नारद याहाते याय, घटाय आपद १३
हइले शनिर दृष्टि पुड़े सर्व्व लोके। रावणे ठेकाये गेल यमेर सम्मुखे

को मारकर लोकों का आतंक दूर करो। 'यम के कारण ही लोग मरते हैं, इस बात पर लोग जैसे उपहास करें। हे वीर, यम को मारकर तुम (संसार का) उपकार करो। रावण ने नारद की यह बात स्वीकार कर ली ॥ ७ ॥ मुनि की बात सुनकर रावण ने कहा, मैं स्वर्ग-मर्त्य-पाताल इन तीनों भुवनों को जीत लूंगा। पहले मैं मर्त्यलोक को जीतूँगा, उसके पश्चात् पाताल को। इसके पश्चात् आठों लोकपालों को ॥ ८ ॥ पहले छोटे को जीतने के बाद बड़े को जीतना चाहिए —यही परम्परा है। यदि बड़े को जीतकर छोटे को जीता तो पौरुष की अवनति होती है। मुनि बोले, यदि तुम यम का दमन न करोगे तो सभी लोकों की मृत्यु बनी रहेगी ॥ ९ ॥ तब दशानन अपने बीस दन्त-पंक्तियों को फैलाकर हँसने लगा। लगा, मानो भादों के महीने में चारों ओर काँस के फूल खिले हुए हैं। बोला, आपके आदेश से मैं यम पर विजय पाने के लिए जाऊँगा। इसके बाद केवल कौतुक के लिए ही संसार को जीतूँगा ॥ १० ॥ मुनि के कहने पर रावण दक्षिण दिशा को चल पड़ा। उसके जाने के बाद नारद मुनि ने मन ही मन सोचा। ऐसा तो कोई नहीं जो यम के वश में न होता हो। पर रावण यम को जीतने चला है, यह तो इसका बड़ा भारी साहस है ॥ ११ ॥ जितने भी प्राणी हैं, यम उन सबके प्रभु हैं। सारे संसार का विवरण उनके सामने रहता है। ब्रह्मा का वर पाकर रावण दुर्जेय बन गया है, (अब देखना है) यम के साथ युद्ध में कौन विजयी होता है ॥ १२ ॥ 'दोनों में कौन जीते, पता नहीं।' (यह सोचकर) नारद युद्ध देखने हेतु यमपुरी चल पड़े। जहाँ कोई विवाद नही, नारद वहाँ भी झगड़ा लगा देते हैं। नारद जहाँ पहुँचते है वही संकट उत्पन्न कर देते हैं ॥ १३ ॥ जिस शनि की दृष्टि

नायाइते रावण मुनिर आगुसार। येखाने करेन यम धर्म्मेर विचार १४
नारदे देखिया यम उठिया सम्भ्रमे। प्रणाम करिया जिज्ञासेन भक्ति भरे
त्रिदिव छाड़िया केन हैया आगमन। आमार निकटे तव कोन् प्रयोजन १५
नारद बलेन, यम, छिला निरुद्वेगे। तोमा सह युझिते रावण आसे वेगे
दण्डहस्ते समर करिओ दण्डधर। देखिवारे आसिलाम दों'हार समर १६
नारदेर वाक्ये यम चाहे बहुदूर। राक्षस-कटक-चाप देखिल प्रचुर
कृत्तिवास कवि से कवित्वे विचक्षण। यमलोके दशानन प्रवेशे तखन १७

रावणेर यमलोक-परिदर्शन

चड़िया पुष्पक रथे आइल रावण। बहु सैन्य प्रवेशिल यमेर भुवन
आगे थाना प्रवेशिल तार पूर्व्व द्वार। देखे तथा सर्व्वलोक धर्म्म-अवतार १८
सत्यवादी देवपितृ भक्त येइ जन। ताहार सम्पद देखि विस्मित रावण
गोदान करिया येइ तुषेछे ब्राह्मण। घृत दुग्धे देखे तार अपूर्व्व भोजन १९
दुःखीके देखिया येवा करे अन्नदान। सुवर्णेर पात्रे सेइ करे सुधा पान
वस्त्रहीने वस्त्र देय, पिपासाय जल। रावण ताहार देखे सम्पद सकल २०

पड़ने पर सारा संसार दग्ध हो जाता है, रावण उसे भी पारकर यम के पास पहुँचा। रावण के पहले ही नारद मुनि आगे बढ़कर वहाँ पहुँच गये, जहाँ यमराज धर्म-विचार किया करते हैं ॥ १४ ॥ नारद को आये देखकर यमराज सम्मान में उठ खड़े हुए और भक्ति-पूर्वक प्रणाम कर पूछा, स्वर्गलोक को छोड़कर यहाँ किस हेतु आपका आगमन हुआ ? मुनि, मुझसे आपकी कौन-सी आवश्यकता आ पड़ी ॥ १५ ॥ नारद बोले, यमराज, तुम अब तक निश्चिंत रह रहे थे। अब तो तुमसे युद्ध करने हेतु रावण वेग से चला आ रहा है। हे दंडधर, यम-दण्ड हाथ में लेकर तुम युद्ध करना। मैं तुम दोनों का युद्ध ही देखने हेतु आया हूँ ॥ १६ ॥ नारद के वचन सुनकर यम ने दूर दृष्टि डाली। उन्हें असंख्य राक्षसों की धनुष-धारी सेना आती दिखायी पड़ी। कृत्तिवास कवि कवित्व में विचक्षण हैं (जिन्होंने यम-रावण-युद्ध का वर्णन किया है)। दशानन ने उसी समय यमपुरी में प्रवेश किया ॥ १७ ॥

रावण का यमलोक-परिदर्शन

रावण पुष्पक-विमान पर सवार होकर आया। अनगिनत राक्षसी सेना यमपुरी में घुस गयी। पहले पूर्वद्वार की ओर से उसने प्रवेश किया। उसने देखा, वहाँ सभी साक्षात् धर्म-अवतार हैं ॥१८॥ सत्यवादी, देवता-पिता-पितरों के जो भक्त हैं वहाँ उनकी सम्पदा देखकर रावण विस्मित हो गया। जिसने गोदान कर ब्राह्मणों को तुष्ट किया था, वहाँ उन्हें घी-दूध से अपूर्व भोजन करते हुए देखा ॥१९॥ दुखियों को देखकर जो अन्नदान करते हैं वे

ब्राह्मणेरे भूमिदान करे येइ जन। यमपुरे देखे तारे राज्येर भाजन
अन्यके तुषिल येबा बलि प्रियबाणी। तार सुख देखिया रावण अभिमानी २१
ये करे अतिथि सेबा दिया बासाघर। सोनार आबास तार देखे लङ्केश्वर
स्वर्णदान करिया ये तुषेछे ब्राह्मण। स्वर्ण खाटे शुये आछे, देखिल रावण २२
ब्राह्मणेर सेबा ये करेछे एक मने। ताहार सम्पद देखि रावण बाखाने
करेछे उत्तम पात्रे येबा कन्यादान। सब हैते देखे रावण ताहार सम्मान २३
ये बिष्णु कीर्त्तन करियाछे निरन्तर। ताहार सम्पद देखि मुग्ध लङ्केश्वर
चतुर्भुज यम तारे करिया स्तबन। पाद्य-अर्घ्य दिया तारे दिलेन आसन २४
याय सेइ बैकुण्ठे, ना याय स्वर्गबास। दिब्य देह धरि ताय हलेन प्रकाश
चतुर्भुज रूपे तारे सम्भाष करिला। नानाबिध प्रकारेते ताहारे तुषिला २५
से लोक पुण्येर तेजे एत सुख करे। आपना भाबिया दशानन पुड़ि मरे
लोक-सुख देखि मुग्ध निकषा-कुमार। पूर्ब्ब द्वार एड़ि गेल पश्चिम दुयार २६
बहुतप पुण्य करियाछे येइ जन। ताहार सम्पद देखि मुग्ध दशानन
रावण उत्तर द्वारे करिल गमन। तथा पुण्यबान लोक करे दरशन २७
आगम पुराण शुनियाछे येइ राजा। पुत्र हेन पालियाछे येबा निज प्रजा

वहाँ स्वर्ण-पात्र में अमृत-पान करते हैं। जो वस्त्र-हीन को वस्त्र देता है, प्यासे को पानी देता है, रावण ने देखा, वे वहाँ सारी सम्पदाओं से पूर्ण हैं ॥ २० ॥ जो ब्राह्मणों को भूमिदान करते हैं, यमलोक में उन्हें राज्य का अधिकारी बने हुए देखा। जिन लोगों ने दूसरों को प्रिय वचन कहकर तुष्ट किया था, उसके सुख देखकर रावण ईर्ष्यालु हो गया ॥ २१ ॥ अतिथि को निवास का घर देकर जो अतिथि-सेवा करता है, लंकेश्वर ने देखा उसका निवास स्वर्ण-निर्मित है। जिसने स्वर्ण-दान कर ब्राह्मण को तुष्ट किया था, रावण ने देखा, वह सोने की खाट पर सोया हुआ है ॥ २२ ॥ जिसने एक चित्त से ब्राह्मण की सेवा की थी, उसकी सम्पदा देख रावण प्रशंसा करने लगा। जिसने उत्तम पात्र को कन्यादान किया है, रावण ने वहाँ उसका सबसे अधिक सम्मान होते देखा ॥ २३ ॥ जिसने निरन्तर विष्णु-कीर्तन किया था, उसकी सम्पदा देख लंकेश्वर मुग्ध हुआ। ऐसे व्यक्ति को चतुर्भुज यमराज स्तवन कर पाद्य-अर्घ्य दे, आसन प्रदान कर रहे थे ॥ २४ ॥ वह व्यक्ति बैकुंठ जाता है, स्वर्गवासी नहीं होता। वह वहाँ दिव्य देह धारण कर प्रकट हुआ था। यमराज ने चतुर्भुज रूप धरकर उससे वार्त्ता की और अनेक प्रकार से उसे संतुष्ट किया ॥ २५ ॥ वह व्यक्ति पुण्य-बल से इतना सुख भोग करता है। (यह सोच) अपने बारे में चिन्ता कर दशानन (अन्तर् में) जल मरा। (वहाँ पहुँचे पुण्यवान) जनों का सुख देख निकषा का पुत्र रावण मुग्ध हुआ। वह पूर्व-द्वार को पार कर पश्चिमी द्वार पर पहुँचा ॥ २६ ॥ जो जन अनेक तप का पुण्य संचय कर चुके हैं, उनकी सम्पदा देखकर दशानन मोहित हो उठा। रावण उत्तर-द्वार पर पहुँचा। और वहाँ पुण्यवान् लोगों के दर्शन किये ॥ २७ ॥

परहिंसा परदार ना करे ये जन। महा महैश्वर्य्य तार देखिल रावण २८
पूर्व्व आर पश्चिम ये दुयार उत्तर। तिन द्वारे धार्म्मिक से देखिल विस्तर
यमेर दक्षिण द्वार घोर अन्धकार। रात्रिदिन नाहि तथा, सब एकाकार २९
यत यत पापी लोक सेइ द्वारे थाके। एकत्र थाकिया केह कारे नाहि देखे
चौरासी सहस्र कुण्ड दक्षिण दुयारे। नरके डुबाये सब यमदूते मारे ३०
यमेर प्रहारे लोक ह'येछे कातर। कलरव शुनि तथा गेल लङ्केश्वर
प्रवेशिल दक्षिण द्वारेते दशानन। विषम प्रहार तथा देखिछे तखन ३१
यत यत पाप करियाछे यत जन। यमदूत प्रहारिछे, याहार येमन
येइ यत परदार करेछे कौतुके। कुम्भीपाके पड़ि सेइ डुबिछे नरके ३२
सुतप्त तैलेर कुण्ड, अग्निर उथाल। ताहाते धरिया फेले, याय गात्र छाल
अगम्यागमन करे, ये हरे ब्राह्मणी। तार प्रहारेर शुन भीषण काहिनी ३३
लोहार डाङ्गस मारे, मारे गोटा गोटा। रुषिया डाङ्गसमारे, याहे लौह काँटा
सर्व्वाङ्ग छेदने तार पचे याय मांस। अर्व्वुद अर्व्वुद पोका कुले खाय अंश ३४
हाते गले बान्धे तारे दिया चर्म्म दड़ि। माथार उपरे तुलि मारे लौह बाड़ि
मस्तक फाटिया याय, रक्त पड़े धारे। परित्राहि डाके तारा दारुण प्रहारे ३५

जिस राजा ने आगम-पुराण श्रवण किया था, जिसने प्रजा को पुत्र-जैसा पालन किया था, जो पर-हिंसा नहीं करता था, परायी पत्नी (से अवैध संबंध) नही रखता था, रावण ने उनका महा-महैश्वर्य देखा ॥ २८ ॥ पूर्व-पश्चिम और उत्तर ओर के तीनों द्वारों पर उसने अनेक धर्मात्माओं को देखा। यम का दक्षिणी द्वार घोर अंधकारमय है। वहाँ दिन-रात नहीं होते, सब कुछ एकाकार रहता है ॥ २९ ॥ जितने पापी जन उस द्वार पर रहते हैं, साथ-साथ रहने पर भी उनमें कोई किसी को देख नहीं सकता। दक्षिणी-द्वार पर चौरासी हज़ार कुंड हैं। सबको नरक में डुबोकर यम-दूत मारा करते हैं ॥ ३० ॥ यम के प्रहारों से वे जन कातर हो रहे थे। उसका कोलाहल सुनकर रावण वहाँ पहुँचा। दशानन ने दक्षिणी द्वार में प्रवेश किया। उसने वहाँ उस समय (यमदूतों का) विषम प्रहार होते देखा ॥ ३१ ॥ जिस-जिस व्यक्ति ने जितना-जितना पाप किया था, जिसकी जैसी (करतूत रही) है, यमदूत उसे वैसे ही प्रहार कर रहे थे। जिस व्यक्ति ने कौतुक से जितनी पर-नारियों से भोग किया था, उसे कुम्भी-पाक में डालकर नरक में डुबोया गया था ॥ ३२ ॥ अत्यन्त तप्त तेल के कुंड में, (जिसके चारों ओर) अग्नि की लपटें निकल रही थीं, (यमदूत) उस पापी को पकड़कर उसमें फेंक देते थे जिससे चमड़ी जल जाती थी। जिसने अगम्यागमन किया है, (या) जिसने ब्राह्मणी का हरण किया है, उसे प्रहार करने की भयंकर कथा सुनो ॥ ३३ ॥ यमदूत उसे लोहे के मुद्गरों से एक-एक कर पीटते हैं। क्रोधित होकर ऐसे मुद्गरों से पीटते हैं जिसमें लोहे के काँटे लगे हुए हैं। उसके समूचे शरीर को छेदने के कारण मांस सड़ जाता है और करोड़ों कीड़े खोद-खोदकर खाते हैं ॥३४॥ उसके हाथ और गले को चमड़ी की डोरियों से बाँध रखते हैं और लोहे का डंडा उठाकर

गदाघाते माथा फाटि रक्त पड़े स्रोते। बिषम प्रहार तारे करे यमदूते
नरके धरिया फेले पापी सकलेरे। बिष्ठा खेये पापी लोक फाँपरिया मरे ३६
गृधिनी शकुनि मांस टाने चारि भिते। उपाड़े सांड़ासि दिया चक्षु यमदूते
हस्त पद नासा कर्ण नयन जिह्वाय। लोहार मुद्गर मारे असह्य से दाय ३७
पाप-पुण्य-भागी हय ये इन्द्रियगण। बिषम प्रहारे भुञ्जे यमेर ताड़न
पर स्त्री के ये जन दियाछे आलिगन। शुनह बिषम तार यमेर ताडन ३८
लोहमयी एक नारी आने यमदूते। अग्नि मध्ये ताहारे तातायं भाल मते
सेइ लोहा अग्नि सम ज्वलन्त भीषण। पापी सब तारे धरि देय आलिगन ३९
गात्र मांस ज्वले, परित्राहि डाके पापी। ताहा देखि रावण हइल अति तापी
परित्राहि डाके पापी दारुण प्रहारे। ज्वालाय ज्वलिया पापी धड़फड़ करे ४०
परदार हरियाछे रावण बिस्तर। बिषम प्रहार देखि चिन्तित-अन्तर
परस्त्री दर्शन येइ करे एक चिते। दुइ चक्षु ताहार उपाड़े यमदूते ४१
करिछे यमेर दूत बिषम ताड़ना। हरिले परे नारी एतेक यन्त्रणा
परस्त्री हरिया येबा करेछे रमण। चिर कालावधि भोगे नरक से-जन ४२
ताहाते सन्तति हय बाड़े परिबार। कोटि कल्पे नापाय से नरके उद्धार
तथापि नरेर मने नाहि ज्ञानोदय। परधन परदारे सदा मन रय ४३
शरण लइले तार ये हरे पराण। कराते चिरिया तार करे खान खान
निदारुण पिपासाय तालु तार शोषे। पानीये चाहिले मारे यमदूत रोषे ४४

उसके सिर पर चोट मारते है। उसका सिर फट जाता है, धाराओं में रक्त बहता है। उस दारुण प्रहार से वह बचाओ, बचाओ पुकार करता है ॥ ३५ ॥ गदा की चोट से उसका सिर फट जाता है, झरने की भाँति धारा से रक्त गिरता है। यमदूत उस पर भयंकर प्रहार करते हैं। ऐसे सभी पापियों को पकड़कर नरक में डाल देते है। बिष्ठा खाते हुए वे पापी जन तड़प-तड़पकर मरते हैं ॥ ३६ ॥ गिद्ध-गिद्धनियाँ चारों ओर से उनके मांस नोचते हैं, और यमदूत चिमटों से उनकी आँखें निकाल लेते हैं। उनके हाथ, पैर, नाक, कान, आँख और जीभ पर वे यमदूत लोहे के मुद्गरों से पीटा करते हैं। उनका वह कष्ट असहनीय होता है ॥ ३७ ॥ पाप-पुण्य की भागी इन्द्रियाँ यम की भयंकर मार झेलती हैं। जो लोग परस्त्री का आलिङ्गन करते हैं, उन पर यम की विषम यातना सुनो ॥ ३८॥ यमदूत एक लोहे की नारी को लाकर उसे अग्नि में अच्छी तरह गर्म करते हैं। जब वह लोहा अग्नि की भाँति भयंकर ज्वलन्त हो उठता है, तब पापियों को उसका आलिगन करना पड़ता है ॥३९॥ उसके शरीर का मांस जलता है, पापी 'त्राहि, त्राहि' पुकारते हैं। वह (पापियों की यातना) देखकर रावण जल उठा। पापी प्रचंड प्रहार से 'बचाओ, बचाओ' पुकार रहे थे। ज्वाला में जलते हुए छटपटा रहे थे ॥ ४० ॥ रावण स्वयं अनेकों पर-नारियों का हरण किया था। वह भयंकर प्रहार देखकर उसका अन्तर् चिन्तित हो उठा। जो एकटक पर-स्त्री की ओर देखता है, यमदूत उसकी दोनों आँखें निकाल लेते हैं ॥४१॥ यमदूत प्रचंड रूप से मारते हैं; पर-नारी का हरण

ब्राह्मण देवेर वस्तु हरे येइ जन। तार प्रहारेर कथा करि निवेदन
हस्त-पद वान्धे तार दिया चर्म्म दड़ि। माथार उपरे मारे डाङ्गसेर वाड़ि ४५
बुके शूल मारे केह, चक्षुटानि धरे। परित्राहि डाके पापी दारुण प्रहारे
देवता स्थापिया येवा ना करे पूजन। शुनह विषम तार यमेर ताड़न ४६
हात-पा वान्धिया फेले दिया चर्म्म दड़ि। ताहार उपरे मारे दोहातिया वाड़ि
घाड़े-मुड़े वान्धि फेले अग्निर भितर। विषम प्रहार भुञ्जे सहस्र वत्सर ४७
पर-धन येइ जन करे डाका-चुरि। क्षुर धारे काटे तारे खण्ड खण्ड करि
पर-हिंसा पर-द्वेष करेछे ये जन। तार प्रहारेर कथा अकथ्य कथन ४८
मिथ्या शाप देय आर बले मिथ्या वाणी। तार प्रहारेर कत कहिब काहिनी
सुतप्त सांड़ासि दिया जिह्वालय काड़ि। माथार उपरे मारे डाङ्गसेर वाड़ि ४९
ये हरे गच्छित आर हरे स्थाप्य धन। नरके डुवाय तारे यमदूत गण
ब्राह्मणेरे मन्द बले, मारे ज्येष्ठ भाइ। मुषले ताहारे मारे, तार रक्षा नाइ ५०

करने पर ऐसी यंत्रणा मिलती है। जो पर-स्त्री का हरण कर रमण करता है, वह चिरकाल तक नरक-भोग करता है ॥ ४२ ॥ वहीं उसकी संतति होती है, उसका परिवार बढ़ता है। कोटि-कोटि कल्प में भी वह नरक से उद्धार नहीं पाता। तथापि मनुष्य के मन में ज्ञान नहीं होता। वह पर-धन और पर-नारी में सदा मन दिये रहता ॥ ४३ ॥ (पराजित शत्रु के) शरण लेने पर यदि कोई शरणागत के प्राण ले लेता है तो उसे यमदूत आरी से चीरकर टुकड़े-टुकड़े कर डालते हैं। भयंकर प्यास से उसकी तालू सूख जाती है; यदि वह पानी माँगता है (या पानी की ओर देखता है) तो यमदूत उसे क्रोध से पीटते हैं ॥ ४४ ॥ जो व्यक्ति ब्राह्मण और देवता की वस्तु का हरण करता है, उसे किस प्रकार प्रहार करते हैं, यह बताता हूँ। उसके हाथ-पैर चमड़े की डोरियों से बाँधते हैं और सिर पर मुद्गर की चोट करते है ॥ ४५ ॥ कोई छाती पर शूल से मारता है, कोई आँखें खींच निकालता है, पापी भयंकर प्रहार से 'बचाओ-बचाओ' पुकारते हैं। जो लोग देवता की स्थापना कर उनका पूजन नहीं करते, उसे यम की कैसी भयंकर ताड़ना मिलती है, सुनो ॥ ४६ ॥ उसके हाथ-पैर चमड़े की डोरी से बाँध डालते हैं और उस पर दुहत्थे डंडे से चोट करते हैं। उसके गले और सिर को बाँधकर आग में डाल देते हैं और वे हजारों साल तक वैसे भयंकर प्रहार भोगते रहते हैं ॥ ४७ ॥ जो पर-धन पर डाका डालता है, या चोरी करता है उसे यमदूत तीखे छूरे से काटकर टुकड़े-टुकड़े कर डालते हैं। जो जन पर-हिंसा, पर-द्वेष करते हैं, उनपर कैसा प्रहार होता है, वह अनिर्वचनीय है ॥ ४८ ॥ जो मिथ्या शाप देता है और मिथ्या वचन बोलता है, उस पर कितना प्रहार होता है, भला कैसे वर्णन करें? अत्यधिक गर्म सँड़सी से यमदूत उसकी जीभ नोच लेते हैं और सिर पर मुद्गरों से चोट करते हैं ॥ ४९ ॥ जो व्यक्ति किसी का

परहिंसा करे, बले असत्य वचन। बिषम ताहार हय यमेर ताड़न
अपात्रेते कन्या देय, आर लय कड़ि। ताहार माथाय देय मांसेर चुबड़ि ५१
मांस 'लह' 'लह' बलि सदा डाक छाड़े। मांसेर रसानि तार, बुक ब'ये पड़े
मिथ्या साक्ष्य देय येइ सभामध्ये वसि। तार जिह्वा टाने दिया ज्वलन्त सांड़ासि ५२
तार पूर्व्व पुरुषेरा भुञ्जे सेइ पाप। चिरकाल पाप भुञ्जे, पाय बड़ ताप
अतिथि पाइया येबा न करे जिज्ञासा। अपार दुर्गति तार नरकेते बासा ५३
एक जन दान करे, अन्ये हय हांता। तार बुके देय यम जगद्दल जांता
सीमा हरे येजन, पोड़ाय परघर। बिषम प्रहार करे यमेर किङ्कर ५४
उभयेर न्याये येइ करे पक्षपात। कुम्भीपाके फेले तारे करिया आघात
बिजिते जिताय येइ हइया स्वपक्ष। यमदूते मारे तारे कहिते अशक्य ५५
चुरि-डाका करे ये, ना करे लोकहित। यमदूते ताहारे प्रहारे बिपरीत
लोके पीड़ा दिया येइ तुषेछे ईश्वर। पाय से कुक्कुर जन्म सहस्र बत्सर ५६
लोक रक्षा ना करि ये राजा करे नाश। लइया शृगाल जन्म खाय मृत-मांस
ना चिन्तिया राजहित चिन्ते प्रजाहित। बिषम प्रहार तार हय समुचित ५७

गच्छित धन और थाती का धन हड़प लेता है, उसे यमदूत नरक में डुबो देते हैं। जो ब्राह्मणों की निन्दा करते हैं, बड़े भाई को मारते है, उसे यमदूत मूसलों से मारते हैं, वह बच नहीं पाता ॥ ५० ॥ जो पर-हिंसा करता है, असत्य वचन बोलता है, उसे यम की भयंकर ताड़ना मिलती है। जो अपात्र को कन्या-दान करता है और कन्या के लिए धन लेता है, उसके सिर पर मांस की टोकरी चढ़ा देते हैं ॥ ५१ ॥ 'मांस लो' कहकर सदा पुकारते हैं। मांस की रसानी उसकी छाती पर से बहती रहती है। जो सभा में बैठकर झूठी गवाही देता है, जलते हुए चिमटे से यमदूत उसकी जीभ खींच लेते हैं ॥ ५२ ॥ उसके पितर उस पाप को भोगते हैं। वह चिरकाल तक पाप भोगता रहता है और बहुत कष्ट सहता है। अतिथि के आने पर भी जो उसकी पूछताछ नहीं करता, उसकी अपार दुर्गति होती है, उसे नरकवास मिलता है ॥ ५३ ॥ कोई दान करता हो और दूसरा उसमें रुकावट डाले, तो उसकी छाती पर यमराज जगत को दलन करनेवाले (विशाल चट्टान की) चक्की चढ़ा देते हैं। जो दूसरों की भूमि-सीमा का अपहरण करता है, दूसरों का घर जलाता है, उसपर यमदूत प्रचंड प्रहार करते हैं ॥ ५४ ॥ दोनों ओर के (वादी और विवादी के) न्याय में जो पक्षपात करता है, यम-दूत उस पर चोट करते हुए कुंभीपाक नरक में डाल देते हैं। अपने पक्ष का होते हुए भी (विश्वासघात कर) जो व्यक्ति हारे को जिताता है, यमदूत उसे इतना मारते हैं कि कहा नहीं जा सकता ॥ ५५ ॥ जो चोरी-डकैती करता है, लोक-हित नहीं करता, उसे यमदूत सिर उलटा कर भयंकर प्रहार करते हैं। जनता को पीड़ा देकर जो ईश्वर की पूजा है करता है, वह सहस्र वर्ष कुत्ते का जन्म पाता है ॥ ५६ ॥ जो राजा लोक-रक्षण न

ब्रह्महत्या सुरापान करे येइ जन। विषम यातना भोग करे अनुक्षण
गुरुपत्नी हरणेते यत पाप हय। ताहार उचित दण्ड शरीरे ना सय ५८
मरणे मरण नाहि दुःख मात्र सार। कर्म्मभोग भुञ्जे लोके, ना देखे निस्तार
ब्राह्मण हइया करे शूद्राणी-गमन। पापे हय से सबार स्वधर्म्मे पतन ५९
चण्डाल-जनम हय शूद्राणी-गमने। सर्व्व कर्म्म नष्ट हय तार दरशने
देवकार्य्य पितृकार्य्य सब पण्ड हय। शूद्रगामी ब्राह्मणे ये जन नेहारय ६०
पातकी जनेर सह ये जन सम्भाषे। धार्म्मिकेर धर्म्म लोप हय सेइ दोषे
राजा ह'बे प्रजा यदि ना करे पालन। परलोके ताहार नरक अखण्डन ६१
पुत्रेर समान यदि राजा पाले प्रजा। कोटि कल्प स्वर्गसुख भुञ्जे सेइ राजा
अर्थेर लोभेते हय देवल ब्राह्मण। शुद्धमते ये जन ना करेन पूजन ६२
येबा हरे देवस्व बा करे दुराचार। देवलिया ब्राह्मणेर नाहिक निस्तार
हाते करि घृत देय नैवेद्य-उपरे। सेइ घृत ढुके तार नखेर भितरे ६३
से घृत अन्नेर तापे उनाइया पड़े। अन्न सह घृत याय शरीर भितरे
शास्त्रे आछे, सघृत नैवेद्ये करे पूजा। से पापे ब्राह्मण हय कालिञ्जरे राजा ६४

कर प्रजा का विनाश करता है, वह शृगाल का जन्म ले मृतक-मांस-भोजी होता है। जो राजहित-चितन न कर केवल प्रजा का हित-चिंतन करता है, उसे भी समुचित भयंकर प्रहार मिलता है ॥ ५७ ॥ जो व्यक्ति ब्रह्म-हत्या करता है, सुरापान करता है, वह निरन्तर भीषण यातना भोगता है। गुरुपत्नी के हरण से जितना पाप होता है, उसका उचित दंड (इतना भयंकर होता है कि) उसका शरीर सहन नहीं कर पाता ॥ ५८ ॥ केवल मरण हो जाने पर ही मरण नहीं होता, (मरण के बाद भी) केवल दुःख ही मिलता है। लोग कर्म-भोग ही भोगा करते हैं; उससे निस्तार नहीं होता। जो ब्राह्मण होकर भी शूद्राणी से संभोग करते हैं, उनके पाप तो होते ही हैं, वे स्वधर्म से भी पतित हो जाते हैं ॥ ५९ ॥ शूद्राणी से संभोग करने पर चांडाल का जन्म मिलता है। उसके दर्शन से भी सभी धर्म नष्ट हो जाते हैं। जो लोग शूद्रा से संभोग करनेवाले ब्राह्मण को देखते हैं उनके देवकार्य, पितृकार्य सब नष्ट हो जाते हैं ॥ ६० ॥ जो लोग पातकी जनों से संभाषण करते हैं, उन धार्मिक जनों का उसी दोष के कारण धर्म-लोप हो जाता है। राजा होकर यदि प्रजा का पालन नहीं करता, तो परलोक में उसे निश्चित रूप से नरक मिलता है ॥ ६१ ॥ यदि राजा प्रजा को पुत्र-जैसा पालन करता है तो वह राजा कोटि कल्प तक स्वर्ग-सुख भोगता है। जो जन शुद्ध रूप से पूजा नहीं करते, अर्थ-लोभ के कारण वे देवल (पुजारी) ब्राह्मण होते हैं ॥ ६२ ॥ जो जन देवोत्तर-सम्पदा का हरण करता है, या दुराचार करता है ऐसे देवलिया (पुजारी) ब्राह्मण (नरक से) बच नहीं पाते। (हवन-काल में) हाथ से जो नैवेद्य पर घी देता है, वह घी उनके नाखूनों में घुस जाता है ॥ ६३ ॥ वह घी अन्न के ताप पिघल जाता है और अन्न के साथ वह शरीर के अन्दर चला

ए सकल कथा शुनि लागे चमत्कार। देबल बिप्रर कभु नाहिक निस्तार
शूद्र हुये येइ जन हरेछे ब्राह्मणी। ताहार बिषम रोल, बड़ डाक शुनि ६५
लक्ष लक्ष साँड़ासिते गात्र मांस टाने। छिड़ि खाय गात्र मांस सहस्र सञ्चाने
डाङ्गसेर बाड़िमारी करे खान खान। कोटि कल्प पाप भुञ्जे, नाहिक एड़ान ६६
ये जन करिया ऋण ना करे शोधन। तार पितृलोके भुञ्जे यमेर ताड़न
बिघत प्रमाण पोका पुरीषेर कुण्डे। ताहार उपरि फेले धरि तार मुण्डे ६७
प्रतप्त तैलेर कुण्डे अग्निर ज्वाल। ताहार उपरे फेले याय गात्रछाल
अग्नि मध्ये साँड़ासि ताताय भाल मते। ताहा दिया गात्र मांस टाने यमदूते ६८
इत्यादि नरक-भोग करे बहुबार। ब्रह्मस्व हरण पापे नाहिक निस्तार
परनिन्दा करे येबा, सुजनेरे निन्दे। चर्म्म दड़ि दिया तारे यमदूते बान्धे ६९
गलाय बँड़शी दिया करे टाना टानि। खाण्डा दिया तार माथे करे हाना हानि
छोट काँटा दिया तारे बड़ काँटाय लय। गले गल गण्ड तार बड़इ संशय ७०
देखिल रावण पुरुषेर ये यन्त्रणा। ए हते बाइश गुण नारीर यातना
छोट किबा बड़ येबा यत करे पाप। पाप-अनुसारे भुञ्जे शमनेर ताप ७१

जाता है। शास्त्रों में कहा गया है, वैसे घी और नैवेद्य से जो पूजा करता है, वह ब्राह्मण उस पाप से कालिञ्जर-राजा बनता है ॥ ६४ ॥ ये बातें सुनने में अद्भुत-सी लगती हैं, देवल-विप्र की (नरक से) रक्षा नहीं हो सकती। शूद्र होकर जो ब्राह्मणी का हरण करता है, नरक में उसकी बड़ी चीख-पुकार सुनायी पड़ती है ॥ ६५ ॥ ऐसे पापियों को यमदूत लाखों सँड़सियों से शरीर का मांस नोचते हैं, उनके शरीर का मांस सहस्रों कौवे नोच खाते हैं, मुद्गरों की चोट से टुकड़े-टुकड़े कर डालते हैं। उन्हें कोटि कल्प तक पाप (का दण्ड) भोगना पड़ता है, वे (पाप के दण्ड-भोग से) किसी प्रकार भी बच नहीं पाते ॥ ६६ ॥ ऋण लेने के बाद जो उसे चुकाता नहीं, उसके पितर भी यम की यातना भोगते हैं। बित्ते भर भर के कीड़ों वाले मल के कुंडों में, उसके सिर को पकड़ कर फेंकते हैं ॥ ६७ ॥ जलती अग्नि से अत्यधिक तप्त तैल के कुंड में उसे फेंकते हैं, जिससे शरीर की चमड़ी उधड़ जाती है। अग्नि में वे सँड़सी को अच्छी तरह से लाल कर लेते हैं और उससे यमदूत शरीर का मांस खींच लेते हैं ॥ ६८ ॥ जो ब्राह्मण का धन हरण करते हैं उन्हें आदि से अन्त तक नरक-भोग अनेक बार करते रहना पड़ता है। उस पाप (के फल-भोग) से बच नहीं सकते। जो पर-निन्दा करते हैं, सज्जनों की निन्दा करते हैं, चमड़ी की डोरी से उन्हें यमदूत बाँधा करते हैं ॥ ६९ ॥ उनके गले में बंशी फँसाकर खींचते हैं, खड्ग से उनके सिर पर प्रहार करते हैं। छोटे काँटों में फँसाकर उन्हें बड़े काँटों में डाल लेते हैं, उनका गल-गंड गलने लगता है वे बड़ी यंत्रणा भोगते हैं ॥ ७० ॥ रावण ने पुरुषों की जो यंत्रणा देखी, नारियाँ उससे बाईस गुनी अधिक यंत्रणा भोग रही थीं। छोटा हो या बड़ा, जो जितना पाप करता है, पाप के अनुसार ही वह यम-यंत्रणा भोग करता है ॥ ७१ ॥

रावण कर्तृक यमेर पराजय

लोकेर यातना दशानन भावि चिते। वन्दी मुक्त करे से मारिया यमदूते
शराघाते रावण करिछे चूर मार। यमदूत मारि करे वन्दीक उद्धार १
यत पाप करे लोक भुञ्जे तार फले। पापेते वान्धिया आने दड़ि दिया गले
पापेर कारणे पापी चक्षे नाहि देखे। पाप दोषे आर वार पड़िल नरके २
दशानन बले, वन्दी करिनु उद्धार। आर वार केन तारे करिछ प्रहार
दूत बले, रावण आमारे केन गञ्जे। आपनार पाप लोक आपनि से भुञ्जे ३
इहलोके रावण यतेक कर पाप। परलोके एमनि भुञ्जिवे परिताप
परलोके सब सने हेथा हवे देखा। तखन तोमार सने हवे लेखा जोखा ४
कुपिल रावण राजा दूतेर वचने। सन्धान पूरिया वाण यमदूते हाने
यमेर किङ्कर यत नाना अस्त्र धरे। शेल जाठि मुद्गर फेलिछे तदुपरे ५
यमदूत सकल सहजे भयङ्कर। रावणेर सने युद्ध करिल बिस्तर
बड़ बड़ शाल गाछ फेलिछे पाथर। भाङ्गिल रथेर चाका, रावण फाँफर ६
ब्रह्मार बरेते रथ अक्षय अव्यय। यत भाङ्गे, तत हय, नाहि अपचय
नाना शिक्षा जाने सेइ ब्रह्मार कारण। विचक्षण शेले रावण करिछे ताड़न ७

रावण द्वारा यम की पराजय

रावण ने लोगों की नरक-यातना के बारे में अपने चित्त में सोचा और यमदूतों को मार भगा दिया उसने वन्दियों को मुक्त कर दिया। बाणों की चोटों से रावण यमदूतों को चूर-चूर करने लगा और उन्हें मारकर बंदियों का उद्धार करने लगा ॥ १ ॥ लोग जितने पाप करते हैं, (नरक में) उसी का फल-भोग करते हैं। पापों के कारण उन्हें गले में रस्सी बांधकर (यमदूत) ले आते हैं। वे पापी पाप के कारण ही आँखों से कुछ देख नहीं पाते थे और पाप-दोष के कारण (रावण के छुड़ा देने पर भी) पुनः नरक में पड़ जाते थे ॥ २ ॥ दशानन बोला, मैंने तो वन्दियों का उद्धार कर दिया, उन पर पुनः किसलिए प्रहार कर रहे हो ? यमदूत बोले— रावण, हमें क्यों गंजना देते हो ? लोग अपना पाप ही स्वयं भोगते हैं ॥ ३ ॥ इस लोक में (मर्त्यलोक में) रावण, तुम जितने पाप कर रहे हो, परलोक में उसी के अनुसार दंड भोगोगे। परलोक में तुम्हारे संग यहीं भेंट होगी, तब तुम्हारा लेखा-जोखा लिया जायेगा ॥ ४ ॥ यमदूत के वचन सुनकर राजा रावण कुपित हो उठा। धनुष पर वाण चढ़ा निशाना लगा, यमदूतों पर प्रहार करने लगा। सभी यमदूत शक्ति, शूल, मुद्गर आदि अनेक प्रकार के अस्त्र लेकर रावण पर प्रहार करने लगे ॥५॥ यमदूत तो स्वभाव से ही भयंकर होते है। उन सबने रावण के साथ भयंकर युद्ध किया। बड़े-बड़े शालवृक्ष, पत्थर उस पर फेंकने लगे जिससे रावण के रथ का पहिया टूट गया, रावण संकट में पड़ गया ॥ ६ ॥ ब्रह्मा के वर के कारण उसका रथ अक्षय, अव्यय था। वह जितना टूटता

तितिल रावण अङ्ग आपन शोणिते । रावणेर गा बहिया रक्त पड़े स्रोते
यमेर किङ्कर सब बड़इ चतुर । रावणेर सने रण करिल प्रचुर ८
नील-हरिताल-बाण यमदूते मारे । रावण मूर्च्छित हये रथ हैते पड़े
छट-पट करितेछे बाणेर ज्वालाय । कुड़ि चक्षु राङ्गा करि दूत-पाने चाय ९
थाक थाक करि सबे गर्ज्जिछे रावण । पाशुपत बाण एड़े रुषिया तखन
आलो करि आसे बाण अग्नि अवतार । यमदूत पुड़े सब हइल संहार १०
पुड़िया मरिल यमदूत अग्नि-तेजे । रावणेर रथो परे जय ढाक बाजे
रथोपरि सिंहनाद छाड़िछे रावण । बाहिर हइल रथे रविर नन्दन ११
राङ्गामुख रथ खान अष्ट घोड़ा बहे । त्वरिते आसिया रावणेर आगे रहे
ये मूर्त्तिते यमराज पृथिवी संहारे । से मूर्त्तिते धर्म्मराज आइल समरे १२
मृत्युकाल दण्ड-अस्त्र यमेर प्रधान । युझिवार बेला आसि-हैल अधिष्ठान
यमेरे कहिछे मृत्यु, कर आज्ञा दान । परशिया रावणेरे करि खान खान १३
परशने किबा काज दरशने मरे । आज्ञा कर, आमि गिया मारि लङ्केश्वरे
यम बले, मृत्यु, देख संग्राम सरस । दण्ड हस्ते मारि पाड़ि रावण राक्षस १४

था, तुरन्त ठीक हो जाता था। उसकी कोई क्षति नहीं होती थी। ब्रह्मा के वर से रावण अनेक प्रकार की शिक्षा, रणकौशल जानता था। प्रचंड शक्ति हाथ में लेकर रावण यमदूतों पर प्रहार करने लगा ॥ ७ ॥ रावण के अंग उसके अपने रक्त से भीग गया। उसके शरीर से धाराओं में रक्त बहने लगा। यमदूत बड़े चतुर होते हैं। उन सबने रावण से बड़ा संग्राम किया ॥ ८ ॥ यमदूतों ने नील-हरिताल वाणों का प्रहार किया जिससे रावण मूर्च्छित होकर रथ से गिर पड़ा। वह बाणों की ज्वाला से तड़पने लगा और बीस आँखें लाल-लाल कर दूतों की ओर देखने लगा ॥९॥ 'ठहर, ठहर', कहकर रावण सब पर गरजने लगा और कुपित होकर उसने पाशुपत बाण छोड़ा। अग्नि का अवतार वह बाण आलोकित कर तेज़ी से आया। सारा यमदूत जल गये। उनका संहार हो गया ॥१०॥ अग्नि के तेज से यमदूत जल मरे, रावण के रथ पर विजय-दुन्दुभी बजने लगी। रथ पर से रावण सिंहनाद कर रहा था, तब रविनन्दन यमराज बाहर निकले ॥ ११ ॥ उनका मुख लाल था, उनके रथ को आठ घोड़े खींच रहे थे, तेज़ी से आकर उनका रथ रावण के पास रुक गया। जैसी मूर्ति-धारण कर यमराज विश्व का संहार करते हैं, वैसी ही मूर्ति धारण कर वे संग्राम में आये ॥ १२ ॥ यमराज के मुख्य अस्त्र हैं, मृत्यु और काल-दण्ड। संग्राम के समय वे भी आकर (उनके पास) अधिष्ठित हो गये। मृत्यु ने यमराज से कहा— आप आज्ञा दें, तो रावण का स्पर्श कर मैं उसे खंड-खंड कर डालूँ ॥ १३ ॥ या मेरे स्पर्श करने की क्या आवश्यकता है, वह तो मेरे देखने मात्र से मर जाए। आज्ञा दें, मैं जाकर लंकेश्वर रावण को मार डालूँ! यम ने कहा, मृत्य, यह सरस संग्राम देखो! मैं दण्ड हाथ में लेकर राक्षस रावण को मार गिराऊँगा ॥ १४ ॥ तुम्हारा संग्राम

तोमार संग्राम अजि क्षणेक थाकुक। मारिया रावणे पाड़ि, देखह कौतुक
कालदण्ड मुखे उठे अग्नि खरशाण। यार दरशने लोक हाराय पराण १५
चारि भिते अस्त्र यार सर्पेर आकार। काल दण्ड-अस्त्रे कारो नाहिक निस्तार
हेन काल दण्ड यम तुलि निला हाते। ताहा हैते सर्प बाहिराय चारि भिते १६
अजगर काल सर्प शाङ्खिनी चित्राणी। मुखे विष अग्नि ज्वले, शिरे ज्वले मणि
सर्पेर विकट दन्त स्पर्श मात्र मरि। दण्ड देखि त्रिभुवन काँपे थरहरि १७
दण्डमुखे अग्नि ज्वले लोकेर तरास। सब्बं लोके देखे दशाननेर बिनाश
डाक दिया यमे सवे करिछे बाखान। रावण मरिले देवगण पाय त्राण १८
आज यदि यम तुमि मारह रावणे। तोमार प्रसादे एड़ाइवे देवगणे
देवता सहित ब्रह्मा आछे अन्तरीक्ष। यमहस्ते दण्ड देखि आइल समक्ष १९
शमनेरे चतुर्मुख कहेन वचन। क्षान्त हओ यमराज, ना करिह रण
रावण पाइल वर, नाहि तव मने। रावणे हठात् तुमि मारिबे केमने २०
दण्ड सृजिलाम आमि मृत्युर कारण। याहार आघाते लुप्त हय त्रिभुवन
याहार दर्शने मरे, स्पर्श किवा कथा। हेन दण्ड रावणे मारिबे केन वृथा २१
दण्ड व्यर्थ याबे, नाहि मरिबे रावण। आमार वचन शुन, ना करिह रण
दण्ड राख, दण्ड राख, शुन दण्डधर। रावणेरे जय दिया याह तुमि घर २२

आज क्षण भर रहने दो, मैं रावण को मार गिराता हूँ, तुम कौतुक देखो। काल-दण्ड के मुँह से तेज अग्नि निकल रही थी, जिसके देखने मात्र से लोगों के प्राण चले जाते हैं ॥ १५ ॥ जिसके चारों ओर सर्पाकार अस्त्र हैं, उस कालदण्ड रूपी अस्त्र से कोई बच नहीं सकता। ऐसे कालदण्ड को यम ने हाथ में उठा लिया। उससे चारों ओर सर्प निकलने लगे ॥ १६ ॥ अजगर, काल-सर्प, शखिनी, चित्रणी, जिनके मुख पर विष-अग्नि और सिरों पर मणियाँ जल रही थीं, उन सर्पों के विकट दन्तों के स्पर्श से मृत्यु हो जाती है। उस दण्ड को देखकर त्रिभुवन थर-थर काँपने लगा ॥१७॥ कालदण्ड के मुख पर अग्नि जलते देख लोग संत्रस्त हो उठे। सारे लोकों ने देखा, दशानन का विनाश होने ही वाला है। सब यम को पुकार कर बखान करने लगे, रावण के मर जाने पर देवों का उद्धार होगा ॥ १८ ॥ यमराज, आज यदि आप रावण को मार डालें तो आपके प्रसाद से देवगण की मुक्ति होगी। देवगण के साथ ब्रह्मा अन्तरिक्ष में थे, यम के हाथ में कालदण्ड को देखकर वे सामने आ गये ॥ १९ ॥ वे यमराज से कहने लगे, यमराज, रुक जाओ, संग्राम न करो। रावण को वरदान मिला है, तुम्हें क्या स्मरण नहीं है। तुम रावण को अकस्मात कैसे मारोगे? ॥२०॥ मैंने मृत्यु के लिए काल-दण्ड का सर्जन किया, जिसके आघात से त्रिभुवन लुप्त हो जाता है। जिसके दर्शन मात्र से मृत्यु होती है, स्पर्श होने पर तो बात ही क्या है। ऐसा दण्ड भला रावण पर व्यर्थ क्यों मारोगे ? ॥२१॥ (दण्ड से आघात करने पर) काल-दण्ड ही व्यर्थ हो जायेगा, रावण नहीं मरेगा। मेरे वचन सुनो, संग्राम न करो। हे दण्डधारी यमराज, दण्ड रख दो, रावण को विजय देकर तुम घर चले जाओ ॥ २२ ॥ यम ने

यम बले, तव वरे सवे ठाकुराल। ये लङ्घे तोमार वाक्य यावे से पाताल
यमराज कालदण्ड मृत्यु तिनजन। ए तिनेर मृत्यु देखि काँपे त्रिभुवन २३
यम कालदण्ड मृत्यु ए तिनेर गन्धे। पलाय राक्षस सैन्य चुल नाहि वान्धे
बड़ बड़ राक्षस ये रावण सोसर। ए तिनेर मूर्त्ति देखि हइल फाँफर २४
ए तिनेर विक्रम सहिबे कार प्राणे। पलाय राक्षस सब त्यजिया रावणे
पलाय अमात्य सब छाड़िया रावणे। एकेश्वर रावण रहिल मात्र रणे २५
बुझिवार काज थाक, देखि यमराजे। हेन वीर नाहि ये सम्मुख हुए युझे
निर्भय रावण राजा विधातार वरे। यमेर सम्मुखे युझे, शङ्का नाहि करे २६
दशदिक दशानन छाइ लेक बाणे। रावणेर वाण यम किछुइ ना गणे
जाठि शेल शूल एड़े रविर नन्दन। रावण जर्जर हय तबु करे रण २७
छाइल यमेर रथ रावणेर बाणे। दश बाणे सारथिरे विन्धे दशानने
सन्धान पूरिया से धनुके योड़े शर। सहस्रेक वाण मारे यमेर उपर २८
मृत्युर उपरे करे बाण-वरिषण। बाण व्यर्थ हय देखि चिन्तित रावण
अति मत्त रावण से विधातार वरे। मृत्युर उपरे बाण वर्षे, नाहि डरे २९
मृत्युर नाहि ये मृत्यु कि करिबे बाणे। अबोध रावण तबु युझे तार सने
बाण खेये मृत्यु तबे अति कोपे ज्वले। योड़ हात करिया यमेर आगे बले ३०

कहा— 'आपके वरदान से ही सभी प्रभावशाली बने हुए हैं। जो आपके वचनों का उल्लंघन करेगा वह रसातल को जायेगा।' यमराज, कालदण्ड और मृत्यु ये तीन (मृत्यु-हीन है)। इन तीनों की मृत्यु देख (पराभव देख) त्रिभुवन काँपने लगा ॥ २३ ॥ यमराज काल-दण्ड और मृत्यु —इन तीनों की गंध मात्र पाकर राक्षसी-सेना बाल खोले बेतहासा भागने लगी। रावण के बराबर ही पराक्रमी बड़े-बड़े राक्षस इन तीनों के रूप देख भयभीत हो गये ॥ २४ ॥ उन तीनों का विक्रम किसके प्राण सह सकते थे ? सारे राक्षस रावण को छोड़कर भागने लगे। सारे अमात्य रावण को छोड़कर भागने लगे, संग्राम में अकेला रावण रह गया ॥ २५ ॥ यमराज से लड़ना तो दूर, यमराज को युद्ध में सामना करे ऐसा कोई वीर न था। परन्तु राजा रावण विधाता के वरदान से निर्भय था, वह यम के सम्मुख निर्भय रूप से संग्राम कर रहा था ॥ २६ ॥ अपने बाणों से रावण ने दसों दिशाओं को परिव्याप्त कर दिया। पर रावण के बाणों यमराज के लिए नगण्य थे। यमराज, भाले, शेल, शूल छोड़ रहे थे, रावण जर्जर हो रहा था, फिर भी वह युद्ध करता जा रहा था ॥२७॥ रावण के बाणों ने यमराज के रथ को ढँक लिया। दशानन ने दस बाणों से यम के सारथी को भी वेध दिया, निशाना साधकर उसने धनुष पर बाण रखे (और इस प्रकार) यमराज पर सहस्रों बाण छोड़े ॥ २८ ॥ वह मृत्यु पर भी बाण-वर्षा कर रहा था। पर अपने बाणों को व्यर्थ होते देखकर रावण चिन्तित हो उठा। विधाता के वरदान से रावण बढ़ा मत्त हो उठा था। इसी कारण वह बिना डरे, मृत्यु पर बाण-वर्षा कर रहा था ॥२९॥ मृत्यु की तो मृत्यु होती नहीं, बाण भला क्या कर सकते हैं ?

निवेदन करि प्रभु, कर अवधान। तोमार अस्त्रेर मध्ये आमि से प्रधान
मधु-कैटभादि यत छिल दैत्यगण। वालि बलि मान्धाता करियाछिल रण ३१
पाइया ब्रह्मार वर रावण दुर्ज्जय। तार सह युद्ध करा उचित ना हय
तोमार वचन प्रभु, करि अमि दड़। रण छाड़ि तव वाक्ये बिनु आमि रड़ ३२
रथ सह यम-मृत्यु हैला अदर्शन। धर धर वलिया डाकि छे दशानन
मन्द मन्द हासिया रावण राजा भाषे। पलाइया याय यम आमार तरासे ३३
यम यदि पलाइल, देखिल रावण। आमि यमजयी बुलि भावे दशानन
कृत्तिवास-कवित्व शुनिते चमत्कार। सर्व्व लोके रामायण हइल प्रचार ३४

रावणेर पातालपुरी जिनिते गमन ओ वासुकिर पराजय

श्रीराम बलेन, मुनि जिज्ञासि कारण। विषम शुनिनु आमि यमेर ताड़न
पापीर प्रहार शुनि लागे चमत्कार। पातक करिले कि ना हय प्रतिकार १
मुनि बले, राम, तुमि करा अवधान। तव अवतारे पापी पाय परित्राण
येइ जन शुद्ध चित्ते शुने रामायण। यमेर सहित तार नाहि दरशन २

तथापि अबोध रावण उससे लड़ रहा था। बाणों के प्रहार से मृत्यु अत्यन्त क्रोध से जल उठा और यम के सम्मुख हाथ जोड़ कहने लगा ॥३०॥ प्रभु, मैं जो निवेदन करता हूँ, सुनें, आपके अस्त्रों में मैं ही प्रमुख हूँ ! मधु-कैटक आदि जितने भी दैत्य हैं, वालि, वलि, मान्धाता आदि ने भी संग्राम किया था ॥ ३१ ॥ पर ब्रह्मा का वरदान पाकर रावण दुर्जेय हो उठा है, उसके साथ युद्ध करना उचित नही है। प्रभु, मैं आपका वचन मानता हूँ। आपके कहने से रण करना छोड़कर वेग से यहाँ से प्रस्थान कर रहा हूँ ॥ ३२ ॥ रथ के साथ ही यम और मृत्यु अन्तर्हित हो गये। दशानन 'पकड़ो, पकड़ो' कहकर पुकार रहा था। मंद-मंद हँसकर राजा रावण कहने लगा। मुझसे संत्रस्त होकर यम भाग रहा है ॥ ३३ ॥ जब रावण ने देखा, यम भाग गया, तो वह दशानन सोचने लगा, मैं यम पर विजय हूँ। कृत्तिवास का कवित्व सुनने में अपूर्व है। उससे सारे लोक में रामायण का प्रचार हो गया है ॥ ३४ ॥

रावण का पातालपुरी विजय हेतु जाना तथा वासुकी की पराजय

श्रीराम ने कहा— मुनि, मैं कारण जानना चाहता हूँ। यमराज की ऐसी ताड़ना हुई, यह सुनकर बड़ा अचरज लगा। पापियों पर (यमलोक में हुए) प्रहार भी अद्भुत-सा लगता है, क्या पाप करने पर उसका निराकरण नहीं होता ? ॥१॥ मुनि बोले, राम, सुनो ! तुम्हारे अवतार से पापी को भी परित्राण मिल जाता है। जो जन शुद्ध चित्त से रामायण सुनते हैं, यम से उनकी भेंट नहीं होती ॥ २ ॥ पापी सावधानी से राम-नाम सुनें, इसके बिना पापी का परित्राण नहीं होता। चारों वेदों

इहा बिना पापीर नाहिक परित्राण। राम नाम शुनिबेक पापी सावधान
चारि बेद अध्ययने यत पुण्य हय। एक बार राम नामे तत फलोदय ३
शुनिया मुनिर कथा रामेर उल्लास। कह कह बलि राम करेन प्रकाश
तथा हैते कोथा गेल दुष्ट दशानन। कह कह मुनि शुनि अपूर्ब्ब कथन ४
मुनि बले, रावण जिनिल सर्ब्ब देश। पाताल जिनिते सबे करिल प्रबेश
बासुकिर विषे दग्ध हय त्रिभबन। ताहाके जिनिते याय पाताल भुबन ५
चलिल रावण राजा अद्भुत साजनि। आइल तिरासी कोटि काल-भुजङ्गिनी
एक एक भुजङ्गेर बिषे बिश्व पोड़े। नागिनी तिराशी कोटि रावणेरे बेड़े ६
चारि दिके बेड़े सर्प रावण फाँफर। रावणे एड़िया सेनापति दिल रड़
रावण मुद्गर घोर फेले चारि भिते। पलाय नागिनी-सब ना पारे सहिते ७
बासुकिरे एड़िया पलाय उभरड़े। आसिया रावण राजा बासुकिरे बेड़े
बासुकि करिल बिष-बाण-अवतार। ब्रह्मजाल बाणे करे रावण संहार ८
महाबिष बिषजाल बासुकि से एड़े। रावण से बिप जाल सहिते नापारे
मायाधारी रावण से जाने नाना सन्धि। बासुकिरे महाजाल बाणे करे बन्दी ९
बासुकिरे बन्दी करि लोटे तार पुरी। बिचित्र आबास घर पूर्ण नागपुरी
बन्दी ह'बे बासुकि मानिल पराजय। रावण ताहार प्रति दिलेन अभय १०

के अध्ययन से जितना पुण्य होता है, राम-नाम से एक ही बार उतना ही फल मिल जाता है ॥ ३ ॥ मुनि की बात सुनकर राम को प्रसन्नता हुई। उन्होंने (अपनी भावना) प्रकट करते हुए कहा— मुनि, कहिये ! दुष्ट दशानन वहाँ से कहाँ गया ? मुनि, कहिये, वह अपूर्व कथा मैं सुनना चाहता हूँ ॥ ४ ॥ मुनि बोले, रावण ने सभी देशों को जीत लिया। इसके पश्चात् पाताल को जीतने के लिए वहाँ प्रवेश किया। वासुकी के विष से त्रिभुवन दग्ध हो जाता है। रावण उसे जीतने के लिए पाताल-लोक को चला ॥ ५ ॥ अद्भुत सज-धज से राजा रावण चला। तब वहाँ तिरासी करोड़ काल-भुजंगिनियाँ निकल आयीं। उनमें एक-एक भुजंग के विष से विश्व जल जा सकता था। उन तिरासी करोड़ नागिनियों ने रावण रावण को घेर लिया ॥६॥ जब सर्पों ने चारों ओर से घेर लिया तो रावण संकट में पड़ गया। रावण को छोड़ सेनापति भाग चला। रावण चारों ओर प्रचंड मुद्गर फेंककर मारने लगा। उस मुद्गर की चोट सह न सकने के कारण नागिनियाँ भाग चलीं ॥ ७ ॥ वासुकी को छोड़कर वे बड़ी तेजी से भाग गयी। तब राजा रावण ने आकर वासुकी को घेर लिया। वासुकी ने विष-बाण का संधान किया; रावण ने ब्रह्मजाल बाणों से उसको नष्ट कर दिया ॥ ८ ॥ बासुकी ने महाविष का विषजाल छोड़ा। वह विष-जाल रावण सह न सका। मायाधारी रावण अनेक तरह की युक्तियाँ जानता था। उसने महा-जाल बाण से वासुकी को बंदी कर लिया ॥ ९ ॥ वासुकी को बंदी बनाकर वह अपनी नगरी में लौट आया। बंदी होकर वासुकी ने हार मान ली। रावण ने तब उसे अभय दिया ॥१०॥ जो सैकड़ों सिर, हजारों फन धारण करते हैं, जिनकी विष-अग्नि से सारा

शत मुण्ड, सहस्रेक फणा येइ धरे। यार विषाग्निते सर्व्व चराचर पुड़े
मुखे यार ज्वले अग्नि शिरे मणि ज्वले। हेन सव सर्पे जिने गिया से पाताले ११

रावणेर निपातकेर सहित युद्ध

जिनिया सर्पेर देश नामे भोगवती। निपातक राज्येते चलिल शीघ्रगति
निपातक् राज्ये तार नाहि कोनो डर। पाइया ब्रह्मार वर रावण दुर्धर १२
रावण डाकिया वले निपातक-ठाँइ। लङ्कार रावण आमि, आजि युद्ध चाइ
निपातक राजा सेइ यम-दरशन। धाइया आइल शीघ्रे करिवारे रण १३
शेल जाठि झकड़ा से अस्त्र खरशाण। खाँड़ा आर डाङ्गसविचित्र धनुर्व्वाण
नाना अस्त्र लइया उभये करे रण। उभयेर अस्त्र गिया छाइल गगन १४
दुइ हस्ती रणे येन दन्ते हाना हानि। दुइ सूर्य्य तेज येन छाइल मेदिनी
दुइ सिंह रणे येन छाड़े सिंहनाद। दुइ जने युद्ध करे नाहि अवसाद १५
उभयेर युद्धेते हइल महामार। सकल पातालपुरी हैल अन्धकार
केह कारे नाहि पारे, दु'जने सोसर। दु'जने मासेक युद्ध करे निरन्तर १६
एक मास युद्ध करे केह कारे नारे। देवगणे लने ब्रह्मा आइल सत्वरे
ब्रह्मा वले, निपातक, शुनह वचन। तोमारे जिनिते नाहि पारिवे रावण १७

चराचर जगत जल सकता है, जिनके मुँह में अग्नि और सिर पर मणि जलती है, पाताल में जाकर ऐसे सर्पों को भी उसने जीत लिया ॥ ११ ॥

निपातक के साथ रावण का युद्ध

भोगवती नामक सर्पों के देश पर विजय प्राप्त कर, रावण शीघ्रता से निपातक राज्य में चला। निपातक राज्य से उसे कोई डर न था क्योंकि ब्रह्मा का वरदान पाकर रावण दुर्धर्ष हो उठा था ॥१२॥ निपातक के स्थान पर पहुँचकर रावण ने पुकारकर कहा— मैं लंका का रावण हूँ, मैं आज युद्ध चाहता हूँ। निपातक राजा देखने में यमराज-जैसा था। वह युद्ध करने हेतु वेग से धावित हुआ ॥ १३ ॥ शेल, भाले, बरछे आदि पैने अस्त्र, खड्ग, काँटेदार मुद्गर तथा विचित्र धनुष-बाण आदि ले दोनों युद्ध करने लगे। दोनों के अस्त्र आकाश में जाकर व्याप्त हो गये ॥ १४ ॥ मानो युद्ध में दो हाथी एक-दूसरे को दाँतों से चोटें कर रहे थे। मानो दो सूर्यों के तेज से धरती छा गयी थी। मानो युद्ध में दो सिंह सिंहनाद कर रहे थे। दोनों को युद्ध में कोई थकावट न थी ॥ १५ ॥ दोनों के संग्राम में प्रचंड मार-काट हुई। सारी पातालपुरी अंधकार हो गयी। कोई किसी को हरा नहीं पाता था, दोनों ही बराबर बली थे। दोनों निरन्तर महीने भर युद्ध करते रहे ॥ १६ ॥ महीने भर दोनों युद्ध करते रहे, कोई किसी को हरा नहीं पाता था। तब देवगण को साथ ले ब्रह्मा वहाँ शीघ्रता से आये। ब्रह्मा ने कहा— निपातक सुनो, रावण तुम्हें जीत नहीं सकता ॥ १७ ॥ इस प्रकार निपातक को कुछ सांत्वना देकर, ब्रह्मा

निपातके प्रबोधिया बिरिञ्चि तखन। रावणेरे प्रति किछु कहेन बचन
रावण, तोमारे बलि, शुनह बचन। निपातके जिनिते ना पारिबे कखन १८
मम बरे दुइ जन ह'येछ दुर्ज्जय। दुइ जने प्रीति करि थाकह निर्भय
लङ्घिबारे पारे केबा ब्रह्मार बचन। अस्त्र-शस्त्र छाड़ि प्रीति करे दुइजन १९
नाना भोगे रावणेरे राखिल सम्माने। एक वर्ष रावण रहिल सेइ स्थाने

रावण कर्तृक बरुण पुरी बिजय

लङ्कार अधिक भोग भुञ्जि तार घर। बरुणेरे जिनिते चलिल लङ्केश्वर २०
रत्नेते निर्म्मित पुरी दिक आलो करे। सुरभि आछेन सेइ बरुण-नगरे
रावण करिल सुरभिरे दरशन। क्षीर धारा झरे ताँर स्तने अनुक्षण २१
यार क्षीरे भरियाछे क्षीरोद-सागर। हेन धेनु प्रदक्षिण करे लङ्केश्वर
सुरभिके देखिया रावण मने भावे। ये या चाय, ताइ पाय, आमि चाहि तबे २२
बरुण जिनिया येन आसि शीघ्र गति। गमन-समये तोमा लइब संहति
बरुणे जिनिते करे रावण पयान। हेन काले सुरभि हइल अन्तर्द्धान २३
बरुणेर द्वारे गिया डाकिल रावण। कोथा गेले बरुण, आसिया देह रण
बरुणेर पात्र बले, तिनि नाहि घरे। कार ठाँइ युद्ध चाह ए शून्य नगरे २४

ने रावण से कुछ बातें कही। रावण, तुमसे मैं कहता हूँ, सुनो। तुम कभी निपातक को जीत नहीं सकते ॥ १८ ॥ मेरे वरदान से तुम दोनों ही दुर्जेय हो। अतः दोनों परस्पर प्रीति रखकर निर्भय बने रहो। ब्रह्मा के वचनों का उल्लंघन कौन कर सकता है ? दोनों ने अस्त्र-शस्त्र छोड़कर आपस में मैत्री कर ली ॥ १९ निपातक ने (रावण को) अनेक प्रकार की भोग्य वस्तुएँ दे सम्मानित कर (अपने यहाँ) रखा। रावण वहाँ एक वर्ष रहा।

रावण द्वारा वरुणपुरी-विजय

निपातक के यहाँ लंका से अधिक भोग भोगने के बाद रावण वरुण को जीतने चला ॥ २० ॥ वरुण की रत्न-निर्मित पुरी चारों दिशाओं को आलोकित किये हुए थी। सुरभि उसी वरुण नगरी में रहती हैं। रावण ने सुरभि के दर्शन किये। उसके थनों से लगातार दूध की धारा क्षरती रहती है ॥ २१ ॥ जिसके दूध से क्षीर-सागर भरा हुआ है, रावण ने उस सुरभि गौ की प्रदक्षिणा की। सुरभि को देखकर रावण ने मन-ही-मन सोचा, (सुरभि से) कोई जो कुछ चाहता है, पाता है। तब मुझे भी कामना करनी चाहिए ॥ २२ ॥ मैं जैसे शीघ्रता से वरुण को जीतकर लौटूं, लौटते समय तुम्हें अपने साथ लेता जाऊँगा। (यह कामना कर) रावण ने वरुण को जीतने के लिए (जैसे ही) प्रस्थान किया, तभी सुरभि वहाँ से अन्तर्हित हो गयी ॥ २३ ॥ तब रावण ने वरुण के द्वार पर जाकर

वरुण गियाछे कोथा, जिज्ञासे रावण। तथा गिया आजि आमि करि महारण
वरुणेर पुत्रगण सबे महावीर। लइया सामन्त सैन्य हइल बाहिर २५
से सबारे रावण ये आकाशे निरखे। रावण चड़िया रथे याय अन्तरीक्षे
वरुणेर पुत्र करे बाण वरिषण। बाणे विद्ध रावण हइल अचेतन २६
सर्व्वाङ्गे फुटिया बाण हइल कातर। ताहा देखि रुषिल राक्षस महोदर
महोदर वीर येन मदमत्त हाती। बाणेते विन्धिया पाड़े रथेर सारथि २७
पड़िल सारथि तार बाण बिन्धि बुके। तिन भाइ पलाइया याय अन्तरीक्षे
अन्तरीक्षे थाकि करे बाण वरिषण। बाणे विद्ध महोदर हैल अचेतन २८
महोदरे अचेतन देखि लङ्केश्वर। सन्धान पूरिया बाण एड़िछे विस्तर
आकाशे रहिते नारे तिन सहोदर। भूमिते पड़िया हय धूलाय धूसर २९
तिन भाये धरिल अनेक अनुचर। ता'देरे आनिल धरि पुरीर भितर
रण जिनि रावणेर हरिष अन्तर। वरुणेर अन्वेषण करे लङ्केश्वर ३०
वरुणेर पुत्रे जिनि वरुणेरे चाहे। प्रभास नामेहे पात्र रावणेरे कहे
ब्रह्मलोके गीत गाय शुनिते सुन्दर। गियाछेन सेखाने वरुण जलेश्वर ३१

पुकारा— वरुण, कहाँ गये ? आकर मुझसे संग्राम करो। वरुण के मंत्री ने कहा— वे घर में नहीं है। तुम इस सूने नगर में भला किससे युद्ध करना चाहते हो ? ॥ २४ ॥ रावण ने पूछा, वरुण, कहाँ गये ? वहीं जाकर मैं आज महा संग्राम करूँगा। वरुण के सभी बेटे महावीर थे। वे सेना-सामन्त लेकर बाहर निकले ॥ २५ ॥ रावण ने देखा, वे सब आकाश में है। रावण रथ पर सवार हो अन्तरिक्ष में जा पहुँचा। वरुण के पुत्रों ने बाण-वर्षा करना शुरू किया। बाणों से विंधकर रावण अचेत हो गया ॥ २६ ॥ सारे अंगों में बाणों से छिदकर वह कातर हो उठा। यह देख राक्षस महोदर कुपित हो उठा। महोदर मदमत्त हाथी जैसा वीर था, उसने बाण से वेधकर वरुण के पुत्रों के रथ के सारथी को गिरा दिया ॥ २७ ॥ उसके बाण छाती में बिंध जाने के कारण सारथी गिर पड़ा और तीनों भाई भागकर अन्तरिक्ष में जा पहुँचे। वे अन्तरिक्ष में रहकर बाण-वर्षा करने लगे। उनके बाणों से विंधकर महोदर अचेत हो गया ॥ २८ ॥ महोदर को अचेत देख लंकेश्वर निशाना साधकर अनेक बाण छोड़े। इससे तीनों भाइयों के लिए आकाश में रहना कठिन हो गया, वे धरती पर गिरकर धूलि-धूसरित हो गये ॥ २९ ॥ तीनों भाइयों को अनेक अनुचरों ने पकड़ लिया और (उन्हें पकड़कर) पुरी के भीतर ले आये। रण में जीतकर रावण का अन्तर् हर्षित हो उठा और वह वरुण की खोज करने लगा ॥ ३० ॥ वरुण के पुत्रों को पराजित कर वह वरुण को पाना चाहता था। तब प्रभास नाम के मंत्री ने रावण को बताया— ब्रह्मलोक में श्रुतिमधुर संगीत (का आयोजन) हो रहा है। जलेश्वर वरुण वहीं गये हुए हैं ॥३१॥ यह सुनकर रावण वरुण के अन्तः-पुर में चला गया। उसने पलंग पर वरुण का नागपाश पा लिया।

एत शुनि गेल रावण भितर आवास। पालङ्के पाइल बरुणेर नागपाश
नागपाश पाइया से सिंहनाद छाड़े। बिदाय हैया रावण तथा हैते नड़े ३२

बलि कर्त्तृक रावणेर बन्धन ओ लाञ्छना

अगस्त्येर कथा शुनि श्रीरामेर हास। कह कह बलि राम करेन प्रकाश
सेथा हैते आर कोथा गेल से रावण। कह देखि मुनि शुनि पुराण-कथन १
मुनि बले बलिराज पातालेते बसे। दशानन गेल तथा जिनि बार आशे
पाताले आवास घर अति सुनिर्म्मित। देखिया रावण राजा हैल चमकित २
सोनार प्राचीर घर पर्ब्बत-प्रमाण। विष्णुर आज्ञाय बिश्वकर्म्मार निर्म्माण
प्रहस्तके रावण पाठाय जिनिबारे। राज-आज्ञा पाइया प्रहस्त गेल द्वारे ३
बलिर दुयारे द्वारी स्वयं नारायण। शरीरेर ज्योति कोटि सूर्य्येर किरण
बसिया आछेन द्वारे रत्न सिंहासने। श्वेत चामरेर बायु पड़े घने घने ४
प्रहस्त बिस्मित हु'ये आसिया सत्वर। निबेदन करिछे शुनहे लङ्केश्वर
देखिलाम महाराज दुयारे बलिर। परम पुरुष एक सुन्दर शरीर ५
आजानुलम्बित तार भुज चतुष्टय। शङ्ख चक्र गदा शार्ङ्ग ताहे शोभा पाय
श्यामल कोमल तनु सुपीत वसन। तड़ित जड़ित येन देखि नब घन ६

नागपाश को पाकर रावण ने सिंहनाद किया। वहाँ से विदा होकर रावण चल पड़ा ॥ ३२ ॥

बलि द्वारा रावण को बाँधा जाना और लांछना

अगस्त्य मुनि की बात सुनकर श्रीराम हँसने लगे। (मन का आनन्द) श्रीराम ने प्रकट करते हुए कहा— मुनि, कहिये; वहाँ से रावण फिर कहाँ गया ? मुनि, कहिये, मैं पुराण-कथन सुनना चाहता हूँ ॥ १ ॥ मुनि बोले— राजा बलि पाताल में निवास करते हैं। उन्हें जीतने के लिए दशानन वहाँ पहुँचा। पाताल में उनका आवास-गृह बहुत ही सुंदर ढंग से बना हुआ था। देखकर राजा रावण चकित हो उठा ॥ २ ॥ सोने की दीवारों वाला वह घर पर्वत-जैसा ऊँचा था जिसे विष्णु के आदेश से विश्वकर्मा ने निर्माण किया था। रावण ने बलि को जीतने के लिए प्रहस्त को भेजा। राजा का आदेश पाकर प्रहस्त द्वार पर पहुँचा ॥ ३ ॥ बलि के द्वार पर स्वयं नारायण द्वारपाल थे। उनके शरीर की ज्योति कोटि सूर्य की किरणों जैसी थी। वे द्वार पर रत्न-सिंहासन पर विराजमान थे। उन पर श्वेत चँवर से बार-बार हवा की जा रही थी ॥ ४ ॥ प्रहस्त विस्मित हो वहाँ से तुरन्त आकर रावण से कहने लगा— लंकेश्वर, सुनिये ! महाराज, मैंने बलि के द्वार पर एक सुन्दर शरीर वाले परमपुरुष को देखा है ॥ ५ ॥ उनकी आजानुलम्बित चार भुजाओं में शंख-चक्र-गदा और शार्ङ्ग धनुष सुशोभित हैं ! उनका शरीर कोमल श्यामल है तथा वे सुन्दर पीताम्बर पहने हुए हैं। मानो विद्युत्-जटित बादल हों ॥ ६ ॥ उनका वक्षःस्थल

वक्षःस्थल कौस्तुभे शोभित अतिशय। वनमाला तदुपरि करेछे आश्रय
शुनिया रावण याय पुरुषेर पाशे। पुरुष रावणे देखि मृदु मृदु हासे ७
रूपे आलो करियाछे वलिर दुयार। निरखिया रावणेर लागे चमत्कार
रावण वलिछे, द्वारी, पलावि कोथाय। लङ्कार रावण आमि युद्ध दे आमाय ८
शुनिया पुरुष मृदु हासिया सम्भाषे। वलि सने युज गिया भितर आवासे
वीरमध्ये वीर आमि, मुनिमध्ये मुनि। त्रिभुवन सव आमि, दिवस रजनी ९
आमासह युझिवे शुनिते उपहास। कारो सने युझिते ना करि अभिलाष
समाने समाने युद्ध हयत उचित। तोमार आमार सने युद्ध अनुचित १०
आमि वलि तोमारे, शुनह दशानन। वलिके जिज्ञासा कर आमि कोन् जन
एतेक शुनिया राजा दशानन हासे। वलिर निकटे गेल भितर आवासे ११
पाद्य अर्घ्य दिल वलि वसिते आसन। जिज्ञासिल पातालेते एले कि कारण
से वले, पाताले विष्णु राखिल तोमारे। साजिया आइनु आमि विष्णु जिनिवारे १२
वलि वले, हेन वाक्य नाहि वल तुण्डे। त्रिभुवन आइले वन्धन नाहि खण्डे
दुयारे याहार सने हैल दरशन। से पुरुष सृजिलेन एइ त्रिभुवन १३
याहार उपरे कारो नाहि अधिकार। सकलि सृजिया तिनि करेन संहार
रावण वलिछे, यम मृत्यु कालदण्ड। इहादेर संते केवा आछे हे प्रचण्ड १४

कौस्तुभ-मणि से अत्यन्त सुशोभित है। उसके ऊपर वनमाला भी पड़ी हुई है। यह सुनकर रावण उस पुरुष के पास पहुँचा। वह पुरुष रावण को देख मंद-मंद हँस पड़ा ॥ ७ ॥ अपने रूप से वलि के द्वार को आलोकित किये हुए, उसे देखकर रावण को बड़ा विस्मय हुआ। रावण वोला, ओ द्वारपाल, तू कहाँ भागेगा ? मैं लंका का राजा रावण हूँ। मुझसे युद्ध कर ॥ ८ ॥ यह सुनकर उस पुरुष ने मंद हँसकर कहा— तुम अन्तःपुर में जाकर वलि से लड़ो। मैं वीरों में वीर हूँ, मुनियों में मुनि हूँ, त्रिभुवन में मैं ही सब कुछ हूँ, दिन-रात मैं ही हूँ ॥ ९ ॥ तुम हमारे संग लड़ोगे यह तो सुनने में भी उपहास-सा है। मैं किसी से लड़ने की अभिलाषा नहीं रखता। युद्ध तो बराबरी वालों में ही उचित होता है। तुममें-मुझमें युद्ध अनुचित है ॥ १० ॥ रावण, मैं तुमसे बता रहा हूँ, मैं कौन हूँ, यह जाकर वलि से पूछो। यह सुनकर राजा दशानन हँस पड़ा और अन्तःपुर में वलि के पास चला गया ॥ ११ ॥ वलि ने रावण को पाद्य-अर्घ्य दिया, बैठने को आसन दिया और पूछा, तुम पाताल में किसलिए आये ? रावण ने कहा, विष्णु ने तुम्हें पाताल में ला रखा है, मैं उसी विष्णु को पराजित करने हेतु सजकर आया हूँ ॥ १२ ॥ वलि ने कहा, तुम घमंड से ऐसी वात न कहो। त्रिभुवन भी आ जाये तो भी मेरा यह वन्धन नहीं कटेगा। द्वार पर तुम्हें जिसका दर्शन मिला, उन्हीं पुरुष ने इस त्रिभुवन को सरजा है ॥ १३ ॥ उन पर किसी का अधिकार नहीं है। वे ही सव कुछ सर्जन कर संहार भी किया करते हैं। रावण वोला— यम, मृत्यु, कालदण्ड, भला इनसे और अधिक प्रचंड कौन है ? ॥१४॥ वलि ने कहा— भाई, यमराज उनका क्या कर सकते हैं ? उस

बलि बले, भाइ कि करिबे यमराज। त्रिभुवने नाहि केह पुरुष-समाज
यम इन्द्र वरुण यतेक लोकपाल। पुरुषेर प्रसादेते सकले विशाल १५
इँहार प्रसादे देव हयेछे अमर। एँर बड़ बीर नाइ त्रैलोक्य-भितर
दानब-राक्षस आदि बड़ बड़ बीर। पुरुष दर्शने भाइ केह नहे स्थिर १६
सेइ से पुरुष वर स्वयं नारायण। किञ्चित तोमारे कहि, शुन हे रावण
सेइ देव नारायण मधु कैटभारि। चतुर्भुज शङ्ख-चक्र-गदा-पद्मधारी १७
रावण शुनिया इहा हइल बाहिर। पुरुषेर देखा नाहि अदृश्य शरीर
रावण बलिछे, त्रासे हैल अदर्शन। पेले चड़े बधिताम ताहार जीवन १८
रावण आबार गेल पुरुष-उद्देशे। उपस्थित हइल से भितर-आबासे
बलि बले, रावणेर नाहि पाइ मन। पुनः पुनः आबासे आइसे कि कारण १९
पात्र ल'ये बसि तबे करे अनुमान। बिना युद्धे रावणे करिब अपमान
बलिरे धरिते याय रावण सेखाने। आपन बन्धन बलि दिल ततक्षणे २०
बन्धने पड़िल दुष्ट आपनार दोषे। रावण हइल बन्दी बलिराज हासे
रावणेरे बन्दी देखि तुष्ट देबगण। स्वर्गेते दुन्दुभि बाजे, पुष्प-बरिषण २१
यत देबकन्या तारा करे हुलाहुलि। बलिर उपरे फेले पुष्पेर अञ्जलि
इंद्र आदि देबगण आर देव-ऋषि। स्वर्गेते बेड़ाय नाचि यत स्वर्गबासी २२

पुरुष के समकक्ष त्रिभुवन में कोई पुरुष-समाज नहीं है। यम, इन्द्र, वरुण आदि जितने भी लोकपाल हैं, उस पुरुष के प्रसाद से ही वे सभी विशाल बने हैं ॥ १५ ॥ इन्हीं के प्रसाद से देव भी अमर बने हैं। त्रैलोक्य में इनसे वड़ा वीर और कोई नहीं है। दानव-राक्षस आदि बड़े-बड़े बीरों में, भाई, इन पुरुष के देखने मात्र से कोई अविचल नहीं रह सकता ॥ १६ ॥ वे वही पुरुषश्रेष्ठ स्वयं नारायण हैं। तुमसे थोड़ा कुछ कहता हूँ, रावण सुनो। वे ही मधु-कैटभ को मारनेवाले, शंख-चक्र-गदा-पद्मधारी चतुर्भुज देव-नारायण हैं ॥ १७ ॥ यह सुनकर रावण बाहर निकल आया। पर उसने पुरुष को वहाँ नहीं देखा। वे अपनी शरीर से अदृश्य हो गये थे। रावण कहने लगा। वह डर के मारे ओझल हो गया। अगर उसे पा जाता तो थप्पड़ मारकर उसका जीवन वध कर डालता ॥ १८ ॥ उस पुरुष की खोज में रावण पुनः अन्तःपुर में जाकर उपस्थित हुआ। बलि बोले, रावण के भाव समझ में नहीं आता। यह पुनःपुनः मेरे अन्तःपुर में क्यों आता है ? ॥ १९ ॥ मंत्रियों के साथ बैठकर उन्होंने विचार किया कि युद्ध किये बिना ही रावण का अपमान करेंगे। रावण वहाँ बलि को पकड़ने गया। तुरन्त बलि ने अपना बंधन उस पर डाल दिया ॥ २० ॥ वह दुष्ट अपने ही दोष से वन्धन में पड़ गया। रावण को बन्दी बना देख राजा वलि हँसने लगे। रावण को बंदी बने देख देवगण भी संतुष्ट हुए। स्वर्ग में दुन्दुभी वजने लगी, पुष्प-वर्षा होने लगी ॥ २१ ॥ सारी देवकन्याएँ मुँह से उलुध्वनि करने लगीं और वलि पर फूलों की अंजलि डालने लगीं। इन्द्र आदि देवगण और देव-ऋषिगण आदि सभी स्वर्ग-वासी स्वर्ग में नाच-नाचकर घूमने

आजि हैते देवगण पाइन निस्तार। देखिया राक्षसगण करे हाहाकार
एइ मत बन्दीशाले रहिल रावण। कौतुके वेड़ाय नाचि यत देवगण २३
वलि भूपतिर आछे सात शत दासी। देखिले मोहित सवे परम रूपसी
उच्छिष्ट-व्यञ्जन-अन्न-पूर्ण-स्वर्ण थाले। पाखालिते याय तारा सागरेर जले २४
रावण वले, कन्यागण, शुनह वचन। एक मुष्टि अन्न दिया राखह जीवन
चेड़ी सव वले, शुन राजा लङ्केश्वर। दितेछि तुलिया अन्न मेलह अधर २५
दया करि चेड़ी अन्न दिल ततक्षण। मुख प्रसारिया अन्न खाइल रावण
रावण वलिल, चेड़ी, शुनह वचन। वारेक चुम्बन दिया राखह जीवन २६
एतेक वलिल यदि राजा दशानन। त्रासे पलाइया याय यत चेड़ीगण
कुंजी वले, रावण हे तुमि महाराज। उच्छिष्ट खाइते तुमि नाहि वास लाज २७
बन्धन लइते वलि चिन्ते मने-मने। आपनार बन्धन लइल ततक्षणे
लज्जा पेये रावण करिल हेँट माथा। रावण बन्धन छाड़ि पलाइल कोथा २८
यथाय यथाय रहे विष्णु-अधिष्ठान। तथा तथा रावण पाइल अपमान
अगस्त्येर कथा शुनि श्रीराम कौतुकी। पुनर्व्वार जिज्ञासा करेन ह'ये सुखी २९
सेथा हैते आर कोथा गेल से रावण। कह देखि मुनि, शुनि अपूर्व्व कथन

लगे ॥ २२ ॥ आज से देवों को मुक्ति मिली। यह देखकर राक्षस हाहाकार करने लगे। इसी तरह रावण कारागार में रहा। सारे देवगण कौतुक से नाचते हुए घूमने लगे ॥ २३ ॥ राजा वलि की सात सौ ऐसी दासियाँ थीं जो देखने पर सबको मुग्ध करनेवाली, परम रूपवती थीं। जूठे अन्न-व्यंजन से पूर्ण स्वर्ण-थालियों को वे सागर-जल में धोने ले जा रही थीं ॥ २४ ॥ रावण बोला, हे कन्यागण, मेरे वचन सुनो! मुट्ठी भर अन्न देकर मेरे जीवन की रक्षा करो। दासियाँ बोलीं, राजा लंकेश्वर, सुनो। हम अन्न उठाकर दे रही है, तुम अपना मुँह खोलो ॥ २५ ॥ तब दासियों ने उस पर दया कर अन्न दिये। रावण ने मुँह फैलाकर अन्न खाया। रावण बोला, दासियो, सुनो। केवल एक वार अपना चुम्बन देकर मेरे जीवन की रक्षा करो ॥ २६ ॥ राजा रावण ने जब ऐसा कहा, तो सारी दासियाँ संत्रस्त होकर भागने लगीं। कुंजी (कुबड़ी) ने कहा—रावण, तुम तो महाराज हो। जूठा खाने में तुम्हें शर्म नहीं आयी ॥२७॥ (इसके पश्चात्) वलि ने अपना वह बन्धन पुनः अपना लेने हेतु मन ही मन चिन्तन किया और तत्क्षण अपना बन्धन स्वयं ले लिया। लज्जित होकर रावण ने शिर झुका लिया। रावण बन्धन से निकलकर कहीं भाग गया ॥ २८ ॥ (संसार में) जहाँ-जहाँ विष्णु के अधिष्ठान रहे, वहाँ-वहाँ रावण को अपमानित होना पड़ा। अगस्त्य मुनि के वचन सुनकर रामचंद्र को परम आनन्द हुआ। उन्होंने सुखी होकर पुनः प्रश्न किया ॥ २९ ॥ मुनि, वहाँ से रावण फिर कहाँ गया, कहिये। मैं वह अपूर्व कथन सुनना चाहता हूँ।

मान्धातार सहित रावणेर युद्ध ओ सख्य स्थापन

मुनि बले, रावण आछये रथोपर। दिव्य रथे चड़ियाय एक नरवर १
स्वर्ण रथ खान तार बहे राज हंसे। सात शत देवकन्या पुरुषेर पाशे
केह हासे, केह नाचे, कारो मुखे बाँशी। स्त्री-गण वेष्टित से पुरुष स्वर्गवासी २
रथेर उपरे याय शृंगार-कौतुके। आपनार रथे थाकि रावण ता देखे
रावण बलिछे, कोथा पुरुष, पालाओ। लङ्कार रावण आमि युद्ध मोरे दाओ ३
देखिया तोमार नारी व्याकुलित प्राण। कतगुलि नारी मोरे दिया याह दान
पुरुष डाकिया बले, शुन लङ्केश्वर। बहुदिन करिलाम तपस्या बिस्तर ४
पृथिवीते राजा आमि छिलाय प्रधान। तोमा हेन अनेकेर लइयाछि प्राण
ना करिल केह मोरे युद्धे पराजय। स्वर्गबासे याइ आमि, एकथा निश्चय ५
आमारे जिनिते केह नारिल संग्रामे। पूर्व्वेते छिलाम आमि पूर्व्व मुनि नामे
स्त्रीगण वेष्टित आमि याइ स्वर्गबासे। एहेन समये युद्ध युक्ति ना आइसे ६
रावण बलिल, तुमि मोर धर्म्म बाप। पूर्व्वे मोर पितृसह तोमार आलाप
दिग्विजय करि आमि त्रिभुवन जिनि। कार सने युद्ध करि, मने अनुमानि ७
दिनेक रहिते नारि आमि विना-रणे। तुमि युक्ति बल आमि युझिकार सने

मान्धाता के साथ रावण का युद्ध और मैत्री-स्थापना

मुनि बोले— रावण रथ पर (जा रहा) था। तभी एक नरश्रेष्ठ दिव्य रथ पर सवार होकर जा रहा था ॥ १ ॥ उसके स्वर्ण-रथ को राजहंस ढो रहे थे। उस पुरुष के पास सात सौ देवकन्याएँ थीं। कोई हँस रही थी, कोई नाच रही थी, किसी के मुँह में बाँसुरी थी। वह स्वर्ग-वासी पुरुष नारियों से घिरा हुआ था ॥ २ ॥ वह शृंगार-लीला करता हुआ रथ पर जा रहा था, रावण ने अपने रथ से उसे देखा। रावण कहने लगा— ओ पुरुष, तुम कहाँ भाग रहे हो ? मैं लंका का रावण हूँ। तुम मुझसे युद्ध करो ॥ ३ ॥ तुम्हारी नारियों को देखकर मेरे प्राण व्याकुल हो रहे है। मुझे कुछ नारियाँ दान देते जाओ। उस पुरुष ने पुकारकर कहा— लंकेश्वर, सुनो, मैंने अनेक दिन प्रचंड तपस्या की ॥ ४ ॥ मैं संसार में प्रधान राजा था। तुम जैसे अनेकों के प्राण ले लिये थे। मुझे कोई युद्ध में पराजित नहीं कर सकता था। यह तो निश्चित था कि मैं स्वर्ग में निवास हेतु जाऊँगा ॥ ५ ॥ मुझे कोई संग्राम में जीत नहीं सका। मैं पहले पूर्व-मुनि नाम से परिचित था। अब स्त्रियों से परिवेष्ठित होकर मैं स्वर्ग-वास हेतु जा रहा हूँ। इस समय तुमसे युद्ध करने की कोई युक्ति नहीं है ॥ ६ ॥ रावण बोला— तुम मेरे धर्म-पिता हो। पहले मेरे पिता के साथ तुम्हारी बातचीत थी। दिग्विजय करते हुए मैंने त्रिभुवन जीत लिया है, अब मन में सोच रहा हूँ कि किससे युद्ध करूँ ? ॥ ७ ॥ बिना युद्ध के तो मैं एक दिन भी रह नहीं सकता। तुम युक्ति बताओ कि मैं किसके साथ लड़ूँ ? पूर्व-मुनि ने कहा— मान्धाता

पूर्व्व मुनि वले काछे मान्धाता नृपति । तार सने युझह से सप्त द्वीप पति ८
उत्तर दिकेते गेल से देश भ्रमिते । थाक आज वासा करि रम्य ए पर्व्वते
ए-पर्व्वते तार सने हवे दरशन । मान्धाता आइले युद्ध करिओ तखन ९
एत वलि पूर्व्व मुनि गेल स्वर्गवासे । हेन काले मान्धाता, कटक सह आसे
मान्धाता के देखिया ये रूपिल रावण । मान्धाता रावण दोंहे वाजे महारण १०
दिग्विजय करिया वेड़ाय दुइ जन । नाना अस्त्र दुइ राजा करे वरिषण
दुइ राजा नाना अस्त्र करे अवतार । उभय राजार सेना पलाय अपार ११
मान्धाता हीरार टाङ्गी पाक दिया एड़े । रावण खाइया टाङ्गी रथ हैते पड़े
पड़िल रावण राजा, वेड़े सेनापति । हर्षे सिंहनाद छाड़े मान्धाता नृपति १२
चक्षुर निमिषे पाय रावण संवित । धनुक पातिया युझे, मान्धाता चिन्तित
अग्निवाण एड़िलेक राक्षस रावण । ज्वलिया आग्नेय वाण, उठिल गगन १३
देखिया त्रिदशगणे लागे चमत्कार । मान्धाता पड़िल, सैन्य करे हाहाकार
संवित पाइया उठे चक्षुर निमिषे । उठि सिंहनाद करे मान्धाता हरिषे १४
उभयेर सिंहनादे पृथिवी उलटे । दुइ राजा वाण एड़े दुइ राजा काटे
दुइ राजा क्रोधे वाण एड़िछे विस्तर । महाशब्द करे वाण तूणेर भितर १५

नाम का राजा है। उसके साथ तुम जूझो, वह सप्त-द्वीपों का अधिपति है ॥ ८ ॥ वह देश-भ्रमण के लिए उत्तर दिशा में गया हुआ है। आज तुम इसी रमणीय-पर्वत पर निवास वनाकर रहो। इसी पर्वत पर उससे भेंट होगी, मान्धाता के आने पर उससे युद्ध करना ॥ ९ ॥ ऐसा कहकर पूर्वमुनि स्वर्ग में निवास हेतु चला गया। उसी समय सेना-सहित वहाँ मान्धाता आया। मान्धाता को देखकर रावण रुष्ट हो उठा। मान्धाता और रावण दोनों में महान संग्राम होने लगा ॥ १० ॥ दोनों ही राजा दिग्विजय करते घूम रहे थे। दोनों ही एक-दूसरे पर नाना प्रकार के अस्त्रों की वर्षा करने लगे। दोनों राजा नाना प्रकार के अस्त्र प्रकट कर रहे थे, दोनों राजाओं की अपार सेना भागने लगी ॥ ११ ॥ मान्धाता ने हीरे की कुल्हाड़ी घुमाकर फेंकी। कुल्हाड़ी की चोट खाकर रावण रथ से गिर पड़ा। राजा रावण को गिर पड़ा देख सेनापतियों ने उसे घेर लिया। राजा मान्धाता ने हर्ष से सिंहनाद किया ॥ १२ ॥ पलक मारते ही राजा रावण सचेत हो गया। वह धनुष उठाकर जूझने लगा, मान्धाता चिन्तित हो उठा। राक्षस रावण ने अग्निवाण छोड़ा। जलता हुआ अग्नि-वाण आकाश में पहुँच गया ॥ १३ ॥ यह देख देवताओं को अचरज हुआ। मान्धाता गिर पड़ा, उसकी सेना हाहाकार कर उठी। वह पलक मारते ही सचेत हो गया। हर्ष में भरकर मान्धाता सिंहनाद करने लगा ॥ १४ ॥ दोनों के सिंहनाद से लगा, मानो धरती उलट-सी गयी। दोनों राजा वाण छोड़ते थे और दोनों ही काट भी डालते थे। दोनों राजा क्रोधित होकर असंख्य वाण छोड़ रहे थे। तूण के अन्दर उनके वाण भी महा शब्द करते थे ॥ १५ ॥ कोई किसी को जीतने का

केह कारे जिनिबारे नाहि पाय आश। उभये समान, युद्ध करे दश मास
मान्धाता एड़िल बाण नामे पाशुपत। स्थावर जङ्गम काँपे पृथिवी पर्व्वत १६
सप्तस्वर्ग काँपे आर से सप्तसागर। शुनिया बाणेर शब्द स्वर्गे लागे डर
ब्रह्मा पाठाइया दिल महर्षि भार्गवे। अविलम्बे तथा आसि कन मुनि तबे १७
समर संबर, क्रोध ना कर मान्धाता। ब्रह्मा पाठाइया दिला, शुन ताँर कथा
आछे ये ब्रह्मार बर रावण ना मरे। तव बाणे रावणेर कि करिते पारे १८
तव बंशे ये पुरुष जन्मि बेन शेषे। ताँर ठाँइ दशानन मरिबे सबंशे
तव बाणे ना मारिबे लङ्कार रावण। अस्त्र संबरिया प्रीति कर दुइ जन १९
मुनिर बचन राजा ना करिल आन। सम्प्रीति करिया दोँहे गेल निज स्थान
मान्धाता रावण दुइ जन सम रणे। जय पराजय कारो नहिल से क्षणे २०
अगस्त्येर कथा शुनि राम उल्लसित। कह, बलि मुनिके करेन उत्साहित
मान्धाता छाड़िया कोथा गेल दशानन। कह देखि मुनि शुनि अपूर्व्व कथन २१

रावणेर चन्द्रलोक विजय

मुनि बले, एक दिन घटिल एमन। रथोपरि चड़िया भ्रमिछे दशानन
हेन काले गगने हइल चन्द्रोदय। देखिया हइल रुष्ट दुष्ट, स्पष्ट कय १

कोई मौक़ा नहीं पाता था। दोनों ही बराबर थे और दस महीने तक युद्ध करते रहे। मान्धाता ने पाशुपत नाम का बाण छोड़ा। जिससे स्थावर, जंगम, पृथ्वी-पर्वत काँप उठे ॥ १६ ॥ सातों स्वर्ग और सातों सागर काँप उठे। बाणों की आवाज़ सुनकर स्वर्ग में भी भय लगने लगा। तब ब्रह्मा ने महर्षि भार्गव को भेजा। भार्गव मुनि शीघ्रता से वहाँ आकर कहने लगे— ॥ १७ ॥ मान्धाता, युद्ध रोको। क्रोध मत करो। ब्रह्मा ने मुझे भेजा है, उनकी बात सुनो। ब्रह्मा का तो यह वरदान रहा कि रावण मरेगा नहीं। अतः तुम्हारे बाण भला उसका क्या कर सकते हैं? ॥ १८ ॥ तुम्हारे वंश में अन्त में जो पुरुष जन्म लेंगे, उनके द्वारा दशानन सवंश मारा जायेगा। तुम्हारे बाणों से लका का रावण नहीं मरेगा। इसलिए अस्त्र समेटकर दोनों आपस में प्रीति कर लो ॥ १९ ॥ राजा ने मुनि के वचन की अवज्ञा नहीं की। दोनों परस्पर मैत्री कर अपने-अपने स्थान को चले गये। मान्धाता और रावण दोनों ही युद्ध में बराबर थे। इस कारण उस समय किसी की हार-जीत नही हुई ॥ २० ॥ मुनि अगस्त्य की बात सुनकर राम उल्लसित हो उठे। उन्होंने, मुनि (और भी) सुनाइये, कहकर मुनि को उत्साहित किया। (रामचन्द्र ने पूछा—) मान्धाता को छोड़कर रावण कहाँ गया? मुनि, कहिये, मैं वह अपूर्व कथा सुनना चाहता हूँ ॥ २१ ॥

रावण का चन्द्रलोक-विजय करना

मुनि वोले— एक दिन ऐसी घटना हुई; रावण रथ पर सवार हो घूम

आमार वाणेते मेरु नाहि धरे टान । आमार उपर दिया करिछे प्रयाण
स्वर्ग मर्त्य पाताल कम्पित यार डरे । लङ्कार रावण आमि, ग्राह्य नाहि करे २
देखिब केमन चन्द्र कत तार बल । ताहारे जिनिब आर हरिब सकल
एइ मत भाविया से उठिल आकाशे । चन्द्रलोके गेल चन्द्र जिनि वार आशे ३
चन्द्रलोक दुइ लक्ष योजनेर पथ । सप्त स्वर्ग जिनिया याइबे चड़ि रथ
उठिल प्रथम स्वर्गे राजा दशानन । पर्व्वत एड़िया उठे सहस्र योजन ४
उठिल द्वितीय स्वर्गे याइते याइते । सहस्र योजन उठे पर्व्वत हइते
उठिल तृतीय स्वर्गे सेइ महारथी । सेइ स्वर्गे बिराजिता गङ्गा भागीरथी ५
राजहंस आदि पक्षी चरे गङ्गा नीरे । रावण कटक सह गङ्गास्नान करे
गङ्गा तटे नित्यकर्म करि समापन । सकल कटक रथे करिल गमन ६
आछेन शङ्कर-गौरी ताहार उपर । रथे चड़ि सेइ स्वर्गे गेल लङ्केश्वर
गौरी भक्त येइ जन पूजेछे पार्व्वती । से-स्थाने रावण देखे ताहार बसति ७
तदुपरि शिवलोके उठिल रावण । देखे यक्ष पिशाच से शङ्करेर गण
तिन कोटि देव छिल धूर्ज्जटीरपाशे । रावणे देखिया तारा पलाय तरासे ८
तदुपरि वैकुण्ठेते उठिल रावण । पुरी प्रदक्षिण करि करिल गमन
ब्रह्मलोके गेल से ब्रह्मार निज स्थान । आड़े दीर्घे अयुतेक योजन प्रमाण ९

रहा था, उसी समय आकाश में चाँद उगा । उसे देखकर दुष्ट रावण रुष्ट हो उठा । वह स्पष्ट रूप से कहने लगा— ॥१॥ हमारे बाण से मेरुपर्वत भी तना नहीं रहता, यह चन्द्रमा मेरे ऊपर से जा रहा है । जिसके डर से स्वर्ग-मर्त्य-पाताल भी कंपित है, मैं वही लंका का रावण हूँ (यह चन्द्रमा) मेरी परवाह नहीं करता ॥ २ ॥ मैं देखूंगा, चन्द्रमा कैसा है; उसका बल कितना है; मैं उसे जीतूंगा और उसका सब कुछ हर लूंगा । ऐसा सोच कर वह आकाश में चला गया और चन्द्रमा पर विजय हेतु चंद्रलोक में जा पहुँचा ॥ ३ ॥ चंद्रलोक दो लाख योजन का मार्ग था । सात स्वर्ग को जीतने के बाद रथ पर सवार हो उसे जाना था । पर्वतों से आगे सहस्र योजन पार कर पहले स्वर्ग में राजा दशानन पहुँचा ॥ ४ ॥ वहाँ से पर्वतों से आगे सहस्र योजन पार कर रावण आगे बढ़ दूसरे स्वर्ग में जा पहुँचा । (इसके बाद) जहाँ भागीरथी-गंगा विराजमान है उस तीसरे स्वर्ग में रावण पहुँचा ॥ ५ ॥ वहाँ राजहंस आदि पक्षी गंगा के जल में विचरण कर रहे थे । रावण ने सेना-सहित गंगा-स्नान किया । गंगा-किनारे नित्यकर्म सम्पन्न करने के बाद सारी सेना रथों पर आगे बढ़ी ॥ ६ ॥ उस (चौथे) स्वर्ग में जहाँ शिव-पार्वती विराजमान हैं, रावण रथ पर सवार हो वहाँ पहुँच गया । रावण ने देखा, गौरी के जिस भक्त ने देवी पार्वती का पूजन (इस लोक में) किया है, वही उस स्थान में निवास कर रहा है ॥ ७ ॥ उससे ऊपर रावण शिवलोक में पहुँचा । उसने वहाँ यक्ष-पिशाचादि शंकर के गणों को देखा । शंकर के समीप तीन करोड़ देवता थे । रावण को देखते ही वे आतंकित हो भाग चले ॥ ८ ॥ उसके ऊपर रावण वैकुंठ में पहुँचा और पुरी की

ताहाते सहस्र स्वर्ग देखिल निर्म्माण। विश्वकर्म्माकृत पुरी अद्‌भुत विधान
सप्त स्वर्ग जिनिया से उठिल रावण। चन्द्रेर सहित परे हइल मिलन १०
रावणे देखिया चन्द्रदेव बड़ रोषे। सहस्र सहस्र गुण तुषार वरिषे
हिम-वरिषणे कटकेर हैल जाड़। कटकेर हस्त पद जाड़े हैल आड़ ११
हस्तपद नाहि सरे वद्ध ह'ये जाड़े। तथापि रावण राजा रण नाहि छाड़े
प्रहस्त बलिछे, जाड़े जोर नाहि हाते। पलाइया चल याइ, बाँचि कोन मते १२
रावण कातर हैल, युझिते ना पारे। प्राण याय तथापि संग्राम नाहि छाड़े
रावण करिल एइ उपाय प्रधान। बाहिर करिल अग्निमय महाबाण १३
ब्रह्म-अग्नि ज्वले से बाणेर अग्रभागे। से बाणेर प्रतापे सबार जाड़ भागे
अग्नि बाण एड़िलेक राजा लङ्केश्वर। बाणे विद्ध चन्द्रमा हइल जर जर १४
बाणाघाते चन्द्रमा हइल अचेतन। पाइया चेतन पुनः उठे सेइ क्षण
उभरणे चन्द्रमा पलाय त्यजि रण। जलाय चीत्कार करि यत तारागण १५
प्राण ल'ये गेल चन्द्र गणिया प्रमाद। ब्रह्मलोके गिया चन्द्र करेन विषाद
क्रन्दन करेन चन्द्र, ब्रह्मा पान दुख। त्वरित गेलेन ब्रह्मा रावण-सम्मुख १६

प्रदक्षिणा कर आगे बढ़ा। इसके पश्चात् वह ब्रह्मा के अपने स्थान ब्रह्मलोक में पहुँचा। वह लोक लम्बाई-चौड़ाई में लगभग दस हज़ार योजन फैला था ॥ ९ ॥ वहाँ उसने बने हुए सहस्रों स्वर्ग देखे। वे सारी नगरियाँ विश्वकर्मा द्वारा अद्‌भुत तरीक़े से बनायी हुई थीं। उन सातों स्वर्गों को जीतकर रावण ऊपर चला। इसके पश्चात् चंद्रमा से उसकी भेंट हुई ॥ १० ॥ रावण को देख चंद्रदेव बहुत ही क्रोधित हो उठे और सहस्रों गुनी तुषार-वर्षा करने लगे। हिम की वर्षा से रावण की सेना ठंड में पड़ गयी। सेना के हाथ-पैर जाड़े के मारे सुन्न हो गये ॥ ११ ॥ जाड़े से सेना के हाथ-पैर बँध-से गये और वे हिल-डुल नहीं पाते थे। तथापि राजा रावण ने युद्ध करना नहीं छोड़ा। प्रहस्त बोला— जाड़े के मारे हाथों में कोई वल नहीं रहा है। चलो यहाँ से भागकर किसी तरह से बच जायें ॥ १२ ॥ रावण कातर हो गया, वह लड़ नहीं पाता था। उसके प्राण जा रहे थे, फिर भी उसने संग्राम करना नहीं छोड़ा। रावण ने ऐसा बड़ा उपाय किया कि उसने अग्निमय महाबाण निकाला ॥ १३ ॥ उस बाण की नोक पर ब्रह्म-अग्नि जल रही थी। उस बाण के प्रभाव से सबका जाड़ा भाग जाता है। राजा लंकेश्वर ने वह अग्नि-बाण छोड़ा। उस बाण से बिंधकर चन्द्रमा जर्जर हो गया ॥ १४ ॥ बाण के आघात से चन्द्रमा अचेत हो गया पर तुरन्त चेतना पाकर उठ गया। चंद्रमा पीछे मुड़कर लड़ाई छोड़ भाग चला। सारे तारागण भी चीखते हुए भाग चले ॥ १५ ॥ भयानक संकट देखकर प्राण लिये चंद्रमा भाग चला और ब्रह्मलोक में जाकर चंद्रमा विषाद करने लगा। चंद्रमा रो रहा था, इससे ब्रह्मा को बड़ा दुःख हुआ। ब्रह्मा तुरन्त रावण के सामने पहुँचे ॥ १६ ॥ ब्रह्मा बोले, अबोध रावण, सुन,

ब्रह्मा बलिलेन, शुन अबोध रावण। चन्द्रर सहित युद्ध कर कि कारण
सर्व्वलोके बन्दे देख द्वितीयार चन्द्र। पूर्णिमार चन्द्र करे जगत् आनन्द १७
सर्व्वलोके हृष्ट करे जोछना रजनी। चन्द्रेर सहित केन कर हाना हानि
कारो मन्द ना करे सबार करे हित। हेन चन्द्रे मारिते तोमार अनुचित १८
शुन रे रावण, मन्त्र कहि तोर काणे। परेरे मारिते पाछे निज मर प्राणे
दुइ जने युद्ध हैले मरे एक जन। अतः पर क्षमा देह अबोध रावण १९
बिधातार बचन लङ्घिवे कोन जन। रावण प्रबोध मानि करिल गमन
अगस्त्येर कथा शुनि हृष्ट रघुमणि। पुनर्व्वार जिज्ञासा करेन, कह मुनि २०
चन्द्रके जिनिया कोथा गेल दशानन। कह देख मुनि, शुनि पुराण कथन

रावणेर कुशद्वीपे गमन ओ महापुरुषेर सहित युद्ध

अगस्त बलेन, शुन जानकी बल्लभ। रावणेर दिग्विजय कहि आमि सब १
जम्बूद्वीप पार हये गेल लङ्केश्वर। कुशद्वीपे देखे एक पुरुष प्रबर
सुमेरु-पर्व्वत येन देहेर आकार। देवेर देवता येन देवतार सार २
बार योजनेर पथ आड़े परिसर। बारशत योजन शरीर दीर्घतर

तू भला चंद्रमा के साथ युद्ध किसलिए कर रहा है ? देव, सारे लोक द्वितीया के चंद्रमा की वंदना किया करते हैं, पूर्णिमा का चंद्रमा विश्व को आनन्दित किया करता है ॥ १७ ॥ सभी लोगों को ज्योत्स्ना की रात आनन्दित करती है। ऐसे चंद्रमा के साथ तू लड़ाई क्यों कर रहा है। चंद्रमा तो किसी का अनिष्ट नहीं करता। सबका हित ही करता है। ऐसे चंद्रमा को मारना तुम्हारे लिए अनुचित है ॥ १८ ॥ सुन रे रावण, तेरे कानों में यह मन्त्र कहता हूँ, दूसरों को मारने में अन्त में तू स्वयं मरने जा रहा है। दो व्यक्तियों में युद्ध होने पर एक व्यक्ति मारा ही जाता है। इसी कारण, ओ अबोध रावण, तू क्षमा-दान कर ॥ १९ ॥ विधाता के वचनों का उल्लंघन कौन कर सकता है ? रावण उनका उपदेश मानकर वहाँ से चल पड़ा। मुनि अगस्त्य की बात सुनकर रामचंद्र हर्षित हो उठे। उन्होंने पुनः पूछा, मुनि, कहिये ॥ २० ॥ चंद्रमा को जीतने के बाद रावण कहाँ गया ? मुनि बताइये, मैं पुराण-कथा सुनना चाहता हूँ।

रावण का कुशद्वीप जाना और महापुरुष के साथ युद्ध

अगस्त्य ने कहा, जानकीनाथ, सुनिये। मैं रावण का सारा दिग्विजय वर्णन कर रहा हूँ ॥ १ ॥ लंकेश्वर जम्बूद्वीप से और आगे बढ़ा। उसने कुशद्वीप में एक महापुरुष-को देखा। उसके शरीर का आकार सुमेरु पर्वत जैसा था। वह देवताओं का देवता, सभी देवताओं का सार-भूत था ॥२॥ उसका परिसर बारह योजन का मार्ग घेरे हुए था। उसका शरीर बारह सौ योजन लम्बा था। रावण ने पूछा— हे पुरुष, तुम कौन

रावण बलिछे हे पुरुष केबा तुमि। देह रण संग्राम चाहिया आमि भ्रमि ३
पुरुषेर काछे गिया दशानन तर्ज्जे। अजगर सर्प येन से पुरुष गर्ज्जे
पुरुष बलेन आमि घुचाइ विषाद। कत दिन स'ब भार तोर अपराध ४
कुड़ि हाते रावण से नाना अस्त्र एड़े। पुरुषेर गाये पड़ि उखाड़िया पड़े
नर नहे पुरुष आपनि नारायण। बाण व्यर्थ याय देखि चिन्तित रावण ५
पर्व्वत-युगल येन उरु दुइ खण्ड। आजानुलम्बित दुइ महाबाहु दण्ड
अष्ट बसु आछे सेइ पुरुष-शरीरे। बहिछे सागर सप्त पुरुष-उदरे ६
दश दिक्पाल आछे पुरुषेर पाशे। उन पञ्चाशत् बायु सह बायु बसे
पुरुषेर हृदि पद्मे ब्रह्मार बसति। नाभि पद्म आसने बसेन हैमबती ७
ताँहार ललाटे सन्ध्या-गायत्री-लिखन। अद्भुत देखिल येन मेघेर मतन
देब दैत्य गन्धर्व्व दानब बिद्याधर। तिन कोटि देवकन्या ताँहार दोसर ८
करण नक्षत्र योग ग्रह तिथि बार। गात्रे लोमाबली-रूपे आछे अबतार
बासुकीर विष जाले विश्व दग्ध करे। से बासुकि पुरुषेर मस्तक-उपरे ९
रसनाय सरस्वती सदा स्फूर्तिमती। चन्द्र सूर्य्य दुइ चक्षु सदा करे द्युति
रावणेरे चारि हाते धरेन तखन। बिश हस्त रावण से हैल अचेतन १०
अचेतन ह'ये भूमे लोटाय रावण। पुरुष गेलेन परे पाताल-भुबन
उलटिया चाहिते लागिल लङ्केश्वर। देखिते ना पाय किछु हइल कातर ११

हो ? मैं संग्राम करने की इच्छा से घूम रहा हूँ। मुझसे संग्राम करो ॥३॥ उस पुरुष के पास जाकर दशानन तरजकर बोला। वह पुरुष तब अजगर सर्प की भाँति गरजने लगा। पुरुष ने कहा— 'मैं (संसार के) दुःख-विषाद मिटानेवाला हूँ। तेरा अपराध अब कब तक सहूँ ?' ॥४॥ रावण बीस हाथों से तरह-तरह के अस्त्र छोड़ने लगा। वे अस्त्र उस पुरुष के शरीर में लगकर विफल होकर गिर-गिर पड़ते थे। वह पुरुष तो नर नहीं, स्वयं नारायण था। अपने बाणों को व्यर्थ जाते देख रावण चिन्तित उठा हो ॥ ५ ॥ उसकी दोनों जाँघें दो पर्वतों जैसी थीं। उसके दोनों महाबाहुदंड अजानुलम्बित थे। उस पुरुष के शरीर में आठों वसु थे, पुरुष के उदर में सातों समुद्र प्रवाहमान थे ॥ ६ ॥ दसों दिग्पाल पुरुष के भीतर थे, उनचास पवन उसकी साँसों में बसे हुए थे। उस पुरुष के हृदय-कमल पर ब्रह्मा का निवास था। नाभि-कमल के आसन पर हैमवती बैठी थी ॥ ७ ॥ उसके ललाट पर संध्या-गायत्री का आलेख था। वह ऐसा अद्भुत दिखाई पड़ा मानो मेघ हो। देव-दैत्य-गंधर्व-दानव-विद्याधर, तीन करोड़ देवकन्याएँ उससे जुड़े हुए थे ॥ ८ ॥ करण, नक्षत्र, योग, ग्रह, तिथि, वार आदि रोमावलि के रूप में उसमें प्रकट थे। जिस वासुकी की विष-ज्वाला विश्व को दग्ध करती है, वह वासुकी उस पुरुष के मस्तक के ऊपर (फन फैलाये) था ॥ ९ ॥ उसकी रसना पर सदा सरस्वती स्फूर्तिमती बनी रहती है। चंद्र-सूर्य दोनों नेत्र सदा द्युतिमान रहते हैं। उसने अपने चार हाथों से रावण को पकड़ा। बीस भुजाओं वाला रावण अचेत हो गया ॥ १० ॥ रावण अचेत होकर भूमि पर पड़ गया। इसके

शरीर झाड़िया शुक-सारणेरे पुछे। पुरुष आमारे मारि गेल कार काछे
वले शुक-सारण शुनह लङ्केश्वर। तोमारे मारिया गेल पाताल भितर १२
रावण पाताले गेल पुरुष-उद्देशे। कोटि चतुर्भुज देखे पुरुषेर पाशे
सकल पातालपुरी करे निरीक्षण। मायारूपी तिनि, तारे नाचिने रावण १३
त्रास पेये मने मने चिन्तित रावण। पुरुष रावणे देखा देन ततक्षण
पुरुष सुवर्ण खाटे हृरिष-अन्तरे। तिन कोटि देवकन्या परिचर्य्या करे १४
वसियाछे देवकन्यागण कुतूहले। कामार्त्त रावण याय धरि वरे वले
कोप दृष्टे पुरुष रावण पाने चाय। अग्निते पुड़िया भूमे रावण लोटाय १५
उठ उठ वलिया पुरुष डाके तारे। उठिया रावण से गायेर धूला झाड़े
रावण वलिछे, तुमि कोन् अवतार। परिचय देह तुमि भुवनेर सार १६
पुरुष डाकिया वले, शुनर रावण। तोरे परिचय दिया कोन् प्रयोजन
योड़ हात करिया वलिछे लङ्केश्वर। ब्रह्मार प्रसादे मोर कारे नाहि डर १७
तुमि हे आमारे मार, तवे से मरण। तोमा विना अन्य हाते ना मरे रावण
रावणेर कथा शुनि पुरुषेर हास। नितान्त आमार हस्ते हइवे विनाश १८
परिचय दिलेन पुरुष रावणेरे। रावण बिदाय ल'ये तथा हैते सरे
श्रीराम वलेन, कह मुनि महाशय। से पुरुष कोन जन, देह परिचय १९

पश्चात् वह पुरुष पाताल-लोक चला गया। रावण मुड़कर देखने लगा। उसे कुछ भी दिखाई नहीं पड़ा तो वह व्याकुल हो गया ॥ ११ ॥ शरीर झाड़कर उसने शुक-सारण से पूछा— मुझे मारकर वह पुरुष कहाँ चला गया? शुक-सारण ने कहा— लंकेश्वर, सुनो। तुम्हें मारकर वह पाताल के अन्दर चला गया है ॥ १२ ॥ रावण उस पुरुष के लिए पाताल में गया। उसने देखा, उस पुरुष के पास करोड़ों चतुर्भुज उपस्थित हैं। वह सारी पातालपुरी का निरीक्षण करने लगा। वे माया रूपी थे, जिन्हें रावण पहचानता न था ॥ १३ ॥ संत्रस्त होकर रावण मन ही मन चिन्तित हो उठा। तभी वह पुरुष रावण के समक्ष प्रकट हुआ। पुरुष स्वर्ण-शय्या पर शयन किये था, तीन करोड़ देवकन्याएँ उसकी परिचर्या कर रही थीं ॥ १४ ॥ देवकन्याएँ कौतूहल से वहाँ बैठी हुई थीं, कामार्त रावण उन्हें वलपूर्वक पकड़ने लगा। कोप-दृष्टि से उस पुरुष ने रावण की ओर देखा। रावण अग्नि से झुलसकर भूमि पर गिर पड़ा ॥ १५ ॥ 'उठो, उठो' कहकर उस पुरुष ने उसे पुकारा। रावण ने उठकर शरीर की धूल झाड़ी। रावण ने पूछा— तुम कौन अवतार हो? तुम संसार के सार हो, मुझे अपना परिचय दो ॥ १६ ॥ पुरुष ने पुकार कर कहा— रावण सुन, तुझे परिचय देने की क्या आवश्यता है? हाथ जोड़कर लंकेश्वर ने कहा— व्रह्मा के प्रसाद से मुझे किसी से डर नहीं ॥ १७ ॥ यदि तुम्हीं मुझे मारो तभी मेरी मृत्यु होगी। तुम्हारे विना दूसरे के हाथ रावण नहीं मरेगा। रावण की बात सुनकर वह पुरुष हँसने लगा। अवश्य, मेरे हाथ ही तेरा विनाश होगा ॥ १८ ॥ (इसी प्रकार) पुरुष ने रावण को परिचय दे दिया। रावण विदा ले

अगस्त्य बलेन, तिनि भुबने सार । चतुर्भुज तिन कोटि तांर परिबार
जिज्ञासा करेन पुनः कौशल्यानन्दन । तथा हैते आर कोथा गेल से रावण २०

रावण कर्तृक रम्भावतीर अपमान ओ नलकूबर कर्तृक राबणेर प्रति अभिशाप

अगस्त्य बलेन, राम कर अवधान । राबणर पूर्व्वकथा कहि तब स्थान
कैलास पर्व्वते गेल बेला अवसाने । बासा करि रावण रहिल सेइ स्थाने २१
द्वितीय प्रहर रात्रे जागे दशानन । चन्द्रेर उदय हेतु निर्म्मल गगन
सुशीतल रात्रि, वहे बायु मनोहर । धवल रजनी शोभा करे सुधाकर २२
रावण मदने मत्त, नारी नाहि पाशे । हेन काले रम्भा याय उपर-आकाशे
रम्भा नामे अप्सरा से परमा सुन्दरी । कपाले तिलक तार शोभे सारि सारि २३
रूपेते करिल आलो येन चन्द्र कला । देखिया रावण राजा कामे हैल भोला
रम्भा रम्भा वलिया रावण धरे हाते । तुषिते काहार प्राण याह एत राते २४
कोन् नागरेर हेतु याह रसबती । ताहारे एड़िया मोरे भज लो युवती
रति शास्त्र अष्टादश विध आमि जानि । तुमि आमि केलि करि दिवस-यामिनी २५

वहाँ से हट गया । श्रीराम ने पूछा— मुनिवर, कहिये, वह पुरुष कौन है, उसका परिचय दीजिए ।। १९ ।। अगस्त्य ने कहा— वे सारे संसार के सार हैं, तीन करोड़ चतुर्भुज उनके परिवार हैं ! कौशल्यानन्दन राम ने पुनः पूछा— वहाँ से रावण फिर कहाँ गया ? ।। २० ।।

रावण द्वारा रंभावती का अपमान और नलकूबर का रावण को शाप देना

अगस्त्य ने कहा— रामचंद्र सुनो । रावण की पूर्व कथा तुम्हें सुना रहा हूँ । कुछ दिन बीत जाने पर रावण कैलास पर्वत पर पहुँचा और वहीं डेरा बनाकर रहा ।। २१ ।। रात के दूसरे पहर— रावण जल उठा । चन्द्रोदय के कारण आकाश निर्मल था । रात बड़ी शीतल थी, मनोरम वायु बह रहा था । चंद्रमा श्वेत रात को शोभित कर रहा था ।। २२ ।। रावण कामोन्मत्त हो उठा, परन्तु समीप कोई नारी न थी । उसी समय रंभा ऊपर आकाश-मार्ग से जा रही थी । रंभा नाम की वह अप्सरा परम सुन्दरी थी । उसके ललाट पर क़तारों में तिलक सुशोभित था ।। २३ ।। वह चन्द्रकला की भाँति अपने रूप से विश्व को आलोकित कर रही थी । उसे देखकर राजा रावण कामोन्मत्त हो सुध-बुध खो बैठा । 'रंभा, रंभा', कहता हुआ रावण ने उसका हाथ पकड़ लिया । तुम किसके प्राणों को संतुष्ट करने हेतु इतनी रात को जा रही हो ? ।। २४ ।। हे रसवती, तुम किस नागर के उद्देश्य से जा रही हो । हे युवती, उसे छोड़ अब मुझे भज लो ! मैं अठारह प्रकार के रति-शास्त्र का ज्ञाता हूँ । चलो, हम-तुम मिलकर दिन-रात केलि करें ।। २५ ।। लज्जा से सिर झुकाकर हाथ

लाजे हेँट माथा रम्भा वले योड़ हात। आमार श्वशुर तुमि राक्षसेर नाथ
श्वशुर हइया तुमि ना धरिह हाते। केन वा आइनु आमि हेन छार पथे २६
रावण वलिल, तुमि काहार सुन्दरी। कि सम्वन्धे तुमि से आमार वहुयारी
रम्भा वले, कर यदि सम्वन्ध-विचार। आमाके छाड़िया देह करि परिहार २७
श्री नलकूवर-नामे कुवेर-कुमार। पतिव्रता हइ आमि रमणी ताँहार
कुवेर तोमार ज्येष्ठ धन-अधिकारी। ताँर पुत्रवधू आमि तव वहुयारी २८
श्वशुर हइया कर वधुरे हरण। आमारे आपेक्षि आछे कुवेर-नन्दन
धर्म्मे मति देह राजा, छाड़ परिहास। हात छाड़ि देह, याइ नायकेर पाश २९
छाड़ि देह लङ्केश्वर, आजिकार राति। कल्य आसि तव सङ्गे करिव पिरीति
रम्भा वाक्य शुनि कहे हासिया रावण। ए समय पेले नारी छाड़े कोन् जन ३०
पुरुष हइया यदि पाय से रमणी। प्राणान्ते नाहिक छाड़े, शुन सुवदनी
मनेते भाविया रम्भा, देखह आपनि। देवराज हरिलेन गुरुर रमणी ३१
एतेक कहिल यदि राजा लङ्केश्वर। मने मने भावे रम्भा, या करे ईश्वर
दशानन वले, तुमि कि भाविछ आर। कालि थेके पुत्रवधू हइओ आमार ३२
रम्भा वले, महाराज, कर परिहार। कालि आमि तव सङ्गे करिव विहार
रम्भार वचन शुनि दशानन हासे। आजि वहुयारी कालि घुचिवेक किसे ३३
रम्भा वले, शुन वलि आमार नियम। ये दिन याहार पाशे करिव गमन

जोड़ रंभा बोली, राक्षसों के नाथ, तुम मेरे ससुर लगते हो। ससुर होकर तुम मेरे हाथ न पकड़ो। मैं भला ऐसे बुरे रास्ते से क्यों आयी ? ॥२६॥ रावण बोला— तुम किसकी सुन्दरी (पत्नी) हो ? किस नाते तुम मेरी बहू लगती हो ? रंभा बोली, अगर नाते का विचार करें तो मुझे छोड़ दें ॥ २७ ॥ कुबेर-कुमार, जिनका नाम श्री नलकूबर है, मैं उन्हीं की पतिव्रता-पत्नी हूँ। धनाधिपति कुबेर आपके बड़े भाई हैं। मैं उन्हीं की पुत्रवधू और आपकी पतोहू हूँ ॥ २८ ॥ ससुर होकर आप पतोहू का हरण कर रहे हैं, कुबेर-नन्दन नलकूबर मेरी प्रतीक्षा में हैं। हे राजा, आप धर्म में मति रखिये, परिहास करना छोड़ दें। मेरे हाथ छोड़ दें, मैं अपने पति के पास जाऊँ ॥ २९ ॥ हे लंकेश्वर, आज रात को मुझे छोड़ दें, कल आकर आपसे प्रीति करूँगी। रंभा का वचन सुनकर रावण हँसकर बोला— ऐसे समय में नारी को पाकर भला कौन छोड़ता है ? ॥ ३० ॥ पुरुष होकर यदि कोई नारी को पा जाये, तो हे सुन्दर बदन वाली, सुनो, प्राण जाने पर भी उसे छोड़ता नहीं। हे रंभा, तुम मन में स्वयं सोच देखो, देवराज इन्द्र ने भी गुरु की पत्नी को हर लिया था ॥ ३१ ॥ राजा लंकेश्वर ने जब ऐसा कहा, तो रंभा मन ही मन सोचने लगी, अब ईश्वर चाहे जो करे ! दशानन बोला, तुम और क्या सोच रही हो ? कल से तुम मेरी पतोहू बनना ! ॥ ३२ ॥ रंभा बोली, महाराज, छोड़ दीजिये। मैं कल आपके साथ विहार करूँगी। रंभा का वचन सुन दशानन हँसने लगा। बोला, आज जो पतोहू बनोगी तो कल वह कैसे बदलेगा ? ॥ ३३ ॥ रंभा बोली, सुनिये, अपना नियम मैं

सेइ दिन पति सेइ जानिह निश्चय। ए कथा अन्यथा नाहि कदाचित हय ३४
बिधिर निर्ब्बन्ध शुन राक्षसेर पति। चिरदिन धर्म्म राखि एइ रूपे सती
नलकूबरेर लागि करे'छि प्रयाण। आजि छाड़ि देह राजा, राख मोर मान ३५
धर्म्म राख नलकूबरेर अनुरोध। बिलम्ब देखिले तिन करि बेन क्रोध
आजि राजा छाड़ि देह तुमि मोर आश। दश दिन थाकिब आसिया तब पाश ३६
बिश्वश्रबा पुत्र तुमि सुबुद्धि सुधीर। पण्डित हइया केन एतेक अस्थिर
रावण बले, ओ कथा मोरे नाहि लागे। आर दिन तव काछे केबा रति मागे ३७
दैबेर घटने आजि गेछ हाते पड़े। हेन जन केबा आछे, स्त्री पाइले छाड़े
पृथिवीर नारी यदि हइत घटना। पाइले ना छाड़ि आमि, तार एक जना ३८
एत यदि कहिलेक राजा दशानन। नाके हात दिया रम्भा भावे मने मन
रावणेर हाते बुझि परित्राण नाइ। मौन ह'ये थाकि एबे या करे गोसांइ ३९
एत भाबि मौन भावे थाके रम्भावती। रावण बुझिल, रम्भा दिलेक सम्मति
किछु ना बलिया रम्भा मौनेते थाकिल। रम्भा के चापिया तवे रावण धरिल ४०
हें'ट मुखे रहे रम्भा रावण-गोचर। भाल-मन्द किछु रम्भा ना दिल उत्तर
अनुमाने रावण बुझिल तार मन। धरिया शृङ्गार करे राजा दशानन ४१

सुनाती हूँ। मैं जिस दिन जिसके पास जाती हूँ, यह निश्चय जानें, कि दिन वही मेरा पति होता है। इस बात की अन्यथा कभी नहीं होती ॥३४॥ हे राक्षसों के स्वामी, सुनिये, यह विधि का निबंध है, इसी तरह मैं चिरकाल धर्म-रक्षा करती हूँ, इसी प्रकार सती बनी रहती हूँ। मैं आज नलकूबर के लिए निकल चुकी हूँ। हे राजा! आज मुझे छोड़ दीजिये, मेरा मान रखिये! ॥ ३५ ॥ मेरा अनुरोध है कि नलकूबर के धर्म की रक्षा कीजिये, अगर वे मेरा विलम्ब देखेंगे तो क्रोधित हो उठेंगे। हे राजा, आज आप मेरी आशा छोड़ दीजिये, इसके बाद मैं आपके पास दस दिन रहूँगी ॥ ३६ ॥ आप विश्वश्रवा के पुत्र, उत्तम बुद्धि वाले, सुधीर हैं! पंडित होकर भी ऐसे अधीर क्यों होते हैं? रावण बोला, मुझे उन बातों से कोई प्रयोजन नहीं। दूसरे दिन भला तुमसे रति की याचना कौन करेगा? ॥ ३७ ॥ दैव-योग से आज तुम मेरे हाथ पड़ गयी हो। ऐसा कौन है जो स्त्री को पाकर छोड़ दे? अगर संसार की सभी नारियाँ इकट्ठी हो जातीं तो मैं उनमें से किसी को पाकर नहीं छोड़ता? ॥ ३८ ॥ राजा दशानन ने जब ऐसी बात कही, तो रंभा नाक पर हाथ रख मन ही मन सोचने लगी। संभवतः रावण के हाथ से बच नहीं पाऊंगी। इसीलिए अब तो मौन होकर ही रहूँ; ईश्वर चाहे जो करें ॥ ३९ ॥ ऐसा सोचकर रंभावती मौन रह गयी। रावण ने समझा, रंभा ने सम्मति दे दी है, कुछ उत्तर न दे रंभा मौन रही। तब रावण ने रंभा को दबोच लिया ॥ ४० ॥ रावण के सम्मुख रंभा सिर झुकाये रही। अच्छा-बुरा कोई उत्तर न दिया। अनुमान से ही रावण ने उसके मन की भावना को समझा। उसे पकड़कर रावण ने उससे संभोग किया ॥ ४१ ॥ एक तो रावण (महाभोगी) था, दूसरे रंभा

एकेत रावण, ताहे रम्भार इङ्गित । इङ्गिते शृङ्गार राजा करे बिपरीत
एके दशानन ताहे शृङ्गारे प्रवीण । एकासने शृङ्गार करये सप्त दिन ४२
रावणेर शृङ्गार ना सहे कोन नारी । सबे मात्र सहे रम्भा, आर मन्दोदरी
हात-पा आछाड़े रम्भा रावणेर कोले । रावण शृङ्गार करे धरि तार चुले ४३
रह रह वलि रम्भा बले रावणेरे । मुखेते तर्ज्जन करे, हरिष अन्तरे
पुरुषेर अष्ठ गुण स्त्रीलोकेर काम । ताहार बृत्तान्त कहि शुनह श्रीराम ४४
स्वभावे पुरुष हैते कामे मत्ता नारी । तबु स्त्रीलोकेर मन बुझिते ना पारि
हृदये आनन्द, मुखे करये तर्ज्जन । तिन लोके नारीर बुझिते नारे मन ४५
प्रकाश ना करे मुखे, मने पुड़े मरे । प्रकाशिया नाहि कहे पुरुष-गोचरे
कठिन रमणी जाति सृजिलेन धाता । अन्तरे पुड़िया मरे, नाहि कहे कथा ४६
पुरुष-अधिक नारी कामेते पागल । तथापि पुरुष मन्द, स्वाभावे चञ्चल
रमणी चञ्चल हय, कदाच ना शुनि । पुरुष एमन जाति, भुले याय मुनि ४७
काम क्रोध लोभ मोह, छाड़ेन सकल । हेन मुनि स्त्री देखिले हयेन पागल
केह ना बुझिते पारे स्त्रीलोकेर छल । पुरुष भुलाते नारी फाँदे नाना कल ४८
शास्त्र मुखे जानि राम सर्व्व बिबरण । नारीते मजिले यश, गौरव निधन
राम बले, यत बल सकलि स्वरूप । विशेष पुरुष नहे नारी-अनुरूप ४९

का संकेत । संकेत से राजा रावण विपरीत नियम से संभोग करने लगा । एक तो दशानन (महाभोगी) था, दूसरे वह संभोग में प्रवीण था, एक ही आसन पर उसने लगातार सात दिन तक संभोग किया ।। ४२ ।। रावण के संभोग का वेग कोई नारी सह नहीं सकती थी । केवल रम्भा और मन्दोदरी ही सह सकती थीं । रावण के अंक में पड़ी रंभा हाथ-पैर पटक रही थी, रावण उसके बाल पकड़ संभोग कर रहा था ।। ४३ ।। रंभा रावण से 'रुको, रुको' कहती थी, मुँह से डाँटती थी, पर अन्तर् में हर्ष भी था । नारियों में पुरुषों की अपेक्षा काम आठ गुना होता है, श्रीराम, उसका वृत्तान्त सुनाता हूँ ! सुनो ! ।।४४।। पुरुष की अपेक्षा नारी अधिक कामोन्मत्त होती है । तथापि नारियों का मन समझा नहीं जाता । वह हृदय में आनन्दित होती है, मुँह से गरजती है, तीनों लोक नारी का मन समझ नहीं पाते ! ।। ४५ ।। वह मुँह से प्रकट नही करती पर मन में दुःख से जलती रहती है, वह पुरुष के समक्ष खुलकर नहीं कहती । विधाता ने नारी जाति को कठोर बनाकर सर्जन किया है । वह अन्तर् में जल मरती है, पर कोई बात नहीं करती ।। ४६ ।। नारी पुरुष से अधिक काम में पागल होती है । तथापि पुरुष मंद है, स्वभाव से वह चंचल होता है । नारी चंचल है, ऐसी बात कहीं सुनी नहीं जाती । पर पुरुष की जात ऐसी है कि मुनि भी (अपने को) भूल जाते हैं ।। ४७ ।। जो मुनि काम, क्रोध, लोभ, मोह सब कुछ छोड़ देते हैं वैसे मुनि भी स्त्री को देखकर पागल बन जाते हैं । स्त्रियों का छल कोई समझ नहीं पाता । पुरुष को भुलाने के लिए नारियाँ तरह-तरह के कौशल किया करती हैं ।। ४८ ।। शास्त्रों के वचनों से सारा विवरण जाना जाता है । नारी में लीन होने

मुनि बलिलेन, यार बड़ भाग्योदय। लोभ संबरण करि तार नारी रय
शृङ्गारेते रमणीय बाड़े अभिलाषा। जनम-अबधि तार नाहि पूरे आश ५०
दिने दिने बाड़े लोभ नहे संबरण। संबरिते पारे यदि नारी करे मन
ये रमणी पाप कर्म्म नाहि करे मति। उत्तमा रमणी जेनो सेइ गुणवती ५१
सतीर अनेक गुण सुन रघुपति। अनेक खुंजिले नाहि मिले एक सती
एक गुणा नहे नारी अनेक लक्षणा। सर्व्वगुण धरे देहे सती येइ जना ५२
सतीर देहेते महालक्ष्मी मूर्तिमती। पूजा कैले खण्डे पाप, ना थाके दुर्गति
एक सहस्रेते नारी मिलये सकटि। सती पा ओया दुर्लभ, असती कोटि कोटि ५३
सती सदा करे निज कुल प्रतिकार। असती हइले कभु नाहिक निस्तार
सतीर प्रशंसा राम सकल पुराणे। असतीर अपमान देख त्रिभुवने ५४
असती असत्यबादी, शुनह लक्षण। एक महादोष तार अधिक भोजन
याहा देखे ताहा खेते मने करे साध। रात्रि दिन खाय तबु करये बिबाद ५५
यत खाय, क्रमे क्रमे तत बाड़े आश। यार घरे हेन नारी तार सर्व्वनाश
ताहार उदरे यत सन्तान-सन्तति। मातृदोष तारा सब हय त कुमति ५६

पर यश-गौरव खत्म हो जाता है। राम ने कहा— आपने जो कुछ कहा, सत्य है। नारी का मनपसंद कोई एक विशेष पुरुष नहीं होता ॥ ४९ ॥ मुनि बोले, जिसका बड़ा भाग्योदय होता है, उसकी नारी ही लोभ-संवरण कर रह जाती है। संभोग में रमणी की अभिलाषा बढ़ जाती है। जीवन भर उसकी आशा पूरी नहीं होती ॥ ५० ॥ दिनोंदिन उसका लोभ बढ़ता जाता है, संयमित नहीं होता। यदि नारी चाहे तो उसे संयत कर सकती है। जो नारी पापकर्म में मति नहीं देती, उसी गुण-वती को उत्तम रमणी समझो ॥ ५१ ॥ हे रघुपति, सुनिये, सती के अनेक गुण होते हैं। बहुत खोजने पर भी एक सती नहीं मिलती। नारी अनेक लक्षणों वाली होती है, एक गुण वाली नहीं। जो सती होती है, वह सभी गुणों का आधार होती है ॥ ५२ ॥ सती के शरीर में महालक्ष्मी मूर्तिमती होती है, उसकी पूजा करने पर पाप खंडन होता है, दुर्गति नहीं होती। हज़ारों में कोई एक (सती) नारी मिलती है, सती मिलना दुर्लभ है, असती तो करोड़ों होती है ॥ ५३ ॥ सती सदैव अपने कुल की रक्षा करती है, असती होने पर कभी निस्तार नहीं होता। रामचन्द्र, सती की प्रशंसा सभी पुराणों में है। असती का अपमान भी तीनों लोकों में होता है ॥ ५४ ॥ असती नारियाँ असत्यवादी होती हैं, उनके लक्षण सुनो। उसका एक महादोष यह होता है कि वह अधिक भोजन करनेवाली होती है। जो देखती है, वही खाने को मन में अभिलाषा करती है। रात-दिन खाती रहती है, फिर भी विवाद करती है ॥ ५५ ॥ जितना खाती है, क्रमशः उतनी ही आशा बढ़ती रहती है। जिसके घर में ऐसी नारी होती है उसका सर्वनाश होता है। उसके पेट से जितनी संतान-संतति होती है, मातृ-दोष के कारण वे सभी दुर्मति होते

ये कर्म्मे प्रवृत्त हय, करे अनाचार। अनाचारे ब्रह्मशापे वंशेर संहार
विपरीत ब्रह्मशाप हय तार कुले। ब्रह्मशापे सवंशेते पड़े डाले मूले ५७
पापमति स्त्री-पुरुष येइ कुले थाके। पापे मजि तार वंश याय त नरके
अपकीर्ति गाय तार सकल संसार। मरिले नरके याय, नाहिक निस्तार ५८
असती देखिले पाप बाढ़ये विस्तर। सतीरे देखिले पाप पलाय सत्वर
सत्येर पालन करे, मिथ्या परित्याग। दिने दिने धर्म्म पथे बाड़े अनुराग ५९
धार्म्मिकेर वंशे जन्मि करे अनाचार। आपनार दोषे हय वंशेर संहार
मुनि पुत्र दशानन जन्म ब्रह्म-अंशे। अनाचार पापकर्म्मे सर्व्वलोके हिंसे ६०
सृष्टिरे सृजिया ब्रह्मा करेन पालन। विश्वश्रवा करे देख धर्म्म-उपासन
हेन अंशे जन्मि रक्षः करे कोन् कर्म्म। धर्म्मेर नाहिक लेश, सकलि अधर्म्म ६१
श्रीराम बलेन, तव नाहि अगोचर। रम्भार वृत्तान्त किछु कह अतः पर
मुनि बलिलेन, शुन पुराण-कथन। तदन्तरे रम्भावती करिल गमन ६२
शृङ्गारे रम्भार वेश हइल संचूर। स्वामीर चरण धरि कान्दिल प्रचुर
से नलकूवर बले, वेश केन आन। कार ठाँइ पाइयाछ एत अपमान ६३
कान्दिते कान्दिते रम्भा तार पाये पड़े। तव कोपानले प्रभु, त्रिभुवन पुड़े
एतदिन भ्रमि आमि त्रिभुवनमय। हेन अपमान मम कभु नाहि हय ६४

हैं ! ॥ ५६ ॥ जिस कार्य में वे प्रवृत्त होते हैं, अनाचार करते हैं। उनके अनाचार और ब्रह्मशाप से वंश का संहार हो जाता है। उसके कुल में विपरीत ब्रह्मशाप पड़ता है। ब्रह्मशाप से मूल-शाखाओं समेत सवंश नष्ट हो जाता है ॥५७॥ पापमति स्त्री-पुरुष जिस कुल में रहते हैं, पाप में डूबकर उसका वंश नरक में चला जाता है। उसकी अपकीर्ति समूचा संसार गाता रहता है। मरने पर वह नरक में जाता है, उसका निस्तार नहीं होता ॥ ५८ ॥ असती को देखने पर अनेक पाप बढ़ जाता है और सती को देखने पर पाप तुरन्त भाग जाता है। जो मिथ्या का परित्याग कर सत्य का पालन करते है, दिनों-दिन धर्म-मार्ग में उसका अनुराग बढ़ जाता है ॥ ५९ ॥ धार्मिक के वंश में जन्म लेकर जो अनाचार करता है, उसके अपने दोष से वंश का संहार हो जाता है। रावण मुनि-पुत्र था, ब्रह्मा के अंश से उसका जन्म हुआ था, वह अनाचार और पाप-कर्म से सारे लोगों की हिंसा करता था ॥ ६० ॥ देखो, सृष्टि की सर्जना कर ब्रह्मा पालन करते हैं, विश्वश्रवा भी धर्म-उपासना करते हैं, ऐसे पिता के अंश से जन्म लेकर राक्षस रावण कैसा कर्म करता है। उसमें धर्म का लेश मात्र नहीं है, सब कुछ अधर्म है ॥६१॥ श्रीराम ने कहा, मुनि, आपका अगोचर कुछ भी नहीं है। इसके पश्चात् रंभा का कुछ वृत्तान्त सुनाइये। मुनि बोले, पुराण-कथा, सुनो। उसके पश्चात् रंभावती वहाँ से चली ॥६२॥ संभोग के कारण रंभा का वेश कुरूप हो गया था। स्वामी के चरण पकड़ उसने बड़ा रुदन किया। तब उस नलकूबर ने पूछा, तुम्हारा वेश ऐसा दूसरा क्यों हो रहा है ? किससे तुम्हें इतना अपमान मिला है ! ॥ ६३ ॥ रो-रोकर रंभा उसके पैरों पर पड़ने लगी। कहने लगी, प्रभु, तुम्हारे कोपानल

कोथाकार कार्य्य कोथा बिधाता घटाय । आचम्बिते रावण आमार देखा पाय
ये दिन हइबे या बिधि सब जाने । दैवेर घटन हेन, बुझि अनुमाने ६५
एमत विपत्ति नाहि देखि कोन काले । पथे पेये रावण चापिया धरे कोले
धर्म्म लोप करिलेक बले चापि धरि । बलहीना नारी जाति कि करिते पारि ६६
देबता ना पारे तारे आनि नारी जाति । रावणेर हाते किसे पाब अब्याहति
यतेक मिनती करि तत कोप बाड़े । सप्त रात्रि पापिष्ठ आमारे नाहि छाड़े ६७
नलकूबर बले, रम्भा जानि तुमि सती । तब दोष नाहि देखि रावण दुर्म्मति
कुकर्म्म देखिया नलकूबरेर रोष । ध्यानेते जानिल से रम्भार नाहि दोष ६८
क्रोधे नलकूबर से लागिल ज्वलिते । रावणेरे शाप दिते जल निल हाते
आजि हैते शाप मोर हउक प्रचार । बले धरि रावण येइ करिबे शृङ्गार ६९
सेइ क्षणे मरिबेक, यावे दशमाथा । नलकूबरेर शाप ना हबे अन्यथा
रावणेर शापे हैल हृष्ट देवगण । सीतार सतीत्व-रक्षा एइ से कारण ७०
निद्रा हैते उठिल रावण रति-साधे । शाप शुनि अमनि से बसिल बिषादे
शुनिया रावण राजा दुःख भावे चिते । केन आइ लाम आमि हेन छार पथे ७१

नल में त्रिभुवन जलता है, इतने दिन मैं तीनों लोकों में भ्रमण करती थी, परन्तु ऐसा अपमान मेरा कभी नहीं हुआ था ।। ६४ ।। कहाँ का कार्य, विधाता कहाँ घटित करता है ! अचानक रावण ने मुझे देखा । जिस दिन जो जिस तरह से होनेवाला है, सब वह जानता है । मैंने अनुमान में समझा है, यह दैव की ही लीला है ।। ६५ ।। इस तरह की विपत्ति किसी काल में दिखाई नहीं पड़ी थी । मार्ग में रावण ने मुझे पाकर अंक में दबोच लिया । बलपूर्वक दबोच कर उसने मेरा धर्म-लोप कर डाला । मैं बलहीना नारी-जाति भला क्या कर सकती हूँ ।। ६६ ।। देवता भी उससे पार नहीं पाते, और मैं तो ठहरी नारी-जाति ! रावण के हाथ से भला कैसे बच सकती थी ? उससे जितनी विनती करती थी उसका क्रोध उतना ही बढ़ता जाता था । उस पापी ने मुझे सात रात तक नहीं छोड़ा ।। ६७ ।। नलकूबर बोला— रंभा, जानता हूँ, तुम सती हो, मैं तुम्हारा दोष नही देखता । रावण ही दुर्मति है । रावण का दुष्कर्म देख नलकूबर रुष्ट हो उठा । उसने ध्यान लगाकर जाना कि रंभा का कोई दोष नही है ।। ६८ ।। क्रोध के मारे नलकूबर जल उठा । उसने रावण को अभिशाप देने हेतु हाथ में जल लिया । (उसने शाप दिया) आज से मेरा यह अभिशाप प्रचारित होवे ! रावण यदि बलपूर्वक किसी से संभोग करेगा ।। ६९ ।। तो उसी क्षण वह मर जायेगा, उसके दसों सिर गिर पड़ेंगे । नलकूबर का यह अभिशाप अन्यथा नहीं होगा । रावण को शाप मिलने के कारण देवगण हर्षित हुए । सीता की सतीत्व-रक्षा का कारण भी यही है ।। ७० ।। रावण संभोग की कामना से जब नींद से जगा, तभी शाप सुनकर वह विषाद से बैठ गया । अभिशाप की बात सुनकर राजा रावण मन में [illegible] होकर सोचने लगा— मैं भला ऐसे

घोर शाप दिल मोरे कुबेर-नन्दन। बले रति करिते ना पारिब कखन
यदि अन्य शाप दित ताहा प्राणे सय। घोर शाप दिल मोरे, पुड़िछे हृदय ७२
एइ से रहिल मोर मने अनुताप। भाइपो हइया मोरे दिल हेन शाप
अगस्त्येर कथा शुनि रामेर उल्लास। आर किछु कह मुनि, तार इतिहास ७३
रम्भारे धरिया कोथा गेल से रावण। कह कह मुनि, शुनि पुराण-कथन

सूर्पनखार वैधब्येर बिबरण

मुनि वले, दशानन देशे देशे चले। एक दिन उठिल से गगन मण्डले १
तिन कोटि दैत्य तथा काल कुलपति। रावणेर वेड़े तार सब सेनापति
तिन कोटि दैत्य तारा यमेर दोसर। रावणेरे बाणे विन्धि करिल जर्ज्जर २
जिनिते ना पारे दैत्ये चिन्तित रावण। अग्निबाण धनुकेते युड़िल तखन
अग्निबाण एड़िलेक अग्नि अबतार। अग्नि-बाणे दैत्य सब हइल संहार ३
एक बाणे तिन कोटि करिल संहार। रावण बलिल, लुट दैत्येर भाण्डार
पाइया राजार आज्ञा निशाचरगण। बाछिया बाछिया लुटे रमणी रतन ४
से सबार रूप देखि कामे दहे मन। शाप भये शृङ्गार ना करे दशानन

बुरे मार्ग में क्यों आया ? ॥ ७१ ॥ कुबेर-नन्दन नलकूबर के मुझे घोर शाप दिया है, अब किसी से मैं बलपूर्वक संभोग नहीं कर सकता। यदि वह मुझे कोई दूसरा शाप देता तो मेरे प्राण उसे सह लेते। उसने मुझे घोर शाप दे दिया, इससे हृदय जल रहा है ॥ ७२ ॥ मेरे मन में यही अनुताप रह गया, मेरा भतीजा होकर भी उसने मुझे ऐसा अभिशाप दे दिया। अगस्त्य की बात सुनकर रामचन्द्र उल्लसित हुए। मुनि, उसका इतिहास कुछ और कहिए ॥ ७३ ॥ रंभा को पकड़ने के बाद रावण कहाँ गया ? कहिये, कहिए मुनि, मैं पुराण-कथन सुनूं।

शूर्पणखा के वैधव्य का विवरण

मुनि बोले, दशानन देश-देश में जाता। एक दिन वह गगन-मंडल पर चढ़ गया ॥ १ ॥ तीन करोड़ दैत्य और काल-कुलपति वहाँ थे, उसके सारे सेनापतियों ने रावण को घेर लिया। वे तीन करोड़ दैत्य यमराज के बराबर थे। उन सबने रावण को बाणों से बेधकर जर्जर कर डाला ॥ २ ॥ उन दैत्यों को जीत न पाकर रावण चिन्तित हुआ। तब उसने धनुष पर अग्निबाण चढ़ाया। उसने अग्नि-अवतार अग्नि-बाण छोड़ा। अग्निबाण से सभी दैत्यों का संहार हो गया ॥ ३ ॥ एक ही बाण से तीन करोड़ दैत्यों का संहार कर डाला। रावण बोला— दैत्यों का भंडार लूट लो। राजा की आज्ञा पाकर निशाचर चुन-चुनकर रमणी, रत्न लूटने लगे ॥ ४ ॥ उन रमणियों को देख कामवश रावण का मन जल रहा था, पर शाप-भय से वह संभोग नहीं करता था। रावण ने

रावण प्रस्थान करे देशे कुतूहले। लुटिया सुन्दरी गणे रथे निल तुले ५
से-सबार नेत्रजले रथ खान तिते। श्रावण मासेर धारा बहे येन स्रोते
कन्यागणे प्रबोधे, प्रबोध नाहि माने। कान्दितेछे केवल रावण-बिद्यमाने ६
रावण प्रार्थना करे चाहि रतिदान। पितृ-मातृ शोके कन्यागण हत ज्ञान
रावण भाविछे यदि ना हइत शाप। एतक्षण तबे केबा सहे काम ताप ७
घोर शाप दिल मोरे कुबेर-नन्दन। बले धरि शृङ्गार ना करि से कारण
कठिन कामिनी जाति सृजिल बिधाता। अन्तरे पुड़िया मरे, मुखे नाहि कथा ८
महोदर बले, राजा करह श्रवण। लज्जा भये तोमारे ना भजे कन्यागण
एके कुल बाला, ताहे मने भय बासे। सब कन्या भजिबेक तुमि गेले देशे ९
लङ्काय तोमार दश सहस्र ये राणी। रूपे गुणे कुले-शीले त्रिभुवन जिनि
एत स्त्री थाकिते तबु ना पूरिल साध। रम्भावती हरि केन घटाले प्रमाद १०
महोदर कहे यत, रावण लज्जित। देशेते प्रस्थान करे ह'ये त्वरान्वित
दिग्विजय करिलेक शतेक वत्सर। उपस्थित हइल लङ्काले लङ्केश्वर ११
सङ्गे छिल दैत्य कन्या परमा सुन्दरी। लइया से सब कन्या गेल अन्तःपुरी
रावण याहार पाय अङ्गीकार-बाणी। अन्तःपुरे ल'ये तारे करे मुख्या राणी १२

कौतूहल से अपने देश को प्रस्थान किया और सुन्दरियों को लूटकर रथ पर चढ़ा लिया ॥ ५ ॥ उनके आँसुओं से रथ भीग गया, मानो सावन महीने की धारा प्रवाहित हो रही थी। वह कन्याओं को सांत्वना देता था, पर वे शान्त नहीं होती थीं। वे केवल रावण के समक्ष रो रही थी ॥ ६ ॥ उनसे रावण संभोग-याचना करता था, कन्याएँ पिता-माता के शोक से बेसुध थीं। रावण सोच रहा था, अभिशाप न होता, तो इतनी देर तक कौन काम की ज्वाला सहता ? ॥ ७ ॥ कुबेर-नन्दन ने मुझे घोर अभिशाप दे दिया है। इसी कारण किसी को बलपूर्वक पकड़कर संभोग नहीं कर सकता। विधाता ने नारी-जाति को कठिन बनाकर सर्जन किया है। वे अन्तर् में जलती रहती हैं, पर मुँह से नहीं बोलतीं ॥ ८ ॥ महोदर ने कहा— राजा, सुनिए, ये कन्याएँ लज्जा के कारण आपको नहीं भजतीं। एक तो ये कुल-बालाएँ हैं, दूसरे इनके मन में आतंक बसा हुआ है, आप इन्हें लेकर यदि देश चले जायँ तो ये सारी कन्याएँ आपको भजेंगी ॥ ९ ॥ लंका में दस सहस्र रानियाँ हैं, जो रूप-गुण-शील में त्रिभुवन जीतनेवाली हैं। इतनी स्त्रियों के रहते भी आपकी साध पूरी नहीं हुई। रंभावती को हरण कर अपना अनिष्ट क्यों किया ? ॥ १० ॥ महोदर जितना कहता था, रावण उतना ही लज्जित होता था। उसने जल्दी से देश को प्रस्थान किया। उसने सौ वर्षों तक दिग्विजय किया। उसके पश्चात् लंकेश्वर लंका में उपस्थित हुआ ॥ ११ ॥ उसके साथ परम सुन्दरी दैत्यकन्याएँ थीं। उन कन्याओं को लेकर वह अन्तःपुर में चला गया। रावण जिससे स्वीकृति पा लेता, उसे अन्तःपुर में ले जाकर मुख्य रानी बना लेता ॥ १२ ॥ जिस कन्या से उसे

ये कन्यार रावण ना पाय अङ्गीकार। थुइया अशोक बने करये प्रहार
रावण प्रतापी अति स्वर्ण लङ्कापुरे। स्त्री-दश-हाजार-सह सुखे केलि करे १३
सूर्पनखा नामे छिल रावण भगिनी। रावणेर काछे कान्दे, चक्षे पड़े पानि
सूर्पनखा बले, भाइ, तुमि मोर अरि। बिधबा करिले मोरे पति मोर मारि १४
तिन कोटि दैत्य ये मारिले तुमि बले। मारिले आमार स्वामी ताहार मिशाले
पात्र-मित्र-आदि आर बिभीषण भाइ। सकले बिबाह दिल दानबेर ठाँइ १५
ये दिन बिबाह, से दिन हइनु राँड़ी। सागरे प्रबेश करि आमि प्राण छाड़ि
सूर्पनखा हाते धरि बले रक्षो राज। अज्ञाते हइल कर्म्म, नाहि देह लाज १६
दुइ भाइ आछे खर आर ये दूषण। ताहारा तोमारे सदा करिबे पालन
स्वतन्त्रा हइया तुमि थाक जनस्थाने। स्वतन्त्रार नामे राँड़ी हृष्ट हय मने १७
आर यत राँड़ी घरे बञ्चये यौबन। स्वतन्त्रा करिल तारे कुबुद्धि रावण
सूर्पनखा चलिल ये रावण-आदेशे। सबशे रावण मरे से राँड़ीर दोषे १८
से राँड़ीर नाक-काण काटिल लक्ष्मण। ताहा हैते सवंशेते मरिल रावण
अगस्त्येर कथा शुनि श्रीरामेर हास। कह कह बलि राम करिला प्रकाश १९

स्वीकृति नहीं मिलती थी, उसे अशोक वन में रखकर प्रहार करता था। स्वर्णमयी लंका में रावण बड़ा ही प्रतापी था। वह दस हज़ार स्त्रियों के संग सुखपूर्वक केलि किया करता ॥ १३ ॥ शूर्पणखा नाम की रावण की बहिन थी। वह रावण के पास आकर रोने लगी। उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे। शूर्पणखा बोली, भाई, तुम मेरे शत्रु हो। तुमने मेरे पति को मारकर विधवा कर डाला ॥ १४ ॥ तुमने बलपूर्वक जिन तीन करोड़ दैत्यों को मारा है, उन्हीं में मिले हुए मेरे पति को भी तुमने मार डाला। यहाँ के सभी सामन्तों, इष्ट-मित्रों और भाई विभीषण आदि सबने मिलकर मुझे उस दानव से विवाह कराया था ॥ १५ ॥ विवाह जिस दिन हुआ, उसी दिन मैं राँड़ हो गयी। अब सागर में प्रवेश कर मैं अपने प्राण दे दूँगी। शूर्पणखा का हाथ पकड़कर राक्षसराज रावण बोला— यह कर्म मेरे अनजाने हो गया, मुझे लज्जित न करो ॥ १६ ॥ मेरे दो भाई खर और दूषण सदैव तुम्हारा पालन करेंगे। तुम स्वतंत्र होकर जन-स्थान में निवास करो। स्वतंत्र रहने की बात से वह राँड़ शूर्पणखा मन में हर्षित हुई ॥ १७ ॥ और जितनी विधवा नारियाँ हैं, सब घर में ही रहकर अपना यौवन बिताया करती हैं। परन्तु कुबुद्धि रावण ने उसे स्वतंत्र कर दिया। रावण के आदेश से शूर्पणखा वहाँ से चली। उसी राँड़ के दोष से रावण सवंश मारा गया ॥ १८ ॥ उस राँड़ के नाक-कान लक्ष्मण ने काट डाले, उसी के फलस्वरूप रावण सवंश मारा गया। अगस्त्य की बात सुनकर श्रीराम हँसने लगे। 'मुनि, (आगे की कथा) कहिए, कहिए'—कहकर वचन प्रकट किया ॥ १९ ॥

रावणेर स्वर्ग जिनिते गमन

अगस्त्य बलेन, राम, कर अबधान । इन्द्र-रावणेर युद्ध कहि तब स्थान
कौतुके रावण-राजा आछे लङ्कापुरे । देव-दानवेर कन्या लये केलि करे १
परनारी लये केलि करे दशानन । हेन काले रावणेरे बले बिभीषण
बलेते हरिया तुमि आन परनारी । मधुदैत्य आसि तव भग्नी कैल चुरि २
यत पाप कर तुमि, तोमार से फले । कुम्भनसी भग्नी दैत्य हरे निल बले
प्रहस्त मामार कन्या नामे कुम्भनसी । रात्रिते करिल चुरि मधुदैत्य आसि ३
अपमान शुनि राजा कहिछे बिषादे । लङ्कापुरे कि करिते आछे मेघनादे
सुमेरु काटिया पाड़े मेघनाद बाणे । एत अपमान करे तार विद्यमाने ४
तुमि आछ बिभीषण, भाइ, सहोदर । एत सब बीर आछे लङ्कार भितर
कारो शक्ति नाहि, युद्ध करे दैत्य सने । तोमा सबा कारे धिक्, कि फल जीबने ५
बीर कुम्भकर्ण यदि लङ्कापुरे जागे । भुबनेर शत्रु नाहि आसे तार आगे
दिग्विजय करि आसिलाम त्रिभुबन । थाकुक दैत्येर कथा, भागे देवगण ६
त्रिभुबन जिनिया आइनु एकेश्वर । भगिनी राखिते नार घरेर भितर
कुम्भकर्ण आर आमि आछि दुइजन । मेघनाद प्रभृतिर शक्ति अकारण ७

रावण का स्वर्ग-विजय हेतु गमन

अगस्त्य ने कहा, राम, सुनो ! तुमसे इंद्र और रावण के युद्ध का वर्णन कर रहा हूँ । राजा रावण लंकापुरी में बड़े ही आनन्द से रह रहा था । वह देव-दानवों की कन्याओं को लेकर केलि करता था ॥ १ ॥ पर-नारियों को लेकर दशानन केलि करता था । उसी समय विभीषण ने रावण से कहा— तुम बलपूर्वक पर-नारियों को हरण कर ले आते हो, उधर मधु दैत्य आकर तुम्हारी बहिन को चुरा ले गया है ॥ २ ॥ तुम जितने पाप करते हो, उसी के फलस्वरूप वह दैत्य बहिन कुंभीनसी को बलपूर्वक हर ले गया है । मामा प्रहस्त की कुंभीनसी नाम की कन्या को मधु दैत्य रात को आकर चुरा ले गया ॥ ३ ॥ यह अपमान की बात सुनकर राजा रावण ने विषाद से कहा—— भला लंकापुरी में मेघनाद किसलिए है ? मेघनाद अपने बाणों से सुमेरु को ढहा सकता है । उसके रहते मधु दैत्य ने इतना अपमान किया ? ॥४॥ तिस पर सहोदर भाई विभीषण तुम भी हो, लंका में इतने सारे वीर हैं । क्या किसी की शक्ति नहीं थी कि उस दैत्य के साथ युद्ध करते ? तुम सबको धिक्कार है, तुम्हारे जीवित रहने से क्या फल है ? ॥५॥ वीर कुम्भकर्ण अगर लंकापुरी में जागता रहे तो संसार का कोई शत्रु उसके सामने नहीं आ सकता । मैं तीनों लोकों का दिग्विजय कर आया हूँ । दैत्यों की तो बात ही क्या, देवगण भी भाग गये हैं ॥ ६ ॥ मैं अकेले त्रिभुवन जीत आया हूँ । तुम सब घर के अन्दर बहिन को रख नहीं सकते ? कुम्भकर्ण और मैं क्या केवल ये ही दो रह गये हैं ? मेघनाद आदि की शक्ति तो व्यर्थ है ॥ ७ ॥ लज्जित होकर विभीषण ने कहा—— इसमें

लज्जापेये रावणेरे बले विभीषण। कारो दोष नाहि, दोष देह अकारण
मेघनाद यज्ञ करे हइया तपस्वी। फल-मूल खाइ आमि, थाकि उपवासी ८
कुम्भकर्ण निद्रा याय हैया अचेतन। सन्धान पाइया हाना दिल दैत्यगण
रावण बले, यज्ञ केन करे मेघनाद। यज्ञ लागि लङ्कापुरे एतेक प्रमाद ९
मेघनाद-यज्ञ कथा शुनिया रावण। विभीषण-सह तथा करिल गमन
विचित्र यज्ञेर स्थान वटवृक्ष तला। यज्ञ करे मेघनाद नामे निकुम्भिला १०
अनाहारे यज्ञशाले रात्रिदिन थाके। द्वादश वत्सर नारी मुख नाहि देखे
स्वर्ण नामे आछिल प्रधान पुरोहित। ताहारे लइया याग करये त्वरित ११
न्यास करि पुरोहित अग्निकुण्ड पूजे। अग्नि आसि अधिष्ठान हन मन्त्र तेजे
अधिष्ठित ह'ये अग्नि रहिला सम्मुखे। मेघनाद पूजा देय दशानन देखे १२
यज्ञेर आहुति खेये अग्निर सन्तोष। मेघनादे वर देन पेये परितोष
अग्नि बले मेघनाद वर दिनु तोरे। यज्ञ करि यथा-तथा याय युझिवारे १३
पराजय नाए हइबे दिनु आमि वर। अन्तरीक्षे युझिवे रिपु-अगोचर
यज्ञे आसि वर दिव तव विद्यमाने। एतेक बलिया अग्नि गेल निजस्थाने १४
चमत्कार लागिल ये देखिया रावणे। रावण कहिल पुत्र, चल मोर सने
त्रिभुवन जिनिलाम आमि एकेश्वर। तोमारे लइया आजि जिनि पुरन्दर १५

किसी का दोष नहीं, तुम बिना कारण दोष दे रहे हो। मेघनाद तो तपस्वी बनकर यज्ञ कर रहा है। मैं फल-मूल खाकर उपवासी रहता हूँ ॥ ८ ॥ कुम्भकर्ण अचेत-सा निद्रित है। इन बातों का पता लगाकर दैत्यों ने लंका पर आक्रमण किया। रावण बोला— मेघनाद यज्ञ किसलिए कर रहा है ? उसके यज्ञ करने के कारण ही लंकापुरी में इतना अंधेर मचा है ॥ ९ ॥ मेघनाद के यज्ञ करने की बात सुन रावण विभीषण के साथ वहाँ गया। वट-वृक्ष के नीचे यज्ञ का विचित्र स्थान बना हुआ था। निकुंभिला नामक स्थान में मेघनाद यज्ञ कर रहा था ॥ १० ॥ वह विना खाये दिन-रात वहाँ रह रहा था, बारह वर्ष तक उसने नारी का मुँह नहीं देखा था। स्वर्ण नाम का उसका मुख्य पुरोहित था, उसे लेकर वह शीघ्रता से यज्ञ कर रहा था ॥ ११ ॥ वह पुरोहित न्यास करते हुए अग्निकुण्ड की पूजा करता, उनके मन्त्र-बल से अग्निदेव आकर वहाँ अधिष्ठित थे। अग्निदेव अधिष्ठित हो उसके सम्मुख स्थित थे। रावण ने देखा, मेघनाद उनको पूजा चढ़ा रहा है ॥ १२ ॥ यज्ञ की आहुति खाकर अग्निदेव संतुष्ट हुए तथा परितुष्ट हो मेघनाद को वर दिया। अग्नि देव बोले— मेघनाद, तुम्हें मैं वर दे रहा हूँ, तुम यज्ञ करने के पश्चात् जहाँ चाहो युद्ध करने जा सकते हो ॥ १३ ॥ मैं वर देता हूँ, तुम्हारी पराजय नहीं होगी। तुम शत्रुओं से ओझल रहकर अंतरिक्ष से लड़ाई कर सकोगे ! यज्ञ में तुम्हारे सम्मुख आकर मैं वर दिया करूँगा। यों कहकर अग्निदेव अपने स्थान को चले गये ॥ १४ ॥ वह देखकर रावण को बड़ा विस्मय हुआ। रावण बोला, पुत्र, मेरे साथ चलो, मैंने अकेले ही त्रिभुवन जीत लिया है। अब तुम्हारे संग मैं आज इन्द्र को जीतूँगा ॥१५॥

त्रिभुवन उपरेते इन्द्र हन राजा। इन्द्रेरे जिनिले सवे करे मोर पूजा
साक्षाते देखिब तब यज्ञेर सुफल। इन्द्रसने किरूपेते युझ कत बल १६
आपन कटक लये चलह सत्वर। शीघ्र गति उठ गिया रथेर ऊपर
चौद्दवर्ष अनाहारे आछे मेघनाद। मधुपान करिया घुचिल अबसाद १७
नय हाजार स्त्री तार परमा सुन्दरी। देव-दानवेर कन्या रूपे विद्याधरी
अन्तःपुरे नाहि याय से चौद्द बत्सर। प्रकाश ना करे लाछे राजार गोचर १८
नारी सम्भाषणे पुत्र नाहि गेल लाजे। यज्ञस्थल हैते बीर युझिबारे साजे
शतकोटि हस्ती नड़े लक्ष कोटि घोड़ा। तेर अक्षौहिणी साजे जाठि ओ झकड़ा १९
सारथि जानिल आजि संग्रामे गमन। संग्रामेर रथखान करिल साजन
साजाये आनिल रथ अति मनोहर। सग्रामेर अस्त्र तुले रथेर उपर २०
बीर दापे मेघनाद रथे गिया चड़े। हस्ती अश्व ठाट सैन्य सङ्गे सब नड़े
निज ठाटे मेघनाद करिछे साजनि। बाद्य भाण्ड सङ्गे निल तिन अक्षौहिणी २१
राजार छत्रिश कोटि मुख्य सेनापति। साजिया रावण-सङ्गे चले शीघ्रगति
महोदर महापाश खर ओ दूषण। ताल भङ्ग सिंहबर घोर-दरशन २२
महाबाहु शुकबाहु यज्ञधूम आर। माकामुख मेघमाली बिक्रमे अपार
शार्द्दुल सारण शुक चले विद्युन्माली। शोणिताक्ष बिड़ालाक्ष बले महाबली २३

इन्द्र त्रिभुवन में सबसे बढ़कर राजा हैं। इंद्र को जीत लेने पर सभी मेरी पूजा करेंगे। मैं उस युद्ध में तुम्हारे यज्ञ का सुफल देखूंगा कि तुम इद्र से किस तरह लड़ते हो, तुममें कितनी शक्ति है ? ॥ १६ ॥ अपनी सेना लेकर तुम शीघ्र चलो ! तुरन्त रथ पर सवार हो जाओ। मेघनाद चौदह वर्ष अनाहारी था। मधु-पान कर उसकी थकावट मिट गयी ॥१७॥ उसकी परम-सुन्दरी नौ हज़ार स्त्रियाँ थीं। जो देव-दानवों की कन्याएँ थीं, रूप में वे विद्याधरियों-सी थीं। वह चौदह वर्ष अन्तःपुर में नहीं गया, यह बात उसने लज्जा के कारण राजा रावण से प्रकट नहीं किया ॥ १८ ॥ लाज के मारे पुत्र मेघनाद अपनी नारियों से संभाषण हेतु नहीं गया ! वह वीर यज्ञ-स्थली से ही युद्ध करने हेतु सजकर चला ! उसके साथ सौ करोड़ हाथी, लाख करोड घोड़े चले ! शूल-बरछे लेकर तेरह अक्षौहिणी सेना चली ॥ १९ ॥ सारथी ने समझा, आज मेघनाद संग्राम करने चला है। उसने संग्राम का रथ सजाया। अति मनोहर रथ सजाकर सारथी ले आया। उसने संग्राम के अस्त्रों को रथ पर चढ़ाया ॥ २० ॥ वीर-दर्प से मेघनाद रथ पर सवार हुआ। हाथी-घोड़े-पैदल समेत सारी सेना चल पड़ी। अपनी सेना को मेघनाद ने सजाया। अपने संग उसने तीन अक्षौहिणी बाद्य-भाण्ड-नगाड़े आदि ले लिये ॥ २१ ॥ राजा रावण के छत्तीस करोड़ मुख्य सेनापति थे। वे सजकर रावण के साथ तेज़ी से चले। महोदर, महापार्श्व, खर, दूषण, तालभंग, सिंहवर आदि देखने में भयंकर थे ॥ २२ ॥ महाबाहु, शुकबाहु, यज्ञधूम, माकामुख और मेघमाली अपार विक्रमी थे। शार्दूल, शुक, सारण, विद्युन्माली भी चले, शोणिताक्ष, बिड़ालाक्ष आदि बल में महाबली थे ॥ २३ ॥ विक्रम-केशरी

चले से निशठ शठ विक्रम-केशरी। रावणेर सैन्य यत कहिते ना पारि
रथे अश्वे गजेते कुमार भागे नड़े। शिक्षामत ये याहार बाहनेते चड़े २४
चले अक्षकुमारादि बीर देवान्तक। त्रिशिरा ओ अतिकाय चले नरान्तक
नाना अस्त्रे साजि चले कुमार त्रिशिरा। रथेर साजनि कत माणिक्यादि हीरा २५
कुम्भकर्ण पुत्र कुम्भ निकुम्भ दुजन। याहादेर भयेते कम्पित त्रिभुवन
कनक-रचित रथ प्रभाकर-ज्योति। चड़े ताहे प्रधान यतेक सेनापति २६
तिन कोटि साजिया चलिल तेजी घोड़ा। शत अक्षौहिनी ठाट जाठि ओ झकड़ा
मुद्गर मुषल टाङ्गि खाण्डा खरशान। बाछिया बाछिया तोले खरतर बाण २७
मकराक्ष चलिल दुर्ज्जय धनुर्द्धर। तार सम बीर नाहि लङ्कार भितर
कुम्भकर्ण निद्रा भङ्ग तैल सेइ दिने। इन्द्रे जिनिबारे चले रावणेर सने २८
एक दिन जागे छय मासेर अन्तर। निद्राभङ्ग हये उठे क्षुधाय कातर
छय मास क्षुधाते ना खाय अन्न जल। निद्रा भाङ्गि उठे बीर क्षुधाय बिकल २९
पान करे सात शत मदेर कलसी। पर्ब्बत-प्रमाण मांस खाय राशि राशि
अर्द्ध लङ्कार भोग करिल भक्षण। साजिल से कुम्भकर्ण करि बारे रण ३०
भूमि कम्प हय येन देखि भय करे। टलमल करे लङ्का कटकेर भरे
रावणेरे रथ ल'ये योगाय सारथि। राजहंस बहे रथ पवनेर गति ३१

शठ और निशठ भी चले। रावण की सेना कितनी थी, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। रथों, घोड़ों और हाथियों पर सवार कुमारगण तेज़ी से चल रहे थे। अपनी शिक्षा के अनुसार वे अपने-अपने वाहनों पर चढ़े थे ॥ २४ ॥ अक्षकुमार, वीर देवान्तक, त्रिशिरा, अतिकाय, नरान्तक आदि चले। कुमार त्रिशिरा अनेक अस्त्रों से सजकर चला। उसका रथ अनेक मणि-माणिक-हीरों से सजाया गया था ॥ २५ ॥ कुंभकर्ण के दो पुत्र कुम्भ और निकुंभ, जिनके भय से त्रिभुवन काँपता था, वे भी चले। सूर्य के समान ज्योतिर्मय स्वर्ण-रचित रथ पर सभी प्रमुख सेनापति चढ़कर चले ॥२६॥ तीन करोड तेज़ घोड़े सजाकर चले, भाले और बरछे लिये सौ अक्षौहिणी सेना चल पड़ी। मुद्गर, मूसल, कुठार, खड्ग, तलवार तथा चुन-चुनकर नुकीले बाण उन सबने उन पर चढ़ा लिया ॥ २७ ॥ दुर्जेय धनुर्धर मकराक्ष, जिसके बराबर कोई वीर लंका में न था, चल पड़ा। उसी दिन कुंभकर्ण नींद से जगा था। वह भी इन्द्र पर विजय पाने हेतु रावण के संग चल पड़ा ॥ २८ ॥ वह छः महीने में एक दिन जगता था। नींद से जगते ही वह भूख से कातर हो उठता था। छः महीने भूखा रहकर वह अन्न-जल कुछ नहीं खाता था ! निद्रा-भंग होते ही वह वीर क्षुधा से व्याकुल हो उठता था ॥२९॥ वह मदिरा से भरे सात सौ घड़े पी डालता था। पर्वतों जैसी मांस की ढेरियाँ खा जाता था। समूची लंका के आधे भोग्य-सामग्रियों को उसने खा डाला। इसके पश्चात् कुम्भकर्ण युद्ध करने को सज्जित होकर चला ॥ ३० ॥ उस सेना को देखकर भय के मारे लगता था मानो भूकम्प हो रहा हो। सेना के भार से लंका हिल उठी ! सारथी ने रावण के रथ को लाकर खड़ा किया। उस पवन

हस्ती अश्व नड़े ठाट कटक-अपार । सप्तद्वीपा पृथिवीते लागे चमत्कार
इन्द्रे जिनिबारे करे एतेक साजनि । निज ठाट रावणेर शत अक्षौहिणी ३२
इन्द्रे जिनिबारे सबे करिल गमन । चारिदिके नाना शब्दे बाजिछे बाजन
शत लक्ष काँसि, तिन लक्ष करताल । सहस्रेक घण्टा बाजे शुनिते रसाल ३३
भेरी ओ झाँझरी बाजे तिन कोटि काड़ा । आगे चले लक्ष लक्ष दामामा दगड़ा
खञ्जनी खमक बाजे लक्ष लक्ष बीणा । असंख्य राक्षसी ढाक ना हय गणना ३४
ढेमचा-खेमचा बाजे, झम्प कोटि कोटि । सात लक्ष दगड़ेते घन पड़े काठि
बिरानब्बइ लक्ष बीणा, तिन कोटि शङ्ख । दोहारी मोहारी शाणी गणिते असंख्य ३५
पाखोज सेतारा ढोल तिन लक्ष काँसि । खञ्जनीते मिलाइते दुइ लक्ष बाँशी
गभीर शब्देते बाजे असंख्य मादोल । प्रलय कालेते येन हय गण्डगोल ३६
रावणेर साजने देवेर चमत्कार । महाशब्दे रथेते सागर हैल पार

मधु दैत्येर सहित रावणेर मिलन

मनेते भाबिया तबे बले लङ्केश्वर । आगे मधु दैत्य जिनि, पिछे पुरन्दर १
सागर हइया पार चले सैन्य त्वरा । चक्षुर निमिषे येन नगर मथुरा

जैसे गतिमान रथ को राज-हंस ढोया करते थे ।। ३१ ।। हाथी, घोड़े आदि समेत अपार सेना चल पड़ी । सप्त-द्वीपा पृथ्वी पर वह विस्मय-कारी लगती थी । इन्द्र को जीतने के लिए ऐसी सज्जा रावण ने की । रावण की अपनी सेना सौ अक्षौहिणी थी ।। ३२ ।। सब इन्द्र को जीतने हेतु चल पड़े । चारों ओर अनेक प्रकार के शब्द करते हुए बाजे बज रहे थे । सौ लाख घंटियाँ, तीन लाख करताल, हजारों घण्टे बज रहे थे, जो सुनने में बड़े मधुर थे ।। ३३ ।। तीन करोड़ भेरी, झाँझरी और काढ़ा (कटाह) बज रहे थे, उनके आगे-आगे लाखों दमामे-दगड़े (विशाल नगाड़े) बजते चल रहे थे । खंजड़ी, खमक (खंजड़ी-जैसा बाजा) बज रहे थे । लाखों वीणाएँ बजती थीं, राक्षसी-ढोल तो अनगिनत थे जिनकी गणना नहीं हो सकती थी ।। ३४ ।। ढेमचा-खेमचा (डुग्गी जैसे बाजे) करोड़ों झम्प (झाँझ) बज रहे थे । सात लाख नगाड़ों पर लगातार डंडे पड़ रहे थे । बानबे लाख वीणा, तीन करोड़ शंख, तथा दोहारी, मोहारी और शाणी नाम के बाजे अनगिनत थे ।।३५।। पखावज, सितार, ढोल, तीन लाख काँसे के घटे और खँजड़ियों के लय में मिलकर दो लाख बंशियाँ बज रही थीं । गंभीर नाद से असंख्य मृदंग बज रहे थे, प्रलयकाल-जैसा कोलाहल गूँजने लगा ।। ३६ ।। रावण की सेना की सजावट देखकर देवगण विस्मित हो उठे । रावण की सेना घोर नाद करती हुई सागर पार हुई ।

मधु दैत्य के साथ रावण का मिलन

तब मन में सोचकर लंकेश्वर बोला, पहले मधु दैत्य को जीत लूँ, इसके पश्चात् पुरन्दर को जीतूँगा ।। १ ।। सागर पार कर उसकी

घेरिल मथुरापुरी राक्षस सकल। सुखे निद्रा याय मधु दैत्य महाबल २
निद्राय कातर दैत्य खाटेर उपरि। कुम्भनसी बाहिर हइल एकेश्वरी
रावण बले, कह भगिनि, दैत्य गेल कोथा। आजि देखा पाइले काटिब तार माथा ३
आमि यदि थाकिताम लङ्कार भितर। सेइ दिन पाठाताम तारे यमघर
रावणेर कथा शुनि कुम्भनसी भाषे। पलाइया गेल दैत्य तोमार तरासे ४
तोमार बाणेते भाइ कारो नाहि रक्षा। राँड़ी कैले सहोदरा भग्नी सूर्पणखा
तार स्वामी मारिले, हइया महाराज। मोरे राँड़ी करि भाइ, साधिबे कि काज ५
धर्म्मपथे रहियाछे पति-से आमार। सम्मुखे दाण्डाये एइ भागिना तोमार
आपनार कथा भाइ बलिह आपनि। चौद्द हाजार स्त्री तव बिभा कय राणी ६
तुमि बले हरि आनि परेर सुन्दरी। सबे मात्र बिभा तव राणी मन्दोदरी
हइले तोमार कोप कम्पे देवगण। अनन्त बासुकि भागे दैत्य कोन जन ७
कोप छाड़ मोरे चाहि देह स्वामी दान। लवण-नामेते पुत्र देख विद्यमान
कुड़िपाटि दन्त मेलि दशानन हासे। केतकी कुसुम येन फुटे भाद्रमासे ८
दशानन बले आमि नामारिव प्राणे। इन्द्रे जिनिबारे याब, याक मोर सने
कुम्भनसी चलिल रावण आज्ञा पेये। शुयेछिल मधु दैत्य, तथा गेल धेये ९

सेना तेज़ी से चली। पलक मारते ही मानो वह मथुरा में पहुँच गयी। सारे राक्षसों ने मथुरापुरी को घेर लिया। वहाँ महाबली मधु दैत्य सुखपूर्वक निद्रा में था ॥ २ ॥ निद्रा से बेसुध वह दैत्य चारपाई पर पड़ा था। कुम्भीनसी अकेले बाहर निकली। रावण ने कहा— बहिन बताओ, वह दैत्य कहाँ गया ? आज उससे भेंट होने पर सिर काट लूँगा ॥ ३ ॥ अगर मैं लंका में रहता तो उसी दिन उसे यमलोक भेज देता। रावण की बात सुनकर कुम्भीनसी बोली— वह दैत्य तुमसे भयभीत होकर भाग गया है ॥ ४ ॥ भाई, तुम्हारे बाण से कोई बच नहीं सकता। तुमने अपनी बहिन शूर्पणखा को भी विधवा कर डाला। महाराज होकर उसके पति को मार डाला। अब मुझे विधवा बनाकर भाई, तुम कौन सा कार्य सिद्ध करोगे ? ॥ ५ ॥ मेरा वह पति धर्म-मार्ग में है। तुम्हारे सम्मुख यह तुम्हारी भगिनी खड़ी है। भाई, आप अपनी बात स्वयं बताओ, तुम्हारी चौदह हज़ार स्त्रियाँ हैं, उनमें कितनी रानियों को तुम विवाह कर लाये हो ? ॥ ६ ॥ दूसरों की सुन्दरियों को बलपूर्वक तुम हर लाये हो। केवल रानी मन्दोदरी तुम्हारी विवाहिता है। तुम्हारा कोप होने पर देवगण काँपते है। अनन्त वासुकी भागते हैं, फिर उस दैत्य की तो बात ही क्या है ? ॥ ७ ॥ मेरी ओर देखते हुए क्रोध छोड़ दो और मुझे स्वामी का दान करो। देखो यह लवण नाम का पुत्र तुम्हारे सामने है। तब रावण दाँतों की बीसों पंक्तियाँ निकाल कर हँसने लगा। लगता था, मानो भादों महीने में केतकी के फूल खिले हुए हैं ॥ ८ ॥ दशानन बोला— मैं उसे जान से नहीं मारूँगा; मैं इन्द्र को जीतने जा रहा हूँ, वह मेरे संग चले। रावण की आज्ञा पाकर कुंभीनसी चल पड़ी। जहाँ मधु दैत्य सोया हुआ था वहाँ दौड़ गयी ॥ ९ ॥ वाल

कुम्भनसी धेये याय आलुलित चुले। निद्रा भाङ्गि उठे मधु दैत्य हेन काले
घूर्णित लोचन दैत्य शय्या' परि बसे। कुम्भनसी त्रास देखि ताहारे जिज्ञासे १०
आचम्बिते मथुराय केन गण्डगोल। गड़ेर बाहिरे केन कटकेर रोल
कुम्भनसी बले, तुमि नाजान कारण। तोमारे बधिते एल लङ्कार रावण ११
लङ्का हते तुमि बले आनिले आमारे। सेइ कोपे आसिल तोमारे काटिबारे
दैत्य बले, आन शीघ्र शङ्करेर शूल। सवंशे रावण आजि करिब निर्म्मूल १२
शुनिया दैत्येर कथा कुम्भनसी कय। रावणेर सने बाद मरण निश्चय
थाकुक तोमार कार्य्य, ना पारे विधाता। रावणेर सङ्गे बाद, अन्येर कि कथा १३
रावणेर दोष नाहि, तुमि सर्व्व दोषी। आमारे आनिले हरि त्रिप्रहर निशि
अविचार कर्म्म केन करिले आपने। आपनि करह कोप किसेर कारणे १४
रावणेर काछे आमि गियाछिनु आगे। तुष्ट करि आसियाछि मिष्ट अनुयोगे
तुष्ट ह'ये कहिल आमार विद्यमाने। दैत्य आसि सम्भाष करुक मोर सने १५
प्रधान कुटुम्ब तव हय मम भ्राता। आदरे बाटीते आन कहि मिष्ट कथा
पूर्व्व कोपे यदि किछु कहे मोर भाइ। सह्य समावेश कर ताहे क्षति नाइ १६
कुम्भनसी कथा शुनि मधु दैत्य हासे। योड़हात करि गेल रावणेर पाशे
रावण बले, करेछिले बड़इ प्रमाद। आमार भगिनी आन, एत बड़ साध १७

बिखेरे कुम्भीनसी दौड़ चली, उसी समय मधु दैत्य निद्रा से जाग उठा। गोल-गोल आँखों वाला वह दैत्य शय्या पर उठ बैठा। कुंभीनसी को संत्रस्त देख, उसने उससे पूछा ॥१०॥ मथुरा में अकस्मात् यह हलचल किसलिए मची है ? क़िले के बाहर सेना का शोर क्यों हो रहा है ? कुम्भीनसी बोली, तुम कारण नहीं जानते। लंका का रावण तुम्हें मारने के लिए आया है ॥ ११ ॥ लंका से तुमने बलपूर्वक हमारा अपहरण किया है, उसी क्रोध से (रावण) तुमको काटने के लिए आया है। दैत्य बोला, शीघ्र शंकर का शूल ले आओ। मैं रावण को आज सवंश निर्मूल कर डालूँगा ॥ १२ ॥ दैत्य की बात सुनकर कुम्भीनसी बोली, रावण के संग विवाद करने पर मृत्यु निश्चित है। तुम्हारे कार्य तो रहने दो। रावण से विवाद कर विधाता भी पार नहीं पाता, फिर दूसरे की तो बात ही क्या है ! ॥ १३ ॥ रावण का तो कोई दोष नहीं, तुम्हीं सभी दोषों से अपराधी हो। तुम मुझे रात के तीसरे पहर हर लाये हो। तुमने स्वयं ऐसा अन्याय कर्म क्यों किया ? फिर आप ही क्रोध क्यों कर रहे हो ? ॥ १४ ॥ मैं रावण के पास पहले गयी थी; मधुर वचनों से विनती कर उसे संतुष्ट कर आयी हूँ। तुष्ट होकर रावण ने मुझसे कहा— दैत्य स्वयं आकर मुझसे बात करे ॥ १५ ॥ मेरा भाई तुम्हारा मुख्य कुटुंबी है। मधुर वचन कहकर उसे आदरपूर्वक घर ले आओ। यदि पहले के कोप के कारण मेरा भाई कुछ कहे भी, तो उत्तेजित न होकर उसे सहन कर लो, उससे कोई क्षति नहीं है ॥ १६ ॥ कुम्भीनसी की बात सुनकर मधु दैत्य हँसने लगा। वह हाथ जोड़कर रावण के पास गया। रावण बोला— तुमने बड़ी ग़लती कर डाली, मेरी

स्वर्ग मर्त्य पाताले आमारे करे डर। यम नाहि याय भये लङ्कार भितर
कत वल धर तुमि, कत आछे सेना। कोन् साहसेते तेह लङ्कापुरे हाना १८
तारे वान्धि लइताम सागरेर पार। भस्मराशि करिताम मथुरा तोमार
भग्नी आसि बिस्तर काँदिल पाये धरे। भग्नीरे कातर देखि क्षमिलाम तोरे १९
मधु दैत्य रावणेर वन्दिल चरण। योड़हात करि वले, शुनह रावण
तोमार संग्रामे हरि-हर करे भय। आमारे करह कोप, उपयुक्त नय २०
हीन वीर्य्य दैत्य आमि, तुमि महावल। क्षमा कर अपराध-आमार सकल
परम पण्डित तुमि लङ्कार ईश्वर। आमार मथुरा तव भोगेर भितर २१
मार्ज्जना करह दोष अवोध जनार। पद-धूलि देह आसि आलये आमार
हासि हासि रथ हैते नामिया रावण। मधु दैत्य आलयेते करिल गमन २२
आगे आगे मधु दैत्य पश्चाते रावण। अन्तःपुरे प्रवेश करिल दुइ जन
सिंहासने बसाइल राजा दशानने। यथायोग्य स्थाने वसे अन्य यत जने २३
दैत्येर आदरे तुष्ट लङ्कार ईश्वर। दशानन वले, तव चरित्र सुन्दर
मधु दैत्य वले, आजि थाक एइ खाने। कालि गिया युद्ध कर पुरन्दर सने २४
राजा वले, कालि कुम्भकर्णेर शयन। कुम्भकर्ण निद्रागेले युझे कोन जन
नाना भोगे रावनेर भुञ्जाय दानव। तथा हैते चले राजा पाइया गौरव २५

बहिन को तुम हर ले आये, तुम्हारी इतनी बड़ी दुरभिलाषा रही ! ॥१७॥ स्वर्ग-मर्त्य-पाताल तक के निवासी मुझसे डरते रहते हैं। यम भी डर के मारे लंका के भीतर नहीं जाता। तुम कितने बलशाली हो ? तुम्हारी सेना कितनी है ? किस साहस से तुमने लंकापुरी पर आक्रमण किया ! ॥ १८ ॥ मैं तो तुम्हें बाँधकर सागर के पार ले जाता, और तुम्हारी मथुरापुरी को भस्म की ढेरी बना डालता। परन्तु बहिन आकर पैर पकड़ वहुत रोयी, बहिन को विकल देखकर ही तुम्हें क्षमा कर दी ॥ १९ ॥ तब मधु दैत्य ने रावण के चरणों की वंदना की। हाथ जोड़कर वह बोला— रावण, सुनो। तुमसे संग्राम में हरि-हर भी डरते है। मुझ पर क्रोध करना तुम्हारे लिए उचित नहीं है ॥२०॥ मैं हीन वीर्य दैत्य हूँ, तुम महाबली हो। मेरे सभी अपराध क्षमा कर दो। तुम लंका के अधीश्वर, परम पण्डित हो, हमारी इस मथुरापुरी को अपने भोग के भीतर मान लो (तुम इसका भोग कर सकते हो) ॥ २१ ॥ अबोध जनों के दोष तुम क्षमा कर दो। मेरे भवन में चलकर अपनी पद-धूलि प्रदान करो। तब रावण हँसते-हँसते रथ से उतरा और मधु दैत्य के भवन में गया ॥ २२ ॥ आगे-आगे मधु दैत्य उसके पीछे रावण चला। दोनों ने अन्तःपुर में प्रवेश किया। उसने राजा रावण को सिंहासन पर बिठाया। दूसरे सभी जन यथायोग्य स्थानों पर बैठ गये ॥ २३ ॥ दैत्य के आदर से लंकेश्वर रावण संतुष्ट हुआ। दशानन बोला— तुम्हारा चरित्र सुन्दर है। मधु दैत्य बोला— आज तुम यहाँ रहो, कल यहाँ से चलकर इन्द्र से युद्ध करना ॥ २४ ॥ राजा रावण बोला— कल कुंभकर्ण के सो जाने का दिन है। कुंभकर्ण के सो जाने पर लड़ाई कौन करेगा ? दानव मधु ने अनेक प्रकार की भोग्य-

राबण बलिछे, दैत्य, शुन मोर बाणी । आरम्भ करिब युद्ध थाकिते रजनी
कत अस्त्र आछे तब जाठि ओ झकड़ा । कत सेना आछे तब हाती आर घोड़ा २६
आपन कटक लये चलह सत्वर । लुटिब अमराबती रात्रिर भितर
रात्रिर भितर स्वर्गे करिब संग्राम । आसिबार काले हेथा करिब बिश्राम २७
मधु दैत्येर हाती घोड़ा कटक बिस्तर । साजिया रावण सङ्गे चलिल बिस्तर

राबणेर अमराबती आक्रमण

अन्तरीक्षे ठाट सब उठे मुड़े-मुड़े । रात्रि दुइ प्रहरे अमराबती बेड़े १
बिषम अमराबती नापारे लङ्घिते । रहिल असंख्य ठाट बेढ़ि चारि भिते
त्रिभुवन जिनि स्थान अमर नगरी । प्रवाल माणिक्य मणि शोभे सारि सारि २
सुबर्ण निर्म्मित पुरी बिचित्र गठन । पड़ भेते प्राचीर तिन शतेक योजन
शतेक योजन पुरी आड़े परिसर । दीर्घे ओर ताहि तार, बायु-अगोचर ३
एकेक योजन एक दुयार गठन । बहु अक्षौहिणी ठाट द्वारेर रक्षण
सोनार कपाट खिल पर्व्वतेर चूड़ा । सोनार हुड़का ताहे नवरत्न बड़ा ४

सामग्रियाँ रावण को उपभोग के लिए प्रदान कीं । राजा रावण वहाँ से गौरव प्राप्त कर आगे चला ।। २५ ।। रावण बोला— दैत्य, मेरे वचन सुनो ! रात रहते ही हम युद्ध आरंभ करेंगे । तुम्हारे पास भाले और बरछे कितने हैं ? सेना, हाथी और घोड़े कितने हैं ? ।। २६ ।। अपनी सेना लेकर तुरन्त चलो, रात रहते ही हम अमरावती को लूट लेंगे । रात के भीतर ही स्वर्ग में जाकर संग्राम करेंगे ! वहाँ से लौटने के समय यहाँ आकर विश्राम करेंगे ।। २७ ।। मधु दैत्य की अनेक हाथियों और घोड़ों की बड़ी सेना थी । अपनी उस सेना को व्यापक रूप से सजाकर मधु दैत्य रावण के संग चला ।

रावण का अमरावती पर आक्रमण

रावण की सारी सेना चक्कर लगाती हुई अन्तरिक्ष पर चढ़ गयी और रात के दो पहर में जाकर अमरावती को घेर लिया ।। १ ।। अमरावती पुरी बड़ी दुर्गम थी, उसकी दीवारों को पार न कर पाने के कारण अनगिनत सेना ने चारों ओर से घेर लिया । अमरों की वह पुरी त्रिभुवन में सर्वश्रेष्ठ स्थान थी । उसमें पंक्तियों में प्रवाल, मणि-माणिक्य सुशोभित हो रहे थे ।। २ ।। स्वर्ण-निर्मित वह पुरी विचित्र रूप से बनी हुई थी । ऊँचाई में दीवारें तीन सौ योजन फैली हुई थीं । उस पुरी का विस्तार चौड़ाई में लगभग सौ योजन था । लम्बाई में तो उसका छोर नहीं था । वायु भी उसे देख नहीं पाता ! ।। ३ ।। एक-एक द्वार एक-एक योजन का बना हुआ था । द्वारों की रक्षा अनेक अक्षौहिणी सेना कर रही थी । उन द्वारों में सोने के कपाट लगे थे, पर्वत-शिखर उसकी कीलें थीं, सोने

शत अक्षौहिणी ठाट इन्द्रेर गणना । चारि अंशे करि सेना चलि द्वारे थाना
ऐरावत उच्चैःश्रवा थाके चारि द्वारे । नाहिक काहार शक्ति पथ लङ्घिबारे ५
शतवृन्द भितरे आछये अन्तःपुरी । शची देवकन्या ताहे परमा सुन्दरी
परमा सुन्दरी शची तिनि मुख्या राणी । त्रिभुवन जिनि रूप देवता मोहिनी ६
पद्म कोटि घर आछे पुरीर भितर । नाना रत्न परिपूर्ण परम-सुन्दर
रत्नेते निर्म्मित मर, घयार चौतारा । कत देवकन्या ताहे रूपे मनोहरा ७
स्थाने स्थाने शोभित बिचित्र नाट्यशाला । देवकन्या ल'ये इन्द्र करे ताहे खेला
नाहि शोक-दुःख नाहि अकाल-मरण । त्रिभुबन जिनि स्थान भुबन मोहन ८
सदानन्दमय से अमरावती नाम । यत देव आसि तथा करये विश्राम
नाना रङ्गे नृत्य तथा करे पक्षिगण । कुसुम सुगन्धे सबे आनन्दे मगन ९
प्रमाद पड़िल, ताहा इन्द्र नाहि जाने । अमरनगरी आसि बेढ़िल रावणे
रावण वेढ़िल स्वर्ग शुनि पुरन्दर । देवगणे ल'ये गेल विष्णुर गोचर १०
विष्णुर निकटे इन्द्र करेन स्तवन । रावणे मारिया रक्षा कर देवगण
देखिया इन्द्रेर त्रास हासे नारायण । देवगणे आश्वासिया बलेन बचन ११
नारायण बलेन, शुनह पुरन्दर । ए शरीरे आमि ना मारिब लङ्केश्वर
तोमारे कहि ये इन्द्र, शुनह कारण । आमा-बिना कारो हाते ना मरे रावण १२

के अड़कन (ड्योंड़े) थे जिनमें नवरत्न मडित थे ।। ४ ।। इन्द्र की गणना के अनुसार सौ अक्षौहिणी सेना थी जिसे चार-अंशों में बाँटकर चारों द्वारों पर थाने या अड्डे बनाये गये थे । चारों द्वारों पर ऐरावत और उच्चैःश्रवा स्थित रहते थे । उन मार्गों को पार कर जाने की शक्ति किसी की नहीं थी ।। ५ ।। ऐसे सैकड़ों समूहों के अन्दर अन्त पुर था जिनमें देव-कन्या परम सुन्दरी शची रहती थी । शची परमा सुन्दरी थी, वह पटरानी थी । उसका देवता-मोहिनी रूप त्रिभुवन-विजयी था ।। ६ ।। उस पुरी के भीतर पद्म-कोटि भवन थे । जो नाना रत्नों से परिपूर्ण और परम सुन्दर थे । वे भवन, द्वार और चबूतरे रत्न-निर्मित थे । मनोहर रूप वाली कितनी ही देवकन्याएँ उनमें रहती थीं ।। ७ ।। वहाँ स्थान-स्थान पर विचित्र नाट्य-शालाएं सुशोभित थीं, देवकन्याओं को लेकर इन्द्र वहाँ क्रीड़ा किया करते थे । वहाँ शोक, दुःख, अकाल-मरण नहीं था । उस भुवन-मोहन स्थान की समकक्षता त्रिभुवन में कोई नही कर सकता था ।। ८ ।। अमरावती नाम की वह पुरी सदा आनन्दमयी थी, सारे देवगण वहाँ आकर विश्राम किया करते थे । वहाँ उल्लास से भरे अनेक प्रकार पक्षी गण नृत्य किया करते, फूलों की सुगन्ध से सभी आनन्द में मग्न रहते ।।९।। इन्द्र को यह पता न था कि उन पर भयावह संकट आ पड़ा है । रावण ने आकर अमरों की नगरी को घेर लिया । रावण ने स्वर्ग को घेर लिया, सुनकर इंद्र देवगण को संग लेकर विष्णु वहाँ गये ।। १० ।। इन्द्र ने विष्णु के पास जाकर स्तवन किया— आप रावण को मारकर देवों की रक्षा करें । इन्द्र को सन्त्रस्त देख नारायण हँसने लगे । उन्होंने देवगण को आश्वासन देकर कहा— ।। ११ ।। नारायण बोले, इन्द्र, सुनो, मैं इस

ब्रह्मा दियाछेन वर तपे हये तुष्ट। बिना नर-बानरेते ना मरिबे दुष्ट
पृथिवी-मण्डले आमि हव अवतार। सवंशेते रावणेरे करिब संहार १३
देवतार हाते कभु ना मरे रावण। युद्ध करि खेदाड़िया देह देवगण
विष्णुर आज्ञाय इन्द्र याय शीघ्र गति। युझिबारे साजिलेन अमरेर पति १४
त्रिभुवन उपरे इन्द्रेर अधिकार। दश दिक्‌पाल आसि हैल आगुसार
दक्षिणे कुबेर आर कैलास उत्तरे। यक्ष-रक्ष ल'ये आसे युझिबार तरे १५
एक बार रावणेर युद्धे पाय लाज। आर बार आइल कुबेर यक्षराज
यम-मृत्यु संग्रामे आइल दुइ जन। एक बार युद्धे दोँहे जिनिल रावण १६
भङ्ग दिया पलाइल रावणेर युद्धे। आरबार आइल इन्द्रेर अनुरोधे
पातालेते वासुकीरे जिनिल रावण। सेइ कोपे युझिते आइल नागगण १७
आइल तिराशी कोटि चित्रिणी शङ्खिनी। याहादेर बिषज्वाले दहये मेदिनी
एक बार रावण जिनेछे वरुणेरे। सेइ कोपे वरुण युझि बारे १८
मरुत् असुर आर एल विद्याधर। भूत-प्रेत पिशाचादि आइल बिस्तर
चन्द्र सूर्य्य आसिल नक्षत्र आरबार। रावणेर रणेते हइल आगुसार १९
शनि-राहु-केतु-आदि यत ग्रहगण। रात्रि दिवा झड़-वृष्टि एल सर्व्व जन
समर देखिते आसिलेन महेश्वरी। चौषट्टि योगिनी ताँर सङ्गे सहचरी २०

शरीर से लंकेश्वर रावण को नहीं मारूँगा। इन्द्र, इसका कारण बताता हूँ, सुनो। मेरे सिवा अन्य किसी के हाथ से रावण मरनेवाला नहीं है ॥१२॥ रावण की तपस्या से सतुष्ट होकर ब्रह्मा ने वर दिया है, नर-वानरों के सिवा (और किसी से) वह दुष्ट नहीं मरेगा। मैं धरती-मण्डल पर अवतार धारण करूँगा और रावण का सवंश-संहार करूँगा ॥ १३ ॥ देवताओं के हाथों रावण कभी नहीं मरेगा। हे देवगण, तुम लोग युद्ध कर उसे खदेड़ दो। विष्णु के आदेश से इन्द्र शीघ्रता से वहाँ से चल पड़े। देवताओं के राजा इन्द्र लड़ने हेतु सज्जित हुए ॥ १४ ॥ इन्द्र का त्रिभुवन पर अधिकार है, दसों दिग्पाल वहाँ आकर आगे बढ़े। दक्षिण से कुबेर और उत्तर से कैलास यक्षों और रक्षों को लेकर लड़ने पहुँचे ॥ १५ ॥ एक बार रावण के संग लड़ाई में यक्षराज कुबेर (पराजित होकर) लज्जित हुआ था। उस संग्राम में यम और मृत्यु दो जन आये, क्योंकि एक बार युद्ध में रावण ने दोनों को जीत लिया था ॥ १६ ॥ रावण से युद्ध में वे हारकर भाग गये, अतः इन्द्र के अनुरोध से वह पुनः आये। रावण ने पाताल में वासुकी को जीत लिया था, इसी क्रोध के कारण नाग गण युद्ध करने पहुँचे ॥ १७ ॥ तिरासी करोड़ चित्रिणियाँ और शंखिनियाँ, जिनकी विष-ज्वाला से धरती तक जल जाती है, वहाँ आयी। रावण एक बार वरुण को जीत चुका था। उसी क्रोध से वरुण लड़ने के लिए आया ॥ १८ ॥ मरुत्, असुर और विद्याधर आये। अनेक भूत-प्रेत-पिशाच आदि वहाँ आ पहुँचे। चन्द्रमा, सूर्य, नक्षत्र आदि फिर आ पहुँचे। सभी रावण से लड़ने हेतु आगे बढ़े ॥ १९ ॥ शनि, राहु, केतु आदि जितने ग्रह थे, दिवा-रात्रि आँधी, वर्षा आदि सब वहाँ आये। देवी

देबीर असीम मूर्त्ति षोड़शी बगला। इन्द्राणी रुद्राणी देवी ब्रह्माणी कमला
नारसिंही, बाराही धरेन नाना कला। कात्यायनी, चामुण्डा गलेते मुण्डमाला २१
रणे आइलेन देवी, वेश भयङ्कर। आछुक अन्येर कथा देवे लागे डर
रक्तवीज, आदि सेवे मारिला कटाक्षे। रावणेर तरे रहिलेन अन्तरीक्षे २२

रावण सह देवगणेर युद्ध ओ पराजय

स्वर्गलोक मर्त्यलोक आइल पाताल। चारि दिके पड़े अस्त्र अग्निर उयाल
नाना अस्त्र पड़े, नाहि याय संख्या करा। अमरावतीते येन वरिषये धारा १
राक्षस करिछे नाना अस्त्र अवतार। सुरपुरी बाणेते हइल अन्धकार
जाठा-जाठि शेल, शूल, मुषल, मुद्गर। खाण्डा खरशाण बाण अति भयङ्कर २
पड़े गदा शावल नाहिक लेखा जोखा। चारि दिके फेले बाण यार यत शिक्षा
रथे रथे ठेकाठेकि, भाङ्गि पड़े कत। हस्ती-अश्व चापनेते हस्ती-अश्व हत ३
पड़े देव दानव गन्धर्व्व-विद्याधर। लेखा जोखा नाहि बाण पड़िछे विस्तर
देबता राक्षसे करे अस्त्र अवतार। समग्र अमरावती बाणे अन्धकार ४

महेश्वरी समर देखने हेतु आयीं। चौसठ योगिनियाँ उनके संग सहचरी थीं ॥ २० ॥ दुर्गादेवी की असीम मूर्ति, षोड़सी, वगला, इन्द्राणी, रुद्राणी, देवी ब्रह्माणी, कमला, नारसिंही, वराही, कात्यायनी, गले में मुण्डमाला पहने चामुण्डा आदि नाना कलाएँ धारण कर उपस्थित हुईं ॥ २१ ॥ दुर्गा देवी रण में आयी, उनका वेश भयंकर था। अन्यों की तो बात ही क्या उन्हें देख देवताओं को भी डर लगता था। उनके कटाक्ष से रक्तवीज आदि सारे दैत्य मर गये थे। वे रावण (से लड़ने) के लिए अन्तरिक्ष में स्थित हो गयीं ॥ २२ ॥

रावण के साथ देवगणों का युद्ध और पराजय

वहाँ स्वर्गलोक, मर्त्यलोक, पाताल भी आ गये। चारों ओर उत्ताल अग्नि गिरने लगी। नाना प्रकार के अनगिनत अस्त्र गिरने लगे। मानो अमरावती में वर्षा की धारा वरस रही हो ॥ १ ॥ राक्षस अनेक प्रकार के अस्त्र प्रकट कर रहे थे। देवलोक उनके बाणों से अंधकार हो गया। भाले, बरछे, शेल, शूल, मूसल, मुद्‌गर, खड्ग, तेज़ नुकीले वाण बड़े ही भयंकर थे ॥२॥ गदा, खन्ते, कितने गिर रहे थे, कोई लेखा-जोखा न था। जिसकी जितनी शिक्षा थी वह उसी के अनुसार चारों ओर वाण चला रहा। रथ से रथ की टक्कर हो रही थी, कितने ही रथ टूट रहे थे। हाथी-घोड़ों के पैरों तले हाथी-घोड़े कुचल कर मरे जा रहे थे ॥ ३ ॥ देव-दानव-गंधर्व-विद्याधर गिर रहे थे वाण इतने अधिक गिर रहे थे जिनका लेखा-जोखा न था। देवता-राक्षस अपने-अपने अस्त्र प्रकट कर रहे थे। सारी अमरावती बाणों के (छा जाने के) कारण अँधेरी हो

दुइ सैन्य युद्धे पड़े रक्ते ह'ये राङ्गा। रक्ते नदी बहे, येन भाद्रमासे गङ्गा
हस्ती घोड़ा ठाट कत रक्तो परि भासे। हरिषे पिशाच गुला मने मने हासे ५
बिम्बके-बिम्बके रक्ते बान्धि ओठे फेना। शकुनि गृधिनी ताहे करिछे पारणा
इन्द्र बले, रावण करह युद्ध छल। जने जने युझ, देखि कार कत बल ६
शुनिया इन्द्रेर कथा हासिल रावण। मोर सने युझेछे सकल देबगण
बरुण कुबेर यम जिनेछि मान्धाता। युझिबे आमार सने के आछे देबता ७
हेन काले शनि गेल रावणेर पाशे। दशमाथा खसि पड़े देबगण हासे
रावण बिकृत देह संग्राम भितरे। देखि यत देबगण उपहास करे ८
दशमाथा खसि पड़े बल नाहि टुटे। ब्रह्मार बरेते तार दशमाथा उठे
एक बार भिन्न शनिर नाहि आर रण। उड़िल शनिर प्राण देखिया रावण ९
ब्रह्मार बरेते माथा खसिले ना मरे। पलाइया गेल शनि रावणेर डरे
शनि पलाइल देखि राक्षसेरा हासे। हेन काले गेल यम रावणेर पाशे १०
यमेरे देखिया अग्रे दशानन हासे। मरिबारे केन यम एलि मोर पाशे
यम बले, राक्षस, कि करिस अहङ्कार। करिताम तोरे आमि से दिन संहार ११
भाग्येते बांचिलि प्राणे ब्रह्मार कारण। ब्रह्मा आजि नाहि हेथा, जीबी कतक्षण
आछये चौषट्टि रोग यमेर संहति। रावणेर अङ्गे प्रबेशिल शाघ्र गति १२

गयी ॥ ४ ॥ दोनों ओर की सेनाएँ युद्ध में रक्त से सनकर लाल हो गिर रही थी। भादों महीने की गंगा की भाँति रक्त की नही बह रही थी। उस रक्त के ऊपर कितने ही हाथी, घोड़े, सेनाएँ तिर रहे थे। हर्ष के मारे पिशाच-गण मन ही मन हँस रहे थे ॥ ५ ॥ रक्तधारा में प्रचंड बुलबुले उठने के कारण फेन उमड़ रहा था। उसमें, गिद्ध-गिद्धिनियाँ पारण कर रहे थे। इन्द्र बोले, रावण, तुम छलना से युद्ध कर रहे हो। एक-एक के साथ एक-एक लड़ो, (तब देखा जाये) किसका कितना बल है ॥ ६ ॥ इन्द्र की बात सुनकर रावण हँस पड़ा। बोला, मेरे साथ तो सभी देवता लड़ रहे हैं। मैंने वरुण, कुबेर, यम, मान्धाता को जीता है। मेरे साथ लड़ सके ऐसा देवता कौन है ? ॥ ७ ॥ उसी समय शनि रावण के पास पहुँचा। (शनि की दृष्टि से) रावण के दसों सिर गिर पड़े, देख कर देवगण हँसने लगे। संग्राम में रावण का शरीर विकृत हो गया, देख, देवगण उपहास करने लगे ॥ ८ ॥ रावण के दसों सिर टूट गिरे पर उसका बल नहीं घटा। ब्रह्मा के वरदान के कारण उसके दसों सिर फिर निकल आये। शनि एक बार के सिवा फिर युद्ध नही करता। रावण को देखकर शनि के प्राण निकलने लगे ॥९॥ ब्रह्मा के वर के कारण सिर गिर जाने पर भी रावण मरता न था। रावण के डर से शनि भाग गया। शनि को भाग गया देख राक्षस हँसने लगे। तब यम रावण के पास पहुँचे ॥ १० ॥ यमराज को सामने देख दशानन हँस पड़ा। बोला— यम, तू मरने के लिए मेरे पास क्यों आया ? यम बोले, राक्षस, तू अहंकार क्या करता है ? तुझे तो मैं उसी दिन संहार कर डालता ॥ ११ ॥ तू भाग्यवश ब्रह्माजी के कारण बच गया। आज

जगतेर माया जाने राजा दशानन। ब्रह्म-अग्नि शरीरेते ज्वालिल तखन
पुड़ि मरे रोग सब परित्राहि डाके। सबे गेल यम ठाँइ पड़िया बिपाके १३
रोग पीड़ा पलाइल दशानन हासे। मोर काछे यम तुमि दर्प कर किसे
यम बले, रावण कि करिस अहङ्कार। मोर हाते हबे तोर सवंशे संहार १४
रोग पीड़ा पलाइल मने पेलि आश। आमार दण्डेते तोर सबंशे बिनाश
करिलि विस्तर तप हइते अमर। अमर हइते ब्रह्मा नाहि दिला वर १५
अवश्य मरण हबे याबि मोर घर। चक्षु पाकाइया गर्ज्जे यमेर किङ्कर
यमराज-रावण दुजने गालागालि। दूर हैते शुने कुम्भकर्ण महाबली १६
धेये याय कुम्भकर्ण यमे गिलिबारे। कुम्भकर्ण देखि यम पलाइया डरे
पलाइया रहे यम इन्द्रेर गोचर। देखिया यमेर भङ्गे कहे पुरन्दर १७
सर्व्वजन मरे यम तोमा-दरशने। तुमि भङ्गे दिले यम युझे कोन जने
हेन काले पवन बहिल महा झड़। उड़ाइया राक्षसे एमत्र कैल जड़ १८
रावणेर यत ठाट झड़े उड़ाइल। भयेते रावण राजा चिन्तित हइल
कुम्भकर्ण वीरे झड़े उड़ाइते नारे। कुम्भकर्ण चलिल पवने गिलिबारे १९

यहाँ ब्रह्मा नहीं है, तू कितने क्षण जीवित रहेगा ? यम के संग चौंसठ व्याधियाँ थी, वे शीघ्र गति से रावण के अंगों में प्रवेश कर गयीं ॥ १२ ॥ राजा दशानन संसार भर की माया जानता था। उसने अपने शरीर में तभी ब्रह्म-अग्नि जला ली। सारे रोग उस अग्नि से जलकर मरने लगे; रक्षा करो — पुकारने लगे। चक्कर में पड़कर सब यम के पास लौट गये ॥ १३ ॥ रोग-पीड़ा भाग गये देख, दशानन हँसने लगा। बोला— यम, तुम मेरे सामने दर्प किसलिए करते हो ? यम ने कहा— रावण, तू अहंकार क्या करता है ? मेरे हाथ तेरा सवंश-संहार हो जायेगा ॥ १४ ॥ रोग-पीड़ा भाग गये, इससे तू मन मे आशा पा गया है। मेरे दण्ड से तेरा सवंश विनाश हो जायेगा। तूने अमर बनने के लिए बड़ा तप किया था, पर ब्रह्मा ने तुझे अमर होने का वर नही दिया ॥ १५ ॥ तेरी मृत्यु अवश्य होगी, तुझे मेरे घर जाना ही है। यमराज के दूत भी आँखें तरेर कर गरजने लगे। यमराज और रावण दोनों एक-दूसरे को गालियाँ देने लगे। महाबली कुंभकर्ण दूर से सुन रहा था ॥ १६ ॥ कुंभकर्ण यमराज को लील जाने के लिए दौड़ पड़ा। कुम्भकर्ण को देख, यमराज डर के मारे भाग गये। यमराज भागकर इन्द्र के पास गये। यम को युद्ध में पराजित देख इन्द्र ने कहा— ॥ १७ ॥ यम, तुम्हें देखते ही सब लोग मर जाते हैं, जबकि तुम्हीं युद्ध में पराजित हो भाग आये, फिर तो लडेगा कौन ? उसी समय पवन ने प्रचंड आँधी चला दी और सारे राक्षसों को उड़ा एक जगह जमा कर दिया ॥ १८ ॥ रावण की सारी सेना को आँधी ने उड़ा दिया। भय से राजा रावण चिन्तित हो उठा। वीर कुम्भकर्ण को आँधी उड़ा नहीं सकती थी। कुम्भकर्ण आँधी को ही लीलने चला ॥ १९ ॥ कुम्भकर्ण को देख पवन भाग चला। पवन

कुम्भकर्ण देखिया पवन दिल रड़ । पलाइल पवन, घुचिल सब झड़
पवन पलाये गेल पेये मने डर । बरुण प्रवेश करे रणेर भितर २०
बरुणेर मायाते समल जलमय । जल देखि रावणेर लागे बड़ भय
कुम्भकर्णेर नाहि भय, दुर्ज्जय शरीर । आर यत सेना सबे हइल अस्थिर २१
बरुणेर माया चूर्ण करिते रावण । अग्निबाण धनुकेते युड़िल तखन
अग्निबाण रावणेर अग्नि-अवतार । अग्नि-बाणे सब जल करिल संहार २२
बरुणेर माया यदि भाङ्गिल रावण । रणेते प्रवेश करे यत ग्रह गण
एकादश रुद्र एल, द्वादश भास्कर । स्वर्ग, मर्त्य, पाताल हइल दीप्तिकर २३
एके बारे हइल द्वादश सूर्य्योदय । भयेते राक्षसगण गणिल संशय
धनुकेते योड़े राजा बाण ब्रह्मजाल । बाण हैते वरिषये अग्निर उथाल २४
रावणेर बाणेते देवतागण काँपे । सूर्य्ये तेज निभाइल रावण प्रतापे
यतेक देवतागणे जिनिल रावण । मेघनाद जयन्त दुजने बाजे रण २५
दुइ राजपुत्र युझे, दुजने प्रधान । केह कारे नाहि जिने, दुजने समान
मेघनाद बाणेते जयन्त पाय डर । पलाये जयन्त गेल पाताल भितर २६
पुलोम दानव तार मातामह हय । पाताले लुकाये रहे ताहार आलय
इन्द्रस्थाने बार्त्ता कहे यत देवगण । आचम्बिते जयन्ते ना देखि कि कारण २७

भाग गया, सारी आँधी मिट गयी। मन में आतंकित हो पवन भाग गया; तब वरुण युद्ध-भूमि में आया ॥ २० ॥ वरुण की माया से सभी जलमय हो गया। जल देख रावण को बड़ा भय हुआ। कुम्भकर्ण को कोई डर न था, वह दुर्जय शरीर वाला था। परन्तु और सारी सेना अस्थिर हो उठी ॥ २१ ॥ तब रावण ने वरुण की माया को चूर करने हेतु, धनुष पर अग्नि-बाण चढ़ाया। रावण का अग्नि-बाण साक्षात् अग्नि-अवतार था। उस अग्नि-बाण ने सारे जल का संहार कर डाला ॥ २२ ॥ जब रावण ने वरुण की माया को नष्ट कर दिया, तब सारे ग्रह युद्ध करने आये, ग्यारह रुद्र आये, बारह भास्कर आये, जिनसे स्वर्ग, मर्त्य, पाताल दीप्तिमान हो उठे ॥ २३ ॥ एक ही साथ बारह सूर्य उग आये। भय के मारे राक्षसों का (प्राण-) संशय हो गया। तब राजा रावण ने धनुष पर ब्रह्मजाल-बाण चढ़ाया। उस बाण से अग्नि की प्रचंड लपटें निकलने लगीं ॥ २४ ॥ रावण के बाणों से देवगण काँपने लगे! रावण के प्रताप से उन सूर्यों का तेज बुझ गया। सभी देवों को रावण ने युद्ध में जीत लिया। मेघनाद और जयन्त दोनों युद्ध में एक-दूसरे से भिड़ गये ॥२५॥ दो राजपुत्र जूझ रहे थे, दोनों ही प्रधान थे। कोई किसी को जीत नहीं पाता था, दोनों ही बराबर थे। मेघनाद के बाणों से जयन्त डर गया। जयन्त भागकर पाताल में चला गया ॥ २६ ॥ पुलोम दानव उसका मातामह (नाना) लगता था, पाताल में वह उसके भवन में छिपा रहा। देवों ने इन्द्र को यह समाचार दिया कि अचानक जयन्त दिखाई नहीं पड़ता, इसका कारण क्या है ? ॥ २७ ॥ संभवत: मेघनाद के बाण सह न सकने के कारण वह जीवित है या नहीं; कह नहीं सकते। अन्त:पुर में नारियाँ

मेघनाद वाण बुझि ना पारि सहिते। आछे किना बेँचे, ना पारि बलिते
अंतःपुरे नारीगण जुड़िल क्रन्दन। यम गिया इन्द्रे कहे प्रबोध बचन २८
परलोके गेले मोर सङ्गे हैत देखा। मरे नाइ जयन्त से पाइयाछे रक्षा
पुलोम दानव, तार पाताले निवास। लुकाइया जयन्त रयेछे तार पाश २९
यमेर प्रबोधे इन्द्र संबरे क्रन्दन। तबे देवराज गेल चण्डीर सदस
तोमा विद्यमाने देवगणेर संहार। रावणे मारिया माता कर प्रतिकार ३०
चौषट्टि योगिनी छिल देवीर संहति। युझिते योगिनीगण चले शीघ्र गति
युझिते योगिनीगण नाना काच काचे। रक्त-मांस खाइया योगिनी सब नाचे ३१
देखिले योगिनी सवे महाभय करे। एकैक योगिनी शत राक्षसे संहारे
दशानन बले, माता कर अवधान। युद्ध संवरिया तुमि याह निज स्थान ३२
रावण योगिनी-युद्ध देखि भयङ्कर। योड़ हाते स्तुति करे देवीर गोचर
मोर सने माता तव किसे विसंवाद। तोमार चरणे नाहि करि अपराध ३३
शङ्कर सेवक आमि, तुमि मा शङ्करी। ए कारण तव सने युद्ध नाहि करि
आमारे जिनिया तव हइबे कि काज। तुमि यदि हार माता, पावे बड़ लाज ३४
रावणेर बचने चण्डीर हैल हास। चौषट्टि योगिनी लये चलिला कैलास
एके एके देवगणे जिनिल रावण। इन्द्र ओ रावण दुइ जने बाजे रण ३५

रुदन करने लगीं। यम ने जाकर इंद्र को सांत्वना देते हुए यह बचन कहा ॥ २८ ॥ यदि जयन्त परलोक में जाता तो मेरे साथ उसकी भेंट होती। जयन्त मरा नहीं है, वह बचा हुआ है। पुलोम दानव, जो पाताल में रहता है, जयन्त उसी के यहाँ छिपा हुआ है ॥ २९ ॥ यम के धीरज बँधाने पर इन्द्र ने रोना बन्द किया। तब देवराज चंडी के निवास में गये। बोले— देवी, तुम्हारे रहते देवगणों का संहार हो रहा है, माता, रावण को मारकर इसका प्रतिकार करो ॥ ३० ॥ देवी के साथ चौंसठ योगिनियाँ थीं। वे योगिनियाँ शीघ्रता से लड़ने चलीं। योगिनियाँ लड़ने के लिए नाना प्रकार से कछनी काछकर आयीं। रक्त-मांस खाकर सारी योगिनियाँ नाचने लगी ॥ ३१ ॥ योगिनियों को देखकर सभी बड़े आतंकित हुए। एक-एक योगिनी सौ-सौ राक्षसों का संहार करती थी। दशानन बोला— माता, सुनो, युद्ध बन्द कर अपने स्थान पर चली जाओ ॥ ३२ ॥ योगिनियों का भयंकर युद्ध देखकर रावण हाथ जोड़कर देवी के सम्मुख स्तुति करने लगा। माता, मुझसे तुम्हारा कौन-सा विरोध हुआ है ? तुम्हारे चरणों में तो मैंने कोई अपराध नहीं किया है ॥ ३३ ॥ माँ, मैं शंकर का सेवक हूँ, तुम शंकरी हो। इसी कारण मैं तुमसे युद्ध नहीं करूँगा। मुझे पराजित कर तुम्हारा कौन सा प्रयोजन सिद्ध होगा ? माता, तुम यदि मुझसे हार जाओ तो बड़ी लज्जित होओगी ॥ ३४ ॥ रावण के वचन सुनकर चंडी हँस पड़ी। चौंसठ योगिनियों के साथ वे कैलास चली गयीं। रावण ने एक-एक कर देवों को जीत लिया। इन्द्र और रावण ये दोनों लड़ने लगे ॥ ३५ ॥ हाथों में वज्र लिये इन्द्र ऐरावत पर सवार हुए। राजा रावण दिव्य रथ पर सज्जित होकर आया।

ऐरावत चढ़े इन्द्र, बज्र-अस्त्र हाते । साजिया रावण-राजा एल दिव्य रथे
इन्द्रेर से बज्र-अस्त्र करिछे गर्ज्जन । बज्रेर गर्ज्जन शुनि चिन्तित रावण ३६
हेन काले कुम्भकर्ण आइल धाइया । इन्द्रेर सम्मुखे आसि रहे दाण्डाइया
कुम्भकर्ण बले, इन्द्र आर याबि कोथा । स्वर्गपुरी निबसति करिब देबता ३७
बज्र-बिना इन्द्र, तोर आर नाहि बाड़ा । दन्ते चिबाइया बज्र करे याव गुंड़ा
इन्द्र बले, कुम्भकर्ण, छाड़ अहङ्कार । बज्र-अस्त्रे आमि तोरे करिब संहार ३८
महामन्त्र पड़ि इन्द्र वज्रबाण फेले । लाफ दिया कुम्भकर्ण बज्र-अस्त्र गिले
बज्र-अस्त्र गिलि बीर छाड़े सिंहनाद । देखि यत देबगण गणिल प्रमाद ३९
चलिल से कुम्भकर्ण देबता गिलिते । भयेते देबतागण चाय चारि भिते
सृष्टि नाश हेतु तारे सृजिल बिधाता । चारि भिते लाफ दिया गिलिछे देबता ४०
अमर देबतागण, नाहिक मरण । नासिका कर्णेर पथे पल तखन
श्रवण-नासिका-पथ घरेर दुयार । ताहा दिया देबगण पलाय अपार ४१
स्वर्ग हैते देबगणे आछाड़िया फेले । हात-पा भाङ्गिया याय पड़ि भूमि तले
कुम्भकर्ण रणे कारो नाहि अब्याहति । हइल समर स्वर्गे समुदय राति ४२
एक दिबा रात्रि मात्र कुम्भकर्ण जागे । कुम्भकर्ण निद्रा गेल सुखी देब भागे
छय माते कुम्भकर्ण एक दिन जागे । रजनी-प्रभाते रक्षा पाय देब भागे ४३

इन्द्र का वह अस्त्र— वज्र गरज रहा था । वज्र की गर्जना सुन रावण चिन्तित हो उठा ।। ३६ ।। इसी समय कुम्भकर्ण वहाँ दौड़ा आया । वह इन्द्र के सम्मुख आकर खड़ा हो गया । कुम्भकर्ण बोला, इन्द्र, तू और कहाँ जायेगा ? मैं स्वर्गपुरी को देवताओं से सूना कर डालूँगा ।। ३७ ।। इन्द्र, तेरे पास बज्र के सिवा और कोई बड़ा साधन नहीं है, मैं वज्र को दाँतों से चबाकर चूरा कर डालूँगा । इंद्र बोले, कुम्भकर्ण, अहंकार करना छोड़ दे । मैं वज्र-अस्त्र से तेरा संहार कर डालूँगा ।। ३८ ।। इन्द्र ने महामंत्र पढकर वज्र-बाण छोड़ा । उस वज्र-अस्त्र को कुम्भकर्ण ने कूदकर निगल लिया । वज्र-अस्त्र को निकलकर उस वीर ने सिंहनाद किया । यह देखकर देवगण सुध खो बैठे ।।३९।। कुम्भकर्ण देवताओं को निगलने के लिए चला । डर के मारे देवगण चारों ओर देखने लगे । विधाता ने सृष्टि के विनाश हेतु ही उसे सिरजा है । वह चारों ओर कूद-कूदकर देवताओं को निगलने लगा ।। ४० ।। देवतागण अमर हैं । उनका मरण नहीं होता । वे कुम्भकर्ण की नाक और कान की राह से निकल भागने लगे । उसके कान और नाक के मार्ग घर के द्वारों जैसे थे । उनसे होकर निकलकर अनगिनत देवगण भागने लगे ।। ४१ ।। कुम्भकर्ण स्वर्ग से देवताओं को नीचे पटक दे रहा था, भूतल पर गिरकर उनके हाथ-पैर टूट जा रहे थे । कुम्भकर्ण के साथ युद्ध में कोई बचनेवाला न था । स्वर्ग में रात भर संग्राम होता रहा ।।४२।। कुम्भकर्ण केवल एक दिन एक रात जगा रहता था । कुम्भकर्ण को निद्रा आ गयी । देवगण सौभाग्य से सुखी हो गये । छः महीने में कुम्भकर्ण एक दिन जगता था । रात के प्रभात होने पर सौभाग्य से देवगण की रक्षा हो गयी ।।४३।। रात बीती ।

रात्रि पोहाइल, वीर निद्राय विह्वल। एतक्षणे रक्षा पाय देवता सकल
कुम्भकर्ण निद्रा गेले रावण चिन्तित। रथे तुलि लङ्कापुरे पाठाय त्वरित ४४
इन्द्र सह रावणेर वाजे महारण। दुइ जने नाना वाण करे वरिषण
दुइ जने वाण मारे, नाहि लेखा-जोखा। चारि दिके फेले वाण यार यत शिखा ४५
दुइ जने सम, केह ना पारे जिनिते। प्रस्वापण वाण इन्द्रेर पड़िल मनेते
इंद्र वले, कौतुक देखह देवगण। प्रस्वापण-वाणे वन्दी करिब रावण ४६
ब्रह्म-मन्त्र पड़ि इन्द्र प्रस्वापण-एड़े। ब्रह्म-अस्त्र रावणेर गाये गिया पड़े
स्पर्श मात्र निद्रा याय हेन प्रस्वापण। रथोपरि रावण निद्राय अचेतन ४७
अचेतन ह'ये पड़े रथेर उपरे। सकल देवता आसि वेड़े रावणेरे
लोहार शिकले वान्धे हाते ओ गलाय। रावणे वान्धिया लैल ऐरावत पाय ४८
अवनीते लोटे रावणेर दश माथा। दशानन-दशा देखि हासेन देवता
हिँचड़िया ल'ये याय, वुक छ'ड़े याय। ऐरावत-दन्त ठेके रावणेर गाय ४९
खान खान हय अङ्ग, दन्त दिया चिरे। परित्राहि डाके राजा विषम प्रहारे
हरषित देवगण जिनिया रावण। शिरे हात दिया कान्दे निशाचरगण ५०
रावण हइल वन्दी देखे मेघनाद। रथे चड़ि अन्तरीक्षे करे सिंहनाद
मेघनाद गर्ज्जे येन मेघेर गर्ज्जन। धरे नाहि यास इन्द्र, फिरि दे रे रण ५१

वीर कुम्भकर्ण निद्रा से विह्वल हो गया। अब देवगण की रक्षा हुई। कुम्भकर्ण के निद्रित हो जाने पर रावण चिन्तित हो उठा। उसे रथ पर चढ़ाकर उसने तुरन्त लंकापुरी भेज दिया॥ ४४॥ इन्द्र के साथ रावण का महायुद्ध लग गया। दोनों नाना प्रकार के महाबाण बरसाने लगे। दोनों जो बाण मार रहे थे उनका कोई लेखा-जोखा न था। अपने-अपने प्रशिक्षण के अनुसार वे चारों ओर बाण-वर्षा कर रहे थे॥ ४५॥ दोनों ही बराबर थे। कोई किसी को जीत नहीं पाता था। तब इन्द्र को प्रस्वापण नामक बाण की याद आयी। इन्द्र बोले, हे देवगण, तुम लोग कौतुक देखते रहो, मैं प्रस्वापण बाण से रावण को बंदी कर लूँगा॥ ४६॥ ब्रह्म-मंत्र पढ़कर इन्द्र ने प्रस्वापण बाण छोड़ दिया। वह ब्रह्म-अस्त्र रावण के शरीर पर जा गिरा। वह प्रस्वापण बाण ऐसा था कि जिसके स्पर्श मात्र से निद्रा आ जाती थी। रावण रथ पर निद्रा से अचेतन हो गया॥ ४७॥ वह अचेतन होकर रथ पर पड़ गया। (तब) सभी देवताओं ने आकर रावण को घेर लिया। लोहे की ज़ंजीरों से उसके हाथ और पैर गले को बांध लिया। और रावण को ऐरावत के पैरों में बांध दिया॥ ४८॥ रावण के दसों सिर धरती पर लोटने लगे। दशानन की दशा देख देवगण हँसने लगे। ऐरावत उसे घसीट कर ले जाने लगा, उसकी छाती चिर जाने लगी, ऐरावत के दाँत रावण के शरीर में गड़ जाने लगे॥ ४९॥ उसके अंग खंड-खंड होने लगे। ऐरावत ने दाँतों से उसे चीर दिया। भयंकर प्रहार से राजा रावण 'बचाओ, बचाओ' पुकारने लगा। रावण को जीतकर देवगण हर्षित हुए। सिरों पर हाथ रखे निशाचरगण रोने लगे॥ ५०॥ मेघनाद ने देखा,

रावण कुमार आमि नाम मेघनाद । आजिकार युद्धे तोर पड़िल प्रमाद
पितारे करिलि बन्दी आमा-विद्यमाने । विनाशिब स्वर्गपुरी आजिकार रणे ५२
गर्ज्जितेछे मेघनाद थाकिया आकाशे । मेघनाद-गर्ज्जनेते देवराज हासे
तोर ठाँइ शुनिलाम अपूर्व्व काहिनी । पिता हैते पुत्र बड़, कोथाओ ना शुनि ५३
एत यदि दुइ जने हैल गाला गालि । दुइ जने युद्ध बाजे, दोँहे महाबली
अन्तरीक्षे मेघनाद मेघे हय लुकि । मेघेर आड़ेते युझे कुमार धानुकी ५४
नाना अस्त्र मेघनाद फेले चारि क्षिते । फाँफर हइल इन्द्र, ना पारे सहिते
अन्तरीक्षे थाकि बाण फेले झाँके झाँके । कोथा हैते पड़े बाण केह नाहि देखे ५५
खाण्डा खरशाण शेल शूल एक धारा । चारि भिते पड़े येन आकाशेर तारा
नाना अस्त्र मेघनाद करे बरिषण । जर्ज्जर हइल बाणे यत देवगण ५६
इन्द्रे छाड़ि देवगण पलाय तखन । एकेश्वर थाकि इन्द्र करे महारण
सन्धान पूरिया इन्द्र ऊर्द्ध्वं दृष्टे चाय । कोथा हैते आसे बाण देखिते ना पाय ५७
सहस्र चक्षेते इंद्र ना पाय देखिते । देखिते ना पाय, आर ना पारे सहिते
मेघनाद जुड़िलेक बन्ध नागपाश । ताहा देखि देवगणे लागिल तरास ५८

रावण बन्दी हो गया। वह रथ पर चढ़ अन्तरिक्ष में चला गया और सिंहनाद करने लगा। मेघनाद मेघों की गर्जना जैसे गरजने लगा—रे इंद्र, तू घर लौटकर न जा, लौटकर संग्राम कर ! ॥ ५१ ॥ मैं रावण का कुमार हूँ, मेरा नाम मेघनाद है। आज के इस युद्ध में तेरा विनाश आ गया है। मेरे रहते तूने पिता को बंदी कर लिया है। आज के युद्ध में मैं स्वर्गपुरी का विनाश कर डालूंगा ॥ ५२ ॥ मेघनाद आकाश मे रहकर गरज रहा था। मेघनाद की गर्जना सुन देवराज हँस पड़े। बोले, यह अपूर्व कथा तुझी से सुन रहा हूँ, पुत्र पिता की अपेक्षा बड़ा हो, यह बात तो कहीं नहीं सुनी ॥ ५३ ॥ दोनों में इस तरह गाली-गलौवल होने के बाद दोनों युद्ध करने लगे। दोनों ही महाबली थे। मेघनाद अंतरिक्ष में जाकर मेघों के बीच छिप जाता था। धनुष-धारी कुमार मेघनाद मेघों की ओट से जूझ रहा था ॥५४॥ मेघनाद चारों ओर नाना प्रकार के अस्त्रों का प्रहार कर रहा था। उनका (प्रहार) सह न सकने के कारण इन्द्र संकट में पड़ गये। मेघनाद अन्तरिक्ष में रहकर झुंड के झुंड बाण फेंकने लगा। वे बाण कहाँ से आकर गिर रहे हैं कोई देख नहीं पाता था ॥ ५५ ॥ तेज धार वाले खड्ग, शेल, शूल, लगातार चारों ओर से ऐसे गिर रहे थे मानो आकाश के तारे हों ! मेघनाद नाना अस्त्रों की वर्षा कर रहा था। सारे देवगण उसके बाणों से जर्जर हो गये ॥ ५६ ॥ तब देवगण इन्द्र को छोड़कर भाग गये। अकेले इन्द्र महान युद्ध करने लगे। निशाना साधकर इन्द्र ऊपर आँखे उठाकर देखने लगे; पर वे बाण कहाँ से आ रहे हैं, दिखाई नहीं पड़ता था ॥ ५७ ॥ अपनी हजारों आँखों से भी इन्द्र देख नही पा रहे थे। वे देख नहीं पाते थे, और (प्रहार) सह नहीं पा रहे थे। मेघनाद ने बाँधनेवाला नागपाश चढ़ाया। उसे

मेघनाद जाने नाना वाणेर सुशिक्षा। यज्ञेते पाइल बाण, नाहि कारो रक्षा
एक वाणे भुजङ्गम अनेक जन्मिल। हाते गले देवराजे वान्धिया पाड़िल ५९
विषेर ज्वालाय इन्द्र हइल मुर्च्छित। इन्द्रे छाड़ि देवगण पलाय त्वरित
स्वर्ग छाड़ि पलाय यतेक देवगण। राक्षसेते रावणेर छाड़ाय बन्धन ६०
इन्द्रे बाँधे मेघनाद पिता विद्यमान। मेघनादे दशानन करिछे बाखान
आमारे वान्धियाछिल इन्द्र देवराज। हेन इन्द्रे बान्धिया करिले पुत्र काज ६१
इन्द्र के वान्धिया पुत्र, लह लङ्कापुरी। तवे आमि लुटिव ए अमर-नगरी
मेघनाद वले, पिता, आज्ञा कर तुमि। इन्द्र के वान्धिया आगे ल'ये याइ आमि ६२
मेघनाद वाक्य शुनि कहे दशानन। आज्ञाविनु, कर ताहा याहे तव मन
आज्ञा पेये मेघनाद इन्द्र के धरिल। रथेर निकटे गिया कहिते लागिल ६३
पितारे वान्धियाछिलि ऐरावत-पाय। वान्धिव तोमारे इन्द्र, रथेर चाकाय
इन्द्रे वान्धि पाठाइल लङ्कार भितर। अमर नगरी लुटे राजा लङ्केश्वर ६४
एके दशानन, ताहे अमर-नगरी। वाछिया वाछिया लुटे, स्वर्ग-विद्याधरी
नाना-रत्न-माणिक्य भाण्डार हैते निल। स्वर्ग-विद्याधरी तथा अनेक पाइल ६५
शचीरे खुंजिया फिरे राजा दशानन। शची ल'ये देवगण हैल अदर्शन
शची तरे रावणेर छिल बड़ आश। शचीरे ना पेये राजा हइल निराश ६६

देख, देवगण में आतंक फैल गया ॥ ५८ ॥ सुशिक्षा-प्राप्त मेघनाद अनेक प्रकार के वाणों की जानकारी रखता था। उसे यज्ञ में वे वाण मिले थे, उनसे किसी की रक्षा न थी! उस एक ही वाण से नागपाश से अनेकों भुजंग उत्पन्न हो गये और देवराज को हाथ-गले में बाँधकर गिरा दिया ॥ ५९ ॥ विष की ज्वाला से इन्द्र अचेत हो गये। इन्द्र को छोड़कर देवगण तेजी से भागने लगे। सभी देवता स्वर्ग छोड़कर भागने लगे। राक्षसों ने रावण को बंधन से मुक्त कर दिया ॥ ६० ॥ मेघनाद ने पिता के सम्मुख ही इन्द्र को बंदी कर लिया। दशानन मेघनाद की प्रशंसा करने लगा। मुझे देवराज इन्द्र ने बाँध लिया था, ऐसे इन्द्र को बंदी कर पुत्र, तूने बड़ा कार्य किया है ॥ ६१ ॥ पुत्र, इन्द्र को बाँधकर लंकापुरी ले चल। इसके पश्चात् मैं अमरों की इस पुरी को लूटूँगा। मेघनाद बोला— पिताजी, आप आज्ञा दें; मैं इन्द्र को बाँधकर पहले ले जाऊँ ॥ ६२ ॥ मेघनाद की बात सुनकर रावण बोला— मैं आज्ञा देता हूँ, तुम्हारी जैसी इच्छा हो, करो। आज्ञा पाकर मेघनाद ने इन्द्र को पकड़ लिया और रथ के समीप जाकर कहने लगा ॥ ६३ ॥ तूने पिता को ऐरावत के पैरों में बांधा था, इन्द्र, तुझे मैं रथ के पहिये से बाँधूंगा। इन्द्र को बंदी कर मेघनाद ने लंका में भेज दिया। राजा लंकेश्वर अमरों की नगरी को लूटने लगा ॥ ६४ ॥ एक तो (लूटनेवाला) रावण था, दूसरे वह पुरो अमर-नगरी अमरावती थी; रावण चुन-चुन स्वर्ग की विद्याधरियों को लूटने लगा। देवों के भंडार से विविध रत्न-मणि-माणिक निकाल लिये, वहाँ उसे स्वर्ग की अनेक विद्याधरियाँ मिलीं ॥ ६५ ॥ राजा रावण शची को खोजने-फिरने लगा। पर शची को लेकर देवता अदृश्य हो गये। शची को पाने

इन्द्रेर नन्दन बन देखे मनोहर। प्रवेशे नन्दन बने राजा लङ्केश्वर।
पारिजात-बृक्ष उपाड़िल डाले मूले। लुटिया अमराबती चले कुतूहले ६७
लङ्कार भितरे गिया करिल देयान। छत्रिश कोटि सम्मुखे कटक प्रधान
मेघनाद गेल तबे बापेर गोचर। बान्धिया रेखेछि इन्द्रे लङ्कार भितर ६८
लोहार शृङ्खले बान्धियाछि हाते गले। पाथर चापाये बुके राखि यज्ञस्थले
एत यदि कहे मेघनाद बीरबर। राजार प्रसाद पाय बापेर गोचर ६९
मेघनादे राजा तबे करीछे बाखान। धन्य धन्य पुत्र मोर बीरेर प्रधान
नाना-अलङ्कार दिल, माथे दिल मणि। अयुतेक बिद्याधरी दिलेक नाचनी ७०
बापेर प्रसाद पेये हरिष-अन्तरे। कुतूहले देबकया ल'ये रति करे
बहु धन पाय लुटि अमरनगरी। दिग्बिजय द्रव्य राजा आने लङ्कापुरी ७१
देब-दानबेर कन्या लये केलि करे। त्रिभुवन जिनिल से राजा लङ्केश्वरे
कौतुकेते लङ्कापुरे आछे लङ्केश्वर। सकल देबता गेल ब्रह्मार गोचर ७२
आचम्बिते ब्रह्मा, तब सृष्टि पाय नाश। दिबा रात्रि नाहि चन्द्र-सूर्य्येर प्रकाश
आचम्बिते स्वर्ग आसि बेड़े लङ्केश्वर। इन्द्र के बान्धिया निल लङ्कार भितर ७३

की रावण की बड़ी आशा थी। शची को न पाकर राजा रावण निराश हो गया ॥ ६६ ॥ उसने इन्द्र का मनोरम नन्दन वन देखा। राजा रावण ने उस नन्दन वन में प्रवेश किया। उसने पारिजात वृक्ष को जड़ से उखाड़ लिया और अमरावती को लूटकर बड़ी प्रसन्नता से चल पड़ा ॥ ६७ ॥ लंका में जाकर रावण ने राज-सभा बुलाई। उसके सामने छत्तीस करोड़ सेनापति बैठे। तब मेघनाद पिता के पास गया। कहा— इन्द्र को मैंने लंका में बाँध रखा है ॥ ६८ ॥ मैंने इन्द्र को हाथ और गले में लोहे की ज़ंजीरों में बाँधा है। यज्ञभूमि में उसकी छाती पर चट्टान चढ़ाये देता हूँ। वीरवर मेघनाद ने ज़ब यह बात कही तो बाप ने उसे राज-अनुग्रह दिखाया ॥ ६९ ॥ राजा रावण उस समय मेघनाद की प्रशंसा करने लगा— वीरों में प्रधान, मेरा पुत्र, तू धन्य है, धन्य है। उसने उसे अनेक प्रकार के आभूषण दिये। उसके सिर पर मणि पहनाई। दसों हज़ार विद्याधरियाँ और नर्तकियाँ दी ॥ ७० ॥ बाप का अनुग्रह पाकर मेघनाद अन्तर् में बहुत हर्षित हुआ। परम आनन्द से वह देव-कन्याओं को लेकर रति-क्रीड़ा करने लगा। अमरों की नगरी को लूटकर रावण ने अनेक धन प्राप्त किया और दिग्विजय में मिली वस्तुओं को वह लंकापुरी ले आया ॥ ७१ ॥ देव-दानवों की कन्याओं को लेकर राजा रावण केलि करने लगा। राजा लंकेश्वर ने त्रिभुवन को जीत लिया। राजा लंकेश्वर रावण परम आनन्द से लंकापुरी में रहने लगा। उधर देवगण ब्रह्मा के पास पहुँचे ॥ ७२ ॥ वे बोले, ब्रह्माजी, अकस्मात् आपकी सृष्टि नाश होनेवाली है। अब तो दिन-रात चन्द्रमा और सूर्य का प्रकाश रुका हुआ है। राजा लंकेश्वर रावण ने अकस्मात् आकर स्वर्ग को घेर लिया और इन्द्र को बाँधकर लंका में ले गया है ॥ ७३ ॥ देवता स्वर्ग का निवास छोड़

छाड़ियाछे देवगण स्वर्गेर वसति। कि प्रकारे देबराज पावे अब्याहति
एतेक शुनिया ब्रह्मा भावेन विषादे। रावणेरे वर दिये पड़िनु प्रमादे ७४
देवगणे राखि ब्रह्मा चलिल सत्वर। एकेश्वर ब्रह्मा गेल लङ्कार भितर
पाद्य-अर्घ्य दिया पुजा करिल रावण। भक्ति भरे पूजे राजा ब्रह्मार चरण ७५
आचम्बिते केन प्रभु हेया आगमन। आज्ञा कर, आछे तव कोन् प्रयोजन
बिरिञ्चि वलेन, दुष्ट कैलि सृष्टि-नाश। रात्रि-दिन नाहि चन्द्र सूर्य्येर प्रकाश ७६
इन्द्रे वान्धि लङ्काते आनिलि कि कारण। स्वर्गपुरे नाहि रहे यत देवगण
योड़ हाते वले राजा ब्रह्मार गोचर। त्रिभुवन जिनिलाम पेये तव वर ७७
सकले जिनिनु आमि तोमार प्रसादे। इन्द्रे वान्धियाछे मोर पुत्र मेघनादे
यज्ञशाले राखियाछे देव पुरन्दरे। आज्ञाकर, आनि आमि तोमार गोचरे ७८
ब्रह्मा बलिलेन, राजा, चल यज्ञशाला। देखाइवे मेघनाद-यज्ञ निकुम्भिला
आगे-आगे यान ब्रह्मा, पश्चाते रावण। तार पाछु चलिला राक्षस बिभीषण ७९
मेघनाद-यज्ञ देखि विधातार हास। मेघनादे बले ब्रह्मा करिया प्रकाश
तब पिता इन्द्र-रणे पाय पराजय। हेन इन्द्रे जिन तुमि संग्रामे दुर्ज्जय ८०
तव वाणे त्रिभुवन हइल कम्पित। आजि हैते तव नाम हैल इन्द्रजित
बर माग इन्द्रजित् तुष्ट हैतु आमि। सृष्टि रक्षाकर इन्द्रे छाड़ि दिया तुमि ८१

चुके हैं, अब देवराज को छुटकारा कैसे मिलेगा ? यह सुनकर ब्रह्मा विषाद से सोचने लगे। रावण को वर देकर बड़ी विपत्ति में पड़ गया ॥ ७४ ॥ देवगणों को वहीं रखकर ब्रह्मा तुरंत चल पड़े। वे अकेले ही लंका में गये। रावण ने पाद्य-अर्घ्य देकर उनकी पूजा की। राजा रावण ने भक्तिपूर्वक ब्रह्मा के चरणों की पूजा की ॥ ७५ ॥ पूछा— प्रभु, अकस्मात् आपका यहाँ आगमन किस हेतु हुआ है ? आप आज्ञा दें, आपका कौन-सा प्रयोजन है ? ब्रह्मा बोले, दुष्ट, तूने सारी सृष्टि नष्ट कर डाली। अब तो दिन-रात चन्द्र-सूर्य का प्रकाश रुका हुआ है ॥ ७६ ॥ तू इन्द्र को बाँधकर लंका में किसलिए ले आया ? अब देवगण स्वर्गलोक का निवास छोड़ चुके हैं। तब हाथ जोड़कर राजा रावण ब्रह्मा से बोला— आपका वर पाकर मैंने त्रिभुवन जीत लिया ! ॥ ७७ ॥ आपके प्रसाद से मैंने सबको जीत लिया। इन्द्र को मेरा पुत्र मेघनाद बाँध लाया है। उसने इन्द्र को यज्ञ-शाला में रख दिया है। आप आज्ञा करें, आपके सम्मुख ले आवें ! ॥ ७८ ॥ ब्रह्मा बोले, राजा रावण, यज्ञशाला में चलो। मुझे मेघनाद का यज्ञ-स्थान निकुंभिला दिखलाओ। आगे-आगे ब्रह्मा चले, पीछे रावण चला। उसके पीछे राक्षस विभीषण चला ॥ ७९ ॥ मेघनाद का यज्ञ देखकर ब्रह्मा हँस पड़े। ब्रह्मा ने मेघनाद से प्रकट रूप से कहा— तुम्हारे पिता की इन्द्र से युद्ध में पराजय हुई थी। ऐसे इन्द्र को तुमने जीत लिया, तुम संग्राम में दुर्जेय हो ॥ ८० ॥ तुम्हारे वाणों से त्रिभुवन कंपित हो गया है। इसी कारण आज से तुम्हारा नाम इन्द्रजित् होगा। इन्द्रजित्, मैं तुम पर संतुष्ट हूँ, तुम वर माँगो ! इन्द्र को छोड़कर तुम सृष्टि की रक्षा करो ॥ ८१ ॥

इन्द्रजित् बले, आगे देह तुमि बर। तबे आमि छाड़िब ए देब पुरन्दर
अमर हइब आमि, कर संबिधान। अन्य बर आमि नाहि चाहि तब स्थान ८२
इन्द्रजित् कथा शुनि बिरिञ्चिर हास। अमर हइले तुमि मोर सर्व्वनाश
ब्रह्मा बले, दिनु बर शुन भाल मते। त्रिभुबन जिनिबे ये यज्ञेर फलेते ८३
एइ यज्ञ भङ्ग तोर करिबे ये जन। सेइ जन हबे तोर बधेर कारण
ए सन्धि शुनियाछिल रक्षः बिभीषण। तारि जन्ये इन्द्रजिते बधिल लक्ष्मण ८४
इन्द्रे एने दिल तबे ब्रह्मा-बिद्यमान। अधोमुखे रहे इन्द्र पेये अपमान
ब्रह्मा बलिलेन, इन्द्रे, किबा भाब मने। ए दुःख पाइले ब्रह्म शापेर कारणे ८५
तोमार शापेर कथा पड़े मोर मने। पूर्व्वकथा कहि इन्द्र, शुन सावधाने
कौतुकेते एक कन्या सृजिलाम आमि। राज्य भोगे पूर्व्वकथा पासरिले तुमि ८६
अहल्या कन्यार नाम राखिनु यतने। आइल गौतम मुनि आमा-दरशने
अहल्यार रूप देखि मुनि अचेतन। लाजे मुनि प्रकाश ना करे कदाचन ८७
बुझिया मुनिर मन कन्या दिनु दान। कन्या ल'ये कैल मुनि स्वस्थाने प्रस्थान
तपस्याते गेल मुनि तमसार कूले। हेन काले गेले तुमि पड़िबार छले ८८
अहल्या गौतम-पत्नी परमा सुन्दरी। गौतमेर रूप धरि गेले तार पुरी
सती कन्या अहल्या से सर्व्वलोके जाने। तोमारे आसन जल दिल स्वामी-ज्ञाने ८९

इन्द्रजित् बोला, पहले आप मुझे वर दीजिए। उसके पश्चात् मैं इस देव पुरन्दर को छोड़ूँगा। मैं अमर बनूँ, ऐसा विधान कर दीजिए। मुझे आपसे कोई दूसरा वर नहीं चाहिए ॥ ८२ ॥ इन्द्रजित् की बात सुन ब्रह्मा हँसने लगे। तुम अमर हो जाओ तो मेरा सर्वनाश हो जाए। ब्रह्मा बोले, ध्यान देकर सुनो, मैं तुम्हें वर दे रहा हूँ। इस यज्ञ के फल-स्वरूप तुम त्रिभुवन जीत लोगे ॥ ८३ ॥ जो व्यक्ति तुम्हारा यह यज्ञ-भंग करेगा, वही तुम्हारे वध का कारण बनेगा। राक्षस विभीषण ने (ब्रह्मा तथा मेघनाद के बीच हुई) यह संधि सुन ली थी। उसी कारण इन्द्रजित् को लक्ष्मण मार सके ! ॥ ८४ ॥ तब मेघनाद ने इन्द्र को ब्रह्मा के सम्मुख ला दिया। अपमानित होकर इन्द्र सिर झुकाये रहे। ब्रह्मा बोले, इन्द्र, तुम क्या सोच रहे हो ? यह दुःख तो तुम्हें ब्रह्मशाप के कारण मिला है ॥ ८५ ॥ तुम्हारे शाप की बात मुझे स्मरण हो रही है। इन्द्र, मैं पूर्व-कथा सुनाता हूँ, सावधानी से सुनो। राज्य-भोग में लगे रहने के कारण तुम वह पूर्व-कथा भूल चुके हो। मैंने कौतुकवश एक कन्या का सर्जन किया था ॥ ८६ ॥ बड़े यत्नपूर्वक उस कन्या का नाम अहल्या रखा ! इसके पश्चात् गौतम मुनि मेरे दर्शन हेतु आये। अहल्या का रूप देखकर मुनि सुध-बुध भूल गये। परन्तु लाज के मारे मुनि ने कदापि वह बात प्रकट नहीं की ॥ ८७ ॥ मैंने मुनि का मनोभाव समझकर उन्हें वह कन्या दान कर दी। कन्या को लेकर मुनि अपने स्थान को चले गये। तपस्या करने हेतु मुनि तमसा के तट पर गये। उसी समय तुम पढ़ने के बहाने वहाँ पहुँचे ॥ ८८ ॥ गौतम-पत्नी अहल्या परमासुन्दरी थी। तुम गौतम का रूप धारण कर उसके निवास पर गये। अहल्या सती कन्या है, यह सब

नारी-जाति नाहि जाने माया-व्यवहार । बले धरि तुमि तारे करिले शृङ्गार
हेन काले तप करि, मुनि एल घरे । सर्व्वज्ञ गौतम मुनि चिनिल तोमारे ९०
अहल्यारे आगे शाप दिला मुनिवर । पाषाण हइया थाक अनेक बत्सर
आपनि हवेन प्रभु राम-अवतार । पद-धूलि दिले तिनि तोमार निस्तार ९१
अहल्या पाषाणी हैल ये मुनिर शापे । तोमारे से मुनि शाप दिल महाकोपे
तोर अनाचार इन्द्र, रहिल घोषणा । तोरे पड़ाइया भाल पेलाम दक्षिणा ९२
भगे अभिलाष तोर, इन्द्र तुइ ठग । आमार शापेते तोर गाये ह'क भग
शाप दिल महामुनि, खण्डन ना याय । हइल सहस्र भग, इन्द्र, तब गाय ९३
धरिया मुनिर पाये करिले क्रन्दन । परदार-पाप मोर करह खण्डन
मुनि बले, खण्डन नायाय एइ पाप । एइ पापे परे तुमि पाबे मनस्ताप ९४
मुनिर बचन कभु ना याय खण्डन । एत दुःख पेले ब्रह्म-शापेर कारण
बिरिञ्च बलेन, इन्द्र, कहि तब काणे । राम नाम मन्त्र तुमि जप रात्रि-दिने ९५
इहा विना तोमार नाहिक प्रतिकार । राम नामे हय सर्व्व पापेर संहार
एक नामे सहस्र नामेर फल हय । राम-नाम तुल्य नाहि चारि बेदे कय ९६
एतेक बलिया ब्रह्मा गेलेन स्वस्थान । इन्द्र गेल स्वर्गपुरे पेये प्राणदान
ब्रह्मार कारणे इन्द्र पेये अव्याहति । आइल अमरावती आपन बसति ९७

लोग जानते हैं । तुम्हें स्वामी मानकर उसने आसन और जल दिया ॥८९॥ नारी-जाति तो माया (छलना) का व्यवहार नहीं जानती । बलपूर्वक पकड़कर तुमने उससे संभोग किया । उसी समय तपस्या करने के बाद मुनि घर लौटे । सर्वज्ञ मुनि गौतम ने तुम्हें पहचान लिया ॥ ९० ॥ पहले मुनि ने अहल्या को अभिशाप दिया— तू अनेक वर्षों तक शिला बनी रह । प्रभु स्वयं राम-अवतार धारण करेंगे । वे जब अपनी चरण-धूलि देंगे तो तेरी मुक्ति हो जायगी ॥ ९१ ॥ जिस मुनि के शाप से अहल्या शिला बन गयी, उसी मुनि ने महाक्रोध से तुम्हें शाप दिया । रे इन्द्र, तेरा अनाचार संसार में घोषित होता रहेगा । तुझे पढ़ाकर मुझे यह अच्छी दक्षिणा मिली ॥ ९२ ॥ रे इन्द्र, तू ठग है । नारी की योनि की ही तुझे अभिलाषा रही । मेरे शाप से तेरे शरीर में योनियाँ बन जायें । महामुनि ने जो शाप दिया वह खडित नहीं हो सकता था । इन्द्र, उसी से तुम्हारे शरीर में सहस्रों योनियाँ बन गयीं ॥ ९३ ॥ तब तुम मुनि के चरण पकड़कर रुदन करने लगे, पर-नारी के संग संभोग का मेरा पाप खंडन कर दो । मुनि बोले, यह पाप खंडित नहीं हो सकता । इस पाप के कारण आगे चलकर तुम मनस्ताप पाते रहोगे ॥ ९४ ॥ मुनि के वचन कभी खंडित नहीं हो सकते । इसी कारण उसी ब्रह्मशाप से तुम्हें इतना दुःख उठाना पड़ा । ब्रह्मा बोले— इन्द्र, तुम्हारे कानों में कहता हूँ, तुम दिन-रात राम-नाम मंत्र जपते रहो ॥ ९५ ॥ इसके बगैर तुम्हारा और कोई प्रतिकार नहीं है । राम-नाम से सभी पापों का संहार हो जाता है । इस एक ही नाम से सहस्रों नामों का फल मिलता है । चारों वेद कहते हैं, राम-नाम की समता करनेवाला कोई नहीं है ॥ ९६ ॥ यों कहकर ब्रह्मा

देवराज रात्रिदिन राम नाम जपे। परित्राण पाय इन्द्र परदार पापे
दिग्‌बिजय करि रावण एल निज घर। चौद्द युग राज्य करे लङ्कार ईश्वर ९८
आर चौद्द युग छिल रावणेर आयु। सीतार चुलेते धरि हइल अल्पायु
लङ्काते करिल राज्य माली ओ सुमाली। परे राज्य करिल कुबेर महाबली ९९
तत्परे लङ्काय राज्य करिल रावण। तव कृपा बले एबे राजा बिभीषण
अगस्त्येर कथा शुनि श्रीरामेर हास। कह कह बलि राम करिला प्रकाश १००
रावणेर दिग्‌बिजय कहिला हे मुनि। रावण-अधिक हनुमानेरे बाखानि
बहुस्थाने शुनि रावणेर पराजय। हनुमान-पराजय कोथाओ नाहय १०१
गिरि गाधमादन रात्रिर मध्ये आने। हनुमान-सम बीर नाहि त्रिभुवने

हनूमानेर जन्मकथा

अगस्त्य बलेन, कि कहिब तार कथा। हनूमान गुण कत ना जाने देवता १
ताहार यतेक गुण कहिते ना जानि। संक्षेपते कहि किछु, शुन रघुमणि
जननी अञ्जना तार, जनक पवन। हनूमान जन्मकथा करिब वर्णन २

अपने स्थान को चले गये। प्राण-दान पाकर इन्द्र भी स्वर्गपुरी चले गये। ब्रह्मा के कारण छुटकारा पाकर इन्द्र अपने निवासस्थान अमरावती आये ॥ ९७ ॥ देवराज रात-दिन राम-नाम जपने लगे। और उससे परनारी के संभोग के पाप से उन्हें परित्राण मिला। उधर दिग्विजय कर रावण अपने घर पहुँचा। लंका के अधीश्वर रावण ने चौदह युगों तक राज्य किया ॥ ९८ ॥ और चौदह युग तक की रावण की आयु थी, परन्तु सीता के बाल पकड़ने के कारण वह अल्पायु हो गया। लंका पर माली और सुमाली ने पहले राज किया था, उसके बाद महाबली कुबेर ने राज किया ॥ ९९ ॥ उसके बाद लंका पर रावण ने राज किया। तुम्हारे कृपा के बल से अब वहाँ विभीषण राजा है। अगस्त्य मुनि की बात सुन रामचन्द्र हँसने लगे। मुनि, (आगे की कथा) सुनाइये, कहकर (अपनी इच्छा) प्रकट की ॥ १०० ॥ हे मुनि, आपने तो रावण के दिग्विजय के बारे मे बताया, परन्तु मैं तो रावण की अपेक्षा हनुमान को ही बखानता हूँ। अनेक स्थानो में रावण की पराजय की बात सुनी गयी है, पर हनुमान की पराजय कहीं नहीं होती ॥ १०१ ॥ रात भर के भीतर गंधमादन पर्वत को जो ले आ सकते हैं, ऐसे हनुमान-जैसा वीर त्रिभुवन में कोई नहीं है।

हनुमान की जन्म-कथा

अगस्त्य मुनि बोले— उनकी बात क्या बताऊँ ? हनुमान के गुण कितने हैं, देवता भी नहीं जानते ॥ १ ॥ उनके जितने गुण हैं उन्हें कहने में मैं असमर्थ हूँ। मैं संक्षेप में कुछ कहता हूँ, रघुमणि, सु... हनुमान की

अञ्जना वानरी छिल परमा सुन्दरी। तारे बिभा करिलेक बानर केशरी
वानरीर रूप-गुण बड़इ अद्‌भुत। रूपे आलो करे, येन पड़िछे बिद्युत् ३
मलय-पर्व्वत परे केशरीर घर। अञ्जना लइया केलि करे निरन्तर
प्रवेशिल चैत्र-मास वसन्त-समय। आइल-पवन-देव पर्व्वत-मलय ४
अञ्जनार रूपे वायु आकुल-हृदय। करिते ना-पारे किछु केशरी-दुर्ज्जय
एक दिन एकाकिनी पाइया पवन। परिधान उड़ाइया दिल आलिङ्गन ५
अञ्जना बलेन, वायु, कैले जाति-नाश। देवता हइया तब बानरी-बिलास
वायु वले, किछु आर ना बल अञ्जना। तब रूप देखि आमि पासरि आपना ६
शास्त्रे महापाप पर-रमणी-गमने। जाति कुल बिचार करये कोन् जने
सकल संबरि तुमि याह निज घरे। जन्मिवे दुर्ज्जय बीर तोमार उदरे ७
एतेक वलिया वायु गेल निज स्थान। आठार मासेते जन्म निल हनूमान
अमावस्या दिने हैल हनूर जनम। जन्म मात्र सेइ दिन बिशाल बिक्रम ८
जन्मिया मायेर कोले करे स्तन्यपान। उदित हइल रक्त वर्ण भानुमान
फल ज्ञाने धरिते से चाहिल कौतुके। अञ्जनार कोल हते उठे अन्तरीक्षे ९
पर्व्वत हइते सूर्य्य लक्षेक योजन। एक लाफे उठे तथा पवन-नन्दन
जन्म-मात्र बालक से उठिल आकाशे। सूर्य्य के धरिते याय असीम साहसे १०

जननी अंजना और पिता पवन हैं। मैं हनुमान की जन्म-कथा वर्णन करूँगा ॥ २ ॥ वानरी अजना परम सुन्दरी थी। वानर केशरी ने उससे विवाह किया था। उस वानरी अंजना के रूप-गुण बड़े ही अद्‌भुत थे। वह अपने रूप से ऐसे आलोकित करती थी, मानो गिरती हुई विद्युत् हो! ॥ ३ ॥ केशरी का घर मलयपर्वत पर था। अंजना को लेकर वह वहाँ निरंतर केलि किया करता था। (एक बार) जब वसन्त का समय चैत का महीना आरंभ हुआ, पवन-देवता मलय-पर्वत पर आये ॥४॥ अंजना का रूप देखकर वायुदेव हृदय में व्याकुल हो उठे। पर दुर्जेय केशरी के कारण वे कुछ कर नहीं सके। एक दिन अंजना को अकेली पाकर उसका पहनावा उडाकर उसे आलिंगन में ले लिया ॥ ५ ॥ अंजना बोली, वायु, तुमने जाति नाश कर दिया। देवता होकर भी तुमने वानरी से विलास किया। वायु ने कहा— अंजना, अब कुछ न बोलो! तुम्हारा रूप देख मैं अपने को भूल गया था ॥ ६ ॥ पर-नारी से संभोग करने पर शास्त्रों के अनुसार महापाप होता है। पर ऐसी स्थिति में जाति-कुल का विचार कौन करता है? सब कुछ सँभाल कर तुम अपने घर चली जाओ। तुम्हारे उदर से दुर्जेय वीर जन्म लेनेवाला है ॥ ७ ॥ यों कहकर वायु अपने स्थान चले गये। अठारह महीने बाद हनुमान का जन्म हुआ। अमावस्या के दिन हनुमान का जन्म हुआ। जन्म होते ही उसी दिन उन्होंने महा विक्रम दिखाया ॥ ८ ॥ जन्म लेने के पश्चात् माँ की गोद में वे स्तन्यपान कर रहे थे। उसी समय रक्त-वर्ण सूर्यदेव उदित हुए। हनुमान ने सूर्य को फल समझकर कौतुक से पकड़ना चाहा और अंजना की गोद से अन्तरिक्ष में चढ़ गये ॥ ९ ॥ पर्वत से सूर्य की दूरी लगभग एक

ग्रहण लागिवे सूर्य्य सेइ से दिवसे। धाइयाछे राहु सूर्य्य गिलिबार आशे
हनूमाने देखि राहु पलाइल डरे। कहिल सकल कथा इन्द्रेर गोचरे ११
मम अधिकार इन्द्र दिले तुमि कारे। ना जानि, के आसियाछे सूर्य्य गिलिबारे
शुनिया राहुर कथा इन्द्रेर तरास। सूर्य्य के गिलिवे केवा करियाछे आश १२
ऐरावते चड़ि इन्द्र वज्र हाते लये। सूर्य्येर निकट हनू देखिल आसिये
हनूमाने देखि इन्द्र भयेते अस्थिर। सुमेरु पर्व्वत जिनि प्रकाण्ड शरीर १३
ऐरावत-माथा राङ्गा हिङ्गुले मण्डित। ताहा देखि हनूमान हैल हरषित
सूर्य्य एड़ि धाय ऐरावतेरे धरिते। कोपेते उठिल इन्द्र वज्र ल'ये हाते १४
क्रुद्ध ह'ये देवराज आपना पासरे। बिना दोषे वज्राघात हनू सिरे करे
हनूमान पीड़ित हइल वज्राघाते। अचेतन ह'ये पड़े मलय पर्व्वते १५
निरखिया अञ्जनार उड़िल पराण। व्याकुल हइया कान्दे, कोले हनूमान
पुत्र पुत्र वलि करे अञ्जना क्रन्दन। हेन काले आइलेन देवता पवन १६
अञ्जना बलेन नाथ, तव अपकर्म्मे। पापेते जन्मिल पुत्र, मरिल अधर्म्मे
अञ्जनार बचने पवन पड़े लाजे। जगतेर प्राण आमि धरि कोन् काजे १७
जगते त हइ आमि जीवनेर निधि। पुत्र मरे आमार कौतुक देखे विधि
विधाता करिल सृष्टि करि वड़ आश। स्वर्ग-मर्त्य आदि आमि करिव विनाश १८

लाख योजन है। एक ही छलांग से पवन-नन्दन वहाँ पहुँच गये। जन्म होते ही वह बालक आकाश में चढ़ गया और असीम साहस से सूर्य को पकड़ने चला ॥ १० ॥ उसी दिन सूर्यग्रहण लगनेवाला था। सूर्य को निगलने हेतु राहु वेग से चला आ रहा था। हनुमान को देखकर राहु डर के मारे भाग चला। उसने सारी बात इन्द्र से बतायी ॥ ११ ॥ इन्द्र, तुमने भला मेरा अधिकार किसे दे दिया? पता नहीं सूर्य को निगलने के लिए यह कौन आया है? राहु की बात सुनकर इन्द्र संत्रस्त हो उठे। सूर्य को निगलने की इच्छा यह किसने की है? ॥ १२ ॥ इन्द्र हाथ में वज्र ले ऐरावत पर चढ़कर सूर्य के निकट आये और वहाँ हनुमान को देखा। सुमेरु पर्वत से भी बढ़कर विशाल शरीर वाले हनुमान को देखकर इन्द्र भय से अस्थिर हो उठे ॥ १३ ॥ ऐरावत का मस्तक लालहिंगुल में मंडित था। उसे देख हनुमान हर्षित हो उठे। सूर्य को छोड़ वे ऐरावत को पकड़ने चले। इन्द्र तब क्रोध से वज्र हाथ में ले उठ पड़े ॥ १४ ॥ क्रोधित होकर देवराज इन्द्र अपने को भूल गये और बिना किसी अपराध के हनुमान के सिर पर वज्र से आघात किया। हनुमान वज्राघात से पीड़ित हुए। वे अचेत होकर मलय-पर्वत पर गिर पड़े ॥ १५ ॥ उन्हें गिरा देख अंजना के प्राण मानो उड़ गये। वह हनुमान को गोद में ले व्याकुल होकर रोने लगी। अंजना, 'पुत्र-पुत्र, कहकर रुदन करने लगी। तभी वहाँ पवन-देवता आ पहुँचे ॥ १६ ॥ अंजना ने कहा— नाथ, आपके अपकर्म के कारण पुत्र पाप से जन्मा और अपकर्म से ही मरा! अंजना के वचन से पवन लाज में पड़ गये। (वे सोचने लगे) मैं भला जगत के प्राण किस प्रयोजन से धारण करूँ? ॥ १७ ॥ संसार में तो

वहे श्वास पवन से लोकेर जीवन। पवन रोधिल अचेतन त्रिभुवन
स्थावर जङ्गम आदि मरे यत जीवी। अचेतन मुनि सव सकल पृथिवी १९
अचेतन इन्द्र आदि सकल देवता। सृष्टि नाश हय देखि चिन्तित विधाता
मलय-पर्व्वते ब्रह्मा आसिया सत्वर। वलेन, पवन, शुन आमार उत्तर २०
सृष्टि सृजिलाम आमि बहुतर क्लेशे। हेन सृष्टि नाश कर, युक्ति ना आइसे
पवने सृजिनु आमि लोकेर जीवन। श्वासेते पवन वहे एइ से कारण २१
हेन वायु रोध करि मारिला जगत। आपनि मरिवे वुझि, कर सेइ मत
आत्मा राख, सृष्टि राख, शुनह उत्तर। चारि युगे पुत्र तव हइवे अमर २२
शुनिया ब्रह्मार कथा पवनेर हास। रुद्ध छिल पवन, से करिल प्रकाश
आपना प्रकाश यदि करिल पवन। स्वर्ग-मर्त्य-पाताल उठिल त्रिभुवन २३
विधाता वलेन, शुन कहि देवगण। हनूमाने आशीर्व्वाद करह एखन
सर्व्व-अग्रे यम वले आमि दिनु वर। आमाहैते नाहि तव मरणेर डर २४
देवता वरुण वर दिलेन तखन। ना हवे आमार जले तोमार मरण
अग्नि वले, हनूमान, दिलाम ए वर। अग्निते ना पुड़िवे तोमार कलेवर २५

मैं जीवन-निधि हूँ। मेरा पुत्र मर गया है, और विधाता कौतुक से देख रहा है। विधाता ने बड़ा आशा से इस संसार की सर्जना की थी। अब मैं स्वर्ग, मर्त्य आदि का विनाश कर डालूंगा ॥ १८ ॥ जो सांस वहती है, वही पवन संसार का जीवन है। पवन ने उसे रोक दिया, इससे त्रिभुवन अचेतन हो गया। स्थावर, जंगम आदि जितने भी जीवधारी हैं, मरने लगे। सारे मुनि और सारी पृथ्वी अचेतन हो गई ॥ १९ ॥ इन्द्र आदि सारे देवता अचेत हो गये। सृष्टि का विनाश हुआ देख विधाता चिन्तित हो उठे। ब्रह्मा तुरन्त मलयपर्वत पहुँचे। वोले— पवन, मेरा उत्तर सुनो! ॥२०॥ मैंने अनेक कष्ट से इस सृष्टि की सर्जना की है। ऐसी-सृष्टि को तुम नाश कर डालो, इसका कोई औचित्य तो समझ में नहीं आता। पवन द्वारा मैंने लोकों के जीवन की सर्जना की है। साँसों में जो पवन बहता है, उसका यही कारण है ॥ २१ ॥ ऐसी वायु को रोककर तुम जगत को मार रहे हो। यह संसार तो स्वयं मरनेवाला है ही, ऐसा समझकर, उसके अनुसार काम करो। मेरा उत्तर सुनो, तुम आत्मा को बचाओ, सृष्टि को बचाओ। तुम्हारा पुत्र चारों युगों में अमर रहेगा ॥ २२ ॥ ब्रह्मा की बात सुनकर पवन हँसने लगे। जो पवन रुका हुआ था, उसे प्रकट कर दिया। जब पवन ने अपने को प्रकट कर दिया, तब स्वर्ग-मर्त्य-पाताल त्रिभुवन सचेत हो उठे ॥ २३ ॥ विधाता ने कहा, देवगण सुनो, तुम लोग अब हनुमान को आशीर्वाद दो। सबसे पहले यम ने कहा— मैं वर देता हूँ, मुझसे तुम्हें मरण का डर नहीं रहेगा ॥ २४ ॥ देवता वरुण ने तब वर दिया— मेरे जल में तुम्हारा मरण नहीं होगा। अग्नि वोले— हनुमान, मैं यह वर देता हूँ, अग्नि में तुम्हारा कलेवर नहीं जलेगा! ॥ २५ ॥ जो-जो देवता जितना बल धारण करते हैं, उन सवने

यत यत देवता यतेक बल धरे। आपन आपन बल दिलेन ताहारे
इन्द्र बले, हनूमान पवननन्दन। बड़ लज्जा पाइलाम तोमार कारण २६
येइ वज्राघाते तुमि हइला अस्थिर। से वज्रसमान ह'क तोमार शरीर
ब्रह्मा बले, मारुति, तोमारे दिनु बर। मम बरे हओ तुमि अजर अमर २७
आपनि दिलेन बर, आपनि बिमर्षे। ध्याने जानिलेन, ब्रह्मशाप हबे शेषे
बर दिया देबगण गेल निज स्थान। मलय पर्व्वते रहिलेक हनूमान २८
पितृघरे आछे बीर पर्व्वत शिखर। नाना बिद्या मल्ल युद्ध शिखिल बिस्तर
पड़िबारे गेल बीर भार्गबेर स्थाने। चारि बेद मल्ल युद्ध शिखे चारि दिने २९
पड़ाइते नारे, गुरु तारे घृणा करे। कुपिया भार्गब मुनि शाप दिला तारे
बानर हइया कर गुरु के ये घृणा। बल-बुद्धि-बिक्रम से पासर आपना ३०
सेइ पापे हनूमान आपना पासरे। तेइ पलाइयाछिल से बालिर डरे
हनूमान बीर यदि आपनारे जाने। भुबन जिनिते पारे दिनेकेर रणे ३१
अयुत बत्सर यदि करि परिश्रम। बलिते ना पारि हनूमानेर बिक्रम
राम, तुमि आपनि साक्षात् नारायण। तोमार सेबक तार कि कब कथन ३२
यत गुण धरे बीर, कि कहिते पारि। श्रीराम बिदाय देह देशे गति करि
दुइ वर्ष धरि पूर्व्व बृत्तान्त कहिया। स्वदेशे गेलेन मुनि बिदाय लइया ३३

हनुमान को अपना-अपना बल दान किया। इन्द्र बोले, पवननन्दन हनुमान ! तुम्हारे कारण मुझे वड़ा लज्जित होना पड़ा ॥ २६ ॥ जिस वज्र के आघात से तुम अस्थिर हो उठे थे, तुम्हारा शरीर उसी वज्र-समान हो। ब्रह्मा बोले, मारुति, तुम्हें मैं वर देता हूँ, मेरे वर से तुम अजर-अमर बनो ॥ २७ ॥ उन्होंने स्वयं वर दे दिया, पर स्वयं सोचने भी लगे। उन्होंने ध्यान लगाकर जान लिया इन्हें अन्त में, ब्रह्म-शाप लगेगा। हनुमान को वर दे देवगण अपने स्थानों को चले गये। हनुमान मलय-पर्वत पर रहने लगे ॥ २८ ॥ वह वीर पर्वत-शिखर पर पिता के यहाँ रहने लगे और अनेक विद्याएँ तथा मल्लयुद्ध की व्यापक शिक्षा प्राप्त की। फिर वे वीर हनुमान भार्गव के यहाँ पढ़ने गये और वहाँ केवल चार दिन में चारों वेदों तथा मल्लयुद्ध की शिक्षा प्राप्त कर ली ॥ २९ ॥ गुरु पढ़ा नहीं पाते थे, इस कारण हनुमान उनसे घृणा करने लगे। कुपित हो, भार्गव मुनि ने उन्हें शाप दे दिया। वानर होकर तुम गुरु से घृणा कर रहे हो, इसी कारण अपना-बल-बुद्धि-विक्रम तुम भूल जाओ ! ॥ ३० ॥ उसी पाप के कारण हनुमान अपने को भूले रहे। इसी से वे बाली के भय से भागे थे। यदि वीर हनुमान अपने को जान ले, तो एक ही दिन के संग्राम में वे संसार को जीत सकते हैं ॥ ३१ ॥ दस हजार वर्ष परिश्रम करने पर भी हनुमान के विक्रम का वर्णन नहीं किया जा सकता। राम, तुम स्वयं साक्षात् नारायण हो ! जो तुम्हारा सेवक है उसके बारे में और क्या कहें ? ॥ ३२ ॥ वह वीर जितना गुण धारण करता है, क्या उसका वर्णन किया जा सकता है ? श्री राम, अब विदा दें, मैं अपने देश जाऊँ ! दो वर्ष तक पूर्व-वृत्तान्त सुनकर मुनि विदा ले अपने देश को चले गये ॥ ३३ ॥ रामचन्द्र ने अनेक

नाना धने पूजा राम करेन तांहार। महा हृष्ट अगस्त्य पाइया पुरस्कार
कृत्तिवास पण्डितेर वाक्य सुधाभाण्ड। वाल्मीकि-आदेशे गाय गीत उत्तरकाण्ड ३४

ब्रह्मा कर्तृक रम्य वन गठन ओ तन्मध्ये श्रीराम-सीतार विहार

श्रीराम करेन राज्य धर्म्म-परायण। राज्ये नाहि दुर्भिक्ष कि अकाल-मरण
श्रीराम बलेन, भरत, शुनह वचन। करह राज्येर चर्च्चा ल'ये सभाजन १
युद्ध करि अवसाद ह'येछे आमार। अन्तःपुरे रब आमि दिया राज्य-भार
किछुदिन विश्राम करिब, आछे मन। तिनि भाइ मिलि कर प्रजार पालन २
मन दिया शुन भाइ वचन आमार। सावधाने थाकिया पालिवे राज्य भार
अन्तःपुरे रब आमि, करियाछि मने। निरन्तर सावधाने पाल प्रजागणे ३
योड़ हाते भरत करेन निवेदन। सेवक हइया राज्य करेछि पालन
चौद्द वर्ष राज्य छाड़ि करिले गमन। पादुका करिया राजा पालि प्रजागण ४
साक्षाते आपनि आछ राज्येर ईश्वर। त्रिभुवन भितरे काहारे करि डर
सुखे अन्तःपुरे तुमि थाक मनोरथे। सेवक हइया राज्य पालिवे भरते ५
भरतेर वाक्ये तुष्ट हैला रघुनाथ। आलिङ्गन दिला राम प्रसारिया हात
तिन भाइ श्रीरामे करिला प्रणिपात। अन्तःपुरे चलिलेन प्रभु रघुनाथ ६

धन देकर उनकी पूजा की। पुरस्कार पाकर अगस्त्य मुनि बड़े हर्षित हुए। कृत्तिवास पंडित का वचन अमृत-कलस है। वाल्मीकि के आदेश से उत्तरकांड का गायन करते है ॥ ३४ ॥

ब्रह्मा द्वारा रम्य वन-निर्माण तथा उसमें श्रीराम-सीता का विहार

श्रीराम धर्मपरायण राज्य करते थे। उनके राज्य में दुर्भिक्ष या अकाल मरण नहीं था। श्रीराम बोले, भरत, सुनो, सभासदों के संग तुम राज्य (शासन-सम्बन्धी) चर्चा करो ॥ १ ॥ युद्ध करते-करते मुझे अवसाद आ गया है। मैं अब तुम लोगों पर राज्य-भार देकर अन्तःपुर में रहा करूँगा। मेरे मन में इच्छा है कि कुछ दिन विश्राम करूँ। तुम तीनों भाई मिलकर प्रजा का पालन करो ॥ २ ॥ भाई, ध्यान देकर मेरा वचन सुनो। तुम लोग सावधान रहकर राज्य-भार पालन करो। मैंने मन में सोचा है, अंतःपुर में रहूँ। तुम लोग निरंतर सावधान रहकर प्रजाजनों का पालन करो ॥ ३ ॥ हाथ जोड़कर भरत ने निवेदन किया, मैं सेवक बनकर राज्य का पालन करता रहा हूँ। आप चौदह वर्ष राज्य छोड़कर वन में चले गये थे। मैंने आपकी चरण-पादुका को राजा बनाकर प्रजाजनों का पालन किया है ॥ ४ ॥ अब राज्य के ईश्वर आप जब साक्षात् सामने हैं, तब फिर त्रिभुवन में मैं किससे डरूँ? अपनी मनोकामना के अनुसार आप सुखपूर्वक अन्तःपुर में रहिये, सेवक बनकर यह भरत राज्य का पालन करता रहेगा ॥ ५ ॥ भरत के वचनों से रघुनाथ संतुष्ट हुए। राम ने हाथ फैलाकर भरत को आलिंगन किया। तीनों भाइयों ने

অন্তঃপুরে গেলা রাম হরষিত-মন। সীতা করিলেন রাম-চরণ-বন্দন
রাম বলে, শুন সীতা আমার বচন। লঙ্কাপুরে যথা স্বর্ণ-অশোক-কানন ৭
দেব-কন্যা ল'য়ে রাবণ তথা কেলি করে। তাহার অধিক পুরী রচিব সুন্দরে
তুমি আমি তাহে কেলি করিব দু'জন। নানা বর্ণ পুষ্প বৃক্ষ করিব রোপণ ৮
রঘুনাথের আনন্দে ব্রহ্মা পুলকিত। ডাক দিয়া বিশ্বকর্ম্মে আনিলা ত্বরিত
ব্রহ্মা বলে, বিশ্বকর্ম্মা, কর অবধান। রামের অশোক-বন করহ নির্ম্মাণ ৯
ব্রহ্মার বচনে বিশ্বকর্ম্মা হরষিত। অযোধ্যা নগরে আসি হৈল উপনীত
বসি আছে রঘুনাথ হরষিত-মন। হেনকালে বিশ্বকর্মা বন্দিল চরণ ১০
ব্রহ্মা পাঠাইয়া দিল মোরে তবস্থান। সোনার অশোক বন করিতে নির্ম্মাণ
মনে মনে বিশ্বকর্ম্মা করেন যুকতি। নির্ম্মায়ে অশোক-বন জন্মাই-পিরীতি ১১
সোনার অশোক বন করিল নির্ম্মাণ। দেখিতে সুন্দর বড় হৈল সেই স্থান
সুবর্ণের বৃক্ষ সব ফল ফুল ধরে। ময়ূর ময়ূরী নাচে ভ্রমর গুঞ্জরে ১২
সুললিত পক্ষিরব শুনিতে মধুর। নানা বর্ণ পক্ষী ডাকে আনন্দে প্রচুর
বিকশিত পদ্মবন শোভে সরোবরে। রাজহংস গণ আসি তথা কেলি করে ১৩
সরোবর চারি পার্শ্বে সুবর্ণের গাছ। কেলি করে জল-জন্তু নানা বর্ণ মাছ
মণি-মাণি ক্যতে বাঁধা যত বৃক্ষ গুঁড়ি। স্থানে স্থানে স্থাপিয়াছে রত্নময়-পীঁড়ি ১৪

रामचन्द्र को प्रणाम किया। प्रभु रघुनाथ इसके पश्चात् अन्तःपुर में चले गये ॥ ६ ॥ रामचन्द्र प्रसन्न मन से अन्तःपुर में चले गये। वहाँ सीता ने राम की चरण-वंदना की। राम ने कहा— सीता, मेरा वचन सुनो। लंकापुरी में जैसा कि स्वर्ण-मय अशोक-वन था ॥ ७ ॥ देवकन्याओं के संग रावण वहाँ केलि करता था, मैं उससे अधिक सुन्दर पुरी का निर्माण करूँगा। वहाँ तुम और मैं दोनों जन केलि करेंगे। और वहाँ नाना वर्णों के फूलों के वृक्ष लगायेंगे ॥ ८ ॥ रामचन्द्र के आनन्द से ब्रह्मा भी पुलकित हुए। उन्होंने तुरंत विश्वकर्मा को बुलवाया। ब्रह्मा ने कहा, विश्वकर्मा, ध्यान से सुनो। रामचन्द्र के लिए अशोक-वन का निर्माण करो ॥ ९ ॥ ब्रह्मा के वचन सुन विश्वकर्मा हर्षित हुए और अयोध्या नगरी में आ पहुँचे। वहाँ रघुनाथ हर्षित-मन बैठे हुए थे। तभी विश्वकर्मा ने आकर उनके चरणों की वन्दना की ॥ १० ॥ वे बोले, सोने का अशोक-वन निर्माण करने हेतु मुझे ब्रह्मा ने आपके पास भेजा है। मन ही मन विश्वकर्मा ने यह युक्ति सोची कि अशोक-वन निर्माण कर मैं रामचन्द्र के मन में प्रीति उत्पन्न करूँगा ॥ ११ ॥ विश्वकर्मा ने सोने के अशोक-वन का निर्माण किया। वह स्थान देखने में बड़ा ही रमणीय हो गया। सभी सुवर्ण के वृक्षों में फल-फूल खिले रहते थे। वहाँ मोर-मोरनियाँ नाचते थे, भौंरे गुंजारते थे ॥ १२ ॥ वहाँ पक्षियों का सुललित स्वर सुनने में मधुर था। नाना वर्ण के अनेक पक्षी अति आनन्द से चहकते थे। सरोवरों में विकसित कमल के वन सुशोभित थे। वहाँ राजहंस गण आकर केलि किया करते थे ॥ १३ ॥ सरोवरों के चारों ओर सोने के वृक्ष लगे थे। उनमें जल-जन्तु और विविध वर्णी मछलियाँ

चन्द्रोदय हय येन आकाश-उपरे। तेमनि उद्यान-शोभा पुरीर भितरे
बिश्वकर्म्मा निर्म्माइल अशोक-कानन। त्रिभुवन जिनि स्थान अति सुशोभन १५
अशोक-कानन देखि राम हैला सुखी। प्रवेश करेन ताहे लइया जानकी
अशोकेर वृक्षतले चलिलेन रङ्गे। जानकीरे ल'ये तथा बसान उत्सङ्गे १६
शत शत विद्याधरी सीतार ये दासी। नाना रूपे सेवा करे रघुनाथे तुषि
सीता-रूप देखि राम हरषित मने। सीतारे तोषेन राम मधुर-वचने १७
विद्याधरी गण एल अप्सरा विमला। प्रथम यौवना तारा जिनि शशिकला
विद्याधरी गण आछे श्रीरामेर पाशे। सीतारे देखिया राम अन्ये नाहि भाषे १८
प्रथम यौवना सीता लक्ष्मी-स्वरूपिणी। त्रैलोक्य जिनिया रूप भुवन-मोहिनी
एत रूप दिया ताँरे सृजिला विधाता। काँचा स्वर्ण-वर्ण रूपे आलोकरे सीता १९
देखिया सीतार रूप जुड़ाय ये आँखि। चन्द्रानन रामचन्द्र, सीता चन्द्रमुखी
पूर्ण-अवतार राम सीता मनोहरा। चन्द्रेर पाशेते येन शोभा पाय तारा २०
आनन्दे आछेन राम सीता-सम्भाषणे। राजकर्म्म एड़ि केलि करे रात्रि दिने
सीतार सेवाय राम सदा तुष्ट मति। शचीर सेवाय यथा तुष्ट शचीपति २१

केलि करती थी। वृक्षों के तने मणि-रत्नों से मढ़े हुए थे। स्थान-स्थान पर रत्नमय चबूतरे बने थे ॥ १४ ॥ आकाश में जैसा कि चन्द्रोदय होता है, उसी प्रकार पुरी में वह उद्यान शोभित होता था। विश्वकर्मा ने अशोक-वन का निर्माण किया। वह स्थान त्रिभुवन में सबसे बढ़कर अत्यन्त सुशोभन था ॥ १५ ॥ उस अशोक-वन को देख रामचन्द्र सुखी हुए। जानकी को लेकर उन्होंने उसमें प्रवेश किया। बड़ी प्रसन्नता से वे अशोक वृक्ष के नीचे चले और बड़े उत्साह से वहाँ जानकी को ले जाकर बिठाया ॥ १६ ॥ सैकड़ों विद्याधरियाँ सीता की दासियाँ थीं। वे सभी रघुनाथ को संतुष्ट करती हुई नाना प्रकार से सेवा करती थीं। सीता का रूप देखकर राम मन में हर्षित हुए। मधुर-वचनों से रामचन्द्र ने सीता को तुष्ट किया ॥ १७ ॥ वहाँ विद्याधरियाँ आयीं, विमला अप्सराएँ आयीं। वे नवयुवनियाँ शशि-कला से बढ़कर सुन्दरी थीं। विद्याधरियाँ श्रीराम के पास रहती थीं, परन्तु रामचन्द्र सीता को देख दूसरे से संभाषण नहीं करते थे ॥ १८ ॥ नवयौवना सीता लक्ष्मी-स्वरूपिणी थीं। उनका रूप तीनों लोकों में सबसे बढ़कर था। वे भुवन-मोहिनी थीं। विधाता ने उनको इतना रूप देकर सर्जन किया था। विशुद्ध स्वर्ण के समान वर्ण तथा रूप वाली सीता सबको आलोकित करती थीं ॥ १९ ॥ सीता का रूप देख आँखें ठंडी हो जाती थीं। रामचन्द्र का मुखमंडल चन्द्रमा-सा था, सीता चन्द्रमुखी थी। राम पूर्ण अवतार थे, सीता मनोहरा थीं। मानो चन्द्रमा के पास तारा सुशोभित हो रहा हो ॥ २० ॥ सीता से संभाषण करते हुए रामचन्द्र बड़े आनन्द में थे। राज-कर्म (दूसरों पर) छोड़कर दिन-रात केलि किया करते थे। सीता की सेवा से राम सदा संतुष्ट रहते जैसे शची की सेवा से शचीपति इन्द्र संतुष्ट रहते

एक-एक दिने सीता एकेक मुर्ति धरे। एक दिन अन्य रूप विष्णु भाण्डिबारे
सात हाजार वर्ष राम सीता देवी सङ्गे। छय ऋतु बञ्चन करेन नाना रङ्गे २२
निदाघ कालेते चैत्र वैशाख ये मासे। आनन्दे डुबेन राम केलि रङ्ग-रसे
विकसित पद्म शोभे चारि सरोवरे। मधुलोभे नलिनीते भ्रमर गुञ्जरे २३
रौद्रेते पृथिबी पुड़े, रवि ये प्रबल। सीतार सङ्गेते राम सदा सुशीतल
बरषा देखिया राम परम कौतुकी। जल-जन्तु कलरब, तृषित चातकी २४
प्रमत्त मयूर नाचे मयूरीर सङ्गे। अशोक बनेते राम बञ्चिलेन रङ्गे
सीतार सङ्गेते राम परम उल्लासे। बरषा हइल गत शरत् प्रकाशे २५
आसिया शरत्‌ऋतु प्रकाश हइल। निर्म्मल चन्द्रमा आर कुमुद फुटिल
कुटिल केतकी देखि अति-सुशोभन। छाडिल बरसा डाक, शरत्-गर्ज्जन २६
मन्द मन्द बरिषण, बायु बहे धीरे। आनन्देते शरत् बञ्चिला रघुबरे
कार्त्तिके हेमन्त ऋतु बरिषे सघने। हिममय बरिषण अशोकेर बने २७
सुरङ्ग नारङ्ग फल बिस्तर सुन्दर। नारिकेल आदि यत फल बहुतर
परम हरषे आर सुखेते विशेष। एइरूपे श्रीरामेर हेमन्तेर शेष २८
शिशिर-उदये हैल प्रबल ये शीत। शीतकाल पेये राम परम-पिरीत
दिने दिने मलिन हइल शशधर। रजनी प्रबल हैल अति भयङ्कर २९

हैं ॥ २१ ॥ प्रतिदिन सीता नये-नये रूप धारण करतीं। विष्णु (रूपी रामचन्द्र) के मनोरंजन के लिए किसी दिन कोई दूसरा ही रूप ले लेतीं। सीतादेवी के संग रामचन्द्र सात हज़ार वर्ष छहों ऋतुओं में अनेक प्रकार के आनन्द करते हुए बिताये ॥ २२ ॥ चैत-वैशाख महीने के ग्रीष्मकाल में रामचन्द्र केलि-रंग-रस में तल्लीन रहते। चारों सरोवरों में खिले हुए कमल शोभित रहते! कमल पर मधु-लोभी भौंरे गुंजारते थे ॥ २३ ॥ सूर्य के प्रखर होने से धूप से धरती जलती रहती पर सीता के संग रहते हुए रामचन्द्र सदा सुशीतल रहते। वर्षा को देखकर राम परम प्रसन्न हुए। जल-जन्तुओं और प्यासी चातकी का कोलाहल होने लगा ॥ २४ ॥ प्रमत्त मयूर मयूरी के संग नाचने लगा। राम ने प्रसन्नता से अशोक-वन में वर्षा बितायी! सीता के संग रामचन्द्र परम उल्लास में रहे। वर्षा बीती, शरद्-ऋतु प्रकाशित हुई ॥ २५ ॥ शरत्-ऋतु प्रकट हुई! निर्मल चन्द्रमा उगा और कुमुद खिल उठे। कुटिल (काँटों वाली) केतकी अति सुन्दर दिखाई देने लगी। वर्षा ने अपनी झड़ी बन्द कर दी, शरद् गर्जना करने लगा ॥ २६ ॥ शरद्‌काल में मंद-मद वर्षा होती, वायु धीरे बहती। इस प्रकार रघुपति राम ने आनन्द से शरद्‌काल बिताया। कार्तिक महीने में हेमन्त ऋतु आयी। अशोक वन में हिममय सघन वर्षा होने लगी ॥ २७ ॥ सुन्दर रंग वाले (सुन्दर प्रचुर) नारंगी फल तथा नारियल आदि अनेक प्रकार के बहुत से फल परिपूर्ण थे। इस प्रकार परम हर्ष और विशेष सुख से श्रीराम का हेमन्त बीता ॥ २८ ॥ शिशिर ऋतु के आने पर शीत प्रबल हो गया। शीतकाल आने पर रामचन्द्र परम संतुष्ट हुए। दिनोंदिन चन्द्रमा मलिन होने लगा। रातें प्रबल

देखि कोटि सूर्य्य तेज धरे रघुबीर । दूरे गेल शीत, राम वञ्चिला शिशिर
उदित वसन्त ऋतु सर्व्व ऋतु-सार । कौतुक-सागरे राम करेन बिहार ३०
फुटिल अशोक ये माधवी नागेश्वर । प्रमत्त मयूर नाचे, गुञ्जरे भ्रमर
परम कौतुकी राम देखि ऋतुराज । केलि रस बिना तांर नाहि किछु काज ३१
एइ रूपे दोंहे सात हाजार वत्सर । रात्रिदिन केलि रसे थाके निरन्तर
पञ्चमास गर्भ हैल सीतार उदरे । कौतुके श्रीराम किछु जिज्ञासे सीतारे ३२
गर्भवती हैले, किवा खेते अभिलाष । कोन् द्रव्य खावे, सीता करह प्रकाश
लाजे हेंट माथा करे सीता चन्द्रमुखी । संसारेर द्रव्ये अभिलाष नाहि देखि ३३
एक द्रव्य खेते मोर हइयाछे मन । एकदिन आज्ञा पेले याइ तपोवन
यमुनार कोले श्राद्ध करे मुनिगणे । खाइताम से तण्डुल मुनिकन्या सने ३४
मुनिपत्नी सगे येताम स्नान करिबारे । हंस खेदाड़िया पिण्ड खाइताम तीरे
योगी ऋषि मुनि तथा करे पिण्ड दान । हसेते भांगिया पिण्ड करे खान खान ३५
सत्य करियाछि आमि मुनिपत्नी-स्थाने । देशे गेले सम्भाष करिव तोमा सने
एइ सत्य पालिबारे देह त मेलाणि । नाना धने तुषिव से मुनिर रमणी ३६
सीतार कथाय राम विस्मित ये मने । कालि दिव मेलानि, याइते तपोबने

और अति भयंकर हो उठी ॥ २९ ॥ यह देख रामचन्द्र ने करोड़ों सूर्यों का तेज धारण किया । शीत दूर चला गया । इस प्रकार रामचन्द्र ने शीत बिताया । इसके पश्चात् सर्व-सुख-सार वसन्तऋतु का आगमन हुआ । रामचन्द्र आनन्द-सागर में विहार करने लगे ॥ ३० ॥ अशोक, माधवी, नागेश्वर आदि फूल खिल उठे । मतवाले मयूर नाचने लगे, भौंरे गुंजारने लगे । ऋतुराज वसन्त को देखकर रासचन्द्र परम कौतुकी हो उठे । केलि-रस के सिवा उन्हें और कोई काम नहीं था ॥ ३१ ॥ इस प्रकार दोनो सात हज़ार वर्ष दिन-रात केलि रस में निरंतर तल्लीन रहे । सीता के उदर में पाँच महीने का गर्भ था । रामचन्द्र ने कुछ कौतुक वश सीता से पूछा ॥ ३२ ॥ तुम गर्भवती हुईं । क्या कुछ खाने की अभिलाषा है ? सीता, तुम कौन-सी वस्तु खाओगी, मुझसे प्रकट करो । तब चन्द्रमुखी सीता ने लाज के मारे सिर झुका लिया । बोलीं— सांसारिक द्रव्यों में मेरी कोई अभिलाषा नहीं है ॥ ३३ ॥ एक चीज़ खाने की मेरी इच्छा है, यदि आज्ञा मिले तो एक दिन तपोवन में जाऊँ । मुनिगण यमुना की गोदी (तट) पर श्राद्ध किया करते हैं । मैं मुनिकन्याओं के साथ वहीं चावल खाया करती थी ॥ ३४ ॥ मैं मुनि-पत्नियों के संग स्नान करने वहाँ जाया करती थी । उन हंसों को खदेड़कर मैं उन्हें खाया करती थी योगी ऋषि-मुनि वहाँ पिंड-दान किया करते । हंस उन पिंडों को तोड़कर टुकड़े-टुकड़े कर डालते थे ॥ ३५ ॥ मैंने मुनि-पत्नियों को वचन दिया है कि अपने देश लौट जाने पर भी तुम लोगो से वार्ता करूँगी । इस सत्य का पालन करने हेतु मुझे अनुमति दें । मैं विविध धन देकर मुनि-पत्नियों को तुष्ट करूँगी ॥ ३६ ॥ सीता की बात पर रामचन्द्र मन में विस्मित हुए । बोले— कल तपोवन में जाने हेतु मैं तुम्हें अनुमति दूँगा ॥

श्रीरामेर सीता-विषयक जनापवाद-श्रवण

एतेक आश्वास राम दिलेन सीतारे । सात हाजार बत्सरान्ते आइला बाहिरे १
सहस्र बृहन्द बाहि आइला यखन । पात्र-मित्र काणाकाणि करिछे तखन
रावणेर धरे सीता छिला दशमास । हेन सीता ल'ये राम करेन बिलास २
हेन काले आसि राम बाहिर चौतारा । देयाने बसिला राम सभाखण्ड पूरा
पात्र-मित्र भय पेये करे काणाकाणि । सीता-निन्दा रघुनाथ शुनिला आपनि ३
सीता-निन्दा शुनि राम त्रासित अन्तरे । सीतादेबी ना जानेन थाकि अन्तःपुरे
धर्म्म-राज्य कैल बड़ दशरथ बाप । नाना सुख भुञ्जे लोक, ना जाने सन्ताप ४
आमि राजा हैते हे के आछे केमन । राज्य-व्यवहार किछु कह पात्रगण
एतेक जिज्ञासे राम सभार भितर । निःशब्द हइल लोक ना देय उत्तर ५
भद्र-नामे महापात्र उठे आचम्बिते । रामेर सम्मुखे कथा कहे योड़ हाते
पात्र से दुर्म्मुख बड़, कारे नाहि भय । निष्ठुर हइया कथा राम अग्रे कय ६
पात्र बले, रघुनाथ, कर अबधान । रघुबंशे आछि आमि पात्रेर प्रधान
सर्ब्बलोके चिन्ते प्रभु तोमार कल्याण । तोमार प्रसादे राज्ये नाहि असम्मान ७
दशरथ राजार राजत्व येइ काले । सुबर्णेर पात्र प्रजा नित्य नित्य फेले
एखन फेलिछे पात्र दिनेक अन्तर । निर्धन ह'तेछे राज्य शुन रघुबर ८

श्रीराम का सीता-विषयक जनापवाद सुनना

रामचन्द्र ने सीता को यह आश्वासन दिया । सात हज़ार वर्ष बाद वे बाहर आये ।।१।। हज़ारों बहिर्द्वारों को पारकर जब वे बाहर आये तब मित्र-सामन्त आदि आपस में कानाफूसी कर रहे थे । रावण के यहाँ सीता दस महीने रहीं । ऐसी सीता को लेकर राम विलास कर रहे हैं ।। २ ।। उसी समय रामचन्द्र बाहर के आँगन में आये । वे राजसभा में बैठे, सारे सभासद भी वहाँ बैठे । मंत्री-सामन्त आदि भयभीत हो आपस में कानाफूसी करने लगे । सीता की निन्दा रघुनाथ ने स्वयं सुनी ! ।। ३ ।। सीता की निन्दा सुनकर रामचन्द्र अन्तर् में संत्रस्त हुए । सोचने लगे—सीतादेवी तो अन्तःपुर में रहकर यह सब नहीं जानतीं । उन्होंने कहा, पिता दशरथ ने बड़े धर्मपूर्वक राज किया था । लोग (उनके राज्य में) नाना सुख भोगते थे; सन्ताप कैसा होता है, नहीं जानते थे ।। ४ ।। मेरे राजा होने पर कौन कैसे हैं, हे मंत्रीगण, राज्य-व्यवहार कुछ सुनाइये । जब राजसभा में रामचन्द्र ने ऐसा पूछा तो लोग मौन रह गये । कोई उत्तर नहीं दिया ।। ५ ।। भद्र नाम का महामंत्री अकस्मात् उठ खड़ा हुआ । वह हाथ जोड़कर रामचन्द्र से कहने लगा । वह मंत्री बड़ा दुर्मुख अनियंत्रित वचन बोलनेवाला था । वह किसी से नहीं डरता था । निष्ठुरता से रामचन्द्र के सम्मुख वह कहने लगा— ।। ६ ।। वह मंत्री बोला— रघुनाथजी, सुनिये । मैं रघुवंश के मंत्रियों में सबसे प्रधान हूँ । सभी लोग आपकी कल्याण-चिन्ता ही करते हैं । प्रभु,

श्रीराम बलेन, केन निर्धन संसार। राजा ह'ये करिलाम कोन अविचार
राजार पुण्येते प्रजा बञ्चे अति सुखे। नृपतिर पापे प्रजा थाके अति दुखे ९
भद्र बले, रघुनाथ, कहिते ये नारि। पात्र ह'ये अधिक कहिते भय करि
श्रीराम बलेन, भद्र, ना हओ चिन्तित। ये पात्र निर्भये कह, सेइ से उचित १०
योड़ हाते कहे भद्र, करिया प्रणाम। एक निवेदन मोर शुन प्रभु राम
भद्र बले, रघुनाथ, याइ यथा तथा। सर्व्वलोके कहे प्रभु सीतार बारता ११
देवासुर युद्ध-मत हइयाछे रण। सीता उद्धारिला राम मारिया रावण
दोष ना बुझिया सीता आनियाछे घर। निर्म्मल कुलेते कालि दिला रघुबर १२
ये नारी कोलेते करि लइल राक्षसे। राखियाछे सेइ नारी निज गृह बासे
एइ अपयश तव सर्व्वजन घोषे। तोमार सम्मुखे केह नाहि कय त्रासे १३
एत यदि कहे भद्र पात्र से दुर्म्मुख। वज्राघात पड़े येन रामेर सम्मुख
रामेर निकटे छिल यत पात्रगण। श्रीराम बलेन, कह यथार्थ बचन १४
पाइया रामेर आज्ञा बले पात्रगण। या बलिल भद्र प्रभु, से सत्य वचन
शुनिया श्री रघुनाथ छाड़ेन निःश्वास। गाहिल उत्तरकाण्ड कवि कृत्तिवास १५

आपके प्रसाद से राज्य में कोई असम्मान नहीं होता ॥ ७ ॥ जब राजा दशरथ का राज था, प्रजाजन सुवर्ण के पात्रों को नित्य फेंक दिया करते थे। अब तो एक दिन के अन्तर से फेंका करते हैं। रघुवर, सुनिये, राज्य निर्धन होता जा रहा है ॥ ८ ॥ श्रीराम बोले— संसार निर्धन क्यों हो रहा है? राजा बनकर मैंने कौन-सा अन्याय किया है? राजा के पुण्य से ही प्रजा अति सुख से दिन बिताया करती है। नृपति के ही पाप से प्रजा अति दुःख में रहती है ॥ ९ ॥ भद्र बोला, रघुनाथ, वह बात कही नहीं जाती। मंत्री होने के कारण अधिक कहने में डर लगता है। श्रीराम बोले, भद्र, चिन्तित न होओ। जो मंत्री है उसे तो निर्भयता से, (सब कुछ) कहना ही उचित है ॥ १० ॥ हाथ जोड़ प्रणाम कर भद्र बोला— प्रभु राम, मेरा एक निवेदन सुनें! भद्र बोला— रघुनाथ, मैं जहाँ-तहाँ जाया करता हूँ। प्रभु, सभी लोग सीता के बारे में ही कहा करते है ॥ ११ ॥ (राम-रावण में) देवासुर-युद्ध की भाँति संग्राम हुआ। रामचन्द्र ने रावण को मारकर सीता का उद्धार किया। दोष न समझकर सीता को वे घर ले आये। रघुवर ने निर्मल कुल में कलंक लगाया है ॥ १२ ॥ जिस नारी को राक्षस गोद में उठाकर ले गया था, उसी नारी को अपने गृह-वास में लाकर रखा है। सभी लोग आपका यह अपयश फैलाते हैं। आपके सम्मुख त्रास के मारे कोई नहीं कहता ॥ १३ ॥ उस दुर्मुख मंत्री भद्र ने जब इतना कहा— तो राम के सम्मुख मानो वज्राघात पड़ा। राम के सम्मुख और जो मंत्री थे, उनसे श्रीराम ने कहा—आप लोग यथार्थ वचन कहिये ॥ १४ ॥ रामचन्द्र की आज्ञा पाकर मंत्रियों ने कहा— प्रभु, भद्र ने जो कहा है, वह वचन सत्य है। यह सुनकर श्रीरघुनाथ ने लम्बी साँस ली। कवि कृत्तिवास उत्तरकांड का गायन करते हैं ॥ १५ ॥

सीतार अपवाद

पात्र-मित्र सबाकारे दिलेन मेलानि । अभिमाने श्रीरामेर चक्षे झरे पानि
निदाघ-समय, रवि अति खरतर । सरोबरे स्नान-हेतु यान रघुबर १
एकेश्वर यान, केह नाहिक सहित । सरोबर कूले गिया हैल उपनीत
पर्व्वत जिनिया सेइ सरोबर-पाड़ । चारि धारे शोभिछे बिचित्र फुल-झाड़ २
दक्षिणे रजक वस्त्र काचे स्वर्ण-पाटे । स्नान हेतु चले राम उत्तरेर घाटे
अङ्ग डुबाइया राम शिरे ढाले पानि । द्वन्द्व हय रजकेर शुनेन काहिनी ३
दुइ जने कथा कहे श्वशुर जामाइ । एइ दुइ जन बिना केह आर नाइ
श्वशुर बलिछे तुमि कुलेते कुलीन । सर्व्वगुण-धर तुमि धोपेते धुपिन ४
निज गोत्र-प्रधान आछिल तव पिता । धनी-मानी देखि तोरे दिलाम दुहिता
किबा दोष करे कन्या, मार कोन् छले । आमार बाटीते कन्या एल रात्रि काले ५
एकेश्वरी एल कन्या, बड़ पाइ भय । पितृगृहे युबकन्या शोभा नाहि पाय
एत यदि जामातारे बलिल श्वशुर । बाक्छले जामाता से बलिछे प्रचुर ६
ये कथा कहिले तुमि कहिते ना पारि । थाकुक तोमार गृहे तोमार झियारी
द्वितीय प्रहर निशि, केह नाहि साथी । काहार आश्रये कालि बञ्चिलेक राति ७

सीता का अपयश

रामचन्द्र ने मंत्री-बांधव सबको विदा दे दी। अभिमान से श्रीराम के नेत्रों से आँसू झरने लगे। ग्रीष्मकाल का समय था, सूर्य अत्यन्त प्रखरता से तप रहा था। रामचन्द्र सरोवर में स्नान करने हेतु चले ॥ १ ॥ वे अकेले ही चले, उनके संग कोई न था। वे सरोवर के तट पर जा पहुँचे। उस सरोवर का किनारा पर्वत से बढ़कर ऊँचा था। उसके चारों ओर विचित्र फूलों की झाड़ियाँ सुशोभित थीं ॥ २ ॥ दक्षिणी ओर एक धोबी सोने के पाट पर कपड़े धो रहा था। अतः रामचन्द्र स्नान हेतु उत्तर के घाट पर चले। सरोवर में अपने शरीर को डुबोये रखकर रामचन्द्र अपने सिर पर पानी ढालने लगे। उधर धोबियों में झगड़ा हो रहा था, रामचन्द्र उनकी कहानी सुनने लगे ॥ ३ ॥ ससुर और जमाई दोनों बातें कर रहे थे। वहाँ उन दोनों के सिवा और कोई न था। ससुर कह रहा था— तुम कुलीन कुल वाले हो। तुम सर्व-गुणधर हो। धोबियों में श्रेष्ठ हो ॥ ४ ॥ तुम्हारे पिता अपने गोत्र-प्रमुख थे। धनी-मानी देखकर ही मैंने तुम्हें अपनी कन्या दी थी। मेरी कन्या ने कौन-सा दोष किया, उसे किस बहाने मारते हो ? रात को कन्या हमारे घर चली आयी ॥ ५ ॥ कन्या अकेली आ गयी, उससे हमें बड़ा डर लगा। युवा-कन्या का पिता के घर में रहना शोभा नहीं देता। जमाई से जब ससुर ने यह बात कही तो उसी बात के बहाने वह जमाई बहुत बढ़-बढ़कर बातें कहने लगा ॥ ६ ॥ तुमने जो बात पूछी, वह मुँह से कहा नहीं जाता। तुम्हारी बेटी तुम्हारे ही घर रहे। रात का दूसरा

पृथिवीर राजा राम संवरिते पारे । रावण हरिल सीता, फिरि आने घरे
राम हेन नाहि आमि पृथिवीर पति । ज्ञाति-वन्धु खोंटा दिवे, आमि हीन जाति ८
श्वशुर घरे ते गेल शुनिया वचन । थाकिया उत्तर घाटे शुने नारायण
भद्र यत वलिल, रामेर मने लय । श्रीराम भावेन, भद्र वाक्य मिथ्या नय ९
रजकेर मुखे शुनि निष्ठुर वचन । घरे चलिलेन राम विरस-वदन
मनेते भावेन राम अनेक विषाद । सीता ल'ये पड़े हेथा आर परमाद १०
पञ्च मास गर्भ आछे सीतार उदरे । जाये-जाये एकठाँइ वसेछेन घरे
सीतार माथाय केह दितेछे चिरुणी । सीतारे जिज्ञासा करे यतेक रमणी ११
सीतारे चाहिया वले यत नारीगण । दशमुण्ड कुड़ि हस्त केमन रावण
तोमा ल'ये लङ्का पुरे करेछे दुर्गति । भूमिते लिखह, तार मुण्डे मारि लाथि १२
सीता वले, से छारे ना देखि कोन काले । छाया मात्र देखियाछि सागरेर जले
तथापि जिज्ञासा करे यत नारीगण । जलेते देखेछ छाया केमन रावण १३
रावण लिखिते सीता मने कैल साध । विधिर निर्व्वन्ध हेथा पड़िल प्रमाद
हाते खड़ि धरे सीता दैवेर निर्व्वन्ध । दश मुण्ड कुड़ि हस्त लिखे दशस्कन्ध १४
गर्भवती नारी हाइ उठे सर्व्व क्षण । सदाइ अलस सीता भूमिते शयन
सुखेर सागरे दुःख घटाय विधाता । नेतेर अञ्चल पाति शुइलेन सीता १५

पहर बीत गया था, उसके संग कोई साथी भी न था। तो कल किसके आश्रय में उसने रात बितायी ? ।। ७ ।। संसार के राजा राम इसे सह सकते हैं। रावण सीता को हर ले गया, वे उसे लौटाकर घर ले आये। हम तो राम-जैसे संसार के अधिपति नहीं हैं। हम तो हीन जाति के हैं। हमें तो आत्मीय जन ताने देंगे ।। ८ ।। जमाई की बात सुनकर ससुर घर लौट गया। उत्तर के घाट पर रहकर नारायण राम ने यह सुना। भद्र ने जो कुछ कहा था, राम के अन्तर ने उसे सही माना। श्रीराम ने सोचा, भद्र की बात मिथ्या नहीं है ।। ९ ।। धोवी के मुँह से निष्ठुर वचन सुनकर राम उदास होकर घर चले। राम के चित्त में बड़ा विषाद हो रहा था। वे सोच रहे थे— सीता को लेकर यहाँ प्रमाद फैला हुआ है ।। १० ।। सीता के उदर में पाँच महीने का गर्भ था। सभी घर में इकट्ठी बैठी हुई थीं। कोई कोई सीता के बालों में कंघी कर रही थी। सीता से सभी नारियाँ बातें पूछ रही थीं— ।। ११ ।। सीता की ओर देखती हुई उन नारियों ने कहा— दस सिरों बीस हाथों वाला वह रावण कैसा था ? तुम्हें लंकापुरी में ले जाकर उसने दुर्गति की, धरती पर (उसका चित्र) बना दो, उसके सिरों पर हम लात मारेंगी ।। १२ ।। सीता बोली, उस दुष्ट को तो मैंने कभी देखा न था। केवल सागर के जल में उसका प्रतिबिम्ब ही देखा था। तथापि नारियों ने पूछा— रावण कैसा था, उसकी छाया तो तुमने जल में देखी है ।। १३ ।। तब सीता के मन में रावण (का चित्र) बना देने की इच्छा हुई। परन्तु विधि-निर्बन्ध से वहाँ संकट उपस्थित हो गया। हाथ में खड़िया लेकर दैवयोग से दस सिरों बीस-हाथों वाले रावण (का चित्र) बनाने लगीं ।। १४ ।। वह गर्भवती

भाविते भाविते राम यान अन्तःपुरी । रामे देखि बाहिर हइल यत नारी
सीता पार्श्वे देखे राम रावण लिखन । सत्य अपयश मम करे सर्व्वजन १६
पड़िया आमार हाते जन्म गेल दुःखे । तबु उच्च बचन नाहिक सीता-मुखे
साधे कि सीतारजन्य लोके करे बाद । सीतात्यागी हब आमि आर नाहि साध १७
सीतारे देखिया राम आसिला बाहिरे । मनोदुःखे ताँहार नयने अश्रु झरे
सत्यहेतु मम पिता त्यजेन आमाय । सत्य कार्य्य करि यदि, लोके शोभा पाय १८
सीता सम रूप गुण कोथाओ ना शुनि । रूप गुण देखि तारे नादिनु सतिनी
सीता लागि बलिलेन पिता दशरथे । आपनि आसिया ब्रह्मा दिला हाते हाते १९
देशे आनिलाम सीता करिया आश्बास । हेन सीता लागि लोके करे उपहास
उपहास करे लोक, सहिते ना पारि । डाक दिया रघुनाथ आनिला दुयारी २०
दुयारी डाकिया राम बलेन बचन । झाँट आन शत्रुघ्न, भरत, लक्ष्मण
पाइया रामेर आज्ञा से द्वारी सत्वर । तिन जने आनि दिल रामेर गोचर २१
तिन भाइ आसिया बन्दिल श्रीचरण । तिन भाये ल'ये युक्ति करेन तखन
ये कर्म्म करि लज्जा पाय सभा माग । आमा सबाकार युक्ति करि परित्याग २२

नारी थीं, निरन्तर जम्हाइयाँ आ रही थीं। सदा आलस्य के कारण सीता भूमि पर ही शयन करती थी। विधाता सुख के सागर में दुःख उत्पन्न कर देता है। अपना रेशमी आँचल बिछाकर सीता वहीं सो पड़ी। १५ इधर राम सोचते हुए अन्तःपुर में आये। राम को आये देख सभी नारियाँ बाहर चली गयीं। राम ने देखा, सीता के पास ही रावण (का चित्र) बना हुआ है। (उन्होंने सोच लिया) मुझ पर सच्चा अपयश ही लगा रहे हैं॥ १६॥ हमारे हाथ में पड़कर सीता को आजन्म दुःख भोगना पड़ा है। तथापि सीता के मुँह से कभी ऊँचे स्वर से वचन नहीं निकला! लोग क्या किसी साध से सीता की बदनामी कर रहे हैं? मैं अब सीता को त्याग दूँगा। (सीता के लिए) अब मेरी कोई साध नहीं रही॥ १७॥ सीता को देखकर राम बाहर निकल आये। मनोवेदना से उनके नेत्रों से आँसू झर रहे थे। (वे सोच रहे थे) सत्य-रक्षा हेतु पिता ने मुझे त्यज दिया था। यदि मैं सत्य कर्म करूँ तो वह लोक में शोभित होगा॥ १८॥ सीता के जैसा रूप-गुण कहीं सुना नही जाता, उसके रूप-गुण देखकर मैं उसपर दूसरी सौत नहीं लाया। सीता की शुद्धता के बारे में पिता दशरथ ने बताया था, स्वयं ब्रह्मा ने आकर मेरे हाथों सौंपा था॥ १९॥ मैं आश्वस्त होकर सीता को अपने देश ले आया। ऐसी सीता के लिए लोग मेरा उपहास कर रहे हैं। लोग उपहास करें, ऐसी बात मैं सह नहीं सकता। रघुनाथ ने द्वारपाल को पुकार कर बुलाया॥ २०॥ द्वारपाल को बुलाकर रामचन्द्र ने यह वचन कहा— शीघ्र भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न को बुलाओ। राम का आदेश पाकर द्वारपाल तुरंत उन तीनों को रामचन्द्र के समीप बुला लाया॥ २१॥ तीनों भाइयों ने आकर रामचन्द्र के श्रीचरणों की वन्दना की। तब रामचन्द्र तीनों भाइयों के साथ परामर्श

श्रीराम बलेन, आर ना बल उत्तर। सीता लागि लज्जा पाइ सभार भितर
मोर अपयश यत, नारीर कारण। अकीर्ति हइले वर्जि तोमा तिन जन २३
आमार वचन शुन भाइ रे लक्ष्मण। सीता ल'ये राख गिया मुनि-तपोवन
वाल्मीकिर तपोवन ख्यात चराचरे। देशेर बाहिरे सीता राख ल'ये दूरे २४
कालि सीता बलिलेन आमारे आपनि। नाना रत्ने तुषिव से मुनिर ब्राह्मणी
एइ कथा कह गिया प्राणेर लक्ष्मण। रामेर आज्ञाय तुमि चल तपोवन २५
एकथा कहिले तांर पड़िवेक मने। सीता यावे आपनि मुनिर तपोवने
शीघ्र याह लक्ष्मण आमार कर हित। रथे तुलि ल'ये याह सुमन्त्र-सहित २६
तुमि आर सीतादेवी सुमन्त्र सारथि। आर येन कोन जन ना याय संहति
एत यदि निष्ठुर कहिला रघुनाथ। तिन भायेर मुण्डे येन पड़े बज्राघात २७
हाहाकार करि लक्ष्मण छाड़ये निःश्वास। कि दोषे सीतारे तुमि दिवे वनवास
तुम स्वामी थाकिते हइबे अनाथिनी। केमने वञ्चिवे वने ह'ये राज राणी २८
बिना दोषे सीतारे ना देह मनस्ताप। रघुवंश नष्ट हवे, सीता दिले शाप
देशेर बाहिर नाहि कर सीता-स्त्री। सीता छाड़ा हैले हवे हत-लक्ष्मी-श्री २९

करने लगे। जिस कर्म के कारण सभा को लज्जित होना पड़े, हम सबको उचित है कि उस (कर्म) का त्याग ही कर दें! ॥ २२ ॥ श्रीराम बोले, तुम लोग और कोई उत्तर न देना। हमें सीता के कारण सभा में लज्जित होना पड़ता है। मुझपर जो अपयश लगाया जाता है, वह नारी के कारण है। अपयश होने पर मैं तो तुम तीनों को भी परित्याग कर सकता हूँ ॥ २३ ॥ भाई लक्ष्मण, मेरा वचन सुनो। तुम सीता को ले जाकर मुनि के तपोवन में रख आओ। वाल्मीकि मुनि का तपोवन चराचर-विख्यात है। सीता को देश से बाहर ले जाकर वहीं दूर रख दो ॥ २४ ॥ कल सीता ने स्वयं मुझसे कहा था— वह नाना रत्नों से मुनियों की ब्राह्मणियों को तुष्ट करना चाहती है। प्राणप्रिय लक्ष्मण, तुम जाकर सीता से यही बात कहो, राम की आज्ञा से तुम तपोवन चलो ॥२५॥ यह बात कहते ही सीता को याद हो आयेगी। सीता स्वयं मुनि के तपोवन में जायेगी। लक्ष्मण, तुम शीघ्र जाओ, मेरा हित करो। सुमंत्र सहित तुम सीता को रथ पर चढ़ाकर ले जाओ ॥ २६ ॥ तुम, सीता और सारथी सुमंत्र के सिवा और कोई तुम्हारे साथ न जाये। तब रघुनाथ के ऐसे निर्मल वचन कहने पर मानो तीनों भाइयों के सिर पर वज्राघात हो गया ॥ २७ हाहाकार कर लक्ष्मण लम्बी साँसें लेने लगे। किस दोष से आप सीता को वनवास देंगे? आप जैसे पति के रहते क्या वह अनाथिनी बनेगी? जो राजरानी है, वह वन में कैसे रह सकेगी? ॥ २८ ॥ बिना दोष से सीता को मनस्ताप न दें। सीता यदि शाप दे तो रघुवंश नष्ट हो जायेगा। सीता जैसी पत्नी को देश से बाहर न करें। सीता से विहीन होने पर लक्ष्मी-श्री विनष्ट हो जायेगी ॥ २९ ॥ रघुनाथजी, यदि सीता का परित्याग करना ही चाहते

यदि रघुनाथ, सीता करिबे वर्ज्जन । भिन्न गृहे राख सीता एइ निवेदन
श्रीराम बलेन, भाइ, ना कर बिषाद । सीता गृहे थाकिले, हइबे अपवाद ३०
दिलाम आमार दिब्य, कर परिहार । सीतार लागिया केन कह बार बार
श्रीरामेर कथाय लक्ष्मणे लागे भय । सुमन्त्र आनिया तबे कथा वार्त्ता कय ३१

सीतार बनवास

रथ सह सुमन्त्रेरे राखिया दुयारे । लक्ष्मण प्रवेश करे सीतार आगारे
अश्रुजले लक्ष्मणेर सर्व्व-अङ्ग तिते । लक्ष्मणे देखिया परिहास करे सीते १
आइस देवर, आजि बड़ शुभदिन । एवे हे देवर तुमि हये'छ प्रवीण
चौद्द बर्ष एकत्रेते बञ्चिलाम वने । राज्यश्री पाइया तुमि पासरिले मने २
कहियाछि कत मन्द कथा अविनय । ते कारणे देवर हे, हयेछ निर्द्दय
बैसह निकटे तुमि, सीतादेवी बले । वार्त्ता कह देवर हे, आछत कुशले ३
तोमा ना देखिया सदा पोड़े मम मन । उत्तर ना देह केन बिरस-बदन
लक्ष्मण बलेन, यत बल अनुचित । तोमा दरशने, मम आछये निश्चित ४
राजार महिषी तुमि, थाक अन्तःपुरे । सेवक आदेश-बिना आसिते कि पारे
सीतारे प्रणाम करि वन्दिला चरण । भाग्य फले पाइलाम तोमार दर्शन ५

हैं तो यही निवेदन है कि उन्हें अन्य गृह में रखें । श्रीराम बोले— भाई, विषाद न करो । सीता यदि घर में रहे तो कलंक और निन्दा होती ही रहेगी ।। ३० ।। मैं अपनी शपथ देता हूँ, यह सब बात कहना छोड़ दो । सीता के लिए तुम बार-बार क्यों कहते हो ? श्रीराम की बातों से लक्ष्मण को डर लगा । तब उन्होंने सुमंत्र को बुलाकर बात की ।। ३१ ।।

सीता का वनवास

रथ समेत सुमंत्र को द्वार पर रखकर लक्ष्मण ने सीता के भवन में प्रवेश किया । आँसुओं से लक्ष्मण का सारा शरीर भीग रहा था । लक्ष्मण को देख सीता परिहास करने लगीं ।। १ ।। देवर, आओ, आज तो बड़ा ही शुभ दिन है । देवर, अब (इतने दिन पर) तुम प्रवीण बने हो । चौदह वर्ष एक संग हमने वन में बिताये । अब राज्यलक्ष्मी पाकर तुम मन से भूल ही गये ।। २ ।। तुमसे कितनी बुरी बातें उद्दंडता से मैं कहा करती थी । उसी कारण देवर, तुम निर्मम हो गये हो । देवी सीता बोली— तुम निकट बैठो । देवर, समाचार बताओ, तुम सकुशल तो हो न ? ।। ३ ।। तुम्हें बिना देखे मेरा मन सदा संतप्त रहता है । तुम उत्तर क्यों नहीं देते ? तुम्हारा चेहरा क्यों उदास है ? लक्ष्मण बोले— तुम जो कहती हो, अनुचित है । मैं तो तुम्हारा दर्शन निश्चित रूप से करना चाहता हूँ ।। ४ ।। तुम राजा की महारानी हो, अंतःपुर में रहती हो, सेवक क्या आदेश के बिना आ सकता है ? लक्ष्मण ने सीता को [illegible] कर चरण-वंदना की । बोले— सौभाग्य से आ[illegible] दर्शन [illegible] है ।। ५ ।।

आशीर्व्वाद करि कहे सीता-ठाकुराणी। कि कारणे अन्तःपुरे आइला आपनि
अकस्मात देवर हे, केन आगमन। मनते बिस्मित हैनु ना जानि कारण ६
लक्ष्मण बलेन, माता, कर अवधान। श्रीरामेर आज्ञाय आइनु तव स्थान
कालि तुमि कहियाछ राम-विद्यमाने। साक्षात् करिते यावे मुनिपत्नी सने ७
आइलाम तव स्थाने एइ से कारण। मम सङ्गे चल वाल्मीकिर तपोवन
मणि रत्न धन लह येबा लय चिते। नाना रत्न लये आसि उठ दिव्य रथे ८
एत शुनि जानकीर हइल उल्लास। स्वरूप कहिले तुमि किम्वा उपहास
लक्ष्मण बलेन देवी, बुझह आपनि। तोमा दु'जनार कथा आमि किसे जानि ९
कहिते एमन कथा के साहस करे। परिहास करिते तोमारे केवा पारे
इहा शुनि सीतादेवी चलिला भाण्डारे। नाना रत्न आनिलेन अति यत्न करे १०
हीरा-मणि माणिक्येर आभरण आनि। लइला चन्दन-गन्ध सीता-ठाकुराणी
नाना रत्न अलङ्कार सीतादेवी ल'ये। पट्ट वस्त्रे वान्धिलेन आनन्दित ह'ये ११
वहुमूल्य धन ल'ये सीतादेवी नड़े। परम कौतुके सीता रथे गिया चड़े
हेन काले जानकीरे बलेन लक्ष्मण। तुमि आमि सुमन्त्र-सारथि तिन जन १२
आछये रामेर आज्ञा याव गुप्तवेशे। वाल-वृद्ध-युवा केह नाहि जाने देशे
सीता सङ्गे येते चाहे अनेक रमणी। सवारे आश्वास देन सीता-ठाकुराणी १३

देवी सीता ने उन्हें आशीर्वाद देकर पूछा— तुम आप ही अंतःपुर में किसलिए आये ? देवर, अचानक यहाँ तुम्हारा आगमन क्यों हुआ ? कारण समझ न पाकर मैं मन-मन में विस्मित हो रही हूँ ॥ ६ ॥ लक्ष्मण बोले, माता, सुनो, मैं श्रीराम के आदेश से तुम्हारे यहाँ आया हूँ। कल तुमने श्रीरामचन्द्र से कहा था कि मुनि-पत्नियों से भेंट करने जाना चाहती हो ॥ ७ ॥ उसी कारण तुम्हारे पास आया हूँ। मेरे संग वाल्मीकि के तपोवन को चलो। इच्छानुसार मणि-धन-रत्न आदि ले लो। विविध रत्नों को ले आकर दिव्य रथ पर सवार होओ ॥ ८ ॥ यह सुनकर जानकी को बड़ा उल्लास हुआ। बोली— क्या तुम सत्य कहते हो, या उपहास करते हो ? लक्ष्मण बोले— देवी, तुम स्वयं समझो। तुम दोनों में जो वार्ता हुई थी, उससे मैं कैसे जान सकता था ॥ ९ ॥ तुमसे ऐसी बात कहने का साहस कौन कर सकता है ? तुमसे परिहास भी कौन कर सकता है ? यह सुनकर देवी सीता भंडार में गयीं और बहुत यत्न से नाना प्रकार के रत्न ले आयीं ॥ १० ॥ हीरा-मणि-रत्नों के आभूषण लाकर, देवी सीता ने चन्दन-गन्ध आदि प्रसाधन भी ले लिये। विविध रत्न-आभूषण लेकर देवी सीता ने बड़ी प्रसन्नता से उन्हें रेशमी बस्त्रों में बाँधा ॥ ११ ॥ बहुमूल्य धन लेकर सीतादेवी चलीं और परम आनन्द से चलकर रथ पर सवार हो गयीं। इसी समय लक्ष्मण ने जानकी से कहा— तुम, मैं और सारथी सुमंत्र ये तीन व्यक्ति ही ॥ १२ ॥ गुप्त-वेश में जायेंगे। हमारे जाने की बात जैसे देश का कोई बालक-वृद्ध-युवा जान न पाये। रामचन्द्र की ऐसी ही आज्ञा है। अनेक नारियाँ सीता के संग जाना चाहती थीं। महारानी सीता ने उन सभी को आश्वासन दिया ॥ १३ ॥ तुम लोग

सीता संबरिया सबे थाक निज घरे। मुनि-पत्नी प्रणमिया आसिब सत्वरे
रथेते चड़िल सीता परम-हरषे। घरे चलि गेल सबे सीतार आश्वासे १४
सीता-रूपे आलोकरे द्वादश-योजन। सीता-बिना अन्धकार रामेर भवन
दुर्ब्बल हइल लोक, छाड़े राजलक्ष्मी। राज्य खण्डे अमङ्गल हइतेछे देखि १५
नदी स्रोत छाड़े, लोक छाड़िल आहार। दिबस दुपुरे हैल घोर अन्धकार
सूर्य्येर किरण छाड़े पृथिबी मण्डल। सीतार बिदाय देखि वृक्ष छाड़े फल १६
भरत-शत्रुघ्न आछे रामेर निकटे। लक्ष्मण सीतारे लये याइल कपटे
सीता बले, आजि केन देखि अमङ्गल। नाहि जानि आमि रघुनाथेर कुशल १७
शाशुड़ीरे ना कहिनु आसिबार काले। मनोदुःख बुझि ताँर हैल सेइ फले
बामेते देखेन सर्प, शृगाल दक्षिणे। अमङ्गल देखि सीता कहेन लक्ष्मणे १८
लक्ष्मण, अशुभ नाना देखि केन पथे। ना याब अयोध्या फिरे, हेन लयचिते
लक्ष्मण सीतार बाक्ये हेँट कैल माथा। रामेर भयेते किछु ना कहिल कथा १९
अधोमुखे कान्दे शुधु चक्षे बहे पानि। उत्तर ना करे बीर सीता-बाक्य शुनि
सीता कन, केन तव बिरस-बदन। देशे फिरे याब, रथ चालाओ लक्ष्मण २०
आपनि बिदाय लब प्रभुर चरणे। तबे से याइब बाल्मीकिर तपोबने
लक्ष्मण बलेन, देबि, ना हओ व्याकुल। देख एइ आइलाम यमुनार कूल २१

अपनी ममता को संयत रखकर घर में ही रहो। मैं तो मुनि-पत्नियों को प्रणाम कर शीघ्र ही लौट आऊँगी। सीता परम हर्ष से रथ पर सवार हुईं। सीता के आश्वासन से सारी नारियाँ घर में चली गयीं ॥ १४ ॥ सीता का रूप बारह योजन तक आलोकित कर रहा था। सीता के बिना राम का भवन अंधकारमय हो गया। लोक दुर्बल हो गया। राजलक्ष्मी ने घर छोड़ दिया ॥ १५ ॥ राज्यखंड में अमंगल होता देख नदियों ने धारा छोड़ दी; लोगों ने भोजन छोड़ दिया, दिन-दोपहर को घोर अँधेरा छा गया। सूर्य-किरणों ने पृथ्वी-मंडल को छोड़ दिया। सीता को विदा लेते देख, वृक्षों ने फलना छोड़ दिया ॥ १६ ॥ भरत और शत्रुघ्न राम के पास रहे। लक्ष्मण बहाने बनाकर कपट से सीता को ले चले। सीता बोली— आज ये असगुन क्यों देख रही हूँ? रघुनाथजी कुशल से हैं या नहीं, पता नहीं ॥ १७ ॥ आते समय मैं सास जी से भी कुछ कह नहीं आयी। संभवतः उस दुःख से उनके मन में भी कष्ट हुआ है। सीता ने अपने बायीं ओर साँप और दाहिनी ओर सियार देखा। इन अमंगल के सूचकों को देखकर सीता लक्ष्मण से कहने लगी— ॥ १८ ॥ लक्ष्मण, मार्ग में ये नाना प्रकार के अशुभ किसलिए देख रही हूँ? मन में ऐसी आशंका हो रही है कि अब फिर अयोध्या लौट नहीं सकूँगी! सीता की बात सुन लक्ष्मण ने सिर झुका लिया। राम के भय से उन्होंने कुछ नहीं कहा ॥ १९ ॥ वे सिर झुकाये रहे, कातरता के कारण केवल आँखों से आँसू झरते रहे। सीता की बात सुन वीर लक्ष्मण ने कुछ उत्तर नहीं दिया। सीता बोली— लक्ष्मण, तुम्हारा मुखमंडल उदास क्यों है? चलो, हम देश लौट चलें, लक्ष्मण (उधर) रथ चलाओ ॥ २० ॥ मैं स्वयं चलकर प्रभु के

विधिर निर्व्वन्ध कर्म्म खण्डन ना याय। ए कूले राखिया रथ दोँहे चड़े नाय
पार ह'ये यान बाल्मीकिर तपोवन। आगे सीतादेवी यान पश्चाते लक्ष्मण २२
कान्दितेछे लक्ष्मण मनेते पेये भय। लक्ष्मणेर क्रन्दनेते सीता भीत हय
कि दुःख हइल मने देवर लक्ष्मण। कि-कारणे उच्चैःस्वरे करिछ क्रन्दन २३
लक्ष्मण कहेन, कव केमन साहसे। रामेर आज्ञाय तोमा आनि बनबासे
महात्रास पान सीता शुनिया काहिनी। श्रावणेर धारा-सम चक्षे झरे पानि २४
एत दूरे आसि मोरे बलिले लक्ष्मण। कपटे आनिले बाल्मीकिर तपोवन
धर्म्मेते धार्म्मिक राम संसारे प्रशंसा। देशे राखि केन नाहि करिला जिज्ञासा २५
ना दिवेन देशेर मध्येते यदि स्थान। परीक्षा करिया केन कैला अपमान
यमुनाय त्यजि प्राण तोमार सम्मुखे। रघुबंशे-कलङ्क घुचुक सर्ब्ब लोके २६
पाँच मास गर्भ मोर देख विद्यमान। आमि मैले मरिबेक रामेर सन्तान
आमा लागि लज्जा प्रभु पाइला सभाय। बिना अपराधे त्याग करिला आमाय २७
राम हेन स्वामी होक जन्म-जन्मान्तरे। आमि मैले कोटि नारी मिलिबे ताँहारे

चरणों में बिदा लूँगी। इसके पश्चात् वाल्मीकि के तपोवन को जाऊँगी। लक्ष्मण बोले, देवी, व्याकुल न हों, देखो, हम तो यह यमुना-तट पर आ पहुँचे ॥ २१ ॥ विधि का लिखा हुआ कर्म मिटाया नहीं जा सकता। रथ को इस पार रखकर दोनों नाव पर सवार हुए। यमुना पार कर वाल्मीकि के तपोवन में पहुँचे। सीतादेवी आगे-आगे और लक्ष्मण पीछे-पीछे चले ॥ २२ ॥ लक्ष्मण मन में डरते हुए रो रहे थे। लक्ष्मण को रोते देख सीता को भय हुआ। बोलीं, देवर लक्ष्मण, तुम्हारे मन में यह कौन-सा दुःख हुआ है? किस कारण तुम ऊँचे स्वर से रुदन कर रहे हो? ॥ २३ ॥ लक्ष्मण बोले, मैं किस साहस से बताऊँ? राम के आदेश से मैं तुम्हें वनवास देने ले आया हूँ। यह कथन सुनकर सीता को महान् त्रास हुआ। सावन की धारा-जैसे उनकी आँखों से आँसू झरने लगे ॥ २४ ॥ लक्ष्मण, तुमने इतनी दूर आने के बाद अब यह बात बतायी। तुम मुझे कपट से वाल्मीकि के तपोवन में ले आये! अपने धर्म में सदा अविचल रहनेवाले धार्मिक पुरुष के रूप में संसार भर में रामचन्द्र की प्रशंसा फैली हुई है। देश मे रखकर ही उन्होंने मुझसे क्यों नहीं पूछा? ॥ २५ ॥ यदि मुझे देश में स्थान ही न देना था तो मेरी परीक्षा लेकर मेरा अपमान क्यों किया था? मैं तुम्हारे सम्मुख ही यमुना में प्राण त्यज देती जिससे लोक में रघुवंश का जो कलंक फैला है, वह मिट जाता ॥ २६ ॥ पर देखो, अब तो मेरा पाँच महीने का गर्भ है। मेरे मर जाने पर तो राम की संतान भी मर जायेगी। मेरे कारण प्रभु को सभा में लज्जित होना पड़ा है, इसी कारण मेरा कोई दोष न होने पर भी उन्होंने मुझे त्याग दिया है ॥ २७ ॥ राम जैसे मेरे स्वामी जन्म-जन्मान्तर मे हों; मेरे मरने पर उन्हें तो करोड़ों नारियाँ मिल जायेंगी। सीता का रुदन सुन लक्ष्मण कातर हो उठे। दोनों वाल्मीकि के तपोवन

सीतार क्रन्दन शुनि कातर लक्ष्मण । दु'जने बसिला बाल्मीकिर तपोबन २८
लक्ष्मण बिदाय मागे करि योड़हात । कान्दिया बलेन सीता, कोथा रघुनाथ

स्वर्ण-सीता निर्म्माण

सीतादेबी राखिया लक्ष्मण बीर नड़े । कान्दिते कान्दिते बीर नाये गिया चड़े १
नौकाय हइया पार चड़िलेन रथे । कोथा राम बलि सीता लागिला कान्दिते
कान्दिते लागिला सीता हइया फाँफर । हेन काले चतुर्द्दिके देखे भयङ्कर २
चारि दिके चान सीता, देखे बनमय । शार्द्दूल भल्लुक देखि पान बड़ भय
उच्चैःस्वरे कान्दे सीता बनेर भितर । शिष्य सङ्गे आइल बाल्मीकि मुनिबर ३
सीता-बनबास पूर्ब्बे रचेछेन मुनि । आसिया सीतार स्थाने जिज्ञासे आपनि
जनकेर कन्या, तुमि रामेर गृहिणी । दशरथ-बहुयारी मेदिनी-नन्दिनी ४
लोक-अपबादे राम पाइया तरास । बिना अपराधे तोमा दिला बनबास
त्रिभुबने साध्वी नाहि तोमार समान । अयोध्या काण्डेते आछे ताहार प्रमाण ५
परम आदरे सीता ल'ये यान मुनि । सीतारे राखिल ल'ये यथाय ब्राह्मणी
सीतार रूपेते तपोबन आलोकरे । मुनि-पत्नी बले, लक्ष्मी एल मोर घरे ६

में बैठ गये ।। २८ ।। लक्ष्मण ने हाथ जोड़कर सीता से विदा माँगी । सीता रोती हुई कहने लगी—रघुनाथ, कहाँ हो ?

स्वर्ण-सीता-निर्माण

सीतादेवी को वहीं रखकर वीर लक्ष्मण चल पडे । रोते-रोते वे वीर चलकर नाव पर सवार हो गये ।। १ ।। नाव से यमुना पार कर वे रथ पर सवार हो गये । 'राम, कहाँ हो' कहती हुई सीता रोने लगीं । सीता विह्वल होकर रोने लगीं । उस स्थिति में सीता को चारों ओर भयंकर दिखाई पड़ा ।। २ ।। सीता चारों ओर देखने लगीं, देखा, सभी ओर वन ही वन है । शार्दूल, भालू आदि को देख उन्हें बड़ा भय लगा । सीता वन में ऊँचे स्वर से रोने लगीं, तभी वहाँ शिष्यों-सहित मुनिवर वाल्मीकि आये ।। ३ ।। सीता-वनवास की रचना मुनि ने पहले ही की थी । अब वे सीता के समीप आकर स्वयं ही पूछने लगे— तुम जनक की कन्या, रामचन्द्र की गृहिणी, दशरथ की पुत्रवधू, धरती की कन्या हो ।। ४ ।। लोकापवाद के कारण रामचन्द्र ने संत्रस्त होकर बिना किसी अपराध के तुम्हें वनवास दे दिया है । त्रिभुवन में तुम जैसी साध्वी कोई नहीं है । अयोध्याकांड में ही उसका प्रमाण है ।। ५ ।। मुनि सीता को परम आदर से अपने यहाँ ले चले । उनकी ब्राह्मणी जहाँ थी वहाँ ले जाकर सीता को रखा । सीता के रूप से तपोवन आलोकित हो उठा । मुनिपत्नी बोली, मेरे घर में लक्ष्मी आ गयी ।। ६ ।। मुनिपत्नी ने जानकी का आलिंगन किया । सीता की प्रशंसा करती हुई मधुर वचन

जानकीरे मुनि-पत्नी दिला आलिङ्गन । सीतारे प्रशंसि बले मधुर बचन
शुभ दिन हैल माता एले मोर घर । तोमा दरशने मोर हरिष अन्तर ७
सीता बले, कर्म्म दोषे आमार बर्ज्जन । तोमा दरशने मोर सफल जीवन
मुनिपत्नी-सहित रहेन तपोवने । कान्दिया लक्ष्मण चले अयोध्या भुवने ८
सुमन्त्र बलेन, शुन ठाकुर लक्ष्मण । पूर्ब्बेर काहिनी मोर हइल स्मरण
वृद्ध नृपतिर कथा पड़ियाछे मने । रघुवंशे सारथि आमि याइव कानने ९
वाल्मीकि-कविता किछु पड़े मोर मने । दशरथ यज्ञकथा शुन सावधाने
सप्तद्वीपेर यत मुनि एल सेइ स्थाने । दशरथ राजार यज्ञेर निमन्त्रणे १०
यज्ञशाले आसिवारे मुनिगण-मेला । सबे मिलि राजारे दिलेन यज्ञशाला
यज्ञफले नृपतिर चारि पुत्र हबे । सुरासुर-अमरादि सकले काँपिबे ११
सर्व्व गुण धरिबेक तोमार कुमार । एक अंशे चारि पुत्र बिष्णु अवतार
चारि तनयेर पिता तुमि गुणधाम । शत्रुघ्न, लक्ष्मण आर भरत-श्रीराम १२
पितृ सत्य पालिते श्रीराम याबे बन । शून्य घर पेये सीता हरिबे रावण
बान्धिया सागर राम सैन्य करि पार । रावणे बधिया सीता करिबे उद्धार १३
एगार हाजार वर्ष प्राजार पालन । सात हाजार वर्ष परे सीतार वर्ज्जन
दुर्व्वासा आसिया द्वारे रहिबेन कोपे । लक्ष्मणे बर्ज्जिबे राम सेइ मुनि-शापे १४

बोली— माँ, तुम मेरे घर आयीं, इससे हमारा शुभदिन आ गया। तुम्हारे दर्शन से मेरा अन्तर् हर्षित हो उठा है ॥ ७ ॥ सीता बोली— कर्म-दोष से मुझे त्याग दिया गया है। तुम्हारे दर्शन से मेरा जीवन सफल हो गया। सीता मुनि-पत्नी के संग तपोवन में रहने लगीं। लक्ष्मण रोते हुए अयोध्या पुरी को चले ॥ ८ ॥ सुमंत्र बोला— प्रभु लक्ष्मण ! सुनें ! एक पूर्व-कथा मुझे स्मरण हो आयी है। हमारे बूढ़े महाराज की बात स्मरण हुई है। जब कि राम वनवास के समय मैं रघुवंश का सारथी बनकर रामचन्द्र के साथ वन में जा रहा था (महाराज दशरथ ने यह बात सुनायी थी) ॥ ९ ॥ वाल्मीकि मुनि की कविता मुझे कुछ स्मरण हो रही है। (उसमें कही गयी) महाराज दशरथ के यज्ञ में हुई वह कथा सावधानी से सुनें। महाराज दशरथ के आमंत्रण से सप्त द्वीपों के सारे मुनि वहाँ आये हुए थे ॥ १० ॥ यज्ञशाला में आने के लिए मुनियों का समूह चला। सबने मिलकर राजा दशरथ को यज्ञशाला प्रदान की। यज्ञ के फल से राजा के चार पुत्र होंगे। (जिनके वल से) सुर-असुर-अमर आदि सभी काँपेंगे ॥ ११ ॥ तुम्हारे पुत्र सर्व-गुण-धारी बनेंगे। विष्णु के एक अंश से चारों पुत्र अवतार लेंगे। श्रीराम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न चारों गुणधाम पुत्रों के तुम पिता होओगे ॥ १२ ॥ रामचन्द्र पिता के सत्य का पालन करने हेतु वन में जायेंगे। वहाँ सूना घर पाकर रावण सीता को हर लेगा। राम सागर को बाँधकर, अपनी सेना पार करेंगे, और रावण का वध कर सीता का उद्धार करेंगे ॥ १३ ॥ रामचन्द्र ग्यारह हज़ार वर्ष प्रजा का पालन करेंगे, सात हज़ार वर्ष बीतने पर वे सीता का परित्याग करेंगे। दुर्वासा क्रोधपूर्वक आकर उनके द्वार पर रहेंगे। उस मुनि के

एत शुनि महाराज हेंट कैल माथा। आमारे कहिल व्यक्त ना कर ए कथा
आमारे निषधि राजा गेल स्वर्गवास। तोमारे निकटे आमि करिये प्रकाश १५
सीतार लागिया तुमि करह क्रन्दन। तोमा हेन भाये राम करिवे बर्ज्जन
पूर्व्वेर बृत्तान्त एइ कहिनु लक्ष्मण। शुनिया लक्ष्मण बीर बिरस बदन १६
लक्ष्मण बलेन, तुमि कहिले संवाद। ना पारि सहिते आमि सीतार बिषाद
आगे केन राम मोरे ना कैल बर्ज्जन। एड़ाताम एइ दुःख देखिते एखन १७
आपनार दुःख आमि सहिवारे पारि। सीतार यन्त्रणा आर देखिते ये नारि
एइरूप कथा बार्त्ता कहे दुइजन। अयोध्याय राम-काछे गेलेन लक्ष्मण १८
कान्दिते कान्दिते बीर नोयाइल माथा। श्रीराम बलेन, सीता थुये एल कोथा
आमार सन्दिग्ध मन, चञ्चल हृदय। बर्ज्जिलाम सीता नारी लोकेर कथाय १९
मोरे छाड़ि सीता नाहि थाके एक राति। एकेला थाकिबे बने काहार संहति
राज्य-धन सिंहासन बिफल आमार। सीतार बिहने मोर सब अन्धकार २०
कोन् बने रहिलेन जानकी रूपसी। कि बलिबे शुनिले जनक महा ऋषि
कार मुख चेये सीता रबे कार पाश। सिंह-व्याघ्र देखि तार लागिबे तरास २१
कह कह कह भाइ, शुनि आरबार। कोन् बने थुये एले जानकी आमार
लक्ष्मण बलेन, तुमि करिले बर्ज्जन। आपनि बर्ज्जिया केन करह क्रन्दन २२

शाप से रामचन्द्र लक्ष्मण को त्याग देंगे ।। १४ ।। यह सुनकर महाराज ने सिर झुका लिया। मुझसे उन्होंने कहा, यह बात तुम प्रकट न करना। मुझे कहने को मना कर महाराज स्वर्गवासी हो गये। अब मैं आप से यह प्रकट कर रहा हूँ ।। १५ ।। सीता के लिए आप रुदन कर रहे हैं, परन्तु आप जैसे भाई को भी रामचन्द्र परित्याग कर देंगे। हे लक्ष्मण, मैंने यह पूर्व-कथा आपको सुनायी। (सुमंत्र की बात) सुनकर वीर लक्ष्मण का मुख-मंडल उदास हो गया ।। १६ ।। लक्ष्मण ने कहा, तुमने संवाद तो सुना दिया, पर मैं सीता की वेदना सह नहीं पा रहा हूँ। रामचन्द्र ने पहले ही मेरा परित्याग क्यों नहीं किया ? तब तो आज यह दुःख देखने से मैं बच जाता ।। १७ ।। अपना दुःख तो मैं सह सकता हूँ पर सीता की यंत्रणा तो अब देखी नहीं जाती। लक्ष्मण और सुमंत्र दोनों इस प्रकार बातचीत करते रहे। अयोध्या पहुँचकर लक्ष्मण राम के पास गये ।। १८ ।। रोते-रोते वीर लक्ष्मण ने सिर झुकाया। श्रीराम ने कहा— तुम सीता को कहाँ रख आये ? मेरा मन संदिग्ध है, हृदय चंचल है, सीता जैसी नारी को मैंने लोगों की वात पर त्यज दिया ।। १९ ।। मुझे छोड़कर सीता एक रात भी नहीं रह पाती थी। अब वह वन में किसके संग रहेगी ? मेरा राज्य-धन-सिंहासन सब कुछ विफल है। सीता के बिना मेरा सब कुछ अंधकार है ।। २० रूपसी जानकी किस वन में रह रही है ? महा-ऋषि जनक जब यह बात सुनेंगे तो क्या कहेंगे ? सीता किसका मुँह देखकर किसके पास रहेगी ? वन में सिंह-बाघ आदि देखकर वह संत्रस्त होगी ।। २१ ।। भाई लक्ष्मण, कहो, कहो मैं पुनः सुनूं। तुम किस वन में मेरी जानकी को रख आये ? लक्ष्मण वोले, आपने तो सीता

क्रन्दन संवर प्रभु, क्षमा देह मने। सीता थुये आइलाम वाल्मीकिर वने
यदि रघुनाथ मोरे कर आज्ञा दान। रात्रिर भितरे सीता आनि तव स्थान २३
श्रीराम बलेन, सीता, थुयेछि बाहिरे। बड़ लज्जा हवे पुनः आनिले सीतारे
सीतारे ना देखि भाइ, ना पारि रहिते। केमने सीतार शोक पासरिवे चिते २४
आमार वचन शुन भाइ तिन जन। रात्रिमध्ये स्वर्ण-सीता करह गठन
जानकी आनिले निन्दा करिवे ये लोक। देखिया सोनार सीता पासरिव शोक २५
एतेक वलिया राम करेन क्रन्दन। विश्वकर्म्मा एलो तथा वुझि तार मन
शत मन सोना लये दिल तार स्थान। स्वर्ण-सीता विश्वकर्म्मा करिल निर्म्माण २६
येमन सीतार रूप किछु नाहि नड़े। सवे मात्र एइ चिह्न वाक्य नाहि सरे
स्वर्ण-सीतारे पराय वस्त्र-आभरण। सुगन्धि पुष्पेर माल्य, सुगन्धि चन्दन २७
सीता सीता वलि राम डाके निरन्तर। सीता नहे, रघुनाथे के दिवे उत्तर
एक-दृष्टे चाहि रन स्वर्ण-सीता मुख। उत्तर ना पेये राम वड़ हय दुख २८
वत्सर हाजार सात सीतार संहति। स्वर्ण सीता देखिया वञ्चिला सात राति
सात राति वञ्चि राम आइला बाहिर। श्रावणेर धारा-सम चक्षे वहे नीर २९

का परित्याग कर दिया, स्वयं त्याग कर अव रुदन क्यों कर रहे हैं ? ।। २२ ।। प्रभु, रुदन बंद कीजिये, हृदय से मुझे क्षमा कर दें। मैं सीताजी को वाल्मीकि के तपोवन में रख आया हूँ। रघुनाथजी, यदि आप मुझे आज्ञा दें, तो रात के भीतर ही सीताजी को आप के समीप ला दूंगा ।। २३ ।। श्रीराम बोले, सीता को तो मैंने (देश से) वाहर रखवा दिया है। पुनः यदि सीता को ले आऊँ तो वह बड़ी लज्जा की बात होगी। भाई, सीता को विना देखे मैं तो रह नहीं सकता। भला मेरा चित्त सीता का शोक कैसे भूले ! ।। २४ ।। तीनों भाई, तुम लोग मेरी बात सुनो, आज रात भर मे सोने की सीता वनवा लो। जानकी को लाने पर तो लोग निन्दा ही करेंगे। सोने की सीता को देखकर ही मैं शोक भूला रहूँगा ।। २५ ।। इतना कहकर राम क्रन्दन करने लगे। उनके मन की भावना समझकर विश्वकर्मा वहाँ पहुँचे। उन्हें सौ मन सोना दिया गया। तव विश्वकर्मा ने स्वर्ण-सीता का निर्माण किया ।। २६ ।। सीता का जैसा रूप था उस प्रतिमा में उससे कुछ भी अन्तर न था। (वह सीता सोने की है) उसका चिह्न केवल यही था कि उससे बोली नहीं निकलती थी। उस स्वर्ण-सीता को वस्त्र और आभूषण, सुगन्धित पुष्पों की माला आदि पहनाये गये, सुगन्धित चन्दन लगाया गया ।। २७ ।। रामचन्द्र निरंतर 'सीता-सीता' कहकर पुकारने लगे। वह तो सीता न थी, भला रघुनाथ को उत्तर कौन देता ? रामचन्द्र एकटक स्वर्ण-सीता का मुख निहारते रहे। अपनी पुकार का कोई उत्तर न पाकर उन्हें बड़ा दुःख हुआ ।। २८ ।। वे सीता के संग सात हज़ार वर्ष रहे, स्वर्ण-सीता को देखते हुए उन्होंने सात रातें वितायीं ! सात रातें विताकर रामचन्द्र वाहर निकले। उनके नेत्रों से सावन की धारा जैसे

भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न तिन जने। बाहिर-चौतारे राम बसिला देओयाने
पात्र-बन्धु मित्रादि आइला राम स्थाने। शून्यमय देखे राम सीतार बिहने ३०
बिवाह करिते ताँर नाहि लय मन। सम्मुखे सोनार सीता राखे सर्व्वक्षण
पात्र-मित्र-बन्धुबर्ग बुझाय सकले। बिवाह करह राम, सकलेते बले ३१
यत यत राजकन्या आछे स्थाने-स्थान। शुनिया रामेर गुण करे अनुमान
सीता हेन नारी याय ना लागिल मने। से जनार मनोनीत हइबे केमने ३२
एइ युक्ति कन्यागण करे निरन्तर। आर बिभा ना करिबे राम रघबर
सीता सीता बलि राम छाड़िल निःश्वास। गाइल उत्तरकाण्डे कवि कृतिबास ३३

कुक्कुर ओ सन्न्यासीर बिबाद

लक्ष्मण बलेन, प्रभु, उचित ए नय। सात दिन हैल, राजकार्य्य नाहि हय
सात दिन हइयाछे सीतार बर्ज्जन। सीतार शोकेते कर्म्मे किछु नाहि मन १
राजा हैया काज कर्म्म ना करे जिज्ञासा। परिणामे नरक-भितरे हय बासा
राज्य चर्च्चा छाड़िलेन पूर्व्वे राजा नृग। सेइ पापे नरक भुञ्जिल चारि युग २

आँसू बहते थे ॥ २९ ॥ भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न इन —तीनों के संग राम बाहर चबूतरे पर बैठे। मंत्री, कुटुम्बी, मित्र आदि राम के पास आये। परन्तु रामचन्द्र सीता के बिना सब कुछ सूना-सूना देख रहे थे ॥ ३० ॥ (दूसरा) विवाह करने को उनका मन नहीं होता था। वे स्वर्ण-सीता को निरंतर अपने सम्मुख रखते थे। मंत्री, कुटुम्बी, मित्र आदि सभी उन्हें समझाते थे, रामचन्द्र आप विवाह कर लें ॥ ३१ ॥ स्थान-स्थान में कितनी ही राज-कन्याएँ हैं, राम के गुण सुनकर वे मन ही मन अनुमान लगा रही है (कि रामचन्द्र उससे विवाह करेंगे), पर सीता जैसी नारी जिनके मन नही आयी भला वे कन्याएँ उनके मनोनीत कैसे हो सकेंगी ॥ ३२ ॥ कन्याएँ इस प्रकार निरंतर चर्चाएँ करती थीं कि रघुवर रामचन्द्र और विवाह नहीं करेंगे। (विवाह का सुझाव सुनकर) रामचन्द्र ने सीता-सीता कहकर साँस छोड़ी ! कवि कृत्तिवास ने उत्तरकांड की यह कथा गायन की है ॥ ३३ ॥

कुत्ते और संन्यासी का विवाद

लक्ष्मण बोले, प्रभु, यह तो उचित नहीं है। सात दिन हो गये कोई राजकार्य नहीं किया गया है। सीता को परित्याग किये हुए सात दिन हो चुके हैं। सीता के शोक से राजकार्य में मन ज़रा भी नहीं बैठता ॥ १ ॥ राजा होकर जो राजकार्य के बारे में जानकारी-पूछताछ नहीं रखता, परिणामस्वरूप उसे नरक में निवास करना पड़ता है। पूर्वकाल में राजा नृग ने राज्य-चर्चा छोड़ दी थी, उसी पाप से उसे चार युग तक नरक भोगना पड़ा था ॥ २ ॥ पुष्कर देश में नृगेश्वर नाम का राजा था।

पुस्कर देशेर राजा नाम नृगेश्वर। धर्म्मेते धार्म्मिक राजा गुणेर सागर
प्रभासेर तीरे राजा करिल गमन। एक लक्ष धेनुदाने तुषिल ब्राह्मण ३
अग्निवैश्येर धेनु एक छिल तार पाले। नृग राजा दान कैल धेनुर मिशाले
अग्निवैश्य ब्राह्मणेरे जगते वाखानि। तपे जपे ब्रह्मचर्य्ये द्विज महाज्ञानी ४
धेनुर शोकेते द्विज जर-जर तनु। नाना देशे तत्त्व करे ना पाइल धेनु
भ्रमिते भ्रमिते गेल प्रभासेर तीरे। आपनार धेनु देखे पालेर भितरे ५
धेनु देखि ब्राह्मणेर हरषित मन। जीव-वत्सा वलि मुनि डाकिल तखन
हाम्बा-रवे एल धेनु अग्निवैश्य-पाशे। धेनु ल'ये द्विजवर चलिल हरिषे ६
यारे दान दियाछिल नृग महीपाले। सेइ द्विज धाइया आइल हेन काले
अग्निवैश्य धेनु ल'ये करिछे गमन। गो चोर वलिया तारे धरिल ब्राह्मण ७
धेनु लागि विसंवाद हैल दुइ जने। राजद्वारे महायुद्ध ब्राह्मणे-ब्राह्मणे
द्वारी गिया भूपतिरे कहिल संवाद। धेनु लागि दुइ द्विजे ह'तेछे विवाद ८
लक्ष धेनु दान तुमि कैले येइ काले। अग्निवैश्येर धेनु एक छिल सेइ पाले
एतेक शुनिया राजा भाविये विषाद। अविचारे दान क'रे पड़िल प्रमाद ९
एतेक भाविया राजा ना दिल दर्शन। राजद्वारे हुड़ाहुड़ि विप्र दुइजन
दुइ विप्र कोन्दल करये राजद्वारे। द्वि-प्रहर हैल, देखा ना पाय राजारे १०

वह धर्मानुरागी धार्मिक राजा गुणों का सागर था। वह राजा प्रभास के तट पर गया और एक लाख गायों का दान कर उसने ब्राह्मणों को तुष्ट किया ॥ ३ ॥ अग्निवैश्य की एक गाय उसके झुंड में थी। गायों में मिले रहने के कारण राजा नृग ने दूसरी गायों के साथ उसे भी दान कर दिया। ब्राह्मण अग्निवैश्य की प्रशंसा सारा जगत करता था। जप-तप-ब्रह्मचर्य में वह द्विज महाज्ञानी था ॥ ४ ॥ गाय के (खोने के) शोक के कारण उस द्विज का शरीर जर्जर हो गया था। विभिन्न देशों में खोज करने पर भी वह गाय नहीं मिली थी। वह घूमता हुआ प्रभास के तट पर पहुँचा। उस झुंड में उसने अपनी गाय देखी ॥ ५ ॥ गाय को देखकर ब्राह्मण का मन हर्षित हुआ। तब 'जीव-वत्सा' कहकर उसे पुकारा। हुँकारती हुई वह गाय अग्निवैश्य के पास आ गयी। अपनी गाय को लेकर द्विजवर हर्षित हो चल पड़ा ॥ ६ ॥ उसी समय जिस द्विज को राजा नृग ने दान दिया था, वह द्विज दौड़ा हुआ आया। अग्निवैश्य गाय को लेकर चला जा रहा था। 'गाय-चोर' कहकर उस ब्राह्मण ने उसे पकड़ा ॥ ७ ॥ गाय को लेकर दोनों में विवाद होने लगा। ब्राह्मण-ब्राह्मण में राज-द्वार पर महायुद्ध मच गया। द्वारपाल ने जाकर राजा से समाचार कहा कि गाय के लिए दो ब्राह्मणों में विवाद हो रहा है ॥ ८ ॥ आपने जिस समय लाखों गायों का दान किया था, उस झुंड में अग्निवैश्य की एक गाय थी। यह सुनकर राजा सोचते हुए विषाद-मग्न हो गया। बिना विचार किये दान करने के कारण यह प्रमाद हो गया है ॥ ९ ॥ ऐसा सोचकर राजा उनके सामने नहीं आया। दोनों ब्राह्मण राजद्वार पर झगड़े कर रहे थे। दोपहर हो गया पर राजा

ना पाये भूपेर देखा, दोँहे हैल ताप। क्रोध भरे दुइ विप्र भूपे दिल शाप
पर-धन-दान हेतु लागिल कोन्दल। देखा ना पाइया विप्र छाड़े राजस्थल ११
देखा ना पाइया भूपे कहे कटूत्तर। कृकलास ह'ये थाक नरक-भितर
उभये मिलिया घरे गेलेन ब्राह्मण। प्रमाद पड़िल एत दिया परधन १२
ब्रह्मशाप नृग राजा भुञ्जे चिरकाल। ना करे राज्येर चर्च्चा एतेक जञ्जाल
राम बले जानि, शास्त्रे कहे मुनि-ऋषि। अबिचारे धर्म्म कार्य्य कैले पापराशि १३
चिरदिन तोमरा करह राज्य खण्ड। क'रेछ भूपति मोरे दिया छत्रदण्ड
एत बलि श्रीराम बसिला सभा करि। राजद्वारे लक्ष्मण बसेन ह'ये द्वारी १४
एलेन बशिष्ठ मुनि कुल-पुरोहित। कश्यप, नारद-आदि हैल उपनीत
पात्र मित्र ल'ये चर्च्चा करेन भरते। आछेन लक्ष्मण द्वारे स्वर्ण-छड़ि हाते १५
मुनिगण कहिछेन शुनह लक्ष्मण। रघुनाथ सङ्गते कराह दरशन
प्रजा सब बले, शुन ठाकुर लक्ष्मण। रामेर पालने सुखी आछे प्रजागण १६
राम हेन राजा नाहि देखि कोन युगे। पुत्र पौत्रे लोके रत आछे नाना भोगे
एत शुनि हरषित लक्ष्मण ठाकुर। हेन काले तथा एक आइल कुक्कुर १७
रक्त-आँखि कुक्कुरेर सर्वाङ्ग धवल। पथ श्रमे उपवासे ह'येछे बिकल
तिन पदे चले, तार एक पद खञ्ज। दण्डेर आघाते शिरे रक्त पुञ्ज पुञ्ज १८

से भेंट नहीं हुई ॥ १० ॥ राजा से न मिल पाने के कारण दोनों को दुःख हुआ। क्रोध से दोनों विप्रों ने राजा को शाप दे दिया। राजा ने दूसरे के धन का दान किया था, इस कारण उनमें विवाद लगा था। राजा से भेंट न होने पर दोनों राज-निवास से चले गये ॥ ११ ॥ राजा से भेंट न होने के कारण वे राजा को कटु-वचन कहने लगे— 'तू गिरगिट बनकर नरक में पड़ा रहा। इसके पश्चात् दोनों ब्राह्मण घर चले गये। इतना धन देने पर भी राजा पर ऐसा संकट आ पड़ा ॥ १२ ॥ राजा नृग चिरकाल ब्रह्मशाप भोगता रहा। राज्य की चर्चा-विचार-विमर्श न करने के कारण ही ऐसी गड़बड़ी हुई थी। राम बोले, जानता हूँ। मुनि-ऋषियों ने शास्त्रों में कहा है, बिना विचारे धर्म-कार्य करने पर महान् पाप हो जाता है ॥ १३ ॥ तुम लोग चिरकाल यहाँ राज करते रहो। (तुम्हीं ने) मुझे छत्र और राजदंड देकर राजा बनाया है। यह कहकर श्रीराम सभा जुटाकर बैठे। लक्ष्मण राजद्वार पर द्वारपाल बनकर रहे ॥ १४ ॥ कुल-पुरोहित वशिष्ठ मुनि वहाँ आये। कश्यप, नारद आदि भी उपस्थित हुए। मंत्रियों, सामन्तों के संग रामचन्द्र भरत से चर्चा करने लगे। लक्ष्मण सोने का दंड ले द्वार पर थे ॥ १५ ॥ मुनियों ने कहा— लक्ष्मण, सुनो, रघुनाथ से हमारी भेंट करवाओ। लक्ष्मण सुनो, सारी प्रजा कहती है कि राम के राज्य-पालन से वह सब सुखी है ॥ १६ ॥ राम जैसा राजा किसी युग में नहीं देखा। लोग पुत्र-पौत्र सहित अब नाना भोग भोग रहे हैं। लक्ष्मण यह सुनकर बड़े हर्षित हुए। तभी वहाँ एक कुत्ता आया ॥ १७ ॥ उस कुत्ते की आँखें रक्तवर्ण थीं, । [illegible] श्वेत था। यात्रा की थ[illegible] और उपवास से व[illegible] था। [illegible] पैरों से

तिन पदे चलिया आइल धीरे धीरे। लक्ष्मणे प्रणाम करि भासे अश्रुनीरे
कुक्कुरे जिज्ञासा करे ठाकुर लक्ष्मण। कि कारणे कुक्कुर हेथाय आगमन १९
कुक्कुर कहिल, शुन, ठाकुर लक्ष्मण। कहिब आमार दुःख श्रीराम-सदन
यदि आज्ञा देह राम घृणा ना करिया। कहिब आमार दुःख सभामध्ये गिया २०
लक्ष्मण गेलेन तबे रामेर निकटे। कुक्कुरेर वृत्तान्त कहेन कर पुटे
द्वारेते कुक्कुर एक हैल आगुसार। सभाते आसिते चाहे, कि आज्ञा तोमार २१
कुक्कुरे आनिते राम बलेन सत्वर। कुक्कुरे आनिल तबे रामेर गोचर
राज-व्यवहारे कुक्कुर नोङाइल माथा। योड़हाते स्तव करे, बले नीति कथा २२
तुमि ब्रह्मा, तुमि विष्णु, तुमि महेश्वर। कुबेर वरुण तुमि, यम पुरन्दर
तुमि चन्द्र, तुमि सूर्य्य, तुमि दिक्पाल। तोमार सकल सृष्टि, तुमि परकाल २३
तुमि विष्णु, अवतार ख्यात त्रिभुवने। सफल कुक्कुर-देह तोमा-दरशने
राम बले, कत स्तुति कर बारे बारे। कोन् कार्य्ये आसियाछ, कहता आमारे २४
कान्दिया कुक्कुर बले अश्रुजले भासि। विना-अपराधे मोरे मेरेछे संन्यासी
संन्यासीर दण्डाघाते हइया कातर। तिन-उपवासे आसि तोमार गोचर २५
कोन् अपराध-हेतु मोरे करे दण्ड। संन्यासीरे जिज्ञासा करह सभाखण्ड
राम बले, सभाखण्ड, शुनिले उत्तर। संन्यासीरे आन शीघ्र आमार गोचर २६

चलता था, उसका एक पैर लँगड़ा था। लाठी के आघात से उसके सिर पर रक्त के धब्बे जमे हुए थे ॥ १८ ॥ वह तीन पैरों से चलता हुआ धीरे-धीरे आया। लक्ष्मण को प्रणाम कर वह आँसुओं की धारा बहाने लगा। कुत्ते से लक्ष्मण ने पूछा— कुत्ते, तुम्हारा आगमन यहाँ किसलिए हुआ है ? ॥ १९ ॥ कुत्ता बोला— देव, लक्ष्मण, सुनें। अपना दुःख मैं श्रीरामचन्द्र से कहना चाहता हूँ। रामचन्द्र यदि मुझसे घृणा न कर आज्ञा दें, तो मैं अपना दुःख सभा में जाकर कहना चाहता हूँ! ॥ २० ॥ तब लक्ष्मण राम के पास गये और हाथ जोड़कर कुत्ते का वृत्तान्त कह सुनाया। प्रभु, द्वार पर कुत्ता आया हुआ है। वह सभा में आना चाहता है, आपकी क्या आज्ञा है ? ॥ २१ ॥ रामचन्द्र ने तुरंत कुत्ते को ले आने के लिए कहा। तब लक्ष्मण कुत्ते को रामचन्द्र के पास ले आये। राज-सभा में व्यवहार के अनुसार कुत्ते ने सिर झुकाया। हाथ जोड़कर स्तवन करता हुआ नीति-कथा कहने लगा ॥ २२ ॥ तुम ब्रह्मा हो, तुम विष्णु हो, तुम महेश्वर हो, तुम कुबेर-वरुण हो, यम-पुरन्दर हो। तुम चन्द्र हो, तुम सूर्य हो, तुम्हीं दिक्पाल हो। सारी सृष्टि तुम्हारी है, तुम्हीं पर-काल भी हो ॥ २३ ॥ तुम विष्णु के अवतार त्रिभुवन-विख्यात् हो। तुम्हारे दर्शन से मेरा यह कुत्ते का शरीर सफल हो गया। श्रीराम बोले— तुम बार-बार कितनी स्तुति कर रहे हो, तुम किस कार्य से आये हुए हो, मुझसे बताओ ॥ २४ ॥ कुत्ते ने रोकर आँसू बहाते हुए कहा— मुझे बिना अपराध के संन्यासी ने मारा है। संन्यासी के दंड के आघात से कातर होकर मैं तीन दिन उपवासी रह तुम्हारे पास न्याय हेतु आया हूँ ॥ २५ ॥ किस अपराध से संन्यासी ने मुझे दंडित किया है, सभासदगण उस

भाल मन्द विचार करह सर्व्वजने। संन्यासी हइया जीव-हिंसे कि कारणे
रामेर आज्ञाय दूत चलिल सत्वरे। कुक्कुर आसिया देखाइल संन्यासीरे २७
हस्ते कमण्डलु, स्कन्धे मृगचर्म्म तार। संन्यासीरे देखि दूत करे नमस्कार
संन्यासीरे ल'ये गेल यथाय लक्ष्मण। लक्ष्मण आनिया दिल रामेर सदन २८
संन्यासीरे रघुनाथ करेन जिज्ञासा। स्वधर्म्म छाड़िया केन कर जीवहिंसा
अधर्म्म करिले हय नरके निवास। क्रोधे अङ्ग परिपूर्ण, किसेर संन्यास २९
परनिन्दा, परहिंसा, परम पातक। संन्यासी हिंस्रक हैले विषम नरक
लोभ, मोह, काम, क्रोध, येबा करे त्याज्य। एमत संन्यासी हय संसारेते पूज्य ३०
संन्यासी हइया क्रोध कर अकस्मात्। कि दोषेते कुक्कुरे करिले दण्डाघात
योड़ हाते कहे तबे संन्यासी ब्राह्मण। दोषादोष आमार शुनह नारायण ३१
सारादिन सन्ध्या जप करि गङ्गा तीरे। सन्ध्या काले भिक्षा-आशे येताम नगरे
क्षुधानले पुड़े-अङ्ग फिरि मागि भिक्षे। पथ युड़ि शुये आछे कुक्कुर सम्मुखे ३२
पथ छाड़ बलि डाक देइ उच्चैः स्वरे। कपटे रहिल, पथ ना छाड़िल मोरे
एक चक्षे निद्रा याय आर चक्षे चाय। क्रोधे ज्व'लि दण्डाघात करेछि माथाय ३३

संन्यासी से ही पूछें। श्रीराम ने कहा, सभासदगण, आप लोगों ने कुत्ते का उत्तर सुना। अब उस सन्यासी को शीघ्र मेरे सम्मुख ले आयें ॥ २६ ॥ सभी जन इसके भले-बुरे का विचार करें कि वह व्यक्ति संन्यासी होकर भी जीवहिंसा किसलिए करता है? राम के आदेश से दूत तुरंत चल पड़ा, कुत्ते ने उसके साथ जाकर संन्यासी को दिखला दिया ॥ २७ ॥ उसके हाथ में कमंडल, कंधे पर मृग-चर्म था। संन्यासी को देखकर दूत ने नमस्कार किया। दूत संन्यासी को लेकर लक्ष्मण के वहाँ पहुँचा। लक्ष्मण ने संन्यासी को राम के निवास स्थान पर पहुँचा दिया ॥ २८ ॥ रघुनाथ ने संन्यासी से पूछा— तुम स्वधर्म छोड़कर जीव-हिंसा किसलिए कर रहे हो? अधर्म करने पर तो नरकवास होता है। तुम्हारा अंग क्रोध से परिपूर्ण है, यह कैसा संन्यास है? ॥ २९ ॥ पर-निन्दा, पर-हिंसा परम-पाप है। संन्यासी हिंसक हो तो उसे विषम नरक मिलता है। जो व्यक्ति लोभ, मोह, काम, क्रोध आदि त्याग देता है, ऐसा संन्यासी ही जगत् में पूजनीय होता है! ॥ ३० ॥ संन्यासी होकर तुम अकस्मात् क्रोध करते हो। किस दोष से तुमने कुत्ते पर लाठी से प्रहार किया? तब उस संन्यासी ब्राह्मण ने हाथ जोड़कर कहा— हे नारायण, मेरा दोष-अदोष सुनिये ॥ ३१ ॥ मैं दिन भर गंगा के तट पर संध्या और जाप करता रहता हूँ। संध्याकाल में भिक्षा की आशा से नगर में जाया करता था। मेरे अंग क्षुधा रूपी अग्नि से जल रहे थे, मैं घूम-फिरकर भीख माँग रहा था। यह कुत्ता मार्ग को घेरकर सम्मुख सोया हुआ था ॥ ३२ ॥ 'मार्ग छोड़ दे' कहकर मैंने ऊँचे स्वर से पुकारा। वह कपट से पड़ा रहा, मेरे लिए मार्ग नहीं छोड़ा। एक आँख बंद कर सो रहा था, दूसरी आँख से देख रहा था। इसी कारण क्रोध से जलकर मैंने

एइ कहिलाम आमि सभार भितरे। ये हय उचित दण्ड करह आमारे
राम वले, सभाखण्ड करह विचार। काहार करिव दण्ड अपराध कार ३४
योड़ हात करि तवे सभाखंड कय। आमादेर बुझि साध्य मत एइ हय
राजपथ नहे कारो राज-अधिकार। उत्तम अधम पथे चले त संसार ३५
यदि शीघ्र काज थाके, यावे एक पाशे। संन्यासीर हइल दोषी आपनार दोषे
श्रीराम वलेन तवे शुन सभाखण्ड। धर्म्मशास्त्रे संन्यासीर कि करिव दण्ड ३६
योड़ हाते रघुनाथे वले सभाखण्ड। गङ्गास्नान माना करा संन्यासीर दण्ड
कुक्कुर उठिया वले सभार भितरे। कदाचित् दण्ड नाहि कर संन्यासीरे ३७
आमार वचने किछु कर पुरस्कार। कालिञ्जरे संन्यासीरे देह राज्यभार
कुक्कुरेर कथा शुनि सभाजन हासे। संन्यासीरे राजा करे कालिञ्जर-देशे ३८
राज्य पेये संन्यासी मातङ्ग पृष्ठे चड़े। राजदण्डे संन्यासीर ऐश्वर्य्य ये बाड़े
आनन्दे संन्यासी याय कालिञ्जर देशे। संन्यासीर वेश देखि सर्व्वलोके हासे ३९
परिधान कौपीन मस्तके छत्रदण्ड। रघुनाथे जिज्ञासा करेन सभाखण्ड
आनिले संन्यासी धरि दण्ड करिवारे। कि कारणे राज्य पद दिले संन्यासीरे ४०
राम वले, राज्य दिनु कुक्कुर-वचने। इहार ये वृत्तान्त कुक्कुर भाल जाने
इहा शुनि सभाखण्ड जिज्ञासे कुक्कुरे। कुक्कुर विनय करि कहिछे सत्वरे ४१

उसके सिर पर डंडे से प्रहार किया था ।। ३३ ।। मैंने सभा में यह बात बता दी। अब जो उचित दंड हो, मुझे दें। श्रीराम ने कहा— सभासदो, विचार करें। अपराध किसका है, दंडित किसे किया जाये ? ।। ३४ ।। सभासदों ने हाथ जोड़कर कहा— हमारा बुद्धि-साध्य विचार यह है, राज-मार्ग पर किसी का राज-अधिकार नहीं होता। संसार भर के लोग चाहे उत्तम हों, या अधम, मार्ग पर चला करते हैं ।। ३५ ।। यदि शीघ्र कोई काम रहे तो एक किनारे से होकर आगे निकल जाना चाहिए। यह संन्यासी अपने दोष के कारण दोषी बना है। श्रीराम बोले— तब सभासदगण, सुनें, धर्मशास्त्र के अनुसार इस संन्यासी को कौन-सा दंड दिया जाये ? ।। ३६ ।। सभासदों ने हाथ जोड़कर रघुनाथ से कहा— गंगास्नान निषेध कर देना ही संन्यासी का दंड होता है। तब कुत्ते ने उस सभा में उठकर कहा— संन्यासी को कोई दंड न दें ।। ३७ ।। मेरे कथनानुसार उसे कुछ पुरस्कार दे दें। इस संन्यासी को कालिंजर में राज्य-भार दे दें। कुत्ते की वात सुनकर सभासदजन हँसने लगे। संन्यासी को कालिंजर देश का राजा बना दिया गया ।। ३८ ।। राज्य पाकर संन्यासी हाथी की पीठ पर चढ़ा। राजदंड पाकर संन्यासी का ऐश्वर्य बढ़ गया। संन्यासी आनन्दपूर्वक कालिंजर देश को चला। संन्यासी का वेश देखकर सब लोग हँसने लगे ।। ३९ ।। उनके पहनावे में कौपीन और मस्तक पर छत्र-दंड था। सभासद रघुनाथ से पूछने लगे— संन्यासी को तो आप दंड देने हेतु पकड़वा मँगाये थे। किस कारण उस संन्यासी को राज-पद दे दिया ।। ४० ।। श्रीरामचन्द्र ने कहा— मैंने उसे कुत्ते के कथनानुसार राज्य दिया है। इसका कारण कुत्ता ही अच्छी तरह

পূর্ব্ব জন্মে কালিঞ্জরে আমি ছিনু রাজা। নিত্য নিত্য করিতাম সদাশিব-পূজা
নীলবর্ণ শিবলিঙ্গ তথা অধিষ্ঠান। রাজা-বিনে অন্য জনে পূজিতে না পান ४२
বিশেষ প্রকারে পূজা করিয়া শঙ্করে। প্রসাদ খাইতে হয় প্রত্যহ রাজারে
রাজার শিবের শাপ আছয়ে এমন। মরিলে কুক্কুর-যোনি না হয় খণ্ডন ४३
কালিঞ্জর দেশে শিব বড়ই নিষ্ঠুর। রাজা ছিনু, এবে আমি হ'য়েছি কুক্কুর
পাইয়া কুক্কুর-দেহ এতেক দুর্গতি। তোমা দরশনে এবে হইবে নিষ্কৃতি ४४
সবে বলে, সন্ন্যাসীর বাড়িল বিষয়। বিষয় এ নহে, প্রভু বড়ই সংশয়
কালিঞ্জরে যেই জন হইবে রাজন্। মরিলে কুক্কুর হবে, না হয় খণ্ডন ४५
কুক্কুর এতেক বলি রামে নমস্কারে। বারাণসী চলিল কুক্কুর ধীরে ধীরে
প্রাণ ত্যজে কুক্কুর করিয়া উপবাস। রাম-দরশনে লাভ হৈল স্বর্গবাস ४६

শত্রুঘ্ন কর্তৃক লবণাসুর-বধ

সমাসনে রঘুনাথ বসিল যেখানে। পাত্র-মিত্র সভাজন আছে বিদ্যমানে
উপনীত লক্ষ্মণ রামের বিদ্যমান। প্রণিপাত করি কহে শ্রীরামের স্থান ১

जानता है। यह सुनकर सभासदों ने कुत्ते से पूछा। कुत्ता तुरंत विनयपूर्वक बोला— ॥ ४१ ॥ मैं पूर्वकाल में कालिंजर का राजा था। मैं नित्य सदाशिव की पूजा किया करता था। वहाँ अधिष्ठित शिवलिंग नील वर्ण का है। राजा के सिवा और कोई उसकी पूजा नहीं कर पाता ॥ ४२ ॥ विशेष प्रकार से शंकर की पूजा कर नित्य राजा को प्रसाद खाना पड़ता है। वहाँ के राजा को शिव का ऐसा शाप है कि मरने पर कुत्ते की योनि मिलने से रोका नही जा सकता ॥ ४३ ॥ कालिंजर देश में शिव बड़े ही निर्मम हैं। मैं वहाँ का राजा था, अब कुत्ता बना हुआ हूँ। कुत्ते का शरीर पाकर इतनी दुर्गति हुई है। अब तुम्हारे दर्शन से मुझे मुक्ति मिलेगी ॥ ४४ ॥ सबने कहा— अब तो संन्यासी का विषय-भोग बढ़ गया। प्रभु, यह विषय-भोग तो नहीं, बड़े संशय का विषय है। कालिंजर में जो राजा होगा, मरने पर वह कुत्ता बनेगा, इसका खंडन नहीं हो सकता! ॥ ४५ ॥ कुत्ते ने यह कहकर रामचन्द्र को नमस्कार किया। वह कुत्ता धीरे-धीरे वाराणसी चला गया। कुत्ते ने उपवास कर अपने प्राण त्याग दिये। श्रीराम के दर्शन से उसे स्वर्ग में निवास प्राप्त हुआ ॥ ४६ ॥

शत्रुघ्न द्वारा लवणासुर का वध

सभासदों के साथ रघुनाथ राज-सभा में बैठे। वहाँ मंत्री, मित्र तथा दरबारी उपस्थित थे। लक्ष्मण रामचन्द्र के सम्मुख आये और प्रणाम कर श्रीराम से कहने लगे ॥ १ ॥ महामुनि भार्गव गंगा-तट पर रहते हैं। वे मुनि आपके दर्शन हेतु द्वार पर आये हुए हैं। श्रीराम

महामुनि भार्गव वैसेन गङ्गातीरे। तोमा दरशने मुनि आइलेन द्वारे
राम कहे, झाट आन, द्वारे कि कारण। वड़भाग्य आजि मम मुनि दरशन २
श्रीरामेर आज्ञा पेये लक्ष्मण-सत्वर। सशिष्य मुनिरे आने रामेर गोचर
नमस्कार करि राम वन्दिला चरण। पाद्य-अर्घ्य दिया दिला वसिते आसन ३
भार्गव वलेन, राम, कर अवधान। महादुःख निवेदिते आसि तव स्थान
पूर्व्वे राजगणे दिनु यत यत भार। राजगण पालिल आमार अङ्गीकार ४
त्रिभुवन राखिले हे मारिया रावण। रावण हइते एक आछये दुर्ज्जन
सत्ययुगे छिल मधु दैत्येर प्रधान। हिरण्यकशिपु-पुत्र महावलवान् ५
सदाशिव प्रिय भक्त दैत्य महावल। शिवेर वरेते जिनेछिल भूमण्डल
जाठा एक शिव तोरे दियाछेन दान। जाठार तेजेर कथा कि क'व वाखान ६
मन्त्र पड़ि मधुदैत्य जाठा यदि एड़े। जाठा मुखे त्रिभुवन भस्म ह'ये उड़े
मधुपुत्र हइल लवण महावल। जिनिल जाठार तेजे पृथिवी-मंडल ७
कुम्भनसी-गर्भे जन्म रावण-भागिने। ताहार समान वीर नाहि त्रिभुवने
महादुष्ट लवण से मथुराते घर। जन्मावधि महापाप करे निरन्तर ८
महावीर मधुदैत्ये हइले पतन। ताहार से जाठागाछ पाइल लवण
लवण जाठार तेजे जिने त्रिभुवन। लवणे मारिते युक्ति करह एखन ९

बोले, उन्हें शीघ्रता से ले आओ, वे द्वार पर क्यों रुके हैं? यह मेरा वड़ा सौभाग्य है कि आज उन मुनि का दर्शन मिला ॥ २ ॥ श्रीराम की आज्ञा पाकर लक्ष्मण तुरंत मुनि को उनके शिष्यों-सहित राम के सम्मुख ले आये। रामचन्द्र ने नमस्कार कर मुनि की चरण-वंदना की। उन्हें पाद्य-अर्घ्य देकर बैठने को आसन दिया ॥ ३ ॥ भार्गव बोले, रामचन्द्र, सुनिये। हम महादुःख से आपसे यह निवेदन करने आये हैं। पहले के राजाओं को हमने जितने भार दिये, उन सब राजाओं ने हमारे वचन का पालन किया ॥ ४ ॥ आपने रावण को मारकर त्रिभुवन की रक्षा की। पर रावण की अपेक्षा भी एक और दुर्जन है। सत्य-युग में मधु, दैत्यों में प्रधान था। वह हिरण्यकशिपु का पुत्र महावलवान् था ॥ ५ ॥ वह महावली दैत्य सदा शिव का प्रिय भक्त था। शिव के वर से उसने भूमंडल को जीत लिया था। शिव ने उसे एक शूल प्रदान किया है। उस शूल के तेज की बात का वर्णन भला क्या करूँ? ॥ ६ ॥ मंत्र पढ़कर यदि मधुदैत्य उस शूल को छोड़े तो उसकी नोक से त्रिभुवन भस्म होकर उड़ जाये। उसी मधु दैत्य का पुत्र महावली लवण हुआ है। उसने उस शूल के तेज से पृथ्वी-मंडल को जीत लिया है ॥ ७ ॥ उसका जन्म कुंभीनसी के गर्भ से हुआ है, वह रावण का भांजा है। उसके जैसा वीर त्रिभुवन में कोई नहीं है। मथुरा में रहनेवाला वह लवण महादुष्ट है। वह जन्म से ही निरन्तर महापाप करता रहा है ॥ ८ ॥ महावीर मधुदैत्य के मरण के पश्चात् उसका वह शूल लवण को मिला। लवण भी उस शूल के तेज से त्रिभुवन जीत चुका है। अब आप लवण को मारने का उपाय कीजिये ॥ ९ ॥ यदि लवण शूल लेकर युद्ध करने आये तो

जाठा लइया लवण आसे यदि रणे। ताहारे रणेते जिने, नाहि त्रिभुवने
लवणेर सने हवे दुर्ज्जय संग्राम। तार कथा कहि किछु शुनह श्रीराम १०
मान्धाता नामेते राजा जन्म सूर्य्यवंशे। अयोध्याय राज्य करे, त्रिभुवन शासे
इन्द्रे जिनिबारे गेल अमर-भुवन। भये इन्द्र पलाइया हैल अदर्शन ११
मान्धातार प्रति तबे कहे देवगणे। अर्द्धराज्य भोग कर पुरन्दर सने
धनेते अर्द्धेक लह ए अमरावती। इन्द्रेरे सहित याह करिया पिरीत १२
मान्धाता बलेन, चाहि करिबारे रण। इन्द्रे जिनि स्वर्ग लब शुन देवगण
राखिब पौरुष आमि पुरन्दरे जिनि। त्रिभुवने घोषे येन ए यश-काहिनी १३
देवगणे ल'ये देवराज युक्ति करे। बिना-युद्धे पाठाइब यमेर दुयारे
इन्द्र बले, शुनह मान्धाता महाराज। पृथिवी जिनिते नार बीरेर समाज १४
पृथिवी जिनिते येइ राजा नाहि पारे। लज्जा नाहि, आसियाछ स्वर्ग जिनिबारे
आछये लवण दैत्य, से बड़ कर्कश। राक्षसी-गर्भेते जन्म जातिते राक्षस १५
निष्कण्टके राज्य करे मथुरार देशे। तारे जिनि तबे स्वर्ग जिन आसि शेषे
इन्द्रेर वचने लाज पाइया मान्धाता। मनोदुःखे म्रियमान करे हेंट माथा १६
स्वर्ग छाड़ि आइल लवणे जिनिबारे। दूत पाठाइल से लवणे जानाबारे
त्वरा करि गेल दूत लवण-गोचरे॥ मान्धाता राजन् आसे तोमा जिनि बारे १७

उसे रण में जीत सके, ऐसा कोई व्यक्ति त्रिभुवन में नहीं है। लवण के संग दुर्जय संग्राम होगा। हे रामचन्द्र, उसके बारे में कुछ कथा सुनाता हूँ, सुनिये! ॥ १० ॥ सूर्यवंश में उत्पन्न मान्धाता नाम का राजा अयोध्या में राज करता, त्रिभुवन पर शासन करता था। वह इन्द्र को जीतने हेतु देवलोक में गया। भय के मारे इन्द्र भागकर ओझल हो गया ॥ ११ ॥ तब देवताओं ने मान्धाता से कहा, तुम पुरन्दर के साथ आधा राज्य भोगो। धन में आधा यह अमरावती ले लो और इन्द्र से मित्रता करके जाओ ॥ १२ ॥ मान्धाता बोला— मैं तो युद्ध करना चाहता हूँ। देवगण, सुनो! मैं इन्द्र को जीतकर स्वर्ग ले लूंगा। मैं पुरन्दर को जीतकर अपना पौरुष दिखा देना चाहता हूँ, ताकि त्रिभुवन यह कीर्ति-कथा घोषित करता रहे ॥ १३ ॥ तब इन्द्र ने देवताओं के साथ परामर्श किया। हम युद्ध किये बग़ैर इसे यम के दरवाजे भेज देंगे। इन्द्र ने कहा, मान्धाता महाराज, सुनिये! पृथ्वी पर रहनेवाले वीरों के समाज को भी तुम जीत नहीं सके हो ॥ १४ ॥ जो राजा पृथ्वी को जीत नहीं सकता, वही तुम हो! तुम्हें लज्जा नहीं कि स्वर्ग जीतने हेतु आये हो? लवण नाम का एक बड़ा कठोर दैत्य है। राक्षसी के गर्भ से वह जन्मा है, जाति से भी वह राक्षस है ॥ १५ ॥ वह मथुरा देश में निष्कंटक राज्य करता है। पहले उसे जीत लो, तब आकर स्वर्ग को जीतना! इन्द्र के वचन से मान्धाता लज्जित हुआ, मनोवेदना से म्रियमाण हो उसने सिर झुका लिया ॥ १६ ॥ स्वर्ग छोड़कर वह लवण को जीतने के लिए आया। उसने लवण को सूचना देने हेतु दूत भेजा। दूत शीघ्रता से लवण के पास गया। बोला— राजा मान्धाता तुम्हें जीतने के लिए आ रहे

शुनिया लवण एत कुपित हइल। लवणेर क्रोध देखि दूत चलि गेल
दूतेर बिलम्ब देखि मान्धाता भूपति। युझिवारे गेल वीर कटक-संहति १८
मान्धातार तेज येन सूर्य्येर किरण। मान्धातार तेज देखि रुषिल लवण
मान्धातार सेनापति करे मार मार। लवण उपरे करे बाण-अवतार १६
जाठा हाते करिया लवण वीर रोषे। एड़िलेक जाठागाछ मान्धाता उद्देशे
रथ अश्व कटक जाठार तेजे पुड़े। मान्धाता जाठार तेजे भस्म ह'ये उड़े २०
पुनर्व्बार जाठा गेल लवणेर हाते। पड़िल मान्धाता, यतराजा भये चिन्ते
पूर्व्बपुरुष तोमार मान्धाता भूपति। लवण मान्धाता मारि राखिल खेयाति २१
कत शत राजगणे करिल सहार। लवणे मारिया राम, कर प्रतिकार
शुनिया मुनिर कथा भाइ तिन जन। योड़ हाते दाण्डाइल रामेर सदन २२
योड़ हाते कहेन ठाकुर शत्रुघन। तुमि भाइ लक्ष्मण करेछ बहुरण
आमारे करह आज्ञा मारिते लवण। लवणे मारिले यश घोषे त्रिभुवन २३
शत्रुघ्नेर बचने रामेर हैल हास। लवणे मारिते राम दिलेन आश्वास
शत्रुघन चलिलेन मारिते लवण। कहेन भार्गव मुनि, शुन शत्रुघन २४
कुड़ि हाजार मत्त हस्ती मारि खाय दिने। लवणेर सङ्गे युद्ध, थेक सावधाने
एतबलि भार्गव गेलेन निज स्थान। भ्रातृगणे ल'ये राम करे अनुमान २५

हैं ॥ १७ ॥ यह सुनकर लवण अत्यधिक क्रोधित हो उठा। लवण का क्रोध देख दूत वहाँ से चला गया। दूत को (लौटने में) विलम्ब होता देख वीर राजा मान्धाता अपनी सेना-सहित लड़ने चला ॥ १८ ॥ मान्धाता का तेज सूर्य-किरणों-सा था। मान्धाता का तेज देख लवण कुपित हो उठा। मान्धाता के सेनापति 'मार, मार,' कहते हुए लवण पर वाणों की वर्षा करने लगे ॥ १९ ॥ शूल हाथ में ले वीर लवण कुपित हो उठा और मान्धाता पर निशाना साधकर उसने शूल फेंका। उस शूल के तेज से मान्धाता के रथ, घोड़े, सेनाएँ सब जल गये। मान्धाता भी शूल के तेज से भस्म होकर उड़ गया ॥ २० ॥ इसके पश्चात् वह शूल पुनः लवण के हाथ चला गया। मान्धाता मारा गया, देखकर सभी राजा भय के मारे चिन्तित हो उठे। हे रामचन्द्र, वह राजा मान्धाता तुम्हारे पूर्वज थे। लवण ने मान्धाता को मारकर अपनी ख्याति रख ली ॥ २१ ॥ उसने कई सौ राजाओं का संहार किया है। रामचन्द्र, लवण को मारकर इसका प्रतिकार करें। मुनि की बात सुनकर तीनों भाई हाथ जोड़कर राम के सम्मुख खड़े हुए ॥ २२ ॥ हाथ जोड़कर शत्रुघ्न ने कहा— आप और भाई लक्ष्मण ने बहुत से युद्ध किये हैं। अब मुझे लवण को मारने की आज्ञा दें। लवण को मारने पर त्रिभुवन में यश फैलेगा ॥ २३ ॥ शत्रुघ्न के वचनों पर रामचन्द्र हँसने लगे। लवण को मारने हेतु उन्होंने शत्रुघ्न को आज्ञा दी। शत्रुघ्न लवण को मारने चले। तब मुनि भार्गव ने कहा— शत्रुघ्न, सुनो ॥ २४ ॥ लवण दिन में बीस हजार मतवाले हाथियों को मारकर खा जाता है, अतः लवण के साथ युद्ध करने में सावधान रहना। यह कहकर भार्गव अपने स्थान पर चले गये।

राम बले, शत्रुघने करिलाम राजा। लवणे मारिया पाल मथुरार प्रजा
लवणे मारिया तुमि ह'ये अधिकारी। प्रजार पालन कर मथुरा-नगरी २६
शत्रुघ्न बलेन, प्रभु कर अवधान। ज्येष्ठ सत्त्वे कनिष्ठेर ए नहे विधान
श्रीराम बलेन, शुन, भाइ शत्रुघन। तोमाते आमाते भेद नहे कदाचन २७
चलिलेन शत्रुघन मारिते लवण। रामे प्रदक्षिण करि बन्दिला चरण
विष्णु अस्त्र छिल तांर अस्त्रेर प्रधान। लवणे मारिते शत्रुघने दिला दान २८
एक लक्ष रथ चले, एक लक्ष हाती। एक लक्ष घोड़ा चले पवनेर गति
लवणे मारिते वीर करिल साजनि। बाद्यकर चले सङ्गे सात अक्षौहिणी २९
लिखने ना याय, ठाट कटक अपार। शुनिया बाद्येर शब्द लागे चमत्कार
हइल आषाढ़ गत, श्रावण प्रवेशे। गेलेन यमुना-पारे बालमीकिर देशे ३०
शत्रुघन बन्दिलेन मुनिर चरण। शत्रुघने देखि मुनि हरषित-मन
शत्रुघन बले, मुनि, करि निवेदन। रामेर आदेशे याइ बधिते लवण ३१
कटक-सहित आमि आइनु ए-देशे। अद्य-रात्रि तवाश्रमे बञ्चिब हरिषे
एतेक शुनिया मुनि हरषित-मन। ब्रह्ममन्त्र वेदध्वनि करिला तखन ३२
शत्रुघने कराइला उत्तम भोजन। जानिला लवण शीघ्र हइबे निधन
मुनि आर शत्रुघन दोंहे कय कथा। हेन काले दुइ पुत्र प्रसविला सीता ३३

श्रीरामचन्द्र भाइयों को साथ ले विचार करने लगे ॥ २५ ॥ श्रीराम ने कहा— मैं शत्रुघ्न को (मथुरा का) राजा बना रहा हूं, तुम लवण को मारकर मथुरा की प्रजा का पालन करते रहो। लवण को मारकर तुम वहाँ के अधिकारी बनो, और मथुरा नगरी की प्रजा का पालन करो ॥ २६ ॥ शत्रुघ्न बोले— प्रभु, सुनिये। बड़े भाई के रहते छोटे भाई के लिए ऐसा विधान करना उचित नहीं है। श्रीराम बोले— भाई शत्रुघ्न, सुनो, तुममें-मुझमें कदापि कोई भेद नहीं है ॥ २७ ॥ तब शत्रुघ्न लवण को मारने चले। उन्होंने रामचन्द्र की प्रदक्षिणा कर उनकी चरण-वंदना की। रामचन्द्र के पास अस्त्रों में श्रेष्ठ विष्णु-अस्त्र था। लवण को मारने-हेतु उसे उन्होंने शत्रुघ्न को दान किया ॥ २८ ॥ शत्रुघ्न के साथ एक लाख रथ चले, एक लाख हाथी चले, पवन जैसी गति वाले एक लाख घोड़े चले। वीर शत्रुघ्न ने लवण को मारने हेतु सैन्य-सज्जा की। उनके साथ सात अक्षौहिणी बाजे बजानेवाले चले ॥ २९ ॥ वह अपार सेना-वाहिनी कैसी थी, यह लिखा नहीं जा सकता। बाजों का नाद सुनकर बड़ा विस्मय होता था। आषाढ़ बीत चुका था। सावन का महीना आरंभ हो गया था। शत्रुघ्न यमुना-तट पर वाल्मीकि के देश में पहुँचे ॥ ३० ॥ शत्रुघ्न ने मुनि की चरण-वन्दना की। शत्रुघ्न को देख मुनि का मन हर्षित हुआ। शत्रुघ्न बोले, मुनिवर, मैं आपसे निवेदन करता हूँ। मैं रामचन्द्र के आदेश से लवण को मारने चला हूँ ॥ ३१ ॥ मैं सेना-समेत इस देश में आया हूँ। आज की रात आपके आश्रम में हर्षपूर्वक बिताना चाहता हूं। यह सुनकर मुनि मन में बड़े हर्षित हुए। उन्होंने तब ब्रह्म-मंत्र और वेद-ध्वनि का उच्चारण किया ॥ ३२ ॥ उन्होंने शत्रुघ्न

शिष्यगण कहे आसि मुनिर साक्षाते। दुइ पुत्र यमज प्रसव कैला सीते
मुनि बले, गोपनेते राख शिष्यगण। एइ कथा येन नाहि शुने शत्रुघन ३४
मतान्तरे आछे इहा, शुन सर्व्वजन। यमुनार तीरे मुनि करेन तर्पण
मुनिके संवाद देय शिष्य एक जन। प्रसव करिल सीता यमज-नन्दन ३५
आनन्दित ह'ये मुनि कहिलेन शिष्ये। शिशु के माखाते बल लव आर कुशे
शुनिया मुनिर कथा, कहिल सीताय। हरषित ह'ये सीता पुत्रेरे माखाय ३६
स्नान करि मुनिराज आसिलेन घरे। हासि कहे तव पुत्रे देखाओ आमारे
लव आर कुश नाम मुनिवर राखे। लव माखि लव हैल, कुश कुशे मेखे ३७
दिने दिने बाड़े दुइ शिशु महारथा। एखन ये कहिब लवण वध-कथा
एतेक बलिया मुनि सानन्द-हृदय। शत्रुघन मुनि दोंहे कथा वार्त्ता हय ३८
कथोपकथने दोंहे वञ्चिला रजनी। प्रभाते उठिया याय करिया साजनि
मुनि प्रणमिया चले शत्रुघन वीर। मार्गवेर वाटि गेल यमुनार तीर ३९
मुनिरे प्रणमि करे युक्ति समुचित। मुनि बले, सु-मन्त्रणा करिब विहित
लवण नामेते दैत्य संग्रामे दुर्ज्जय। किरूपे मारिब तारे शत्रुघन कय ४०

को उत्तम भोजन करवाया। वे समझ गये कि लवण का शीघ्र निधन होनेवाला है। मुनि और शत्रुघ्न दोनों वार्त्ता करने लगे। उसी समय देवी सीता ने दो जुड़वे पुत्रों को जन्म दिया ॥ ३३ ॥ शिष्यों से यह समाचार सुनकर मुनि बोले, शिष्यो, यह गुप्त ही रखो ताकि यह बात शत्रुघ्न सुन न पाये ॥ ३४ ॥ सभी जन सुनें— एक दूसरा मत यह भी है कि मुनि वाल्मीकि यमुना के तट पर तर्पण कर रहे थे। उसी समय मुनि के एक शिष्य ने समाचार दिया कि सीता ने जुडवे पुत्रों को जन्म दिया है ॥ ३५ ॥ मुनि ने आनन्दित होकर शिष्यों से कहा— उन शिशुओं को क्रमशः 'लव' (सनई का अगला हिस्सा) तथा 'कुश' (सनई का निचला हिस्सा) से मार्जन करने को कहो मुनि की बात सुन शिष्यों ने जाकर सीता से कहा— सीता ने हर्षित हो पुत्रों को (उसी प्रकार से) मार्जन कराया ॥३६॥ स्नान कर चुकने के पश्चात् मुनिवर घर लौटे। उन्होंने हँसकर सीता से कहा— अपने पुत्रों को मुझे दिखाओ। मुनि ने उनके नाम 'लव' और 'कुश' रखे। लव से मार्जन करने के कारण 'लव' नाम हुआ। कुश से मार्जन करने के कारण 'कुश' नाम पड़ा ॥ ३७ ॥ वे दोनों महारथी शिशु दिनोंदिन बढ़ते गये। इसके पश्चात् अब लवण-वध की कथा कह रहा हूँ। शिष्यों से वह बात कहकर मुनि का हृदय बड़ा आनन्दित हुआ। शत्रुघ्न और मुनि वाल्मीकि दोनों वार्त्ता करने लगे ॥ ३८ ॥ दोनों में बातें करते रात बीत गयी। शत्रुघ्न प्रातःकाल उठकर सेना सजाकर चल पड़े। वीर शत्रुघ्न मुनि को प्रणाम कर चल पड़े और यमुना के किनारे भार्गव के निवास पर पहुँचे ॥ ३९ ॥ वे मुनि को प्रणाम कर लवण के वध का समुचित उपाय सोचने लगे। मुनि बोले— मैं तुम्हें यथोचित सु-मंत्रणा दूँगा। शत्रुघ्न ने पूछा, लवण नाम का वह दैत्य संग्राम में दुर्जेय है, उसे मैं किस तरह से मार सकूँगा ? ॥ ०४ ॥

मुनि बले, अतिशय दुष्ट से लवण। कहि हित उपदेश, शुन शत्रुघन
रजनी प्रभाते यावे मृगेर उद्देशे। आपना पासरे बेठा भक्षणेर आशे ४१
जाठा गाछ थुये याय शिव पूजा-घरे। फिरे आसे निबासे दिवस द्वि-प्रहरे
हित उपदेश बलि, शुनह सत्वर। मृगयार छले बेड़ि रह तार घर ४२
कोन मते जाठा गाछ ना पाय राक्षस। लबण मारिते तबे करह साहस
जाठा बन्दी करिते ना पार शत्रुघन। ना हबे तोमार शक्ति मारिते लबण ४३
शत्रुघन पाइया एतेक उपदेश। लबण मारिते याय मथुरार देश
प्रभाते लबण गेल करिते आहार। शत्रुघन ससैन्ये यमुना हैल पार ४४
जाठागाछ-घर गिया कटकेते वेड़े। मृगभार स्कन्धेते लबण आसे घरे
सैन्येते सकल पथ रहिल आगुले। कुपिया लबण बीर मृगभार फेले ४५
मधु-दैत्य-पुत्र सेइ मथुराते थाना। विक्रमे नाहिक अन्त, राबण-भागिना
लबण बले, मिछा युड़िस् धनुर्बाण। तोर मत कत शत ल'येछि पराण ४६
कहिछेन शत्रुघन, लवण बचने। काटिब मस्तक तोर एइ धनुर्बाणे
मामा तोर बीर छिल सेइ अहङ्कार। आमार भ्रातार हाते ताहार संहार ४७

मुनि बोले, वह लवण, अत्यन्त दुष्ट है, मैं हित का उपदेश देता हूँ, शत्रुघ्न सुनो। रात बीतते ही वह मृगों को मारने के लिए जाता है। भक्षण की आशा से वह दुष्ट अपनी सुध-बुध खो बैठता है ॥ ४१ ॥ उस समय वह अपने उस शूल को शिव के पूजा-मदिर में रख जाता है और दिन के दोपहर को वह अपने निवास-स्थान में लौट आता है। मैं तुम्हें कल्याण का उपदेश दे रहा हूँ, तुरंत सुन लो। मृगया के बहाने उसके घर को घेर लो ॥ ४२ ॥ किसी भी प्रकार से जैसे वह शूल वह राक्षस न पा सके। (ऐसा करने पर ही) लवण को मारने का साहस करना। शत्रुघ्न, यदि उसके शूल को बंदी न कर सका, तो लवण को मारने की शक्ति तुममें नही होगी ॥ ४३ ॥ मुनि का ऐसा उपदेश पाकर शत्रुघ्न लवण को मारने हेतु मथुरा-देश चले। जब प्रातःकाल लवण भोजन करने चला गया तभी शत्रुघ्न सेना-सहित यमुना पार हुए ॥ ४४ ॥ जहाँ वह शूल रखा हुआ था, उस घर को जाकर सेना ने घेर लिया। मृगों का भार कधों पर उठाये लवण घर आ रहा था। शत्रुघ्न की सेना ने सारा मार्ग घेर लिया। तब कुपित होकर वीर लवण ने मृगों का भार फेंक दिया ॥ ४५ ॥ वह मधु दैत्य का पुत्र मथुरा में निवास करता था। रावण के उस भांजे के पराक्रम का कोई अन्त नही था। लवण बोला, तू धनुष-बाण बेकार ही चढ़ा रहा है। तेरे जैसे कितने सौ व्यक्तियों के प्राण हमने ले लिये हैं ॥ ४६ ॥ शत्रुघ्न ने लवण के वचन सुनकर कहा— इस धनुष-बाण से मैं तेरा मस्तक काट डालूंगा। तेरा मामा वीर था, यही तेरा अहंकार है। हमारे भाई रामचन्द्र के हाथ उसका संहार हो गया ॥ ४७ ॥ मै उसी राम का भाई हूँ। तेरी बातों से क्या मैं भटक सकता हूँ। मैं तेरा सिर काट कर श्रीराम को उपहार दूंगा। मनुष्यों और गायों को खाकर तेरा

से रामेर भाइ आमि, तोर बाक्ये भुलि । तोर माथा काटिया श्रीरामे दिव डालि
खाइया मानुष गरु पूर्ण हैल काल । तोरे मारि बसाब मथुरा चाले चाल ४८
लवण बलिछे क्रोधे, शुन शत्रुघन । तोरे मारि घुचाइब मायेर क्रन्दन
मामारे मारिल तोर ज्येष्ठ सहोदर । मायेर क्रन्दन शुनि ज्वलि निरन्तर ४९
सेइ तापे आजि तोर करि सर्व्वनाश । मरिते मानुष वेटा एलि मोर पाश
तोर वंशे यत राजा तृण हेन वासि । मान्धातारे पोड़ाये करेछि भस्मरासि ५०
शत्रुघन कहेन, एसेछि सेइ कोपे । तोर माथा काटिब, राखिबे कार बापे
मेरेछिस् सूर्य्यवंशे मान्धाता भूपति । तार शोधे पाठाइब यमेर वसति ५१
रामेर कनिष्ठ आमि बीर अवतार । तोरे मारि शोधिब वंशेर यत धार
शत्रुघ्नेर वचनेते रुषिल लवण । मानुष वेटार कथा स'ब कत क्षण ५२
हाते हात चापि करे दन्त कड़मड़ि । शीघ्र गति चलिल आनिते जाठा-वाड़ि
लवणेर मन बुझि शत्रुघन हासे । मने कि करिस वेटा, फिरे यावि बासे ५३
शुनिया लवण बीर सिंह हेन गर्ज्जे । गर्ज्जन करिया आसे युझिबार साजे
लवण पाथर गाछ सघने उपाड़ि । शत्रुघ्नेन माथे मारे दु'हातिया वाड़ि ५४
सेइ घाये शत्रुघन हैल अचेतन । भयङ्कर शब्दे लवण करिछे गर्ज्जन
शत्रुघन पड़े सैन्य करे हाहाकार । घरे चले लवण लइया मृग भार ५५

काल आ गया । तुझे मार कर मैं पुरी को एक छत से दूसरा छत लगाकर (याने बहुत अधिक घना नगर) बसाऊँगा ॥ ४८ ॥ लवण क्रोध से बोला— शत्रुघ्न, सुन, तुझे मारकर मैं माँ की रुलाई मिटा दूँगा । तेरे बड़े भाई ने मामा को मार डाला है । मैं माँ की रुलाई सुनकर निरंतर जलता रहता हूँ ॥ ४९ ॥ उसी वेदना से आज तेरा सर्वनाश कर डालूँगा । अरे नगण्य मनुष्य ! तू मरने के लिए मेरे पास आया है । तेरे वंश में जितने राजा थे, उन्हें मैं तृण-जैसा समझता हूँ । मैंने मान्धाता को जलाकर भस्म कर डाला है ॥ ५० ॥ शत्रुघ्न बोले, मैं तो उसी क्रोध के मारे आया हूँ । तेरा सिर काट डालूँगा । कौन बाप तुझे बचा सकेगा ? तूने सूर्यवंशी राजा मान्धाता को मारा है । उसका प्रतिशोध लेने हेतु मैं तुझे यमलोक भेज दूँगा ॥ ५१ ॥ मैं राम का छोटा भाई वीर-अवतार हूँ । तुझे मारकर अपने वंश का सारा ऋण चुका दूँगा । शत्रुघ्न के वचन से लवण क्रोधित हो उठा । मैं भला इस नगण्य मनुष्य की बात कब तक सहता रहूँ ? ॥ ५२ ॥ हाथ से हाथ दबाकर दाँत पीसता हुआ वह शीघ्रता से भाला लाने चल पड़ा । लवण की मनोभावना समझकर शत्रुघ्न हँस पड़े । अरे दुष्ट, तू क्या मन में यह सोच रहा है कि लौटकर घर पहुँच सकेगा ! ॥ ५३ ॥ यह सुनकर वीर लवण सिंह की भाँति गर्जना करने लगा । गरजता हुआ वह युद्ध के लिए तैयार होकर आया । बार-बार पत्थर, पेड़ आदि उखाड़कर वह शत्रुघ्न के सिर पर दोनों हाथों से प्रहार करने लगा ॥ ५४ ॥ उसके उस प्रहार से शत्रुघ्न अचेत हो गये । लवण भयंकर नाद से गर्जना करने लगा । शत्रुघ्न के गिर जाने पर सेना हाहाकर कर उठी । लवण मृगों का भार उठाकर घर को चल पड़ा ॥ ५५ ॥

हेन काले उठिल से शत्रुघ्न दुर्ज्जय। धनुक पातिया युझे, नाहि करे भय
बिष्णु-बाण शत्रुघन युड़िल धनुके। स्थाबर जङ्गम मेरु दिग्पाल काँपे ५६
उलकापात हय येन सेइ बिष्णु बाणे। प्रलय हइया देखि भावे देवगणे
आचम्बिते सृष्टि-नाश हय कि कारण। शुनिया प्रलय शब्द काँपे देबगण ५७
कोन युगे हेन शब्द -कभु नाहि शुनि। प्रलय कि हइल निश्चित नाहि जानि
ब्रह्मा बले, देवगण, ना करिह डर। लबण बधिते गर्ज्जे शत्रुघ्नेर शर ५८
सृजिलेन बाण बिष्णु आपनार हाते। मैल मधुकैटभादि सेइ बाणाघाते
बाणेर उपरे बिष्णु ह'न अधिष्ठान। सेइ बाणाघाते कारो नाहि रहे प्राण ५९
बिष्णु-बाण उपरेते ब्रह्म-अग्नि ज्वले। से बाण नाहिक ब्यर्थ हय कोन काले
बिष्णु-बाण शत्रुघन एड़िल लबणे। शून्य मार्गे थाकिया देखेन देबगणे ६०
सिंहनाद करि डाके बीर शत्रुघन। कोथा आछ, ओरे बेटा, देह आसि रण
बाणेर गर्ज्जन शुनि लबणेर डर। कहितेछे शत्रुघने त्रासित अन्तर ६१
क्षणेक क्षमह मोरे, खाइ भक्ष्य-पानि। बाहुड़िया आसि युद्ध करिब एखनि
मने भावे, जाठा आछे देवपूजा-घरे। लइब सबार प्राण जाठार प्रहारे ६२
ताहार मनेर कथा बुझि-शत्रुघन। कहिते लागिल बीर करिया तर्ज्जन
करिबि भोजन तुइ, आमि उपबासी। उपबासे दोँहे युद्ध आमि भाल बासि ६३

उसी समय दुर्जेय शत्रुघ्न उठ पड़े। वे धनुष लेकर निर्भयता से लड़ने लगे। शत्रुघ्न ने अपने धनुष पर विष्णु-बाण चढ़ाया। उससे स्थावर-जंगम मेरु-दिग्पाल काँपने लगे ॥ ५६ ॥ उस विष्णु-बाण से मानो उल्कापात होने लगा। उसे देख देवगण सोचने लगे मानो प्रलय हो रही है। अकस्मात् सृष्टि के इस विनाश का कारण क्या है? बाण का प्रलयंकर शब्द सुनकर देवगण काँपने लगे ॥ ५७ ॥ किसी भी युग में ऐसा नाद कभी सुना नहीं गया था। क्या प्रलय हो गया है, यह निश्चित रूप से पता नहीं। ब्रह्मा बोले, देवगण, डरो मत! लवण का वध करने हेतु यह शत्रुघ्न का बाण गरज रहा है ॥ ५८ ॥ इस बाण की सर्जना विष्णु ने अपने हाथों किया है। मधु-कैटभ आदि दैत्य उसी बाण के प्रहार से मारे गये हैं। उस बाण पर विष्णु अधिष्ठित रहते है। उस बाण के प्रहार से किसी के प्राण नहीं बचते ॥ ५९ ॥ विष्णु-वाण के ऊपर ब्रह्म-अग्नि जलती है। वह बाण किसी काल में व्यर्थ नहीं होता। शत्रुघ्न ने वह विष्णु-बाण लवण की ओर छोड़ दिया। देवगण आकाश-मार्ग में स्थित रहकर देखने लगे ॥ ६० ॥ वीर शत्रुघ्न सिंहनाद कर ललकारने लगे— अरे बच्चू, तू कहाँ है, आकर मुझसे युद्ध कर! बाण की गर्जना सुनकर लवण डर गया। वह अन्तर में भयभीत होकर शत्रुघ्न से बोला— ॥ ६१ ॥ क्षण भर मुझे क्षमा करो! मैं अपना भोजन खा लूँ, पानी पी लूँ। लौट आकर अभी मैं युद्ध करूँगा। उसे याद थी— 'शूल देवता के पूजा-घर में है। शूल के प्रहार से सबके प्राण ले लूँगा' ॥ ६२ ॥ उसके मन की बात समझकर वीर शत्रुघ्न गरजकर कहने लगे। तू भोजन करेगा, मैं उपवासी हूँ। हम दोनों उपवासी रहकर ही युद्ध करें, मुझे यही भला लगता है ॥ ६३ ॥

एखन भोजन आर उचित नाहय। भोजन करिवि वेटा, गिया यमालय
कुपिल लवण वीर दुर्ज्जय प्रताप। आहार करिते नाहि दिलि महापाप ६४
रघुबंशे जन्म तोर सर्व्वलोके जाने। रघुकुल उज्ज्वल करिलि एत दिने
शत्रुघ्नेरे मारिवारे आइल लवण। सन्धान पूरिया वाण एड़े शत्रुघन ६५
महाशव्दे याय वाण ज्वलन्त आगुनि। लबणेर बुके विन्धि सान्धाय मेदिनी
विष्णु वाण बुके ठेकि पड़िल लवण। देवतार जाठागाठ गेल ततक्षण ६६
शक्तिमान जाठागाछ गेल अन्तरीक्षे। पड़िल लवण वीर सर्व्वलोके देखे
जय जय, शब्द करे यत देवगण। शत्रुघ्न-उपरे करे पुष्प-वरिषण ६७
स्वर्गेते दुन्दुभि वाजे, नाचे विद्याधरी। आनन्दे हइल मग्न यत सुरपुरी
शत्रुघ्ने डाकिया ब्रह्मा कहिला तखन। वर माग महावीर, याहा लय मन ६८
निज वाहुवले वीर, लवणे मारिले। स्वर्ग, मर्त्य पातालेर शङ्का निवारिले
ये वर मागिवे तुमि देवतार स्थाने। से वर तोमारे दिवे सर्व्व देवगणे ६९
कहिछेन रामानुज युड़ि दुइ पाणि। मथुराते वसति हउक पद्मयोनि
तथास्तु बलिया वर दिल ततक्षण। वर दिया स्वर्गे गेल यत देवगण ७०

इस समय भोजन करना उचित नहीं। अरे बच्चू, अब यमलोक जाकर ही भोजन करना। दुर्जेय प्रतापी वीर लवण कुपित हो उठा। बोला—महापापी, तूने मुझे भोजन करने नही दिया ॥ ६४ ॥ सब लोग जानते हैं तेरा जन्म रघुवंश में हुआ है। इतने दिन बाद अब रघुवंश को तू उज्ज्वल कर रहा है (कहता हुआ) लवण शत्रुघ्न को मारने के लिए आया। तब शत्रुघ्न ने निशाना साधकर वाण छोड़ दिया ॥ ६५ ॥ जलती हुई अग्नि के समान प्रचंड शब्द करता हुआ वाण चला। वह लवण की छाती को भेदकर धरती में घुस पड़ा। विष्णु का वाण छाती में लग जाने के कारण लवण मारा गया। देवता का दिया उसका वह शूल उसी क्षण वहाँ से चला गया ॥ ६६ ॥ वह शक्तिमान शूल अन्तरिक्ष में चला गया। सभी लोगों ने देखा, वीर लवण मारा गया। सारे देवता 'जय, जय' नाद करने लगे। शत्रुघ्न पर वे पुष्प-वर्षा करने लगे ॥ ६७ ॥ स्वर्ग में दुन्दुभि वजने लगी, विद्याधरी नाचने लगीं! सम्पूर्ण स्वर्ग-पुरी आनन्दमग्न हो उठी। तब शत्रुघ्न को बुलाकर ब्रह्मा ने कहा— महावीर शत्रुघ्न तुम्हारी जो इच्छा हो, वर माँगो ॥ ६८ ॥ वीर, तुमने अपने बाहुबल से लवण को मारा, तथा स्वर्ग, मर्त्य और पाताल की शंका मिटा दी। देवताओं से तुम जो भी वर माँगोगे, सभी देवता तुम्हें वे वर देंगे! ॥ ६९ ॥ राम के छोटे भाई शत्रुघ्न हाथ जोड़कर कहने लगे— हे पद्मयोनि ब्रह्माजी, मथुरा में मनुष्यों का निवास बस जाये। 'तथास्तु' कहकर उसी क्षण वर देकर सभी देवता स्वर्ग चले गये ॥ ७० ॥ वीर शत्रुघ्न ने देश को बसाने हेतु मंत्रियों से परामर्श किया और अद्भुत रूप से मथुरापुरी का निर्माण किया। उन्होंने घर-बार बनवाये, सरोवर बनवाये, उनमें मछली आदि नाना जलचरों को वसवाये ॥ ७१ ॥ वहाँ

देश बसाइते वीर पाबे संबिधान। करिल मथुरापुरी अद्‌भुत निर्म्माण
बाड़ी घर निर्म्माइल आर सरोबर। निर्म्माइल मत्स्य आदि नाना जलचर ७१
बन-उपबन भाङ्गि करिल बसति। बसाइल प्रजागण नर नाना जाति
बृक्षोपरि पक्षी सब करे कलध्वनि। मुनि-मन हरे हेरि मयूर-नाचनि ७२
राजबाटी निर्म्माइल देखिते सुन्दर। रहिलेन शत्रुघन ताहार भितर
नगरेर मध्ये यत साधुलोक बैसे। अन्य देश हैते लोक मथुराय आसे ७३
पद्म कोटि घर कैल सुबर्णे गठन। क्षत्र-बैश्य-शूद्र आसि बसिल ब्राह्मण
द्वादश बत्सर रन् मथुरा नगरे। प्रजारे पालेन सदा हरिष-अन्तरे ७४
मथुरा नगरी आनि निज सुशासने। अयोध्याय चलिलेन राम-सम्भाषणे
कटक-सहित गेल वाल्मीकिर देश। सैन्य सह तपोबने करिला प्रबेश ७५
शत्रुघ्ने देखिया मुनि हरषित-मन। शत्रुघ्न करिल तांर चरण-बन्दन
मुनि बले, महावीर तुमि शत्रुघन। लबणे मारिया रक्षा कैला त्रिभुवन ७६
अनेक कष्टेते राम बधिल रावणे। लवणे मारिले तुमि दिनेकेर रणे
मनुष्य खाइया बेटा देश कैल बन। लबणे मारिया कैले नगर-पत्तन ७७
आलिङ्गन दिया मुनि परम-आदरे। राखिला सकल सैन्य अतिथि-व्याभारे
सुगन्धि कोमल अन्न पायस पिष्टक। नाना उपहारे भुञ्जे सकल कटक ७८
सोनार पालङ्के वीर करिल शयन। मुनिर बाटिते शुने गीत-रामायण
बीणार स्वरेते नाद हैल आचम्बित। मधुस्वरे गान हय रामायण-गीत ७९

के जंगल, झाड़ आदि को कटवाकर लोगों की बस्ती बसाई। और नाना जाति के मनुष्यों-प्रजाजनों को बसाया। मथुरा के वृक्षों पर पक्षी मधुर ध्वनियाँ करने लगे। मयूरों का नाच मुनियों का मन हर लेता था ॥ ७२ ॥ उन्होंने देखने में सुंदर राजभवन बनवाया। शत्रुघ्न उसी राजभवन में रहने लगे। नगर में सारे साधुपुरुष निवास करते थे। अन्य देशों से भी लोग मथुरा में आने लगे ॥ ७३ ॥ वहाँ सोने के पद्म-कोटि घर बनवाये। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि आकर वहाँ बसने लगे। शत्रुघ्न बारह वर्ष मथुरा में रहे। वे प्रसन्न-चित्त से प्रजा का पालन करते थे ॥ ७४ ॥ अपने सुशासन के अन्तर्गत मथुरापुरी को लाकर शत्रुघ्न श्रीराम से भेंट करने चले। वे सेना-सहित वाल्मीकि के देश में पहुँचे। सेना-सहित उन्होंने तपोवन में प्रवेश किया ॥ ७५ ॥ शत्रुघ्न को देखकर मुनि अन्तर में बड़े प्रसन्न हुए। शत्रुघ्न ने उनकी चरण-वन्दना की। मुनि बोले, शत्रुघ्न, तुम महावीर हो। लवण को मारकर तुमने त्रिभुवन की रक्षा की है ॥ ७६ ॥ रामचन्द्र ने अनेक कष्ट उठाकर रावण को मारा था। तुमने तो लवण को एक ही दिन के युद्ध में मार डाला है। उस दुष्ट ने म[illegible] र देश को जगल बना डाला था। तुमने लवण को [illegible] बसा दिये ॥ ७७ ॥ मुनि ने परम अ[illegible] से शत्रुघ्न [illegible] री सेना को अतिथि जैसे उ[illegible] से रखा। [illegible], पायस, पिष्टक (पीठा[illegible] उपहार की [illegible] खायीं ॥ ७८ ॥ वीर

देश छाड़ि सीता आर श्रीराम-लक्ष्मण । गाछेर बाकल परि प्रवेशिला बन
श्रीराम याइते वने कान्दे सर्व्वलोक । दशरथ मरिलेन पेये पुत्रशोक ८०
राजार मरणे यत राजराणीगण । येमते करिला ताँर श्राद्धादि-तर्पण
राम गेला वने, भरत मातुल-पाड़ा । चारि पुत्र सत्त्वे राजा ह'ल बासि मड़ा ८१
चौद्द वर्ष रहे राम पञ्चबटी-वने । सीता ह'रि लइलेक लङ्कार रावणे
सवंशे रावणे राम करिया संहार । बहु युद्धे करिलेन सीतार उद्धार ८२
सुमधुर स्वरे गीत करिला यखन । सर्व्वलोक मोहित शुनिया रामायण
दुइ शिशु गीत गाय बाजाइया बीणा । सर्व्वलोक शुने येन अमृतेर कणा ८३
शत्रुघ्न चक्षेर जल नारेन राखिते । दुइ चक्षे वारि धारा मुछेन दुहाते
श्रीरामेर दुःख शुनि शत्रुघ्न बिकल । मोह संवरिते नारे, चक्षे पड़े जल ८४
पात्र-मित्र सबे बले, शुन महामुनि । एमत अमृत-गान कभु नाहि शुनि
चारि प्रहर रजनी मधुर गीत शुने । सर्व्वलोक निद्रा याय, निशि जागरणे ८५
शत्रुघ्न बलेन, मुनि करि निवेदन । कोथाकार दुइ शिशु गाय रामायण
शुनितेछि रामायण मधुर सङ्गीत । कह मुनि, एइ गीत काहार रचित ८६

पलंग पर शयन किया । उन्होंने मुनि के निवास में रामायण-गीत सुना ! वहाँ वीणा के स्वरों में अद्भुत नाद हुआ तथा मधुर-स्वरों से रामायण गीत का गायन होने लगा ।। ७९ ।। देश छोड़कर सीता और श्रीराम-लक्ष्मण वल्कल धारण कर चले और वन में प्रवेश किया । श्रीराम के वन में जाते देख, सारे लोग रोने लगे । राजा दशरथ पुत्र-शोक से मर गये ।। ८० ।। राजा की मृत्यु से सारी राज-रानियों ने जिस प्रकार से उनका श्राद्धादि तर्पण किया । (उसका गायन हुआ) राम वन में चले गये, भरत मामा के गाँव गये हुए थे । चार पुत्रों के रहते हुए भी राजा का शव वासी पड़ा रहा ।। ८१ ।। रामचन्द्र चौदह वर्ष तक पंचवटी वन में रहे । वहाँ से लंका के रावण ने सीता को हरण कर लिया । अनेक युद्ध के बाद रावण का सवंश संहार कर रामचन्द्र ने सीता का उद्धार किया ।। ८२ ।। सुमधुर स्वर से जब वहाँ गीत होने लगा, तो सब लोग रामायण सुनकर मोहित हो उठे । वहाँ दो बालक वीणा वजाकर गीत गा रहे थे । सारे लोग उसे ऐसे सुन रहे थे मानो अमृत-कण हों ।। ८३ ।। शत्रुघ्न आँखों से आँसू रोक नहीं पा रहे थे । दोनों आँखों से बहती हुई आँसुओं की धारा दोनों हाथों से पोंछने लगे । श्रीराम की वेदना सुनकर शत्रुघ्न विकल हो उठे । वे मोह का संवरण कर नहीं पाते थे, आँखों से आँसू झर रहे थे ।। ८४ ।। मंत्री तथा कुटुम्बी मित्र सभी कहने लगे, महामुनि, सुनिये । ऐसा अमृत-गीत तो हमने कभी नहीं सुना था । लोग चार पहर रात तक (सारी रात) मधुर गीत सुनते रहे । रात बीतने पर (गीत बंद हुआ) सभी निद्रित हो गये ।। ८५ ।। शत्रुघ्न बोले, मुनि, आपसे निवेदन करता हूँ, ये रामायण गानेवाले दो शिशु कहाँ के है ? हम यह जो रामायण का मधुर संगीत सुन रहे हैं, मुनि, कहिये, यह गीत किसके द्वारा विरचित है ? ।। ८६ ।। मुनि बोले, शत्रुघ्न तुमने जो वार्त्ता

मुनि बले, वार्त्ता जिज्ञासिले शत्रुघन। दुइ शिशु गान करे शिष्य दुइ जन
आमि रचियाछि रामायण सप्त काण्ड। शुनि लोक मोक्ष पाय, अमृतेर भाण्ड ८७
कहिते ए कथा-वार्त्ता प्रभात-रजनी। प्रभाते चलिला बीर वन्दि महामुनि
शत्रुघ्न ससैन्ये यमुना हैल पार। शत्रुघ्नेर सङ्गे वाद्य वाजिछे अपार ८८
तिन दिने गेल वीर अयोध्या नगर। योड़ हाते रहिलेन रामेर गोचर
शत्रुघ्न श्रीरामे कहे वन्दिया चरण। तोमार प्रसादे प्रभु मारिनु लवण ८९
मारिनु लवणे युद्ध करिया बिशाल। मथुराते वसाइनु प्रजा चाले-चाल
बार वर्ष ना देखिया तोमार चरण। धरिते ना पारि प्राण, हैल उचाटन ९०
तव अदर्शने प्रभु, जीवने कि कार्य्य। कि करिवे सुख भोग मथुरार राज्य
शत्रुघ्ने श्रीराम तवे दिला आलिङ्गन। राम वले, भाइ, तव मधुर वचन ९१
सबार कनिष्ठ भाइ, गुणेर सागर। तोमारे देखिले दुःख पासरि विस्तर
पञ्च दिन चारि भाइ वञ्चिव हरिषे। पञ्चदिन परे येओ मथुरार देशे ९२
श्रीराम लक्ष्मण ओ भरत शत्रुघन। चारि भाइ एकत्र करिल सम्भाषण
चारि भाइ पञ्च दिन एकत्रे रहिला। शत्रुघ्नेरे मथुराय बिदाय करिला ९३
हइलेन शत्रुघन मथुरार राजा। अयोध्याय श्रीराम पालेन सब प्रजा
श्रीरामेर राज्ये लोक सुखे करे वास। गाइल उत्तरकाण्ड कवि कृत्तिवास ९४

पूछी है, सुनो ये गान करनेवाले दोनों शिशु मेरे दो शिष्य है। मैंने सप्तकांड रामायण की रचना की है। यह अमृत का कलस है, इसे सुनकर लोगों को मोक्ष मिलता है ॥८७॥ यह वार्त्तालाप करते हुए रात बीत गयी प्रभात हो गया। प्रातःकाल शत्रुघ्न मुनि की चरण-वन्दना कर वहाँ से चल पड़े। शत्रुघ्न सेना-सहित यमुना पार हुए। शत्रुघ्न के साथ अपार वाद्य वज रहे थे ॥ ८८ ॥ वीर शत्रुघ्न तीन दिन में अयोध्या नगर पहुँचे। राम के सम्मुख जाकर वे हाथ जोड़ खड़े हो गये। श्रीराम की चरण-वन्दना कर शत्रुघ्न वोले— प्रभु, आपके प्रसाद से मैंने लवण को मारा है ॥८९॥ प्रचंड युद्ध कर मैंने लवण को मारा तथा छत से छत मिलाकर (सघन वसाकर) मथुरा में प्रजा को वसाया। बारह वर्ष आपके चरणों का दर्शन न कर पाने के कारण प्राण-धारण करना कठिन हो गया था। जी उचट गया था ॥९०॥ प्रभु, आपके दर्शन न हों तो जीवन से क्या प्रयोजन है। मथुरा का राज्य और सुख-भोग से क्या होगा? तव श्रीराम ने शत्रुघ्न को आलिगन किया। राम बोले, भाई तुम्हारा वचन बड़ा मधुर है ॥ ९१ ॥ तुम सवसे कनिष्ठ भाई गुणों के सागर हो। तुम्हें देखकर महान् दुःख भी भूल जाता हूँ। हम चारों भाई पाँच दिन आनन्द से एक संग रहें। पाँच दिन वाद मथुरा जाना ॥ ९२ ॥ श्रीराम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न चारों भाइयों ने एक साथ वार्त्तालाप किया। चारों भाई पाँच दिन एक संग रहे। उसके वाद शत्रुघ्न को मथुरा के लिए विदा किया ॥ ९३ ॥ शत्रुघ्न मथुरा के राजा वने। अयोध्या में श्रीरामचन्द्र सारी प्रजा का पालन करने लगे। श्रीराम के राज्य में सव लोग सुख से निवास करते थे। कवि कृत्तिवास ने उत्तरकांड का गायन किया है ॥ ९४ ॥

बिप्र-पुत्रेर अकाल मृत्यु ओ शूद्र-तपस्वीर मस्तक-छेदन

अयोध्यार राजा राम धर्म्मेते तत्पर। अकाल मरण नाहि राज्येर भितर
अकस्मात् विप्र एक आइल काँदिया। मृत एक शिशु पुत्र कोलेते करिया १
पञ्च बत्सरेर मृत-पुत्र तार कोले। श्रीरामेर द्वारे आसि कान्दे उच्च रोले
धर्म्मेर संसार मोर पाप नाहि करि। अकस्मात् पुत्र शोके केन पुड़े मरि २
ना करेन राज्य-चर्च्चा राम रघुबर। ब्रह्मशाप दिब आजि रामेर उपर
कि पापे मरिल पुत्र, किछुइ ना जानि। पुत्र कोले करि कान्दे ब्राह्मण-ब्राह्मणी ३
बृथा गर्भे धरि पुत्र पञ्च वर्ष पुषि। अकाले मरिल पुत्र रामराज्ये बसि
पिता माता राखि पुत्र छाड़ि गेल कोथा। कोन् दोषे मैल पुत्र प्राणे दिया व्यथा ४
अधर्म्मेर राज्ये हय दुर्भिक्ष मड़क। कर्म्मदोषे सेइ राजा भुञ्जये नरक
अकालेते मरे पुत्र श्रीरामेर राज्ये। नहे अन्य देशे याव एइ राज्य त्यजे ५
एत बलि स्त्री-पुरुष भासे अश्रुनीरे। लक्ष्मण सत्वर यान रामेर गोचरे
अकस्मात् प्रमाद पड़िल रघुमणि। मृत पुत्र लये एल ब्राह्मण-ब्राह्मणी ६
बयसेते वृद्ध दोँहे, पुत्र नाहि आर। क्रन्दने व्याकुल करिछेन राजद्वार
द्विज बले, पाप नाहि आमार शरीरे। तबे अकालेते मोर पुत्र केन मरे ७

विप्र-पुत्र की अकाल मृत्यु और शूद्र-तपस्वी का शिरच्छेद

अयोध्या के राजा बनकर रामचन्द्र धर्म में तत्पर रहते थे। राज्य में अकाल-मरण नहीं होता था। अचानक एक विप्र रोता हुआ अपने मृतक पुत्र को गोद में लेकर आया ॥ १ ॥ उसकी गोद में पाँच वर्ष का मृतक-पुत्र था। श्रीराम के द्वार पर आकर वह ऊँचे स्वर से रोने लगा। (वह कहने लगा) मेरा धर्म का संसार है, मैं पाप नहीं करता। अकस्मात् पुत्रशोक से मुझे किस कारण जल-मरना पड़ रहा है ? ॥ २ ॥ रघुवर रामचन्द्र आजकल राज्य-संबंधी चर्चा नहीं करते। (इसीलिए) मैं रामचन्द्र को ब्रह्मशाप दूँगा। मेरा पुत्र किस पाप से मरा है, पता नहीं। (कहते हुए) वे ब्राह्मण-ब्राह्मणी पुत्र को गोद में लिये रोने लगे ॥ ३ ॥ पुत्र को हमने व्यर्थ गर्भ में धारण किया, व्यर्थ ही पाँच वर्ष पाला-पोसा, राम-राज्य में निवास कर मेरा पुत्र अकाल में मरा ! पिता-माता को छोड़कर हमारा पुत्र भला कहाँ चला गया। प्राणों में वेदना जगाकर किस अपराध से हमारा पुत्र मर गया ॥ ४ ॥ दुर्भिक्ष-महामारी आदि अधर्म के राज्य में ही हुआ करते हैं, कर्म-दोष के कारण उस राजा को नरक भोगना पड़ता है। श्रीराम के राज्य में पुत्र अकाल में मरा है। (पुत्र न रहे) तो हम इस राज्य को छोड़ अन्य देश में चले जायेंगे ॥ ५ ॥ यों कहकर दोनों पति-पत्नी लगातार आँसू बहाते रहे। तब लक्ष्मण तुरंत राम के पास गये। उन्होंने कहा— हे रघुनाथ ! अकस्मात् यह विपत्ति आ पड़ी है। अपने मृत-पुत्र को लेकर ब्राह्मण-ब्राह्मणी आये हैं ॥ ६ ॥ वे दोनों वृद्ध हो गये हैं, उनका और कोई पुत्र नहीं। अपनी रुलाई से उन

एत बलि स्त्री-पुरुषे करये रोदन । श्रीराम शुनिया हैला बिरस-बदन
त्रास पान रघुनाथ शुनिया बचन । अकाले द्विजेर पुत्र मरे कि कारण ८
पात्र-मित्र सभासद करे हाहाकार । रामेर आज्ञाते सबे हैल अगुसार
आइल बशिष्ठ मुनि कुलपुरोहित । कश्यप नारद आदि हैल उपनीत ९
पात्र-मित्र लये राम बसिला देयाने । ब्राह्मणेर कथा राम कहे सभास्थाने
तोमा सबा ल'ये आमि करि राजकाज । अकाले ब्राह्मण मरे पाइ बड़ लाज १०
रामबाक्य शुनि सबे गणिछे बिपद । श्रीरामेर पाने चाहि कहेन नारद
मुनि बले, रघुनाथ, शास्त्रेर बिचार । सत्ययुगे तपस्याय द्विज-अधिकार ११
त्रेतायुगे तपस्याय क्षत्र-अधिकार । द्वापरेते बैश्य-तप शास्त्रेर बिचार
कलियुगे तपस्या करिबे शूद्र जाति । तपस्यार नीति एइ शुन रघुपति १२
अकाले अनधिकारे शूद्र तप करे । सेइ राज्ये अकाले द्विज-पुत्र मरे
कलिकाले शूद्र आर पतिहीना नारी । तपस्या करिले सृष्टि नाशिबारे पारि १३
अकाले करिले तप घटाय उत्पात । अकाल-मरण-रीति शुन रघुनाथ
ना मरे तोमार पापे द्विजेर कुमार । तपस्या करिछे कोथा शूद्र दुराचार १४

दोनों ने राज-द्वार को व्याकुल कर रखा है। वह ब्राह्मण कहता है—यदि पाप हमारे (राजा के) शरीर में नहीं है तो फिर हमारा पुत्र किसलिए मरा है ? ॥ ७ ॥ यह कहकर दोनों पति-पत्नी रुदन कर रहे हैं। यह बात सुनकर श्रीरामचन्द्र उदास हो गये। रघुनाथ वह बात सुनकर त्रस्त हो उठे। अकाल में विप्र-पुत्र के मरने का कारण क्या है ? ॥ ८ ॥ मंत्री-मित्र, सभासद सभी हाहाकार करने लगे। राम की आज्ञा से सभी आगे बढ़े। कुल-पुरोहित वशिष्ठ मुनि वहाँ पहुँचे। कश्यप-नारद आदि भी वहाँ उपस्थित हुए ॥ ९ ॥ मंत्रियों-मित्रों के साथ रामचन्द्र राज-सभा में बैठे और उन्होंने ब्राह्मण की बात सभा से कही। तुम सबको लेकर मैं राजकार्य चलाया करता हूँ। ब्राह्मण अकाल में मर गया इससे मैं बड़ा लज्जित हुआ हूँ ॥ १० ॥ राम के वचन सुनकर सभी ने संकट की आशंका देखी, श्रीराम की ओर देखते हुए नारद कहने लगे। मुनि ने कहा— रघुनाथ, शास्त्रों का यह विधान है कि सत्ययुग में तपस्या में ब्राह्मण का अधिकार होता है ॥ ११ ॥ त्रेतायुग में तपस्या में क्षत्रिय का अधिकार होता है। शास्त्रों के विचार से द्वापर में तपस्या में वैश्य का अधिकार होता है। कलियुग में शूद्र जाति भी तपस्या करेगी। रघुपति, तपस्या की रीति यही है ॥ १२ ॥ अकाल में शूद्र अनधिकार से तप करे तो उस राज्य में अकाल में ब्राह्मण-पुत्र की मृत्यु होती है। कलिकाल में शूद्र और पतिहीना नारी तप करने लगें तो आगे चलकर विधाता द्वारा सृष्टि का विनाश किया जा सकता है ॥ १३ ॥ अकाल में तप करने से उपद्रव होते हैं। रघुनाथ सुनें, अकाल- [illegible] कारण यही है। आपके पाप के कारण ब्राह्म[illegible] का पुत्र नही[illegible] कहीं दुराचारी शूद्र तपस्या कर
है [illegible] १४ ॥ [illegible] आपको झूठ-मूठ [illegible] बनाकर

एइ हेतु मिथ्या दोषी करये तोमाके। ब्राह्मण-ब्राह्मणी द्वारे कान्दे पुत्रशोके
नारदेर वचन रामेर लय मने। डाक दिया सभामध्ये आनने लक्ष्मणे १५
पात्र मित्र ल'ये भाइ वैसह विचारे। प्रिय वाक्ये ब्राह्मणेरे राखह दुयारे
यावत् ना आसि आमि करिया विचार। तावत् राखिह द्विजे, ना छाड़िह द्वार
नारायण-तैले फेलि राख द्विजसुते। देह येन नष्ट नाहि हय कोन मते १६
एत बलि कैला राम रथे आरोहण। पश्चिम दिकेते राम करिला गमन
पश्चिमेर यत देश करिया बिचार। उत्तरदिकेते राम कैला आगुसार १७
उत्तरेर यत देश करि अन्वेषण। पूर्व्वदिके रघुनाथ करेन गमन
पूर्व्व-दिके अन्वेषिया गेलेन दक्षिणे। शूद्र एक तप करे महाघोर बने १८
करये कठोर तप बड़इ दुष्कर। अधोमुखे ऊद्‌र्ध्व पदे आछे निरन्तर
बिपरीत अग्नि-कुण्ड ज्वलिछे सम्मुखे। व्यापिल वह्निर धूम सुवर्ण राशिके १९
देखिया कठोर तप श्रीरामेर त्रास। 'धन्य, धन्य' बलि राम यान तार पाश
जिज्ञासा करेन तारे कमललोचन। कोन् जाति, तप कर कोन् प्रयोजन २०
तपस्वी बलेन आमि हइ शूद्र जाति। शम्बुक आमार नाम शुन महामति
करिब कठोर तप दुर्ल्लभ संसारे। तपस्यार फले याब वैकुण्ठ-नगरे २१
तपस्वीर वाक्ये कोपे काँपे राम-तुण्ड। खड्ग हस्ते काटिलेन तपस्वीर मुण्ड
साधु साधु शब्द करे यत देवगण। रामेर उपरे करे पुष्प-बरिषण २२

ब्राह्मणी पुत्र-शोक से द्वार पर रो रहे हैं। नारद का वचन रामचन्द्र को भा गया। उन्होंने लक्ष्मण को पुकार कर सभा में बुलाया ॥ १५ ॥ बोले, भाई, मंत्रियों और मित्रों के साथ विचार-विमर्श करो और प्रिय-वचन कहकर ब्राह्मण को द्वार पर विठा रखो। जब तक मैं खोजकर लौट न आऊँ, तब तक ब्राह्मण को बिठाये रखना, द्वार न छोड़ना। ब्राह्मण के पुत्र को नारायण-तैल में डुबो रखो, उसका शरीर जैसे किसी भी प्रकार से नष्ट न हो ॥ १६ ॥ यह कहकर रामचन्द्र रथ पर सवार हुए और पश्चिम दिशा में चले। पश्चिम के सारे देशों में खोज करने के बाद राम उत्तर की ओर आगे बढ़े ॥ १७ ॥ उत्तर के सारे देशों में खोजकर रामचन्द्र पूर्व-दिशा में गये। पूर्व-दिशा में खोज करने के पश्चात् वे दक्षिण की ओर गये। वहाँ एक शूद्र महा घोर वन में तपस्या कर रहा था ॥ १८ ॥ वह बड़ा ही दुष्कर कठोर तपस्या कर रहा था। वह निरंतर पैर ऊपर की ओर और मुँह नीचे किये हुए था। उसके सम्मुख विपरीत (ढंग से निर्मित) अग्निकुंड जल रहा था। सुवर्ण-राशि को व्याप्त कर अग्नि का धुआँ उठ रहा था ॥ १९ ॥ उसका कठोर तप देखकर श्रीराम त्रस्त हो उठे। 'धन्य, धन्य' कहकर राम उसके पास गये। कमललोचन रामचन्द्र ने उससे पूछा, तुम किस जाति के हो, किस प्रयोजन से तपस्या कर रहे हो ? ॥ २० ॥ तपस्वी-बोला— मैं शूद्रजाति का हूँ। हे महामति, सुनिये, मेरा नाम शम्बुक है। (मेरी इच्छा है) इस दुर्लभ संसार में कठोर तपस्या करूँ और तपस्या के फल से वैकुंठ-नगर में जाऊँ ॥ २१ ॥ तपस्वी की बात से क्रोध के मारे रामचन्द्र का शरीर

ब्रह्मा बलिलेन, राम, कैले बड़ काज। शूद्र ह'ये तप करे, पाइ बड़ लाज
तुष्ट ह'ये पुनः ब्रह्मा कहेन तखन। मनोनीत बर मागि लह हे एखन २३
श्रीराम बलेन यदि दिबे बरदान। तब बरे जिये येन ब्राह्मण-सन्तान
ब्रह्मा बले ए बर ना चाह रघुमणि। शूद्र काटा गेल, द्विज बाँचिल आपनि २४
आपना बिस्मृत तुमि देव नारायण। मारिया बाँचाते पार ए तिन भुवन
दृष्टे सृष्टि नाश कर निमेषे सृजन। तोमार आश्चर्य माया बुझे कोन् जन २५
एत बलि अन्तर्द्धान हन पद्मासन। शुनिया श्रीराम अति हरषित मन
एखाने बाँचिया उठे द्विजेर कुमार। देखि सभासद जने लागे चमत्कार २६
भरत-लक्ष्मणे कहि द्विज गेल घर। रघुनाथे आशीर्वाद करिया बिस्तर
हइल रामेर हाते तपस्वी-बिनाश। चड़ि स्वर्ण बिमाने से गेल स्वर्गबास २७
ब्रह्मार बचन शुनि श्रीरामेर हास। रचिल उत्तरकाण्ड कवि कृत्तिबास

गृध्रिनी ओ पेचकेर द्वन्द्व वृत्तान्त

अयोध्याते रघुनाथ यान शीघ्र गति। पात्र मित्र राज्यखण्ड रामेर संहति १

काँपने लगा, उन्होंने हाथ में खड्ग लेकर तपस्वी का सिर काट डाला। सारे देवता 'साधु, साधु' ध्वनि करने लगे और राम के ऊपर पुष्प-वर्षा करने लगे ॥ २२ ॥ ब्रह्मा बोले, रामचन्द्र, तुमने बड़ा काम किया! शूद्र होकर यह तप कर रहा था इससे मैं बड़ा लज्जित था। तुष्ट होकर ब्रह्मा ने तब कहा— हे राम, तुम अब इच्छानुसार वर माँग लो ॥ २३ ॥ श्रीराम ने कहा— यदि आप मुझे वर देना चाहते हैं तो (यही वर दें) आपके वरदान से वह ब्राह्मण का पुत्र जी उठे। ब्रह्मा ने कहा— रघुमणि, यह वर न माँगो। (क्योंकि) शूद्र को जिस क्षण काटा गया, उसी क्षण वह ब्राह्मण अपने आप जी उठा है ॥ २४ ॥ देव नारायण, तुम अपने आपको भूल गये हो। तुम इन तीनों लोकों को मारकर जिला सकते हो। अपनी दृष्टि से सृष्टि का विनाश कर सकते हो, निमिष मात्र में सर्जन कर सकते हो। तुम्हारी अद्भुत-माया कौन समझ सकता है? ॥ २५ ॥ ऐसा कहकर ब्रह्मा अन्तर्द्धान हो गये। उनके वचन सुनकर रामचन्द्र बड़े हर्षित हुए। उधर ब्राह्मण का पुत्र जी उठा। देखकर सभासदों को विस्मय हुआ ॥ २६ ॥ वह ब्राह्मण रामचन्द्र को अनेक आशीर्वाद दे, भरत और लक्ष्मण से कहकर घर चला गया। राम के हाथ से तपस्वी का विनाश हुआ। वह स्वर्ग के विमान पर सवार होकर स्वर्ग में निवास करने चला गया ॥ २७ ॥ ब्रह्मा के वचन सुन श्रीरामचन्द्र हँसने लगे। कवि कृत्तिवास ने उत्तरकांड का गायन किया है।

गिद्धनी और उलूक के विवाद की कथा

श्रीराम शीघ्रता से अयोध्या चले। मंत्री, बंधु-बांधव, सभासद राम

महामुनि अगस्त्येर बाटी दक्षिणेते । श्रीराम बलेन, सबे चल सेइ पथे
अगस्त्येर वाटी राम यान दिब्य रथे । पक्षीर कोन्दल राम शुनिलेन पथे २
गृधिनी पेचके द्वन्द्व वासार लागिय । आसियाछे बहु पक्षी दुइ पक्ष हैया
अनेक पक्षीर घर बनेर भितर । नाना जाति पक्षी सबे आछे एकत्तर ३
सारस-सारसी डाक काक कादाखोंचा । गृधिनी कोकिल चिल आर काल पेँचा
सारि शुक काकातुया चड़ा मत्स्य रङ्ग । खञ्जन-खञ्जनी फिङ्गे धकड़िया कङ्क ४
बाउइ पाउइ शिखी पक्षी हरिताल । पायरा प्रबाज आर शिकरा सञ्चाल
वक-वकी बादुड़-वादुड़ी नुरी टिया । झांके झांके चामचिके काठ ठोकरिया ५
जले स्थले आछिल येखाने यत पक्ष । करितेछे महा द्वन्द्व ह'ये दुइ पक्ष
गृधिनी कहिछे पेँचा, छाड़ मोर बासा । परघरे रहिबे केमने कर आशा ६
पेँचा वले कोथा हैते आइलि गृधिनी । एत काल बासा मोर तोरे नाहि चिनि
दोँहे मिलि करये कोन्दल मारामारि । श्रीरामे देखिया दोँहे कहे धीरि धीरि ७
गृधिनी बलिछे राम कर अवधान । बिचारे पण्डित नाहि तोमार समान
युद्धेते जिनिते तुमि पार सुरपति । शशधर जिनि तव श्री अङ्गेर ज्योति ८
दिवाकर जिनि तेज विशाल तोमार । सागर जिनिया बुद्धि अगाध अपार
पवन जिनिया तव त्वरित गमन । अमृत जिनिया तव मधुर बचन ९

के साथ थे ॥ १ ॥ महामुनि अगस्त्य का निवास दक्षिणी दिशा में था। श्रीराम ने कहा— सब लोग उसी मार्ग से चलें। दिव्य रथ पर सवार रामचन्द्र अगस्त्य मुनि के निवासस्थान पर चले, मार्ग में उन्होंने पक्षियों का विवाद सुना ॥ २ ॥ अपने निवास के लिए एक गिद्धनी और एक उलूक झगड़े कर रहे थे। बहुत से पक्षी वहाँ दोनों के पक्ष में आये। वन के अन्दर अनेक पक्षियों का निवास था। विभिन्न जातियों के सारे पक्षी वहाँ एक साथ रह रहे थे ॥ ३ ॥ सारस-सारसी, डाहुक पक्षी, कौवे, कादा-खोंचा, गिद्धनी, कोकिल, चील, और काले उलूक, सारिका, तोते, काकातुआ, गौरैया, मत्स्यरंग, खंजन-खंजनी, फिंगा पक्षी, धकड़िया, कंक, ॥ ४ ॥ वाउई-पाउइ, मोर, हरिताल, कबूतर, प्रवाज, शिकरा, संचाल, बगुला-बगुली, चमगादड़, मादा-चमगादड़, नुरी-तोता, कठफोड़वा आदि झुंड के झुंड ॥ ५ ॥ जल-स्थल में जहाँ जितने पक्षी थे, सभी दो पक्षों में विभाजित होकर बड़ा विवाद कर रहे थे। गिद्धनी कह रही थी, उलूक, तू मेरा घोंसला छोड़ दे। तू भला दूसरे के घर में रहने की आशा कैसे करता है ? ॥ ६ ॥ उलूक बोला, अरी गिद्धनी, तू कहाँ से आयी ? मैं यहाँ इतने समय से रह रहा हूँ, पर तुझे तो नहीं पहचानता। दोनों एक-दूसरे के साथ भयंकर झगड़े और मारपीट कर रहे थे। श्रीराम को देखकर दोनों धीरे-धीरे कहने लगे ॥ ७ ॥ गिद्धनी बोली, श्रीराम, सुनिये। आप-जैसा न्याय का पंडित दूसरा कोई नहीं है। आप युद्ध में देवराज को भी जीत सकते है। आपके श्रीअंगों की ज्योति चन्द्रमा से बढ़कर है ॥ ८ ॥ आपका तेज सूर्य से भी बढ़कर है। आपकी बुद्धि सागर से अधिक गंभीर और अपार है। आपकी गति पवन से बढ़कर है। आपके वचन अमृत

पृथिवी पालिते तुमि दयाल-शरीर । गुणेर सागर तुमि रणे महाबीर
स्वर्ग मर्त्य पाताले तोमारे करे पूजा । त्रिभुबन मध्ये राम तुमि महाराजा १०
रजोगुण धर तुमि सृष्टिर कारण । सत्वगुणे सबाकारे करह पालन
संसार नाशिते तुमि तमोगुण धर । आत्मनिबेदन करि तोमार गोचर ११
बहुश्रमे सृजिलाम बासा महाशय । बलेते पेचक सेइ बासा काड़ि लय
पेँचा बले राम तुमि बिष्णु-अबतार । रजोगुणे सृष्टि कैले सकल संसार १२
तुमि चन्द्र, तुमि सूर्य्य, तुमि दिबा राति । अनाथेर नाथ तुमि, अगतिर गति
धर्म्मेते धार्म्मिक तुमि परम शीतल । बिपक्ष नाशिते तुमि ज्वलन्त अनल १३
आदि-अन्त्य-मध्य तुमि, निर्धनेर धन । सेबक-बत्सल तुमि देव-नारायण
अन्धेर नयन तुमि दुर्ब्बलेर बल । अपराधी यदि हइ, देह प्रतिफल १४
सभा कैल रघुनाथ बसि बृक्ष तले । पात्र मित्र सभासद बसिल सकले
बशिष्ठ नारद आदि एल मुनिगण । सुमन्त्र कश्यप मुनि एल दुइ जन १५
श्रीराम बलेन कथा, सभासद शुने । हेन काले देबगण एल सेइ खाने
गृध्रिनीरे कत राम, सभार भितर । कत काल हैते तोर एइ बासाघर १६
गृध्रिनी कहिछे शुन बचन आमार । महा प्रलयेते यबे सब निराकार
बिष्णुनाभि पद्ममूले ब्रह्मार उत्पत्ति । बिधि देव दानब सृजिला नाना जाति १७

से बढ़कर मधुर हैं ॥ ९ ॥ पृथ्वी को पालन करने हेतु आपने कृपालु शरीर धारण किया है। आप युद्ध में महावीर और गुणों के सागर हैं। स्वर्ग, मर्त्य, पाताल आपकी पूजा करते हैं। श्रीराम, आप त्रिभुवन में महाराजा हैं ॥ १० ॥ आप सृष्टि के लिए रजोगुण धारण करते हैं। सत्त्वगुण से सबका पालन करते हैं। संसार के विनाश हेतु आप तमोगुण धारण करते हैं। मैं आपके सम्मुख आत्मनिवेदन कर रही हूँ ॥ ११ ॥ मैंने बड़े परिश्रम से अपना घोंसला बनाया है, इस उलूक ने बलपूर्वक वह घोंसला छीन लिया है। उलूक बोला, रामचन्द्र आप विष्णु-अवतार है। रजोगुण द्वारा आपने समस्त संसार का सर्जन किया है ॥ १२ ॥ आप चन्द्रमा हैं, आप सूर्य हैं, आप दिवा-रात्रि हैं, आप अनाथ के नाथ और अगति की गति हैं। आप धर्म-पालन में परम धार्मिक हैं, परम शीतल हैं, विपक्ष के विनाश में आप ज्वलन्त अग्नि हैं ॥ १३ ॥ (संसार का) आदि-अन्त-मध्य आप ही हैं तथा निर्धन के धन हैं, आप सेवक-वत्सल देव नारायण हैं। आप अंधे के नयन और दुर्बल के बल हैं। यदि मैं अपराधी हूँ तो मुझे उसका प्रतिफल दें ॥ १४ ॥ तब रामचन्द्र ने उस वृक्ष के नीचे बैठकर सभा की। वहाँ मंत्री-मित्र-सभासद सभी बैठ गये। वशिष्ठ, नारद आदि मुनिगण आये। सुमंत्र और कश्यपमुनि ये दोनों भी आये ॥ १५ ॥ श्रीराम यह कहने लगे, सभासद्गण सुनने लगे। उसी समय देवगण वहाँ आये। रामचन्द्र ने सभा में गिद्धनी से कहा— तेरा यह घोंसला यहाँ कितने काल से है ? ॥ १६ ॥ गिद्धनी बोली, मेरा वचन सुनिये। जब महाप्रलय में सभी निराकार थे, विष्णु के नाभि-कमल के मूल में ब्रह्मा की उत्पत्ति

तखन अवधि वासा ए डाले आमार। कोन् लाजे पेँचा वेटा करे अधिकार
ईषत् हासेन राम गृधिनी-वचने। पेँचारे जिज्ञासे राम विचार-विधाने १८
पेँचा वले, निवेदन शुन रघुवर। वृक्षेर उत्पत्ति हैल धरणी-उपर
तार परे उत्पत्ति हैल यत डाल। एइ रूप वन मध्ये याय कतकाल १९
उड़िते अशक्त हैनु, हैल वृद्ध दशा। तार परे एइ डाले करिलाम वासा
राम वले, सभाखण्ड करह विचार। मिथ्या द्वन्द्व करे केन एइवासा कार २०
सभाते वसिया येवा सत्य नाहि कय। कोटि कल्प वत्सर नरक माझे रय
एक एक वत्सरे वन्धन नाहि खसे। तिन कुल नष्ट हय मिथ्या साक्ष्य दोषे २१
श्रीरामेर वचनेते कहे सभाखण्ड। गृधिनीर उपरे उचित राजदण्ड
चारि वेद सर्व्व शास्त्र तोमार गोचर। साक्षाते शुनिले प्रभु, गृधिनी उत्तर २२
प्रलय हइल यवे सृष्टिर संहारे। स्थावर जंगम किछु नाछिल संसारे
त्रिभुवन शून्य यवे एका निरञ्जन। सेइ निरञ्जन हैल सृष्टिर कारण २३
जलेते पृथिवी छिल करिया उद्धार। पृथिवी सृजिया कैल जीवेर सञ्चार
विष्णुनाभि पद्मे हैल ब्रह्मार उत्पत्ति। देवादि नरादि सृष्टि कैल नाना जाति २४
आगे जीव सृजिलेन, वृक्ष हैल पिछे। किरूपे गृधिनी आसि वासा कैल गाछे
गृधिनी अन्याय वले सभार भितर। राजदण्ड अर्हे प्रभु गृधिनी-उपर २५

हुई, ब्रह्मा ने देव-दानव तथा नाना जातियों का सर्जन किया ॥ १७ ॥ उसी समय से इस डाली पर मेरा घोंसला है। भला यह दुष्ट उलूक किस मुँह से इसपर अधिकार करता है ? गिद्धनी की बात सुनकर राम मुस्कुराने लगे। न्याय-विधान के अनुसार उन्होंने उलूक से पूछा ॥ १८ ॥ उलूक बोला, रघुवर, मेरा निवेदन सुनें ! जब धरती पर वृक्ष की उत्पत्ति हुई, उसके पश्चात् उसमें डालियों की उत्पत्ति हुई, इसके पश्चात् जंगल में कुछ समय बीता ॥ १९ ॥ मैं उड़ने में असमर्थ हो गया, मेरी वृद्धावस्था आ पहुँची। उसके पश्चात् इस डाली पर घोंसला बनाया। श्रीराम ने कहा— सभा अब विचार करे, ये झूठ-मूठ झगड़ा क्यों कर रहे हैं ? यह घोंसला किसका है ? ॥ २० ॥ सभा में बैठकर जो सच नहीं कहता, उसे कोटि कल्प-वर्ष नरक में रहना पड़ता है। एक-एक वर्ष में वह बन्धन नहीं खुलता। झूठी गवाही देने के अपराध से तीनों कुल नष्ट हो जाते हैं ॥ २१ ॥ श्रीराम का वचन सुनकर सभाजनों ने कहा— इस गिद्धनी पर राजदंड करना उचित है। प्रभु, आप चारों वेदों तथा सभी शास्त्रों के ज्ञाता हैं। आपने स्वयं गिद्धनी का उत्तर सुना है ॥ २२ ॥ सृष्टि का संहार होने पर जब प्रलय हो गया था, तब संसार में स्थावर-जंगम कुछ भी न था। त्रिभुवन जब शून्य हो गया तो अकेले निरंजन रह गये। वे ही निरंजन सृष्टि के कारण बने ! ॥ २३ ॥ पृथ्वी जल में थी, उसका उद्धार कर, पृथ्वी का सर्जन कर (निरंजन ने) उस पर जीव का संचार किया। विष्णु के नाभि-कमल से ब्रह्मा की उत्पत्ति हुई। ब्रह्मा ने देव, नर आदि नाना जातियों की सर्जना की ॥ २४ ॥ पहले उन्होंने जीवों की सर्जना की, वृक्ष बाद को हुए। इस गिद्धनी ने तब किस प्रकार से इस वृक्ष

सभामध्ये मिथ्या कहे, नाहि धर्म्म भय। गृधिनीर प्राणदण्ड उपयुक्त हय
देवगण कहे, राम, करि निवेदन। स्वाभाविक गृधिनी ये नहे एइ जन २६
रयेछे गृधिनी पक्षी ह'येे ब्रह्मशापे। शापमुक्त कर पक्षी, ना मारिह कोपे
श्रीराम बलेन, कह, एबा कोन जन। ब्रह्मशाप भोग करे किसेर कारण २७
देवगण कहे, इइ छिल ये राजन्। प्रत्यह करा' त लक्ष ब्राह्मण-भोजन
दैवे एक बिप्र चुल पाइल अन्नेते। नृपति रे शाप द्विज दिलेन क्रोधेते २८
ब्राह्मणेरे मांस दिया नष्ट कैले ब्रत। गृधिनी हइया बञ्च, खाओ मांस-रक्त
शाप शुनि नृपतिर बिरस-बदन। द्विजेर चरणे धरि करिला क्रन्दन २९
शाप बिमोचन प्रभु, करह एखन। कत दिने हबे मोर शाप-बिमोचन
स्तवे तुष्ट हये बिप्र कहिते लागिल। शापे मुक्त हबे बुलि आश्वास करिल ३०
रघुवंशे जन्मिबेन बिष्णु येइ काले। शापे मुक्त हबे तुमि ताँरे परशिले
ब्रह्मशापे पक्षि योनि हइल भूपति। गृधिनी-बृत्तान्त एइ शुन रघुपति ३१
बहु दुःख पेये राजार एतेक दुर्गति। तुमि परशिले हय पक्षीर सद्गति
देबतार बाक्य शुनि राम रघुमणि। गृधिनीर देह स्पर्श करेन तखनि ३२
पक्षी देह परिहरि निज देह धरि। बिमानेते भूपति चलिल स्वर्गपुरी
दिब्य रथे चड़ि राजा गेल स्वर्गबास। गाइल उत्तरकाण्ड कबि कृत्तिबास ३३

पर घोंसला बनाया था। गिद्धनी ने सभा में आकर अन्याय कहा है, इसलिए इस पर राजदण्ड होना चाहिए ॥ २५ ॥ धर्म का भय किये बग़ैर जो सभा मे मिथ्या कहती है, ऐसी इस गिद्धनी को प्राण-दंड देना ही उचित है। तब देवताओं ने कहा— राम, हम आपसे निवेदन करते हैं, यह गिद्धनी तो प्रकृतितः गिद्धनी नहीं है ॥ २६ ॥ यह ब्रह्म-शाप से गिद्धनी पक्षी बनी हुई है। क्रोध से न मारें, इसे शाप से मुक्त कर दें। श्रीराम ने कहा— कहिए, यह कौन है ? यह किस कारण ब्रह्म-शाप भोग रही है ? ॥ २७ ॥ देवगण बोले, यह तो पहले एक राजा थी, जो प्रतिदिन लाखों ब्राह्मणों को भोजन कराया करता था। दैवयोग से एक विप्र ने अपने अन्न में एक बाल पाया। क्रोध में आकर राजा को उसने अभिशाप दिया ॥ २८ ॥ (मुझ) ब्राह्मण को (बाल रूपी) मांस देकर (मेरा) व्रत नष्ट कर दिया। अब तुम गिद्धनी बनकर रहो, मांस-रक्त खाया करो। यह शाप सुनकर राजा का मुँह उदास हो गया। द्विज के चरण पकड़कर वह रोने लगा ॥ २९ ॥ प्रभु, आप अब शाप से मुक्त कर दें। (बता दें) कितने दिनों में मेरा शाप मिटेगा ? स्तव से तुष्ट होकर विप्र कहने लगा— तुम शाप से मुक्त हो जाओगे। कहकर उसे आश्वासन दिया ॥ ३० ॥ जिस काल में रघुवंश में विष्णु उत्पन्न होंगे, तुम उन्हें स्पर्श कर शाप से छुटकारा पा जाओगे। वह राजा ब्रह्म-शाप के कारण पशु-योनि में पड़ा ! हे रघुपति, सुनिये, इस गिद्धनी का वृत्तान्त यही है ॥ ३१ ॥ अनेक दुःख पाकर इस राजा की अशेष दुर्गति हो रही है। आप यदि इसे स्पर्श कर दें तो इसकी सद्गति हो जाए। देवताओं का कथन सुनकर रघुमणि रामचन्द्र ने उसी समय गिद्धनी के शरीर का स्पर्श किया ॥ ३२ ॥

श्रीरामेर अगस्त्य मुनिर आश्रमे गमन ओ दैत्यराजेर उपाख्यान

श्रीरामेरे सम्भाषिया यत देवगण। सकले चलिया गेल अमर-भुवन
सैन्य सह रामचन्द्र चलेन तखन। अगस्त्येर बाटी गिया दिला दरशन १
अगस्त्य-चरण राम करेन वन्दन। पाद्य-अर्घ्य दिला मुनि वसिते आसन
येइ अलङ्कार बिश्वकर्म्मार निर्म्माण। सेइ अलङ्कार मुनि रामे दिला दान २
राम बले, शुन मुनि ए नहे विधान। क्षत्र हये नाहि लय ब्राह्मणेर दान
अगस्त्य बलेन, राम, शुन मोर वाणी। अवधान कर, कहि इहार काहिनी ३
सत्ययुगे बिधि एइ ब्राह्मणेर पूजा। ब्राह्मणेर पूजा करे यत क्षत्र राजा
स्वर्गे देवराजा करे देवेर पालन। पृथिवीते क्षत्रराज पालेन ब्राह्मण ४
लोकपाल अंशे क्षुप नामे क्षत्रराजा। ल'ये छिला यत्न करि ब्राह्मणेर पूजा
देवराज वाञ्छाये क्षत्रिये दिते दान। लोकपाल-मध्ये राम तुमि से प्रधान ५
क्षत्र कुले जन्म तव विष्णु अवतार। तोमारे करिते दान उचित आमार
तोमार शरीर योग्य एइ अलङ्कार। अलङ्कार दिया मुनि कैला पुरस्कार ६

पक्षी का शरीर त्यजकर अपना शरीर धारण कर वह राजा स्वर्ग-पुरी को चला। दिव्य-रथ पर सवार हो वह राजा स्वर्ग में निवास करने चला गया। यह उत्तरकांड कवि कृत्तिवास ने गाया है ॥ ३३ ॥

श्रीराम का अगस्त्य मुनि के आश्रम में जाना और दैत्यराज की कथा

श्रीराम से संभाषण कर सारे देवता स्वर्ग-लोक को चले गये। तब रामचन्द्र वहाँ से चले और अगस्त्य मुनि के निवास-स्थान में जाकर मुनि को दर्शन दिया ॥ १ ॥ रामचन्द्र ने अगस्त्य मुनि के चरणों की वंदना की। मुनि ने उन्हें पाद्य-अर्घ्य देकर बैठने का आसन दिया और विश्वकर्मा-निर्मित आभूषण रामचन्द्र को दान कर दिया ॥ २ ॥ श्रीराम बोले, मुनि, सुनिये, यह तो कोई नीति नहीं है; क्षत्रिय होकर कोई ब्राह्मणों का दान नहीं लेता! अगस्त्य बोले, श्रीराम, मेरा वचन सुनो! मैं इसकी कहानी सुनाता हूँ, सुनो! ॥ ३ ॥ सत्ययुग में यह विधि है कि ब्राह्मणों की पूजा हो। सभी क्षत्रिय राजा ब्राह्मणों की पूजा किया करते हैं। स्वर्ग में देवराज देवों का पालन किया करते हैं। धरती पर क्षत्रिय राजागण ब्राह्मणों का पालन किया करते हैं ॥ ४ ॥ लोकपालों के अंश से उत्पन्न क्षुप नाम के क्षत्रिय राजा ने बड़े यत्न से ब्राह्मणों की पूजा ग्रहण की थी। देवराज भी क्षत्रियों को दान करने की अभिलाषा करते हैं, तिस पर हे रामचन्द्र, तुम तो लोकपालों में सबसे प्रधान हो ॥ ५ ॥ क्षत्रिय-कुल में जन्म लेनेवाले तुम विष्णु-अवतार हो। तुम्हें दान देना हमारे लिए उचित है। ये आभूषण तुम्हारे शरीर के योग्य है। (ऐसा कहकर) उन आभूषणों को देकर मुनि ने रामचन्द्र को पुरस्कृत किया ॥ ६ ॥ श्रीराम ने कहा— मुनि, मैं आपसे कारण पूछता

श्रीराम बलेन, मुनि, जिज्ञासि कारण। कोथाय पाइले तुमि एइ आभरण
हेन अलङ्कार नाहि संसार-भितरे। कोथा पेले एइ रत्न बलह आमारे ७
अगस्त्य बलेन, तबे शुन रघुबर। सत्ययुगे तप करि बनेर भितर
एकेश्वर तप करि हरिष-अन्तर। घोर काननेते एका थाकि निरन्तर ८
से बनेर गुण कत, कहिते ना पारि। चारि क्रोश पथ युड़ि आछे एक पुरी
पुरी खान देखि तथा अति-मनोहर। अनाहारे तप आमि करि निरन्तर ९
मनोहर सरोबर बनेर भितरे। नित्य-नित्य स्नान करि सेइ सरोबरे
एक दिन प्रत्यूषेते करि गात्रोत्थान। सरोबर-तीरे जाइ करिबारे स्नान १०
आश्चर्य देखिनु अति गिया सेइ घाटे। शब एक पड़े आछे सरोबर-तटे
मड़ा ह'ये क्षय नाहि, अति मनोहर। बिष्णु-अधिष्ठान येन परम-सुन्दर ११
चन्द्रेर किरण प्राय, सूर्य्य हेन ज्योति। अति मनोहर शब, सुन्दर-मूरति
हेन जन नाहि तथा जिज्ञासि कारण। शब, रूप देखिया बिस्मित हैल मन १२
सेइ शब, रूप आमि करि निरीक्षण। हेनकाले अमर आइला एक जन
सुवर्णेर रथखान बहे राजहंसे। सातशत देवकन्या पुरुषेर पाशे १३
केह नाचे, केह गाय, केह पुरे बाँशी। आइलेन अबनीते अमर-निबासी
सेइ सरोबर-जले अङ्ग पाखालिल। सुगन्धि चन्दन दिया अङ्गशोभा कैल १४

हूँ, बताइये, ये आभूषण आपको कहाँ से मिले ? ऐसे आभूषण तो संसार में नहीं हैं। ये रत्न आपको कहाँ मिले ? हमें बताइये ॥ ७ ॥ अगस्त्य बोले— रघुवर, तब सुनिये ! सत्ययुग में मैं वन में तपस्या कर रहा था। मन में प्रसन्न रहकर मैं अकेला तप कर रहा था। उस घोर वन में मैं निरन्तर अकेले रहता था ॥ ८ ॥ उस वन के गुणों का वर्णन किया नहीं जा सकता। वहाँ चार कोस के मार्ग से घिरी एक विस्तृत पुरी थी। वह पुरी वहाँ बड़ी मनोहर दीख रही थी। मैं वहाँ निरंतर अनाहारी रहकर तपस्या करता था ॥ ९ ॥ वन के भीतर एक मनोहर सरोवर था, उसी सरोवर में मैं नित्य स्नान करता था। एक दिन बड़े सबेरे उठकर मैं स्नान करने हेतु उसी सरोवर के तट पर गया ॥ १० ॥ उस घाट पर पहुँचकर मैंने एक आश्चर्य देखा। देखा कि सरोवर के तट पर एक शव पड़ा हुआ है। मरा हुआ होने पर भी वह शरीर ज़रा भी नष्ट नहीं हुआ था। वह बड़ा ही मनोहर था। वह मानों विष्णुअधिष्ठान-सा परम सुन्दर था ॥ ११ ॥ वह शव चन्द्र-किरण-सा था। उसकी ज्योति सूर्य-सी थी। सुन्दर-प्रतिमा जैसा वह शव अत्यन्त मनोहर था। वहाँ ऐसा कोई जन न था, जिससे कारण पूछता ! उस शव का रूप देखकर मन विस्मित हो उठा ॥ १२ ॥ मैं उस शव के रूप का निरीक्षण कर रहा था, तभी वहाँ एक देवता आया। उसके सोने के रथ को राजहंस ढो रहे थे। उस पुरुष के साथ सात सौ देवकन्याएँ थीं ॥ १३ ॥ कोई नाच रही थी, कोई गा रही थी, कोई बाँसुरी बजा रही थी। वह अमरलोकनिवासी देवता धरती पर आया। उसने उस सरोवर के जल में अपने अंगों को धोया और सुगन्धित चन्दन से अपने अंगों को सुशोभित किया ॥ १४ ॥

सेइ मड़ा लये तिनि करिया भक्षण । हरषिते रथे गिया कैला आरोहण
रथे आरोहण करि स्वर्गवासे याय । हेन काले योड़हाते जिज्ञासिनु ताय १५
देवरथे चड़ियाछ देव-अवतार । देवता हइया मड़ा करिले आहार
इहार वृत्तान्त मोरे कह देखि शुनि । कहिते लागिल मोरे करि योड़पाणि १६
स्वर्गराज-पुत्र आमि दैत्य नाम धरि । पितृ विद्यमाने आमि स्वर्ग राज्य करि
स्वर्गवासे गेल पिता कतदिन परे । राज्यभार दिया आमि कनिष्ठ सोदरे १७
अनाहारे तप आमि करिनु विस्तर । स्वर्ग प्राप्ति हैल मोर त्यजि कलेवर
क्षुधा-तृष्णा हैले आमि सहिते ना पारि । जिज्ञासिनु विरिञ्चिरे करयोड़ करि १८
स्वर्गपुरे आइलाम तपस्यार फले । क्षुधानले सतत आमार अङ्ग ज्वले
ब्रह्मा वलिलेन, भुञ्ज आपनार फल । क्षुधार्त्तेरे तुमि नाहि दिले अन्नजल १९
याहा देय, ताहा पाय वेदेर लिखन । आपनि भाविया राजा, बुझह एखन
आपना करिले तुष्ट भोजनेर आशे । निज अङ्ग खाओ तुमि मनेर हरषे २०
ना पचिवे, ना गलिवे, मधुर सुस्वाद । से शरीर खाइले घुचिवे अवसाद
ब्रह्मार मुखेते शुनि एतेक वचन । एतेक दुर्गति मोर खण्डन कारण २१
कातरे कहिनु धरि ब्रह्मार चरणे । एइ दुःख-अवसान हवे कत दिने
ब्रह्मा कहिलेन, कथा शुनह राजन । येमते हइ तव पाप-विमोचन २२

उस मृतक को लेकर उसने भक्षण किया और हर्षित हो अपने रथ पर सवार हुआ। वह रथ पर सवार हो स्वर्ग को जा रहा था, तभी मैंने हाथ जोड़कर उससे पूछा ॥ १५ ॥ आप देव-अवतार हैं, देव-रथ पर सवार हैं, देवता होकर भी आपने मृत देह का भक्षण किया। इसका वृत्तान्त आप मुझसे कहिये, मैं सुनना चाहता हूँ। तब वह हाथ जोड़कर कहने लगा ॥ १६ ॥ मैं स्वर्ग-निवासी राजपुत्र हूँ, पहले मैं दैत्य नाम धारण कर पिता के रहते हुए स्वर्ग में राज करता था। कुछ दिन पश्चात् पिता स्वर्ग-वासी हुए। तब मैंने अपने छोटे भाई को राज्य सौंप कर ॥ १७ ॥ उपवासी रहकर बड़ी तपस्या की। इससे शरीर छोड़ने के बाद मुझे स्वर्ग प्राप्त हुआ। (स्वर्ग प्राप्त होने पर भी) मैं भूख-प्यास सह नहीं पाता था। मैंने हाथ जोड़कर ब्रह्माजी से पूछा ॥ १८ ॥ मैं तो तपस्या के फल से स्वर्गपुरी आया हूँ। फिर भी क्षुधा की ज्वाला से मेरे अंग निरंतर जलते रहते हैं। ब्रह्मा बोले— अपना कर्म-फल भोगो। तुमने (पहले) किसी क्षुधार्त जन को अन्न-जल नहीं दिया था ॥ १९ ॥ वेदों में लिखा है, जो, जो देता है उसे वही मिलता है। राजा, अब तुम स्वयं सोचकर देखो ! तुमने भोजन की अभिलाषा से केवल अपने को ही तुष्ट किया है। अब अपने मन की प्रसन्नता से तुम अपने ही अंगों को भोजन करो ॥ २० ॥ तुम्हारा शव न सड़ेगा, न गलेगा, वह (खाने में) मधुर सुस्वादु लगेगा। उस शरीर को खाने पर अवसाद मिटेगा। ब्रह्मा के मुँह से यह वचन सुनकर, अपनी इस दुर्गति को खंडन करने का उपाय ॥ २१ ॥ जानने के लिए मैंने ब्रह्मा के चरण पकड़कर कहा— मेरे इस दुःख का अवसान कितने दिनों में होगा ? ब्रह्मा बोले— राजा, सुनो, तुम्हारा पाप जिस प्रकार से मिट सकता है,

आमार रमणी हैले हब तब दास । तोमा-बिना आर नारी ना लइब पाश
शत शत महादेवी करे दिब दासी । सर्व्व नारी जिनि हबे आमार महिषी १०
यदि नाहि शुन कन्या, आमार बचन । बले धरि शृङ्गार करिब एइक्षण
राजार बचन शुनि क्रोधे बले अब्जा । मोरे बल करिले मरिबे तुमि राजा ११
मोरे बल करिले पितार मनस्ताप । सबंशे मरिबे राजा, पिता दिले शाप
आमार पितार आगे लह अनुमति । तबे आमि तब सङ्गे करिब पिरीति १२
राजा बले, तव पिता आसिबे कखन । तदबधि धैर्य नाहि धरे मोन मन
तोमा-बिना आर मम मने नाहि आन । पाये धरि कन्या, मोरे देह रतिदान १३
प्राणरक्षा कर मोरे दिया आलिङ्गन । तव आलिङ्गन-बिना ना रहे जीवन
योड़हाते .भूपति पड़िल कन्या-पाय । सन्मति ना देय कन्या, अशेष बुझाय १४
देबर निर्व्वन्ध, कन्या नृपे देय गालि । बले धरि शृङ्गार करये महाबलि
हात पा आछाड़े कन्या, आलुलित केश । शृङ्गार सहिते नारे, यन्त्रणा अशेष १५
शृङ्गारेते शुक्र-कन्या कातर हइल । एतक देखिया राजा सत्वरे छाड़िल
शृङ्गार करिया दण्डराजा गेल घर । कोथा पिता बलि कन्या कान्दिल बिस्तर १६

संभोग करना आपके लिए उचित नहीं। राजा बोला, तुम्हारा रूप देखकर मेरे प्राण निकले जा रहे हैं। हे सुन्दरी, सुनो, तुम मेरी प्राण-रक्षा करो ! ॥ ९ ॥ तुम अगर मेरी पत्नी बन जाओ तो मैं तुम्हारा दास बनूँगा। तुम्हें छोड़कर किसी और नारी को अपने पास नहीं लूँगा। सैकड़ों पटरानियों को तुम्हारी दासी बना दूँगा। सभी नारियों से ऊपर तुम मेरी पटरानी बनोगी ॥ १० ॥ हे कन्या, यदि तुम मेरी बात न सुनोगी, तो मैं बलपूर्वक तुम्हें पकड़कर इसी क्षण संभोग करूँगा। राजा का वचन सुनकर अब्जा ने क्रोध से कहा— राजा, यदि मुझ पर बल-प्रयोग करोगे तो तुम मारे जाओगे ॥ ११ ॥ मुझ पर बल-प्रयोग करने पर पिता को मनस्ताप होगा, पिता यदि शाप दे दें तो राजा, तुम सवंश मारे जाओगे। पहले मेरे पिता से अनुमति ले लो, इसके पश्चात मैं तुमसे प्रेम करूँगी ॥ १२ ॥ राजा बोला, तुम्हारे पिता कब आयेंगे ? उतने समय तक मेरा मन धीरज नहीं धर पा रहा है। तुम्हें छोड़कर मेरे मन में और दूसरा कुछ भी नही है। हे कन्या, मैं तुम्हारे पैर पकड़ता हूँ, मुझे रति-दान करो ॥ १३ ॥ मुझे आलिंगन देकर प्राण-रक्षा करो। तुम्हारे आलिंगन के बिना मेरा जीवन नहीं रहेगा। राजा हाथ जोड़कर कन्या के चरणों पर गिर पड़ा। कन्या उसे सम्मति न देती थी, उसे बहुत समझाती थी ॥ १४ ॥ वह दैव का लेखन था। कन्या राजा को गालियाँ दे रही थी। पर वह महाबली राजा उसे बलपूर्वक पकड़कर संभोग करने लगा। कन्या हाथ-पैर पटकने लगी, उसके बाल बिखर गये। वह संभोग सह नहीं पा रही थी, उसे असीम यन्त्रणा हो रही थी ॥ १५ ॥ संभोग से शुक्र-कन्या कातर हो उठी, वह देखकर राजा ने उसे तुरंत छोड़ दिया। उससे संभोग करने के बाद राजा दंड घर चला गया। पिताजी

मुनि बलिलेन, राम, तव पूर्व्व-वंशे। नल नामे राजा छिल बिदर्भेर देशे
पृथिबी-बिख्यात राजा धर्म्मे राज्य करे। तार पुत्र हइल इक्ष्वाकु नाम धरे २
इक्ष्वाकु हइते सूर्य्यवंशेर प्रचार। पृथिबी-भितरे 'कारो नाहि अधिकार
सत्य कराइया राजा पुत्रे राज्य दिल। तपस्या करिया राजा स्वर्गवासे गेल ३
इक्ष्वाकु-कनिष्ठ पुत्र हइल पाषण्ड। दुराचार राजा नाम दिल दण्ड
सूर्य्यवंशे जन्मि दण्ड करे अनाचार। पर्व्वत माझारे तारे दिल राज्यभार ४
कृष्णश्रृङ्ग पर्व्वते से दण्ड राज्य करे। मधु नामे पुरी तथा वसाइल परे
रचिया बिचित्रपुरी दण्ड नरेश्वर। इन्द्रेर अधिक सुख भुञ्जे निरन्तर ५
सुखेते थाकिते ताय देवता पाषण्ड। शुक्रेर वाटीते गेल एक दिन दण्ड
अब्जा नामेते एक शुक्रेर कुमारी। पुष्प तुलिवारे एल परमासुन्दरी ६
रूपे आलोकरे कन्या सुखे तुले फुल। कन्यारे देखिया राजा हइल व्याकुल
देखिया कन्यार रूप कामे अचेतन। हस्तेते धरिया कहे मधुर वचन ७
काहार युबती तुमि, कन्या वल कार। अवश्य कहिबे मोरे सत्य समाचार
कन्या बले, शुन राजा, निवेदन करि। शुक्रमुनि-कन्या आमि, अब्जा नाम धरि ८
मोर पिता हय तव कुलपुरोहित। आमार सहित रङ्ग ना हय उचित
राजा बले, तव रूपे प्राण नाहि धरि। प्राण रक्षा कर मोर, शुन लो सुन्दरी ९

करता था। उस वन में किसी कारण से कोई जन्तु न था। ऐसा वन लगभग सौ योजन फैला हुआ था ॥ १ ॥ मुनि बोले— राम, तुम्हारे पूर्व-वंश में विदर्भ देश में नल नाम का राजा था। वह पृथ्वी-विख्यात राजा धर्मपूर्वक राज्य करता था। उसका पुत्र इक्ष्वाकु नाम का राजा हुआ ॥ २ ॥ उस इक्ष्वाकु से ही सूर्यवंश का प्रसार हुआ। धरती पर और दूसरे का अधिकार न था। राजा ने पुत्र को शपथ करवाकर राज्य प्रदान किया और तपस्या कर स्वर्गवासी हुआ ॥ ३ ॥ इक्ष्वाकु का कनिष्ठ पुत्र पाषण्ड था। उस दुराचारी का नाम राजा ने दंड रखा। सूर्यवंश में जन्म लेकर दंड अनाचार करता था, इसी कारण पर्वतों के बीच उसे राज्य-भार दिया गया ॥ ४ ॥ कृष्णश्रृंग पर्वत पर वह दंड राज करने लगा। इसके पश्चात् उसने वहाँ मधु नाम की पुरी बसायी। विचित्र पुरी का निर्माण कर राजा दंड इन्द्र से भी अधिक सुख भोगने लगा ॥ ५ ॥ वह पाषण्ड देवता जैसा सुख से रहता था। एक दिन दंड शुक्राचार्य के यहाँ पहुँचा। शुक्राचार्य की अब्जा नाम की एक कुमारी कन्या थी। वह परमा सुन्दरी फूल चुनने के लिए आयी थी ॥ ६ ॥ वह कन्या अपने रूप से आलोकित करती आनन्द से फूल चुन रही थी। उस कन्या को देखकर राजा व्याकुल हो गया। कन्या का रूप देखकर वह काम से अचेत-सा हो गया। उस कन्या का हाथ पकड़कर वह मधुर वचन से बोला ॥ ७ ॥ बताओ, तुम किसकी युवती (पत्नी) हो, किसकी कन्या हो? तुम मुझे अवश्य ही सत्य-समाचार सुनाओ। कन्या बोली, राजा सुनिये, मैं निवेदन करती हूँ। मैं मुनि शुक्र की कन्या हूँ, मेरा नाम अब्जा है ॥ ८ ॥ मेरे पिता आपके कुल-पुरोहित हैं। मेरे साथ

आमार रमणी हैले हब तव दास। तोमा-बिना आर नारी ना लइब पाश
शत शत महादेवी करे दिब दासी। सर्व्व नारी जिनि हबे आमार महिषी १०
यदि नाहि शुन कन्या, आमार बचन। बले धरि शृङ्गार करिब एइक्षण
राजार बचन शुनि क्रोधे बले अब्जा। मोरे बल करिले मरिबे तुमि राजा ११
मोरे बल करिले पितार मनस्ताप। सबंशे मरिबे राजा, पिता दिले शाप
आमार पितार आगे लह अनुमति। तबे आमि तव सङ्गे करिब पिरीति १२
राजा बले, तब पिता आसिबे कखन। तदबधि धैर्य नाहि धरे मोन मन
तोमा-बिना आर मम मने नाहि आन। पाये धरि कन्या, मोरे देह रतिदान १३
प्राणरक्षा कर मोरे दिया आलिङ्गन। तव आलिङ्गन-बिना ना रहे जीवन
योड़हाते भूपति पड़िल कन्या-पाय। सन्मति ना देय कन्या, अशेष बुझाय १४
देबर निर्व्वन्ध, कन्या नृपे देय गालि। बले धरि शृङ्गार करये महाबलि
हात पा आछाड़े कन्या, आलुलित केश। शृङ्गार सहिते नारे, यन्त्रणा अशेष १५
शृङ्गारेते शुक्र-कन्या कातर हइल। एतक देखिया राजा सत्वरे छाड़िल
शृङ्गार करिया दण्डराजा गेल घर। कोथा पिता बलि कन्या कान्दिल बिस्तर १६

संभोग करना आपके लिए उचित नहीं। राजा बोला, तुम्हारा रूप देखकर मेरे प्राण निकले जा रहे हैं। हे सुन्दरी, सुनो, तुम मेरी प्राण-रक्षा करो! ॥ ९ ॥ तुम अगर मेरी पत्नी बन जाओ तो मैं तुम्हारा दास बनूँगा। तुम्हें छोड़कर किसी और नारी को अपने पास नहीं लूँगा। सैकड़ों पटरानियों को तुम्हारी दासी बना दूँगा। सभी नारियों से ऊपर तुम मेरी पटरानी बनोगी ॥ १० ॥ हे कन्या, यदि तुम मेरी बात न सुनोगी, तो मैं बलपूर्वक तुम्हें पकड़कर इसी क्षण संभोग करूँगा। राजा का वचन सुनकर अब्जा ने क्रोध से कहा— राजा, यदि मुझ पर बल-प्रयोग करोगे तो तुम मारे जाओगे ॥ ११ ॥ मुझ पर बल-प्रयोग करने पर पिता को मनस्ताप होगा, पिता यदि शाप दे दें तो राजा, तुम सवंश मारे जाओगे। पहले मेरे पिता से अनुमति ले लो, इसके पश्चात मैं तुमसे प्रेम करूँगी ॥ १२ ॥ राजा बोला, तुम्हारे पिता कब आयेंगे? उतने समय तक मेरा मन धीरज नहीं धर पा रहा है। तुम्हें छोड़कर मेरे मन में और दूसरा कुछ भी नहीं है। हे कन्या, मैं तुम्हारे पैर पकड़ता हूँ, मुझे रति-दान करो ॥ १३ ॥ मुझे आलिंगन देकर प्राण-रक्षा करो। तुम्हारे आलिंगन के बिना मेरा जीवन नहीं रहेगा। राजा हाथ जोड़कर कन्या के चरणों पर गिर पड़ा। कन्या उसे सम्मति न देती थी, उसे बहुत समझाती थी ॥ १४ ॥ वह दैव का लेखन था। कन्या राजा को गालियाँ दे रही थी। पर वह महाबली राजा उसे बलपूर्वक पकड़कर संभोग करने लगा। कन्या [illegible]-पैर पटकने लगी, उसके बाल बिखर गये। वह संभोग सह [illegible] उसे असीम यन्त्रणा हो रही थी ॥ १५ संभोग से [illegible] ठी, वह देखकर राजा ने [illegible] त दिया। [illegible] राजा दंड घर [illegible]

आइलेन शुक्राचार्य लये शिष्यगण। हेँटमाथा करि कन्या करिछे क्रन्दन
कान्दितेछे अब्जा कन्या, सम्मुखे देखिल। ध्यानस्थ हइया मुनि सकलि जानिल १७
क्रोधेते हइल मुनि येन अग्निशिखा। गुरुकन्या हरे राजा, ना करे अपेक्षा
अभिशाप दिल मुनि सह-शिष्यगणे। पुड़िया मरुक राजा अग्नि-वरिषणे १८
अग्निवृष्टि राज्येते हइल सात राति। सवंशे पुड़िया मरे दण्ड नरपति
घोड़ा-हाथी पुड़े, आर यतेक भाण्डार। शतेक योजन पुड़ि हइल अङ्गार १९
सवंशेते दण्डराजा हइल विनाश। शुक्रमुनि वसिलेन छाड़िया निःश्वास
ब्रह्मशापे शत योजन नाहिक वसति। दण्डारण्य बलिया से बनेर खेयाति २०
ब्रह्मशापे नाहि पशु-पक्षी मुनिगण। बनेर बृत्तान्त एइ राजीवलोचन
उपनीत हैल सन्ध्या बेला-अवसाने। दुइजन करिलेन सन्ध्या सेइस्थाने २१
मिष्टान्न-भोजन मुनि कराइला रामे। सेइ दिन बञ्चे राम मुनिर आश्रमे
रजनी-प्रभाते राम मागिया मेलानि। मुनिरे प्रणामि कहे सुमधुर बाणी २२
तोमा-दरशने मोर सफल जीवन। आरबार देखि जेन तोमार चरण
मुनि बले, राम, तव मधुर वचन। तोमार वचने तुष्ट यत देवगण २३
अनाथेर नाथ तुमि, अगतिर गति। तोमा-दरशने बड़ पाइलाम प्रीति

कहाँ है, कहकर कन्या बहुत रोने लगी ॥ १६ ॥ शुक्राचार्य शिष्यों को लेकर आ पहुँचे। कन्या सिर झुकाये रुदन कर रही थी। उन्होंने सामने देखा कि कन्या अब्जा रो रही है। तब मुनि ने ध्यान लगाकर सब कुछ जान लिया ॥ १७ ॥ क्रोध के मारे मुनि अग्नि-शिखा जैसे हो गये। राजा दंड ने प्रतीक्षा किये बग़ैर गुरु-कन्या का हरण किया! शिष्यों-सहित मुनि ने अभिशाप दिया, यह राजा अग्नि-वर्षा से जल मरे ॥ १८ ॥ सात रात तक उस राज्य में अग्नि-वर्षा होती रही। राजा दंड उस अग्नि-वर्षा से सवंश जल मरा। उसके हाथी-घोड़े और जितने भंडार थे सब जल गये। सौ योजन जलकर भस्म हो गया ॥ १९ ॥ राजा दंड का सवंश विनाश हो गया। इससे (संतप्त होकर) शुक्र मुनि लम्बी साँसें लेने लगे। ब्रह्मशाप के कारण सौ योजन में कोई आबादी नहीं रही। उस वन की प्रसिद्धि दंडारण्य (दंडकारण्य) के रूप में है ॥ २० ॥ ब्रह्म-शाप के कारण वहाँ न पशु-पक्षी रहते थे और न मुनिगण! हे राजीव-लोचन राम! उस वन का वृत्तान्त यही है। दिन बीतने पर सन्ध्या समय आ गया। उन दोनों ने वहीं संध्या की ॥ २१ ॥ रामचन्द्र को मुनि ने मिष्टान्न भोजन करवाया। रामचन्द्र ने वह दिन मुनि के आश्रम में बिताया। रजनी-प्रभात होने पर रामचन्द्र ने विदा लेकर, मुनि को प्रणाम कर, यह सुमधुर वचन कहा ॥ २२ ॥ आपके दर्शन पाकर मेरा जीवन सफल हो गया। पुनः जैसे आपके चरणों के दर्शन कर सकूँ। मुनि बोले, राम, तुम्हारा वचन मधुर है। तुम्हारे वचन से सभी देवता संतुष्ट रहते हैं ॥ २३ ॥ तुम अनाथों के नाथ, अगति की गति हो। तुम्हारे दर्शन से मुझे बड़ा आनन्द हुआ है। मुनि के चरणों में नमस्कार

मुनिर चरणे राम नमस्कार करि । उपनीत हैल गिया अयोध्यानगरी २४
शुनिले रामेर गुण सिद्ध अभिलाष । गाइल उत्तरकाण्ड कबि कृत्तिबास

वृत्रासुर-बध-बृत्तान्त

सभा करि बसिलेन कमललोचन । भरत-शत्रुघ्न आसि बन्दिले चरण १
राम कहे, भरत लक्ष्मण शत्रुघन । एकमने शुन सबे आमार बचन
ब्रह्मबध करिया करेछि महापाप । से-कारणे पाइ आमि बड़ मनस्ताप २
राजसूय यज्ञ आमि करिब एखन । ताहार उद्योग कर भाइ तिनिजन
एत शुनि तिन भाइ करे हाहाकार । राजसूये-यज्ञे हय सबंश संहार ३
पूर्ब्बे राजसूय कैला राजा शशधर । गृह-पक्षी पुड़ि लोक मरिल बिस्तर
राजसूय-यज्ञ कैल देवता बरुण । मरिल मकर-मत्स्य पुड़ि सेकारण ४
राजसूय यज्ञ कैल देब पुरन्दर । सुरासुर युद्ध ताहे हइल बिस्तर
सगर-नृपति पूर्ब्बबंशेते तोमार । पृथिबीर राजा छिल गुणे बश यार ५
राजसूय-यज्ञ कैल से महाशय । बंश मजाइल, शेषे आपना संशय
भरतेर बाक्ये, रामे लागे चमत्कार । भरत रामेर प्रति कहे आरबार ६
हरिश्चन्द्र नामे राजा तब पूर्ब्बबंशे । राजसूय यज्ञ करि दुःख पाय शेषे
राजा हरिश्चन्द्र दान करिया पृथिबी । बिक्रय करिल पुत्र-आदि महादेबी ७

कर रामचन्द्र अयोध्या नगरी चले आये ॥ २४ ॥ रामचन्द्र के सुनने पर अभिलाषाएँ सिद्ध होती हैं। कवि कृत्तिवास ने इस उत्तरकांड का गायन किया है।

वृत्रासुर-वध का वृत्तान्त

कमल-लोचन रामचन्द्र राजसभा बुलाकर बैठे। भरत-शत्रुघ्न ने आकर उनकी चरण-वन्दना की ॥ १ ॥ राम बोले, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, मन लगाकर सभी मेरी बात सुनो। मैंने ब्रह्म-वध कर महान् पाप किया है। उसी कारण मेरे मानस में बड़ा संताप हो रहा है ॥ २ ॥ मैं अब राजसूय यज्ञ करूँगा। तुम तीनों भाई उसका उद्योग करो। यह सुनकर तीनों भाई हाहाकार करने लगे। राजसूय यज्ञ में तो सवंश संहार हो जाता है ॥ ३ ॥ पहले राजा शशधर ने राजसूय यज्ञ किया था। जिससे गृह-पक्षी जलकर अनेक लोग मारे गये! वरुण देवता ने राजसूय यज्ञ किया था, जिससे मकर-मत्स्य आदि जल मरे ॥ ४ ॥ देव पुरंदर ने राजसूय यज्ञ किया था, जिससे प्रचंड देवासुर-संग्राम हुआ। आपके पूर्व इस वंश में राजा सगर थे, जिनके गुणों से संसार के सभी राजा वशीभूत थे ॥ ५ ॥ उन महदाशय राजा ने राजसूय यज्ञ किया था, जिस कारण उनका वंश समाप्त हो गया, अंत में उनका अपना (जीवन)-संशय उपस्थित हो गया। भरत के वचन सुनकर राम को बड़ा अचरज हुआ। रामचन्द्र से भरत पुनः कहने लगे— ॥ ६ ॥ आपके वंश में

राज्य छाड़ि हरिश्चन्द्र जाय वाराणसी । दक्षिणा चाहिल तारे बिश्वामित्र ऋषि
दण्डेर आघाते मुनि करिल ताड़ना । स्त्री-पुत्र वेचिया राजा दिले दक्षिणा ८
एत दुःख, तबु ना पाइल स्वर्गवास । राजसूय-यज्ञे राजार हेन सर्व्वनाश
अन्तरीक्षे फिरे राजा कर्म्मेर दोषेते । स्थान ना पाइल स्वर्ग-मर्त्य-पातालेते ९
हेन राजसूय यज्ञे केन कर मन । राजसूय यज्ञ कंले सवंशे मरण
अनाथेर नाथ तुमि त्रिजगत-पति । राजसूय यज्ञ कंले घटिवे दुर्गति १०
राजसूय ना हइल भरत-कारण । भरतेर वाक्ये श्रीरामेर अन्य मन
भरतेर वाक्य यदि हैल अवसान । लक्ष्मणे कहेन, तवे राम विद्यमान ११
योड़हाते कहिलेन ठाकुर लक्ष्मण । अश्वमेध यज्ञ कर कमललोचन
पूर्व्वे ब्रह्मवध कंल देव पुरन्दरे । ब्रह्महत्या एड़ाइल अश्वमेध करे १२
वृत्र नामे असुर से बिप्रेर नन्दन । आपनार बाहुवले जिने त्रिभुवन
ठेकये ताहार माथा आकाशमण्डल । वृत्रासुर प्रतापते कांपे आखण्डल १३
धार्म्मिक से वृत्रासुर धर्म्मे राज्य पाले । विना वृष्टि-बरिषणे नाना शस्य फले
पुत्रे राज्य दिया गेल तपस्या-कारण । असुरेर तपस्याते कांपे देवगण १४

पहले हरिश्चन्द्र नाम के राजा थे, जिन्होंने राजसूय यज्ञ कर अन्त में दुःख पाया था। राजा हरिश्चन्द्र ने पृथ्वी का दान कर दिया, पुत्र आदि समेत अपनी पटरानी को बेच दिया ॥ ७ ॥ राज्य छोड़कर हरिश्चन्द्र वाराणसी में गये (क्योंकि) उनसे ऋषि विश्वामित्र ने दक्षिणा माँगी थी। मुनि विश्वामित्र ने दंड के आघात से उनकी ताड़ना की थी। राजा ने अपने स्त्री-पुत्र को बेचकर दक्षिणा चुकाई थी ॥ ८ ॥ इतना दुःख मिला, तथापि उन्हें स्वर्ग-वास प्राप्त नहीं हुआ। राजसूय यज्ञ से राजा का ऐसा सर्वनाश हो गया। राजा हरिश्चन्द्र अपने कर्मदोष से अन्तरिक्ष में चक्कर लगाते रहते हैं। उन्हें स्वर्ग, मर्त्य, पाताल में स्थान नहीं मिला ॥ ९ ॥ ऐसे राजसूय यज्ञ करने की इच्छा आप क्यों करते है? राजसूय यज्ञ करने पर सवंश मरण होता है। आप अनाथों के नाथ और त्रिभुवन के पति हैं। राजसूय-यज्ञ करने पर दुर्गति होगी ॥ १० ॥ भरत के इस प्रकार कहने के कारण राजसूय यज्ञ नही हुआ। भरत के वचन से श्रीराम का मन बदल गया। भरत की बातें समाप्त होने पर लक्ष्मण राम से कहने लगे ॥ ११ ॥ देव लक्ष्मण ने हाथ जोड़कर कहा— हे कमल-लोचन, आप अश्वमेध यज्ञ कीजिए। पूर्व काल में देवराज इन्द्र ने ब्रह्म-वध किया था। अश्वमेध यज्ञ कर उन्होंने उस ब्रह्म-हत्या से छुटकारा पाया था ॥ १२ ॥ ब्राह्मण का पुत्र वह वृत्र नाम का असुर था। अपने बाहुबल से उसने त्रिभुवन जीत लिया था। उसका मस्तक आकाश-मंडल को छू लेता था। वृत्रासुर के प्रताप से स्वर्ग-लोक काँपता था ॥ १३ ॥ वृत्रासुर धार्मिक था, वह धर्म-पूर्वक राज्य का पालन करता था, उसके राज्य में बिना वर्षा के नाना प्रकार के अनाज उत्पन्न होते थे। अपने पुत्र पर राज्य-भार सौंपकर वह तपस्या करने

देवगण चलि गेल विष्णुर गोचर। वृत्रासुर-तप-कथा कहे पुरन्दर
धार्म्मिक से वृत्रासुर, वले महावल। तार सम राजा नाहि अवनीमण्डल १५
वहु तप करे से, पुण्येर नाहि संख्या। जाहा चावे ताहा पावे, कारो नाहि रक्षा
वहु स्तुति करे सवे विष्णुर चरणे। बृत्रासुरे मारि रक्षा कर देवगणे १६
बिष्णु कहे वृत्रासुर बड़ह चतुर। आमार सेबाते मान वेड़ेछे प्रचुर
स्वहस्ते मारिते कभु युक्ति नाहि हय। प्रकारे वधिया तारे घुचाइव भय १७
तिन अंशे हइव असुर मारिवारे। एक अंशे र'व गिया पाताल-भितरे
आर एक अंशे आमि र'ब मर्त्यपुरे। आर एक अंशे र'ब तोमार शरीरे १८
तोमार शरीरे आमि हइनु दोसर। वृत्रासुरे मारिवारे चलह सत्वर
युद्धेते चलिल इन्द्र बिष्णुर वचने। प्रवेश करिल गिया बृत्रासुर-रणे १९
बृत्रासुरे देखि देवे लागे चमत्कार। इन्द्रेरे बलिल, हव सहाय तोमार
बिष्णुतेजे बृत्र-अरि बहु शक्ति धरे। बज्र हानिलेक वृत्रासुरेर उपरे २०
बज्रअस्त्र आघातेते बृत्रासुर मरे। ब्रह्मवध्र प्रवेशिल इन्द्रेर शरीरे
ब्रह्महत्या-भये इन्द्र त्रासित अन्तरे। बृत्रासुरे मारि इन्द्रे महापापे घेरे २१

चला गया। उस असुर की तपस्या से देवगण काँपने लगे ॥ १४ ॥ देवगण तब विष्णु के पास गये। उनसे इन्द्र ने वृत्रासुर की तपस्या की बात सुनायी। वह वृत्रासुर धार्मिक है, बल में महाबली है। उसके समान राजा धरती पर कोई नही है ॥ १५ ॥ वह अनेक तप करता है, उसके पुण्यों की गिनती नहीं है, तपस्या के बल से वह जो चाहेगा, वही पा लेगा। उससे किसी की रक्षा नहीं। सब देवता विष्णु के चरणों में अनेक स्तुति करने लगे। आप वृत्रासुर को मारकर देवगणों की रक्षा करें ॥ १६ ॥ विष्णु बोले— वृत्रासुर बड़ा ही चतुर है। मेरी सेवा करने के कारण उसका मान बहुत बढ गया है। उसे अपने हाथ से मारने का कोई औचित्य नहीं है। दूसरे प्रकार से उमका वध कर मैं तुम्हारा भय दूर करूँगा ॥ १७ ॥ असुर को मारने के लिए मैं तीन अंशों में अवतार लूँगा। एक अंश से मैं जाकर पाताल में रहूँगा। एक और अंश से मैं मर्त्यलोक में रहूँगा और एक अंश से मैं तुम्हारे शरीर में रहूँगा ॥ १८ ॥ मैं तुम्हारे शरीर में साथी बनकर प्रविष्ट हो रहा हूँ। अब तुम वृत्रासुर को मारने के लिए शीघ्र चलो। विष्णु के वचन सुनकर इन्द्र युद्ध करने चले ! उन्होंने वृत्रासुर के साथ संग्राम हेतु (रणभूमि में) प्रवेश किया ॥ १९ ॥ वृत्रासुर को देखकर देवगण चमत्कृत हो उठे। (उन सबने) इन्द्र से कहा— हम आपकी सहायता करेंगे। वृत्र-अरि इन्द्र विष्णु के तेज से अनेक शक्तिमान हो उठे थे। उन्होंने वृत्रासुर पर वज्र का प्रहार किया ॥ २० ॥ वज्र-अस्त्र के प्रहार से वृत्रासुर मारा गया। तब इन्द्र के शरीर में ब्रह्म-हत्या प्रवेश कर गयी। ब्रह्म-हत्या के भय से इन्द्र संत्रस्त हो उठे। वृत्रासुर को मारने के कारण इन्द्र को महा-पाप ने घेर लिया ॥ २१ ॥ पाप से पूर्ण होकर इन्द्र विषाद से सोचने

पापे पूर्ण हये इन्द्र भावेन विषादे। वृत्रासुरे मारि आमि पड़िनु प्रमादे
सकल देवता गेला विष्णुर सदन। ब्रह्महत्या-पापे इन्द्रे करह मोचन २२
वृत्रासुर वध इन्द्र कैल तव तेजे। ब्रह्मवध-पापे रक्षा कर देवराजे
विष्णु वलिलेन, अश्वमेध आर पूजा। अश्वमेध यज्ञ कर इन्द्र देवराजा २३
ब्रह्मवध-पापे इन्द्र हैल अचेतन। तप जप यज्ञ होम छाड़े त्रिभुवन
नदी स्रोत छाड़े, आर योगी छाड़े योग। राज्यचर्चा छाड़े राजा, छाड़े उपभोग २४
ब्रह्मवध-पापे इन्द्र अज्ञान हइल। इन्द्र अचेतन, यज्ञ देवगण कैल
अश्वमेध यज्ञ आरम्भिल देवराजा। नाना भोग दिया सवे करे विष्णुपूजा २५
अश्वमेध यज्ञ यदि हैल अवसान। ब्रह्मवध पाप नाहि थाके सेइ स्थान
एक अंश ब्रह्मवध जलोपरि भासे। आर अंश ब्रह्मवध वृक्षोपरि वैसे २६
आर अंश ब्रह्मवध नारी रजस्वला। अग्निरूपे पाताले सान्धाय एक कला
चारि भाग ब्रह्मवध रहे चारि स्थान। ब्रह्मवध-पापे इन्द्र पाइलेन त्राण २७
ब्रह्मवध-पाप नाशे अश्वमेध-तेजे। राजसूय यज्ञ कैले सवंशेते मजे
संसारेर कर्त्ता तुमि, पालिछ संसार। राजसूय-यज्ञ कैले सकलि संहार २८
राजसूय यज्ञे छिल श्रीरामेर मन। अश्वमेध यज्ञे मति दिल सर्व्वजन
राम वले, राजसूय यज्ञे छिल मन। तोमा सवाकार वाक्ये करिनु वर्ज्जन २९

लगे— वृत्रासुर को मारकर मैं प्रमाद में पड़ गया हूँ। सारे देवता विष्णु के पास पहुँचे। (उन सबने कहा)— इन्द्र को ब्रह्म-हत्या के पाप से मुक्त कीजिए ॥ २२ ॥ इन्द्र ने आपके तेज से ही वृत्रासुर का वध किया है। देवराज को ब्रह्महत्या-पाप से रक्षा कीजिए। विष्णु बोले— (इसके उपाय हैं) अश्वमेध यज्ञ और पूजा! देवराज, तुम अश्वमेध यज्ञ करो ॥ २३ ॥ ब्रह्म-वध के पाप से इन्द्र अचेत हो गये। इससे त्रिभुवन में तप-जप-यज्ञ-होम बंद हो गये। नदी ने धारा (वहना) छोड़ दी। योगी ने योग तज दिया, राजा ने राज्य-चर्चा छोड़ दी, उपभोग करना छोड़ दिया ॥ २४ ॥ ब्रह्म-वध के पाप से इन्द्र अचेत हो गये। तब इन्द्र को अचेत हो गया देख, देवताओं ने यज्ञ किया। देवराज इन्द्र ने अश्वमेध यज्ञ प्रारंभ किया। सबने नाना प्रकार भोग-पदार्थों से विष्णु की पूजा की ॥ २५ ॥ जब अश्वमेध यज्ञ पूरा हो गया, तो उस स्थान पर ब्रह्म-हत्या का पाप नहीं रह सका। ब्रह्म-हत्या का एक अंश जल के ऊपर तिरने लगा। दूसरा अंश वृक्ष पर जा वसा ॥ २६ ॥ एक और अंश रजस्वला नारी में चला गया। उसका एक अंश पाताल में समा गया। इस प्रकार ब्रह्म-हत्या के चार अंश चार स्थानों में रहने लगे और इन्द्र को ब्रह्म-हत्या के पाप से छुटकारा मिला ॥ २७ ॥ अश्वमेध यज्ञ के तेज से ब्रह्म-हत्या का पाप नष्ट हो जाता है। लेकिन राजसूय यज्ञ करने पर सवंश विनाश हो जाता है। आप संसार के कर्ता है। संसार का पालन करते हैं। राजसूय यज्ञ करने पर सबका संहार हो जायेगा ॥ २८ ॥ श्रीराम की इच्छा राजसूय यज्ञ करने की थी, परन्तु सारे जनों ने अश्वमेध यज्ञ करने की राय दी। राम बोले, मेरा मन तो था कि राजसूय यज्ञ

भाल युक्ति सभामध्ये कहिल लक्ष्मण । अश्वमेध करिते हइल मोर मन

इला राजार उपाख्यान

प्रजापति नृपतिर पुत्र गुणधर । इला-नाम धरे सेइ राज्येर ईश्वर १
सर्व्वगुण धरिया से प्रजागणे पाले । सर्व्वलोके सम पूज्य पृथिवीमण्डले
सुदिन प्रवेशे यबे एल मधुमास । मृग मारिबारे गेल पर्व्वत-कैलास २
कैलासेर प्रान्तभागे बन मनोहर । पार्व्वती लइया केलि करेन शंकर
पार्व्वती सहजे नारी, शिव ह'ये नारी । मनेर आनन्दे दोँहे जलकेलि करि ३
महेशेर शाप तथा आछये एमनि । जलजन्तु बनजन्तु हयेछे रमणी
पुरुष-मात्रेते केह नाहि सेइ बने । पार्व्वती शंकर केलि करेन दुजने ४
जलकेलि दुजने करेन कुतूहले । इला राजा सेइ बने गेल हेनकाले
इला राजा उपनीत ताहार समीपे । गतमात्रे नारी हैल शंकरेर शापे ५
यत अनुचर छिल राजार संहति । सैन्य-सेनापति सबे हइल स्त्रीजाति
देखिया रमणीजाति यत अनुचरे । लज्जा पेये इला राजा आपना पासरे ६

करूँ । पर तुम सबके वचनों से हमने उसका त्याग कर दिया ।। २९ ।। सभा में लक्ष्मण ने अच्छी युक्ति दी है । मेरी इच्छा अश्वमेध यज्ञ करने की हुई है ।

राजा इला का उपाख्यान

प्रजापति नृपति का एक गुणवान् पुत्र था । उस राज्य का अधीश्वर बनकर उसने 'इला' नाम धारण किया ।। १ ।। सारे गुण धारण कर वह प्रजाजनों का पालन करता था । वह पृथ्वीमंडल पर सभी लोगों से समान रूप से पूज्य था । सुदिन आने पर जब वसन्त का महीना आया तो वह राजा मृगों का शिकार करने कैलास पर्वत पर गया ।। २ ।। कैलास के समीप मनोहर वन था । वहाँ पार्वती को संग लेकर शंकर केलि किया करते हैं । पार्वती तो स्वभावतः नारी थी, शिव भी नारी बनकर दोनों मन के आनन्द से जलकेलि किया करते हैं ।। ३ ।। वहाँ के लिए शंकर का ऐसा शाप है कि जल-जन्तु, वन-जन्तु सभी नारी बन जाते हैं । उस वन में पुरुष कोई नहीं है । वहाँ पार्वती और शंकर ये दोनों केलि किया करते हैं ।। ४ ।। दोनों बड़े कौतूहल से जल-केलि कर रहे थे । उसी काल में राजा इला उस वन में पहुँचा । इला राजा उसके समीप पहुँचा । पहुँचते ही शंकर के शाप के कारण वह नारी बन गया ।। ५ ।। राजा के जितने अनुचर थे, वे सारे सैनिक, सेनापति नारी बन गये । अपने सारे अनुचरों को नारी बने देख राजा इला शर्मिन्दा होकर अपने को भूल गया ।। ६ ।। नारी बनकर उसने अपने सारे शरीर को वस्त्र से ढँक लिया और शंकर के चरणों में बड़ी विनती की । तब

सर्व्वाङ्ग वसने ढाके हइया स्त्रीजाति। शंकरेर चरणेते कैल बहु स्तुति
उठ उठ बलिया डाकेन महेश्वर। पुरुष करिते नारि चाह अन्य वर ७
स्त्रीजाति लइया आमि करि जलकेलि। मोरे लज्जा दिते केन एखाने आइलि
तोर सङ्गे आसियाछे यत अनुचर। पुरुष हइया सवे याक् निज घर ८
पुरुष हइया सबे चलि याक् देशे। तुमि थाक नारी हये आपनार दोषे
शुनि राजा महेशेर निष्ठुर वचन। पार्व्वती पाये धरि करिल रोदन ९
पार्व्वती बलेन, मम वाक्य नहे आन। मासेक पुरुष हवे, करिब विधान
मासेक पुरुष हवे, ना हवे अन्यथा। मन दिया शुन तवे बलि एक कथा १०
ये मासे पुरुष हवे रवे सेइखाने। नारी हले से कथा बिस्मृत हवे मने
ये ये मासे पुरुष हइबे नरपति। रमणी-मासेते ताहा हइवे विस्मृति ११
पुरुष हइया राजा गेल निज देशे। नारी हये आरवार बनेते प्रवेशे
पुरुष हइल राजा सह-अनुचर। रमणी हइया राजा भ्रमे एकेश्वर १२
एतेक शुनिया यत सभाजन हासे। नारी हये केमने वञ्चिल एकमासे
पुरुष हइया पुनः किरूपेते वञ्चे। एहेन दारुण शाप कतदिने घुचे १३
राम बले, राजा नारी हैल येइ मासे। लज्जित हइया गिया कानने प्रवेशे
बनेर भितरे आछे ब्रह्म जलाशय। तथा तप करे बुध चन्द्रेर तनय १४

शंकर ने उसे 'उठो, उठो' कहकर पुकारा। उन्होंने कहा— मैं तुम्हें तो पुरुष नहीं वना सकता। तुम दूसरा वर माँगो ॥ ७ ॥ मैं स्त्रियों को साथ लेकर यहाँ जल-केलि किया करता हूँ। मुझे लज्जित करने हेतु तुम यहाँ किसलिए आये। तुम्हारे संग जितने अनुचर आये हैं, वे पुनः पुरुष बनकर अपने-अपने घर चले जायँ ॥ ८ ॥ ये सव पुरुष बनकर अपने देश चले जायें, पर तुम अपने दोष के कारण नारी बनकर रहो। शंकर का निर्मम वचन सुनकर राजा पार्वती के चरण पकड़ रुदन करने लगा ॥ ९ ॥ पार्वती बोली— मेरी बात भी भिन्न नहीं है। पर मैं ऐसी व्यवस्था कर दूँगी कि एक महीना पुरुष बनकर रहो। एक महीना नारी बनकर रहोगे, इसकी अन्यथा नही होगी। मन लगाकर सुनो, एक बात बता रही हूँ ॥ १० ॥ जिस महीने में पुरुष बनोगे, तुम वहीं रहोगे। नारी बन जाने पर वह बात मन से भूल जाओगे। जिस-जिस महीने में पुरुष बनोगे, नारी महीने की बातें उस महीने तुम्हें स्मरण नहीं रहेंगी ॥ ११ ॥ राजा पुरुष बनकर अपने देश में गया। दूसरी बार नारी बनकर वह वन में प्रवेश करता था। अनुचरों के साथ राजा पुरुष वन गया, पर नारी बनकर वह अकेले घूमा करता था ॥ १२ ॥ यह बात सुनकर सारे सभासद हँसते थे, कि नारी बनकर (राजा ने) एक महीना कैसा बिताया? पुनः पुरुष बनकर फिर किस प्रकार दिन बिता रहा है। ऐसा भयंकर पाप कितने दिनों में मिटेगा? ॥ १३ ॥ रामचन्द्र कहते गये— राजा जिस महीने नारी बन जाता था, वह लज्जित होकर वन में प्रवेश कर जाता। उस वन में एक ब्रह्म-जलाशय था। चन्द्र का पुत्र बुध वहाँ तपस्या करते थे ॥ १४ ॥ महामना बुध वहाँ कठोर तप किया करते थे। (उन्हें

करेन कठोर तप बुध महाशय। पूर्णिमार चन्द्र येन हयेछे उदय
रमणी देखिया बाड़े पुरुषेर रङ्ग। बुध-हेन तपस्वीर हैल तपोभङ्ग १५
इलारे सम्भाषे बुध, कामे अचेतन। कार कन्या एकाकिनी करिछ भ्रमण
चन्द्रेर कुमार आमि, बुध नाम धरि। तोमार रूपेते प्राण धरिते ना पारि १६
बुधबाक्य शुनिया इलार हैल हास। बुधेर सहित वने वञ्चे एक मास
पुरुषेर अष्टगुण कामार्थी स्त्रीलोके। बुधेर सङ्गेते रहे शृङ्गार-कौतुके १७
केलिरसे मासेक हइल अवशेष। हइल पुरुष-मास राजार प्रवेश
ना जाने ए-सब तत्त्व चन्द्रेर कुमारे। आरवार तप करे सरोवर तीरे १८
आपनार राज्य राजार हैल स्मरण। पुत्र कन्या जाया भावि करछे रोदन
वनबिन्ध्य-नामे पुत्र आछये आमार। शिशु हये केमने पालिछे राज्यभार १९
भाविते भाविते तार गत एकमास। नारीरूप हये गेल चन्द्रपुत्र-पास
परमासुन्दरी इला हयेछे युवती। रात्रिदिन केलि करे बुधेर संहति २०
दिवानिशि रङ्गरसे दोँहे केलि करे। कतदिने गर्भ हैल इलार उदरे
एकमासे स्त्री हय पुरुष आर मासे। पुरुष-मासेते नाहि याय बुध-पाशे २१
इला-लये गेल बुध आपन भवने। देखिया इलार रूप सुखी मने मने
हइल पुरुष मास आर मासे नारी। इला लये क्रीड़े बुध आपनार पुरी २२

देखकर लगता था) मानो पूर्णिमा का चन्द्रमा उदित हुआ हो। रमणी को देखकर पुरुष की उमंग बढ़ जाती है, बुध जैसे तपस्वी का भी तप भंग हो गया ॥ १५ ॥ काम से अचेत-सा होकर, बुध ने इला को सम्बोधित करते हुए कहा— तुम किसकी कन्या हो, अकेली घूम रही हो! मैं चन्द्रमा का पुत्र हूँ, मेरा नाम बुध है। तुम्हारा रूप देख, मेरे प्राण निकले जा रहे हैं ॥ १६ ॥ बुध के वचन सुनकर इला हँस पड़ी। उसने बुध के साथ वन में एक महीना बिताया। पुरुष की अपेक्षा नारियाँ आठगुनी कामार्थी होती है। वह बुध के संग संभोग-कौतुक करती रही ॥ १७ ॥ केलि-रस में एक महीना निकल गया। राजा का पुरुष महीना आ पहुँचा। चन्द्रमा के कुमार को इन सब तत्त्वों का पता न था। वह पुनः सरोवर के तट पर तप करने लगा ॥ १८ ॥ इधर राजा को अपने राज्य का स्मरण हो आया। अपने पुत्र, कन्या, पत्नी आदि की बात स्मरण कर राजा रुदन करने लगा। वनविंध्य नाम का मेरा पुत्र है, शिशु होने के कारण न जाने वह राज्य-भार का पालन किस तरह से कर रहा है ॥ १९ ॥ सोचते-सोचते उसका एक महीना निकल गया। पुनः नारी-रूप बन जाने पर वह चन्द्र-पुत्र बुध के पास गया। परमसुन्दरी इला युवती बन गयी थी। वह बुध के संग दिन-रात केलि करती थी ॥ २० ॥ दिन-रात वे रंग-रस से केलि करते थे। कुछ दिन बाद इला के उदर में गर्भ रह गया। वह एक महीना स्त्री बन जाता था, दूसरे महीने पुरुष। पुरुष के महीने में वह बुध के पास नहीं जाता था ॥ २१ ॥ बुध इला को अपने भवन में ले [illegible] इला का रूप देख वह मन ही [illegible] खी थे! [illegible] ॥ २ [illegible] पूरे महीने पुनः [illegible] । [illegible] को लेकर

रङ्गरसे भूपतिर एक मास गेल। पुरुष-मासेते राजा स्थानान्तर हैल
नय मासे एक पुत्र प्रसविला इला। परमसुन्दर पुत्र रूपे शशिकला २३
पुरूरवा नाम तार, हैल महातेजा। श्राद्धकाले विप्रभागे करे यार पूजा
आरबार पुरुष हइल दशमासे। ए सकल कथा बुध ना जाने बिशेषे २४
एकादश मासे आरबार हैल नारी। बुधेर सहित बञ्चे हइया सुन्दरी
बारमासे पुरुष हइल आरबार। पुरुष देखिया बुधे लागे चमत्कार २५
जिज्ञासिते इला राजा दिल परिचय। पुरुष जानिया बुधे घृणा बड़ हय
पुरुषे रमणी-ज्ञाने करेछि विहार। उपयुक्त प्रायश्चित्त कि करि इहार २६
द्विजराज चन्द्र, बुध ताहार नन्दन। आदेशेते आइल यतेक मुनिगण
मुनिगण लये बुध करिला युकति। किरूपेते इला राजा पाइबे निष्कृति २७
आमि किसे परित्राण पाव एइ पापे। विवरिया मुनिगण, कहत स्वरूपे
मुनिगण कहे, शुन चन्द्रेर कुमार। अज्ञाने करेछ कर्म्म, कि पाप तोमार २८
अश्वमेध-यागे तुष्ट सकल अमर। अश्वमेध याग कर, इला पावे वर
शंकरेर शापे इलार एतेक दुर्गति। शंकर सन्तुष्ट हैले पावे अव्याहृति २९
बुध बले, युक्ति बटे, ना करि निषेध। बुधेर आश्रमे इला करे अश्वमेध
आपनि आइला शिव यज्ञ देखिवारे। इला राजा पुरुष हइल शिववरे ३०

अपनी पुरी में क्रीड़ा करते रहे ॥ २२ ॥ रंग-रस में राजा का एक महीना निकल गया। पुरुष-मास में वह राजा दूसरे स्थान को चला गया। इसी तरह नौ महीने पर इला ने एक पुत्र को जन्म दिया। वह पुत्र परम सुन्दर, चन्द्रमा की कला जैसा था ॥ २३ ॥ उसका नाम पड़ा पुरूरवा। वह महान् तेजस्वी हुआ। श्राद्ध के समय विप्रगण उसकी पूजा किया करते हैं। दसवें महीने में राजा पुनः पुरुष बन गया। बुध को ये बातें विशेष ज्ञात नहीं थीं ॥ २४ ॥ ग्यारहवें महीने वह पुनः नारी बन गया। सुन्दरी बनकर वह बुध के संग दिन बिताने लगा। बारहवें महीने में वह पुनः पुरुष बन गया। पुरुष को देख बुध को अचरज हुआ ॥ २५ ॥ पूछने पर इला राजा ने अपना परिचय दिया। उसे पुरुष जानकर बुध को बड़ी घृणा हुई। (वह सोचने लगे) मैंने पुरुष को नारी समझकर विहार किया है। अब इसका कौन-सा उपयुक्त प्रायश्चित्त करूँ ? ॥ २६ ॥ चन्द्रमा द्विजराज है, बुध उसका पुत्र है, उसके आदेश से वहाँ अनेक मुनि आये। मुनियों के संग बुध ने परामर्श किया कि राजा इला को किस प्रकार से मुक्ति मिले ॥ २७ ॥ इस पाप से मुझे किस प्रकार से छुटकारा मिले ? हे मुनिगण, आप लोग विस्तारपूर्वक सत्य बताइए। मुनि बोले— चन्द्रमा के कुमार बुध, सुनो, तुमने अनजान में यह कर्म किया है, तब तुम्हें पाप कसा ? ॥ २८ ॥ अश्वमेध यज्ञ से सारे देवता संतुष्ट होते हैं। तुम अश्वमेध यज्ञ करो, इला को वरदान मिलेगा। शंकर के अभिशाप के कारण इला की ऐसी दुर्गति हुई है। यदि शंकर संतुष्ट हों, तो इसे मुक्ति मिल सकती है ॥ २९ ॥ बुध बोले— हाँ, यह युक्ति सही है, मैं इसका निषेध नहीं करता। बुध के आश्रम में इला ने अश्वमेध यज्ञ

यज्ञ साङ्ग करि स्तव करेन विस्तर। तुष्ट हये इलारे महेश दिला वर
पुरुष हइया गेल राज्ये आपनार। आनन्दे आपन राज्य करे आरबार ३१
शंकरेर बरे तार बाड़िल सम्पद्। यज्ञफले भूपति हइल निरापद
श्रीरामेर मुखे शुनि इलार चरित्र। भरत-लक्ष्मण दोँहे हर्षेते मोहित ३२
कृत्तिबास-पण्डितेर अमृत बचन। गाइल उत्तरकाण्डे गीत रामायण

श्रीरामचन्द्रेर अश्वमेध-यज्ञारम्भ

राम बले, अश्वमेध करिलाम सार। अश्वमेध-यज्ञ सम फल नाहि आर १
एत यदि कहिलेन कमललोचन। शुनिया सन्तुष्ट हैला भरतलक्ष्मण
यज्ञ करिबेन, राम ब्रह्मा हरषित। डाक दिया विश्वकर्मे आनिला त्वरित २
ब्रह्मा बले, बिश्वकर्मा, कर संविधान। श्रीरामेर यज्ञस्थान करह निर्म्माण
चलिलेन विश्वकर्म्मा ब्रह्मार बचने। भरत-लक्ष्मण दोँहे आछेन येखाने ३
सेइखाने बिश्वकर्म्मा करिल गमन। हरषित बिश्वकर्म्मे देखि दुइजन
नाना रत्न आनि दिल बिश्वकर्म्मा स्थान। विश्वकर्म्मा यज्ञशाला करेन निर्म्माण ४
भरत-लक्ष्मण-ठाट दुइ अक्षौहिणी। भाण्डार हइते रत्न बहिया ये आनि

किया। उस यज्ञ को देखने हेतु स्वयं शिव पधारे। शिव के वर से राजा इला पुरुष बन गया ।। ३० ।। यज्ञ समाप्त कर उसने बड़ी स्तुति की। तुष्ट होकर महेश ने इला को वरदान दिया। वह पुरुष बनकर अपने राज्य को चला गया। वह पुनः आनन्द से अपना राज्य करने लगा ।। ३१ ।। शंकर के वरदान से उसकी सम्पदा बढ़ गयी। यज्ञ के फलस्वरूप राजा निरापद हो गया। श्रीराम के मुख से इला का चरित्र सुनकर भरत और लक्ष्मण दोनों हर्ष से मोहित हो गये ।। ३२ ।। पंडित कृत्तिवास के वचन अमृत जैसे हैं। उन्होंने उत्तरकांड में गीत-रामायण गायी है।

श्रीरामचन्द्र का अश्वमेध यज्ञ-आरंभ

श्रीराम बोले— मैंने अश्वमेध यज्ञ करने का ही निश्चय किया। अश्वमेध यज्ञ के समान फल और किसी में नहीं है ।। १ ।। जब कमल-लोचन राम ने इतना कहा तो भरत और लक्ष्मण सुनकर संतुष्ट हुए। राम यज्ञ करेंगे, जानकर ब्रह्मा हर्षित हुए। उन्होंने तुरंत विश्वकर्मा को बुलाया ।। २ ।। ब्रह्मा बोले, विश्वकर्मा, तुम उचित व्यवस्था करो। श्रीराम के लिए यज्ञ-भूमि का निर्माण करो। विश्वकर्मा ब्रह्मा के वचन सुनकर चल पड़े और वहाँ पहुँचे जहाँ भरत और लक्ष्मण दोनों थे ।। ३ ।। विश्वकर्मा को आया देखकर दोनों हर्षित हुए। उन्होंने विश्वकर्मा के पास नाना प्रकार के रत्न ला दिये। विश्वकर्मा ने यज्ञशाला का निर्माण किया ।। ४ ।। भरत और लक्ष्मण की दो अक्षौहिणी सेना भंडारों से रत्न

धातु ओ प्रवाल-रत्न शुने येइ देशे। सर्व्वधन वहि आने चक्षुर निमिषे ५
दिल मणि-माणिक्यादि प्रवाल विस्तर। विश्वकर्म्मा यज्ञकुण्ड निर्म्माय सत्वर
कुण्ड चारि-योजन से आड़े परिसर। कुण्ड चारि योजन उभे दीर्घतर ६
करिल योजन छय कुण्डेर मेखला। द्वादश योजन घर बान्धे यज्ञशाला
दधि-दुग्ध-घृतेर करिल सरोवर। तिल यव धान्य मुगे तिन कोटि घर ७
सोणार प्राचीर घर स्वर्ण-आओयारी। स्वर्ण नाट्यशाला वान्धे स्तम्भ सारि सारि
इन्द्र आदि करिया यतेक देवगण। यज्ञघर देखिते करिल आगमन ८
देखिते आसिवे यज्ञ पृथिवीर राजा। ब्रह्मा आदि करिया यतेक आछे प्रजा
देखिते आसिवे यज्ञ पृथिवीर मुनि। ता सवार घर करे मुकुता गाथनि ९
आशी योजनेर पथ करे आयतन। ताहाते विचित्र कुण्ड करिल गठन
एक मासे पुरीखान करिल निर्म्माण। विश्वकर्म्मा चलिया गेलेन निज स्थान १०
इन्द्र यम वरुण यज्ञेर हैल होता। हइल यज्ञेर अग्नि आपनि विधाता
वड़ वड़ यत मुनि आछेन भुवने। एके एके सब मुनि आइल से स्थाने ११
जमदग्नि आइल भार्गव पराशर। सावर्ण कश्यप दुइ एल मुनिवर
भरद्वाज हस्तदीर्घ एल शीघ्रगति। आइल दुर्व्वासा मुनि वड़ क्रोधमति १२
आइल आस्तिक मुनि गौतम ब्राह्मण। मत्स्यकर्ण आइल ऋषि सङ्कोपन

आदि ढो-ढोकर लाने लगी। जिस देश में धातु और प्रवाल आदि रत्नों के रहने की बात सुनते थे वहाँ से पलक मारते ही सारा धन ढोकर ले आते थे ॥ ५ ॥ उन्होंने मणि-माणिक्य-प्रवाल आदि प्रचुर ला दिये, विश्वकर्मा शीघ्रता से यज्ञकुंड का निर्माण करने लगे। उस कुंड का परिसर चौड़ाई में चार योजन था और लम्बाई में वह कुंड चार योजन था ॥ ६ ॥ यज्ञ-कुंड की मेखला छः योजन की बनायी। यज्ञशाला का घर बारह योजन में बनाया। दही, दूध, घी के तो सरोवर बना दिये। तिल, जौ, धान, मूँग आदि के तीन करोड़ घर बनाये ॥ ७ ॥ उन्होंने सोने की दीवारों वाले घर बनाये और पंक्तियों में खंभे बनाकर स्वर्ण-नाट्य-शाला बनायी। इन्द्र आदि समेत जितने देवगण थे, वे सभी यज्ञ का भवन देखने के लिए आये ॥ ८ ॥ पृथ्वी के राजागण यज्ञ देखने आयेंगे, ब्रह्मा से लेकर सारी प्रजा भी आयेगी, पृथ्वी पर रहनेवाले मुनिगण भी यज्ञ देखने आयेंगे, उन सबके लिए मोतियों से गूँथकर घर बनाये ॥ ९ ॥ अस्सी योजन लम्बाई का मार्ग बनाया, उसमें (जगह-जगह) विचित्र कुण्ड बनाये! एक महीने में उन्होंने पुरी का निर्माण किया। इसके पश्चात् विश्वकर्मा अपने स्थान को चले गये ॥ १० ॥ उस यज्ञ में इन्द्र, यम, वरुण होता बने। स्वयं विधाता (ब्रह्मा) यज्ञ की अग्नि बने। संसार में जितने बड़े-बड़े मुनि थे, एक-एक कर सारे मुनि वहाँ आये ॥ ११ ॥ जमदग्नि, भार्गव, पराशर आये। सावर्ण और कश्यप ये दो मुनि भी आये। भरद्वाज और हस्तदीर्घ मुनि शीघ्रता से आये। बड़े क्रोधित विचार वाले दुर्वासा मुनि भी आये ॥ १२ ॥ आस्तिक मुनि,

पर्व्वत हइते एल दक्ष महामुनि । आइल ऐषिक कुशध्वज महाज्ञानी १३
बिष्णुपद मुनि एल और्व्व ओ च्यवन । सनातन सनक आइल दुइजन
करिल शाण्डिल्य गर्ग-मुनि आगुसार । आइल कपिल मुनि बिष्णु-अवतार १४
जैमिनि दधीचि मुनि एल शरभङ्ग । चित्रबिक कौशिक ये आइल मातङ्ग
आइल देवर्षि यत परम-आनन्द । बिभाण्डक ऋष्यशृङ्ग आर शतानन्द १५
बिश्वश्रबा आइलेन आर जह्नु मुनि । पृथिबीर मुनि एल अपूर्व्व काहिनी
यत मुनि आइलेन, नाम नाहि जानि । आइलेन आदि कबि बाल्मीकि आपनि १६
मुनिगण सकले करिल वेदध्वनि । यज्ञ करिबारे राम बैसेन आपनि
सस्त्रीक हइया यज्ञ करे एइ स्थाने । स्वर्णसीता आनिल ये शास्त्रेर बिधाने १७
सर्व्वत्र हइल से यज्ञेर निमन्त्रण । पात्रापात्र से यज्ञे आइल सर्व्वजन
सुग्रीव-अङ्गद-आदि शाखामृगगण । महेन्द्र देवेन्द्र आर सुषेण-नन्दन १८
शरभ कुमुद आर मन्त्री जाम्बुवान । नल नील आइलेन वीर हनुमान
सागरेर पार गेल एइ निमन्त्रण । तिन कोटि ज्ञातिसह एल बिभीषण १९
देशे देशे चलिल यज्ञेर निमन्त्रण । निमन्त्रण पाइया आइल राजगण
मिथिला हइते एल जनक राजर्षि । महाराज शाल्व एल राढ़देश-बासी २०
नेपालेर राजा एल दुर्ज्जय दुर्द्धर । राजा गिरिराज्येर आइल धुरन्धर
अङ्गेर अधिप एल लोमपाद-नाम । बेहारेर राजा एल, सीता गिरि धाम २१

गौतम ब्राह्मण, सदा छिपे रहनेवाले ऋषि मत्स्यकर्ण भी आये। पर्वत पर से महामुनि दक्ष आये, महाज्ञानी ऐषिक और कुशध्वज भी आये ।। १३ ।। मुनि विष्णुपद, और्व और च्यवन आये। सनक-सनातन दोनों आये। शांडिल्य और गर्ग मुनि आगे बढ़कर आये। विष्णु के अवतार कपिल मुनि आये ।। १४ ।। जैमिनी, दधीचि मुनि और शरभंग मुनि आये। चित्रविक, कौशिक और मातंग मुनि आये। सारे देवर्षि परम आनन्द से आये। विभाण्डक, ऋष्यशृग और शतानन्द भी आये ।। १५ ।। विश्वश्रवा और जह्नु मुनि भी आये। संसार के सारे मुनि वहाँ जैसे उपस्थित हुए वह अपूर्व कहानी है। जितने मुनि आये उन सबके नाम कोई नहीं जानता था। आदिकवि वाल्मीकि स्वयं वहाँ आये ।। १६ ।। सारे मुनियों ने वेदध्वनि की। रामचन्द्र स्वय यज्ञ करने बैठे। वे सस्त्रीक वहाँ यज्ञ करने लगे। शास्त्र के विधानानुसार वहाँ सोने की सीता को लाया गया ।। १७ ।। उस यज्ञ का निमंत्रण सर्वत्र दिया गया। उस यज्ञ में पात्र-अपात्र सारे जन वहाँ उपस्थित हुए। सुग्रीव, अंगद आदि वानर, महेन्द्र, देवेन्द्र और सुषेण-नन्दन ।। १८ ।। शरभ, कुमुद और मंत्री जाम्बवान, नल-नील, वीर हनुमान भी आये। यज्ञ का यह निमंत्रण सागर के पार लंका में भी भेजा गया। अपने तीन करोड़ कुटुम्बी जनों के साथ विभीषण भी आया ।। १९ ।। देश-देश में यज्ञ का निमंत्रण भेजा गया। निमंत्रण पाकर राजागण आये। मिथिला से राजर्षि जनक आये। राढ़ देश-निवासी महाराज शाल्व आये ।। २० ।। दुर्जेय, दुर्धर्ष नेपाल के राजा आये। गिरि राज्य का राजा धुरंधर भी आया। अंग देश का

विजयनगर काञ्ची कलिङ्ग कर्णाट। चौदिकेर राजा एल, सङ्गे कत ठाट
राजगण थाके सदा श्रीरामेर काछे। आरो यत नृपगण एल यत आछे २२
हेलङ्ग तेलङ्ग देश कलिङ्ग गान्धार। आटाइश कोटि आसे पश्चिमेर सार
सिंहल सिद्धान्त देशे मनु नामे पुरी। आइल सातश लक्ष अयोध्यानगरी २३
यतेक नृपति से उत्तर देशे वैसे। आइला सत्तर लक्ष श्रीरामेर पाशे
यत यत राजा आछे भारत भितर। राजचक्रवर्त्ती राम सवार उपर २४
आइल अनेक राजा रामेर निकटे। रामेर आज्ञाय तारा दासवत् खाटे
पृथिवीते राजा आछे अयुत अयुत। श्रीरामेर द्वारे आसि हइल मजुत २५
अवधुत संन्यासी आइल देशान्तरी। गन्धर्व्व किन्नर एल स्वर्गविद्याधरी
पृथिवीते यत छिल दरिद्र ब्राह्मण। यज्ञेर दक्षिणा निते कैल आगमन २६
स्वर्गलोक मर्त्यलोक आइल पाताल। देवलोक नरलोक हइल मिशाल
त्रिभुवने यत लोक आइल अपार। शत्रुघ्न मथुरा हैते हइल आगुसार २७
वशिष्ठ विशिष्ट आर सुमन्त्र सारथि। यज्ञेर यतेक द्रव्य करिल सङ्गति
यव धान गोधुम ये आतप तण्डुल। दधि दुग्ध घृत मधु आनिल बहुल २८
सूर्य्यसम सभाय वसिल सव ऋषि। पर्व्वत-प्रमाण चाहे तिल राशि राशि
तिन कोटि वृन्द चाहे श्रीफलेर काठ। आइल सकल द्रव्य, यथा यज्ञवाट २९

लोमपाद नाम का राजा आया। सीतागिरि-धाम का विहार का राजा आया ॥ २१ ॥ विजयनगर, कांची, कलिंग, कर्णाटक चारों दिशाओं के राजा आये। उनके साथ कितनी ही सेना थी। राजागण सदा श्रीरामचन्द्र के साथ रहते थे। इनके अलावा और भी जितने राजा थे सभी आये ॥ २२ ॥ हैलंग, तैलंग देश, कलिंग, गांधार आदि के पश्चिम के जो श्रेष्ठ राजा थे वे अट्ठाईस करोड़ राजा आये। सिंहल-सिद्धान्त देश में मनु नाम की पुरी से सात सौ लाख राजा अयोध्या नगरी आये ॥ २३ ॥ उत्तर देश में जितने नृपति रहते थे वे सत्तर लाख राजा श्रीराम के पास आये। भारत में जितने राजा हैं, राज-चक्रवर्ती रामचन्द्र उन सबसे ऊपर हैं ॥ २४ ॥ रामचन्द्र के यहाँ अनेक राजा आये। रामचन्द्र के आदेश से वे दासवत् काम करते थे। पृथ्वी पर लाखों राजा रहे। उस यज्ञ में वे सभी रामचन्द्र के द्वार पर आ पहुँचे ॥ २५ ॥ अवधूत संन्यासी, प्रवासी जन, गंधर्व, किन्नर, स्वर्ग की विद्याधरियाँ, आदि सभी आये, पृथ्वी पर जितने दरिद्र ब्राह्मण थे, वे सभी यज्ञ की दक्षिणा लेने वहाँ उपस्थित हुए ॥ २६ ॥ स्वर्गलोक, मर्त्यलोक, पाताललोक (के वासी) आप पहुँचे। देवलोक, नरलोक (के जन) वहाँ मिलकर एकाकार हो गये। त्रिभुवन के अपार लोग वहाँ आये। शत्रुघ्न मथुरा से आगे बढ़ वहाँ पहुँचे ॥ २७ ॥ विशिष्ट मुनि वशिष्ठ और सारथी सुमंत्र ने यज्ञ की सारी सामग्रियाँ इकट्ठी की। जौ, धान, गेहूँ, अरवा चावल, दही, दूध, घी आदि प्रचुर परिमाण में लाये गये ॥ २८ ॥ सारे ऋषि सभा में सूर्य के समान (ज्योतिष्मान होकर) बैठे। (हवन हेतु) पर्वत जैसी तिल की ढेरियाँ उन्होंने माँगी। तीन करोड़ मुनियों को

बंशेर प्रधान पात्र सुमन्त्र सारथि। इङ्गिते सकल द्रब्य आने शीघ्रगति
यखन भरत येइ आज्ञा दान करे। सेइ द्रब्य शत्रुघ्न योगाय सत्वरे ३०
शत्रुघ्नेर कटक ये दुइ अक्षौहिणी। यज्ञेर यतेक द्रब्य बहिल आपनि
ये राक्षस देखिले पलाय मुनिगण। से राक्षसे मुनिदेरधोयाय चरण ३१
नृत्य गीत मङ्गल ये नाना बाद्य शुनि। अखिल भुवने हय रामजय-ध्वनि
बहु यज्ञ करिल भूपति कोटि कोटि। काहारो ना हइल एमन परिपाटि ३२

यज्ञाश्व-रक्षार्थ शत्रुघ्नेर यात्रा

तुरङ्ग नगर हैते आइल तुरङ्ग। अश्व सओयार कत शत तार सङ्ग
श्यामबर्ण अश्व, श्वेतवर्ण चारि खुर। नाना अलङ्कार शोभे सुहार केयुर १
लेज शोभा करे, येन धवल चामर। कपाले चामर तार अति शोभाकर
सब्बं गाये खामि-खामि सुवर्ण अद्भुत। जलदमण्डले येन खेलिछे विद्युत २
स्वर्णबर्ण कर्ण तार, धरे नाना ज्योति। दुइ चक्षु ज्वले येन रतनेर बाति
गले लोमाबलि येन मुकुतार झारा। राङ्गा जिह्वा मेले येन आकाशेर तारा ३

दस अरब श्रीफल (बेल) की लकड़ियों की आवश्यकता हुई। यज्ञ में जो भी आवश्यक थी सारी सामग्रियाँ लायी गयी ॥ २९ ॥ सारथी सुमंत्र रघुवंश के मंत्रियों में प्रमुख था। संकेत मात्र से वह शीघ्रता से सारी सामग्री जुटा देता था। भरत जब जो आज्ञा देते थे, वह सामग्री शत्रुघ्न तुरंत जुटा देते थे ॥ ३० ॥ शत्रुघ्न के दो अक्षौहिणी सैनिक यज्ञ की सारी सामग्रियाँ स्वयं ढो रहे थे। जिन राक्षसों को देखते ही मुनिगण भाग जाते थे, वे राक्षसगण मुनियों के चरण धो रहे थे ॥ ३१ ॥ वहाँ नृत्य-गीत तथा अनेक वाद्ययंत्रों की ध्वनियाँ, गूँज रहीं थी, सारे भुवन में रामचन्द्र का जय-नाद हो रहा था। करोड़ों राजाओं ने अनेकों यज्ञ किये हैं पर किसी का यज्ञ इतने सुचारू रूप से नहीं हुआ था ॥ ३२ ॥

यज्ञ के घोड़े की रक्षा हेतु शत्रुघ्न का जाना

तुरंग-नगर से यज्ञ का अश्व लाया गया। उसके संग कितने सौ घुड़सवार थे। श्यामवर्ण उस अश्व की चारों टापें श्वेत वर्ण की थीं; वह सुन्दर हार, केयूर आदि विविध आभूषणों से सुशोभित था ॥ १ ॥ उसकी पूँछ श्वेत चँवर की भाँति शोभित थी, उसके कपाल पर लम्बे केश बड़े शोभायमान हो रहे थे। उसके समूचे शरीर पर अद्भुत रूप से स्तर-स्तर में सोना मंडित था। लगता था, मानो मेघ-मंडल पर विद्युत् खेल रही हो ॥ २ ॥ उसके कानों का वर्ण सुनहला था, जो नाना प्रकार की ज्योति धारण किये हुए था। उसके दोनों नेत्र रत्नों के प्रदीप की भाँति दमक रहे थे। उसके गले पर के लम्बे केश मोतियों की लड़ियों जैसे थे। वह लाल जीभ ऐसे निकालता था, मानो आकाश का तारा हो ॥ ३ ॥ उस अश्व के सिर पर विजय-पत्र का लेख था। रामचन्द्र

जयपत्र घोटकेर कपाले लिखन। दिलेन शत्रुघ्न बीरे अश्वेर रक्षण
श्रीराम वलेन शुन शत्रुघन भाइ। यज्ञपूर्णकाले येन एइ अश्व पाइ ४
दुइ अक्षौहिणी ठाटे यान शत्रुघन। रङ्गेते सङ्गेते चले शत शत जन
वसिलेन यज्ञस्थाने राम मुनिवेशे। छाड़िया दिलेन अश्व भ्रमे देशे देशे ५
पूर्व्वदेशे गेल अश्व बहुदूर पथ। नद नदी एड़ाइया उठिल पर्व्वत
अश्वेर पश्चाते यान बीर शत्रुघन। पर्व्वत उपरे भ्रमे स्वेच्छाय गगन ६
सेइ पर्व्वतेर नाम विरूपाक्ष गिरि। महाबल से राजा पर्व्वत नामधारी
राजपुरे अग्निगड़ ज्वले चारिभिते। गड़ लङ्घि यज्ञ अश्व चले आनन्देते ७
गड़ेर भितरे अश्व करिल प्रवेश। हेनकाले शत्रुघ्न गेलेन सेइ देश
सकल कटके अश्व चारिदिके घेरे। शत्रुघ्न कटक लये रहिल बाहिरे ८
शत्रुघ्नेर कटक ये दुइ अक्षौहिणी। निभाइल गड़ेर से सकल आगुनि
गड़मध्ये प्रवेश करेन शत्रुघन। शत्रुघ्नेर सहित राजार वाजे रण ९
रामसम शत्रुघन बीर-अवतार। शत्रुघ्नेर बाणेते राजार चमत्कार
महावल शत्रुघ्न बाणेर जाने सन्धि। हाते गले से राजारे करिलेन बन्दी १०
बान्धिया पाठाय तारे बीर शत्रुघन। राम-दरशने तार बन्धन-मोचन
पूर्व्वदिक जय करि एल शत्रुघन। उत्तरदिकेते अश्व करिल गमन ११

ने उस अश्व की रक्षा का भार शत्रुघ्न पर सौंपा। श्रीराम ने कहा—भाई शत्रुघ्न, सुनो, मैं यही चाहता हूँ कि यज्ञ की पूर्णता के समय यह अश्व यहाँ मिल जाए ॥ ४ ॥ शत्रुघ्न दो अक्षौहिणी सेना के साथ चले। उनके संग सैकड़ों लोग बड़ी उमंग में भरकर चले। मुनि-वेश धारणकर राम यज्ञ-स्थान में बैठे। उन्होंने अश्व छोड़ दिया, वह देश-देश में भ्रमण करने लगा ॥ ५ ॥ वह अश्व बहुत दूर का मार्ग पार कर पूर्व-देश में गया। नद-नदियों को पार कर पर्वत पर चढ़ गया। उस अश्व के पीछे-पीछे वीर शत्रुघ्न चले, वह स्वेच्छागामी अश्व पर्वत पर भ्रमण करने लगा ॥ ६ ॥ उस पर्वत का नाम विरूपाक्षगिरि था। पर्वत नामधार वह राजा महावली था। उस राज-पुरी के चारों ओर अग्नि-गढ धधक रहा था। उस गढ़ को लाँघकर वह यज्ञ-अश्व बड़े आनन्द से आगे चला ॥ ७ ॥ उस अश्व ने गढ़ के भीतर प्रवेश किया। उस समय शत्रुघ्न भी उस देश में पहुँच गये। वहाँ की सेना ने उस अश्व को चारों ओर से घेर लिया। शत्रुघ्न अपनी सेना के संग गढ़ के बाहर रहे ॥ ८ ॥ शत्रुघ्न की दो अक्षौहिणी सेना थी। उस सेना ने गढ़ की आग बुझा डाली। इसके पश्चात् शत्रुघ्न ने गढ़ के भीतर प्रवेश किया। शत्रुघ्न के साथ वहाँ के राजा की लड़ाई छिड़ गयी ॥ ९ ॥ शत्रुघ्न श्रीराम के समान ही वीर-अवतार थे। शत्रुघ्न के बाणों (की बौछार) से राजा विस्मित रह गया। महाबली शत्रुघ्न बाण चलाने की कला में दक्ष थे। उन्होंने उस राजा के हाथ और गले को बाँधकर बंदी बना लिया ॥ १० ॥ वीर शत्रुघ्न ने उसे बंदी बनाकर राम के समक्ष भेज दिया। राम के दर्शन के पश्चात् ही उसे बंधन से छुटकारा मिला। इस प्रकार शत्रुघ्न ने

उत्तरदिकेते अश्व गेल वायुगति। शत्रुघ्न कटक लये ताहार संहति
दिग्‌दिगन्तरे अश्व याय देशे देशे। छमासेर पथ याय चक्षुर निमिषे १२
जयपत्र तुरङ्गेर कपाले लिखन। अश्व देखि प्राण उड़े यत राजगण
मिलि सकल राजा आसिया तथाइ। पराजय मानिलेक शत्रुघ्नेर ठाइ १३
अश्व गेल हिमालय पर्व्वतेर शेष। सेइ देशे राजा येइ, विक्रमे विशेष
अश्व देखि राजार धरिते गेल साध। राजासह शत्रुघ्नेर लागिल विवाद १४
केह कारे नाहि पारे, तुल्य दुइजन। दोँहाकार वाण गिया छाइल गगन
वाछिया वाछिया वाण एड़े शत्रुघन। से वाण फुटिया राजा हय अचेतन १५
ना पारे कहिते कथा, अत्यन्त कातर। तारे वान्धि पाठाइल अयोध्यानगर
दर्शन दिलेन तारे कमललोचन। ताहाते हइल तार वन्धन-मोचन १६
से घोटक आटक ना हय कोन कोटे। पश्चिमदिकेते अश्व तारा सम छोटे
एक दिके घोटक ना जाय दुइबार। पश्चिमदिकेते गेल सिन्धुनद पार १७
शत्रुघन फाफर अश्वे नाहि देखे। सिन्धुनद पारे गेल सकल कटके
विकृत-आकार तारा, हाते चेरा वाँश। हाती घोड़ा मारि खाय यत रक्तमांस १८

पूर्व दिशा में विजय कर लिया, अब वह अश्व उत्तर दिशा की ओर चला ॥ ११ ॥ वह अश्व वायु गति से उत्तर दिशा की ओर गया। शत्रुघ्न सेना ले उसके संग गये। वह अश्व दिग्-दिगन्त में चारों ओर देश-देश में पहुँचता। वह छः महीने का मार्ग पलक मारते पार कर जाता था ॥ १२ ॥ उस अश्व के सिर पर विजय-पत्र का लेख था। उस अश्व को देखकर सारे राजा हवा हो जाते थे। अंत में सभी राजा वहाँ मिलकर शत्रुघ्न के पास आये और पराजय स्वीकार किया ॥ १३ ॥ अब वह अश्व हिमालय पर्वत के सिरे पर जा पहुँचा। उस देश का जो राजा था वह वीरता में बढ़ा-चढ़ा था। उस अश्व को देख राजा को पकड़ने की इच्छा हुई। तब राजा के संग शत्रुघ्न की लड़ाई होने लगी ॥ १४ ॥ कोई किसी को हरा नहीं पाता था, दोनों ही बराबर थे। दोनों के छोड़े बाणों ने आकाश को ढँक लिया शत्रुघ्न चुन-चुनकर बाण छोड़ने लगे; उन बाणों से बिधकर राजा अचेत हो गया ॥ १५ ॥ वह बात कर नहीं पाता था, अत्यन्त कातर हो उठा। शत्रुघ्न ने उसे बंदी कर अयोध्यापुरी भेज दिया। कमललोचन रामचन्द्र ने जब उसे दर्शन दिया, तभी उसे बंधन से छुटकारा मिला ॥ १६ ॥ उस अश्व को किसी क़िले में बंदी नहीं रखा जा सकता था। वह अश्व पश्चिम दिशा में तारा (उलका) की भाँति दौड़ने लगा। एक ही दिशा में वह अश्व दूसरी बार नहीं जाता था। वह पश्चिमी दिशा में सिन्धुनद पारकर आगे गया ॥ १७ ॥ (वहाँ अश्व ओझल हो गया) अश्व को देख न पाकर शत्रुघ्न संकट में पड़ गये। सारी सेना को लेकर वे सिंधुनद के पार चले गये। वहाँ के लोग विकृत आकार वाले थे, उनके हाथों में फटे बाँस थे। वे हाथी-घोड़ों को मारकर उनके सारे रक्त-मांस खा डालते

पिशाच-भोजन आर पिशाच आचार। जीब-जन्तु मारि तारा करये आहार
सकल व्याधेते घोड़ा वेड़े चारिभिते। कुपिल शत्रुघ्न वीर धनुर्व्बाण हाते १६
महाबल शत्रुघन वीर अबतार। एकबाणे सब व्याध करिल संहार
तिनदिक शत्रुघन करि आसे जय। अश्व लये शत्रुघन यज्ञ-काछे जाय २०

लव-कुश कर्त्तृक यज्ञाश्व-वन्धन

त्रैलोक्य-विजय यज्ञ अति परिपाटि। आतपतण्डुले होम करे कोटि कोटि
लक्ष लक्ष शुभ्र वस्त्र ब्राह्मणेर हाते। इन्द्र यम वरुण यज्ञेर चारिभिते १
प्राय यज्ञ-समापन हय एइक्षणे। दैवेर निर्व्बन्ध, अश्व गेल से दक्षिणे
तुरङ्ग पवनवेगे करिल प्रयाण। उपस्थित हइल वाल्मीकि मुनि स्थान २
ये दिन या हबे, ताहा मुनि सब जाने। लव-कुश दुइ भाये डाक दिया आने
मुनि बले, लव-कुश, शुनह बिशेष। तपस्या करिते याइ चित्रकूट देश ३
तपोबन रक्षा कर भाइ दुइ जन। तथाय बिलम्ब मम हवे बहुदिन
कारो सङ्गे ना करिह वाद बिसंवाद। मुनि सब जाने, यत पड़िवे प्रमाद ४
दुइ भाइ प्रणाम करिल करपुटे। शिष्यगण-सह मुनि गेल चित्रकूटे

थे ॥ १८ ॥ उनका भोजन पैशाचिक था, आचार भी पैशाचिक था। वे जीव जन्तुओं को मारकर खा डालते थे। उन सारे व्याधों ने यज्ञ के अश्व को चारों ओर से घेर लिया। तब वीर शत्रुघ्न कुपित होकर हाथ में धनुष-बाण उठा लिया ॥ १९ ॥ महाबली शत्रुघ्न वीर-अवतार थे। उन्होंने एक ही बाण से सारे व्याधों का संहार कर डाला। शत्रुघ्न ने तीन दिशाओं में विजय प्राप्त किया। इसके पश्चात् शत्रुघ्न उस अश्व के साथ यज्ञ-भूमि को चल पड़े ॥ २० ॥

लव-कुश द्वारा यज्ञ के अश्व का बाँधा जाना

श्रीरामचन्द्र का वह त्रैलोक्य-विजय यज्ञ बड़े सुचारु रूप से हो रहा था। करोड़ों होता अरवा चावल से होम कर रहे थे। ब्राह्मणों के हाथों में लाखों श्वेत-वस्त्र थे। इन्द्र, यम, वरुण उस यज्ञ के चारों ओर विराजित थे ॥ १ ॥ उसी समय यज्ञ लगभग समाप्ति पर था। दैवयोग से वह अश्व दक्षिण दिशा में चल पड़ा। वह अश्व पवन-वेग से चल पड़ा और वाल्मीकि मुनि के आश्रम में पहुँच गया ॥ २ ॥ जिस दिन जो कुछ होनेवाला है, मुनि वाल्मीकि सब जानते थे। उन्होंने लव-कुश दोनों भाइयों को बुलवाया। मुनि बोले, लव-कुश, मेरी विशेष बात सुनो, मैं तपस्या करने हेतु चित्रकूट देश में जा रहा हूँ ॥ ३ ॥ तुम दोनों भाई तपोवन की रक्षा करते रहना, वहाँ से (आने में) मुझे अनेक दिन विलम्ब होगा। तुम किसी के संग वाद-विवाद न करना। जो संकट आनेवाला था, मुनि सब जानते थे ॥ ४ ॥ तब दोनों भाइयों ने मुनि को हाथ जोड़कर प्रणाम किया। शिष्यों के साथ मुनि चित्रकूट चले गये।

बार शत शिष्यसह गेल मुनिवरे। दुइ भाइ खेला करे धनुर्व्वाण-करे ५
धनुर्व्वाण-हाते दुइ भाइ खेला खेले। मृग पक्षी सब विन्धे बसि बृक्षतले
सन्धान पुरिया दुइ भाइ एड़े बाण। देश-देशान्तरे बाण भ्रमे स्थाने-स्थान ६
नद-नदी बिन्धे, आर बिन्धे ये पर्व्वत। एकदिने याय बाण छ दिनेर पथ
षट्चक्र बाण ये वेड़ाय देशे-देशे। लक्ष-लक्ष मृग मारि पुनः तूणे आसे ७
एमन बाणेर शिक्षा नाहि त्रिभुबने। केबा शिखाइल बाण, कोथा हैते जाने
दुइ भाइ बृक्षतले नाना खेला खेले। हेनकाले अश्व एल से गाछेर तले ८
अश्व देखि हरषित हइल दुइजन। जयपत्र भाले तार देखिल लिखन
राजा दशरथ जन्म निला सूर्य्यबंशे। तिनि सत्य पालिया गेलेन स्वर्गबासे ९
तार पुत्र रघुनाथ भुबन-भितरे। अयोध्याय राज्य करे चारि सहोदरे
श्रीराम लक्ष्मण ओ भरत शत्रुघन। अश्वमेध श्रीराम करेन आरम्भन १०
से अश्वमेधेर अश्व राखे शत्रुघन। दुइ अक्षौहिणी ठाट ताहार भिड़न
जयपत्र देखि दुइ भाइ कोपे ज्वले। साहस करिया घोड़ा बान्धे बृक्षमूले ११
दुइ अक्षौहिणी अश्वे ना पारे राखिते। हेन अश्व दुइ भाइ बान्धे भालमते
अश्व बान्धि आर काछे गेल दुइजन। मिष्टान्न प्रभृति दोँहे करिल भोजन १२

बारह सौ शिष्यों के साथ मुनिवर चले गये। दोनों भाई हाथों में धनुष-बाण लेकर खेल करने लगे ॥ ५ ॥ हाथों में धनुष-बाण लेकर दोनों भाई खेल खेल रहे थे। वे वृक्षों के नीचे बैठे मृग-पक्षी आदि को बेध डालते थे। निशाना लगाकर दोनों भाई बाण छोड़ते। वे बाण देश-देशान्तर में जगह-जगह चक्कर लगाते ॥ ६ ॥ वे नद-नदियों, पर्वतों आदि को बेध डालते थे। वे बाण छः दिन का मार्ग एक ही दिन में पार कर जाते थे। उनके षट्चक्र बाण देश-देश में चक्कर लगाते और लाखों मृगों को मारकर पुनः लौटकर तूण में आ जाते ॥ ७ ॥ ऐसी बाण-विद्या की शिक्षा त्रिभुवन में और कहीं नहीं थी। किसने यह बाण चलाना सिखाया, भला कोई कैसे जानता ? दोनों भाई वृक्ष के नीचे बैठ, तरह-तरह के खेल खेला करते। उसी समय वह अश्व उस वृक्ष के नीचे पहुँचा ॥ ८ ॥ अश्व को देख वे दोनों हर्षित हो उठे। उन दोनों ने उसके सिर पर विजय-पत्र का लेख देखा। (उस पर लिखा था) राजा दशरथ का जन्म सूर्यवंश में हुआ था, जो अपने तीन प्रणों का पालन कर स्वर्गवासी हो गये ॥ ९ ॥ संसार में उनके पुत्र रघुनाथ हैं। वे चारों भाई श्रीराम-लक्ष्मण-भरत और शत्रुघ्न अयोध्या में राज्य कर रहे है। महाराज श्रीरामचन्द्र ने अश्वमेध यज्ञ प्रारंभ किया है ॥ १० ॥ उस अश्वमेध यज्ञ के अश्व की रक्षा शत्रुघ्न कर रहे है, उनके साथ दो अक्षौहिणी सेना (शत्रुओं से) लड़ने के लिए है। उस विजय-पत्र को देखकर दोनों भाई क्रोध से जल उठे। उन दोनों ने साहस से उस घोड़े को वृक्ष की जड़ में बाँध दिया ॥ ११ ॥ जिस अश्व को दो अक्षौहिणी सेना रोक नहीं पाती थी, उस अश्व को दो भाइयों ने भलीभाँति बाँध डाला। अश्व को बाँधकर

लव-कुशेर सहित युद्धे शत्रुघ्नेर पतन

श्रीरामे बलेन, अश्व आन शत्रुघन। यज्ञे साङ्गे पूर्णाहुति दिब त एखन
सौमित्रिरि आगे दूत कहे बारबार। महाराज, अश्व बन्दी हइल तोमार १
शुनिया सौमित्रि वीर करेन विषाद। बिधिर निर्व्वन्धे किबा पड़िल प्रमाद
बिषम दक्षिण-दिक बड़इ संकट। कोन् बीर यावे आजि ताहार निकट २
अनेक शक्तिते आमि मारिनु लवण। ना जानि काहार सने हय पुनः रण
एतेक चिन्तिया तबे बीर शत्रुघन। अश्वेर उद्देश-हेतु करिल गमन ३
अश्व लये दुइ भाइ खेले बारेबार। लव-कुशे देखिया लागे चमत्कार
लब-कुश खेला करे देखि शत्रुघन। जिज्ञासा करये, अश्व बान्धे कोन् जन ४
कोन् बेटा करियाछे मरिबार साध। सवंशे मरिते श्रीरामेर सङ्गे वाद
शत्रुघ्नेर कथा शुनि दुइ भाइ भाषे। कि नाम धरह तुमि, थाक कोन् देशे ५
शत्रुघ्न बलेन, मम जन्म सूर्य्यवंशे। चारिभाइ थाकि मोरा अयोध्या-प्रवेशे
दाशरथि आमरा ये भाइ चारिजन। श्रीराम लक्ष्मण आो भरत शत्रुघन ६
स्वयं विष्णु रघुनाथ त्रिलोक विजयी। रामेर विक्रम-कथा शुन तबे कहि
रामेर बाणेते मरे लङ्कार रावण। मरिल आमार बाणे दुर्ज्जन लवण ७

वे दोनों माँ के पास चले गये और (माँ से लेकर) दोनों ने मिष्टान्न आदि भोजन किया ॥ १२ ॥

लव-कुश के संग युद्ध में शत्रुघ्न का गिरना

श्रीराम बोले— शत्रुघ्न, अश्व को ले आओ। यज्ञ पूरा हो जाने पर अब मैं पूर्णाहुति दूँगा। उधर सुमित्रानन्दन शत्रुघ्न से दूत बार-बार कह रहा था— महाराज, आपका अश्व तो बंदी हो गया है ॥ १ ॥ यह सुनकर वीर शत्रुघ्न विषाद-मग्न हो उठे। सोचने लगे— विधि के विधान से यह कोई विपत्ति आ पड़ी है। दक्षिण दिशा बड़ी विषम है, उधर बड़े संकट रहते हैं। उसके पास आज कौन वीर जायेगा ? ॥ २ ॥ बड़ी शक्ति लगाकर मैंने लवण को मारा है, अब पुनः किसके साथ संग्राम करना पड़े, कौन जाने ? इतना सोचकर वीर शत्रुघ्न ने अश्व के उद्देश्य से प्रस्थान किया ॥ ३ ॥ उधर उस अश्व को लेकर वे दोनों भाई बार-बार खेल रहे थे। लव-कुश को देखकर शत्रुघ्न को विस्मय हुआ। लव-कुश को खेल करते देखकर शत्रुघ्न ने पूछा— अश्व को किस व्यक्ति ने बाँधा है ? ॥ ४ ॥ किस दुष्ट ने मरने की साध की है ? सवंश मारे जाने के लिए ही उसने श्रीराम से विवाद किया है। शत्रुघ्न की बात सुनकर दोनों भाई कहने लगे— तुम्हारा नाम क्या है ? किस देश में रहते हो ? ॥ ५ ॥ शत्रुघ्न बोले— मेरा जन्म सूर्यवंश में हुआ है। हम चार भाई अयोध्या प्रदेश में रहते हैं। हम श्रीराम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न चारों भाई राजा दशरथ के पुत्र हैं ॥ ६ ॥ रघुनाथ त्रिलोक-विजयी रामचन्द्र स्वयं विष्णु हैं। सुनो, तुम्हें रामचन्द्र के पराक्रम की कथा सुनाता हूँ।

जेष्ठ भाइ आमार ये रणेते पण्डित। तार बाणे मरे अतिकाय इन्द्रजित
मरिल ये सब बीर, त्रिभुवन जिने। आर कोन् बीर युझे मोसबार सने ८
एतेक बड़ाइ करे बीर शत्रुघन। रुषिया से लव-कुश करिछे तर्ज्जन
चारि भाइ तोमरा, आमरा दुइ भाइ। आजि अश्व लये याओ, मोरा ताइ चाइ ९
मरिबारे केन एले मोदेर निकटे। केमने लइबे अश्व पड़िले संकटे
खुड़ा भाइपोते गालि, केह नाहि चिने। गालागालि महायुद्ध बाजे तिनजने १०
नाना अस्त्र दुइ भाइ फेले चारिभिते। शत्रुघ्न कातर अति, ना पारे सहिते
शत्रुघन बले, सैन्य कोन् कर्म्म कर। सकल कटके बेड़ि दुइ शिशु मार ११
दुइ अक्षौहिणी छिल शत्रुघ्नेर ठाट। लव-कुशे बेड़िया करिल बन्ध बाट
लव-कुश बले, बीर ना हओ विमुख। सकल कटके मारि, देखह कौतुक १२
शत्रुघ्न बलेन, देखि तोमरा बालक। बालकेर सने युद्ध, हासिबेक लोक
कटक थाकिते केन युझिब आपनि। आमार सहित ठाट दुइ अक्षौहिणी १३
कटकेर ठाँइ यदि जयी हओ रणे। तबे से युद्धेर योग्य हओ मम सने
शत्रुघ्नेर कथा शुनि दुइ भाइ भाषे। आगे मारि कटक तोमारे मारि शेषे १४

श्रीराम के बाण से लंका का रावण मारा गया है। मेरे बाणों से दुर्जेय लवण की मृत्यु हुई है ॥ ७ ॥ हमारे बड़े भाई लक्ष्मण रण में निपुण हैं। उनके बाणों से अतिकाय और इन्द्रजित् मारे गये है। जो वीर मारे गये हैं, वे सभी त्रिभुवन को जीतनेवाले थे। और कौन वीर हम सबसे लड़ सकता है? ॥ ८ ॥ वीर शत्रुघ्न इसी प्रकार बड़ाई कर रहे थे। तब लव-कुश रुष्ट हो गरजकर कहने लगे— तुम लोग चार भाई हो, हम दो भाई है। आज तुम इस अश्व को ले जाओ (तो देखें)। हम यही चाहते हैं ॥ ९ ॥ तुम मरने के लिए भला हमारे पास क्यों आये? यह अश्व अब कैसे ले जाओगे? तुम संकट में पड़ गये हो। इस प्रकार चाचा-भतीजा एक-दूसरे को गालियाँ देने लगे। (क्योंकि) कोई किसी को पहचानता न था। उन तीनों में गाली-गलौज और महायुद्ध होने लगा ॥ १० ॥ दोनों भाई चारों ओर अनेक अस्त्रों का प्रहार करने लगे। उनका प्रहार सह न पाकर शत्रुघ्न बड़े ही विह्वल हो उठे। शत्रुघ्न बोले, सैनिको, तुम सब ऐसे कर्म करो, सारी सेना से घेरकर इन दोनों शिशुओं को मार डालो ॥ ११ ॥ शत्रुघ्न की दो अक्षौहिणी सेना थी। उसने लव-कुश को घेरकर उनका मार्ग बंद कर दिया। लव-कुश बोले, वीर, तुम मुँह न मोड़ो। हम सारी सेना को मार डाल रहे हैं, तुम कौतुक देखते रहो ॥ १२ ॥ शत्रुघ्न बोले, हम देखते हैं, तुम लोग तो बालक हो, बालकों से युद्ध करने पर लोग हम पर हँसेंगे। सेना के रहते मैं स्वयं तुमसे युद्ध क्यों करूँ? हमारे संग तो दो अक्षौहिणी सेना है ॥ १३ ॥ यदि तुम लोग सेना के संग लड़ाई मे विजयी हो सको, तब तुम हमारे संग युद्ध करने के योग्य हो सकोगे। शत्रुघ्न की बात सुनकर दोनों भाई कहने लगे— पहले तुम्हारी सेना को मारकर तब अंत में तुम्हें मारेंगे ॥ १४ ॥

कुश बले, लव, तुमि एइखाने थाक। कटक संहारि आमि, तुमि मात्र देख
लवेर अग्रेते कुश पातिल धनुक। भ्रातार समरे लव देखिछे कौतुक १५
कुशेर प्रधान वाण बेड़ापाक नाम। बेड़ापाक-बाणे कुश पूरिल सन्धान
पृथिबीते फिरे बाण कुमारेर चाक। सकल कटके बेड़ि मारे बेड़ापाक १६
बेड़ापाक बाणे कारो नाहिक निस्तार। बेड़ापाक बाणे सब करिल संहार
पड़िल सकल ठाट, नाहि एकजन। सबे मात्र एकाकी रहिल शत्रुघन १७
ठांइ-ठांइ कटक पड़िल गादि-गादि। संग्रामेर स्थाने बहे शोणितेर नदी
डाक दिया बले कुशे, शुन शत्रुघन। कोथा गेल सैन्य तव, नाहि एकजन १८
लवेर कनिष्ठ आमि, रणे नाहि टूटे। लव भाइ युझिले पृथिबी नाहि आटे
कुशेर वचन शुनि बले शत्रुघन। पलाइया याब कि तोमारे दिब रण १९
पलाइया गेले परे थाकिबे अख्याति। यदि युद्ध करि, तबे नाहि अव्याहति
कुश बले, दृढ़ युक्ति कर शत्रुघन। सेइ युक्ति कर, येबा लय तव मन २०
शत्रुघ्न बलेन, कुश मिथ्या किछु नय। यत किछु बल तुमि, सब सत्य हय
तोमार सहित युद्धे अवश्य संहार। बुझिते ना पारि तुमि कोन् अवतार २१
तोमार संग्रामे कुश, कार बापे तरि। एकबार युझ करि मारि किबा मरि
कुश बले, शत्रुघ्न, मरण दृढ़ कर। एइ आमि बाण एड़ि, याओ यमघर २२

कुश बोला, लव, तुम यही रहो। मैं सेना का संहार कर डाल रहा हूँ। तुम केवल देखते रहो। लव से पहले ही कुश ने अपना धनुष चढ़ा लिया। भाई के संग्राम में लव कौतुक देखता रहा ॥ १५ ॥ 'बेड़ा-पाक' (चक्कर खानेवाला) नाम का बाण कुश का प्रमुख बाण था। उसी 'बेड़ा-पाक' बाण को कुश ने धनुष पर चढ़ाया। वह बाण पृथ्वी पर कुम्हार के चाक की भाँति चक्कर लगाने लगा। वह 'बेड़ा-पाक' बाण सारी सेना को घेर कर मारने लगा ॥ १६ ॥ बेड़ा-पाक बाण से कोई बच नही पाता। बेड़ा-पाक बाण ने सबका संहार कर डाला। सारी सेना मारी गयी, कोई नहीं बचा। अकेले शत्रुघ्न रह गये ॥ १७ ॥ जगह-जगह ढेर के ढेर सैनिक मारे गये। संग्राम-स्थल में शोणित की नदी बहने लगी। कुश ने पुकारकर कहा— शत्रुघ्न, सुनो, तुम्हारी सेना कहाँ चली गयी, यहाँ तो कोई नही है ॥ १८ ॥ मैं तो लव का छोटा भाई हूँ जो युद्ध में कभी नही हारता। यदि भैया लव लड़ने लगें तो संसार उनसे पार नहीं पा सकता। कुश का वचन सुनकर शत्रुघ्न बोले— मैं भाग जाऊँ या तुमसे युद्ध करूँ ? ॥ १९ ॥ परन्तु भाग जाने पर तो कलंक रह जायेगा। यदि युद्ध करूँ तो तुमसे पार पाना कठिन है। कुश बोला, शत्रुघ्न, तुम अपने मन में दृढ-संकल्प कर लो। वैसा ही संकल्प करो, जैसा कि तुम्हारा मन चाहता हो ॥ २० ॥ शत्रुघ्न बोले, कुश, तुम कुछ भी असत्य नहीं कह रहे हो, जो कुछ कहते हो सभी सत्य है। तुम्हारे संग युद्ध में अवश्य मेरा संहार हो जायेगा। मुझे समझ नहीं आ रहा है कि तुम कौन-सा अवतार हो ! ॥ २१ ॥ कुश, किसके बाप की शक्ति है कि तुमसे संग्राम कर पार पा जाये ! तथापि एक बार युद्ध करता हूँ, चाहे

लब बले, कुश, शुन आमार बचन। तुमि सैन्य मार, आमि मारि शत्रुघन
कुश बाण युड़िल लबेरे करि पाछे। सन्धान पुरिया गेल सौमित्रिर काछे २३
कुश बले, सौमित्रि हे, एइ बाण फेलि। ए बाण सहिते पार, तबे वीर बलि
सौमित्रि बलेन, आगे आमि बाण मारि। सहिते पारिले तोमा बीर ज्ञान करि २४
तिन लक्ष बाण बीर शत्रुघन एड़े। आकाश गगने बाण उखड़िया पड़े
बाण बृष्टि करे दोँहे, दोँहे धनुर्द्धर। दोँहे, दोँहा बिन्धिया करिल जरजर २५
उभयेर बाण गिया गगनेते उठे। उभये बरिषे बाण, उभयेते काटे
नाना अस्त्र दुइजन करे अवतार। चारिदिके पड़े बाण अग्निर सञ्चार २६
सौमित्रि एड़ेन तबे महापाश बाण। अर्द्धचन्द्र बाणे कुश करे खान-खान
एड़िल सकल बाण सौमित्रि निपुण। फुराइल सब बाण शून्य हैल तूण २७
बिष्णु-अस्त्र शत्रुघ्न बीरेर मने पड़े। तूण हइते ताहा निया धनुकेते योड़े
निरखिया कुश वीर चिन्ते मने मन। महाबिष्णु बाण युड़े धनुके तखन २८
बाण देखि शत्रुघ्नेर लागे चमत्कार। महाबिष्णु बाणे बिष्णुबाणेर संहार
कुश बले, शत्रुघन आर बाण आछे। फुराल तोमार अस्त्र, आमि एड़ि पाछे २९

तुम्हें मारूँ या स्वयं मर जाऊँ। कुश बोला, शत्रुघ्न, यह दृढ़ता से समझ लो कि तुम्हारा मरण होनेवाला है। यह अभी मैं बाण छोड़ रहा हूं, तुम यमलोक सिधारो ॥ २२ ॥ लव बोला, कुश, तुम सेना को मारो मैं शत्रुघ्न को मारूँगा। कुश ने लव को पीछे कर धनुष पर बाण चढ़ाया। निशाना साधकर वह शत्रुघ्न के पास गया ॥ २३ ॥ कुश बोला, सुमित्रानन्दन शत्रुघ्न, यह बाण छोड़ रहा हूँ। यह बाण अगर सह सको तो तुम्हें वीर कहूँगा। सुमित्रानन्दन शत्रुघ्न ने कहा— पहले मैं बाण मारता हूँ, यदि सह सको तभी तुम्हें वीर समझूँगा ॥ २४ ॥ वीर शत्रुघ्न ने तीन लाख बाण छोड़े। वे बाण आकाश-मंडल में परिव्याप्त हो गये। दोनों धनुर्द्धर थे, दोनों ही बाण-वर्षा कर रहे थे। दोनों ने दोनों को बेधकर जर्जर कर डाला ॥ २५ ॥ दोनों के बाण आकाश में ऊँचे चढ़ जाते थे। दोनों ही बाण-वर्षा करते, फिर दोनों ही काट डालते थे। दोनों नाना प्रकार के अस्त्रों का अवतरण करते थे। बाण गिरने के साथ-साथ चारों ओर अग्नि-संचार हो जाता था ॥ २६ ॥ तब शत्रुघ्न ने 'महापाश' नाम का बाण छोड़ा! उसे अर्धचन्द्र बाण से कुश ने खंड-खंड कर डाला। निपुण शत्रुघ्न ने अपने सारे बाण छोड़े, उनके सारे बाण समाप्त हो गये। तरकश खाली हो गया ॥ २७ ॥ शत्रुघ्न को विष्णु-अस्त्र की याद आयी, उसे तरकश से निकालकर उन्होंने धनुष पर चढ़ाया। वीर कुश ने उसे देखकर मन ही मन सोचा, उसने उसी समय अपने धनुष पर महाविष्णु-बाण चढ़ाया ॥ २८ ॥ उस बाण को देखकर शत्रुघ्न विस्मित रह गये। महाविष्णु-बाण ने विष्णुबाण का संहार कर डाला। कुश बोला, शत्रुघ्न, तुम्हारे पास क्या और भी बाण है? तुम्हारे अस्त्र तो समाप्त हो गये। अब मैं (अपना अस्त्र) छोड़ रहा हूँ ॥ २९ ॥ तब वीर

कुशेरे डाकिया बले बीर शत्रुघन । तोमाय आमाय एइ हइल ये रण
कारो पराजय नहे, उभये सांसर । रणे क्षमा दिया याह दुइजने घर ३०
सौमित्रिर कथा शुनि कुश बीर हासे । अवश्य मारिव तोमा, ना याइबे देशे
महापाश बाण कुश युड़िल धनुके । सिंहेर गर्ज्जने बाण उठे अन्तरीक्षे ३१
सकल पृथिबी हैल अन्धकारमय । निरखिया शत्रुघ्नेर लागिल संशय
अन्धकारे युझिते ना पारे शत्रुघन । युझिते ना पारे, हय मृत्यु-दरशन ३२
एकदृष्टे रहिल से धनुर्व्वाण-हाते । शत्रुघ्ने मारिते बाण चलिल त्वरिते
महापाश बाण तबे याय नाना छन्दे । हाते गले शत्रुघने अबशेषे बान्धे ३३
गलाय लागिल पाश मृत्यु-दरशन । महापाश बाणघाते परे शत्रुघन
शत्रुघन पड़िया रहे रणेर भितर । महानन्दे दुइ भाइ चलिलेक घर ३४
कहिते लागिल गिया मायेर गोचर । दुइ भाइ खेलिलाम ए दुइ प्रहर
यत यत भूपति आइसे तपोवने । कौतुके खेलाइ माता से सबार सने ३५
दुइ शिशु लये सीता कराइल स्नान । अगुरु चन्दने अङ्ग करिल सुघ्राण
मिष्ट अन्न कराइल दोँहारे भोजन । विचित्र शय्याय दोँहे करिल शयन ३६
दुइ शिशु लये सीता रहिल सन्तोषे । शत्रुघ्नेर वार्त्ता लये दूत गेल देशे
एत सैन्य माझे एड़ाइल सात जन । देशेते गमन करे करिया क्रन्दन ३७

शत्रुघ्न ने कुश को पुकार कर कहा, तुम्हारे और मेरे बीच जो यह संग्राम हुआ, इसमें किसी की पराजय नहीं हुई, दोनों समतुल्य रहे। अब तुम दोनों इस युद्ध में हमें क्षमा कर घर लौट जाओ ॥ ३० ॥ शत्रुघ्न की बात सुनकर वीर कुश हँसने लगा। बोला, मैं तुम्हें अवश्य मारूँगा, तुम देश नहीं लौट पाओगे। कुश ने धनुष पर महापाश बाण चढ़ाया। सिंहनाद करता हुआ वह बाण अन्तरिक्ष में चढ़ गया ॥ ३१ ॥ सारी पृथ्वी अंधकारमयी हो गयी। वह देख शत्रुघ्न को बड़ा संशय हुआ। शत्रुघ्न अंधकार में युद्ध नहीं कर पाते थे। युद्ध न कर पाने के कारण, वे अपने सम्मुख मृत्यु आयी हुई है, ऐसा देखने लगे ॥ ३२ ॥ धनुष-बाण लिये हुए वे एकटक देखते रहे। शत्रुघ्न को मारने के लिए कुश का बाण तेज़ी से चला। उस समय महापाश बाण विभिन्न प्रकार की गति से चला और अन्त में जाकर शत्रुघ्न के हाथ और गले को बाँध लिया ॥ ३३ ॥ वह पाश उनके गले में लगा, वे मृत्यु आयी हुई देखने लगे। उस महापाश बाण के प्रहार से शत्रुघ्न गिर पड़े। शत्रुघ्न युद्ध-भूमि में पड़े रहे। दोनों भाई बड़े ही आनन्द से घर लौटे ॥ ३४ ॥ वे जाकर माँ से कहने लगे, हम दोनों आज दोपहर तक खेलते रहे। माँ, जितने राजा इस तपोवन में आये थे, उन सभी के साथ हमने कौतुक से खेल किया है ॥ ३५ ॥ तब सीता ने अपने दोनों पुत्रों को नहलाया। अगरु और चन्दन लगाकर उन्हें सुवासित किया। दोनों को मिष्टान्न भोजन करवाया। इसके पश्चात् दोनों विचित्र शय्या पर सो पड़े ॥ ३६ ॥ अपने दोनों शिशुओं को लेकर सीता परम सन्तुष्ट थी।

लब-कुशेर युद्धे भरत ओ लक्ष्मणेर पतन

पात्रमित्र सह राम आछे यज्ञस्थाने। हेनकाले सातजन गेल सेइखाने
सात जन बार्त्ता कहे गिया ऊर्द्ध्वश्वासे। दुइ शिशु युद्ध करे बाल्मीकिर देशे १
लब-कुश नामे से यमज दुइ भाइ। त्रिभुबन पराजित से दोँहार ठाँइ
भय बासि प्रभु, बलिबारे बिबरण। सैन्यसह युद्धेते पड़िल शत्रुघन २
शुनिया श्रीराम अति चिन्तित हइया। जिज्ञासा करेन तारे प्रमाद भाबिया
कह दूत कार सङ्गे घटिल ए रण। कि आश्चर्य शत्रुघ्नेर समरे पतन ३
दूत कहे, महाराज, दुइ मुनिसुत। युद्ध करे समरे साक्षात यमदूत
तारा यदि युद्ध करे तोमार सहिते। जिनिते नारिबे प्रभु हेन लय चिते ४
अश्व बन्दी करिल ताहारा दुइ जन। एतेक प्रमाद पड़े अश्वेर कारण
से कथा शुनिया राम करेन चिन्तन। प्रमाद पड़िल, दैब ना जाय खण्डन ५
सूर्य्यबंशे जन्मिल यत यतेक महाराज। समरे पड़िया केह ना पाइल लाज
अनरण्य-महाराजे मारिल राबणे। से राबण सबंशे पड़िल मोर रणे ६
दुर्ज्जय लबण छिल राबण-भागिने। देब दैत्य आदि यत काँपे सर्ब्बजने
राबण हइते कत बड़ से लबण। ताहारे मारिल मोर भाइ शत्रुघन ७

उधर शत्रुघ्न का समाचार दूत अपने देश ले गया। इतनी सेना में केवल ये सात ही लोग बचे और रोते-रोते अपने 'देश' चले गये ॥ ३७ ॥

लब-कुश के साथ युद्ध में भरत और लक्ष्मण का गिरना

श्रीरामचन्द्र मंत्रियों और बांधवों के साथ यज्ञभूमि में थे। तभी वे सातों व्यक्ति वहाँ पहुँचे। उन सातों ने बेतहासा वहाँ जाकर यह समाचार सुनाया। वाल्मीकि के देश में दो शिशु युद्ध कर रहे हैं ॥ १ ॥ वे लव-कुश नाम से दो जुड़वे भाई हैं। उनसे त्रिभुवन हार गया है। हे प्रभु, आपसे विवरण सुनाते भय हो रहा है। वहाँ सेना-सहित शत्रुघ्न युद्ध में मारे गये हैं ॥ २ ॥ यह सुनकर रामचन्द्र ने अत्यन्त चिन्तित होकर कि महान संकट आ पड़ा है, उससे पूछने लगे— बताओ दूत, यह युद्ध किसके संग हो रहा है ? शत्रुघ्न युद्ध में गिर पड़े, यह कितने आश्चर्य की बात है ॥ ३ ॥ दूत बोला— महाराज, वे दोनों मुनिपुत्र हैं। वे साक्षात् यमदूत की भाँति युद्ध करते हैं। यदि वे आपके साथ युद्ध करें, तो हमारे मन में ऐसा लग रहा है कि प्रभु, आप उन्हें जीत नहीं सकेंगे ! ॥ ४ ॥ उन दोनों ने अश्व को बंदी कर लिया है। उसी अश्व के लिए यह संकट आ पड़ा है। वह बात सुनकर राम सोचने लगे, (यज्ञ में) संकट आ पड़ा। प्रारब्ध को खंडन नहीं किया जा सकता ? ॥ ५ ॥ सूर्यवंश में जहाँ जितने महाराज हुए, युद्ध में मारे जाकर उनमें से किसी को लज्जित होना नहीं पड़ा है। रावण ने अनरण्य महाराज को मारा। वह रावण मेरे साथ युद्ध में सवंश मारा गया ॥ ६ ॥ रावण का भानजा लवण भी दुर्जेय था। उससे देव-दैत्य आदि सभी काँपते रहते थे। वह

रामेर प्रबोध देन भरत लक्ष्मण। क्षत्रियेर धर्म्म एइ, युद्धेते मरण
विलाप संवर प्रभु, ना कर विषाद। कारो दोष नाहि, दैवे पड़िल प्रमाद ८
पतिव्रता सीता तुमि बर्ज्जिले यखन। जेनेछि, तखनि ह'ल विधि-बिड़म्बन
देवता जानेन ये सीतार नाहि पाप। विना दोषे सीतारे दिलेन मनस्ताप ९
आजि यदि श्रीराम, तोमार आज्ञा पाइ। शिशु धरिवारे याइ मोरा दुइ भाइ
एतेक बलिल यदि भरत लक्ष्मण। श्रीराम दिलेन आज्ञा उभये तखन १०
जाओ भाइ, कल्याण करुन त्रिलोचन। सावधाने दुइ भाइ कर गिया रण
शत्रुघ्न-भ्रातार शोक सान्धाइल बुके। पाछे पाइ आर शोक मरि सेइ दुःखे ११
दुइ भाइ कर युद्ध, यदि युद्ध घटे। दुइ शिशु धरि आन आमार निकटे
विदाय लइया यान भरत लक्ष्मण। चारि अक्षौहिणी सैन्य करिल साजन १२
मुख्य सेनापति गिया चड़िलेक रथे। हस्ती घोड़ा ठाट कत चले तार साथे
जाठि ओ झकड़ा शेल मुषल मुद्गर। खाण्डा आर डाङ्गस देखिते भयङ्कर १३
दुर्ज्जय नामेते हस्ती आरोहे भरत। धनुर्व्वाणे लक्ष्मणेर पूर्ण महारथ
हस्ती घोड़ा रथ सब चलिल अशेष। वाल्मीकिर तपोवने करिल प्रवेश १४

लवण रावण की अपेक्षा कितना बढ़ा-चढ़ा है, उसे भी मेरे भाई शत्रुघ्न ने मार डाला ॥ ७ ॥ भरत और लक्ष्मण ने रामचन्द्र को धीरज बँधाते हुए कहा— युद्ध में मृत्यु हो, यही तो क्षत्रियों का धर्म है। प्रभु, आप विलाप न करें, विषाद करना छोड़ दें। इसमें किसी का दोष नहीं है। दैव के कारण ही यह संकट आ पड़ा है ॥ ८ ॥ आपने जिस समय पतिव्रता सीता का त्याग किया, उसी समय हम जान गये थे कि विधि-विडम्बना आ पड़ी है। जिस सीता के बारे में देवता जानते हैं कि उनका कोई पाप नहीं है, उसी सीता को बिना अपराध के आपने मनस्ताप दिया है ॥ ९ ॥ हे रामचन्द्र, आज यदि आपकी आज्ञा मिले, तो हम दोनों भाई उन शिशुओं को पकड़ लाने हेतु जायें ! जब भरत और लक्ष्मण ने यह बात कही, तब श्रीराम ने उन दोनों को आज्ञा दे दी ॥ १० ॥ जाओ भाई, त्रिलोचन शंकर तुम्हारा कल्याण करें। तुम दोनों भाई जाकर सावधानी से संग्राम करो। भाई शत्रुघ्न का दुःख छाती में चुभ गया है। इसके पश्चात् कहीं और भी शोक भोगना न पड़े, इसी दुःख से मरा जा रहा हूँ ॥ ११ ॥ यदि युद्ध करना पड़े, तो दोनों भाई युद्ध करना और उन दोनों भाइयों को मेरे पास पकड़ लाना। भरत और लक्ष्मण विदा लेकर चले। उन्होंने चार अक्षौहिणी सेना सजायी ॥ १२ ॥ मुख्य सेनापति जाकर रथ पर सवार हो गया। उसके साथ हाथी-घोड़े-सेना कितने ही चले ! भाले, बरछे, शेल, मूसल, मुदगर, खड्ग, परिघ आदि देखने में बड़े भयंकर थे ॥ १३ ॥ भरत दुर्जय नाम के हाथी पर सवार हुए। धनुष-बाण से लक्ष्मण का विशाल रथ पूर्ण था। अनगिनत हाथी-घोड़े-रथ आदि चले। सबने जाकर वाल्मीकि के तपोवन में प्रवेश किया ॥ १४ ॥ जहाँ सेना-सहित शत्रुघ्न पड़े हुए थे, श्रीभरत और लक्ष्मण वहाँ गये। सियार,

कटक समेत पड़ि आछे शत्रुघन। सेइखाने गेलेन श्रीभरत लक्ष्मण
शृगाल कुक्कुर आर शकुनि गृधिनी। कटकेर मांस लये करे टानाटानि १५
भरत लक्ष्मण दोँहे करे अनुमान। महायुद्धे आसिया हइनु अधिष्ठान
रणस्थले देखिलेन भरत लक्ष्मण। हाते धनु पड़िया आछेन शत्रुघन १६
सौमित्रिरे दुइभाइ कोले करि काँदे। प्राण हाराइले भाइ, शिशुर बिवादे
यमुनार कूले भाइ, मारिले लबण। एखाने आसिया भाइ, हाराले जीबन १७
रणस्थले कान्दिछेन भरत लक्ष्मण। पात्रमित्र देन दोँहे प्रबोध-बचन
शोक करिबार बेला नहेत एखन। समरे आसिया शोक कर कि कारण १८
सेइ दुइ शिशु मार पुरिया सन्धान। युद्धस्थले आसि शोक नहे त विधान
एतेक बचन शुनि भरत लक्ष्मण। क्रन्दन संबरि दोँहे स्थिर करे मन १९
युद्धार्थे कटक रहे पुरिया सन्धान। लक्ष्मण-भरत दोँहे हल आगुयान
चारिदिके राम-सेना रहे सावधाने। कटकेर महारोल सीतादेबी शुने २०
सीता बलिलेन लब-कुशेरे तखन। कि प्रमाद पाड़ियाछ भाइ दुइजन
कार सने करियाछ बाद बिसंवाद। लब-कुश, ना जानि कि पाड़िलि प्रमाद २१
शुनिया मायेर कथा दुइ भाइ हासे। मायेरे प्रबोध करे अशेष बिशेषे
लब-कुश बले, माता, ना जान कारण। मृगया करिते राजा आसे तपोबन २२

कुत्ते और गिद्ध-गिद्धनी वहाँ सेना का मांस लेकर खींचातानी कर रहे थे ॥ १५ ॥ भरत और लक्ष्मण दोनों ने अनुमान लगाया, हम किसी महायुद्ध में आ पहुंचे है। रणभूमि में आकर भरत और लक्ष्मण ने देखा, हाथ में धनुष लिये शत्रुघ्न गिरे हुए हैं ॥ १६ ॥ दोनों भाई शत्रुघ्न को गोद में लेकर रोने लगे। भाई, तुम्हें शिशुओं के साथ युद्ध में प्राण देने पड़े। भाई, तुमने तो यमुना-तट पर लवण का वध किया था। यहाँ आकर भाई, तुम्हें जीवन खोना पडा ॥ १७ ॥ रणभूमि में भरत और लक्ष्मण रो रहे थे। मंत्री-बांधव सभी उन्हें अपने वचनों से धीरज बँधा रहे थे। अब तो शोक करने का समय नहीं है। आप लोग युद्ध में आकर शोक क्यों कर रहे हैं ? ॥ १८ ॥ उन दोनों शिशुओं को निशाना साधकर मारिए। युद्धभूमि में आकर शोक करना उचित नहीं है। यह वचन सुनकर भरत और लक्ष्मण ने रुदन करना छोड़ अपने मन को स्थिर किया ॥ १९ ॥ सेना युद्ध-हेतु निशाना साधे हुए थी ! भरत और लक्ष्मण दोनों आगे बढ़े। राम की सेना चारों ओर बड़ी सतर्कता से तैनात थी। उस सेना का महान् कोलाहल देवी सीता ने सुना ॥ २० ॥ तब सीताजी ने लव-कुश से कहा, तुम दोनों भाइयों ने कौन-सी विपत्ति बुला ली है ? तुम लोगों ने किसके संग वाद-विवाद किया है ? अरे लव-कुश, पता नहीं, तुम लोगों ने कौन-सा प्रमाद किया है ? ॥ २१ ॥ माँ की बात सुन दोनों भाई हँसने लगे। तरह-तरह की बातें कहकर विविध प्रकार से उन्होंने माँ को धीरज बँधाया। लव-कुश बोले— माँ, तुम कारण नहीं जानती। राजागण तपोवन में शिकार हेतु आया करते हैं ॥ २२ ॥ चन्द्रवंश और सूर्यवंश में जितने भी राजा हैं, सब लोग

यत यत राजा आछे चन्द्र-सूर्य्यकुले । मृगया करिते सबे आसे एइ स्थले
अवश्य राजार सह आइसे सामन्त । राजार सैन्येर रोले तुम केन चिन्त २३
आमा दुइ भाइ मुनि थुये गेल देशे । कोन् राजा आसियाछे ना जानि विशेषे
मुनिर आज्ञाय मोरा राखि तपोवन । नाहि जानि, आसियाछे, कोन् महाजन २४
आश्रम हइले नष्ट मुनि दिवे दोष । बड़ भय वासि मा, करिले मुनि रोष
प्रबोधिया मायेरे तखन वाक्छले । शीघ्रगति दुइ भाइ युझिवारे चले २५
तूण पूर्ण बाण निल, धनु निल हाते । महाह्लादे दुइ भाइ याय समरेते
दुइ भाइ गेल यथा भरत लक्ष्मण । तृणज्ञान करे देखि यत सेनागण २६
लव-कुशे देखि सेना कम्पित-अन्तर । गरुड़े देखिया येन भुजङ्गेर डर
मनोहर दुइ भाइ दुर्व्वादलश्याम । सकल कटक वले, एल दुइ राम २७
राम यदि आसितेन एखाने एखन । तिन राम एक स्थाने हइत मिलन
सेइ तेज, सेइ वल, सेइ धनुर्व्वाण । आकृति, प्रकृति देखि रामेर समान २८
एक रामे जिनिते ना पारे त्रिभुवन । दुइ राम इहारा जिनिवे कोन् जन
भरत-लक्ष्मण दोंहे हइल विस्मय । के तोमरा दुइ भाइ, देह परिचय २९
हासिया उत्तर करे भाइ दुइजन । जाति कुले मोदेर कि तव प्रयोजन
वारशत शिष्य पड़े वाल्मीकिर ठाँइ । तार शिष्य आमरा यमज दुइ भाइ ३०

शिकार खेलने इस स्थान में आया करते हैं। राजाओं के संग उनके सामन्तगण भी अवश्य आते हैं। राजा की सेना के कोलाहल से तुम चिन्तित क्यों होती हो ? ॥ २३ ॥ इस देश में हम दोनों भाइयों को रखकर मुनि (तपस्या के लिए) चले गये हैं। कौन से राजा यहाँ आये हैं, हम विशेष नहीं जानते। मुनि के आदेश से हम तपोवन की रखवाली कर रहे हैं। हमें पता नहीं यहाँ कौन महान् पुरुष आया है ॥ २४ ॥ यदि आश्रम नष्ट हो जाये तो मुनि हमें दोष देंगे। माँ, मुनि के रोष से हम बहुत डरते है। अपनी वचन-चातुरी से माँ को धीरज बँधाकर वे दोनों भाई शीघ्रता से लड़ने के लिए चल पड़े ॥ २५ ॥ तरकश बाणों से भर लिया, हाथों में धनुष ले लिया। महा-आनन्द से दोनों भाई युद्ध करने चले। भरत-लक्ष्मण जहाँ थे, दोनों भाई वहाँ पहुँचे। सेना को देख उन दोनों ने उसे तृण-जैसा नगण्य समझा ॥ २६ ॥ लव-कुश को देखकर सेना का अन्तर् काँप उठा, जैसे गरुड़ को देखकर भुजंग डर जाते है। वे दोनों भाई दूर्वा-दल-श्याम वर्ण के बड़े मनोहर थे। सारी सेना कहने लगी, दो राम आ गये हैं ॥ २७ ॥ यदि यहाँ राम आ जाते तो अभी यहाँ तीन रामों का एक ही स्थान पर मिलन हो जाता। इनके भी वही तेज, वही बल, वे ही धनुष-वाण हैं। इनकी आकृति-प्रकृति भी राम के समान ही देखते हैं ॥ २८ ॥ एक राम को ही त्रिभुवन (में कोई) जीत नहीं सकता। ये दो राम यहाँ आ गये हैं, इन्हें कौन जीत सकता है ? भरत और लक्ष्मण दोनों विस्मित हो उठे, पूछा— तुम दोनों भाई कौन हो, अपना परिचय दो ! ॥ २९ ॥ दोनों भाइयों ने हँसकर उत्तर दिया— हमारे जाति-कुल से तुम्हें क्या प्रयोजन है ? मुनिवर वाल्मीकि के यहाँ

सब शिष्य लये मुनि गेल परवासे। आमादेर दुइ भाइये थुइया गेल देशे
दशरथ भूपतिर पुत्र शत्रुघन। सैन्यसह देख तार समरे पतन ३१
दुइ भाइ युझिले पृथिवी नाहि आटे। कोन कार्ये आसियाछे मोदेर निकटे
कटक लइया केन एले तपोवन। परिचय देह, एले किसेर कारण ३२
ताहा शुनि श्रीभरत लक्ष्मणेर हास। मुखेते तर्ज्जन मात्र, अन्तरे तरास
चारि भाइ आमरा सबार ज्येष्ठ राम। तिनेर कनिष्ठ भाइ शत्रुघन नाम ३३
मध्यम आमरा दुइ भरत लक्ष्मण। शत्रुघ्ने मारिया कि राखिबे जीवन
एत यदि चारि जने हैल गालागालि। चारिजने युद्ध बाजे, चारि महाबली ३४
कुशे आर भरते, बाजिल महारण। महायुद्ध करे लव सहित लक्ष्मण
भरत लक्ष्मण सह चारि अक्षौहिणी। भरत डाकिया सैन्ये बलेन आपनि ३५
शिशुज्ञाने तोमारा ना हओ अन्यमन। दुइ भाग हये युद्ध कर सेनागण
दुइ अक्षौहिणी युझे भरतेर काछे। आर दुइ अक्षौहिणी लक्ष्मणेर पिछे ३६
मध्ये दुइ शिशु ये कटक चारिभिते। हस्तिस्कन्धे भरत लक्ष्मण महारथे
लवेर बाणेर शिक्षा बड़ चमत्कार। धूमवाण एड़े, दश दिक् अन्धकार ३७

बारह सौ शिष्य पढ़ा करते हैं। हम दोनों जुड़वें भाई उनके ही शिष्य हैं ॥ ३० ॥ दूसरे सभी शिष्यों को लेकर मुनि प्रवास में चले गये हैं। हम दोनों भाइयों को इस देश में रख गये है। वह देखो, राजा दशरथ के पुत्र शत्रुघ्न सेना-सहित युद्धभूमि में पड़े हुए हैं ॥ ३१ ॥ हम दोनों भाई यदि युद्ध करें तो ससार (का कोई भी) हमारा मुक़ाबला नही कर सकता। तुम लोग किस कार्य से हमारे समीप आये हो ? तुम लोग सेना लेकर इस तपोवन में किसलिए आये ? परिचय दो, तुम लोग किस कारण आये हो ? ॥ ३२ ॥ यह बात सुनकर भरत और लक्ष्मण हँस पड़े। वे मुँह से गरजकर कहने लगे, यद्यपि अन्तर् में संत्रास बसा हुआ था। हम चार भाई हैं, रामचन्द्र सबसे बड़े भाई हैं। तीनों से छोटे भाई का नाम शत्रुघ्न है ॥ ३३ ॥ हम भरत और लक्ष्मण दोनों मँझले भाई हैं। शत्रुघ्न को मारकर तुम लोग जीवित रह सकते हो ? जब चारों में ऐसी गाली-गलौज हुई, उसके पश्चात् उन चारों में युद्ध छिड़ गया। चारों ही महाबली थे ॥ ३४ ॥ कुश और भरत में महान् युद्ध होने लगा, लव के साथ लक्ष्मण महायुद्ध करने लगे। भरत और लक्ष्मण के संग चार अक्षौहिणी सेना थी। सेना को पुकारकर भरत ने स्वयं कहा— ॥ ३५ ॥ इन दोनों भाइयों को शिशु समझकर तुम लोग अनमने-से न रहो। सैनिको, तुम दो भागों में बँटकर युद्ध करो। दो अक्षौहिणी सेना भरत के पास रहकर लड़ने लगी। और दो अक्षौहिणी लक्ष्मण के पीछे रहकर युद्ध करने लगी ॥ ३६ ॥ बीच में दोनों बालक और उनके चारों ओर समूची सेना घेरे हुए थी। भरत हाथी पर और लक्ष्मण विशाल रथ पर थे। लव को बाणों का अद्भुत प्रशिक्षण मिला था। उसने धूम्र-बाण छोड़ा, जिससे दसों दिशाएँ अन्धकारमय हो गयीं ॥ ३७ ॥ सारा जगत अन्धकारमय

जगत हइल सब अन्धकारमय। पलाय सकल ठाट गणिया संशय
तिमिर हइल येन, चक्षे नाहि देखे। पर्व्वत गुहार मध्ये केह गिया ढोके ३८
पलाइया येते कारो कारो पा पिछले। झम्प दिया पड़े केह नद-नदी जले
केह कारे नाहि देखे, केबा कोथा जाय। लक्ष्मणे एड़िया यत कटक पलाय ३९
पलाइल सब ठाट, नाहिक दोसर। सबे मात्र लक्ष्मण रहेन एकेश्वर
एमन बाणेर शिक्षा नाहि कोन स्थाने। केबा शिखाइल कोथा हते केबा जाने ४०
रावणेर कुमार ये वीर इन्द्रजित। यार बाणे त्रिभुवन हइत कम्पित
ताहारे मारिते आमि ना करिनु भय। हइल शिशुर युद्धे जीवन संशय ४१
ये हउक, से हउक, आजि रण करि। ना करि प्राणेर भय, मारि किम्बा मरि
साहसे करिया भर युझेन लक्ष्मण। धनुके ब्रह्माग्नि बाण युड़ेन तखन ४२
ज्वलिया ब्रह्माग्नि बाण उठिल आकाशे। अन्धकार दूर हैल, पृथिवी प्रकाशे
अन्धकार दूर हैल, ठाट दूरे देखे। सकल कटक एल लक्ष्मण-सम्मुखे ४३
लक्ष्मणेर बाण-शिक्षा अति चमत्कार। पलाइल यत सैन्य, एल आरबार
लक्ष्मणेर बाण देखि लव पाय त्रास। तार त्रास देखिया लक्ष्मण पान आश ४४
लव बले, लक्ष्मण, कि कर अहङ्कार। मोर ठाँइ पड़िले निस्तार नाहि आर
आछये अक्षय बाण तूणेर भितर। ओर नाहि, एड़ि बाण शतेक वत्सर ४५

हो गया। सारी सेना जीवन-संशय जानकर भागने लगी। चारों ओर घोर अंधकार-सा छा गया। आँखों से कुछ दिखायी नहीं पड़ता था। कुछ तो पर्वत-गुफाओं मे जाकर घुस पड़े ॥ ३८ ॥ भागते समय किसी-किसी के पैर फिसल जाते थे। कोई-कोई कूदकर नद-नदी के जल में गिर जाते थे। कौन कहाँ जा रहा है, कोई किसी को नहीं देखता था। लक्ष्मण को छोड़कर सारी सेना भागने लगी ॥ ३९ ॥ सारी सेना भाग गयी, कोई दूसरा नहीं रहा, केवल लक्ष्मण अकेले रह गये। ऐसे वाण का प्रशिक्षण और कहीं नहीं है। इन्हें किसने कहाँ से सिखाया कौन जाने ? ॥ ४० ॥ रावण-कुमार वीर इन्द्रजित्, जिसके वाणों से त्रिभुवन कंपित रहता था, उसे मारने में भी मुझे कोई डर नही लगा। पर इन बालकों के साथ युद्ध में तो जीवन-संशय उपस्थित हो गया है ॥ ४१ ॥ अब जो होना है, वह हो, आज युद्ध करूँगा। मैं प्राणों का भय नहीं करता, या तो इन्हें मारूँगा या स्वयं मर जाऊँगा। साहस का आधार लेकर लक्ष्मण संग्राम करने लगे। उन्होने अपने धनुष पर ब्रह्माग्नि बाण चढ़ाया ॥ ४२ ॥ ब्रह्माग्नि वाण जलता हुआ आकाश मे चढ़ गया। अँधेरा मिट गया, धरती प्रकाशित हो गयी। सेना ने दूर से देखा, अँधेरा मिट गया, तब सारी सेना लक्ष्मण के सम्मुख आ गयी ॥ ४३ ॥ लक्ष्मण के बाणों का बड़ा अद्भुत प्रशिक्षण भी मिला हुआ था। जो सारी सेना भाग गयी थी, वह पुनः लौटकर आ गयी। लक्ष्मण के बाणों को देखकर लव आतंकित हो उठा। उसे आतंकित देख लक्ष्मण को आशा बँधी ! ॥ ४४ ॥ लव बोला, लक्ष्मण, तुम अहंकार क्या कर रहे हो। मेरे साथ लड़ने पर तुम बच नहीं सकते, मेरे तरकश में अक्षय बाण है।

তোমার কটক আছে, এই ত ভরসা। জল হেন শুষিব যে, না রাখিব আশা
সংহারিব সকল তোমার বিদ্যমানে। অবশেষে তোমারে যে মারিব পরাণে ৪৬
এতেক বলিয়া লব যোড়ে ধনুর্ব্বাণ। সকল সামন্ত কাটি করে খান খান
ষট্‌চক্র বাণ লব যুড়িল ধনুকে। সিংহের গর্জ্জনে বাণ উঠে অন্তরীক্ষে ৪৭
মহাশব্দে যায় বাণ, তারা যেন ছুটে। এক বাণে লক্ষ্মণের সব সৈন্য কাটে
ষট্‌চক্র বাণেতে এড়ায় যেই সব। সে সকল সৈন্যে নাহি মারিলেন লব ৪৮
রক্তময় হইল সকল যুদ্ধস্থল। ভাদ্রমাসে গঙ্গা যেন করে টলমল
ডাকিয়া বলেন লব, শুন হে লক্ষ্মণ। কোথা গেল সৈন্য তব, নাহি একজন ৪৯
মারিলে হে ইন্দ্রজিত, রাবণ-কুমারে। তোমারে মারিয়া যশ রাখিব সংসারে
তোমারে মারিলে পরে মোর যশ রহে। বলিয়া লক্ষ্মণজিত সর্ব্বলোকে কহে ৫০
লক্ষ্মণ বলেন, লব, একি অহঙ্কার। মোর সনে যুদ্ধে তব নাহিক নিস্তার
কুপিয়া লক্ষ্মণ বীর এড়ে ব্রহ্মজাল। সংহার কালেতে যেন অগ্নির উত্থাল ৫১
লব বীর বিষণ্ণ ভাবিছে মনে-মন। ধনুকে বরুণ বাণ যুড়িল তখন
সন্ধান পুরিয়া লব সে বাণ এড়িল। সমুদ্র-তরঙ্গ যেন গগনে লাগিল ৫২
ব্রহ্মজাল ব্যর্থ গেল, চিন্তিত লক্ষ্মণ। কি হবে আমার, বুঝি সংশয় জীবন
লক্ষ্মণের যত শিক্ষা যত অস্ত্র জানে। সন্ধান পুরিয়া বাণ এড়ে ততক্ষণে ৫৩

उनका अंत नहीं, सौ साल तक मैं वाण चलाता रह सकता हूँ ।। ४५ ।। तुम्हारे मन में तो यही भरोसा है न कि तुम्हारे पास सेना है। मैं उसे जल की भाँति सोख लूँगा, कोई आशा न छोड़ूँगा। तुम्हारे रहते हुए सबका संहार कर डालूँगा। अन्त में तुम्हें भी प्राणों से मार डालूँगा ।। ४६ ।। कहकर लव ने धनुष पर बाण चढ़ाया और सारे सामन्तों को काटकर खंड-खंड कर डाला। लव ने धनुष पर षट्‌चक्र बाण चढ़ाया, सिंह जैसा गरजता हुआ वह बाण आकाश में चढ़ गया ।। ४७ ।। वह वाण घोर नाद करता हुआ उल्का की भाँति तेजी से चला। उसी एक वाण ने लक्ष्मण की सारी सेना को काट डाला। षट्‌चक्र बाण से जो बचे रहे, लव ने उन सैनिकों को नहीं मारा ।। ४८ ।। सारी युद्धभूमि रक्तमयी हो उठी, जैसे भादों महीने की गंगा तरंगित हो रही हो। लव ने पुकारकर कहा— लक्ष्मण, सुनो, तुम्हारी सेना कहाँ गयी, यहाँ तो एक भी नहीं है ।। ४९ ।। तुमने तो रावण-कुमार इन्द्रजित् को मारा है, अब तुम्हें मारकर मैं संसार में कीर्ति रखूँगा। तुम्हें मारने के पश्चात् मेरा यश रह जायेगा, सब लोग मुझे 'लक्ष्मण-जित्' कहेंगे ।। ५० ।। लक्ष्मण बोले, लव, यह कैसा अहंकार करते हो ? मेरे साथ युद्ध में तुम बच नहीं सकते। वीर लक्ष्मण ने कुपित होकर ब्रह्मजाल छोड़ा। मानो (प्रलय के) संहार काल में आग की प्रचंड लपटें हों ।। ५१ ।। वीर लव विषण्ण होकर मन ही मन सोचता रहा, उसके बाद उसने धनुष पर वरुण-बाण चढ़ाया। निशाना साधकर लव ने वह बाण छोड़ा। ऐसा लगा, मानो समुद्र की तरंगें उठकर आकाश छूने लगी हों ।। ५२ ।। ब्रह्मजाल को व्यर्थ गया देख लक्ष्मण चिन्तित हो उठे। सोचने लगे— हमारा क्या होगा, संभवतः

समस्त पृथिवी हैल बाणे अन्धकार। लक्ष्मणेर बाण देखि लागे चमत्कार
चिन्तित हइया लव भावे मने-मन। अक्षय अजित-बाण युड़िल तखन ५४
सन्धान पूरिया एड़े तारा येन छुटे। सेइ बाणे लक्ष्मणेर महाबाण काटे
हेन बाण व्यर्थ गेल चिन्तित लक्ष्मण। मने भावे, शिशु नहे, साक्षात् शमन ५५
अर्व्वुद अर्व्वुद बाण लक्ष्मण ये एड़े। कत दूरे गिया बाण उखाड़िया पड़े
देखिया त लक्ष्मणेर लागे चमत्कार। फुराइल सब बाण, तूणे नाहि आर ५६
शून्य हैल तूण फुराइल अस्त्रगण। देखिया उद्विग्न बड़ हइल लक्ष्मण
बलेन लक्ष्मण परे लव-विद्यमान। एतदूरे मोर युद्ध हैल अवसान ५७
सर्व्व शास्त्र जान तुमि, बिचारे पण्डित। बुझिया करह कार्य, ये हय उचित
शुनिया ताहार कथा लव वीर भाषे। अवश्य मारिब तोमा, ना जाइबे देशे ५८
एक बाण एड़ि आमि, ना भाविओ मन्द। या होक् ता होक् तव, ये थाके निर्व्वन्ध
एइ बाणे यदि तुमि पाओ परित्राण। तबे त लक्ष्मण, तव ना लइब प्राण ५९
करिनु प्रतिज्ञा एइ, शुनह वचन। एइ बाण व्यर्थ गेले ना करिब रण
पाशुपत बाण से लवेर मने पड़े। तूण हैते बाण लये धनुकेते योड़े ६०

जीवन-संशय उपस्थित हो गया है। लक्ष्मण की जितनी शिक्षा थी, वे जितने अस्त्र जानते थे, उन सबको उसी क्षण निशाना साधकर छोड़ने लगे ।।५३।। सारी पृथ्वी बाणों से ढँककर अंधकारमयी हो गयी। लक्ष्मण के बाणों को देखकर सबको बड़ा विस्मय हुआ। लव चिन्तित होकर मन ही मन सोचने लगा और तब उसने अक्षय अजित नाम का बाण धनुष पर चढ़ाया ।। ५४ ।। निशाना साधकर उसने बाण छोड़ दिया, वह तारे (उल्का) की भाँति तेज गति से चल पड़ा। उस बाण ने लक्ष्मण के महा-बाण को काट डाला। ऐसा बाण व्यर्थ हो गया इससे लक्ष्मण चिन्तित हो उठे। वे मन ही मन सोचने लगे, यह तो बालक नहीं है, साक्षात् यमराज है ।। ५५ ।। जो अरबों बाण लक्ष्मण छोड़ते थे, कुछ दूर जाकर वे बाण कटकर गिर रहे थे। वह देखकर लक्ष्मण को बड़ा विस्मय हुआ। उनके सारे बाण खो गये, तरकश में और बाण नहीं रहा ।। ५६ ।। तरकश खाली हो गया। अस्त्र समाप्त हो गये। यह देखकर लक्ष्मण बड़े उद्विग्न हुए। तब लक्ष्मण लव से कहने लगे— अब यहीं तक पहुँचकर मेरा युद्ध समाप्त हो गया ।। ५७ ।। तुम सभी शास्त्रों के ज्ञाता हो, विचारों में पंडित हो। अब समझकर जो कार्य करना हो, तुम वही करो। उनकी बात सुनकर वीर लव कहने लगा, तुम्हें मैं अवश्य मार डालूँगा, तुम लौटकर देश नहीं जा सकोगे ।। ५८ ।। लक्ष्मण, मैं एक बाण छोड़ रहा हूँ, तुम बुरा न मानना। अब तो जो तुम्हारे प्रारब्ध में होगा, वही हो। इस बाण से यदि तुम बच जाओ तो, लक्ष्मण, मैं तुम्हारे प्राण नहीं लूँगा ।। ५९ ।। मैं यही प्रतिज्ञा करता हूँ, मेरे वचन सुनो। यह बाण यदि व्यर्थ हो जाए तो मैं युद्ध नहीं करूँगा। तब लव को पाशुपत बाण का स्मरण हो आया। तरकश से वह बाण निकालकर उसने धनुष पर

वासुकि तक्षक येन बाणेर गर्ज्जन । पाशुपत बाणे बिन्धि पड़िल लक्ष्मण
लक्ष्मणे जिनिया याय भायेर उद्देश्ये । हेथा युद्ध बाजिल भरत आर कुशे ६१
कुशेर सहित लव नाहि करे देखा । लुकाइया देखे ये कुशेर अस्त्र शिक्षा
शत्रुघ्ने मारिया तार बाड़ियाछे आश । भरतेर सने युझे नाहि करे त्रास ६२
एका भाइ यद्यपि जिनिते नारे रण । निर्म्मूल करिब ये, ना रहे एकजन
एतेक भाबिया लब लुकाइया थाके । भरतेर सहित कुशेर युद्ध देखे ६३
भरतेर सने ठाट कटक बिस्तर । चारिभिते युद्ध करे कुश एकेश्वर
बेड़ापाक नामेते कुशेर एक बाण । सेइ बाणे कुशबीर पूरिल सन्धान ६४
बेड़ापाक बाण से प्रवेशे पाके पाक । हस्तपद काटे कारो, कारो काटे नाक
एक ठाइ मुण्ड पड़े, स्कन्ध आर ठाइ । भरतेर ठाट पड़े, लेखाजोखा नाइ ६५
एक बाणे अरि-सैन्य करिल संहार । पर्ब्बत-प्रमाण ठाट पड़िल अपार
रक्तनदी बहिल से संग्रामेर स्थाने । सबे सैन्य पड़े एड़ाइल सात जने ६६
उच्चैःस्वर करि तारा भरतेरे डाके । पलाइया याय केह फिरे फिरे देखे
भावे तारा परित्राण पाइबे केमने । क्षत्रियेर धर्म्म नहे, भङ्ग दिते रणे ६७

चढ़ाया ॥ ६० ॥ वह बाण वासुकि और तक्षक के समान गरज उठा । उस पाशुपत बाण से बिंधकर लक्ष्मण गिर पड़े । लक्ष्मण को जीतकर लव भाई के पास चला, जहाँ भरत और कुश में युद्ध हो रहा था ॥ ६१ ॥ वहाँ पहुँचकर लव कुश के सामने नहीं गया । वह छिपकर कुश के अस्त्र-शिक्षण की निपुणता देखने लगा । शत्रुघ्न को मारकर उसका साहस बढ़ गया था । वह भरत से लड़ते हुए त्रस्त न था ॥ ६२ ॥ यदि कुश भाई अकेले युद्ध में विजय नहीं पा सके तो मैं (शत्रुपक्ष को) निर्मूल कर डालूंगा, कोई एक व्यक्ति भी जीवित नहीं रहेगा । ऐसा सोचकर लव छिपा रहा और भरत के साथ कुश का युद्ध देखता रहा ॥ ६३ ॥ भरत के साथ अनेक सेना थी । कुश अकेला उन सबसे चारों ओर युद्ध कर रहा था । 'बेड़ापाक' (चक्करदार घेरे वाला) नाम का एक बाण कुश का था । वीर कुश ने उसी बाण से निशाना साधा ॥ ६४ ॥ वह 'बेड़ापाक' बाण सेना में चक्कर लगाता हुआ घुस जाता था, वह किसी के हाथ-पैर काट डालता था, किसी की नाक काट लेता था । किसी का सिर एक जगह, तो कन्धा दूसरी जगह गिर रहा था; भरत की कितनी सेना मारी जा रही थी उसका लेखा-जोखा न था ॥ ६५ ॥ उस एक ही बाण से कुश ने शत्रु की सेना का संहार कर डाला । अनगिनत सेना के शव पर्वतों-जैसे हो गये । उस संग्राम-स्थल में रक्त की नदी बह चली । सारी सेना मारी गयी । केवल सात सैनिक बचे रहे ॥ ६६ ॥ ऊँचे स्वर से वे भरत को बुलाने लगे । वे भाग रहे थे, कोई-कोई मुड़-मुड़कर पीछे देख रहा था । वे सोच रहे थे, हमें परित्राण कैसे मिलेगा, रणक्षेत्र में भाग जाना तो क्षत्रिय का धर्म नहीं है ॥ ६७ ॥ भरत बोले, कुश, युद्ध रोक दो । हम ये आठ व्यक्ति

समस्त पृथिवी हैल वाणे अन्धकार। लक्ष्मणेर वाण देखि लागे चमत्कार
चिन्तित हइया लव भावे मने-मन। अक्षय अजित-वाण युड़िल तखन ५४
सन्धान पूरिया एड़े तारा येन छुटे। सेइ वाणे लक्ष्मणेर महावाण काटे
हेन वाण व्यर्थ गेल चिन्तित लक्ष्मण। मने भावे, शिशु नहे, साक्षात् शमन ५५
अर्व्वुद अर्व्वुद वाण लक्ष्मण ये एड़े। कत दूरे गिया वाण उखाड़िया पड़े
देखिया त लक्ष्मणेर लागे चमत्कार। फुराइल सव वाण, तूणे नाहि आर ५६
शून्य हैल तूण फुराइल अस्त्रगण। देखिया उद्विग्न वड़ हइल लक्ष्मण
वलेन लक्ष्मण परे लव-विद्यमान। एतदूरे मोर युद्ध हैल अवसान ५७
सर्व्व शास्त्र जान तुमि, विचारे पण्डित। वुझिया करह कार्य, ये हय उचित
शुनिया ताहार कथा लव वीर भाषे। अवश्य मारिव तोमा, ना जाइवे देशे ५८
एक वाण एड़ि आमि, ना भाविओ मन्द। या होक् ता होक् तव, ये थाके निर्व्वन्ध
एइ वाणे यदि तुमि पाओ परित्राण। तवे त लक्ष्मण, तव ना लइव प्राण ५९
करिनु प्रतिज्ञा एइ, शुनह वचन। एइ वाण व्यर्थ गेले ना करिव रण
पाशुपत वाण से लवेर मने पड़े। तूण हैते वाण लये धनुकेते योड़े ६०

जीवन-संशय उपस्थित हो गया है। लक्ष्मण की जितनी शिक्षा थी, वे जितने अस्त्र जानते थे, उन सवको उसी क्षण निशाना साधकर छोड़ने लगे ।।५३।। सारी पृथ्वी बाणों से ढँककर अंधकारमयी हो गयी। लक्ष्मण के बाणों को देखकर सवको वड़ा विस्मय हुआ। लव चिन्तित होकर मन ही मन सोचने लगा और तव उसने अक्षय अजित नाम का वाण धनुष पर चढ़ाया ।। ५४ ।। निशाना साधकर उसने वाण छोड़ दिया, वह तारे (उल्का) की भाँति तेज गति से चल पड़ा। उस वाण ने लक्ष्मण के महा-बाण को काट डाला। ऐसा बाण व्यर्थ हो गया इससे लक्ष्मण चिन्तित हो उठे। वे मन ही मन सोचने लगे, यह तो बालक नहीं है, साक्षात् यमराज है ।। ५५ ।। जो अरबों वाण लक्ष्मण छोड़ते थे, कुछ दूर जाकर वे वाण कटकर गिर रहे थे। वह देखकर लक्ष्मण को वड़ा विस्मय हुआ। उनके सारे वाण खो गये, तरकश में और वाण नहीं रहा ।। ५६ ।। तरकश खाली हो गया। अस्त्र समाप्त हो गये। यह देखकर लक्ष्मण बड़े उद्विग्न हुए। तव लक्ष्मण लव से कहने लगे— अव यहीं तक पहुँचकर मेरा युद्ध समाप्त हो गया ।। ५७ ।। तुम सभी शास्त्रों के ज्ञाता हो, विचारों में पंडित हो। अव समझकर जो कार्य करना हो, तुम वही करो। उनकी बात सुनकर वीर लव कहने लगा, तुम्हें मैं अवश्य मार डालूँगा, तुम लौटकर देश नहीं जा सकोगे ।। ५८ ।। लक्ष्मण, मैं एक वाण छोड़ रहा हूँ, तुम बुरा न मानना। अव तो जो तुम्हारे प्रारब्ध में होगा, वही हो। इस वाण से यदि तुम वच जाओ तो, लक्ष्मण, मैं तुम्हारे प्राण नहीं लूँगा ।। ५९ ।। मैं यही प्रतिज्ञा करता हूँ, मेरे वचन सुनो। यह वाण यदि व्यर्थ हो जाए तो मैं युद्ध नहीं करूँगा। तव लव को पाशुपत बाण का स्मरण हो आया। तरकश से वह वाण निकालकर उसने धनुष पर

बासुकि तक्षक येन बाणेर गर्ज्जन। पाशुपत बाणे बिन्धि पड़िल लक्ष्मण
लक्ष्मणे जिनिया याय भायेर उद्देश्ये। हेथा युद्ध बाजिल भरत आर कुशे ६१
कुशेर सहित लब नाहि करे देखा। लुकाइया देखे ये कुशेर अस्त्र शिक्षा
शत्रुघ्ने मारिया तार बाड़ियाछे आश। भरतेर सने युझे नाहि करे त्रास ६२
एका भाइ यद्यपि जिनिते नारे रण। निर्म्मूल करिब ये, ना रहे एकजन
एतेक भाविया लब लुकाइया थाके। भरतेर सहित कुशेर युद्ध देखे ६३
भरतेर सने ठाट कटक बिस्तर। चारिभिते युद्ध करे कुश एकेश्वर
बेड़ापाक नामेते कुशेर एक बाण। सेइ बाणे कुशबीर पूरिल सन्धान ६४
बेड़ापाक बाण से प्रबेशे पाके पाक। हस्तपद काटे कारो, कारो काटे नाक
एक ठाइ मुण्ड पड़े, स्कन्ध आर ठाइ। भरतेर ठाट पड़े, लेखाजोखा नाइ ६५
एक बाणे अरि-सैन्य करिल संहार। पर्ब्बत-प्रमाण ठाट पड़िल अपार
रक्तनदी बहिल से संग्रामेर स्थाने। सबे सैन्य पड़े एड़ाइल सात जने ६६
उच्चैःस्वर करि तारा भरतेरे डाके। पलाइया याय केह फिरे फिरे देखे
भाबे तारा परित्राण पाइबे केमने। क्षत्रियेर धर्म्म नहे, भङ्ग दिते रणे ६७

चढ़ाया ॥ ६० ॥ वह बाण वासुकि और तक्षक के समान गरज उठा। उस पाशुपत बाण से बिंधकर लक्ष्मण गिर पड़े। लक्ष्मण को जीतकर लव भाई के पास चला, जहाँ भरत और कुश में युद्ध हो रहा था ॥ ६१ ॥ वहाँ पहुँचकर लव कुश के सामने नहीं गया। वह छिपकर कुश के अस्त्र-शिक्षण की निपुणता देखने लगा। शत्रुघ्न को मारकर उसका साहस बढ़ गया था। वह भरत से लड़ते हुए त्रस्त न था ॥ ६२ ॥ यदि कुश भाई अकेले युद्ध में विजय नहीं पा सके तो मैं (शत्रुपक्ष को) निर्मूल कर डालूँगा, कोई एक व्यक्ति भी जीवित नहीं रहेगा। ऐसा सोचकर लव छिपा रहा और भरत के साथ कुश का युद्ध देखता रहा ॥ ६३ ॥ भरत के साथ अनेक सेना थी। कुश अकेला उन सबसे चारों ओर युद्ध कर रहा था। 'बेड़ापाक' (चक्करदार घेरे वाला) नाम का एक बाण कुश का था। वीर कुश ने उसी बाण से निशाना साधा ॥ ६४ ॥ वह 'बेड़ापाक' बाण सेना में चक्कर लगाता हुआ घुस जाता था, वह किसी के हाथ-पैर काट डालता था, किसी की नाक काट लेता था। किसी का सिर एक जगह, तो कन्धा दूसरी जगह गिर रहा था; भरत की कितनी सेना मारी जा रही थी उसका लेखा-जोखा न था ॥ ६५ ॥ उस एक ही बाण से कुश ने शत्रु की सेना का संहार कर डाला। अनगिनत सेना के शव पर्वतों-जैसे हो गये। उस संग्राम-स्थल में रक्त की नदी बह चली। सारी सेना मारी गयी। केवल सात सैनिक बचे रहे ॥ ६६ ॥ ऊँचे स्वर से वे भरत को बुलाने लगे। वे भाग रहे थे, कोई-कोई मुड़-मुड़कर पीछे देख रहा था। वे सोच रहे थे, हमें परित्राण कैसे मिलेगा, रणक्षेत्र में भाग जाना तो क्षत्रिय का धर्म नहीं है ॥ ६७ ॥ भरत बोले, कुश, युद्ध रोक दो। हम ये आठ व्यक्ति

भरत वलेन, कुश, क्षान्त कर रण। देशे पलाइया याइ एइ अष्ट जन
कुश बले, भरत, ना वल ए वचन। केमने याइवे देशे एइ अष्टजन ६८
सात जन याक देशे रामेर गोचर। वार्त्ता पेये येन राम आसेन सत्वर
सुनह भरत वीर, आमार उत्तर। क्षत्रिय हइया केन हइला कातर ६९
मने भाव, पलाइया पावे अव्याहति। यत काल जीवे तव था किवे अख्याति
अपयश थाकिवे ये पलाइया गेले। अनन्त पौरुष थाके युझिया मरिले ७०
भरत वलेन, कुश इहा मिथ्या नय। श्रीरामेर रूप देखि, तेँइ वासि भय
श्रीरामेर तेज-वल तांरि धनुर्व्वाण। हारिले तोमार ठांइ नाहि अपमान ७१
कुश वले, राम वलि कत गर्व्व कर। राम कि करिवे यदि आजि तुमि मर
आजि तुमि पड़िवे ये आमार संग्रामे। अतः पर आसिया कि करिवेन रामे ७२
मोदेर समरे यदि जयी हन राम। तबे व्यर्थ धरि मोरा लव-कुश नाम
तोमारे छाड़िया दिले लव पाछे हासे। वलिवेन भरते कि ना मारिले त्रासे ७३
कोन्‌काले भाइ मोर मारिल लक्ष्मण। तोमारे मारिते ये विलम्ब एतक्षण
एक वाण बिना आर ना एड़िव वाण। एक वाणे भरत लइव तव प्राण ७४
भरत वलेन, तव बुद्धि भाल नय। श्रीरामेर रूप देखि, तेँइ वासि भय
कुश वले, राम हेन कोटि यदि आसे। वाहुड़िया एकजन नाहि यावे देशे ७५

भागकर अपने देश चले जायें। कुश बोला, भरत, ऐसा वचन न कहो। ये आठ व्यक्ति भला भागकर देश कैसे जायेंगे ? ॥ ६८ ॥ (तुम ऐसा सोचते हो कि) सात व्यक्ति राम के पास जायें और वे समाचार पाकर तुरंत आ जायें ! वीर भरत, हमारा उत्तर सुनो, क्षत्रिय होकर भी तुम ऐसे कातर क्यों हो गये ? ॥ ६९ ॥ तुम मन में सोच रहे हो कि भागकर हमें छुटकारा मिल जायेगा ? इससे तो तुम जितने समय जीओगे, तुम्हारी बदनामी रह जायेगी। तुम भाग जाओ, तो तुम्हारे ऊपर कलंक रह जायेगा। लड़कर मर जाने पर अनन्त पौरुष रह जाता है ॥ ७० ॥ भरत बोले, कुश, यह तो मिथ्या नहीं। पर (तुम लोगों में) श्रीराम का रूप देख रहा हूँ, इसी से मुझे भय हो रहा है। (तुम लोगों में) श्रीराम का तेज-बल, उन्हीं के धनुष-बाण, (तुम्हारे हाथ है)। तुम्हारे हाथों हार जाना कोई अपमान की बात नहीं है ॥ ७१ ॥ कुश बोला, राम का नाम लेकर कितना गर्व करते हो ? यदि तुम आज मर जाओ तो राम क्या करेगा ? मेरे साथ संग्राम में आज तुम्हें मरना है। इसके पश्चात् राम आकर क्या करेंगे ? ॥ ७२ ॥ यदि हमारे साथ युद्ध में राम विजयी हो जाएँ तब तो हमने लव-कुश नाम व्यर्थ ही रखा है। यदि तुम्हें छोड़ दूं तो हो सकता है कि लव मुझ पर हँसे। कहेंगे कि क्या भरत को तुमने भय के मारे नहीं मारा ? ॥ ७३ ॥ मेरे भाई ने कितनी देर पहले लक्ष्मण को मार गिराया है, तुम्हें मारने में इतना विलम्ब हो रहा है। एक बाण के सिवा मैं और बाण नहीं छोड़ूंगा। इस एक ही बाण में भरत, मैं तुम्हारे प्राण ले लूंगा ॥ ७४ ॥ भरत बोले, तुम्हारी मति अच्छी नहीं। (तुममें) मैं श्रीराम का रूप देख रहा हूँ। इसी से डर रहा हूँ।

भरत बलेन, कुश, कर बाड़ाबाड़ि। श्रीरामेर निन्दा कर सहिते ना पारि
शिशु हये कुश, तव एतेक बड़ाइ। आछुक रामेर कार्य्य, जिन मोर ठाँइ ७६
लव लव बलिया ये कर अहंकार। लक्ष्मणेर रणे तार प्राण बाचा भार
लक्ष्मणेर बाणे कारो नाहिक निस्तार। अवश्य लक्ष्मण प्राण लयेछे ताहार ७७
लक्ष्मणेर बाणे लव यद्यपि बाँचित। आसिया तोमारे से अवश्य देखा दित
भरतेर कथा शुनि कुशवीर कय। कोन्‌काले लक्ष्मणेर हइयाछे क्षय ७८
लक्ष्मण लबेर बाणे पाइले निस्तार। ना हबे भरत, तबे तोमार संहार
एत यदि दुइ जने हैल गालागालि। दुइजने युद्ध बाजे, दोँहे महाबली ७९
एड़िल तिराशी कोटि बाण श्रीभरत। दशदिक् जल स्थल ढाकिल पर्व्वत
भरतेर बाणेते हइल अन्धकार। देखिया कुशेर मने लागे चमत्कार ८०
कुश बीर एड़े बाण भरत-सम्मुखे। भरतेर यत बाण, काटे एके एके
सब बाण व्यर्थ गेल, भरत चिन्तित। भरत गन्धर्व्व अस्त्र एड़िल त्वरित ८१
तिन कोटि गन्धर्व्व जन्मिल एकबाणे। कुश सह युद्ध करे अति सावधाने
गन्धर्व्वेर बिक्रमे कुशेर लागे डर। एड़िल अजयजित बाण से सत्वर ८२

कुश बोला, राम जैसे करोड़ों पुरुष यदि आयें तो भी उनमें से एक भी यहाँ से देश नहीं लौट सकेंगे ॥ ७५ ॥ भरत बोले, कुश, तुम बड़ी ज़ियादती कर रहे हो। तुम श्रीराम की निन्दा करते हो, यह मुझसे सहा नहीं जाता। शिशु होकर भी कुश, तुम ऐसा अभिमान रखते हो, (तब) राम की बात रहने दो, पहले मुझे ही जीत तो लो ॥ ७६ ॥ तुम 'लव, लव' कहकर जो अहंकार कर रहे हो, (याद रखो) लक्ष्मण के संग युद्ध में उसका जीवित रहना कठिन है। लक्ष्मण के बाणों से किसी का निस्तार नहीं है। लक्ष्मण ने अवश्य ही उसके प्राण ले लिये हैं ॥ ७७ ॥ लव यदि लक्ष्मण के बाणों से बचा होता, तो वह अवश्य आकर तुमसे मिलता। भरत की बात सुनकर वीर कुश बोला— अरे लक्ष्मण का विनाश तो कितने समय पहले ही हो चुका है ॥ ७८ ॥ लव के बाणों से यदि लक्ष्मण बच जाये, तो भरत, तुम्हारा संहार नहीं होगा। जब दोनों में ऐसी गाली-गलौज हो चुकी तब दोनों लड़ने लगे, दोनों ही महाबली थे ॥ ७९ ॥ भरत ने तिरासी करोड़ बाण छोड़े। उन बाणों ने जल-स्थल, दसों दिशाओं और पर्वतों को ढँक लिया। भरत के बाणों से अँधेरा छा गया। वह देखकर कुश के मन में विस्मय हुआ ॥ ८० ॥ वीर कुश भरत के सम्मुख बाण छोड़ने लगा। भरत के जितने बाण थे, सबको एक-एक कर काट डाला। सारे बाण व्यर्थ हो गये, देखकर भरत चिन्तित हुए। तब भरत ने तुरंत गंधर्वास्त्र छोड़ा ॥ ८१ ॥ उस एक बाण से वहाँ तीन करोड़ गंधर्व उत्पन्न हो गये। वे बड़ी सावधानी से कुश के संग संग्राम करने लगे। गंधर्वों के विक्रम से कुश को भय हुआ। उसने तुरंत 'अजयजित' नाम का बाण छोड़ा ॥ ८२ ॥ कुश के बाणों से गंधर्वों का संहार हो गया। देखकर भरत को विस्मय हुआ। कुश

हइल कुशेर वाणे गन्धर्व्व संहार। देखि भरतेर मने लागे चमत्कार
कुश वले, भरत आर कत वाण एड़। आमि एइ वाण एड़ि, यमघरे नड़ ८३
युड़िल ऐषिक वाण कुश ये धनुके। सिंहेर गर्ज्जने वाण उठे अन्तरीक्षे
महाशव्द करि वाण उठिल आकाशे। देखिया भरत व्यस्त हइलेन त्रासे ८४
भरत कातर हये ऊर्द्ध्वदिके चाय। वायुवेगे पड़े वाण भरतेर गाय
फुटिया ऐषिक वाण पड़िल भरत। पृथिवीते शतधारे वहे रक्तस्रोत ८५
भरत कटक सह पड़िलेन रणे। धेये गेल लव से कुशेर विद्यमाने
रक्ते राङ्गा दुइ भाइ करे कोलाकुलि। जले गिया युद्धरक्त फेलिल पाखालि ८६
संग्रामेर वेश राखि वृक्षेर कोटरे। शून्यहस्ते गेल दोँहे मायेर गोचरे
जानकी वलेन रे विलम्व की कारण। कोन् कार्य्ये लव कुश, व्याज एतक्षण ८७
लव-कुश वले, माता, ना जानि विशेष। मृगया करिया राजा गेल निज देश
एतेक प्रमाद सीता किछु नाहि जाने। मिथ्या कहि मायेरे प्रतारे दुइजने ८८
कोनचिन्ता नाहि मागो, तोमार प्रसादे। तपोवन राखि मोरा मुनि-आशीर्व्वादे
मिष्ट अन्न लये दोँहे करिल भोजन। सुगन्धि-चन्दन-माल्य परिल तखन ८९
परम हरिषे घरे रहे दुइ भाइ। सात जन पलाइया गेल राम ठाँइ

वोला, भरत, और कितने वाण छोड़ोगे? मैं यह वाण छोड़ रहा हूँ, अब यम के घर जाओ ॥ ८३ ॥ कुश ने धनुष पर ऐषिक वाण चढ़ाया। वह बाण सिंह-गर्जना करता हुआ अन्तरिक्ष में चला। घोर नाद करता हुआ वह वाण आकाश में चढ़ गया। देखकर भरत त्रास से विकल हो उठे ॥ ८४ ॥ भरत कातरता से ऊपर की ओर देखने लगे। वह बाण वायु-वेग से भरत के शरीर पर गिरा। ऐषिक वाण (उनके शरीर में) चुभ गया तो भरत गिर पड़े। पृथ्वी पर सैकड़ों धाराओं में रक्त-स्रोत वहने लगा ॥ ८५ ॥ सेना समेत भरत युद्ध में गिर पड़े, तव लव कुश के पास दौड़ गया। रक्त से लाल होकर दोनों भाई एक-दूसरे का आलिंगन करने लगे। (इसके पश्चात्) पानी में उतर कर युद्ध में लगे रक्त को धो दिया ॥ ८६ ॥ संग्राम का वेश (पहनावा) पेड़ के कोटर में रखकर दोनों खाली हाथ माँ के पास गये। जानकी वोली, अरे, तुम्हारे आने में आज बिलम्ब क्यों हुआ? लव-कुश, तुमने किस काम में इतना समय बिताया है? ॥ ८७ ॥ लव-कुश वोले, माता, हम विशेष कुछ नहीं जानते, वह राजा तो शिकार खेलने के पश्चात् अपने देश चला गया। उधर जो महान् संकट आया है, सीता को उसका कुछ भी पता न था। मिथ्या वचन कहकर दोनों ने माँ से छलावा किया ॥ ८८ ॥ माता तुम्हारे प्रसाद से हमें कोई चिन्ता नहीं। मुनि के आशीर्वाद से हम तपोवन की रखवाली करते हैं। दोनों ने मीठा अन्न लेकर भोजन किया उसके पश्चात् सुगंधित चन्दन की माला पहनी ॥ ८९ ॥ दोनों भाई परम हर्ष से घर पर ही रहे। उधर (भरत के) सात व्यक्ति भागकर राम के पास पहुँचे।

लब-कुशेर सहित श्रीरामेर युद्ध करिबार आयोजन

मुनिगणमध्ये राम आछे यज्ञस्थाने। हेनकाले सातजन गेल सेइखाने १
सात जने देखि तबे श्रीराम चिन्तित। जिज्ञासेन भरत ओ लक्ष्मणेर हित
कृताञ्जलि सात जन करे निवेदन। कि कहिब रघुनाथ, देवेर घटन २
प्रमाद पडिल प्रभु, भये नाहि कहि। सात जन आइलाम आर केह नाहि
चारि अक्षौहिणी पड़े भरत-लक्ष्मण। सबे मात्र एड़ाइया आसि सात जन ३
दुइ शिशु नर नहे, बिष्णु अबतार। तोमार यतेक सेना करिल संहार
आपनि यद्यपि राम युझ तार सने। जिनिते नारिबे प्रभु, हेन लय मने ४
त्रैलोक्येर नाथ तुमि, जगत-पूजित। जिनिते नारिबे रण, कहिनु निश्चित
शुनिया मूर्च्छित राम कमललोचन। चैतन्य पाइया राम करेन क्रन्दन ५
कोथा भाइ शत्रुघन भरत-लक्ष्मण। आमारे त्यजिया कोथा गेले तिनिजन
पूर्व्वते आमार प्रति आछिला सदय। रणस्थले गिया भाइ, हइला निर्द्दय ६
श्रीरामेर सर्व्वाङ्ग तितिल नेत्रनीरे। भागीरथी बहे येन हिमालयोपरे
तिन भाये स्मरण करिया बहुतर। 'हाय, हाय' करिया बिलापे रघुबर ७
आमा लागि लक्ष्मण ये राज्य परिहरि। वनवासे गेला सेइ बाकल ये परि
चतुर्द्दश वर्ष दुःख पेले तपोवने। इन्द्रजित पड़िल तोमार तीक्ष्णबाणे ८

लव-कुश के साथ युद्ध करने हेतु श्रीराम का आयोजन

रामचन्द्र मुनियों के बीच यज्ञभूमि में थे। इतने में वे सात व्यक्ति वहाँ पहुँचे ॥ १ ॥ उन सातों को देख श्रीराम चिन्तित हुए। उन्होंने उनसे भरत और लक्ष्मण का कुशल पूछा। उन सात व्यक्तियों ने हाथ जोड़कर निबेदन किया, रघुनाथजी, दैव की घटना क्या बताये ? ॥ २ ॥ प्रभु, महान् संकट आ पड़ा है, हम भय से कुछ कह नहीं पाते। केवल हम सात व्यक्ति आ पाये हैं, और कोई नहीं आ पाया। भरत-लक्ष्मण समेत चार अक्षौहिणी सेना मारी गयी है। केवल हम सात व्यक्ति बचकर आ रहे है ॥ ३ ॥ वे दोनों शिशु तो नर नहीं हैं, विष्णु-अवतार है। आपकी सारी सेना का उन्होंने संहार कर डाला। हे रामचन्द्र, आप यदि स्वयं उनसे युद्ध करें तो ऐसा लगता है कि आप उन्हें जीत नहीं सकेगे ॥ ४ ॥ आप त्रिलोक-नाथ हैं, जगत आपकी पूजा करता है। हम निश्चित रूप से कह रहे हैं— आप युद्ध में उन्हें जीत नहीं सकेंगे। यह सुनते ही कमललोचन राम मूर्च्छित हो गये। चेतना लौटने पर राम रुदन करने लगे ॥ ५ ॥ 'भाई शत्रुघ्न, भरत, लक्ष्मण, तुम कहाँ हो, हमें छोड़कर तुम तीनों कहाँ चले गये ? भाई, पहले तो तुम मुझ पर सदय थे, पर युद्धभूमि में जाकर निर्दय हो गये !' ॥ ६ ॥ श्रीराम का सारा अंग आँसुओं से भीग गया। मानो हिमालय के ऊपर भागीरथी बह रही हों। उन्होने अनेक प्रकार से तीनों भाइयों का स्मरण किया। रघुवर, 'हाय, हाय' कर विलाप करने लगे ॥ ७ ॥ हे लक्ष्मण, उन दिनों, राज्य छोड़कर, वल्कल पहनकर तुम

लक्ष्मणेर तुल्य भाइ नाहि त्रिभुबने। हेन भाइ पड़े मोर छावालेर रणे
भरतेर यत गुण कहिते ना पारि। आमि वने गेले हयेछिल ब्रह्मचारी ९
चौद्दवर्ष दुःख पेये परिल वाकल। राजभोग त्यजिया खाइल वृक्ष-फल
शिशुर विरोधे भाइ गेला रसातल। एतेक भाविया राम हलेन विकल १०
शत्रुघन भाइ मोर प्राणेर सोसर। तव तुल्य वीर नाहि पृथिवी-भितर
बहुदिन-युद्धे आमि मारिनु रावणे। दिनेकेर युद्धे तुमि मारिले लवणे ११
हेन भाइ पड़िल ये शिशुर संग्रामे। या थाके कपाले, ताहा घटे क्रमे क्रमे
नेत्रनीरे श्रीरामेर तितिल वसन। सुग्रीब प्रभृति कहे प्रबोध-वचन १२
आपनि श्रीराम, तुमि बिचारे पण्डित। तोमार क्रन्दन प्रभु, नहे त उचित
क्रन्दन संवर राम, स्थिर कर मति। दुइ शिशु धरि गिया, चल शीघ्रगति १३
श्रीराम बलेन, याइ भायेर उद्देशे। तिन भाइ गेल यदि, आमि आछि किसे
दुइ शिशु मारि शुधिव भायेर धार। अयोध्याय तवे से फिरिव पुनर्व्वार १४
शुनिया रामेर कथा सुग्रीव राजन। श्रीरामेर प्रति कहे प्रवोध-वचन
राक्षस वानर आर यत आछे सेना। साजन करिया मारि शिशु दुइजना १५

हमारे लिए वनवास में गये थे। तपोवन में चौदह वर्ष दुःख भोगा। तुम्हारे तेज़ बाणों से इन्द्रजित् मारा गया ॥ ८ ॥ लक्ष्मण के तुल्य भाई त्रिभुवन में कोई नहीं है। मेरा ऐसा भाई बालकों के साथ रण में मारा गया! भरत के गुणों का तो मैं बयान नहीं कर सकता। मैं जब वन में गया था तो वह ब्रह्मचारी बना था ॥ ९ ॥ चौदह साल दुःख भोग कर वल्कल पहना। राज-भोग तजकर वृक्षों के फल खाये। ऐसा भाई, शिशुओं के साथ लड़ाई में रसातल को चला गया (विनष्ट हो गया)—सोचते हुए रामचन्द्र व्याकुल हो उठे ॥ १० ॥ मेरे प्राणों के समान भाई शत्रुघ्न, तुम्हारे जैसा वीर तो पृथ्वी में कोई नहीं है। बहुत दिन युद्ध कर हमने रावण को मारा। तुमने तो एक ही दिन में लवण को मार डाला था ॥ ११ ॥ ऐसा भाई शिशुओं के संग संग्राम में मारा गया। ललाट में जो लिखा होता है वह क्रमशः घटित होता रहता है। आँसुओं से श्रीराम के वस्त्र भीग गये। सुग्रीव आदि उन्हें धीरज बँधाने लगे! ॥ १२ ॥ हे श्रीराम, आप स्वयं न्याय के पंडित है। प्रभु, आपका रुदन करना तो उचित नहीं। हे राम, आप रोना छोड़ दें। मति को स्थिर रखें। हम उन दोनों शिशुओं को पकड़ें, इस हेतु आप शीघ्रता से चलिए ॥ १३ ॥ श्रीराम बोले, मैं भाइयों के उद्देश्य से जा रहा हूँ जब कि तीन भाई चले गये, तो फिर मै किसलिए रहूँ? उन दोनों भाइयों को मारकर मैं भाइयों का ऋण चुकाऊँगा। तभी फिर अयोध्या में लौटूँगा ॥ १४ ॥ रामचन्द्र की बात सुनकर राजा सुग्रीव ने श्रीराम को धीरज बँधाते हुए कहा— (हमारे यहाँ) राक्षसों, वानरों समेत जितनी सेना है, सबको सजाकर चलिए, हम दोनों शिशुओं को मार डालें ॥१५॥ सुमंत्र को रामचन्द्र ने सूचित किया, देखने में अपूर्व जितने रथ है सबको चुन-चुनकर सजाओ। राम का आदेश

सुमन्त्रेर प्रति राम करेन ज्ञापन। वाछिया साजाओ रथ अपूर्व्व दर्शन
पाइया रामेर आज्ञा सुमन्त्र सारथि। कनके रचित रथ आने शीघ्रगति १६
चड़ेन पुष्पक-रथे श्रीराम प्रवीण। शुभयात्रा करि राम चलेन दक्षिण
चलिल छाप्पान्न कोटि मुख्य-सेनापति। तिन कोटि चले ताहे मदमत्त हाती १७
चलिल तिराशी कोटि श्रेष्ठ-जाति घोड़ा। चलिल सत्तर अक्षौहिणी भूमि जोड़ा
तिन कोटि महारथी चलिल प्रधान। सर्व्वक्षण थाके तारा राम-विद्यमान १८
महारथी चलिल यतेक राजधानी। पात्रमित्र सबे चले करिया साजनि
श्रीरामेर सेना-ठाट-कटक अपार। देखिले यमेर चित्ते लागे चमत्कार १९
सुग्रीव अङ्गद चले लये कपिगण। शरभ गवाक्ष गय से गन्धमादन
महेन्द्र देवेन्द्र चले वानर सम्पाति। चलिल छत्रिश-कोटि मुख्य सेनापति २०
आशीकोटि वीरे चले पवन-नन्दन। तिन कोटि राक्षसे चलिल विभीषण
महाशब्द करि याय रक्षः कपिगण। आर यत सेना याय के करे गणन २१
विजय सुमन्त्र नड़े कश्यप पिङ्गल। सत्राजित महाबल चलिल सकल
रुद्रमुख चले आर सुरक्तलोचन। रक्तबर्ण महाकाय घोर-दरशन २२
रथेर उपर राम चड़ेन सत्वर। महाशब्द करि याय राक्षस-वानर
कटकेर पदभरे काँपिछे मेदिनी। श्रीरामेर वाद्य वाजे तिन अक्षौहिणी २३
कृत्तिवास कवि कहे अमृत काहिनी। दुइटि बालक तरे एतेक साजनि

पाकर सारथी सुमंत्र ने शीघ्रता से स्वर्ण-निर्मित रथ ले आया ॥ १६ ॥ प्रवीण श्रीरामचन्द्र पुष्पक रथ पर सवार हुए। शुभ-यात्रा करते हुए रामचन्द्र दक्षिण की ओर चले। (उनके संग) छप्पन करोड़ मुख्य सेनापति चले, उसके साथ तीन करोड़ मदमत्त हाथी चले ॥ १७ ॥ तिरासी करोड़ श्रेष्ठ जाति के घोड़े चले। सत्तर अक्षौहिणी सेना सारी भूमि व्याप्त कर चली। तीन करोड़ प्रमुख महारथी चले। वे सदैव रामचन्द्र के संग रहते थे ॥ १८ ॥ राजधानी में जितने महारथी थे, सभी चले। मंत्री-सामन्त सभी सजकर चले। श्रीराम की सेना में अपार सैनिक थे। उन्हें देखकर यमराज के चित्त में भी बड़ा विस्मय होने लगा ॥ १९ ॥ सुग्रीव और अंगद वानरों को लेकर चले। शरभ, गवाक्ष, गय, गंधमादन, महेन्द्र, देवेन्द्र, वानर सम्पाति चले। छत्तीस करोड़ मुख्य सेनापति भी चले ॥ २० ॥ अस्सी करोड़ वीरों के संग पवन-नन्दन हनुमान चले। तीन करोड़ राक्षसों के संग विभीषण चले। राक्षस और वानर महान् नाद करते हुए चले। और जितनी सेना चल रही थी उनकी गणना कौन कर सकता है ? ॥ २१ ॥ विजय, सुमंत्र, कश्यप, पिंगल आदि तेजी से चले। सत्राजित, महाबल आदि सभी चले। रुद्रमुख और सुरक्तलोचन भी चले। देखने में भयंकर रक्तवर्ण महाकाय चला ॥ २२ ॥ रामचन्द्र शीघ्रता से रथ पर सवार हुए। राक्षस, वानर महान् नाद करते हुए चले। सेना के पद-भार से धरती काँप रही थी, श्रीराम के तीन अक्षौहिणी बाजे बज रहे थे ॥ २३ ॥ कवि कृत्तिवास अमृत-कथा सुना रहे है। दो बालकों (को मारने) के लिए इतनी सज-धज थी।

लब-कुशेर सहित श्रीरामेर युद्ध

कटक हइल पार नद-नदी-नीरे । जल शुकाइल कटकेर पदभरे १
नदी शुकाइया माटि हैल गुँड़ा गुँड़ा । गगनमण्डले लागे कटकेर धूला
समरे गेलेन राम कमललोचन । पड़ियाछे भरत लक्ष्मण शत्रुघन २
आर पड़ियाछे ठाट छय अक्षौहिणी । देखिया उद्विग्न हइलेन रघुमणि
लब-कुश दुइ भाइ करे अनुमान । एइ बुझि सैन्य लये आसिलेन राम ३
संग्रामे पण्डित अति बिख्यात श्रीराम । इहांके मारिते पारि, तवे थाके नाम
एइ युक्ति दुइ भाइ करे कानाकानि । हेनकाले आइलेन सीता ठाकुराणी ४
जानकी वलेन, किवा कर दुइ भाइ । कटकेर महारोल शुनिते ये पाइ
कार सने करियाछ वाद-विसंवाद । कोन् दिने लव-कुशे पाड़िवे प्रमाद ५
उभये करेन सीतादेवी सावधान । शत शत आशीर्व्वाद करेन कल्याण
अभागीर पुत्र तोरा, निर्धनेर धन । अन्धेर नयन तोरा मायेर जीवन ६
कायमनोवाक्ये यदि हइ आमि सती । तो'सवार युद्धे कारो नाहि अव्याहति
तो'सवार सने येइ आसि करे रण । वाहुड़िया देशेते ना यावे एकजन ७
अव्यर्थ सीतार वाक्य, नहे अन्यमत । याहारे वलेन याहा, ता फले निश्चित
एतेक बलिया सीता चलिलेन घर । चरण वन्दिया चले दुइ सहोदर ८

लव-कुश के साथ श्रीराम का युद्ध

जल से भरे नद-नदियों को वह सेना पार करती हुई चली। सेना के पद-भार से उनका जल सूख गया ॥ १ ॥ नदियाँ सूख गयी, उनकी मिट्टी धूल की भाँति चूर-चूर हो गयी। सेना के चरणों से उठी हुई धूल गगन-मंडल पर जा लगी। कमललोचन राम युद्ध में गये। वहाँ भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न पड़े हुए थे ॥ २ ॥ और छः अक्षौहिणी सेना पड़ी हुई थी। उसे देखकर रघुमणि राम उद्विग्न हो उठे। उधर लव-कुश दोनों भाइयों ने अनुमान लगाया, संभवतः अब राम सेना लेकर आये हैं ॥ ३ ॥ श्रीराम समर में अति विख्यात पंडित हैं। यदि इन्हें मार सकें तो नाम रह जाए। दोनों भाई यही विचार करते हुए कानाफूसी कर रहे थे। उसी समय वहाँ देवी सीता आयी ॥ ४ ॥ जानकी बोली, तुम दोनों भाई क्या कर रहे हो, उधर मैं सेना का प्रचंड नाद सुन रही हूँ। तुम लोगों ने किसके साथ वाद-विवाद किया है ? लव-कुश, किसी दिन तुम लोग विपत्ति बुलाओगे (तुम्हारे कारण संकट आ पड़ेगा) ॥ ५ ॥ ऐसा कहकर देवी सीता ने दोनों को सावधान किया। उनके कल्याण हेतु सौ-सौ आशीर्वाद दिये। (वह कहने लगी) तुम दोनों इस अभागिन के बेटे हो। तुम अंधों के नयनों जैसे इस माँ का जीवन हो ॥ ६ ॥ यदि मैं तन-मन-वचन से सती होऊँ तो तुम दोनों से युद्ध करने पर कोई बच नहीं पायेगा। तुम दोनों से जो आकर युद्ध करेगा, वह कोई भी अपने देश पुनः लौट नहीं पायेगा ॥ ७ ॥ सीताजी के वचन अव्यर्थ हैं, इनकी अन्यथा नहीं हो सकती (इसमें अन्य मत

रामेर सहित युद्ध करे, एइ मन। सेइमत करिलेक बेश दुइजन
तूणपूर्ण बाण निल, धनु निल हाते। युझिबारे दुइ भाइ चले आनन्दते ९
येखाने श्रीराम, तथा गेल दुइजन। तिन राम एक ठाँइ देखे सर्ब्बजन
एक बल, एक रूप, एकइ सुठाम। एकइ बिक्रम सबे देखे तिन राम १०
राक्षस वानर आदि यत सेनापति। अनुमान करे तारा बुद्धे बृहस्पति
पञ्चमास गर्भवती जानकी यखन। सेकाले ताँहारे राम करेन वर्ज्जन ११
लक्ष्मण आनिया ताँरे राखे एइ वने। इहारा सीतार पुत्र हेन लय मने
सेइ गर्भे हइल यमज सहोदर। त्रिभुवनजयी दुइ वीर धनुर्द्धर १२
एइ कथा रघुनाथ, करि अनुमान। नतुबा इहारा केन तोमार समान
ए दुयेर युद्धे राम ना देखि निस्तार। प्राण लये देश प्रति हओ आगुसार १३
एइ युक्ति श्रीरामेरे बले सेनापति। हेनकाले निबेदये सुमन्त्र सारथि
पञ्चमासे यखन जानकी गर्भवती। हेनकाले ताँहारे वर्ज्जिला रघुपति १४
थुइलाम ताँहारे ये एइ वनवासे। आमि ओ लक्ष्मण दोँहे फिरिलाम देशे
अतएब रघुनाथ, एइ सेइ वन। ए दुइ सीतार पुत्र हेन लय मन १५
यमज सोदर दुइ, बुझि ए प्रकार। परिचय लह प्रभु, तोमार कुमार
सुमन्त्रेर कथा शुनि रामेर विस्मय। उभयेर काछे गिया देन परिचय १६

नहीं है)। वह जिससे जो कह देतीं, वह निश्चित रूप से फलीभूत होता। वैसा कहकर सीताजी घर चलीं। दोनों सहोदर उनके चरणों की वंदना कर चले ॥ ८ ॥ उनके मन में यह भाव था कि राम के साथ युद्ध करें! उन दोनों ने उसी तरह से वेश-सज्जा की। उन दोनों ने तूण भरकर बाण लिये, हाथों में धनुष ले लिये, और दोनों भाई आनन्द से लड़ने चले ॥ ९ ॥ जहाँ श्रीराम थे, वहीं दोनों भाई पहुँचे। सबने (मानो) तीन राम एक स्थान पर देखे। सबने देखा, एक ही जैसे बल, एक जैसे रूप, एक ही जैसी सुन्दर आकृति एक ही जैसे बिक्रम वाले तीन राम हैं ॥ १० ॥ राक्षस, वानर आदि के सारे सेनापति, जो विचार में बृहस्पति जैसे थे, वे अनुमान करने लगे— जानकी जब पाँच महीने की गर्भवती थीं, उसी काल में रामचन्द्र ने उन्हें त्याग दिया था ॥ ११ ॥ लक्ष्मण ने उन्हें (सीता को) लाकर इसी वन में रखा था। हमारे मन में ऐसा लगता है कि ये सीता के ही पुत्र हैं। सीता के उसी गर्भ से ये त्रिभुवनविजयी दोनों वीर धनुर्धर जुड़वें सहोदर उत्पन्न हुए हैं ॥ १२ ॥ हे रघुनाथ, हम यही अनुमान कर रहे हैं, नहीं तो ये आपके समान क्यों होते? हे राम, इन दोनों के साथ युद्ध में हम निस्तार नहीं देखते। चलिये, हम प्राण बचाकर देश को लौट जायें ॥ १३ ॥ सेनापतिगण राम को जब यह सुझाव दे रहे थे, उसी समय सारथी सुमंत्र ने उनसे निवेदन किया— हे रघुपति, जब जानकी पाँचवें महीने की गर्भवती थीं, उसी समय आपने उन्हें तज दिया था ॥ १४ ॥ उन्हें इसी (स्थान में) वनवास में रखकर मैं और लक्ष्मण दोनों देश लौटे थे। अतः रघुनाथ, यही वह वन है, मन में ऐसा लगता है कि ये दोनों सीता के पुत्र हैं ॥ १५ ॥ प्रभु, हम ऐसा समझते हैं कि ये

राजा दशरथेर तनय आमि राम। तोमरा आमारि मत धर रूप श्याम
तेज धर आमार, आमारि धनुर्व्वाण। आकृति-प्रकृति देखि आमार समान १७
पराक्रम आमारि, ना हय अन्य ज्ञान। अतएव कहि आमि, बलह विधान
तेइ से कारणे आमि परिचय चाइ। परिचय देह, के तोमरा दुइ भाइ १८
परिचय देह, किवा आमार नन्दन। एमन हइले आमि ना करिव रण
ना जानिया मारिव कि आपन तनय। यावत् ना लव प्राण देह परिचय १९
शुनिया से कथा दोँहे करे कानाकानि। केमने वलिव नाम, वापे नाहि चिनि
आजि गिया जिज्ञासिव जननीर ठाँइ। कार पुत्र आमरा यमज दुइ भाइ २०
दुइ भाइ युक्ति करे, केह नाहि शुने। डाकिया रामेरे वले तर्ज्जन गर्ज्जने
एतदिने अवोधेर सने दरशन। परिचय दिले हवे कोन् प्रयोजन २१
पुत्र हये पितृसने केवा करे रण। आपनार पुत्र वलि भाव मने-मन
आमा दोँहे देखिया ये काँपिला अन्तरे। परिचय ते-कारणे चाह वारे वारे २२
तोमारे कहिव, शुन अवोध श्रीराम। वड़ भय पाओ तुमि करिते संग्राम
दुइ भाइ चतुर ना जाने पितृनाम। भाण्डाइल छल करि वुझिलेन राम २३

जुड़वें सहोदर भाई आपके कुमार हैं। आप इनका परिचय लीजिए। सुमंत्र की वात सुनकर रामचन्द्र को विस्मय हुआ। उन्होंने दोनों के पास जाकर अपना परिचय देते हुए कहा—॥ १६ ॥ मैं राजा दशरथ का पुत्र हूँ। तुम लोग मेरे जैसे ही श्याम रूप वाले हो। मेरे जैसे ही तेजस्वी हो, मेरे जैसे धनुष-बाण धारण करते हो। तुम्हारी आकृति-प्रकृति भी मेरी ही जैसी हैं॥ १७ ॥ पराक्रम भी मेरे ही जैसा है, (तुम्हें देखकर) कोई दूसरे हो ऐसा नहीं लगता। अतः मैं कहता हूँ, अपना विवरण बताओ! मैं इसी कारण तुम्हारा परिचय चाहता हूँ। तुम परिचय दो, तुम दोनों भाई कौन हो ? ॥ १८ ॥ परिचय दो, क्या तुम मेरे पुत्र हो ? ऐसा हो तो मैं युद्ध नहीं करूँगा। क्या विना जाने अपने पुत्र को मार डालूँ ? जब तक मैं तुम्हारे प्राण न ले लूँ, अपना परिचय दे दो॥ १९ ॥ यह वात सुन दोनों कानाफूसी करने लगे। बाप को तो हम पहचानते नहीं तो भला नाम कैसे बतायें। आज जाकर माँ से पूछेंगे, हम दोनों जुड़वें भाई किसके पुत्र हैं॥ २० ॥ दोनों भाई आपस में विचार कर रहे थे; उनकी बातें दूसरा कोई सुन नहीं पाता था। उन दोनों ने राम को पुकार कर तर्जन-गर्जन करते हुए कहा— इतने दिन पश्चात् इस अवोध से भेंट हुई है। हमारा परिचय देने पर भला कौन-सा कार्य सिद्ध होगा ? ॥ २१ ॥ पुत्र होकर भला पिता के साथ युद्ध कौन करता है ? तुम अपना पुत्र समझकर मन ही मन सोचते रहो। हम दोनों को देखकर मन में (भय से) काँप उठे हो, इसी कारण बार-बार हमारा परिचय चाहते हो॥ २२ ॥ हम कहेंगे, अवोध श्रीराम, सुनो, तुम संग्राम से बहुत डरते हो। दोनों भाई चतुर थे, वे पिता का नाम नहीं जानते थे, बहाना बनाकर धोखा दे दिया। यह वात रामचन्द्र समझ गये॥ २३ ॥ उनमें परिचय नहीं हुआ। एक-दूसरे को

परिचय नाहैल हइल गालागालि । सर्व्व सैन्य वेड़े लव-कुश महाबली
श्रीराम बलेन नाहि दिले परिचय । सावधाने युझ सैन्य, ना करिह भय २४
आमार छाप्पान्न कोटि मुख्य सेनापति । तिन कोटि आमार ये मदमत्त हाती
आछये तिराशी कोटि श्रेष्ठजाति घोड़ा । अक्षौहिणी सत्तर कटके पृथ्वी जोड़ा २५
सुग्रीव ओ अङ्गदेर आछे कोटि सेना । यार युद्धे देव-दैत्य काँपे सर्व्वजना
भल्लुक असंख्य आछे, राक्षस-बानर । आमार अनेक ठाट कटक विस्तर २६
एतेक कटक यदि पड़े आजि रणे । तबे अपयश मोर घुषिवे भुवने
बाछिया बाछिया बीर देह चारिभिते । वेड़ येन दुइ शिशु नारे पलाइते २७
मन्त्रिगण-सह राम करेन मन्त्रणा । बाछिया कटक दिल चारिभिति थाना
हस्ती घोड़ा चलाइल प्रथमतः रणे । विपक्ष मरुक घोड़ा-हस्तीर चापने २८
पाइया रामेर आज्ञा कटकेर त्वरा । चालाय प्रथम रणे हाती आर घोड़ा
राहुत माहुत धाय शिशु धरिबारे । दुइ भाइ दुइ भिते धनुर्ब्बाण जोड़े २९
लव बले, कुश भाइ, युक्ति कर सार । राम-सैन्य काटिया करिब चूरमार
दुइ भाइ कुपिया धनुके बाण जोड़े । हस्ती घोड़ा काटिया गगने बाण उड़े ३०
लव एड़िलेन बाण नामेते आहुति । एक बाणे काटिया पाड़िल कोटि हाती
कुश बाण एड़िल नामेते अश्वकला । काटिल तिराशी कोटि तुरङ्गेर गला ३१

गालियाँ दी (तिरस्कार किया)। महाबली लव-कुश ने सारी सेना को घेर लिया। श्रीराम बोले, इन दोनों ने तो अपना परिचय नहीं दिया। सेना-गण, तुम लोग सावधानी से युद्ध करो, भय न करो ।। २४ ।। हमारे छप्पन करोड़ मुख्य सेनापति हैं, तीन करोड़ मदमाते हाथी हैं। तिरासी करोड़ श्रेष्ठ जाति के घोड़े हैं। सत्तर अक्षौहिणी सेना से पृथ्वी परिपूर्ण है ।। २५ ।। सुग्रीव या अंगद की करोड़ों सेना है। जिसके साथ युद्ध में देव-दैत्य सभी काँपते रहते हैं। अनगिनत भालू हैं, राक्षस-वानर हैं। हमारी अनेक सेना और असंख्य सैनिक है ।। २६ ।। यदि आज इतनी सेना युद्ध में मारी जाय तो संसार में मेरा अपयश घोषित होगा। चुन-चुनकर वीरों को चारों ओर लगा दो। उन दोनों शिशुओं को घेर लो जैसे वे दोनों भाग न सकें ।। २७ ।। मंत्रियों के साथ रामचन्द्र ने मंत्रणा की। चुने हुए सैनिकों को चारों ओर जमा दिया। पहले युद्ध में हाथी-घोड़ों को आगे बढ़ाया, जिससे विपक्ष के (बच्चे) हाथी-घोड़ों के पैरों तले कुचल-कर मर जायें ।। २८ ।। राम की आज्ञा पाकर सेना में जल्दी मच गयी। युद्ध में पहले हाथी और घोड़े आगे बढ़ाये गये। और महावत उन शिशुओं को पकड़ने धावित हुए। उधर दोनों भाइयों ने दो ओर से धनुष पर वाण चढ़ा लिये ।। २९ ।। लव बोला— भैया कुश, हम उचित परामर्श करें। (जिससे) राम की सेना को काटकर चूर-चूर कर डालें। दोनों भाइयों ने कुपित होकर धनुष पर वाण चढ़ाये। हाथी-घोड़ों को काटकर उनके वाण आकाश में उड़ने लगे ।। ३० ।। लव ने आहुति नाम का बाण छोड़ा। एक वाण ने करोड़ों हाथियों को काटकर गिरा दिया। कुश ने अश्वकला नाम का वाण छोड़ा और तिरासी करोड़ घोड़ों के गले काट

चारिभिते सैन्य युझे, लव-कुश माझे । नाना अस्त्र लइया से दुइ भाइ युझे
सैन्य देखि दुइ भाइ भावित-अन्तर । केमने मारिबे ठाट-कटक बिस्तर ३२
एत सैन्य लइया युझिते एल राम । इहाके मारिते पारि, तबे रहे नाम
सतीपुत्र हइ यदि, थाके मुनि-वर । एखनि मारिया पाठाइब यमघर ३३
मुनिर आशीषे हय सर्व्वत्र कल्याण । सन्धान पूरिया लव-कुश एड़े बाण
षट्चक्र बाणे लव पूरिल सन्धान । त्रिभुवन युझे यदि, नाहि धरे टान ३४
वेड़ापाक नामे बाण कुशेर प्रधान । सेइ बाण लये कुश पूरिल सन्धान
हेन बाण दुइ भाइ युड़िल धनुके । सन्धान पूरिया एड़े, उठे अन्तरीक्षे ३५
सिंहेर गर्ज्जने बाण तारा हेन छुटे । श्रीरामेर सेना यत दुइ भाइ काटे
समरे आसियाछिल भल्लुक-वानर । केह हाते करि गाछ केह वा पाथर ३६
सुग्रीव अङ्गद युझे वीर हनुमान । कोटि कोटि सेनापति युझे सावधान
राक्षस भल्लुक कपि रूपे भयङ्कर । नाना अस्त्र एड़े तारा पादप-पाथर ३७
राक्षस वानर आर यतेक भल्लुक । निरखिया लव-कुश करिछे कौतुक
लव वले, कुश भाइ, शुनह बचन । देख देख कटकेर विकट बदन ३८
हेन सब मुख कभु नाहि देखि आर । देखिते शरीर येन पर्व्वत-आकार
वानर भल्लुक वीर युझिछे विस्तर । नाना-अस्त्र एड़े तारा पादप-पाथर ३९

डाले ॥ ३१ ॥ राम की सेना चारों ओर से लड़ रही थी, लव-कुश बीच में थे। वे दोनों भाई नाना प्रकार के अस्त्र लेकर लड़ने लगे। राम की (विशाल) सेना देख दोनों भाई अन्तर् में चिन्ता करने लगे, इन अनगिनत सैनिकों और सेनाओं को किस प्रकार मारें ! ॥ ३२ ॥ इतनी सेना लेकर रामचन्द्र लड़ने आये हैं, यदि इन्हें मार सकें तो नाम रह जाए। यदि हम सती के पुत्र हों, मुनि का वरदान हमें मिला हो तो इन्हें अभी मारकर यमलोक भेज देंगे ॥ ३३ ॥ मुनि के आशीर्वाद से सर्वत्र कल्याण होता है। लव-कुश निशाना साधकर बाण छोड़ने लगे। लव ने षट्चक्र बाण चढ़ाकर निशाना साधा। (वह बाण ऐसा था कि) यदि त्रिभुवन भी (उसके विरुद्ध) लड़े तो उसे रोका नहीं जा सकता था ॥ ३४ ॥ कुश के बाणों में सर्वप्रमुख 'वेड़ापाक' नाम का बाण था। उसी बाण को लेकर कुश ने निशाना साधा। वैसे बाणों को लेकर दोनों भाइयों ने धनुष पर चढ़ाया। निशाना साधकर छोड़े वे बाण अन्तरिक्ष में जा चढ़े ! ॥३५॥ सिंहनाद करते हुए वे बाण तारों जैसे तेजी से चले। श्रीराम की सारी सेना को उन दोनों भाइयों ने काट डाला। भालू-वानर युद्ध में आये हुए थे। कोई हाथ में पेड़ लिये हुए था, तो कोई पत्थर ॥ ३६ ॥ सुग्रीव, अंगद और वीर हनुमान तथा सतर्कता से युद्ध करनेवाले करोड़ों सेनापति लड़ने लगे। राक्षस, भालू, वानर आदि के रूप बड़े भयंकर थे। वे नाना प्रकार के अस्त्र, वृक्ष और पत्थर फेंकते थे ॥ ३७ ॥ राक्षस, वानर और जितने भालू थे, उन्हे देखकर लव-कुश बड़ा कौतुक करने लगे। लव बोला, भाई कुश, सुनो। उस सेना के विकट मुखों को तो देखो ॥ ३८ ॥ ऐसे मुख तो कभी और नहीं देखे थे। इनके शरीर देखने में पर्वतों के आकार

राक्षसेरा बाण एड़े पूरिया-सन्धान । लव-कुशे देखिया ना हय आगुयान
लव बले कुश भाइ, कार मुख चाइ । विकट कटक मारि पाड़ि दुइ भाइ ४०
सेइ दिके दुइ भाइ पूरिल सन्धान । सन्धान पूरिया एड़े चोका चोका बाण
बाणे बिद्ध राक्षस वानर यत पड़े । येमन कदली बृक्ष पड़े महाझड़े ४१
लव बले, कुशेर कि शिक्षा चमत्कार । राक्षस बानर आदि पड़िल अपार
परे आइलेक युद्धे सुग्रीव वानर । द्वादश योजन आने पर्व्वत सत्वर ४२
क्रोधभरे पर्व्वत उपाड़े दुइ हाते । इच्छा करे, मारे लव-कुशेर शिरेते
बाणे काटि लव-कुश करे खान खान । आर बाणे सुग्रीवेर लइल पराण ४३
तवे त अङ्गद बीर आइल सत्वरे । धरिबार चाहे दोंहे आपनार जोरे
एतेक भाविया बीर लाफ दिया याय । लव-कुश बाण एड़े, पड़े तार गाय ४४
पड़िल अङ्गद बीर, सेइ बाण घाये । हनूमान आइलेन हाते गिरि लये
पर्व्वत एड़िल लव-कुशेर उद्देशे । बाणे काटि लव-कुश उड़ाय आकाशे ४५
कुश बाण मारे हनूमानेर उपरे । मूर्च्छित हइया हनू पड़िल समरे
देखिया हनूर दशा अपर वानर । त्रासे पलाइया याय हइया कातर ४६

के हैं। अनेक वानर और भालू वीर लड़ रहे है। ये नाना प्रकार के अस्त्रों, पेड़ों और पत्थरों से प्रहार करते है ॥ ३९ ॥ राक्षसगण निशाना साधकर बाण छोड़ते थे, परन्तु लव-कुश को देखकर वे आगे नही बढ़ते थे। लव बोला, भाई अब भला किसका मुँह देखना है ? हम दोनों भाई अब इस विकट सेना को मार गिरायें ॥ ४० ॥ दोनों भाइयों ने उसी दिशा में निशाना साधा। निशाना साधकर वे नुकीले बाण छोड़ने लगे ! बाणों से बिंध-बिंधकर सारे राक्षस-वानर ऐसे गिरने लगे, जैसे महान् आँधी में केले के वृक्ष गिरते हैं ॥ ४१ ॥ लव बोला, कुश की शिक्षा कैसी विस्मयकारी है। (उसके बाणों से) अपार राक्षस-वानर आदि मारे गये। उनके (गिरने के बाद) वानर सुग्रीव युद्ध में आया। शीघ्रता से बारह योजन का पर्वत वह उठा लाया ॥ ४२ ॥ उसने क्रोध में भरकर दोनों हाथों से पर्वत को उखाड़ लिया और चाहा कि वह पर्वत लव-कुश के सिर पर दे मारे। परन्तु लव-कुश ने बाण मार, उस पर्वत को काटकर टुकड़े-टुकड़े कर दिये। दूसरे बाण से उसने सुग्रीव के प्राण ले लिये ॥ ४३ ॥ तब तुरंत वीर अंगद वहाँ आया। दोनों को उसने अपने बल से पकड़ लेना चाहा। ऐसा सोझकर वीर अंगद कूदता हुआ चला। लव-कुश ने बाण छोड़े, जो उसके शरीर में लगे ॥ ४४ ॥ उन बाणों के आघात से वीर अंगद गिर पड़ा। तब हनुमान हाथों में पर्वत लेकर वहाँ आये। उन्होंने लव-कुश की ओर पर्वत को फेंका। उसे बाणो से काटकर लव-कुश ने आकाश में उड़ा दिया ॥ ४५ ॥ कुश ने हनुमान पर बाण मारा जिससे हनुमान मूर्च्छित होकर युद्धभूमि में गिर पड़े। हनुमान की दशा देख दूसरे वानर भय के मारे कातर हो (युद्ध-भूमि से) भागने लगे ॥ ४६ ॥ इसके बाद कुश ने 'वेड़ापाक' बाण से

वेड़ापाक बाणे कुश पूरिल सन्धान । वेड़ापाके सवाकार लइल पराण
राक्षस-भल्लुक आदि पड़े कपिगण । एसवार मध्ये एड़ाइल तिन जन ४७
अमर कारणे एड़ाइल तिन वीर । दुइ कटकेर रक्त बहे येन नीर
रक्तेते भासिया नदी हइल पाथार । देखिया रामेर मने लागे चमत्कार ४८
आछिल छाप्पान्न कोटि श्रीरामेर सेना । हस्ती घोड़ा ठाट, तार नाहि एक जना
श्रीरामेर सेनापति वीर महामति । गिया छिल रणस्थले सैन्येर संहति ४९
श्रीरामेर आगे कहे योड़ करि हात । प्राण लये देशेते चलह रघुनाथ
यदि रघुनाथ, देशे करह गमन । तवे त सवार रक्षा, नतुवा मरण ५०
शिशु नहे, दुइजन साक्षात् शमन । ए दोँहार सम वीर नाहि त्रिभुवन
श्रीराम बलेन, आइलाम सैन्य-साथे । सव सैन्य मजाइया याइव किमते ५१
मजाइया सर्व्वस्व केमने याव घर । सावधाने युझ सवे, ना करिह डर
सेनापति सकले रामेर आज्ञा पाय । धनुर्व्वाण हाते करि युझिवारे याय ५२
एकेबारे सव सैन्य पूरिल सन्धान । सन्धान पूरिया एड़े चोका चोका बाण
कोटि कोटि चोकावाण सेनापति एड़े । लव-कुशे निरखिया आगु नाहि नड़े ५३
सेनापति सकलेते लागे चमत्कार । पलाइया सव सैन्य हैल छत्राकार
भङ्ग दिल सेनापति, लव-कुश हासे । डाक दिया श्रीरामेरे बले लव-कुशे ५४

निशाना साधा। उस 'बेड़ापाक' वाण ने सबके प्राण ले लिये। राक्षस, भालू, वानर आदि सभी मारे गये। इन सबमें केवल तीन व्यक्ति बचे रहे ॥ ४७ ॥ अमर होने के कारण ये तीन वीर बचे रहे। (वानरों एवं राक्षसों) इन दोनों सेनाओं के रक्त पानी की भाँति बहने लगे। रक्त से उमड़कर मानो वह नदी सागर बन गयी। यह देखकर रामचन्द्र के मन में विस्मय हुआ ॥ ४८ ॥ श्रीराम की छप्पन करोड़ सेना थी। हाथियों-घोड़ों के समूह थे। उनमें कोई नहीं बचा। श्रीराम का सेनापति वीर महामति सेना के संग गया हुआ था ॥ ४९ ॥ उसने श्रीराम के सामने हाथ जोड़कर कहा— हे रघुनाथजी, प्राण लेकर अब अपने देश लौट चलें। रघुनाथजी, यदि आप देश को चले जायें, तब तो (आपके वचने से) सबका बचाव है, नहीं तो सबकी मौत होगी ॥ ५० ॥ ये तो शिशु नहीं है, साक्षात् यमराज हैं। इन दोनों के समान वीर त्रिभुवन में नहीं है। श्रीराम बोले— मैं तो सेना के साथ आया था, अब सेना को खोकर भला कैसे चला जाऊँ? ॥ ५१ ॥ सब कुछ खोकर मैं घर कैसे चला जाऊँ? तुम सब लोग सावधानी से युद्ध करो, डरो मत। सभी सेनापति रामचन्द्र की आज्ञा पाकर हाथों में धनुष-बाण ले लड़ने चले ॥ ५२ ॥ सारी सेना ने एक साथ निशाना साधा। निशाना लगाकर नुकीले वाण छोड़ने लगे। सेनापतिगण करोड़ों नुकीले बाण छोड़ने लगे। पर वे लव-कुश को देखकर आगे नहीं बढ़ते थे ॥ ५३ ॥ सारे सेनापति चमत्कृत हो उठे। सारी सेना भागकर बिखर गयी। सेनापति भाग गये, लव-कुश हँसने लगे। श्रीराम को पुकारकर लव-कुश ने कहा— ॥ ५४ ॥

भङ्ग दिल युद्धे तब यत सेनापति। हेन ठाट केन राम, आनह संहति
श्रीराम पाइया लज्जा करेन उत्तर। याय याक ठाट, आमि आछि एकेश्वर ५५
आमि आछि एकाकी, तोमरा दुइ जन। एक बाणे पाठाइव यमेर सदन
एत यदि तिन जने बोलचाल हैल। से-सकल सेनापति आबार आसिल ५६
चारिदिके लव-कुशे बेड़िल सकले। निरखिया लव-कुश अग्नि-हेन ज्वले
सेनापति सकले धनुके जोड़े बाण। लव-कुशे देखिया ना हय आगुवान ५७
सेनापतिगण-हस्ते यत अस्त्र छिल। फुराइल सब बाण, तूण शून्य हैल
सेनापतिगणे रणे करिया बिरति। लव-कुश बले सेना-सकलेर प्रति ५८
तोमा सबाकार युद्ध हैल अवसान। एबे मोरा दुइ भाइ पूरि ये सन्धान
एड़िलेक बाण गोटा तारा येन छुटे। सेनापति छाप्पान्न कोटिर माथा काटे ५९
बासुकि तक्षक येन बाणेर गर्ज्जन। पड़िल सकल सैन्य नाहि एकजन
पड़िल सकल सैन्य नाहिक दोसर। सबे मात्र श्रीराम आछेन एकेश्वर ६०
चिन्ता करिलेन राम हइया उदास। डाक दिया लव-कुश करे उपहास
सर्व्वलोके बले तोमा धार्म्मिक श्रीराम। अलक्षिते यत तुमि करिला संग्राम ६१
दुजनेर प्रति यदि तिन जन रोषे। धर्म्मनाश हय, मरे आपनार दोषे
हस्ती घोड़ा ठाट कटकेर नाहि संख्या। सतीपुत्र आमरा ये, तेइ पाइ रक्षा ६२

तुम्हारे सारे सेनापति युद्ध से भाग गये। हे राम, तुम ऐसी सेना को साथ क्यों लाते हो? श्रीराम ने लज्जित होकर कहा— यदि सेना चली गयी तो जाने दो, मैं अकेला यहाँ हूँ ॥ ५५ ॥ मैं अकेला हूँ, तुम दो हो। तुम्हें एक ही वाण से यमलोक भेज दूंगा। तीनों में ऐसी बातचीत हो रही थी, तभी वे सेनापति फिर लौट आये ॥ ५६ ॥ सबने लव-कुश को चारों ओर से घेर लिया। यह देख लव-कुश अग्नि की भाँति जल उठे। सारे सेनापतियों ने धनुष पर वाण चढ़ाये। पर लव-कुश को देख वे आगे न वढ़े ॥ ५७ ॥ सेनापतियों के हाथ जितने अस्त्र थे, वे सारे बाण समाप्त हो गये, उनके तूणीर खाली हो गये। तब सेनापतिगण युद्ध से विरत हो गये। लव-कुश ने तब सेना को संबोधित करते हुए कहा— ॥ ५८ ॥ तुम सबका युद्ध समाप्त हो गया। अब हम दो भाई निशाना साध रहे हैं। उन लोगों ने एक बाण छोड़ा, जो तारे (उल्का) की भाँति तेजी से चला और छप्पन करोड़ सेनापतियों के सिर काट डाले ॥ ५९ ॥ वह बाण वासुकी एवं तक्षक की भाँति गरज रहा था। सारी सेना मारी गयी, एक भी न रहा। सारी सेना मारी गयी, दूसरा कोई न रहा। केवल अकेले रामचन्द्र रह गये ॥ ६० ॥ रामचन्द्र ने उदास होकर सोचा। उन्हें पुकारकर लव-कुश उपहास करने लगे। श्रीराम, सब लोग तुम्हें धार्मिक कहते हैं, तुमने जो संग्राम किये थे, उसे हमने नहीं देखा ॥ ६१ ॥ (यह धर्मयुद्ध की रीति है) दो व्यक्तियों पर यदि तीन व्यक्ति कुपित होकर लड़ते हैं, तो धर्म-नाश होता है। अपने ही दोष से उनका विनाश होता है। (हम दो के विरुद्ध) तुम्हारे हाथी, घोड़े, सेना-सैनिकों की गिनती नहीं है। हम सती-पुत्र है, इसी कारण बच सके हैं ॥ ६२ ॥ श्रीराम ने कुछ

कहेन श्रीराम किछु हइया लज्जित । तोमरा या' किछु बल, नहे अनुचित
पृथिवी-मण्डले आमि राज-चक्रबर्त्ती । ना जानि, कतेक ठाट आइल संहति ६३
आमारे जिनिते केबा पारे त्रिभुवने । पुत्र-बिना आमारे नाहिक केह जिने
आछये पुत्रेर स्थाने मोर पराजय । पिताके जिनिते पुत्र पारे, शास्त्रे कय ६४
आमार आकृति देखि तोमरा दुजन । मम पुत्र हओ यदि, ना करिब रण
परिचय देह, किवा आमार नन्दन । लब-कुश बलिया तोमरा दुइजन ६५
रावण दुर्ज्जय बीर छिल लङ्कादेशे । आमार सहित रणे मरिल सबंशे
शुनिया रामेर कथा दुइ भाइ हासे । डाक दिया रामेरे बलिछे अबशेषे ६६
शुनह तोमारे बलि अबोध श्रीराम । बड़ भय पेले तुमि करिते संग्राम
पुत्र पुत्र बलिया चाहिछ परिचय । हेन बुझि समर करिते बास भय ६७
कोथा शुनियाछ तुमि पिता-पुत्रे रण । आपनार पुत्र बलि भाव मने-मन
रणेते पण्डित तुमि, निजे महाराज । बारे बारे पुत्र बल, नाहि बास लाज ६८
रावणे मारिया कत आपना बाखान । पड़िले बीरेर हाते भाल मते जान
अधिक कि कब राम, शुनह उत्तर । क्षत्रिय हइया केन हइला कातर ६९
आमरा मुनिर पुत्र, सेइमत बल । तुमि त धरणीपति, केन कर छल
श्रीराम बलेन, शुन बलि लब-कुश । बालकेर सह युद्धे कि हबे पौरुष ७०

लज्जित होकर कहा— तुम लोग जो कुछ कहते हो, वह अनुचित नहीं है। मैं पृथ्वी-मंडल पर राज-चक्रवर्ती हूँ, मुझे तो पता नही मेरे संग कितनी सेना आयी ॥ ६३ ॥ हमें त्रिभुवन में कौन जीत सकता है ? पुत्र के सिवा ऐसा कोई नही है जो हमें जीत सके। अपने पुत्र के हाथ मेरी पराजय होनी है। शास्त्र कहते हैं, पिता को पुत्र जीत सकता है ॥ ६४ ॥ देखता हूँ, तुम दोनों मेरी ही आकृति वाले हो। यदि तुम मेरे पुत्र हो तो मैं युद्ध नहीं करूँगा। तुम परिचय दो, लव-कुश नाम वाले तुम दोनों क्या मेरे पुत्र हो ? ॥ ६५ ॥ लका देश में रावण दुर्जेय वीर था, हमारे साथ युद्ध में वह सवंश मारा गया। राम की बात सुनकर दोनों भाई हँसने लगे। अन्त में राम को पुकारकर कहने लगे— ॥ ६६ ॥ अबोध श्रीराम, सुनो, तुमसे हम कहते हैं, तुम संग्राम करने में बहुत ही भयभीत हो गये हो। 'पुत्र, पुत्र' कहकर तुम परिचय पाना चाहते हो। युद्ध करने में तुम्हें ऐसा ही डर लग रहा है ? ॥ ६७ ॥ पिता-पुत्र में युद्ध होने की बात तुमने कहाँ सुनी है ? इसी कारण 'अपने पुत्र हैं' ऐसा मन ही मन सोच रहे हो। महाराज, तुम स्वयं रण के पंडित हो। बार-बार 'पुत्र' कहने में क्या तुम्हें लज्जा नहीं आती ? ॥ ६८ ॥ रावण को मारकर अपना कितना बखान करते हो। यह भलीभाँति जान लो कि तुम अब वीरों के हाथ पड़े हो। हम और अधिक क्या कहें, राम, हमारे उत्तर सुनो ! तुम क्षत्रिय होकर भी ऐसे कातर क्यों हो गये ? ॥ ६९ ॥ हम मुनि के पुत्र हैं, हमारा बल उसी के अनुसार है। तुम तो धरती के अधीश्वर हो, तो फिर छल क्यों करते हो ? श्रीराम बोले— लव-कुश, सुनो, बालकों के साथ युद्ध करने में भला पौरुष क्या होगा ? ॥ ७० ॥ तुम

तोमा-दोंहे देखि येन आमार आकृति। परिचय नाहि दिलि तोरा अल्पमति
कटक पड़िल, आमि ना याइब देशे। अवश्य करिब रण, येबा हय शेषे ७१
आमार सहित युद्धे नाहि कारो रक्षा। एखनि देखाइ यत अस्त्रेर परीक्षा
पिता-पुत्रे गालागालि, केह नाहि चिने। गालागालि, महायुद्ध बाजे तिन जने ७२
महाक्रोधे रघुनाथ पूरेन सन्धान। दुइ शिशु उपरे एड़ेन महावाण
नाना अस्त्र एड़ेन श्रीराम कोपान्वित। महाव्यस्त लव-कुश पलाय त्वरित ७३
दुइ भाइ पलाइल, राम पान आश। श्रीरामेर वाण गिया छाइल आकाश
अन्धकार हल धरा सेइ सब बाणे। आगु हैया युझिते ना पारे दुइजने ७४
एइ मत दुइ भाइ गेल पलाइया। बिलाप करेन राम रथेते बसिया

श्रीरामेर बिलाप

हरि हरि क्षुण्ण मन, देखिया अद्भुत रण,
भूमिते वसिया रघुनाथ।
भ्रातृ-मृत्यु सैन्य-ध्वंस, पराभूत रघवंश,
शोकानले हय अश्रुपात। १
दैब यदि हय बाम, सिद्ध नहे कोन काम,
यज्ञ हैल संहार-कारण।

दोनों को मैं अपनी आकृति का देख रहा हूँ। अल्पबुद्धि बालक, तुमने अपना परिचय नहीं दिया। सारी सेना मारी गयी, अब मैं देश नहीं लौटूंगा। अवश्य ही युद्ध करूंगा। अन्त में चाहे जो हो ॥ ७१ ॥ मेरे साथ युद्ध में कोई बचेगा नहीं। अभी मैं अपने सारे अस्त्रों का प्रभाव दिखाता हूँ। इसी तरह पिता-पुत्र के बीच गाली-गलौज होती रही, कोई किसी को पहचानता न था। गाली-गलौज के बाद तीनों में महायुद्ध होने लगा ॥ ७२ ॥ महा क्रोध से रघुनाथ ने निशाना साधा! दोनों बालकों पर उन्होंने महाबाण छोड़ा। क्रोधित रामचन्द्र ने नाना प्रकार के अस्त्र छोड़े। तब अत्यन्त व्यस्त होकर लव-कुश भागने लगे ॥ ७३ ॥ दोनों भाई भाग गये, तब राम को कुछ आशा हुई। श्रीराम के बाण आकाश में छा गये। उन बाणों से धरती पर अन्धकार छा गया। अब लव-कुश दोनों आगे बढ़कर लड़ नहीं पाते थे ॥ ७४ ॥ इसी प्रकार दोनों भाई भाग गये। तब रामचन्द्र रथ पर बैठकर विलाप करने लगे।

श्रीराम का विलाप

हरि, हरि, (हा, हा,) उस अद्भुत संग्राम को देख रामचन्द्र विषण्ण मन से भूमि पर बैठ गये। भाइयों की मृत्यु, सेना का विध्वंस, रघुवंश की पराजय, आदि के शोक रूपी अनल से (दग्ध हो) आँसू बहाने लगे ॥ १ ॥ यदि दैव वाम होता है तो कोई काम सिद्ध नहीं होता, यह यज्ञ संहार का कारण

तखनि जानिल मन, जिनिते नारिब रण,
यखन पड़िल शत्रुघन।
सुदिन कुदिन दुइ, विधातार सृष्टि एइ,
एबे सेइ बीर हनूमान।
ये गन्धमादन आने, कुम्भकर्ण जिने रणे,
लोटाय शिशुर खेये बाण। २

सुग्रीब प्रभृति बले, सहाय सागर-जले,
महायुद्ध कैल लङ्कापुरे।
हेन जने शिशु मारे, अङ्गद देवेन्द्र मरे,
एत कराइल दैवे मोरे।
कत ब्रह्मबध कैनु, यज्ञमध्ये भस्म दिनु,
पातक करिनु कत आर।
कत बड़ नाम छिल, दण्डमध्ये भस्म हैल,
पराभव हइल आमार। ३

ये-वंशे सगर राजा, रघुबीर महातेजा,
भगीरथ वेण महाशय।
हेन वंशे जनमिया, नाकरि वंशेर क्रिया,
जिने मोरे मुनिर तनय।
मरिल ये तिन भाइ, मित्रवर्ग केह नाइ,
ये-सबारे आनिलाम रणे।
मरिल याहार पति, अनाथा हइला सती,
अकीर्ति रहिल ए-भुवने। ४

बन गया। जब शत्रुघ्न गिर पड़े तभी मेरे मन ने समझ लिया था, यह युद्ध जीता नहीं जा सकता! सुदिन-कुदिन दोनों इसी विधाता की सृष्टि हैं। ये वे ही वीर हनुमान है जो गंधमादन उठा लाये थे, कुंभकर्ण को जीता था, वे आज शिशु के बाण-प्रहार से भूमि पर पड़े हुए हैं ॥ २ ॥ जिन सुग्रीव आदि ने अपने बल से सागर-जल में सहायता की थी, लंकापुरी में महायुद्ध किया था, ऐसे लोगों को शिशुओं ने मार डाला। अंगद-देवेन्द्र आदि मारे गये! दैव ने मुझसे इतना करवाया। हमने कितने ब्रह्म-वध किये? किस यज्ञ में राख डाली (यज्ञ नष्ट किया)? और कितने पाप किये? (जिस कारण) हमारा कितना बड़ा नाम था, जो पल भर में भस्म हो गया (नष्ट हुआ), हमारी पराजय हो गयी! ॥ ३ ॥ जिस वंश में राजा सगर हुए, वीर महा तेजस्वी रघु, भगीरथ, वेण आदि महान चरित्र वाले राजा हुए, ऐसे वंश में जन्म लेकर, वंश के कर्म किये बग़ैर मुझे मुनि के पुत्रों ने जीत लिया! जिनको मैं युद्ध में लाया था, वे तीनों भाई मर गये, मित्रवर्ग कोई नहीं बचा! जिनके पति मारे गये वे सतियाँ अनाथिनी हो गयीं। संसार में मेरा अपयश रह गया ॥ ४ ॥ पहले इतना ऊँचा चढ़ाकर अन्त में निर्दय होकर विधाता ने सर्वनाश कर

बिधाता निद्र्दय ह्ये, एत बड़ बाड़ाइये,
सर्व्वनाश करिलेक शेषे।
हाय हाय कि हइल, बंशे केह ना थाकिल,
पृथिबी पूरिल अपयशे।
मातृगण आछे घरे, प्राण दिबे अनाहारे,
शत्रुगणे नाशिबेक पुरी।
अयोध्या किष्किन्ध्या लङ्का, हइल जीबन-शङ्का,
पतिहीना हइल सर्व्वनारी। ५
सूर्य्य-बिना दिबा नहे, जल-बिना मत्स्य दहे,
अराजक-पुरीर संहार।
एइ से थाकिल दुख, ना देखि बन्धुर मुख,
कोथाय रहिल परिबार।
बिदरिया याय बुक, ना देखि सीतार मुख,
मजिल ये अयोध्यार राज्य।
चारि भाइ एकमासे, मरिलाम एक देशे,
प्रतिकूल बिधिर ए कार्य्य। ६
दुइ शिशु यम-सम, नर बलि करि भ्रम,
कुम्भकर्ण किबा दशानन।
जातिस्मर दुइ जन, करिते आइल रण,
पूर्व्व बैर करिते साधन।
किबा से दूषण खर, हइया आइल नर,
पूर्व्व-बैरी करिते संहार।
मारिल सकल-जने, सुग्रीब ओ बिभीषणे,
यत सब सुहृदे आमार। ७

डाला। हाय, हाय, यह क्या हो गया ? वंश में अब कोई न रहा, पृथ्वी अपयश से भर गयी। हमारी माताएँ घर पर हैं, वे (यह सुनकर) अनाहार से प्राण दे देंगी। शत्रुगण पुरी का विनाश कर डालेंगे। अयोध्या, किष्किन्ध्या, और लंका की जीवन-शंका आ पड़ी, सारी नारियाँ पतिहीना हो गयीं ! ॥ ५ ॥ सूर्य के बिना जैसे दिन नहीं होता, जल के बिना मछली तड़पती है, वैसे ही अराजक पुरी का संहार हो जाता है। यही दुःख रह गया कि मैं भाई-बन्धुओं का मुँह नही देख पाऊँगा। परिवार कहाँ रह गया ? सीता का मुख न देखकर हृदय फटा जा रहा है, अयोध्या का राज्य भी नष्ट हो चला है। प्रतिकूल विधाता का ही यह कार्य है कि हम चारों भाई एक ही महीने में, एक ही देश में मर रहे हैं ! ॥ ६ ॥ ये दो शिशु यम के समान हैं। मनुष्य मानकर भ्रम ही हुआ है। संभवतः पूर्व जन्म की बातें स्मरण रखनेवाले रावण या कुंभकर्ण ये दोनों अपने पुराने वैर का प्रतिशोध लेने हेतु युद्ध करने आये हैं। अथवा वे खर-दूषण अपने पहले के वैरियों का संहार करने आये हैं। सुग्रीव और विभीषण सहित हमारे जितने सुहृद् थे सारे जनों को मार डाला ! ॥ ७ ॥

सुहृद् आछिल यारा, प्राय गतप्राण तारा,
आर कारे करिव सहाय।
आजि दुइ शिशु मारि, अथवा आपनि मरि,
तवे क्षत्रधर्म्म रक्षा पाय।
आजि दुइ शिशु मारि से रक्ते तर्पण करि,
तवे आमि रघुवंश हइ।
युझिब शिशुर सने, एइ दाँड़ाइनु रणे,
नाहि देखि गति इहा वइ। ८
एतेक भाविया मने, श्रीराम चलेन रणे,
जीवनेते हइया हताश।
रामायण सुधाभाण्ड, ताहार उत्तरकाण्ड,
गाइल पण्डित कृत्तिवास।

लव ओ कुशेर युद्धे श्रीरामचन्द्रेर पराजय ओ मूर्च्छा

कुश बले, लव तुमि मोर ज्येष्ठ भाइ। हारिया कि पलाइव मोरा राम-ठाँइ १
एकेवारे दुइ भाइ करिव संग्राम। झाट चल मारि गिया आमरा श्रीराम
कुश हैते अस्त्रशिक्षा लव भाल धरे। एड़िया चिकुर वाण दिक् आलोकरे २
लवेर बाणेते व्यर्थ श्रीरामेर वाण। आकाशेते अग्नि ज्वले पर्व्वत-समान
लबेर बाणेते सव अन्धकार घुचे। सन्धान पुरिया गेल श्रीरामेर काछे ३

हमारे जितने सुहृद् रहे, लगभग सभी प्राणहीन हो गये हैं, मैं अब किसकी सहायता करूँगा ? आज या तो इन दोनों शिशुओं को मार डालूँगा या स्वयं मारा जाऊँगा, तभी क्षत्रिय धर्म की रक्षा होगी ! आज दोनों शिशुओं को मारकर उनके रक्त से तर्पण करूँगा तभी मैं रघुवंशी हूँ। मैं इन शिशुओं से लड़ूँगा, मैं यहीं युद्ध में खड़ा हो रहा हूँ ! इसके सिवा और कोई गति नहीं दिखायी देती ! ॥ ८ ॥ ऐसा सोचकर श्रीराम जीवन में हताश होकर युद्ध करने चले। रामायण अमृत-भांड है। पंडित कृत्तिवास ने उसके उत्तरकांड का गायन किया है।

लव-कुश के साथ युद्ध में श्रीरामचन्द्र की पराजय और मूर्च्छा

कुश बोला, लव, तुम मेरे बड़े भाई हो। क्या हम राम से हारकर भाग जायें ? ॥ १ ॥ हम दोनों भाई चलकर एक ही बार में संग्राम करें। शीघ्र चलो, हम दोनों चलकर श्रीराम को मारें ! कुश की अपेक्षा लव का अस्त्र-प्रशिक्षण उत्तम था। उसने 'चिकुर' नाम का बाण छोड़कर दिशाओं को आलोकित कर दिया ॥ २ ॥ लव के बाणों से रामचन्द्र के बाण व्यर्थ हो गये। आकाश में पर्वत-जैसी आग जलने लगी। लव के बाणों ने सारे अंधकार को नष्ट कर डाला। वह निशाना साधकर श्रीराम के पास गया ॥ ३ ॥ दोनों भाइयों ने एक साथ निशाना साधा।

एकेबारे दुइ भाइ पूरिल सन्धान। बाणेर प्रताप देखि पाछु हन राम
क्षणे राम आगु हन, क्षणे दुइ भाइ। बाण-ठन्ठनि शुनि, लेखाजोखा नाइ ४
हइल रामेर बाणे क्लान्त दुइ जन। शङ्कान्वित लव-कुश भावे मन-मन
ये अस्त्र योड़ेन राम करिया शृङ्खला। लव-कुश गले ताहा हय पुष्पमाला ५
लव-कुश दुइ भाइ येइ अस्त्र फेले। रामेर चरण वन्दि प्रवेशे पाताले
एइ रूपे पिता-पुत्रे बाधिल समर। स्वर्गेते कौतुक देखे बतेक अमर ६
केह कारे नाहि पारे, समान उभय। पितार सदृश पुत्र, केह छोट नय
दुइ दिके दुइ भाइ राम एकेश्वर। बाणे बिद्ध रामचन्द्र हलेन कातर ७
नाना अस्त्र दुइ भाइ एड़े दुइ भित। कोन् दिक् राखिबेन, श्रीराम चिन्तित
चाहिते लवेर पाने कुश एड़े बाण। लव बिन्धे यद्यपि कुशेर पाने चान ८
एकेबारे दुइ भाइ पूरिल सन्धान। मूर्च्छित हइया भूमे पड़ेन श्रीराम
पूर्ब्बे निर्ब्बन्ध आछे येइ ब्रह्मशाप। समरे पुत्रेर हाते हारिबेन बाप ९
लव एड़िलेन बाण नामे अस्त्रकला। धनुर्ब्बाण सहित रामेर बान्धे गला
कुश बाण एड़िल अक्षयजित नाम। बुकेते बाजिया भूमे पड़िलेन राम १०
छट्फट् करे राम, प्राणमात्र आछे। शीघ्र गेल दुइ भाइ श्रीरामेर काछे
नड़िते नारेन राम, बाणे अचेतन। लव-कुश काड़ि लन गात्र आभरण ११

उनके बाणों का प्रताप देखकर श्रीराम पीछे हट गये। क्षण में राम आगे बढ़ते, क्षण में वे दोनों भाई। बाणों के एक-दूसरे से लगने से ठनकार सुनायी देती थी। उन बाणों का लेखा-जोखा नहीं रहा है ॥ ४ ॥ दोनों रामचन्द्र के बाणों से क्लान्त हो उठे। शंकित होकर लव-कुश मन ही मन सोचने लगे। रामचन्द्र जिन अस्त्रों को सिलसिलेवार बनाकर छोड़ते थे, वे लव-कुश के गले में पुष्प-माला बन जाते थे ॥ ५ ॥ लव-कुश दोनों भाई जो अस्त्र छोड़ते थे, वे राम के चरणों का वन्दन कर पाताल में प्रवेश कर जाते थे। इसी प्रकार पिता-पुत्र में संग्राम छिड़ गया। सारे देवता स्वर्ग में वह कौतुक देखने लगे ॥ ६ ॥ कोई किसी से पार नहीं पाता था, दोनों ही बराबर थे। पुत्र पिता के समकक्ष थे, कोई किसी से छोटा न था। दो भाई दोनों ओर थे और राम अकेले। बाणों से बिंधकर रामचन्द्र विकल हो उठे ॥ ७ ॥ दोनों ओर से दोनों भाई अस्त्र छोड़ रहे थे। श्रीराम चिन्तित थे कि वे किस ओर बचायें। लव की ओर देखने पर कुश बाण छोड़ता था। जब कुश की ओर देखते तो लव उन्हें बेध डालता था ॥ ८ ॥ दोनों भाइयों ने एक ही साथ बाणों का निशाना साधा। श्रीराम मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पड़े। पहले का भाग्य-लेख जो ब्रह्म-शाप (के कारण) था कि युद्ध में पुत्र के हाथ पिता पराजित होंगे ॥ ९ ॥ लव ने अस्त्र-कला नाम का बाण छोड़ा, जिसने धनुष-बाण समेत राम का गला बाँध डाला। कुश ने अक्षयजित नाम का बाण छोड़ा। वह बाण छाती में लगने के कारण राम भूमि पर गिर पड़े ॥ १० ॥ श्रीराम छटपटाने लगे, उनका केवल प्राण-भर बचा हुआ था। दोनों भाई शीघ्रता से श्रीराम के पास गये। राम हिल नहीं पा रहे थे, वे बाण से अचेत हो

काणेर कुण्डल निल, माथार टोपर। निल हार केयुर हातेर धनुःशर
संग्रामेर बेश काड़ि लय दुइ भाइ। अस्त्र-शस्त्र धनुर्व्वाण किछु छाड़े नाइ १२
हनूमान जाम्बुवान, उभये अमर। दुइजन नाहि मरे शत मन्वन्तर
उठिबार शक्ति नाइ, बाणे अचेतन। सेइ पथ दिया लव-कुशेर गमन १३
याइते देखिल पथे बानर-भल्लुक। मुख देखि उभयेर बाड़िल कौतुक
साङ्गि बान्धि उभयेरे लइलेक स्कन्धे। रणजयी दुइ भाइ चलिल आनन्दे १४

सीतार निकट लव-कुशेर युद्धवार्त्ता कथन, सीतार विलाप ओ प्राणत्यागेर संकल्प

समर जिनिया गेल दुइ भाइ घर। कान्दिया जानकीदेवी अत्यन्त कातर
हनूमान जाम्बुवान दुर्ज्जय शरीर। द्वारे ना सान्धाय, तेइ थुइल बाहिर १
एकदृष्टे जानकी चाहेन करि ध्यान। हेनकाले दुइ भाइ गेल सेइ स्थान
देखिया जानकी हइलेन उतरोली। दुइ भाइ लइल मायेर पदधूलि २
दुइ भाइ बसिल मायेर विद्यमान। युद्धकथा कहिते लागिल तार स्थान
श्रीराम लक्ष्मण ओ भरत शत्रुघन। ए-सबार सहित करिनु महारण ३

गये थे। लव-कुश ने उनके शरीर पर के आभूषण आदि उतार लिये ॥ ११ ॥ उन दोनों ने कानों के कुंडल, सिर के टोप (मुकुट), हार, केयूर (भुजबंद) और हाथ के धनुष-बाण ले लिये। दोनों भाइयों ने रामचन्द्र के संग्राम के पहनावे को उतार लिया। अस्त्र-शस्त्र धनुष-बाण कुछ भी नहीं छोड़ा ॥ १२ ॥ हनुमान, जाम्बवान दोनों अमर थे। सैकड़ों मन्वन्तर में भी उन दोनों की मृत्यु नहीं होती। उनको उठने की शक्ति न थी, वे बाणों से अचेत हो गये थे। लव-कुश उसी मार्ग से चले ॥ १३ ॥ उस ओर से जाते हुए उन्होंने मार्ग में वानर-भालुओं को देखा। उनके चेहरे देखकर दोनों का कौतुक बढ़ गया। काँवर (सेंगा) बनाकर उन दोनों (हनुमान और जाम्बवान) को कन्धे पर चढ़ा लिया और रण-जयी दोनों भाई आनन्द से चल पड़े ॥ १४ ॥

सीता से लव-कुश का युद्ध का समाचार कहना, सीता का विलाप और प्राण त्यागने का संकल्प

युद्ध में विजय पाकर दोनों भाई घर गये। जानकीदेवी (उनके लिए) रो-रोकर बड़ी विकल हो रही थी। हनुमान और जाम्बवान के दुर्जेय विशाल शरीर द्वार से नहीं निकलते थे। इसी कारण उन्हें उन दोनों ने बाहर ही रख दिया था ॥ १ ॥ जानकी ध्यान से एकटक उन्हें देख रही थी, उसी समय वे दोनों माँ के यहाँ पहुँचे। उन्हें देखकर जानकी उतावली हो उठी। दोनों भाइयों ने माँ की चरण-धूलि ली ॥ २ ॥ दोनों भाई माँ के पास बैठे। और उन्हें युद्ध की कथा

बहु अक्षौहिणी सेना, भाइ चारिजन । बाहुड़िया देशेते ना करिल गमन
एसेछिल यत सेना, केह तार नाइ । कहि से अपूर्ब्ब-कथा, शुन माता, ताइ ४
दुर्ज्जय दुइटि जन्तु एनेछि बान्धिया । द्वारे ना आइसे मागो, देखह आसिया
धनुर्ब्बाण आनियाछि युद्धेर साजन । एइ देख एनेछि रामेर आभरण ५
देखिया जानकीदेवी चिनिला तखन । शिरे कराघात करि करये रोदन
हाय हाय कि करिलि ओरे लव-कुश । पितृहत्या करिया कि राखिलि पौरुष ६
कोनखाने मारिल से कमललोचने । झाट चल पड़ि गिया प्रभुर चरणे
केमने देखिब गिया श्रीराम-लक्ष्मण । केमने देखिब से भरत-शत्रुघन ७
कोन्खाने हयेछिल समर प्रसङ्ग । शृगाल-कुक्कुर पाछे स्पर्शे प्रभु अङ्ग
धेये याय सीतादेवी, केश नाहि बान्धे । तार पिछे शिरे हात, दुइ भाइ कान्दे ८
सीता आसि बाहिरे देखेन बिद्यमान । हस्तपद बान्धा हनूमान जाम्बुबान
मृतप्राय अचेतन, बहे मात्र श्वास । देखिया सीतार मन हइल हुताश ९
जानकी बलेन, लव करिलि कि कर्म्म । तोरा बिद्या शिखिया नाशिलि जातिधर्म्म
तोमा हते ज्येष्ठ पुत्र हय हनूमान । एइ हनूमान मोर दिला प्राणदान १०

सुनाने लगे। हमने श्रीराम-लक्ष्मण और भरत-शत्रुघ्न इन सबके साथ महान् संग्राम किया है ॥ ३ ॥ उनकी अनेक अक्षौहिणी सेना और चारों भाई लौटकर अपने देश नही जा सके। जितनी सेना आयी थी उनमें कोई भी नहीं बचा है। वह अपूर्व-कथा सुनाते है, माता, सुनो ॥ ४ ॥ हम दो दुर्जेय जानवरों को बाँधकर लेते आये हैं। दरवाज़े से वे समा नहीं रहे है, माँ, तुम आकर देखो। हम उनके युद्ध के पहनावे और धनुष-बाण ले आये हैं। यह देखो हम रामचन्द्र के पहनावे ले आये हैं ॥ ५ ॥ तब जानकीदेवी ने उसे देखकर पहचान लिया। वे अपने सिर को पीट-पीटकर रुदन करने लगी ! अरे लव-कुश, हाय, हाय, तुमने यह क्या कर डाला ! पितृहत्या कर तुमने कौन-सा पौरुष दिखाया ! ॥ ६ ॥ उन कमललोचन राम को कहाँ मारा ? शीघ्र चलो, प्रभु के चरणों में हम जा गिरें। मैं श्रीराम-लक्ष्मण को कैसे देख सकूँगी ? उन भरत-शत्रुघ्न को कैसे देखूँगी ? ॥ ७ ॥ युद्ध का यह आयोजन कहाँ हुआ था (चलो हम देखे)। कहीं सियार-कुत्ते प्रभु के अंग स्पर्श न कर डालें। यह कहती हुई सीतादेवी अपने खुले बालों को बाँधे बग़ैर दौड़ चली। उनके पीछे-पीछे सिरों पर हाथ रखे दोनों भाई रोते हुए चले ॥ ८ ॥ सीता ने बाहर निकलकर देखा, वहाँ हाथ-पैर बँधे हनुमान और जाम्बवान पड़े हैं। वे मृतप्राय अचेत-से थे, केवल साँस-भर चल रही थी। उन्हें देख सीता के मन में बड़ा शोक हुआ ॥ ९ ॥ जानकी बोली— लव, तूने यह कैसा कर्म कर डाला ? तुम लोगों ने विद्या सीखकर भी जाति-धर्म का नाश कर डाला ! यह हनुमान तुम दोनों से बड़ा मेरा पुत्र है। इसी हनुमान ने मेरे प्राण बचाये थे ॥ १० ॥ वानर होकर भी सागर के पार जाकर पुत्र हनुमान ने मेरा उद्धार किया था। अरे अबोध बालको, तुमने इसका वध

वानर हइया गेल सागरेर पार। हनुमान पुत्र मोर करेछे उद्धार
इहारे करिलि वध अबोध बालक। शुनिले ए सब कथा कि कहिबे लोक ११
पिता-पितृव्येर तोरा बधिलि जीवन। विषपान करि प्राण त्यजिब एखन
एखनि मरिब आमि प्रभुर साक्षाते। कलङ्क ना लुकाइबे, घुषिबे जगते १२
कोथाय मारिलि ताँरे शीघ्र चल देखि। एतक्षण प्राण आर कार तरे राखि
अश्रुजले जानकीर तितिल बसन। लव-कुश-प्रति कत करेन भर्त्सन १३
लव-कुश, शीघ्र एइ घुचाओ बन्धन। हनूमाने जाम्बुवाने करह मोचन
पाइया मायेर आज्ञा भाइ दुइ जन। खसाइला उभयेर से दृढ़ बन्धन १४
उठिया बसिल जाम्बुवान, हनूमान। कहिलेन सीतादेवी आसि विद्यमान
एक सत्य हनूमान, करिह पालन। कारो ठाँइ ना कहिओ ए-सब-वचन १५
तोमार रामेर पुत्र एइ दुइ भाइ। ना चिनि करिल युद्ध क्रोध कोरो नाइ
यान सीता मणिहारा भुजङ्गिनी-प्राय। क्रन्दन करिया पिछे लव-कुश याय १६
श्रीरामेर उद्देशे चलेन तिन जन। उपस्थित हइलेन, यथा हैल रण
देखिलेन संग्रामे पड़िया चारिजन। श्रीराम-लक्ष्मण ओ भरत-शत्रुघन १७
हस्ती-घोड़ा ठाट कत पड़ेछे अपार। देखिया त जानकी करेन हाहाकार
कातर हइया सीता करेन क्रन्दन। रामेर चरण धरि कहेन तखन १८
हइया तोमार पुत्र मारिल तोमारे। ए केवल घटे से आमार कर्म्म फेरे
मन्दर तोमार बाणे नाहि धरे टान। छावालेर बाणे प्रभु हाराइले प्राण १९

कर डाला ! ये बातें सुनकर भला लोग क्या कहेंगे ? ॥ ११ ॥ अपने पिता और चाचाओं के जीवन का तुम दोनों ने वध कर डाला। मैं अब विषपान कर अपने प्राण तज दूँगी ! अभी मैं प्रभु के सामने मर जाऊँगी। तब कलंक छिपेगा, नहीं सम्पूर्ण जगत में घोषित होगा ॥ १२ ॥ उन्हें कहाँ मारा है ? चल शीघ्र देखूँ। अब तक भला मैं किसके लिए प्राण रखे हुए हूँ ! आँसुओं से जानकी के वस्त्र भीग गये। वे लव-कुश के प्रति कितनी ही भर्त्सना करने लगीं ॥ १३ ॥ लव-कुश, ये बंधन शीघ्र खोल दो। हनुमान और जाम्बवान को मुक्त कर दो। माँ की आज्ञा पाकर दोनों भाइयों ने उन दोनों (हनुमान और जाम्बवान्) के दृढ़ बन्धन शीघ्रता से खोल दिये ! ॥ १४ ॥ जाम्बवान और हनुमान दोनों उठ बैठे। उनके पास आकर सीतादेवी कहने लगी ! हनुमान, मेरी एक शपथ तुम पालन करना, ये सारी बातें तुम किसी से न कहना ! ॥ १५ ॥ ये दोनों भाई तुम्हारे रामचन्द्र के पुत्र हैं। न पहचानने के कारण युद्ध किया, क्रोध न करना। सीता मणि-हीना भुजंगिनी की भाँति (व्याकुल होकर) जाने लगी, लव-कुश भी रोते-रोते उनके पीछे-पीछे चले ॥ १६ ॥ वे तीनों श्रीराम के उद्देश्य से चले और जहाँ युद्ध हुआ था, वहाँ जाकर उपस्थित हुए। उन्होंने देखा, संग्राम में (मृत) श्रीराम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न ये चारों पड़े हैं ॥ १७ ॥ हाथी-घोड़ों की अपार सेना कितनी ही पड़ी हुई है। उसे देखकर जानकी हाहाकार करने लगी। सीता विकल होकर क्रन्दन करने लगी और राम के चरण पकड़कर कहने लगी ॥ १८ ॥ तुम्हारे

सर्व्वलोके बलितेन अविधवा सीता। आमारे विधवा करे, केमन विधाता
अग्निते प्रवेश करि त्यजिब जीवन। जन्मे-जन्मे पाइ येन तोमार चरण २०
शिरे हात लव-कुश करिछे क्रन्दन। रामेर चरण धरि बलिछे बचन
क्षमा कर जननी गो, ना कर क्रन्दन। मजिलाम तव दोषे मोरा तिन जन २१
तुमि ना बलिले माता राम मम पिता। आपनार दोषे एत हइले ता पिता
पितृबध करिया पाइनु बड़ लाज। अग्निते पुड़िया मरि, प्राणे नाहि काज २२
एइ महापापे आर नाहिक निस्तार। अग्निते पुड़िया आजि हइव अङ्गार
सीता बले, आगे अग्नि करिब प्रवेश। याहा इच्छा ताहाइ करिओ अबशेष २३
तिनजन गेल तारा यमुनार तीरे। तिन कुण्ड काटिलेक दुइ सहोदरे
ताहाते आनिया काष्ठ ज्वालिल अनल। ज्वलिया उठिल अग्नि गगनमण्डल २४
स्नान करि परिलेन पवित्र बसन। अग्नि प्रदक्षिण करिलेन तिन जन

बाल्मीकिर आगमन ओ सैन्य एवं भ्रातासह रामचन्द्रेर जीवनलाभ

चित्रकूट पर्व्वते बाल्मीकि तपोधन। देखिया अग्निर धूम विचलित मन १

पुत्र होकर भी (इन दोनों ने) तुम्हें मार डाला। मेरे कर्म-विपाक से ही ऐसा घटित हो सका है। प्रभु, तुम्हारे बाणों के सामने तो मंदर भी ठहर नहीं सकता था; (ऐसे तुम) बच्चों के बाणों से मारे गये ।। १९ ।। सब लोग कहते थे, सीता कभी विधवा नहीं होनेवाली है (सदा सुहागिन है)। वह विधाता कैसा है (जिसने) मुझे बिधवा बना डाला। मैं अग्नि में प्रवेश कर जीवन तज दूंगी, जिससे जन्म-जन्म में तुम्हारे चरण ही मुझे मिल सकें ।। २० ।। लव-कुश सिर पर हाथ रख क्रन्दन करने लगे, और राम के चरण पकड़कर कहने लगे— जननी, हमें क्षमा कर दो, रुदन न करो। तुम्हारे ही दोष से हम तीनों डूब चुके हैं! ।। २१ ।। माता, तुमने यह नहीं बताया कि रामचन्द्र हमारे पिता हैं। अपने ही दोष से तुम्हें संतप्त होना पड़ा है। पितृ-वध करने के कारण हमें बड़ी लज्जा हुई है। हमारे जीवन से कोई प्रयोजन नहीं, हम अग्नि में जल मरेंगे ।। २२ ।। इस महापाप से अब हमारा निस्तार नहीं है। अग्नि में जलकर हम अंगारे बन जायेंगे (भस्म हो जायेंगे)। सीता बोली, पहले मैं अग्नि में प्रवेश कर जाऊँ, उसके पश्चात् तुम्हारी जो इच्छा हो करना ।। २३ ।। वे तीनों यमुना के तट पर गये और वहाँ दोनों भाइयों ने तीन कुंड बनाये! उनमें लकड़ियाँ लाकर सजाया और आग जलायी। आग जलकर गगन-मंडल तक पहुँच गयी ।। २४ ।। फिर तीनों ने स्नान कर पवित्र वस्त्र पहन लिये और अग्नि की प्रदक्षिणा की।

वाल्मीकि का आगमन और सेना तथा भाइयों-समेत रामचन्द्र का जीवित होना

तपोधन वाल्मीकि चित्रकूट पर्वत पर (तपस्या कर रहे थे) अग्नि का धुआँ देख उनका मन विचलित हो उठा ।। १ ।। (वे जिस जल से तर्पण

रक्तेते तर्पण करे, मुनिर बिस्मय । तर्पण करेन, सब येन रक्तमय
मुनि बले, लव-कुश पाड़िल प्रमाद । देशेते चलेन मुनि करिया विषाद २
छ'मासेर पथ एल चक्षुर निमेष । देखे तिन जने अग्नि करिछे प्रवेश
अग्निकुण्ड ज्वालियाछे, महामुनि देखे । हेनकाले गेल मुनि सीतार सम्मुखे ३
गृधिनी-शकुनि आर शृगालेर रोल । कलकल-ध्वनि तुले जलेर हिल्लोल
देखिया सीतार प्रति जिज्ञासेन मुनि । प्रमाद पड़िल किबा कह सीता, शुनि ४
जानकी बलेन, प्रभु, ना जान कारण । लव-कुश तोमार करिल महारण
पड़िलेन ताहाते राघव चारि जन । श्रीराम-लक्ष्मण ओ भरत-शत्रुघन ५
केमने कहिब कथा, मुखे ना आइसे । पितृवध करिलेक लव आर कुशे
एतदिन भाल छिनु तोमार प्रसादे । धनुर्विद्या शिखि एरा पाड़िल प्रमादे ६
तुमि शिखाइले मुनि, नाना अस्त्रशिक्षा । त्रिभुवन युझे यदि नाहे कारो रक्षा
आपनि श्रीरघुनाथ त्रिभुवन जिने । शिशु ह'ये से रामेरे जिने दुइ जने ७
रघुनाथ बिना मोर ना रबे जीवन । अग्निते प्रवेश करि एइ तिन जन
बाल्मीकि बलेन, सीता, ना त्यज जीवन । बाँचिबेन एखनि राघव चारिजन ८
श्रीराम-लक्ष्मण ओ भरत-शत्रुघन । उठिबेन, पड़ियाछे आर यत जन
क्षमा देह जानकी, तोमारे बलि आमि । दुइ पुत्र लइया आश्रमे चल तुमि ९

कर रहे थे वह रक्त हो गया था ।) रक्त से तर्पण कर रहे हैं देख, मुनि को विस्मय हुआ । वे जो भी तर्पण करते, सब रक्तमय हो जाता । मुनि बोले, लव-कुश ने प्रमाद कर डाला है । विषाद करते हुए मुनि अपने देश को चले ।। २ ।। छः महीने का मार्ग मुनि ने पल भर में पार कर लिया । उन्होंने देखा, तीनों अग्नि में प्रवेश कर रहे है । महामुनि ने देखा, अग्निकुंड जला लिया है । तभी मुनि सीता के सम्मुख पहुँचे ।। ३ ।। वहाँ गिद्धनी, शकुनी और सियार का कोलाहल हो रहा था । जल के हिल्लोल से कलकल की ध्वनि उठ रही थी । वह देखकर मुनि ने सीता से पूछा— सीता, बताओ, मैं सुनना चाहता हूं कि कैसा प्रमाद आ पड़ा है ।। ४ ।। जानकी बोली, प्रभु, आप कारण नहीं जानते ! आपके इन लव-कुश ने महा-सग्राम किया, जिस संग्राम में राम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न ये चारों रघुवंशी मारे गये हैं ।। ५ ।। मैं कैसे यह बात बताऊँ, जो मुँह में नहीं आ रही है । लव-कुश ने पितृ-वध कर डाला है । इतने दिन आपके प्रसाद से हम अच्छे थे । लेकिन इन दोनों ने धनुर्विद्या सीख कर प्रमाद कर डाला ।। ६ ।। मुनि, आपने इन्हें नाना प्रकार की अस्त्र-शिक्षा दी है । इनसे त्रिभुवन भी लड़े तो भी कोई बच नहीं सकता । स्वयं श्रीरघुनाथ त्रिभुवन-विजयी हैं, उन रामचन्द्र को शिशु होकर भी इन दोनों ने जीत लिया ।। ७ ।। रघुनाथ के बिना मेरा जीवन नहीं रहेगा । इसी कारण हम तीनों अग्नि में प्रवेश कर रहे हैं । वाल्मीकि बोले— सीता, तुम जीवन त्याग न करो । अभी-अभी चारों रघुवंशी जीवित हो जायेंगे ।। ८ ।। श्रीराम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न तथा और जितने भी जन मारे गये हैं सब उठ जायेंगे । जानकी, मैं तुमसे कह

जानकी बलेन, देखि प्रभुर चरण। तबे त आश्रमे आमि करिब गमन
एतेक शुनिया मुनि बसिलेन ध्याने। त्रिभुवने यत कथा, मुनि सब जाने १०
तपोबन कुण्डे आछे मृत्युजीबिजल। मुनि ध्यान करिया से जानिल सकल
मुनि बले, शुन शिष्य, आमार बचने। एइ जल छड़ाइया देह तपोबने ११
मृत सैन्य पड़ियाछे यत यत दूरे। तत दूरे छड़ाइया देह एइ नीरे
एक मन्त्र पड़ि जल दिल महामुनि। तपोबने छड़ाइया दिलेक तखनि १२
कटकेर गायेते यतेक लागे छड़ा। असंख्य कटक उठे दिया अङ्ग झाड़ा
मृत्युजीबी जल यदि हैल परशन। श्रीराम-लक्ष्मण आदि उठिल तखन १३
उठिल छाप्पान्न कोटि मुख्य सेनापति। तिन कोटि उठिलेक मदमत्त हाती
उठिल तिराशी कोटि श्रेष्ठ जाति घोड़ा। सत्तर अक्षौहिणी उठे जाठि-झकड़ा १४
सुग्रीब अङ्गद उठे लये कपिगण। भल्लुक राक्षस यत उठे ततक्षण
कटकेर कोलाहले हैल गण्डगोल। मुनि बले, शुन सीता, कटकेर रोल १५
श्रीराम-लक्ष्मण आदि यत यत बीर। उठिल सामन्त सैन्य अक्षत शरीर
श्रीराम-लक्ष्मण ओ भरत-शत्रुघन। दूर हैते देखि सीता, पाइल जीबन १६
'रामजय' करिया डाकिछे कपिगण। मुनि बले, शुन सीता, आमार बचन
आमि हेथा थाकिले ना हइत एमन। दुइ पुत्र लये घरे करह गमन १७

रहा हूँ, क्षमा कर दो। दोनों पुत्रों को लेकर तुम आश्रम में चलो ॥ ९ ॥ जानकी बोली, जब प्रभु के चरण देख पाऊँगी, तभी मैं आश्रम में जाऊँगी। यह सुनकर मुनि ध्यान में निमग्न हो गये, त्रिभुवन में जो भी बात होती है मुनि सब कुछ जानते हैं ॥ १० ॥ मुनि ने ध्यान लगाकर यह सब कुछ जान लिया कि तपोवन के कुंड में मृत्यु-जीवी जल है। मुनि बोले, शिष्यो, मेरा वचन सुनो, यह जल तपोवन में छिड़क दो ॥ ११ ॥ मृत सेना जहाँ-जहाँ जितनी दूरी में पड़ी है, उतनी दूर यह जल छिड़क दो। महामुनि ने एक मंत्र पढ़कर जल दिया। उसे तभी तपोवन में छिड़क दिया ॥ १२ ॥ कटक के शरीर में छिड़का जल जितना लगता, असंख्य सेना अंग झाड़कर उठ पड़ने लगी। जब मृत्यु-जीवी जल का स्पर्श हुआ, तब श्रीराम-लक्ष्मण आदि तुरंत उठ पड़े ॥ १३ ॥ छप्पन करोड़ मुख्य सेनापति उठ पड़े। तीन करोड़ मदमत्त हाथी उठ पड़े। श्रेष्ठ जाति के तिरासी करोड़ घोड़े उठे। सत्तर अक्षौहिणी भाले-बरछे वाले उठ पड़े ॥ १४ ॥ कपियों के साथ सुग्रीव-अंगद उठे। उसी क्षण सारे भालू और राक्षस उठ गये। सेना के कोलाहल से हलचल मच गयी। मुनि बोले, सीता, सेना का कोलाहल सुनो ॥ १५ ॥ श्रीराम-लक्ष्मण आदि जितने वीर थे, जितने सामन्त-सैनिक थे, सभी उठ पड़े हैं। उनके शरीर के सारे क्षत मिट गये हैं। श्रीराम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न को दूर से देखकर सीता को जीवन मिला ॥ १६ ॥ वानरगण 'रामचन्द्र की जय' पुकार रहे हैं। मुनि बोले, सीता, मेरे वचन सुनो। अगर मैं यहाँ रहता तो ऐसा नहीं होता। अब दोनों पुत्रों को ले, घर चली जाओ ॥ १७ ॥

लव-कुश-सीता तिने मुनि नमस्कारी। लुकाइया रहिलेन वाल्मीकिर पुरी
सीताके चिनिया छिल पवन-नन्दन। पासरिल वाल्मीकिर मायाते तखन १८
श्रीरामेर सङ्गे मुनि करे सम्भाषण। चारि भाइ करिलेक मुनिरे बन्दन
श्रीराम वलेन, मुनि, तोमार प्रसादे। रक्षा पाइलाम सवे पड़िया प्रमादे १९
किन्तु मुनि जानिते वासना मने हय। काहार तनय दुटि देह परिचय
मुनि वले, राम, आमि ना छिलाम देशे। काहार तनय तारा, ना जानि विशेषे २०
एखन से बालकेर ना पावे दर्शन। देशे लये आमि दोंहे कराव मिलन
अश्व लये रघुनाथ, याह निज देशे। यज्ञ पूर्ण देह गिया अशेष-बिशेषे २१
सकल-सहित राम चलिलेन देशे। रचिल उत्तरकाण्ड कवि कृत्तिबासे

लव-कुशेर श्रीरामेर निकट गमन ओ रामायण गान

ए सव गाहिल गीत जैमिनी-भारते। सम्प्रति ये किछु गाइ बाल्मीकिर मते १
अश्व आनि कैला राम यज्ञ-समापन। नाना देशी ब्राह्मणे दिलेन बहु धन
बहु परिपाटी यज्ञ करेन दुष्कर। शिष्यसह आइल वाल्मीकि मुनिबर २
मुनिरे देखिया राम सम्भ्रमे उठिया। वसिते आसन देन पाद्य-अर्घ्य दिया
वार शत शिष्य एल मुनिर संहति। लव-कुश दुइ भाइ मिशाइल तथि ३

लव-कुश-सीता तीनों मुनि को नमस्कार कर वाल्मीकि के निवास में जाकर छिप रहे। पवन-नन्दन हनुमान ने सीता को पहचाना था। पर वाल्मीकि की माया से तभी (सब कुछ) भूल गये ॥ १८ ॥ मुनि वाल्मीकि श्रीराम के साथ संभाषण करने लगे। चारों भाइयों ने मुनि का वंदन किया। श्रीराम बोले, मुनि, आपके प्रसाद से हम सब संकट में पड़कर भी बच गये ॥ १९ ॥ परन्तु हे मुनि, मन में यह जानने की इच्छा होती है कि वे दोनों किसके पुत्र हैं ? आप परिचय दें। मुनि बोले, राम, मैं इस देश मे नहीं था। वे दोनों किसके पुत्र हैं, विशेष नहीं जानता ॥ २० ॥ आप अभी उन बालकों को देख नही पायेंगे। उन दोनों को आपके देश ले जाकर मैं आपसे मिलन करवाऊँगा। हे रघुनाथ, आप, यज्ञ के अश्व को ले अपने देश जाइए। अनन्त विशेषताओं से पूर्ण अपने यज्ञ की पूर्णाहुति दें ॥ २१ ॥ तब सबके सहित रामचन्द्र देश को चले। कवि कृत्तिवास ने इस उत्तरकांड की रचना की है।

लव-कुश का श्रीराम के निकट गमन और रामायण-गान

यह इतना सारा जैमिनी भारत में गाया गया है। सम्प्रति जो कुछ गायन करता हूँ वह वाल्मीकि के अनुसार है ॥ १ ॥ अश्व को लाकर रामचन्द्र ने अपना यज्ञ पूरा किया। विभिन्न देशीय ब्राह्मणों को बहुत-सा धन दिया। अनेक विधि-विधान से उन्होंने दुष्कर यज्ञ किया। उस यज्ञ में मुनिवर वाल्मीकि भी आये ॥ २ ॥ मुनि को देखकर रामचन्द्र

मुनिर मिशाले आछे, नाहि परिचय। विष्णु-अवतार दोँहे रामेर तनय
श्रीराम बलेन, शुन भरत, एखन। मुनि रहिबारे देह दिव्य आयोजन ४
लव-कुश दुइ भाइ मुनिर संहति। दुइ भाइ लैया मुनि करेन युकति
मुनि बले, लव-कुश, शुन सावधाने। धनुक-संगीत-विद्या पेले मोर स्थाने ५
धनुर्व्विद्या देखाइला आमार गोचर। विक्रमे दुर्ज्जय हओ दुइ सहोदर
स्वयं विष्णु रघुनाथ त्रिभुवन जिने। शिशु हये ताँहारे जिनिला दुइजने ६
धनुर्व्विद्या तोमारा ये करिले सुशिक्षा। साक्षाते पेलेम आमि ताहार परीक्षा
गीत-विद्या रामायण शिखिले दुजन। श्रीरामेर आगे कालि गेओ रामायण ७
अनेक द्वीपेर राजा आइल ए स्थाने। रामायण-गीत कालि गाइबे दुजने
दुइ भाइ कर मोर कवित्व प्रचार। घुषिबारे थाके येन सकल संसार ८
याहारे प्रसन्न हन सरस्वती देवी। आमि-आदि करिया सकले ताँरे सेवि
सभा करि बसिबेन श्रीराम यखन। सावधाने गाहिबे तोमरा रामायण ९
जिज्ञासिबे यबे राम सभार भितर। वाल्मीकिर शिष्य, हेन करिओ उत्तर
आर युक्ति बलि, शुन तोमा दुइ जन। मिष्टस्वरे उभये गाहिबे रामायण १०
यखन गाहिबे गीत सीतार बर्ज्जन। ना बलिओ श्रीरामेरे कोन कुवचन
जगतेर नाथ राम परम पण्डित। कुकथा कहिते ताँरे ना हय उचित ११

बड़े सम्मान से उठे और उन्हें पाद्य-अर्घ्य दे बैठने हेतु आसन दिया। मुनि के संग बारह सौ शिष्य आये। लव-कुश दोनों भाई उन्हीं में मिलकर आये ॥ ३ ॥ वे मुनियों में मिलकर (मुनि-वेश में) आये थे, इसलिए कोई उन्हें पहचान नहीं पाया। वे दोनो विष्णु-अवतार रामचन्द्र के पुत्र थे। श्रीराम बोले, भरत अब सुनो ! मुनि को रहने हेतु दिव्य आयोजन कर दो ! ॥ ४ ॥ लव-कुश दोनों भाई मुनि के साथ थे। उन दोनों को लेकर मुनि परामर्श करने लगे। मुनि बोले, लव-कुश, सावधानी से सुनो, तुम लोगों ने हमसे धनुष और संगीत-विद्या सीखी है ॥ ५ ॥ हमारे सामने ही तुम लोगों ने धनुर्विद्या दिखाई है। दोनों सहोदर विक्रम में दुर्जय होओ। स्वयं विष्णु रूपी रामचन्द्र त्रिभुवन-विजयी है। शिशु होकर भी तुम दोनों ने उन्हें जीत लिया ॥ ६ ॥ तुम लोगों ने धनुर्विद्या की सुशिक्षा पायी है, उसकी परीक्षा मैं अपने सम्मुख ही पा गया हूँ। तुम दोनों ने गीत-विद्या रामायण सीख ली है। श्रीराम के सामने कल उसी रामायण को गाओ ! ॥७॥ अनेक द्वीपो के राजा इस स्थान में आये हैं, (उन्हें भी सुनाने हेतु) कल दोनों रामायण-गीत गाना। दोनों भाई मेरे कवित्व का प्रचार करना। जैसे सारे संसार में (मेरी कवित्व प्रतिभा) घोषित हो जाए ॥ ८ ॥ जिससे देवी सरस्वती प्रसन्न हो जायें। मुझसे आरंभ कर सभी उनकी सेवा करें ! जब श्रीराम सभा लगाकर बैठें, तब तुम लोग सावधानी से रामायण-गायन करना ॥ ९ ॥ जब राम सभा में (तुम्हारा परिचय) पूछें तो 'हम वाल्मीकि के शिष्य हैं', यही उत्तर देना। और भी सुझाव दे रहा हूँ, तुम दोनों सुनो ! मीठे स्वर से दोनों रामायण गाना ॥ १० ॥ जब सीता के परित्याग का प्रसंग गाना, तो

यखन याइवे दोँहे रामेर सभाय। तखन करिवे वेश तपस्वीर प्राय
वीरवेशे देखिया पावेन राम त्रास। आरबार एड़ेन कि जीबनेर आश १२
विभावरी प्रभात, उदित भानुमान। दुइ भाइ करेन बाकल परिधान
शिरे जटा वान्धिलेन देखिते सुठाम। पूर्णचन्द्र मुख, वर्ण दूर्व्वादलश्याम १३
हाते वीणा करि दोँहे करेन गमन। मधुर-ध्वनिते गान वेद रामायण
हाटे माठे गीत गान नगरे बाजारे। शुनिया सुस्वर सबे आपना पासरे १४
कहिछे अमात्यगण श्रीरामे त्वरित। शिशुमुखे मिष्ट गीत शुनिते उचित
आनिते तादेर राम करेन आदेश। यज्ञस्थाने दुइ भाइ करिल प्रवेश १५
वीणा हाते करि तारा बसिल सभाय। रामायण शुनिते सकल लोक याय
अबसर पाइया यज्ञेर अबशेषे। वसिलेन श्रीराम सभाय शुद्ध वेशे १६
स्वर्ग-मर्त्य-पाताल-निवासी यत जन। आगमन करिल शुनिते रामायण
वसिल पण्डितगण ज्ञानेते पूरित। गन्धर्व्व किन्नर यक्ष रक्ष चारिभिति १७
दुइ भाइ गीत गाय बाजाइया वीणा। सर्व्वलोक शुने गीत अमृतेर कणा
वीणायन्त्र बाजे, आर गीत गाय स्वरे। शुनिया सकल लोक आपना पासरे १८
चारि भाइ रघुनाथ गीते देन मन। मोहित हइल लोक शुने रामायण
सर्व्वलोक सभाय करिछे कानाकानि। रामेर आकृति दुइ शिशु, अनुमानि १९

श्रीराम के प्रति कोई दुर्वचन न कहना। जगत के नाथ श्रीरामचन्द्र परम पंडित हैं। उन्हें दुर्वचन कहना उचित नहीं ॥ ११ ॥ जब दोनों राम की सभा में जाना, तब तपस्वियों-जैसा वेश बना लेना। तुम्हें वीर-वेश में देखने पर राम संत्रस्त हो जायेंगे। संभवतः पुनः जीवन की आशा छोड़ बैठेंगे ॥ १२ ॥ रात बीती, प्रभात हुआ, सूर्योदय हुआ। तब दोनों भाइयों ने वल्कल पहने। अपने मस्तक पर देखने में सुन्दर जटा बाँधी। उनका मुख पूर्णचन्द्र जैसा था, वर्ण दूर्वादलश्याम था ॥ १३ ॥ दोनों अपने हाथों में वीणा ले वहाँ गये। और मधुर ध्वनि से रामायण-वेद का गायन करने लगे! वे हाट-घाट में, नगर-बाजार में गीत गाने लगे। उनके मधुर स्वर सुनकर सभी आत्मविभोर हो उठे ॥ १४ ॥ मंत्रियों ने श्रीरामचन्द्र से तुरंत कहा, इन शिशुओं के मुँह से मीठे गीत सुनना उचित है। रामचन्द्र ने उन्हें लाने का आदेश दिया। दोनों भाइयों ने यज्ञभूमि में प्रवेश किया ॥ १५ ॥ हाथों में वीणा लेकर वे दोनों आकर सभा में बैठे। सभी लोग रामायण सुनने वहाँ चल पड़े। यज्ञ के अन्त में अवसर पाकर श्रीराम सभा में शुद्ध वेश धारण कर बैठे ॥ १६ ॥ स्वर्ग-मर्त्य-पाताल निवासी जितने लोग थे सभी रामायण सुनने वहाँ आये। ज्ञान-पूर्ण पंडितगण वहाँ बैठे। गंधर्व, किन्नर, यक्ष, रक्ष चारों ओर बैठे ॥ १७ ॥ दोनों भाई वीणा बजाकर गीत गाने लगे। सभी लोग अमृत-कणों जैसे वे गीत सुनने लगे। वीणा-यंत्र बजने लगे, और वे दोनों स्वर लगाकर गीत गाने लगे। समस्त लोक उत्सुकता से सुनने लगे ॥ १८ ॥ रघुनाथ चारों भाई मन लगाकर गीत सुनने लगे। लोग मुग्ध होकर रामायण सुनने लगे। सभी लोग सभा में कानाफूसी

जटा आर बाकल ये एइ मात्र आन। आकृति-प्रकृति देखि रामेर समान
एइ दुइ शिशु-सह करिलेन रण। श्रीराम-लक्ष्मण ओ भरत-शत्रुघन २०
युद्ध करे, त्रिभुवन ना पारे सहिते। संसार मोहित करे रामायण गीते
तपस्वीर बेश दोँहे धरिल एखन। शिशु नहे, दुइजन साक्षात शमन २१
श्रीराम हइते दुइ बालक दुर्ज्जय। श्रीरामेरे इहारा करिल पराजय
कोन् बिधि निर्म्माण करिल दुइजने। एत गुण धरे, केबा आछे त्रिभुबने २२
एइ युक्ति तारा सब करे सर्ब्बक्षण। भुबन मोहित हैल शुनि रामायण
यतेक सभार लोक अनुमान करे। रामेर ए दुइ पुत्र, कभु नाहि नड़े २३
गाइल प्रथम दिने विंशति शिकलि। सुरस सुछन्द सुप्रसन्न पदावली
दुइ भाइ गीत यदि कैल अबसान। श्रीराम बलेन, राख गायकेर मान २४
श्रीरामेर बचन से शुनिया लक्ष्मण। अशीति सहस्र तोला आनेन काञ्चन
गायकेरे दिलेन पूरिया स्वर्णथाला। पीताम्बर अलङ्कार आर पुष्पमाला २५
उभय गायक बले, श्रीरघुनाथ। बस्त्र-अलङ्कारे किछु नाहि प्रयोजन
कि करिब धने बस्त्रे आर अलङ्कारे। बस्त्र-अलङ्कार राख आपन भाण्डारे २६
श्रीराम बलेन, हे जिज्ञासि एक बाणी। काहार कबित्व रामायण कह शुनि
इहा यदि शुने लोके, किबा हय फल। बिशेष जानह यदि, कह ए सकल २७

करने लगे हमें ऐसा अनुमान होता है ये दोनों शिशु राम की आकृति के हैं ॥ १९ ॥ उनकी जटा और वल्कल ही अलग हैं, इनकी आकृति-प्रकृति भी राम के समान ही दिखाई दे रही है। इन्हीं दोनों शिशुओं से श्रीराम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न ने लड़ाई की है ॥ २० ॥ ये ऐसा युद्ध करते हैं जिसे त्रिभुवन सह नहीं सकता, ये रामायण-गीत से संसार को मोहित करते हैं। इन दोनों ने अब तपस्वी का वेश धारण कर लिया है। ये शिशु नहीं, दोनों साक्षात् यमराज हैं ॥ २१ ॥ ये दोनों बालक श्रीराम की अपेक्षा भी दुर्जेय हैं। इन दोनों ने श्रीराम को पराजित किया था। इन दोनों को किस विधाता ने बनाया है, त्रिभुवन में इनके जैसा इतने गुण धारण करनेवाला और कौन है ? ॥ २२ ॥ वे लोग सभी समय यही चर्चा करते थे। उनसे रामायण सुनकर संसार मोहित हो गया। सभा के सभी लोग अनुमान करने लगे, ये दोनों रामचन्द्र के पुत्र हैं जो कभी विचलित नहीं होते ॥ २३ ॥ पहले दिन उन्होंने सुरस, सुन्दर छन्द वाली, सुप्रसन्न पदावलियों वाली बीस कड़ियाँ गायीं। दोनों भाइयों ने जब गीत समाप्त किया, तब रामचन्द्र ने कहा, गायक का मान रखो ॥ २४ ॥ श्रीराम का वचन सुनकर लक्ष्मण अस्सी तोला सोना ले आये। उन्होंने सोने की थाली भरकर पीताम्बर, आभूषण और पुष्प-मालाएँ गायकों को दिये ॥ २५ ॥ दोनों गायकों ने कहा, श्रीरघुनन्दन, हमें वस्त्र और आभूषणों की कोई आवश्यकता नहीं। धन, वस्त्र और आभूषणों से हमें क्या करना है ? ये वस्त्र-आभूषण अपने भंडार में रख दीजिये ॥ २६ ॥ श्रीरामचन्द्र बोले, मैं तुम लोगों से एक बात पूछता हूँ। बताओ, यह रामायण किनका रचित काव्य है ? इसे सुनने पर

एत यदि जिज्ञासा करेन रघुनाथ। उठे दुइ गायक ये योड़ करि हात
दुइ शिशु बले, शुन श्रीरघुनन्दन। जिज्ञासिला यत किछु, कहि विवरण २८
चतुर्व्वेद विंसति ये श्लोक-परिणाम। पञ्चशत सर्गे हय काव्येर वाखान
येइ जन शुनिबारे करे अभिलाष। सर्व्वपाप घुचे तार, स्वर्गे हय वास २९
अपुत्रक शुनिले से पाय पुत्रवर। ये याहा बासना करे, पूरय सत्वर
अश्वमेध करिले ये श्रीराम, एखन। एइ फल पाय से, ये शुने रामायण ३०
तुमि ना जन्मिते षाटि हाजार बत्सर। अनागत पुराण रचिला मुनिवर
अवतार ना हइते वाल्मीकिर गाथा। आदिकाण्डे श्रीराम तोमार जन्मकथा ३१
श्रीराम, अयोध्याकाण्डे पेले छत्रदण्ड। राज्य हरि निल ताहे कैकेयी पाषण्ड
तब पिता दशरथ स्त्रीवश हइया। पाठाय तोमारे बने सत्येर लागिया ३२
अयोध्या छाड़िया गेला तुमि वनवासे। शिरे हात दिया कान्दे स्त्री आर पुरुषे
संसार देखिया शून्य कान्दे सर्व्वलोक। मरिलेन दशरथ पेये तव शोक ३३
तुमि बने, भरत से मातुलेर पाड़ा। चारि पुत्र सत्त्वे राजा हैल बासि मड़ा
बासि मड़ा तैलेर भितरे दशरथ। अग्नि कैल देशे आसिया भरत ३४

लोगों को कौन-सा फल मिलता है ? यदि तुम लोग ये सब बातें विशेष जानते हो तो बताओ ॥ २७ ॥ रामचन्द्र ने जब इतना पूछा तो दोनों गायक हाथ जोड़कर खड़े हो गये। दोनों शिशुओं ने कहा— श्रीरघुनन्दन, सुनिए, आपने जो कुछ पूछा, सारा विवरण हम बताते है ॥ २८ ॥ इस काव्य में चौबीस हज़ार श्लोक है तथा पाँच सौ सर्गो में इस काव्य का वर्णन किया गया है। इसे सुनने की अभिलाषा जो करता है उसके सारे पाप मिट जाते हैं, उसे स्वर्ग में निवास प्राप्त होता है ॥ २९ ॥ पुत्रहीन इसे सुने तो उसे श्रेष्ठ पुत्र मिलता है। जो भी मनुष्य जो कामना करता है, वह तुरत पुरी हो जाती है। श्रीराम, अभी आपने जो अश्वमेध यज्ञ किया है, जो जन रामायण सुनता है, उसे वैसे ही अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है ॥ ३० ॥ हे रामचन्द्र, आपके जन्म के साठ हज़ार वर्ष पहले इस अनागत पुराण की रचना मुनिवर वाल्मीकि ने की है। आपके अवतार लेने के पहले ही वाल्मीकि ने यह गाथा रची है। श्रीराम, इसके आदिकांड में आपकी जन्म-कथा है ॥ ३१ ॥ श्रीराम, अयोध्याकांड में आपको छत्रदंड मिलने की कथा है। उसी में पाषंड कैकेयी ने राज्य हरण कर लिया (इसका भी विवरण है)। आपके पिता दशरथ ने स्त्री के वश में होकर अपनी सत्य-रक्षा के लिए आपको वन में भेज दिया ॥ ३२ ॥ आप अयोध्या को छोड़कर वनवास में चले गये। जिससे (अयोध्या के) स्त्री-पुरुष सिर पर हाथ रख रोने लगे। सभी लोग संसार को सूना देख रोने लगे। आपके शोक से दशरथ ने प्राण त्याग दिये ॥ ३३ ॥ आप वन में चले गये, भरत अपने मामा के गाँव में थे; चार पुत्रों के होते हुए भी राजा का शव 'बासी-मरा' होकर पड़ा रहा। दशरथ का 'बासी-मरा' शव तेल में रखा गया था, भरत ने देश में

अरण्यकाण्डेते सीता हरे लङ्केश्वर । बधिला राक्षस बहु यार मुख्य खर
दुइ शोके श्रीराम बड़ ताप पाइले । किष्किन्ध्याय वाली मारि सुग्रीवे लभिले ३५
सुन्दरेते श्रीराम, सागर हैला पार । लङ्काकाण्डे रावणेरे करिले संहार
सीतार परीक्षा आर राजा बिभीषण । स्वर्गपिता सम्भाषिया देशे आगमन ३६
आसिया हइले तुमि पृथिवीर राजा । अयोध्याय थाकिया पालिछ तुमि प्रजा
दश हाजार वर्ष तव प्रजार पालन । न'हाजार वर्षे वृद्ध राजार मरण ३७
हाजार वत्सर छिल पितृ-परमाइ । परमायु पितार पाइले चारि भाइ
एगार हाजार वर्ष करिबे पालन । सात हाजार वर्षे कर सीतारे बर्ज्जन ३८
गीत गाय यखन मायेर बनवास । तखन दोहाँर हय गद्गद भाष
शिखिल ताहारा गीत बाल्मीकिर स्थाने । संसार मोहित हय से गीतेर ताने ३९
दुर्व्वासा आसिया द्वारे रहिबेन कोपे । लक्ष्मणेरे बर्ज्जिबेन सेइ मुनिशापे
स्वर्गबासे याइबेन लइया संसार । इहा-बिना बाल्मीकि ना लिखिलेन आर ४०
शुनिया श्रीराम सेइ रामायण-गान । निज पुत्र बलि दोँहे करे अनुमान
लव-कुश सङ्गीत गाहिल एकमास । रचिल उत्तरकाण्ड कवि कृत्तिबास ४१

आकर उसकी अन्त्येष्टि की ॥ ३४ ॥ अरण्यकांड में (यह कथा है कि) आपने अनेक राक्षसों का वध किया, जिनमें मुख्य खर था। लंकेश्वर रावण सीता को हर ले गया। श्रीराम, दो प्रकार के शोक (वनवास और सीता-हरण) से आप बड़े संतप्त हुए। किष्किन्ध्या में बाली को मारकर सुग्रीव से मिले (यह कथा किष्किन्ध्याकांड में है) ॥ ३५ ॥ श्रीराम, अपने सागर पार किया, यह कथा सुन्दरकांड में है। लंकाकांड में आपने रावण का संहार किया, सीता की परीक्षा ली और विभीषण को राजा बनाया। अपने स्वर्गवासी पिता से संभाषण कर देश में आगमन किया ॥३६॥ देश आकर आप पृथ्वी के राजा बने, अयोध्या में रहकर अब आप प्रजा-पालन कर रहे हैं। दस हज़ार वर्ष आपको प्रजा-पालन करना है। नौ हज़ार वर्ष राज्य करने के पश्चात् वृद्ध राजा दशरथ का स्वर्गवास हुआ था ॥ ३७ ॥ पिता की परमायु और हज़ार वर्ष थी, पिता की वह परमायु आप चार भाइयों को मिली है। इस प्रकार आप ग्यारह हज़ार वर्ष प्रजा-पालन करेंगे। सात हज़ारवें वर्ष में आपने सीता का परित्याग किया है ॥३८॥ लव-कुश जब अपनी माँ सीता के वनवास के गीत गाने लगे, तब उन दोनों के वचन गद्गद हो उठे। उन दोनों ने वाल्मीकि से गीत सीखा था, उस गीत के तान से संसार मोहित हो उठा ॥३९॥ (आगे चलकर) दुर्वासा क्रोधित होकर द्वार पर रहेंगे, उन्हीं मुनि के शाप से रामचन्द्र लक्ष्मण का परित्याग कर देंगे। अपने परिवार-परिजन को लेकर स्वर्ग-वास को जायेंगे। इन घटनाओं से आगे मुनिवर वाल्मीकि ने और नहीं लिखा ॥४०॥ श्रीराम ने वह रामायण-गान सुनकर यह अनुमान किया कि ये दोनों अपने पुत्र हैं। लव-कुश ने रामायण-संगीत का गायन एक महीने तक किया। कवि कृत्तिवास ने इस उत्तरकांड की रचना की है ॥ ४१ ॥

सीतादेवीर पाताले प्रवेश

एकमासे गीत यदि हइल विराम। जिज्ञासा करेन तबे दोहाँरे श्रीराम
आमि तोमा दोहाँरे जिज्ञासि बिवरण। कोन् वंशे जन्मिला बा काहार नन्दन १
लव-कुश तखन श्रीरामेर साक्षाते। छले परिचय देन दोँहे हेँटमाथे
ना जानि पितार नाम, मातृ नाम सीता। वाल्मीकिर शिष्य मोरा, नाहि चिनि पिता २
एइ परिचय पेये श्रीरघुनन्दन। दुइ पुत्र कोले करि करेन क्रन्दन
आर पत्नी ना करिनु, नहिल सन्तति। कोन् दोषे वञ्चिलाम सीता गर्भवती ३
श्रीराम बलेन, हे बाल्मीकि ज्ञानवान्। जान भूत भबिष्यत आर बर्त्तमान
एतेक जानिया तुमि ना कह आमारे। परीक्षा लइब सीता आन मम घरे ४
यत लोक आसियाछे, येवा ना आइसे। शुनिया सीतार कथा आइल हरिषे
स्त्री-पुरुष आसिलेक सकल संसार। वृद्ध-शिशु काणा खोँड़ा हैल आगुसार ५
कुलवधु यत काछे राजार कुमारी। सीतार परीक्षा शुनि एल सारि सारि
आसिया सकल नारी कहे परस्पर। श्रीराम जानेन ना कि सीतार अन्तर ६
तबे केन सीतारे दिलेन बनवास। केन वा परीक्षा लन, एकि सर्व्वनाश
एइरूपे वामागण करे कानाकानि। हेनकाले आइलेन वृद्धा तिन राणी ७

देवी सीता का पाताल-प्रवेश

एक महीने में जब उनका गायन पूरा हो गया, तब श्रीराम ने दोनों से पूछा। हम तुम दोनों से विवरण पूछते है। तुम दोनों किस वंश में जन्मे हो, या किनके पुत्र हो ? ॥ १ ॥ तब श्रीराम के सम्मुख लव-कुश ने सिर झुकाकर संकेत से अपना परिचय दिया। हम अपने पिता का नाम नहीं जानते, माँ का नाम सीता है, हम वाल्मीकि के शिष्य हैं, पिता को हम पहचानते नहीं ॥ २ ॥ श्रीरघुनन्दन ने यह परिचय प्राप्त कर दोनों पुत्रों को गोद में ले रुदन करने लगे। मैंने (सीता के सिवा) और दूसरी पत्नी नहीं ली। कोई संतति भी नहीं हुई। मैंने किस दोष से गर्भवती सीता का परित्याग किया ? ॥ ३ ॥ श्रीराम बोले, हे ज्ञानवन्त वाल्मीकि, आप भूत, भविष्य और वर्तमान जानते हैं। ऐसा सब कुछ जानकर भी आप हमसे नहीं बताते ! आप सीता को मेरे यहाँ ले आइये, मैं उसकी परीक्षा लूंगा ॥ ४ ॥ वहाँ जितने लोग आये थे, जो लोग नहीं भी आये थे, सभी सीता की बात सुनकर प्रसन्नता से आ पहुँचे। संसार भर के स्त्री-पुरुष आये, बूढ़े, शिशु, अन्धे, लँगड़े सभी आगे बढ़ आये ॥ ५ ॥ जितनी राजकुमारियाँ कुलवधुएँ थीं, सीता की परीक्षा की बात सुन वे सभी कतारों में आयीं। वहाँ आकर नारियाँ आपस में कहने लगीं, श्रीराम क्या सीता का अन्तर नहीं जानते ? ॥ ६ ॥ तो फिर उन्होंने सीता को वनवास क्यों दिया ? उनकी परीक्षा ही किसलिए ले रहे हैं ? यह कैसी सर्वनाश की वात है। नारियाँ इस तरह से कानाफूसी करने लगीं, उसी समय वहाँ तीनों वृद्धा रानियाँ आ पहुँचीं ! ॥ ७ ॥

कौशल्या कैकेयी आर सुमित्रा सतिनी । रामेरे बुझान तिन राजार गृहिणी
लइया परीक्षा एक सागरेर पार । कि हेतु परीक्षा निते चाह आरबार ८
धन्य जनकेर मान जानकीर बाप । हेन जनकेर आर नाहि दिओ ताप
सीताके ना जान, तिनि कमला आपनि । नाहिक सीतार पाप, जाने सर्व्व प्राण ९
सीतारे लइया तुमि थाक गृहवासे । जनक सन्तुष्ट हये याक् निज देशे
श्रीराम बलेन, माता, ना कर बिषाद । परीक्षा ना निले दिवे लोके अपवाद १०
महाराज जनकेर नाहि उपरोध । परीक्षा लइले सबे पाइबे प्रबोध
राजा हये स्त्रीर यदि ना करे विचार । स्त्रीर अनाचारे नष्ट हइबे संसार ११
एत यदि रघुनाथ बलेन निष्ठुर । कान्दिते कान्दिते राणी गेल अन्तःपुर
श्रीराम बलेन, हे बाल्मीकि तपोधन । आपनि आपन देशे करुन गमन १२
सङ्गे रथ लये याक सुमन्त्र सारथि । रथे करि आनह सीतारे शीघ्रगति
महामुनि श्रीरामेर अनुज्ञा पाइया । स्वदेशे गेलेन मुनि सुमन्त्रे लइया १३
मुनिर चरणे सीता करि नमस्कार । मुनिके जिज्ञासा करे, कह सारोद्धार
पिता पुत्रे केमने हइल परिचय । से-सब कहेन मुनि सीतार आलय १४
शुनह आमार वाक्य जनक-दुहिते । पूर्व्वेर निर्व्बन्ध याहा के पारे खण्डिते
रामेर आज्ञाय देशे करह गमन । परीक्षा देखिते एल यत देबगण १५

कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा ये तीनों राज-गृहिणी सौतें राम को समझाने लगीं, सागर के उस पार (लंका में) एक बार सीता की परीक्षा लेकर किस कारण तुम दूसरी बार परीक्षा लेना चाहते हो ? ॥ ८ ॥ तुम सीता को नहीं जानते, वह साक्षात् लक्ष्मी है । सीता का कोई पाप नहीं है, यह सारे जीव जानते हैं ॥ ९ ॥ सीता को लेकर तुम अपने घर में रहो, राजा जनक भी संतुष्ट होकर अपने देश को जायें ! श्रीराम बोले, माताओ, विषाद न करो । यदि मैं परीक्षा न लूँ तो लोग अपयश लगाते रहेंगे ॥ १० ॥ महाराज जनक ने भी कोई आग्रह नहीं किया है । सीता की परीक्षा लेने पर सभी को शान्ति मिलेगी । राजा होकर भी यदि स्त्री का न्याय नहीं करता तो स्त्री के अनाचार से संसार नष्ट हो जायेगा ॥ ११ ॥ रघुनाथ ने जब निर्मम होकर ऐसा कहा तो रानियाँ रोती हुई अन्तःपुर में चली गयीं । श्रीराम बोले, हे तपोधन वाल्मीकिजी, आप अपने देश को जायें ॥ १२ ॥ सारथी सुमंत्र आपके साथ रथ लेकर जाये और आप शीघ्रता से रथ पर बिठा सीता को ले आयें । महामुनि वाल्मीकि ने श्रीराम का आदेश पाकर सुमंत्र को ले, अपने आश्रम में गये ॥ १३ ॥ मुनि के चरणों में सीता ने नमस्कार किया और उनसे पूछा— (वहाँ जो कुछ हुआ है) उसका सार सुनाइए । पिता और पुत्र से किस प्रकार परिचय हुआ ! वह सब मुनि ने आश्रम में सीता से कहा ॥ १४ ॥ हे जनकनन्दनी, मेरे वचन को सुनो । पूर्व का निर्बन्ध (कर्मफल) यहाँ पर कौन खण्डित कर सकता है । श्रीराम की आज्ञा से देश (अयोध्या) को गमन करो । अभी तक जो देवगण थे वे (तुम्हारी) परीक्षा ले रहे हैं ॥ १५ ॥ तुमने पहले जो परीक्षा दी थी, वह संसार

प्रथमे परीक्षा दिले संसारे विदित। आवार परीक्षा तब ललाटे लिखित
एक ठांइ हइयाछे सर्व्व देवगण। कारो बाक्य ना मानेन श्रीरघुनन्दन १६
जानकीरे एइमत कहिलेन मुनि। सीतार नयन-जल झरिल अमनि
मुनिर तनया-वधु तापेते आकुलि। से-सबार सङ्गे सीता करे कोलाकुलि १७
विदाय चाहेन सीता करि नमस्कार। मेलानि देह मा, देखा नाहि हबे आर
मुनिपत्नी वले, लक्ष्मी, छाड़ि याह कोथा। बुके शेल रहिल, थाकिल मर्म्मव्यथा १८
जानकी वलिया मोरा ना डाकिब आर। ना शुनिब मधुर ये बचन तोमार
रथेते चड़िया सीता करिल गमन। वाल्मीकिर तपोबने उठिल क्रन्दन १९
तपोवन छाड़ि यान जानकी सुन्दरी। येइ देशे यान तिनि, आलो सेइ पुरी
निज देश अयोध्याय करिल गमन। जय जय हुलाहुलि लक्ष्मी-आगमन २०
जगतेर यत लोक अयोध्या-नगरे। हेनकाले गेल सीता सभार भितरे
भूमिते आछेन सीता रथ हैते उलि। रूपे पुरी आलोकरे, ढालिछे बिजुलि २१
कि कव अन्येर कथा, यत मुनिगण। देखिया सीतार रूप सबे अचेतन
श्रीराम-चरण सीता करिल बन्दन। बालमीकि रामेर प्रति कहेन तखन २२
च्यवनेर पुत्र ये बाल्मीकि नाम धरि। मन दिया शुन राम, निबेदन करि
बहु तप करिलाम त्यजि भक्ष्य-पानि। सीतार शरीरे पाप नाहि, आमि जानि २३

जानता है। अब तुम्हारे भाग्य में फिर परीक्षा देने की बात लिखी हुई है। वहाँ सारे देवगण एकत्र हुए हैं परन्तु श्रीरघुन्दन किसी की बात नहीं मानते ॥ १६ ॥ मुनि ने जानकी से इस प्रकार कहा तो सीता की आँखों से तभी आँसू बहने लगे। वहाँ मुनि-कन्याएं, मुनि-वधुएँ सीता के दुःख से व्याकुल हो उठीं। सीता ने उन सबसे अँकवार भेंट की ॥ १७ ॥ उन सबको नमस्कार कर सीता ने विदा माँगी। माँ, हमें विदा दो, अब आगे आपसे भेंट नहीं होनेवाली है। मुनि-पत्नी ने कहा— लक्ष्मी, तुम हमें छोड़कर कहाँ जा रही हो ? हमारे हृदय में यह शेल रह गया, मर्म-वेदना रह गयी ॥ १८ ॥ हम अब जानकी कहकर तुम्हें पुकार नहीं पायेंगी, तुम्हारे वे मधुर वचन सुन नहीं पायेंगी। सीता रथ पर चढ़कर चलीं। वाल्मीकि के तपोवन मे रुलाई उठी ॥ १९ ॥ सुन्दरी जानकी तपोवन छोड़कर जाने लगी, वे जिस देश में जाती, वही पुरी आलोकमयी हो उठती। वे अपने देश अयोध्या गयीं। लक्ष्मी के आगमन से वहाँ जय-नाद और उलुध्वनि (मुँह से की जानेवाली ध्वनि) होने लगे ॥ २० ॥ जगत के सारे लोग अयोध्या नगर में आ पहुँचे। तभी सीता सभा में गयी। सीता रथ से भूमि पर उतरीं। वह अपने रूप से मानो बिजली की धारा बहाकर पुरी को आलोकित करती थीं ॥ २१ ॥ दूसरों की बात क्या कहें, जितने मुनि थे, सीता का रूप देखकर सभी अचेतन (जड़) जैसे हो गये। सीता ने श्रीराम के चरणों की वन्दना की। तब वाल्मीकि ने राम के प्रति यह वचन कहा— ॥ २२ ॥ मैं च्यवन का पुत्र, वाल्मीकि नाम धारण करता हूँ। हे राम, मेरा निवेदन ध्यान देकर सुनिये। खाना-पीना छोड़कर मैंने बहुत तप किया है। मैं जानता हूँ कि सीता के शरीर में

আমি জানি, পাপ নাই সীতার শরীরে। মহাসতী সীতা, আমি জানিনু অন্তরে
সীতা -যে পরম-সতী জানে ত্রিসংসার। সীতার চরিত্রে লাগে মম চমৎকার ২৪
পাপমতি নহে সীতা, পরম পবিত্র। ধ্যানে জানিলাম আমি সীতার চরিত্র
ঘরে লহ সীতারে কি করহ বিচার। লব-কুশ দুই পুত্র সীতার কুমার ২৫
আমার বচন রাম, না করহ আন। দুই-পুত্রে লয়ে রাখ আপনার স্থান
এতেক বলিয়া মুনি কাঁপে বার-বার। শাপে পুড়ি মরে পাছে সকল সংসার ২৬
মুনি প্রতি শ্রীরাম কহেন যোড়হাতে। সীতার চরিত্র আমি জানি ভালমতে
অগ্নিশুদ্ধা হইলেক দেব-বিদ্যমানে। জানকীরে আনিলাম দেশে সেকারণে ২৭
আমি জানি, সীতার শরীরে নাহি পাপ। বিধির নির্ব্বন্ধ, এই ঘটিল সন্তাপ
আর কিছু মহামুনি, না বলহি মোরে। সীতার পরীক্ষা লব সভার ভিতরে ২৮
শ্রীরাম বলেন, সীতা, শুন এ বচন। দেখ ত্রিলোকের যে আইল সর্ব্বজন
প্রথমে পরীক্ষা দিলে সাগরের পার। দেবগণ জানে, তাহা না জানে সংসার ২৯
পুনশ্চ পরীক্ষা দিবে সবাকার আগে। দেখিয়া লোকের যেন চমৎকার লাগে
এত যদি রামচন্দ্র বলেন সীতারে। যোড়হাতে জানকী বলেন ধীরে ধীরে ৩০
কি কার্য্য আমার রঘুনাথ, এ-জীবনে। প্রবেশ করিব অগ্নি তোমার বচনে
পরীক্ষা দিলাম পূর্ব্বে দেব-বিদ্যমানে। যা কহিলা দেবগণ, শুনিলে আপনে ३१

कोई पाप नहीं है ।। २३ ।। मैं जानता हूँ, सीता के शरीर में कोई पाप नहीं है । मैं अन्तर से जानता हूँ; सीता महासती है, सीता परम सती हैं, यह तीनों लोक जानते हैं । सीता के चरित्र से मुझे विस्मय होता है ।। २४ ।। सीता पाप-विचार की नहीं है; परम पवित्र है । मैंने ध्यान से सीता का चरित्र जान लिया है । आप विचार क्या कर रहे हैं, सीता को अपने घर में अपना लीजिए । ये लव-कुश दोनों सीता के कुमार हैं ।। २५ ।। राम, मेरे वचन की अन्यथा न करें । दोनों पुत्रों को अपने यहाँ रखिए । ऐसा कहकर मुनि बार-बार काँपने लगे । लगा, कहीं उनके शाप से सारा संसार जल न मरे ।। २६ ।। श्रीराम ने हाथ जोड़कर मुनि से कहा— मैं सीता का चरित्र भलीभाँति जानता हूँ । यह देवताओं के समक्ष अग्नि-शुद्धा बनी है । उसी कारण मैं जानकी को घर ले आया ।। २७ ।। मैं जानता हूँ, सीता के शरीर में कोई पाप नहीं है । विधि के निर्बन्ध से उन्हें यह संताप भोगना पड़ा है । हे महामुनि, मुझसे और कुछ न कहें । मैं सभा में सीता की परीक्षा लूंगा ।। २८ ।। श्रीराम बोले, सीता, यह वचन सुनो । देखो, ये त्रिलोक के सभी जन आये हुए हैं । तुमने पहले सागर के उस पार (लंका में) परीक्षा दी थी । वह देवगण जानते हैं, पर संसार नहीं जानता ।। २९ ।। पुनः तुम्हें सबके आगे परीक्षा देनी है, जिसे देखकर लोगों को विस्मय हो । जब रामचन्द्र ने यह बात कही तो जानकी ने हाथ जोड़कर धीरे-धीरे कहा— ।। ३० ।। हे रघुनाथ, मेरे इस जीवन से अब कौन-सा प्रयोजन है ? आपके वचनों से मैं अग्नि में प्रवेश करूँगी ! पहले देवों के समक्ष मैंने परीक्षा दी । देवताओं ने जो कुछ कहा, आपने सुना ।। ३१ ।। आप मुझे आश्वासन देकर देश ले

देशेते आनिला तुमि दिया ये आश्वास । अकस्मात् मोरे केन दिला वनवास
महादेवी हइया मुनिर घरे वसि । फल मूल खाइ आमि नित्य उपवासी ३२
पतिकुले पितृकुले नाहि पाइ स्थान । अग्निते परीक्षा करि कर अपमान
ब्रह्मा वलिलेन, यत शुनिले आपनि । मृत पिता आसि कत बुझाले काहिनी ३३
साक्षाते शुनिले तुमि पितार वचन । तबे से आमारे लये हैशे आगमन
कुलवधू यत नारी, सेइ थाके घरे । सभाते परीक्षा दिते आसि वारे वारे ३४
सर्व्वगुण धर तुमि, विचारे पण्डित । बुझिया परीक्षा निते हयत उचित
अदेखा हइव प्रभु, घचाव जञ्जाल । संसारेर साध नाहि, याइव पाताल ३५
आज हैते घुचुक तोमार लाज दुख । आर येन नाहि देख जानकीर मुख
निरवधि अपवाद दितेछ-आमारे । सभाय परीक्षा दिते आसि वारे वारे ३६
जन्मे-जन्मे प्रभु, तुमि होओ मोर पति । आर कोन जन्मे मोर करो ना दुर्गति
मेलानि मागिनु प्रभु, तोमार चरणे । एतेक कहिला सीता सभा-विद्यमाने ३७
सीतार वचन ये शुनिल सर्व्वलोके । लज्जाय कातर सीता पृथिवीके डाके
मा हइया पृथिवी मायेर कर काज । कन्यार हइले लज्जा तोमार से लाज ३८
कत दुःख सहे मागो, आमार पराणे । सेवा करि थाकि सदा तोमार चरणे
उदरे धरिले मोरे, ताकि मने नाइ । तोमार चरणे सीता मागे किछु ठाँइ ३९

आये थे, तब फिर मुझे अकस्मात् वनवास किसलिए दे दिया ? महादेवी (पटरानी) होने के बावजूद मुझे मुनि के यहाँ रहना पड़ा । नित्य उपवासी रहकर फल-मूल खाते रहना पड़ा ।। ३२ ।। पतिकुल या पितृ-कुल में मुझे स्थान नहीं मिला । अग्नि में परीक्षा लेकर भी आप मेरा अपमान करते हैं । ब्रह्मा ने जो कुछ कहा, आपने स्वयं सुना; मृत पिता ने आकर आपको कितनी कथाएँ सुनाकर समझाया ।। ३३ ।। अपने सामने ही आपने पिता के वचन सुने थे, उसके बाद ही मुझे लेकर देश आये थे । जो कुल-वधुएँ होती है, वे नारियाँ घर में रहा करती है; परन्तु मुझे बार-बार सभा में परीक्षा देने आना पड़ रहा है ।। ३४ ।। आप सर्व-गुणाधार, विचार में पंडित है । अतः आपको समझ-बूझकर परीक्षा लेना उचित है । प्रभु, अब मैं आपसे ओझल हो जाऊँगी, सारा जंजाल मिट जायेगा । अव मुझे संसार में रहने की साध नहीं है, मैं पाताल चली जाऊँगी ।। ३५ ।। आज से आपकी (लोक) लज्जा और दुःख मिट जाए । अब से जैसे आपको जानकी का मुँह दिखाई न दे । आप निरन्तर मुझे अपयश लगाते रहे हैं, (इसी कारण) बार-बार मुझे सभा में परीक्षा देने के लिए आना पड़ता है ।। ३६ ।। प्रभु, जन्म-जन्म में आप मेरे पति बनें, और किसी जन्म में जैसे मेरी दुर्गति न करें । प्रभु, मैं आपके चरणों में विदा माँग रही हूँ । सीताजी ने सभा के सम्मुख यह बात कही ।। ३७ ।। सभी लोगों ने सीता के वचन सुने ! लज्जा से कातर हो सीता धरती माता को पुकारने लगी ! हे धरती माता, माँ होकर तुम माँ का कार्य करो । कन्या की लज्जा हो तो वह तुम्हारी ही लज्जा है ।। ३८ ।। हे माता, अब मेरे प्राण भला कितने दुःख सहें ?

करिलेन पृथिवीके सीता एइ स्तुति। सप्त पातालेते थाकि शुने वसुमती
सीता निते पृथिवी कपिल आगुसार। से सप्त पाताल हैते हैल एक द्वार ४०
अकस्मात् उठिल सुवर्ण सिंहासन। दशदिक् आलोकरे अयोध्या-भुवन
नानाविध वसन भूषण परिधान। मूर्तिमती पृथिवी रहिल विद्यमान ४१
झि बलिया पृथिवी सीतारे डाके घने। कोले करि सीतारे तुलिल सिंहासने
परीक्षा लइते चान लोकेर कथाय। लोक लये सुखे राम थाकुन हेथाय ४२
माये झिये दुइजने थाकिब पाताले। सर्व्वलोक शुनिल पृथिवी यत बले
नाहि चाहिलेन सीता उभय छावाले। श्रीरामेरे निरखिया प्रवेशे पाताले ४३
पाताले येते राम धरेन तार चुले। हस्ते चुलमुठा रैल, सीता गेल तले
पातालेते प्रवेशिया तिलके ना थाकि। वैकुण्ठे स्वमूर्त्ति धरि गेलेन जानकी ४४
वैकुण्ठे गेलेन लक्ष्मी हृष्ट देवगण। अयोध्या नगरे हेथा उठिल क्रन्दन
श्रीरामेर क्रन्दन हइल अनिवार। हाहाकार शब्द करे सकल संसार ४५
सीतार चरित्र कथा शुने येइ लोके। पुञ्ज-पुञ्ज पुण्य हय, पाप नाहि थाके
कृत्तिबास रचिल ए काव्य चमत्कार। गाहिल उत्तरकाण्डे चरित्र सीतार ४६

तुम्हारे चरणों में मैं सदा सेवा करती रहती हूँ। तुम्हें क्या स्मरण नहीं है कि तुमने मुझे अपने उदर में धारण किया था। अब तुम्हारे चरणों में सीता कुछ स्थान माँगती है ॥ ३९ ॥ सीता ने धरती की यह स्तुति की। वसुमती ने सप्त-पाताल से उसे सुना। सीता को ले जाने के लिए धरती आगे बढ़ी। उस सप्त-पाताल से एक द्वार बन गया ॥ ४० ॥ अकस्मात् वहाँ से एक स्वर्ण-सिंहासन निकल आया। उस (सिंहासन) से अयोध्या (समेत) सम्पूर्ण भुवन आलोकित हो उठे। अनेक प्रकार के वस्त्रों और आभूषणों से अलंकृत मूर्तिमती धरती माता वहाँ विद्यमान थी ॥ ४१ ॥ 'बेटी' कहकर धरती सीता को बार-बार पुकार उठी ! सीता को गोद में लेकर सिंहासन पर चढ़ा लिया। और बोली— लोगों की बात पर राम परीक्षा लेना चाहते हैं, अब लोगों को लेकर राम यहाँ सुख से रहें ॥ ४२ ॥ हम दोनों माँ बेटी पाताल में रहेंगी। धरती ने जो कुछ कहा, सभी लोगों ने सुना। सीता ने दोनों पुत्रों की ओर नहीं देखा। श्रीराम की ओर देखती हुई वह पाताल में प्रवेश कर गयीं ॥ ४३ ॥ वह जब पाताल में चली जाने लगीं (उसे रोकने के लिए) राम ने उनके बाल पकड़ लिये। परन्तु वे बाल उनके हाथों में रह गये, सीता नीचे चली गयीं। पाताल में पहुँचकर वहाँ पल भर भी नहीं रहीं। स्वमूर्ति (लक्ष्मीस्वरूप) धारण कर जानकी वैकुंठ में चली गयीं ॥ ४४ ॥ लक्ष्मी वैकुंठ में चली आयी देख देवगण हर्षित हो उठे। इधर अयोध्या नगरी में रुदन होने लगा। श्रीराम अपार रुदन करने लगे ! सारा संसार हाहाकार करने लगा ॥ ४५ ॥ जो सीता की चरित-कथा सुनते हैं, उन्हें पुण्यों का समूह (अपार पुण्य) मिलता है, उनका पाप नहीं रहता। कृत्तिवास ने यह अपूर्व काव्य रचा है। उन्होंने उत्तरकांड में सीता का यह चरित्र गाया है ॥४६॥

लव-कुशेर रोदन ओ रामेर यज्ञ-समापन

लव-कुश शुनिया हातेर फेले वीणा। भूमे लोटाइया कान्दे भाइ दुइ जना
कोथा गेले जननी गो जनक दुहिते। आमरा तोमार शोक ना पारि सहिते १
तोमा विना माता गो अन्यके नाहि जानि। तुमि विना आर केवा दिवे अन्न-पानि
क्षुधा हैले अन्न देह, जल पिपासाय। ससारे दुर्ल्लभ गुण, से गुण तोमाय २
दशमास आमा दोँहे धरिल॰ उदरे। ये दुःख पाइले, ताहा के वलिते पारे
छोटके करिले वड़ लालिया पालिया। पलाइया माता, हेन पुत्र कारे दिया ३
जनकेर कन्या तुमि श्रीरामघरणी। अयोनिसम्भवा लव-कुशेर जननी
मातृहीन बालक ये सर्व्वदा अस्थिर। यार माता आछे तार सफल शरीर ४
आजि हैते अनाथ हलाम दुइ जन। एइ दुइ पुत्रे माता, हइला निर्म्मम
पाइया विस्तर दुःख गेले मा पाताले। अनाथ करिया गेले ए वड़ छावाले ५
लव-कुश कान्दितेछे लोटाइया धूलि। धूलाय धूसर अङ्ग ननीर पुत्तली
पुत्रेर क्रन्दने राम हइया कातर। अन्तःपुरे पाठालेन मायेर गोचर ६
कौशल्या कैकेयी आर सुमित्रा ए-तिने। यतेक प्रबोध देन प्रबोध ना माने
मा हये पुत्रेर प्रति ये हय निर्द्दय। से मायेर तरे कांदा उचित ना हय ७

लव-कुश का रुदन और रामचन्द्र के यज्ञ की समाप्ति

लव-कुश ने सुनकर (देखकर) हाथ की वीणाएँ फेंक दीं और दोनों भाई भूमि पर लोट-लोटकर रोने लगे। (वे कहने लगे—) हमारी जननी, जनक-नन्दिनी, तुम कहाँ चली गयी ? हम लोग तुम्हारा शोक सह नहीं पा रहे हैं ॥ १ ॥ हे माता, हम तुम्हारे सिवा और किसी को नहीं जानते। तुम्हारे विना हमें अब अन्न-जल कौन देगा ? हमें भूख लगने पर तुम अन्न देती थी, प्यास लगने पर जल देती थी। संसार में जो भी दुर्लभ गुण हैं, वे सभी तुममें थे ॥ २ ॥ तुमने हम दोनों को दस महीने उदर में धारण किया, तुम्हें जो दुःख मिला उसका वर्णन कौन कर सकता है ? तुमने लालन-पालन कर छोटे को वड़ा किया। माता, ऐसे पुत्रों को किसे सौंपकर तुम भाग गयी ? ॥ ३ ॥ तुम जनक की कन्या और श्रीराम की धर्मपत्नी तथा स्वयं अयोनिसंभवा हो। हम लव-कुश की जननी हो। मातृहीन बालक तो सदा अस्थिर होते हैं। जिसकी माँ होती है उसका शरीर सफल है ॥ ४ ॥ आज से हम दोनों अनाथ हो गये। माता, तुम अपने इन दोनों पुत्रों पर निर्मम हो गयीं। अनेक दुःख भोगकर, माँ, तुम पाताल चली गयीं। अपने इन पुत्रों को तुम अनाथ कर गयीं ॥ ५ ॥ लव-कुश धूल में लोट-लोटकर रो रहे थे। नवनीत के पुतले उनके अंग धूल-धूसरित थे। पुत्रों की रुलाई से राम कातर हो उठे और उन दोनों को अपनी माँ कौशल्या के पास अंतःपुर में भेज दिया ॥ ६ ॥ कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा —ये तीनों, लव-कुश को कितना ही धीरज बँधातीं, पर वे धीरज नहीं धरते थे। माँ होकर पुत्र

ना पबे मायेर देखा गेल दूर देशे। पितामही आमरा ये आछि सविशेषे
दुइ नाति प्रबोधिते नारे तिन बुड़ी। प्रबोध करिते तबे गेल तिन खुड़ी ८
बिधिर निर्ब्बन्ध बापु, आर कर्म्मफले। ए-सुख एड़िया सीता पशिल पाताले
उठ बापु लब-कुश, कान्द कि कारण। सीतार समान हइ मोरा तिन जन ९
मातृ-सङ्गे तोमादेर ना हबे दर्शन। आमा-सबा देखि बापु, संबर क्रन्दन
दु-भायेर नेत्रजले तितिल मेदिनी। प्रबोध करिते नारे कोन ठाकुराणी १०
भरत लक्ष्मण शत्रुघन तिन जन। चलिलेन अन्तःपुरे प्रबोध कारण
दुइ भाये वसाइया रत्न-सिंहासने। तिन खुड़ा प्रबोधेन मधुर बचने ११
शुन लब, शुन कुश, मोदेर बचन। अस्थिर ना हओ बापु, स्थिर कर मन
पिता माता भ्राता कार थाके निरन्तर। अनित्य लागिया केन हइले कातर १२
कालि बा परश्व बापु, हइवे ये राजा। अस्थिर हइले बापु, के पालिबे प्रजा
गङ्गा आनिलेन राजा नाम भगीरथ। तार नाम गाय सदा सकल जगत १३
तोमा-सबे बर्ज्जिलेन जानकी निश्चित। सर्ब्बलोके गाहिबेक सीतार चरित
तिन खुड़ा प्रबोधेन, प्रबोध ना माने। दुइ बालकेरे दिले राम-बिद्यमाने १४

के प्रति जो निर्दय हो, उस माँ के लिए रोना उचित नहीं ॥ ७ ॥ अब तो माँ से तुम्हारी भेंट नहीं होगी, वह दूर देश को चली गयी। अब विशेष रूप से हम तुम्हारी दादियाँ (यहाँ) हैं। (आदि कहकर) वे तीनों वृद्धाएँ दोनों नातियों को धीरज नहीं बँधा पाती थी। तब उन्हें धीरज बँधाने के लिए उनकी तीनों चाचियाँ आयीं ॥ ८ ॥ (वे कहने लगीं—) बेटो, विधि के लेख और कर्म-फल से सीता इस संसार का सुख छोड़कर पाताल में प्रविष्ट हो गयी। लव-कुश बेटो, उठो, तुम किस कारण रोते हो ? हम तीनों सीता के समान ही हैं ॥ ९ ॥ अब तो माँ के संग तुम लोगों की भेंट नहीं होगी। बेटो, हम सबको देखकर तुम रोना छोड़ो। दोनों भाइयों के आँसुओं से धरती भीग गयी। कोई राज-वधू उन्हें धीरज नहीं बँधा पायी ॥ १० ॥ तब भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न ये तीनों उन्हें धीरज बँधाने अंतःपुर में आये। दोनों भाइयों को रत्न-सिंहासन पर बिठाकर, तीनों चाचा मधुर वचनों से उन्हें धीरज बँधाने लगे ॥ ११ ॥ लव-कुश, हमारे वचन सुनो। बेटो, अस्थिर न होओ, अपना मन स्थिर करो। पिता, माता, भाई आदि सदा किसके रहते हैं ? इसलिए अनित्य (माँ) के लिए तुम यों विकल क्यों हो गये हो ? ॥ १२ ॥ बेटो, कल या परसों तो तुम्हें राजा बनना है। बेटो, तुम लोग ऐसे अस्थिर होओगे तो प्रजा का पालन कौन करेगा ? भगीरथ नाम के राजा गंगा को ले आये थे, उनका नाम सदा सारा संसार गाया करता है (तुम्हें भी वैसा ही यशस्वी बनना है।) ॥ १३ ॥ जानकी तो निश्चित रूप से तुम्हें त्याग कर गयी है। सीता के चरित्र का गान सभी लोग किया करेंगे। (अतः तुम्हें रोना नहीं चाहिए।) तीनों चाचा लव-कुश को धीरज बँधा रहे थे, पर वे धीरज नहीं धरते थे। तब उन दोनों बालकों को राम के सामने

दुयेर क्रन्दने राम कान्देन आपनि। उभयेर नेत्रजले तितिल मेदिनी
दोँहारे वाल्मीकि मुनि यतेक बुझान। सीता-हेतु कान्दिया श्रीराम हतज्ञान १५
सीतार समान नारी ना हेरि नयने। कि करिब राजा हैया सीतार बिहने
मोर अगोचरे सीता लइल रावणे। सवंशे मरिल सेइ जानकी-कारणे १६
आमार साक्षाते सीता हरिलेक धरा। ताहारे खुंदिया निब सीता मनोहरा
यज्ञेते जनक-राजा यज्ञभूमि चषे। पृथिवीर मध्ये सीता उठिलेन चाषे १७
चाषभूमि सीतार जन्मेर अनुबन्ध। तेकारणे बसुमती शाशुड़ी सम्बन्ध
आर यत नारी जन्मे भारत-भुवने। सीता तुल्य नारी नाहि आमार नयने १८
कृताञ्जलि शुन बलि शाशुड़ी गर्व्विता। ना देह आमारे दुःख, आनि देह सीता
कातर हइया राम बलिलेन यत। तदुत्तर ना पाइया ज्वलिलेन तत १९
श्रीराम बलेन, भाइ, आन धनुर्व्वाण। पृथिवी काटिया आजि करि खान खान
शाशुड़ी ना दिला, तबे एइ बाण युड़ि। केमने बाँचिबे तुमि, काहार शाशुड़ी २०
सीता निते यखन करिला आगुसार। तखनि पाठाइताम यमेर दुयार
पृथिवी काटिते राम पूरेन सन्धान। त्रास पेये पृथिवी हलेन आगुयान २१
देखिया रामेर कोप ब्रह्मा चिन्ते मने। सत्वर आइसे ब्रह्मा राम-विद्यमाने
बलिलेन, राम, तुमि विष्णु अवतार। संसारे हइल तब गुणेर प्रचार २२

ले गये ॥ १४ ॥ दोनों की रुलाई से रामचन्द्र स्वयं रोने लगे। उन दोनों के आँसुओं से धरती भीग गयी। उन दोनों को वाल्मीकि मुनि भी जितना समझाते थे, श्रीराम भी उतना ही सीता के लिए रो-रोकर अचेतन-से हो जाते थे ॥ १५ ॥ राम कह रहे थे, सीता के समान नारी आँखों से नहीं देखता। सीता के बिना राजा बनकर क्या करूँगा। मेरे अगोचर में रावण सीता को हर ले गया था, जानकी के कारण वह सवंश मारा गया! ॥ १६ ॥ मेरे सामने धरती ने सीता को हर लिया है, मैं उसे खोदकर मनोहरा सीता को ले आऊँगा। यज्ञ करने हेतु राजा जनक ने यज्ञभूमि का कर्षण किया था, हल चलाते समय धरती से सीता निकली थी ॥ १७ ॥ उस कृषि-क्षेत्र के साथ सीता का जन्म का अनुबंध रहा है। इस कारण धरती नाते से मेरी सास होती है। भारत-भू पर और जितनी भी नारियाँ जन्मी हैं, मेरी दृष्टि में, उनमें सीता-तुल्य नारी कोई नहीं है ॥ १८ ॥ अहंकारिणी सास! मैं हाथ जोड़कर तुमसे कहता हूँ, सुनो। मुझे दुःख न दो, सीता को ला दो। राम व्याकुल होकर जितना कहते थे, उसका कोई उत्तर न पाकर उतना ही जल उठते थे ॥ १९ ॥ श्रीराम बोले, भाई, धनुष-बाण ले आओ। मैं आज धरती को काटकर टुकड़े-टुकड़े कर डालूँ। सास धरती, यदि (सीता को) न लौटायें, तो (धनुष पर) यह बाण चढ़ा रहा हूँ। देखना, तुम किसकी सास हो, कैसे बच पाओगी! ॥ २० ॥ तुम जब सीता को ले जाने के लिए आगे बढ़ी थी, तभी तुम्हें मैं यम के दरवाज़े भेज देता। ऐसा कहकर रामचन्द्र ने धरती को काट डालने के लिए निशाना साधा। तब त्रस्त होकर धरती आगे बढ़ी ॥ २१ ॥ रामचन्द्र का कोप देखकर ब्रह्मा ने

जन्म ना हइते राम, तोमार चरित। अबतार ना हइते हैल तव गीत
भूत भविष्यत् ये सकल मुनि जाने। सर्व्व दुःख खण्डे येइ रामायण शुने २३
आदि कबि बाल्मीकि रचिल रामायण। शुनिले पापेर क्षय, दुःख-बिमोचन
आपनि श्रीराम, तुमि साक्षात् नारायण। पृथिबीते गुणगान करे सर्व्वजन २४
अनाथेर नाथ तुमि, सकलेर गति। पृथिबी काटिया तुमि राखिबे अख्याति
तब स्मरणे पापीर पाप नाहि थाके। बिकल हइले तुमि जानकीर शोके २५
इन्द्र-आदि करिया देबता आर ऋषि। तब सङ्गे रामायण शुने भालबासि
देबगण मुनिगण बसिया कौतुके। सर्व्वलोके रामायण शुने महासुखे २६
बाल्मीकि रचिल येइ अद्भुत आख्यान। शुनिले पापेर क्षय, दुःख-अबसान

श्रीरामेर अश्वमेध यज्ञ समापन ओ पुनर्व्बार रामायण-गान

एइरूपे ब्रह्मा प्रबोधेन नाना छले। श्रीरामेरे पृथिबी बलेन हेनकाले १
श्रीराम, आमारे कोप कर अनुचित। अवश्य भुगिते हय, ललाटे लिखित
कोन् दोषे मम कन्या दिले बनबास। बनवास दिया केन आन निज बास २

मन में चिन्तन किया और तुरंत रामचन्द्र के पास आये। कहा— राम, आप बिष्णु के अवतार हैं। संसार में आपके गुणों का प्रचार हुआ है ॥ २२ ॥ राम, आपके जन्म के पहले ही आपका चरित रचित हुआ है। अवतार होने के पहले ही आपका गीत गाया जाता है। ये मुनिगण भूत-भविष्य सब जानते हैं। जो रामायण सुनते हैं उनका सारा दुःख मिट जाता है ॥ २३ ॥ आदिकवि वाल्मीकि ने रामायण की रचना की है; जिसे सुनने से पाप नष्ट होते हैं, दुःख दूर होता है। श्रीराम आप स्वयं साक्षात् नारायण हैं। संसार में आपका गुणगान सारे जन किया करते हैं ॥ २४ ॥ आप अनाथ के नाथ है, सबकी गति हैं। धरती को काट डालें तो आपका अपयश रह जायेगा। आपके स्मरण से पापी का पाप नहीं रहता। आप जानकी के शोक से विकल हो उठे हैं ॥ २५ ॥ इन्द्र समेत देवता और ऋषिगण आपके संग बड़े प्रेम से रामायण सुना करते हैं। देवगण, मुनिगण आदि सभी कौतूहल से बैठकर बड़े सुख-पूर्वक रामायण सुनते हैं ॥ २६ ॥ वाल्मीकि ने जिस अद्भुत आख्यान की रचना की है, उसे सुनने से पाप नष्ट होता है, दुःख का अवसान होता है।

श्रीराम के अश्वमेध यज्ञ की समाप्ति और पुनः रामायण-गान

इसी प्रकार अनेक वचन कहकर ब्रह्मा ने श्रीराम को धीरज बँधाया। धरती ने तब श्रीराम से कहा— ॥ १ ॥ श्रीराम, आपका मुझ पर क्रोध करना अनुचित है। जो ललाट में लिखा है, वह अवश्य भोगना पड़ता है। किस दोष से आपने मेरी कन्या को वनवास दिया था? यदि वनवास दिया ही

आमार निकटे कन्या तिलेक ना थाके। स्वमूर्त्ति धरिया तिनि गेलेन गोलोके
विष्णु स्थाने हइलेन आपनि कमला। नागलोके सीता सञ्चारिला एक कला ३
मर्त्ये आछे यत लोक पूजेन देवता। एक कला तथाय ये सञ्चारिला सीता
दैवयोगे सीता सञ्चारिला तिनलोक। सीतार लागिया राम, केन कर शोक ४
एइ लोके सीता-सने नाहि दरशन। वैकुण्ठे लक्ष्मीर सने हवे सम्भाषण
ये नारी स्पर्शिल सीता सेइ हैल सती। ताँहार समान नहे लक्ष्मी भगवती ५
यतेक असती नारी करे अनाचार। सेइ अनाचारे नष्ट हय त संसार
यत यदि पृथिवी रामेरे बले वाणी। हेनकाले श्रीरामेरे प्रबोधेन मुनि ६
सीतार लागिया केन करह रोदन। भालमते प्रभाते शुनिह रामायण
प्रभाते प्रभातकृत्य करि समापन। बसिलेन श्रीराम शुनिते रामायण ७
सङ्गीत शुनिते राम बसेन सभाय। रामेर तनय दुटि रामायण गाय
हाते वीणा करिया ललित गीत गाय। शुनिया सकल लोक मोहित सभाय ८
यज्ञ-अवसाने गीत छिल अवशेष। गाइते लागिल गीत ताहार बिशेष
कालपुरुषेर सने रामेर दर्शन। संसार छाड़िया राम करिवे गमन ९

था तो उसे फिर अपने यहाँ क्यों ले आये ? ॥ २ ॥ मेरी कन्या तो मेरे पास एक पल भी नहीं रही। वह तो स्व-मूर्ति (निजस्वरूप) धारण कर गोलोक में चली गयी है। वह विष्णु के स्थान में पहुँचकर लक्ष्मी बन गयी है। नागलोक में सीता ने अपनी एक कला का संचार किया है ॥ ३ ॥ मर्त्यलोक में देवताओं का पूजन करनेवाले जितने लोग हैं, (उनके लिए) वहाँ सीता अपनी एक कला संचार कर गयी है। इस प्रकार दैवयोग से सीता तीनों लोकों में संचारित हो गयी हैं। हे राम, भला आप सीता के लिए शोक क्यों कर रहे हैं ? ॥ ४ ॥ इस लोक में अब सीता के संग आपकी भेंट नहीं होगी। अब तो वैकुंठ में जाकर आप लक्ष्मी से संभाषण कर सकेंगे ! जिस नारी को सीता ने स्पर्श किया है वही सती बन गयी है। उनके समान लक्ष्मी भगवती भी नहीं है ॥ ५ ॥ असती नारियाँ जो अनाचार करती हैं, उनके उन अनाचारों से संसार नष्ट होता है। जब धरती ने रामचन्द्र से यह वचन कहा तो उसके पश्चात् मुनि (वाल्मीकि) राम को सांत्वना देते हुए बोले— ॥ ६ ॥ हे रामचन्द्र, आप सीता के लिए रुदन क्यों कर रहे हैं ? आप कल प्रातः अच्छी तरह से रामायण सुनियेगा। तब दूसरे दिन प्रातःकाल नित्यकर्म समाप्त कर श्रीरामचन्द्र रामायण सुनने बैठे ॥ ७ ॥ श्रीराम संगीत सुनने सभा में बैठे। रामचन्द्र के दोनों पुत्र रामायण गाने लगे। वे हाथों में वीणा ले ललित गीत गाने लगे। सुनकर सभा में सभी लोग मोहित हो गये ॥ ८ ॥ यज्ञ के अवसान होने पर रामायण-गीत का जो अवशेष था उसका विशेष अंश वे गाने लगे। कालपुरुष से राम की भेंट होगी, संसार छोड़कर रामचन्द्र चले जायेंगे ॥ ९ ॥ राजद्वार पर आकर दुर्वासा क्रोधित होकर रहेंगे, उस मुनि के अभिशाप से रामचन्द्र लक्ष्मण का त्याग कर देंगे।

दुर्व्वासा आसिया द्वारे रहिबेन कोपे। लक्ष्मणेरे वर्ज्जिबेन से-मुनिर शापे
स्वर्गबासे याइबेन लइया संसार। इहा विना बालमीकि ना लिखिलेन आर १०
एइ गीत शुनि राम दुःखित अन्तरे। सर्व्वलोके बिदाय करेन यज्ञ-परे
बिप्र सब तुष्ट हैल श्रीरामेर दाने। धनी हये मुनिगण गेल निज स्थाने ११
मेलानि मागिया देशे याय बिभीषण। सुग्रीब अङ्गद चले लये कपिगण
बिदाय लइया चले पृथिबीर राजा। नाना धने श्रीराम करेन सबे पूजा १२
जनक राजारे राम करेन स्तवन। यज्ञेर दक्षिणा देन बहुमूल्य धन
वाल्मीकि प्रभृति करि यत महामुनि। निजस्थाने गेल सबे करिया मेलानि १३
ब्रह्मा आदि करिया यतेक देबगण। समस्त उत्तरकाण्डे अपूर्व्व कथन
ए उत्तरकाण्डे लब-कुशेर आख्यान। कृत्तिवास गाय गीत अमृत-समान १४

श्रीरामेर बिलाप

श्रीराम देखेन शून्य सीतार बिहने। श्रीरामेर नेत्रनीर बहे रात्रिदिने
पात्रमित्र माता आर बिमाता सोदर। बिवाह करिते रामे बुझान बिस्तर १
कत स्थाने आछे कत राजार कुमारी। अनुमान करिछे दिवस बिभावरी
श्रीराम बिबाह करिबेन ए निश्चय। ना जानि के भाग्यबती रामपत्नी हय २

सारे संसार को लेकर रामचन्द्र स्वर्ग-वास हेतु गमन करेंगे। इसके पश्चात् वाल्मीकि ने और कुछ नहीं लिखा ॥ १० ॥ यह गीत सुनकर श्रीराम अन्तर् में दुःखी हो उठे। उन्होंने यज्ञ समाप्त होने पर सबको विदा की। श्रीराम के दानों से विप्रगण तुष्ट हुए। धनवान बनकर मुनिगण अपने-अपने स्थानों को चले गये ॥ ११ ॥ विभीषण भी विदा ले अपने देश गया। वानरों को लेकर सुग्रीव-अंगद चले। पृथ्वी पर के राजागण विदा लेकर चले। श्रीराम ने सबको नाना प्रकार के धन देकर पूजा की ॥ १२ ॥ रामचन्द्र ने राजा जनक का स्तवन किया। यज्ञ की दक्षिणा में बहुमूल्य धन दिया। वाल्मीकि से लेकर जितने महामुनि थे, ब्रह्मा समेत जितने देवगण थे, सब विदा ले-लेकर अपने-अपने स्थान को गये ॥ १३ ॥ सम्पूर्ण उत्तरकांड में यही अपूर्व कथा है। इस उत्तरकांड में लव-कुश का आख्यान है, कवि कृत्तिवास ने अमृत-समान यह गीत गाया है ॥ १४ ॥

श्रीराम का विलाप

सीता के बिना श्रीराम सब कुछ सूना देखने लगे। श्रीराम के आँसू दिन-रात बहने लगे। मंत्री-सामन्त, माता, विमाताएँ तथा भाई पुनर्विवाह करने हेतु श्रीराम को बहुत समझाने लगे ॥ १ ॥ कितने स्थानों में कितनी राजकुमारियाँ हैं, यह बात वे दिन-रात अनुमान लगाने लगे। (वे सोच रहे थे) श्रीराम विवाह करेंगे, यह तो निश्चित है। पता नहीं, कौन भाग्यवती रामचन्द्र की पत्नी बने ॥ २ ॥ वे निरन्तर यही बात सोचते

एइ युवित तारा सबे करे सर्व्वक्षण। विवाहे विमुख किन्तु श्रीरामेर मन
सीता सीता बलि राम करेन क्रन्दन। सीता-विना श्रीरामेर अन्य नाहि मन ३
सीता सीता बलि राम डाकेन बिस्तर। सीता नाहि, श्रीरामेर के दिबे उत्तर
स्वर्णसीता पाने राम एकदृष्टे चान। उत्तर ना पेये तार आरो दुःख पान ४
जगतेर नाथ राम एमन बिकल। ताँहार क्रन्दने लोक कान्दिल सकल
सीताके भाबिया राम छाड़ेन-निःश्वास। रचिल उत्तरकाण्ड कबि कृत्तिवास ५

केकय-देशे भरत कर्त्तृक गन्धर्ब्ब बध ओ श्रीरामादिर पुत्रगणेर राज्य-प्राप्ति

एगार हाजार वर्ष लोकेर पालन। सुखे आछे पात्रमित्र आर प्रजागण
चारि भायेर मा करे काल-अबसाने। भाण्डार बिलान राम नानाबिध दाने १
कौशल्या कैकेयी आर सुमित्रा सुन्दरी। दशरथ नृपतिर प्रिय सहचरी
क्रमे मरिलेन आर सात शत कामिनी। निजालये आनिलेन क्रमे दण्डपाणि २
दशरथ भूपतिर सङ्गे नाना मते। सुरपुरे केलि करे चड़ि दिव्य रथे
यार पुत्र भगवान् राम महामति। तार स्वर्गवासे केवा करये व्याहति ३

थे। परन्तु श्रीराम का मन विवाह से विमुख था। रामचन्द्र 'सीता, सीता' कहकर रुदन करते थे। सीता के बिना और किसी पर श्रीराम का मन नहीं था ॥ ३ ॥ श्रीराम बार-बार 'सीता-सीता' कहकर पुकारा करते थे, परन्तु सीता नहीं थी, उन्हें उत्तर कौन देता ? रामचन्द्र स्वर्ण-सीता की ओर एकटक देखते रहते। उनसे कोई उत्तर न पाकर उन्हें और भी दुःख होता था ॥ ४ ॥ जगत के नाथ राम ऐसे विकल थे कि उनके रुदन से सम्पूर्ण लोक रोने लगे। सीता की बात सोचते-सोचते राम लम्बी साँसें छोड़ते थे ! कवि कृत्तिवास ने इस उत्तरकांड की रचना की है ॥ ५ ॥

केकय देश में भरत द्वारा गंधर्व का वध और श्रीराम के पुत्रों की राज्य-प्राप्ति

श्रीरामचन्द्र ने ग्यारह हज़ार वर्ष तक लोकों का पालन किया। (उनके शासन में) मंत्री-सामन्त और सारे प्रजाजन सुख से थे। काल पूरा हो जाने पर चारों भाइयों की माताएँ स्वर्गवासी हुईं। तब रामचन्द्र ने अनेक प्रकार के दान कर अपना भंडार खाली कर दिया ॥ १ ॥ कौशल्या, कैकेयी और सुन्दरी सुमित्रा राजा दशरथ की ये प्रिय पटरानियाँ मर गयीं। और सात सौ कामिनियों को दंडपाणि यमराज क्रमशः यमलोक ले गये ॥ २ ॥ वे स्वर्गलोक में जाकर राजा दशरथ के साथ दिव्य रथों पर चढ़कर नाना प्रकार की क्रीड़ाएँ करने लगीं। जिनके पुत्र महामति भगवान रामचन्द्र हैं, उन्हें स्वर्गवास से कौन रोक सकता है ? ॥ ३ ॥ त्रेतायुग में श्रीराम-अवतार हुआ, (इससे) उनके योग्य भक्तों के लिए स्वर्ग-द्वार खुला हुआ है। मंत्रियों-सामन्तों सहित रामचन्द्र

त्रेतायुगे हइल श्रीराम अवतार। उपयुक्त भक्त-प्रति मुक्त स्वर्गद्वार
पात्रमित्र सह राम आछे राजकार्य्ये। केकये देशेर द्विज आइल से राज्ये ४
दधि दुग्ध आर मधु कलसी-कलसी। सन्देश अमृत-तुल्य आने राशि राशि
मृग पक्षी जीव-जन्तु आने यत पारे। अन्य अन्य द्रव्य यत आने भारे भारे ५
बसन भूषण आर नाना वस्त्र आने। राखिल सकल द्रव्य राम-विद्यमाने
लोमश गन्धर्व्व राज सर्व्वलोके जाने। दौरात्म्य आमार राज्ये करे रात्रिदिने ६
आपनि आसिया तार करह दमन। अथवा श्रीराम, तुमि पाठाओ नन्दन
मामार संवाद पेये राम हरषित। डाक दिया भरतेर कहेन त्वरित ७
शत्रुजित मामा मोर, के ना तांरे जाने। पाठाइल वार्त्ता एइ द्विजवर-स्थाने
तिन कोटि गन्धर्व्व से बड़इ दुर्ज्जय। तार राज्य निते चाहे, पाइ बड़ भय ८
दुइ पुत्र तोमार ये समरे प्रखर। बिक्रमे दुर्ज्जय तारा दोंहे धनुर्द्धर
गन्धर्व्व मारिया दुइ पुत्रे कर राजा। राज्य बसाइया ये पालह सुखे प्रजा ९
रामेर गन्धर्व्व-अस्त्र आछिल प्रधान। से गन्धर्व्व-अस्त्र तांरे करेन प्रदान
दुइ पुत्र लइया भरत तथा यान। धाय प्रेत पिशाच करिते रक्तपान १०
ससैन्ये भरत यान मातुलेर घरे। रहिल सामन्त सैन्ये बाटीर बाहिरे
भागिनेय देखि हरषित शत्रुजित। भोजन करिया दोंहे बसिल सहित ११

राजकार्य में लगे थे। उन्हीं दिनों केकय देश का ब्राह्मण उस राज्य में आया ॥ ४ ॥ वह घड़ों में भरकर दही, दूध और मधु तथा अमृत-तुल्य संदेश-मिठाई ढेर के ढेर; जितना हो सका मृग, पक्षी आदि जीव-जन्तु तथा भारों में भर-भरकर अन्यान्य द्रव्य भी ले आया था ॥ ५ ॥ वस्त्र-आभूषण और विभिन्न प्रकार के वस्त्र भी वह ले आया था। उसने सारी सामग्रियाँ राम के सामने रखीं। उसने कहा— गधर्वराज लोमश को सब लोग जानते हैं। वह हमारे राज्य में दिन-रात उत्पीड़न किया करता है ॥ ६ ॥ आप स्वयं चलकर उसका दमन करें, अथवा हे श्रीराम, आप अपने पुत्रों को भेजें। मामा की वार्ता पाकर राम हर्षित हुए। उन्होंने भरत को पुकारकर तुरन्त कहा— ॥ ७ ॥ मेरे मामा शत्रुजित को कौन नहीं जानता ? उन्होंने इस द्विजवर के ज़रिए यह वार्ता भेजी है। वे तीन करोड़ गंधर्व बड़े ही दुर्जेय हैं। वे गंधर्व उनका राज्य छीन लेना चाहते हैं, इससे मुझे बड़ा डर लग रहा है ॥ ८ ॥ तुम्हारे दो पुत्र तो युद्ध करने में बड़े ही निपुण हैं, वे दोनों धनुर्धर विक्रम में दुर्जेय हैं। गंधर्वों को मारकर अपने उन दोनों पुत्रों को वहाँ के राजा बनाओ। वहाँ राज्य बसाकर सुख से प्रजाजनों का पालन करो ॥ ९ ॥ गंधर्वास्त्र रामचन्द्र का प्रमुख अस्त्र था। वह गंधर्वास्त्र उन्होंने भरत को दे दिया। अपने दोनों पुत्रों को लेकर भरत वहाँ के लिए चल पड़े। वहाँ जाने पर प्रेत-पिशाच आदि उनका रक्तपान करने दौड़े आये ॥ १० ॥ भरत सेना-सहित अपने मामा के यहाँ पहुँचे। उनके सारे सामन्त एवं सैनिक मामा के भवन के बाहर ही रहे। अपने भानजे को आया देख शत्रुजित हर्षित हुआ। दोनों, भोजन के पश्चात् एक संग बैठे ॥ ११ ॥ इस प्रकार रात

एइरूपे प्रभात हइल विभावरी। तिन कोटि गन्धर्व्व आइल त्वरा करि
चारिभिते मारे शेल जाठि ओ झकड़ा। अस्त्र विन्धि पड़े भरतेर हाती घोड़ा १२
सात दिन युद्ध हैल, कारो नाहि जय। देखिया अमरगणे लागिल विस्मय
ना मरे गन्धर्व्वगण अति भयङ्कर। भरत गन्धर्व्व-अस्त्र छाड़ेन सत्वर १३
एकवाणे जन्मिल गन्धर्व्व तिन कोटि। छय कोटि गन्धर्व्व लागिल काटाकाटि १४
सहजे गन्धर्व्व जाति बड़इ दुर्नीत। ताहाते अधिक युद्ध ज्ञातिर सहित
छय कोटि गन्धर्व्व उठिल महामार। गन्धर्व्व-अस्त्रेते हय गन्धर्व्व-संहार १५
गन्धर्व्व मारिया एक देश वसाइल। दुइ पुत्रे अभिषेक भरत करिल
पुष्करेर जन्य राम दिल सेइ पुरी। पुष्कर देशेर से पुष्कर अधिकारी १६
द्वादश वत्सरे वसाइया सेइ पुरी। आइलेन श्रीभरत अयोध्यानगरी
महाह्लादे श्रीराम करेन सम्भाषण। शुनिया गन्धर्व्व-बध हरषित-मन १७
श्रीराम बलेन, योग्य भरत कुमार। दुइ भ्रातुष्पुत्रे देन राज्य-अधिकार
चन्द्रकेतु अङ्गद ए दुइ सहोदर। रामेर अज्ञाय दोँहे हैल दण्डधर १८
मल्लदेश अङ्गद, पाइल अधिकार। अश्वदेश-अधिपति चन्द्रकेतु आर
लक्ष्मणेर दुइ पुत्र हइलेक राजा। राज्य वसाइया पाले बिधिमते प्रजा १९

बीती, प्रभात हुआ। तीन करोड़ गंधर्व वहाँ शीघ्रता से आ पहुँचे। वे चारों ओर से, शूल, भाले, बरछे आदि से प्रहार करने लगे। उनके अस्त्रों से विंधकर भरत के हाथी-घोड़े गिर पड़े ॥ १२ ॥ सात दिन युद्ध हुआ, किसी की विजय नहीं हुई। यह देख देवताओं को बड़ा विस्मय हुआ। वे अति भयंकर गंधर्व मारे नही मरते थे, तब भरत ने शीघ्रता से गंधर्वास्त्र छोड़ा ॥ १३ ॥ उनके उस एक बाण से तीन करोड़ गंधर्व उत्पन्न हो गये। अब (शत्रुपक्ष के तीन करोड़ और इनके तीन करोड़) छहों करोड़ गंधर्वो में मारकाट मच गयी ॥ १४ ॥ गंधर्व-जाति के लोग यों ही स्वभाव से ही बड़े दुर्विनीत हुआ करते हैं। तिस पर यह कुटुम्बी जनों के साथ संग्राम था। (अतः वे और अधिक हिंसक हो उठे) छहों करोड़ गंधर्वो में प्रचंड मारकाट मच गयी। उस गंधर्व-अस्त्र से गंधर्वो का सहार हो गया ॥ १५ ॥ भरत ने गंधर्वो को मारकर वहाँ एक नगर वसाया और अपने दोनों पुत्रों का अभिषेक किया। रामचन्द्र ने वह पुरी पुष्कर के लिए दे दी। उस पुष्कर नामक देश का अधिकारी पुष्कर बना! ॥ १६ ॥ बारह वर्ष में उस पुरी को वसाकर भरत अयोध्या नगरी को लौटे। रामचन्द्र ने बड़ी ही प्रसन्नता से उनसे संभाषण किया; और उनसे गंधर्वो के वध का विवरण सुन वे मन में हर्षित हुए ॥ १७ ॥ श्रीराम ने कहा, भरत के कुमार बड़े योग्य हैं, उन दोनों भतीजों को उन्होने राज्याधिकार प्रदान किया। चन्द्रकेतु और अंगद दोनों सहोदर राम की आज्ञा से दडधर राजा बने ॥ १८ ॥ अंगद को मल्ल देश का अधिकार दिया गया, और चन्द्रकेतु को अश्व देश का अधिपति बनाया गया। लक्ष्मण के दोनों पुत्र राजा बने। वे राज्य को वसाकर विधिवत्

शत्रुघ्नेर दुइ पुत्र परमसुन्दर। शत्रुघाती सुबाहु ए दुइ सहोदर
चारि भायेर अष्ट पुत्र हैल महामति। शत्रुघ्नेर दुइ पुत्र मथुराधिपति २०
लव-कुश पाइल अयोध्या नन्दीग्राम। अष्ट जने अष्ट राज्य दिलेन श्रीराम
एगार हाजार वर्ष रामेर पालने। सुखे आछे पात्रमित्र-आदि सर्व्वजने २१
कृत्तिबास-कवित्व अमृते आलोड़ित। गाइल उत्तरकाण्डे रामेर चरित·

अयोध्याय कालपुरुषेर आगमन ओ लक्ष्मण-वर्ज्जन

परे कालपुरुष से संसारविनाशी। अयोध्याय प्रवेशिल हइया संन्यासी १
सभाते वसिया राम, दुयारी लक्ष्मण। यथारीति वसियाछे पात्रमित्रगण
हेनकाले आसि कालपुरुष वलिल। आमि ब्रह्मार ये दूत, ब्रह्मा पाठाइल २
लक्ष्मण रामेर काछे कर निवेदन। ताँहार सहित आछे कथोपकथन
श्रीरामेर काछे गिया लक्ष्मण सम्भ्रमे। योड़हात करि तवे जानान श्रीरामे ३
आइल ब्रह्मार दूत द्वारे आचम्बिते। आज्ञा कर रघुनाथ, उचित आनिते
श्रीराम वलेन, आन करि पुरस्कार। किहेतु आइल दूत जानि समाचार ४
पाइया रामेर आज्ञा लक्ष्मण सत्वर। कालपुरुषेरे निल रामेर गोचर
पाद्य-अर्घ्य दिया राम दिलेन आसन। योड़हस्ते जिज्ञासेन, कह प्रयोजन ५

प्रजा का पालन करने लगे ॥ १९ ॥ शत्रुघ्न के परम-सुन्दर दो पुत्र थे, शत्रुघाती और सुबाहु; ये दोनों सहोदर थे। चारो भाइयों के आठों पुत्र महा मतिमान् थे। शत्रुघ्न के दोनों पुत्र मथुरा के अधिपति बने ॥ २० ॥ लव-कुश को अयोध्या और नन्दीग्राम का राज्य मिला। इस प्रकार आठों को रामचन्द्र ने आठ राज्य दिये। श्रीराम ने ग्यारह हज़ार वर्ष प्रजा-पालन किया। उनके शासन में मित्र-सामन्त आदि सभी जन बड़े सुख में थे ॥ २१ ॥ कवि कृत्तिवास की कवित्व-शक्ति अमृत से आप्लावित है। उन्होंने उत्तरकांड में राम-चरित का गान किया है।

अयोध्या में कालपुरुष का आगमन तथा लक्ष्मण का त्यागा जाना

इसके पश्चात् संसार का विनाश करनेवाले कालपुरुष ने अयोध्या में संन्यासी का वेश धारण कर प्रवेश किया ॥ १ ॥ रामचन्द्र सभा में बैठे हुए थे, लक्ष्मण उनके द्वारपाल थे। सभी मंत्री एवं सामन्त यथारीति बैठे हुए थे। उसी समय काल-पुरुष ने आकर कहा— मैं ब्रह्मा का दूत हूँ, मुझे ब्रह्मा ने भेजा है ॥ २ ॥ हे लक्ष्मण, रामचन्द्र से तुम निवेदन करो, उनके संग मुझे वार्ता करनी है। लक्ष्मण ने श्रीराम के पास जाकर सम्मानपूर्वक हाथ जोड़कर यह बात सूचित की ॥ ३ ॥ ब्रह्मा का दूत अकस्मात् द्वार पर आया हुआ है, हे रघुनाथ, उसे लाना उचित है, आप आज्ञा दें। श्रीराम बोले, उस दूत को सम्मानपूर्वक ले आओ, वह दूत किसलिए आया है, इसका समाचार मैं जानना चाहता हूँ ॥ ४ ॥ राम की आज्ञा पाकर लक्ष्मण शीघ्र कालपुरुष को राम के सम्मुख ले

से कालपुरुष वले, शुनह वचन। ये-कथा कहिव पाछे शुने अन्य जन
ए समये ये करिवे हेथा आगमन। ब्रह्मार वचने तारे करिवे वर्ज्जन ६
एइ सत्य ब्रह्मार ये करिवे पालन। द्वाररक्षा हेतु तबे राख एकजन
श्रीराम वलेन, शुन प्राणेर लक्ष्मण। सावधाने थाक, ना आइसे कोन जन ७
अधिक कि कहिव, ये द्वारपाने चाय। ताहारे त्यजिव आमि, जानिह निश्चय
एइ सत्य करिलाम दूतेर गोचरे। सावधाने लक्ष्मण, रहिवा तुमि द्वारे ८
विधातार निर्व्वन्ध ये ना याय खण्डन। कालपुरुषेर सङ्गे हय सम्भाषण
से कालपुरुष वले, परिचय करि। मर्त्त्येते रहिले, शून्य वैकुण्ठनगरी ९
संसारेर लोक नाशि मोर दूते आने। तोमारे लइते आमि आइनु आपने
ब्रह्मार वचन राम, कर अवधान। संसार छाडिया तुमि चल निज स्थान १०
एगार हाजार वर्ष अवतार करि। भुलिया रहिला प्रभु, येमन संसारी
रहिवार योग्य नहे मर्त्त्येर भितर। आमारे कि आज्ञा राम वलह सत्वर ११
श्रीराम वलेन, यम, ये कह एखन। संसार छाड़िया आमि करिव गमन
दैवेर निर्व्वन्ध आछे, ना याय खण्डन। ब्रह्मार मायात दुर्व्वासार आगमन १२

गये। रामचन्द्र ने उसे पाद्य-अर्घ्य देकर बैठने का आसन दिया और हाथ जोड़कर पूछा— आपके आने का प्रयोजन क्या है ? वताइये ॥ ५ ॥ उस कालपुरुष ने कहा, रामचन्द्र, मेरे वचन सुनें। मैं जो वात कहने आया हूँ, उसे कही दूसरा कोई सुन न ले। आपसे वात करने के समय जो यहाँ आ जाए, ब्रह्मा के कहे अनुसार आप उसका त्याग कर दें ॥ ६ ॥ ब्रह्मा की दी हुई यह शपथ जो पालन करे, ऐसे व्यक्ति को आप द्वार पर नियत करें। श्रीराम बोले, प्राणप्रिय लक्ष्मण, सुनो, तुम सावधान रहना, जिससे कोई व्यक्ति यहाँ आ न सके ॥ ७ ॥ और अधिक क्या कहूँ, जो व्यक्ति मेरे इस द्वार की ओर देख भी लेगा, यह निश्चय जान लो कि उसे भी मैं परित्याग कर दूंगा। मैं दूत के सम्मुख यह प्रतिज्ञा कर रहा हूँ। अतः लक्ष्मण, तुम द्वार पर सावधानी से रहना ॥ ८ ॥ विधाता का लेख खंडन नहीं किया जा सकता। कालपुरुष के साथ रामचन्द्र वार्ता करने लगे। कालपुरुष ने रामचन्द्र को अपना परिचय देकर कहा, आप मर्त्य-लोक में रह रहे हैं, उधर वैकुंठपुरी सूनी पड़ी है ॥ ९ ॥ संसार के लोगों का विनाश कर मेरे दूत ही यहाँ से ले जाया करते हैं, पर आपको ले जाने हेतु मैं स्वयं आया हूँ। हे रामचन्द्र, आप ब्रह्मा का वचन सुनिए। (उन्होंने कहा है—) संसार को छोड़कर अव आप अपने स्थान को चलें ॥ १० ॥ हे प्रभु, अपने अवतार लेने के वाद (राज्याभिषेक के पश्चात्) ग्यारह हज़ार वर्ष तक आप भी संसारी-पुरुषों की भाँति भूले रहे। मर्त्यलोक में अव आपका रहना उचित नहीं है। (कालपुरुष ने कहा—) हे राम, अव आप मुझे कौन-सी आज्ञा देते है, शीघ्र कहिए ॥ ११ ॥ श्रीराम बोले, यमराज, आप अभी जो कह रहे है, (उसके अनुसार) मैं संसार छोड़कर चला जाऊँगा। दैव ने जो लिखा है,

सभा करि द्वारे बसि आछेन लक्ष्मण। मुनि बले, गिया करि राम सम्भाषण
लक्ष्मण बलेन, कृपा कर दास ब'ले। ब्रह्मार दूतेर सने आछेन विरले १३
ये कर्म्म साधिबे करि राम-सम्भाषण। आज्ञा कर, साधि आमि सेइ प्रयोजन
कुपिल दुर्व्वासा मुनि लक्ष्मणेर प्रति। लक्ष्मणेर पाने चाहि कहे कोपमति १४
लक्ष्मण, आमार शापे कार बापे तरि। शाप दिया पोड़ाइ अयोध्यानगरी
यत राज्यखण्ड आजि करिब संहार। पोड़ाइया अयोध्याय करिब छारखार १५
बालक-बनिता-बृद्ध आजि करि ध्वंस। दशरथ भूपतिरे करिब निर्व्वंश
देखिया मुनिर कोप लक्ष्मणेर त्रास। भावेन, आमार लागि हय सर्व्वनाश १६
बुझि राम करिवेन आमारे वर्ज्जन। एड़ाइते नारि आमि ललाट-लिखन
बर्ज्जन मरण दुइ एकइ प्रकार। आमा-हेतु बंश केन हइबे संहार १७
आमारे बर्ज्जिले आमि मरि एकजन। पितृबंश नाश करि किसेर कारण
पूर्व्वकथा लक्ष्मणेर पड़िलेक मने। ए वर्ज्जन सुमन्त्र कहिल तपोवने १८
कालपुरुषेर सङ्गे रामेर कथन। मुनिरे लइया तथा गेलेन लक्ष्मण
कालपुरुषेरे राम करिया बिदाय। प्रणाम करेन राम मुनि दुर्व्वासाय १९

उसका खंडन नहीं किया जा सकता। ब्रह्मा की माया से तभी वहाँ मुनि दुर्वासा का आगमन हुआ ॥ १२ ॥ लक्ष्मण सभा-गृह के द्वार पर बैठे हुए थे। मुनि ने कहा, मैं अभी जाकर राम से वार्ता करूँगा। लक्ष्मण बोले, अपना दास समझकर आप हम पर कृपा करें। श्रीराम अभी ब्रह्मा के दूत के संग एकान्त में चर्चा कर रहे है ॥ १३ ॥ राम से वार्ता कर आप जो कार्य करना चाहते हैं, आप मुझे आज्ञा दें, मैं वह प्रयोजन सिद्ध कर दूँ। तब मुनि दुर्वासा लक्ष्मण पर कुपित हो उठे। वे कोप-मति होकर लक्ष्मण की ओर देखने लगे ॥ १४ ॥ लक्ष्मण, मेरे अभिशाप से बच सके, ऐसी शक्ति किसके बाप की है ? मैं शाप देकर अयोध्यापुरी को भस्म कर डालूँगा। समूचे राज्यखंड को मैं आज संहार कर डालूँगा। अयोध्यापुरी को जलाकर भस्म-शेष कर डालूँगा ॥ १५ ॥ आज बालक-नारी-वृद्ध सबको ध्वंस कर राजा दशरथ को निर्वंश कर डालूँगा। मुनि का कोप देखकर लक्ष्मण को बड़ा त्रास हुआ। सोचने लगे, मेरे ही कारण अब सर्वनाश होनेवाला है ॥ १६ ॥ जानता हूँ कि (आज्ञा का उल्लंघन होने पर) श्रीराम मुझे त्याग देंगे मगर भाग्य-लेख तो मैं मिटा नहीं सकता। चाहे त्याग देना हो, या मृत्यु हो, दोनों बराबर हैं। मेरे लिए वंश का संहार भला क्यों हो ? ॥ १७ ॥ रामचन्द्र यदि मुझे त्याग दें, तो केवल एक मैं ही मरूँगा। फिर मैं पितृवंश का नाश क्यों करूँ ? तब लक्ष्मण को पूर्व कथा स्मरण हो आयी। सुमन्त्र ने उनके परित्याग की बात तपोवन में बताई थी ॥ १८ ॥ अन्त में जहाँ रामचन्द्र कालपुरुष के संग वार्ता कर रहे थे, लक्ष्मण मुनि को लेकर वहाँ गये। तब रामचन्द्र ने कालपुरुष को विदा दे, मुनि दुर्वासा को प्रणाम किया ॥ १९ ॥ राम ने विनयपूर्वक पूछा— आप किस प्रयोजन से

विनये बलेन राम, कोन् प्रयोजन। दुर्व्वासा बलेन, चाहि उचित भोजन
एक वर्ष करियाछि आमि अनाहार। देह अन्न व्यञ्जन ये अमृत-सुसार २०
दुर्व्वासार कथाय रामेर हैल हास। एक वर्ष केमने करिले उपवास
श्रीराम बलेन, मुनि, ए नहे कारण। अनुमाने बुझि हे मजिल पुरीजन २१
भोजन दिलेन राम अमृत-सुसार। भोजन करिया मुनि गेल निजागार
श्रीराम बलेन, मुनि पाड़िल प्रमाद। केमने वर्ज्जिव भाइ, करेन विषाद २२
कालपुरुषेर सङ्गे आलाप यखन। दुर्व्वासार सङ्गे गेल लक्ष्मण तखन
सत्य यदि लङ्घिब, तबे व्यर्थ ए जीवन। सत्य पालि यदि, हय लक्ष्मण-वर्ज्जन २३
लक्ष्मणे वर्ज्जिते राम अत्यन्त विकल। वशिष्ठ-नारद आदि डाकेन सकल
केमने करेन राम सत्येर पालन। सभामध्ये श्रीराम कहेन विवरण २४
श्रीराम बलेन, सीता आर राज्य धन। इहार अधिक मोर भाइ ये लक्ष्मण
सकलि त्यजिते पारि जानकी सुन्दरी। लक्ष्मण-बिहने आमि रहिते ना पारि २५
मुनिगण बले राम, कि भाविछ मने। सत्य यदि पाल, तबे वर्ज्जह लक्ष्मणे
यदि सत्य लङ्घ हय, व्यर्थ ए जीवन। लक्ष्मण वर्ज्जिया कर सत्येर पालन २६

पधारे हैं? दुर्वासा बोले— मुझे उचित भोजन चाहिए। मैं एक वर्ष उपवासी रहा हूँ। अब मुझे ऐसा अन्न-व्यंजन दें जो अमृत-तुल्य उत्तम सार वाला हो ॥ २० ॥ दुर्वासा की बात पर रामचन्द्र को हँसी आ गयी। मुनि, आपने एक वर्ष उपवास कैसे किया? श्रीराम बोले— मुनिवर, (आपके आगमन का) यह कारण नहीं है। मैं अनुमान से समझ गया हूँ, अब सारे नगरवासी डूब गये। (उनका विनाश हो जायेगा) ॥ २१ ॥ मुनि भोजन कर अपने निवास को चले गये। श्रीराम ने कहा, मुनि ने संकट में डाल दिया। वे विषाद करने लगे, भाई लक्ष्मण को कैसे तज दूं? ॥ २२ ॥ मैं जब कालपुरुष के संग वार्ता कर रहा था, लक्ष्मण उस समय वहाँ दुर्वासा के साथ गया। यदि मैं सत्य का उल्लंघन करता हूँ, तब तो यह जीवन व्यर्थ है। यदि मैं सत्य का पालन करूँ, तो लक्ष्मण का त्याग करना पड़ना है ॥ २३ ॥ लक्ष्मण को त्यागने (की बात) से रामचन्द्र अत्यन्त व्याकुल हो उठे। उन्होंने वशिष्ठ, नारद आदि सभी को बुलाया। राम सत्य का पालन कैसे करें; (इसका उपाय जानने के लिए) श्रीराम ने सभा में सारा विवरण कह सुनाया ॥ २४ ॥ श्रीराम बोले, सीता तथा राज्य व धन इनकी अपेक्षा मेरा भाई लक्ष्मण अधिक है। सुन्दरी जानकी समेत मैं सब कुछ तज सकता हूँ। पर लक्ष्मण को छोड़कर मैं रह नहीं सकता ॥ २५ ॥ मुनियों ने कहा, रामचन्द्र, आप मन में क्या सोच रहे हैं? यदि आप सत्य का पालन करें तो लक्ष्मण का त्याग कर दें। यदि सत्य का उल्लंघन हो, तो यह जीवन व्यर्थ है। लक्ष्मण को त्यागकर आप सत्य का पालन करें ॥ २६ ॥ सत्य-हेतु आपके पिता ने आप-जैसे पुत्र का त्याग कर दिया था। सत्य का पालन कर वे मरकर स्वर्गराज्य में गये। आप

सत्य हेतु तव पिता तोमा-पुत्रे बर्ज्जे । सत्य पालि मरिया गेलेन स्वर्गराज्ये
छत्रदण्डधर तुमि, हैल अधिवास । पितृसत्य पालिते ये गेले बनबास २७
अग्निशुद्धा एड़ तुमि परमासुन्दरी । सीता एड़ि राज्य एड़ हये ब्रह्मचारी
ए सब बर्ज्जिते राम, ना कर मन्त्रणा । लक्ष्मणे बर्ज्जिते केन एत आलोचना २८
हेनकाले श्रीरामेरे बलेन लक्ष्मण । आमारे बर्ज्जिया कर सत्येर पालन
यदि सत्य लङ्घ, तबे बड़ अनाचार । तुमि सत्य लङ्घिले मजिबे ए संसार २९
यत किछु आजि राम, आमार कारण । बुझिबे तोमार माया बल कोन् जन
संसार छाड़िले राम, घुचे मायामोह । दुइ भाइ कोलाकुलि, चक्षे पड़े लोह ३०
सभाय बलेन राम, बर्ज्जिनु लक्ष्मण । लक्ष्मण-पश्चाते आमि करिब गमन
शुनि सर्व्बलोकेर चक्षेते पड़े पानी । चलिल लक्ष्मण बीर करिया मेलानि ३१
एड़ेन हातेर बेत्र गात्र-आभरण । श्रीरामेरे प्रदक्षिण करिला लक्ष्मण
बन्दिलेन बशिष्ठ ओ नारद-चरण । आर यत बन्दिलेन कुलेर ब्राह्मण ३२
भरतेर पदद्वय करेन बन्दन । भरत कातर अति करेन क्रन्दन
प्रजा-समूहेर प्रति कहेन लक्ष्मण । सम्प्रीतिते बिदाय करह प्रजागण ३३

छत्र-दंडधारी थे, आपका दूसरे दिन अभिषेक होनेवाला था, परन्तु पिता के सत्य का पालन करने हेतु आप वन में गये ॥ २७ ॥ अग्निशुद्धा परम सुन्दरी सीता को आपने त्याग दिया, सीता को त्यागकर, राज्य को त्याग आप ब्रह्मचारी बने रहे । इन सबका त्याग करने के समय, रामचन्द्र, आपने कोई मंत्रणा नहीं की । तब लक्ष्मण का त्याग करने में इतना विचार-विमर्ष क्यों कर रहे हैं ? ॥ २८ ॥ तभी लक्ष्मण ने श्रीराम से कहा— आप मुझे त्याग कर सत्य का पालन करें । यदि आप सत्य का उल्लंघन करें तो यह बड़ा अनाचार होगा । आप यदि सत्य का उल्लंघन करें तो सारा संसार डूब जायेगा ! (कोई सत्य का पालन नहीं करेगा, संसार में सब अनाचारी बन जायेंगे ।) ॥ २९ ॥ रामचन्द्र, जो कुछ आज मेरे कारण हुआ है (वह आपकी ही माया है), आपकी वह माया, कहिये, कौन समझ सकता है ? हे रामचन्द्र, संसार छोड़ने पर सारे माया-मोह नष्ट हो जाते हैं । तब दोनों भाई परस्पर आलिंगन करने लगे, उनकी आँखों से आँसू बहने लगे ॥ ३० ॥ रामचन्द्र ने सभा में कहा— मैं लक्ष्मण का त्याग कर रहा हूँ । लक्ष्मण के पश्चात् मैं भी गमन करूँगा । यह सुनकर सबकी आँखों से आँसू गिरने लगे । वीर लक्ष्मण विदा लेकर चल पड़े ॥ ३१ ॥ उन्होंने अपने हाथ का बेंत का दंड रख दिया, शरीर के आभूषण उतार दिये, और श्रीराम की प्रदक्षिणा की । लक्ष्मण ने वशिष्ठ और नारद की चरण-वंदना की तथा कुल के सभी ब्राह्मणों का वंदन किया ॥ ३२ ॥ उन्होंने भरत के चरणों की वंदना की । भरत अत्यन्त कातर होकर रुदन करने लगे । लक्ष्मण प्रजाजनों से कहने लगे— हे प्रजाजनो, आप लोग मुझे प्रेमपूर्वक विदा दें ॥ ३३ ॥ प्रजा-जन कहने लगे— लक्ष्मणजी, सुनिये, आपके बिना हम भला जीवन धारण

प्रजागण बले, शुन ठाकुर लक्ष्मण। तोमा-बिना केमने धरिव ए जीवन
लक्ष्मण रामेर पदे करेन प्रणति। जन्मे-जन्मे थाके येन भकित तोमा-प्रति ३४
लक्ष्मणेर वाक्ये राम हइया कातर। अचेतन हइलेन, नाहिक उत्तर
पात्रमित्र-प्रति वीर करिया मेलानि। चाहिया सबार पाने-वक्षे पड़े पानि ३५
राज्यखण्ड आदि करि सह-सर्व्वजन। सरयु नदीर तीरे करेन गमन
प्रार्थना करेन तांरे करिया प्रणाम। आमाते प्रसन्न येन थाकेन श्रीराम ३६
सरयुर स्रोत बहे अति खरशान। लक्ष्मण नामिया स्रोते त्यजिलेन प्राण
नरदेह परिहरि गेलेन गोलोक। अयोध्या नगरे तवे बाड़े महाशोक ३७
हाहाकार रोदन उठिल चतुर्द्दिक। विलाप करेन राम, वर्णिते अधिक
आमारे एड़िया कोथा गेले हे लक्ष्मण। तोमा-विना ना राखिव विफल जीवन ३८
सीतारे बर्ज्जिनु आमि लोक अपवादे। तोमारे वर्ज्जिनु भाइ, कोन् अपराधे
लक्ष्मण-वर्ज्जने मोर मिथ्या ए संसार। लक्ष्मण-समान भाइ ना पाइव आर ३९
लक्ष्मण-विहने आमि थाकि कि कुशले। ये जले ना मिल भाइ नामिव से जले
ये दिके लक्ष्मण गेल, उत्तर से दिक्। लक्ष्मण-विहने प्राण राखाइ ये धिक् ४०
करिला विस्तर सेवा हइया सदय। वर्ज्जिनु तोमारे आमि हइया निर्द्दय
लक्ष्मणेर मरणे कातर प्राण अति। छत्रदण्ड धरिते ना-पान रघुपति ४१

कैसे करें ? लक्ष्मण ने राम के चरणों में सिर नवाया, और कहा— जैसे जन्म-जन्म में आपके प्रति मेरी भक्ति रहे ॥ ३४ ॥ लक्ष्मण के वचन से रामचन्द्र कातर हो उठे, वे अचेत हो गये, कोई उत्तर नहीं दिया। मंत्रियों-सामंतों आदि से विदा माँगकर वीर लक्ष्मण ने सबकी ओर देखा, उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे ॥ ३५ ॥ समूचे राज्य-खंड के सभी जनों के साथ वे सरयू नदी के तट पर गये। सरयू को प्रणाम कर उनसे प्रार्थना की, श्रीराम जैसे मुझ पर प्रसन्न रहें ॥ ३६ ॥ सरयू का प्रवाह बड़े वेग से प्रवाहित हो रहा था। उस धारा में उतरकर लक्ष्मण ने अपने प्राण तज दिये। नरदेह त्यागकर वे गोलोक में चले गये। तब अयोध्या नगर में महाशोक बढ़ गया ॥ ३७ ॥ चारों ओर हाहाकार और रुदन होने लगा। रामचन्द्र विलाप करने लगे, जिसका वर्णन करना बाहुल्य है। हे लक्ष्मण, तुम मुझे छोड़कर कहाँ चले गये ? तुम्हारे बिना अब मैं अपना यह विफल जीवन नहीं रखूँगा ॥ ३८ ॥ लोकापवाद के कारण मैंने सीता का परित्याग किया था, पर भाई, तुम्हें किस अपराध से मैंने त्यागा है ? लक्ष्मण के त्यागने के कारण मेरा यह संसार मिथ्या हो गया है। लक्ष्मण जैसा भाई अब मुझे नहीं मिलेगा ॥ ३९ ॥ लक्ष्मण के बिना क्या मैं कुशलपूर्वक रह सकता हूँ ? भाई लक्ष्मण, जिस जल में उतरा है मैं उसी जल मे उतरूँगा। जिस दिशा में भाई लक्ष्मण गया है, वह उत्तर-दिशा है (देवलोक है)। लक्ष्मण के बिना मेरा प्राण रखना ही धिक्कार है ॥ ४० ॥ हे भाई, तुमने सदय बनकर मेरी बड़ी सेवा की; और मैंने निर्दय बनकर तुम्हारा परित्याग कर दिया। लक्ष्मण के मरण से जिनके प्राण अत्यन्त कातर हो रहे थे, वे रघुनाथजी, छत्र-दंड

भरते करिते राजा श्रीरामेर मति। भरत कहेन किछु श्रीरामेर प्रति
एतकाल नाना सुख करिलाम राम। याइते तोमार सङ्गे एवे मनस्काम ४२
भरतेर कथा शुनि श्रीराम उदास। हेंटमाथा करि राम छाड़ेन निःश्वास
श्रीराम बलेन, शुन आमार उत्तर। आनिते शत्रुघ्ने दूत पाठाओ सत्वर ४३
रामेर आज्ञाय दूत पाठाइल त्वरा। तिन दिवसेते गेल नगर मथुरा
शत्रुघ्नेर ठाँइ दूत कहे काने काने। याइवे सकल लोक श्रीरामेर सने ४४
भरतादि करिया यतेक पुरजन। श्रीरामेर सङ्गे स्वर्गे करिवे गमन
रामेर बर्ज्जने छाड़े लक्ष्मण शरीर। लक्ष्मण-बर्ज्जने राम हलेन अधीर ४५
महाराज शत्रुघन, ना भाविह मने। सत्वर चलह तुमि राम-सम्भाषणे
एत शुनि शत्रुघन करे हेंटमाथा। पात्रमित्रे आनिया कहेन सब कथा ४६
पुत्र सुबाहुरे करे मथुराय राजा। सावधाने पालिते कहेन सब प्रजा
दुइ पुत्र प्रति राज्य करि समर्पण। अयोध्याय करिलेन यात्रा शत्रुघन ४७
तिन दिवसेते आसि अयोध्यानगरी। प्रणाम करेन श्रीरामेर पद धरि
शत्रुघ्ने देखिया राम हरषित-मन। पुनश्च रामेर पद वन्दे शत्रुघन ४८
तोमार चरण-बिना नाहि आर गति। स्वर्गबासे याब प्रभु, तोमार संहति
योड़हस्ते श्रीरामे कहेन सर्व्वलोके। तोमार प्रसादे राम, स्वर्ग याव सुखे ४९

धारण करना नहीं चाहते थे ! ॥ ४१ ॥ भरत को राजा बना देने का विचार रामचन्द्र का हुआ। तब भरत ने श्रीराम से कहा— हे रामचन्द्र, इतने समय तक हमने नाना प्रकार के सुख भोगे। अब मेरी मनोकामना आपके संग जाने की है ॥ ४२ ॥ भरत की बात सुन श्रीराम उदास हो गये। सिर झुकाकर उन्होंने लम्बी साँस ली। श्रीराम बोले, मेरा उत्तर सुनो ! तुम शत्रुघ्न को लाने के लिए तुरन्त दूत भेजो ! ॥ ४३ ॥ राम के आदेश से उन्होंने तुरन्त दूत को भेजा। वह दूत तीन दिन में मथुरा नगर पहुँचा। उस दूत ने शत्रुघ्न से कानोंकान कहा— सभी लोग श्रीराम के संग (परलोक) जानेवाले हैं ॥ ४४ ॥ भरत आदि समेत जितने पुरजन हैं, वे सभी रामचन्द्र के संग स्वर्गगमन करेंगे ! राम के त्याग देने के कारण लक्ष्मण ने अपना शरीर तज दिया है। लक्ष्मण के त्यागने के कारण रामचन्द्र अधीर हो उठे हैं ॥ ४५ ॥ महाराज शत्रुघ्न, आप मन में सोच-विचार न करें। आप तुरंत रामचन्द्र से वार्ता करने चलें। यह सुनकर शत्रुघ्न ने सिर झुका लिया। मंत्रियों-सामन्तों को बुलाकर सारी बातें कहीं ॥ ४६ ॥ उन्होंने पुत्र सुबाहु को मथुरा का राजा बनाया। और सारी प्रजा का पालन सावधानी से करने को कहा। अपने दोनों पुत्रों को राज्य सौंपकर शत्रुघ्न ने अयोध्या के लिए प्रस्थान किया ॥ ४७ ॥ वे तीन दिन में अयोध्यापुरी आ पहुँचे तथा श्रीराम के चरण पकड़कर प्रणाम किया। शत्रुघ्न को देखकर राम का मन हर्षित हुआ। शत्रुघ्न ने पुनः रामचन्द्र की चरण-वन्दना की ॥ ४८ ॥ उन्होंने कहा— आपके चरणों के बग़ैर हमारी और कोई गति नहीं है। हे प्रभु, आपके संग हम भी स्वर्ग-वास हेतु चलेंगे। श्रीराम को हाथ जोड़ सभी

तोमार जीबने राम सबार जीबन। तोमार मरणे प्रभु, सबार मरण
शुनिया श्रीराम करिलेन अङ्गीकार। आमार सहित चल, बाञ्छा थाके यार ५०
जीबनेर आशा छाड़ि सबार ए आश। श्रीरामेर सङ्गे गिया करे स्वर्गबास
तिन कोटि राक्षसे आइल बिभीषण। सुग्रीव अङ्गद एल सह कपिगण ५१
नल नील आइल से मन्त्री जाम्बुवान। महेन्द्र देवेन्द्र एल वीर हनूमान
आर यत लोक छिल अयोध्यानगरे। यत यत लोक छिल पृथिवी-भितरे ५२
स्त्री-पुरुष एल सबे अयोध्यानगरे। बाल-वृद्ध, आदि केह नाहि रहे घरे
रामेर निकटे एल सबे शीघ्रगति। योड़हात करि सबे रामे करे स्तुति ५३
कतबार देखिलाम देव त्रिलोचन। कत शत देखिलाम सिद्ध ऋषिगण
गन्धर्व्वेर गीत शुनिलाम मनोहर। विद्याधरी नृत्य करे देखिनु बिस्तर ५४
तोमार बिहने राम, थाकि कोन् सुखे। तोमार पश्चाते मोरा याब स्वर्गलोके
पृथिबीर यत लोक करे योड़हात। एके एके सबारे बलेन रघुनाथ ५५
श्रीराम बलेन, शुन राजा बिभीषण। मम सङ्गे नहे तव स्वर्गेते गमन
हइया लङ्कार राजा थाक चारियुगे। आर किछु ना बलिह आजि मोर आगे ५६
शुन बलि तोमारे ये पवननन्दन। मम सङ्गे नहे तव स्वर्गेते गमन
याबत आमार नाम थाकिबे संसारे। यतकाल चन्द्र-सूर्य्य जगते प्रचारे ५७

लोगों ने कहा— हे रामचन्द्र, हम सब आपके प्रसाद से सुख-पूर्वक स्वर्ग-लोक को चलेंगे ॥ ४९ ॥ हे रामचन्द्र, आपके जीवन से ही हम सबका जीवन है। प्रभु, आपके मरण से हम सबका मरण है। यह बात सुनकर रामचन्द्र ने स्वीकार कर लिया। बोले, जिसे स्वर्ग जाने की इच्छा हो हमारे संग चलो ॥ ५० ॥ जीवन की आशा छोड़कर सबकी यही आशा थी कि श्रीराम के संग जाकर स्वर्गलोक में निवास करें। तीन करोड़ राक्षसों के संग विभीषण आया। सुग्रीव-अंगद समेत सभी वानर आये ॥ ५१ ॥ नल, नील, मंत्री, जाम्बवान्, महेन्द्र, देवेन्द्र तथा वीर हनुमान आये। अयोध्या नगर में और जितने सारे लोग थे, धरती पर जितने लोग थे ॥ ५२ ॥ सभी स्त्री-पुरुष अयोध्या नगर में आये। बालक-वृद्ध आदि कोई भी घर में नहीं रहा। सभी शीघ्रता से रामचन्द्र के पास आये। सबने हाथ जोड़कर राम की स्तुति की ॥ ५३ ॥ हे रामचन्द्र, हमने कितनी बार 'देव' त्रिलोचन (शंकरजी) को देखा है, कितने सैकड़ों सिद्धों-मुनियों को देखा है, कितने ही गंधर्वों के मनोहर गीत सुने हैं, विद्याधरियों को नृत्य करते भी बहुत देखा है ॥ ५४ ॥ पर हे राम, आपके बिना हम किस सुख से यहाँ रहें ! आपके पीछे-पीछे हम भी स्वर्गलोक को चलेंगे। संसार के सभी लोगों ने हाथ जोड़ लिया। तब रामचन्द्र एक-एक कर सबसे कहने लगे— ॥ ५५ ॥ श्रीराम ने कहा— राजा विभीषण, सुनो, मेरे साथ तुम्हें स्वर्ग नहीं जाना है। तुम चार युगों तक लंका के राजा बनकर रहो। आज मेरे सामने तुम और कुछ न कहना ॥ ५६ ॥ पवननन्दन, तुमसे कहता हूँ। सुनो, मेरे संग तुम्हें स्वर्ग में नहीं जाना है। जब तक मेरा नाम संसार में रहेगा, जब तक

तावत था कह तुमि हइया अमर। तोमार प्रसादे मुक्त हबे चराचर
हनूमान बले, नाहि चाहि स्वर्गबास। तोमार ये गुण शुनि, एइ अभिलाष ५८
श्रीराम, तोमार नाम हइबे येखाने। सेइखाने सुस्थिर थाकिब रात्रिदिने
हनू-प्रति बलेन श्रीकमल-लोचन। तुमि आमि एक देह करिबा गणन ५९
आमा भक्त कपि तुमि, परम सुस्थिर। येइ तुमि, सेइ आमि, एकइ शरीर
ब्रह्मार बरेते चारियुगे चिरजीवी। आमार बरेते तुमि पालह पृथिवी ६०
शुन बलि महाज्ञानी मन्त्री जाम्बुबान। चारियुग स्थायी तुलि ब्रह्मार कल्याण
आरबार हौक तब प्रथम यौवन। तोमारे जिनिते ना पारिबे कोनजन ६१
आरबार आमि यदि हइ अबतार। तब सङ्गे देखा तबे हइबे आमार
आर यत मनुष्य आसुक मोर सने। स्वर्गबासे याइते याहार थाके मने ६२
दिलेन श्रीराम लव-कुशे छत्रदण्ड। हाते हाते समर्पण यत राज्यखण्ड
हनूमान जाम्बबान, महेन्द्र बानर। लब-कुश सने देन करिया दोसर ६३
बिभीषणे आनि राम करेन अर्पण। लव-कुशे राजा करि करेन गमन

श्रीराम, भरत ओ शत्रुघ्नेर बैकुण्ठे गमन

सुयात्रा करिया राम छाड़ेन राम संसार। राम गेला पृथिवी हइल अन्धकार १

सूर्य-चन्द्र जगत में विचरण करते रहेंगे, ॥ ५७ ॥ तब तक तुम अमर बनकर रहो, तुम्हारे अनुग्रह से चराचर को मुक्ति मिलती रहेगी। हनुमान बोले, मुझे स्वर्ग में निवास मिले, यह मैं नहीं चाहता ! मेरी यही अभिलाषा है कि आपका गुण-गान सुनता रहूँ ॥ ५८ ॥ श्रीरामजी, जहाँ आपका नाम-गान होगा, मैं वहीं परम स्थिर होकर दिन-रात निवास करता रहूँगा। तब हनुमान से कमल-लोचन रामचन्द्र ने कहा— तुम मान लो कि तुम्हारा और मेरा शरीर एक ही है। मुझमें तुममें कोई भिन्नता नहीं है ॥ ५९ ॥ हनुमान, तुम परम-अविचल, मेरे भक्त हो, जो तुम हो, वही मैं हूँ; तुम्हारा-मेरा शरीर एक ही है। ब्रह्मा के वर से चारों युगों में तुम चिरजीवी बने रहो, मेरे वर से तुम संसार का पालन करते रहो ॥ ६० ॥ महाज्ञानी, मंत्री जाम्बवान, सुनो, ब्रह्मा के आशीर्वाद से तुम चारों युगों तक स्थायी रूप से संसार में निवास करो। तुम्हें पुनः प्रथम यौवन प्राप्त हो जाए। तुम्हें कोई जीत नहीं सकेगा ॥ ६१ ॥ पुनः जब मैं अवतार लूंगा, तब मेरे साथ पुनः तुम्हारी भेंट होगी। और जितने लोग, स्वर्ग जाना चाहते हों, सब मेरे संग आवें ॥ ६२ ॥ श्रीराम ने लव-कुश को छत्र-दंड सौंप दिया। हाथों-हाथ समूचा राज्य-खंड उन्हें समर्पित किया ! हनुमान, जाम्बवान तथा वानर महेन्द्र के साथ लव-कुश की मित्रता करवा दी ॥ ६३ ॥ विभीषण को बुलाकर (लव-कुश को) उन्हें सौंप दिया। लव-कुश को राजा बनाकर रामचन्द्र ने प्रस्थान किया।

श्रीराम, भरत और शत्रुघ्न का वैकुंठ-गमन

मंगल-यात्रा करते हुए रामचन्द्र ने संसार त्याग दिया। राम के

अयोध्या छाड़िया राम करेन गमन। वशिष्ठ-नारद-आदि सङ्गे मुनिगण
अवधूत संन्यासी चलिल सारि सारि। क्षत्रिय ब्राह्मण वैश्य शूद्र वर्ण चारि २
हाते लड़ि करिया चलिल खोडा-काणा। श्रीरामेर सङ्गे याय, ना मानिल माना
स्थावर जंगम चले श्रीरामेर सने। गाछे पक्षी ना रहे, ना पशु रहे वने ३
भूत-प्रेत पिशाच, चलिल अन्तरीक्षे। हृष्ट हये याय सवे से उत्तर-मुखे
राज्यखण्ड-सह गेल हेमन्त-पर्व्वते। एक चापे याय लोक क्षमासेर पथे ४
संसार छाड़िया याय राजा लक्ष लक्ष। चलिल ये नपुंसक अन्तःपुर-रक्ष
चलिल सुग्रीव राजा श्रीरामेर मित। सेनानी छत्रिश कोटि चलिल त्वरित ५
ब्रह्मा आनिलेन रथ श्रीरामे लइते। वैकुण्ठे आसिवे प्रभु जगत-सहिते
तिन कोटि रथ एल, देवलोके देखे। आकाश युड़िया रथ रहे अन्तरीक्षे ६
जाह्नवी सरयु नदी एकठाँइ वहे। गङ्गा एड़ि रघुनाथ सरयुते रहे
मुक्त पूर्व्वपुरुष ये सरयुर जले। गङ्गा एड़ि रघुनाथ सरयुते उले ७
सरयुर स्रोत वहे अति खरशामा। स्रोते नामि तिन भाइ त्यजिलेन प्राण
स्वर्गेते दुन्दुभि वाजे, पुष्प-वरिषण। सरयुते तिन भाइ त्यजेन जीवन ८
नरदेह छाड़िया गेलेन तिन जन। वैकुण्ठे श्रीविष्णु गिया देन दरशन
श्रीराम भरत आर शत्रुघ्न लक्ष्मण। मिलि हइलेन एक-देह नारायण ९

प्रस्थान करने पर संसार में अंधकार हो गया ॥ १ ॥ रामचन्द्र अयोध्या छोड़कर चल पड़े। उनके संग वशिष्ठ-नारद आदि मुनिगण, अवधूत, संन्यासी, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र —इन चारों वर्णों के लोग कतारों में चले ॥ २ ॥ हाथों में लाठियाँ लिये हुए अन्धे-लँगड़े श्रीराम के संग चल पड़े, मना करने पर भी नहीं माने। स्थावर-जंगम श्रीराम के संग चले। पेड़ों पर पक्षी न रहे, न वनों में पक्षी रहे ॥ ३ ॥ भूत-प्रेत-पिशाच आदि अन्तरिक्ष में चले। वे सभी हर्षित हो उसी उत्तर दिशा की ओर चले। राज्य-खंड (के प्रजाजनों) के साथ वे हेमन्त-पर्वत पर पहुँचे। लोग एक ही वेग से छः महीने का मार्ग पार कर गये ॥ ४ ॥ लाखों राजा संसार छोड़कर चले। अंतःपुर-रक्षी नपुंसक (हिजड़े) भी चले। श्रीराम का मित्र राजा सुग्रीव चला। छत्तीस करोड़ सेनानायक तेज़ी से चले ॥ ५ ॥ प्रभु संसार के लोगों के संग आ रहे हैं यह सोचकर श्रीराम को ले जाने के लिए ब्रह्मा रथ ले आये। देवताओं ने देखा, तीन करोड़ रथ आ गये हैं। वे रथ आकाश को व्याप्त कर अन्तरिक्ष में स्थित हो गये ॥ ६ ॥ गंगा और सरयू नदियाँ जहाँ एक स्थान पर बह रही थीं, गंगा को छोड़ रामचन्द्र सरयू में ही रह गये। उनके पूर्वपुरुष सरयू के जल में मुक्त हुए थे। गंगा को छोड़ रामचन्द्र ने (इसी कारण) सरयू में डुबकी लगायी ॥ ७ ॥ सरयू की धारा बड़ी तेज़ गति से प्रवाहित हो रही थी, उस धारा में उतरकर तीनों भाइयों ने अपने प्राण तज दिये। स्वर्ग में दुन्दुभि बजने लगी, पुष्प-वर्षा होने लगी। सरयू नदी में तीनों भाइयों ने अपने जीवन तज दिये ॥ ८ ॥ वे तीनों भाई मानव-शरीर

सीतादेवी आइलेन श्रीरामेर पाशे । लक्ष्मीरूपा हइलेन सीता अवशेषे
वैकुण्ठेर नाथ यदि एल भगवान् । ब्रह्माके डाकिया किछु कहेन बिधान १०
आमार सहित यत आसियाछे प्राणी । कोथाय थाकिबे तारा, किछुइ ना जानि
विरिञ्चि बलेन, शुन राजीवलोचन । सन्तान नामेते स्वर्ग करेछि सृजन ११
सेइखाने आसिया रहिबे सर्व्वजन । बाञ्छा करे येखाने थाकिते देवगण
येइ जन रामायण करिबे श्रवण । परलोके एइ-स्वर्गे करिबे गमन १२
मृत्युकाले राम नाम करे येइ जन । सशरीरे करिवे से बैकुण्ठे गमन
भक्त-अनुरूप स्वर्ग अनेक प्रकार । गोबिन्दे भाविया लोक पायतो निस्तार १३
श्रीरामेर भक्त ये पाइल स्वर्गबास । इहा देखि ब्रह्मार मनेते हैल त्रास
चतुर्म्मुख चतुर्म्मुखे करिछेन स्तुति । तोमा-दरशने नाथ, पाइनु निष्कृति १४
आगम पुराण यत मीमांसा बेदान्त । तोमार महिमा राम, के पाइबे अन्त
आमा-हेन कोटि ब्रह्मा नाहि पाय सीमा । एमनि अनन्त तुमि, अनन्त-महिमा १५
पुण्य बृद्धि हय यारे करिले स्मरण । पापी पापे मुक्त हय शुनि रामायण
चारिबेद सहस्र नामे ये फल हय । रामनामे तार कोटिगुण फलोदय १६

तजकर चले गये । श्रीविष्णु वैकुंठ में जाकर प्रकट हुए । श्रीराम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न ये चारों भाई मिलकर एक-देह नारायण हो गये ॥ ९ ॥ सीतादेवी श्रीराम के पास आयीं, अंत में सीता लक्ष्मी-रूपा हो गयीं । जब वैकुंठ-नाथ भगवान आ पहुँचे, तब उन्होंने ब्रह्मा को बुला कर कुछ व्यवस्था के बारे में कहा ॥ १० ॥ मेरे संग जितने प्राणी आये हैं, वे कहाँ रहेंगे, मैं कुछ नही जानता । ब्रह्मा बोले, कमल-लोचन प्रभु, सुनिये, मैंने संतान नाम का स्वर्ग-लोक बनाया है ॥ ११ ॥ उसी स्थान में ये सभी जन आकर रहेंगे । जहाँ रहने की कामना देवगण भी किया करते हैं । जो जन रामायण श्रवण करेंगे, वे परलोक में इसी स्वर्ग में गमन करेंगे ॥ १२ ॥ जो मृत्युकाल में राम-नाम लेगा, वह सशरीर वैकुंठ-गमन करेगा । (भिन्न-भिन्न प्रकार के) भक्तों के अनुसार स्वर्ग भी अनेक प्रकार के हैं । गोविन्द का स्मरण कर लोग इस संसार से मुक्त हो जाते हैं ॥ १३ ॥ श्रीराम के सारे भक्तों को स्वर्ग-वास मिल गया, यह देख ब्रह्मा के मन में भय हुआ । चतुर्मुख ब्रह्माजी चारों मुखों से उनकी स्तुति करने लगे । नाथ, आपके दर्शन से मेरा उद्धार हो गया ॥ १४ ॥ वेद-पुराण, स्मृति-वेदान्त (आदि जितने भी शास्त्र हैं) आपकी महिमा का पार कौन पा सकता है ? मेरे जैसे करोड़ों ब्रह्मा उसका पार नहीं पा सकते, आप इतने अनन्त हैं, आपकी इतनी अनन्त-महिमा है ॥ १५ ॥ जिसका स्मरण करने पर पुण्य वृद्धि होती है, उस रामायण को सुनकर पापी पाप से मुक्त हो जाते हैं । चारों वेद, सहस्रनाम से जो फल होता है, राम-नाम से उसका करोड़ गुणा फल मिलता है ॥ १६ ॥ राम-नाम लेने की जो अभिलाषा करता है, वह सभी पापों से मुक्त होकर वैकुंठ में

राम-नाम लइते ये करे अभिलाष। सर्व्वपापे मुक्त से वैकुण्ठे करे बास
अपुत्रक लोक शुनि पाय पुत्रफल। सप्तकाण्ड शुनि पाय अश्वमेध-फल १७
सप्तकाण्ड रामायण अमृतेर खण्ड। एतदूरे समाप्त हइल सप्तकाण्ड १८

॥ उत्तरकाण्ड समाप्त ॥

निवास करता है। अपुत्रक रामायण सुनें तो उसे पुत्र-फल की प्राप्ति होती है। सप्तकांड रामायण सुनने पर अश्वमेध-यज्ञ का फल मिलता है ॥ १७ ॥ सप्तकांड रामायण अमृत का खंड है; अब यहाँ सप्तकांड रामायण की समाप्ति हुई।

॥ उत्तरकांड समाप्त ॥

ताज़ी विज्ञप्ति

प्रकाशित हो चुके हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण ग्रन्थः—

१ गुजराती—गिरधर रामायण (रचनाकाल-१८३५ ई०) हिन्दी अनुवाद, नागरी लिप्यन्तरण पृष्ठ संख्या १४६० मूल्य ६०·००
२ ,, प्रेमानन्द रसामृत— ना० लिप्य० हिन्दी अनुवाद पृ० संख्या ४९६ मूल्य ३५·००
३ मलयाळम—अध्यात्म रामायण (एळुत्तच्छन् कृत) १५वीं शती हिन्दी अनुवाद, नागरी लिप्यन्तरण पृ०सं० ७५२ मू० ४०·००
४ ,, —महाभारत-एळुत्तच्छन् (१५वीं शती) पृ० १२१६ मू०६०·००
५ बँगला— कृत्तिवास रामायण (पाँचकाण्ड)—१५वीं शती। हिन्दी पद्या० सहित नागरी लिप्य० पृ० ६२४ मू० २५·००
६ ,, कृत्तिवास लंकाकाण्ड— ,, गद्यानुवाद पृ० ४८८ मू० २५·००
७ ,, ,, उत्तरकाण्ड ,, ,, मूल्य २५·००
८ कश्मीरी—रामावतारचरित-प्रकाशराम कुर्यग्रामी कृत पृ०४८९ मू०२०·००
९ ,, ललद्यद—(नागरी) हिन्दी गद्य संस्कृत पद्यानु० पृ०१२० ,, १०·००
१० राजस्थानी—रुक्मिणी मंगल पदमभगत कृत। पृ० ३०० मू० १५·००
११ तमिळ— तिरुक्कुरळ्-तिरुवळ्ळुवर कृत। २००० वर्ष से अधिक प्राचीन; नागरी लिप्यन्तरण, गद्य-पद्य हिन्दी अनुवाद, पृ०३५२मू०२०·००
१२ ,, कम्ब रामायण बालकाण्ड (९वीं शती) पृ०६५२ मूल्य ४०·००
१३ ,, ,, अयोध्या-अरण्य पृष्ठ १०२४ मूल्य ७०·००
१४ ,, ,, किष्किन्धा-सुन्दर ,, १०१६ मूल्य ७०·००
१५ ,, ,, युद्धकाण्ड पूर्वार्ध ,, १०१६ मूल्य ७०·००
१६ ,, ,, ,, उत्तरार्ध ,, ८४० मूल्य ७०·००
१७ कन्नड— रामचन्द्रचरित पुराणं, अभिनव पम्प विरचित (जैन-मतानुसार रामचरित्र ११वीं शती) पृ० ६९० मूल्य ४०·००
१८ तेलुगु— मोल्ल रामायण (१४वीं शती) पृ० ४०० मूल्य २०·००
१९ ,, रंगनाथ रामायण (१३वीं शती) अनु. पृ. १३३५ मू० ६०·००
२० ,, श्री पोतन्न महाभागवतमु १-४ स्कन्ध पृ० ८५६ मूल्य ७०·००
२१ ,, ,, ,, ५-९ ,, मूल्य ७०·००
२२ ,, ,, ,, १०-१२ स्कन्ध मूल्य ७०·००
२३ मराठी—श्रीरामविजय-श्रीधरकृत (१७वीं शती) पृ० १२२८ मू०६०·००
२४ ,, श्रीहरि-विजय (श्रीधर कृत) पृष्ठ १००४ मू० ७०·००
२५ फारसी—सिर्रे अक्बर (दाराशिकोह कृत उपनिषद-व्या०) प्रथम खण्ड (ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तरीय, श्वेताश्वर) २८० मू० २०·००
२६ उर्दू— शरीफ़ज़ादः (मिर्ज़ा रुस्वा कृत) पृ० १३६ मूल्य ८·००
२७ ,, गुजश्तः लखनऊ (मौ० शरर) पृ० ३१६ मूल्य २०·००

२८ गुरमुखी—श्री गुरुग्रन्थ साहिब पहली सँची पृ० ९६८ मूल्य ४०·००
२९ ,, ,, ,, दूसरी सँची पृ० ९९२ मूल्य ५०·००
३० ,, ,, ,, तीसरी सँची पृ० ९६४ मूल्य ५०·००
३१ ,, ,, ,, चौथी सँची पृ० ८०० मूल्य ५०·००
३२ ,, श्री दसम गुरुग्रन्थ साहिब प्रथम सँची पृ० ८२० मू० ५०·००
३३ ,, ,, ,, ,, दूसरी सँची पृ० ७०४ मू० ५०·००
३४ ,, ,, ,, ,, यंत्रस्थ मूल्य ५०·००
३५ ,, ,, ,, ,, ,, मूल्य ५०·००
३६ ,, श्रीजपुजी सुखमनी साहब गुरमुखी पाठ तथा ख्वाजः दिलमुहम्मद कृत उर्दू पद्यानुवाद—दोनों नागरी लिपि में; पृ० १६४ मू० १०·००
३७ ,, सुखमनी साहिब मूल गुटका नागरी लिपि। मूल्य ४·००
३८ सिन्धी— सामी, शाह, सचल की त्रिवेणी पृष्ठ ४१५ मू० २०·००
३९ नेपाली—भानुभक्त रामायण पृ० ३४४ मूल्य २०·००
४० असमिया—माधवकंदली रामायण (१४वीं शती) पृ० ९४३ ,, ६०·००
४१ ओड़िआ—बैदेहीश-विळास उपेन्द्रभञ्ज (१८वीं शती) पृ० १००० ,, ६०·००
४२ ,, तुलसी-रामचरितमानस—ओडिआ लिपि में मूलपाठ तथा ओड़िआ गद्य-पद्य अनुवाद। पृ०सं० १४६४ मू० ६०·००
४३ संस्कृत—मानस-भारती रामचरितमानस-सहित संस्कृत पंक्ति-अनुपंक्ति पद्यानुवाद। पृ० ७४० मू० ५०·००
४४ ,, अद्‌भुत रामायण हिन्दी अनुवाद सहित पृ० २४४ मूल्य २०·००

प्रचारित प्रकाशन (ल.कि.घ.)

४५ अरबी कुर्आन शरीफ़ मूलपाठ अरबी तथा नागरी लिपि में तथा हिन्दी अनुवाद सहित पृ० १०२४ मू० ४६·००
४६ ,, ,, केवल मूल; अरबी, नागरी दोनों लिपि में पृ० ५२० मू० २३·००
४७ ,, ,, केवल हिन्दी अनुवाद पृ० ५३० मूल्य २३·००
४८ ,, क़ौरानिक कोश (पठनक्रम) पृ० १९२ मूल्य १०·००
४९ ,, ज़ादें सफ़र (रियाज़ुस्सालिहीन) भाग १ पृ० ३३६ मू० १५·००
५० ,, तफ़्सीर माजिदी (पार: १ से ५) क़ुर्आन शरीफ़ अरबी व नागरी, दोनों में मूल पाठ, तथा स्व० मौलाना अब्दुल् माजिद दर्याबादी का अनुवाद एवं वृहत् भाष्य हिन्दी में पृ० ५१२ मूल्य ५०·००
५१ बहुभाषाई— 'वाणी सरोवर' त्रैमासिक पत्र वार्षिक मूल्य १५·००

प्राप्ति-स्थान— भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ-३